

ΜΟΥΣΙΚΗ ΕΥΛΟΓΗ  
Η ΠΛΑΝΤΕΡΤΝΟΞ  
ΠΛΝΥ

ΚΑΤΑΒΑΣΙΑΙ ΤΟΥ ἘΝΙΑΥΤΟΥ

Περιέχουσα συντόμους καταβάσιαι τοῦ ὅλου ἑνιαυτοῦ,  
ἐκ τοῦ Εἰρμολογίου Ἰωάννου Πρωτοφάλτου.

Χάριν πληρότητος, προσετέθησαν ἔτι  
αἱ Ἀργαὶ καταβάσιαι τοῦ ὅλου ἑνιαυτοῦ,  
ὥς καὶ αἱ θ' ὠδαὶ (τῶν ἑορτῶν) ἑρανισθειῖσες, κυρίως,  
παρὰ π. Κωνσταντίνου Παπαγιάννη πρωτοπρεσβυτέρου.

Ἐπιμέλεια  
Λουκᾶς Λουκᾶ  
Γεράσιμος Μοναχὸς Ἀγιορείτης  
Ἰούλιος 2025



Εὐχέσθε ὑπὲρ ἡμῶν

Ἐπιμέλεια | Λουκάς Λουκά  
Γεράσιμος Μοναχὸς Ἀγιορείτης

[louka.loukas@gmail.com](mailto:louka.loukas@gmail.com)  
[gerry.monk@gmail.com](mailto:gerry.monk@gmail.com)

Λογισμικὸ Συγγραφῆς Βυζαντινῆς Μουσικῆς

Μουσικὰ Κείμενα  
τοῦ Δημητρίου Παπαδοπούλου

## Περιεχόμενα

|                                                                 |           |
|-----------------------------------------------------------------|-----------|
| <b>Εἰς τὸ Γενέσιον τῆς Θεοτόκου</b>                             | <b>0</b>  |
| Σύντομοι .....                                                  | 0         |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 0         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 5         |
| Ἀργαὶ .....                                                     | 9         |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                      | 9         |
| ὥδὴ θ' τῆς ἐορτῆς .....                                         | 15        |
| Κανὼν α' ὥδὴ θ' .....                                           | 17        |
| Κανὼν β' ὥδὴ θ' .....                                           | 19        |
| Καταβασία θ' ὥδῃς .....                                         | 23        |
| Σύντομος .....                                                  | 23        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 23        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 25        |
| Ἀργὴ .....                                                      | 26        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 26        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 28        |
| Κωνσταντίνου Λάμπρου .....                                      | 30        |
| <b>Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ (προεόρτιες/μεθεόρτες)</b> | <b>33</b> |
| Σύντομοι .....                                                  | 33        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 34        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 38        |
| Ἀργαὶ .....                                                     | 42        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                      | 42        |
| Τιμιωτέρα ἤχος πλ.δ' .....                                      | 48        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                                  | 49        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 50        |
| Καταβασία θ' ὥδῃς .....                                         | 55        |
| Σύντομος .....                                                  | 55        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 55        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 56        |
| Ἀργὴ .....                                                      | 58        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 58        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 60        |
| Κωνσταντίνου Λάμπρου .....                                      | 62        |
| <b>Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ</b>                        | <b>65</b> |
| Σύντομοι .....                                                  | 65        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 65        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 70        |
| Ἀργαὶ .....                                                     | 74        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                      | 74        |
| ὥδὴ θ' τῆς ἐορτῆς .....                                         | 80        |
| Κανὼν α' ὥδὴ θ' .....                                           | 81        |
| Κανὼν β' ὥδὴ θ' .....                                           | 83        |
| Καταβασία θ' ὥδῃς .....                                         | 86        |

|                                                 |            |
|-------------------------------------------------|------------|
| Σύντομος.....                                   | 86         |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 86         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 88         |
| Ἀργή.....                                       | 89         |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 89         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 91         |
| Κωνσταντίνου Λάμπρου.....                       | 93         |
| <b>Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)</b> | <b>95</b>  |
| Σύντομοι.....                                   | 95         |
| Ἀργαὶ.....                                      | 99         |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....       | 99         |
| Τιμιωτέρα ἤχος δ΄.....                          | 104        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου.....                   | 105        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 106        |
| Καταβασία θ΄ ὠδῆς.....                          | 111        |
| Σύντομος.....                                   | 111        |
| Ἀργή.....                                       | 112        |
| Ἀργή (διασκ. Παπαγιάννη).....                   | 113        |
| <b>Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου 21/11</b>        | <b>115</b> |
| Σύντομοι.....                                   | 115        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 115        |
| Ἀργαὶ.....                                      | 120        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 120        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....       | 127        |
| θ΄ ὠδὴ τῶν Εἰσοδίων.....                        | 134        |
| Κανὼν α΄, ὠδὴ θ΄.....                           | 136        |
| Κανὼν β΄, ὠδὴ θ΄.....                           | 141        |
| Καταβασία θ΄ ὠδῆς.....                          | 147        |
| Σύντομος.....                                   | 147        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 147        |
| Ἀργή.....                                       | 148        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 148        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....       | 150        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς πρὸ Χριστοῦ Γεννήσεως</b>       | <b>152</b> |
| Σύντομοι.....                                   | 153        |
| Απόστολου Ε. Παπαχρήστου.....                   | 153        |
| Ἀργαὶ.....                                      | 158        |
| Ἀντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος.....            | 158        |
| Πέτρου Μπερεκέτη.....                           | 165        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014).....        | 171        |
| Τιμιωτέρα ἤχος α΄.....                          | 179        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου.....                   | 179        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 180        |
| Καταβασία θ΄ ὠδῆς.....                          | 185        |
| Σύντομος.....                                   | 185        |
| Απόστολου Ε. Παπαχρήστου.....                   | 185        |



|                                               |            |
|-----------------------------------------------|------------|
| Ἀργή.....                                     | 186        |
| Αντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος .....         | 186        |
| Πέτρου Μπερεκέτη.....                         | 187        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014) .....     | 188        |
| <b>Τῶν Χριστουγέννων</b> .....                | <b>190</b> |
| Σύντομοι .....                                | 191        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                     | 191        |
| Ἀργαὶ .....                                   | 199        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 199        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....    | 213        |
| ὥδῃ θ' τῆς ἐορτῆς.....                        | 228        |
| Κανὼν Κοσμᾶ, ὥδῃ θ' .....                     | 229        |
| Κανὼν ἱαμβικός, Ἰωάννου μοναχοῦ, ὥδῃ θ' ..... | 232        |
| Καταβασία θ' ὥδῃς .....                       | 235        |
| Σύντομος.....                                 | 235        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 235        |
| Ἀργή.....                                     | 237        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 237        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....     | 240        |
| <b>Τῶν Χριστουγέννων, πεζαὶ</b> .....         | <b>244</b> |
| Σύντομοι .....                                | 244        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                     | 244        |
| Ἀργαὶ .....                                   | 249        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 249        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....    | 256        |
| Τιμιωτέρα ἤχος α' .....                       | 263        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                | 264        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                 | 265        |
| Καταβασία θ' ὥδῃς.....                        | 269        |
| Σύντομος.....                                 | 270        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 270        |
| Ἀργή.....                                     | 271        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                     | 271        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....     | 272        |
| <b>Τῶν Χριστουγέννων, ἱαμβικαὶ</b> .....      | <b>274</b> |
| Σύντομοι .....                                | 274        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                     | 274        |
| Ἀργαὶ .....                                   | 278        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 278        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....    | 285        |
| Τιμιωτέρα ἤχος α' .....                       | 293        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                | 294        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                 | 295        |
| Καταβασία θ' ὥδῃς.....                        | 300        |
| Σύντομος.....                                 | 300        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                      | 300        |

|                                                           |            |
|-----------------------------------------------------------|------------|
| Ἀργή.....                                                 | 301        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 301        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....                 | 302        |
| <b>Εἰς τὴν περιτομὴν τοῦ Ἰησοῦ καὶ Μεγ. Βασιλείου 1/1</b> | <b>306</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                                     | <b>307</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 307        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                                        | <b>316</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                                  | 316        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) .....              | 330        |
| <b>ὥδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....</b>                             | <b>344</b> |
| ὥδὴ θ', κανὼν τῆς ἐορτῆς.....                             | 345        |
| ὥδὴ θ', κανὼν τοῦ ἁγίου.....                              | 348        |
| <b>καταβασίαι θ' ὥδῃς.....</b>                            | <b>351</b> |
| Σύντομος.....                                             | 352        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 352        |
| Ἀργή.....                                                 | 354        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος.....                             | 354        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                                   | 357        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....               | 360        |
| <b>Τῶν Θεοφανείων</b>                                     | <b>363</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                                     | <b>364</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 364        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                                        | <b>373</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                                  | 373        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) .....              | 388        |
| <b>ὥδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....</b>                             | <b>401</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 402        |
| Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ.....                                | 402        |
| Κανὼν β' .....                                            | 405        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                             | 409        |
| Κανὼν α' .....                                            | 409        |
| Κανὼν β' .....                                            | 412        |
| <b>Καταβασία θ' ὥδῃς.....</b>                             | <b>416</b> |
| Σύντομος.....                                             | 416        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 416        |
| Ἀργή.....                                                 | 418        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος.....                             | 418        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                                   | 421        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....               | 424        |
| <b>Τῶν Θεοφανείων, πεζαὶ</b>                              | <b>427</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                                     | <b>427</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 427        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                                        | <b>432</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                                  | 432        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) .....              | 438        |
| <b>ὥδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....</b>                             | <b>444</b> |

|                                              |            |
|----------------------------------------------|------------|
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 445        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                | 448        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς.....</b>                | <b>452</b> |
| Σύντομος.....                                | 452        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                     | 452        |
| Ἀργὴ.....                                    | 453        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος.....                | 453        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                      | 455        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 456        |
| <b>Τῶν Θεοφανείων, ἱαμβικαὶ.....</b>         | <b>459</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                        | <b>459</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 459        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                           | <b>463</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                     | 463        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 471        |
| <b>ὠδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....</b>                | <b>477</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 478        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                | 481        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς.....</b>                | <b>485</b> |
| Σύντομος.....                                | 485        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                     | 486        |
| Ἀργὴ.....                                    | 486        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος.....                | 487        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                      | 488        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 490        |
| <b>Τῆς Ὑπαπαντῆς (προεόρτιες).....</b>       | <b>492</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                        | <b>492</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....   | 492        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                           | <b>496</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....   | 496        |
| <b>Τιμιωτέρα ἤχος γ' .....</b>               | <b>506</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....               | 506        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                | 507        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς.....</b>                | <b>512</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (Σύντομος).....           | 512        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Σύντομος) .....     | 513        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (Ἀργὴ).....               | 515        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Ἀργὴ).....          | 516        |
| <b>Τῆς Ὑπαπαντῆς 2/2.....</b>                | <b>519</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                        | <b>519</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....   | 519        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                           | <b>523</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....   | 523        |
| <b>θ' ὠδὴ τῆς Ὑπαπαντῆς .....</b>            | <b>533</b> |
| Ι.Μ.Σίμωνος Πέτρας .....                     | 534        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                | 542        |

|                                                         |            |
|---------------------------------------------------------|------------|
| Καταβασία θ' ὥδης.....                                  | 550        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (Σύντομος).....                      | 551        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Σύντομος) .....                | 552        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (Ἀργή).....                          | 553        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Ἀργή).....                     | 555        |
| <b>Τῶν Κυριακῶν Τελώνου-Φαρισαίου καὶ Τυρινῆς</b> ..... | <b>558</b> |
| Σύντομοι .....                                          | 558        |
| Ἀργαὶ .....                                             | 562        |
| Πέτρου Βυζαντίου .....                                  | 562        |
| Τιμιωτέρα ἥχος πλ.β' .....                              | 567        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                          | 567        |
| Καταβασία θ' ὥδης.....                                  | 568        |
| Σύντομος.....                                           | 569        |
| Ἀργὴ Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                           | 569        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                              | 570        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς τοῦ Ἀσώτου</b> .....                    | <b>573</b> |
| Σύντομοι .....                                          | 573        |
| Ἀργαὶ .....                                             | 577        |
| Πέτρου Βυζαντίου .....                                  | 577        |
| Τιμιωτέρα ἥχος β' .....                                 | 582        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                          | 582        |
| Καταβασία θ' ὥδης.....                                  | 583        |
| Σύντομος.....                                           | 584        |
| Ἀργὴ Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                           | 584        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                              | 585        |
| <b>Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Ἀπόκρεφ</b> .....                 | <b>587</b> |
| Σύντομοι .....                                          | 587        |
| Ἀπόστολος Παπαχρήστου.....                              | 587        |
| Τιμιωτέρα ἥχος πλ.δ' .....                              | 591        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                          | 592        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                           | 593        |
| Καταβασία θ' ὥδης.....                                  | 597        |
| Σύντομος Ἀπόστολου Παπαχρήστου.....                     | 598        |
| Ἀργὴ Ἀπόστολου Παπαχρήστου .....                        | 598        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς τῆς Ἀπόκρεφ</b> .....                   | <b>600</b> |
| Σύντομοι .....                                          | 600        |
| Ἀργαὶ .....                                             | 604        |
| Πέτρου Βυζαντίου .....                                  | 604        |
| Τιμιωτέρα ἥχος πλ.β' .....                              | 609        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                          | 609        |
| Καταβασία θ' ὥδης.....                                  | 610        |
| Σύντομος.....                                           | 611        |
| Ἀργὴ Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                           | 611        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                              | 612        |
| <b>Τῆς α' Κυριακῆς τῶν νηστειῶν</b> .....               | <b>614</b> |



|                                                   |            |
|---------------------------------------------------|------------|
| Σύντομοι .....                                    | 614        |
| Ἀργαὶ .....                                       | 617        |
| Πέτρου Βυζαντίου .....                            | 617        |
| Τιμιωτέρα ἤχος δ΄ .....                           | 622        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                    | 623        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 624        |
| Καταβασία θ΄ ᾠδῆς .....                           | 628        |
| Σύντομος .....                                    | 628        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 629        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου .....                       | 630        |
| <b>Εἰς ἑορτὰς τῆς Θεοτόκου (ἐν Τριωδίῳ) .....</b> | <b>632</b> |
| Σύντομοι .....                                    | 632        |
| Ἀργαὶ .....                                       | 637        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....        | 637        |
| Τιμιωτέρα ἤχος δ΄ .....                           | 643        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                    | 644        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 645        |
| Καταβασία θ΄ ᾠδῆς .....                           | 649        |
| Σύντομος .....                                    | 649        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 650        |
| Ἀργὴ Πέτρου Πελοποννησίου .....                   | 651        |
| <b>Τῆς Σταυροπροσκυνήσεως .....</b>               | <b>653</b> |
| Σύντομοι .....                                    | 653        |
| Ἀργαὶ .....                                       | 657        |
| Πέτρου Βυζαντίου .....                            | 657        |
| Τιμιωτέρα ἤχος α΄ .....                           | 663        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                    | 663        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 664        |
| Καταβασία θ΄ ᾠδῆς .....                           | 669        |
| Σύντομος .....                                    | 669        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 670        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου .....                       | 671        |
| <b>Εἰς τὸν Εὐαγγελισμόν .....</b>                 | <b>673</b> |
| Σύντομοι .....                                    | 673        |
| Ἀργαὶ .....                                       | 677        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....        | 677        |
| θ΄ ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς .....                           | 684        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 685        |
| Καταβασία θ΄ ᾠδῆς .....                           | 691        |
| Σύντομος .....                                    | 691        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 691        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 692        |
| Ἀργὴ .....                                        | 693        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 693        |
| Πέτρου Πελοποννησίου .....                        | 694        |

|                                                           |     |
|-----------------------------------------------------------|-----|
| Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῶν Βαΐων                                  | 697 |
| Σύντομοι                                                  | 697 |
| Ἀργαὶ                                                     | 701 |
| ὑπὸ Γρηγορίου πρωτοψάλτου συντηθεῖσαι καὶ διασκευασθεῖσαι | 701 |
| θ' ὥδῃ τῆς ἐορτῆς                                         | 706 |
| ὥδῃ θ', κανὼν α'                                          | 707 |
| ὥδῃ θ', κανὼν β'                                          | 708 |
| Καταβασία θ' ὥδῃς                                         | 710 |
| Σύντομος                                                  | 710 |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                  | 711 |
| Ἀργὴ Πέτρου Πελοποννησίου                                 | 711 |
| Τῶν Βαΐων                                                 | 713 |
| Σύντομοι                                                  | 713 |
| Ἀργαὶ                                                     | 718 |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου                      | 718 |
| θ' ὥδῃ τῆς ἐορτῆς                                         | 723 |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                       | 724 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 726 |
| Καταβασία θ' ὥδῃς                                         | 729 |
| Σύντομος                                                  | 729 |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                       | 729 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 730 |
| Ἀργὴ                                                      | 731 |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                       | 731 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 732 |
| Τῷ Ἀγίῳ καὶ Μεγάλῳ Σαββάτῳ                                | 734 |
| Σύντομοι                                                  | 734 |
| Ἀθανασίου Καραμάνη                                        | 734 |
| Κωνσταντίνου Πρίγγου                                      | 739 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 743 |
| Ἀργαὶ                                                     | 747 |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                       | 747 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 754 |
| Καταβασία θ' ὥδῃς                                         | 760 |
| Σύντομος                                                  | 760 |
| Ἀθανασίου Καραμάνη                                        | 760 |
| Κωνσταντίνου Πρίγγου                                      | 761 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 762 |
| Ἀργὴ                                                      | 763 |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                       | 763 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη                                   | 764 |
| Τοῦ Πάσχα                                                 | 766 |
| Σύντομοι                                                  | 766 |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου                                       | 766 |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου                                        | 770 |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου                                   | 774 |

|                                    |            |
|------------------------------------|------------|
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 777        |
| ὥδη θ' (κανὼν τοῦ Πάσχα) .....     | 781        |
| Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου .....     | 782        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 786        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 791        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 796        |
| ὥδη θ', (κανὼν τῆς Θεοτόκου) ..... | 801        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 802        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 804        |
| Καταβασία θ' ὥδης, Σύντομος .....  | 806        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 806        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 809        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 810        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 812        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς τοῦ Θωμᾶ</b> ..... | <b>815</b> |
| Σύντομοι .....                     | 815        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 815        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 819        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 823        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 826        |
| Ἀργαὶ .....                        | 830        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 830        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 836        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 842        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 848        |
| ὥδη θ' τῆς ἐορτῆς .....            | 856        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 857        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 858        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 860        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 862        |
| Καταβασία θ' ὥδης .....            | 865        |
| Σύντομος .....                     | 865        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 865        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 866        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 867        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 868        |
| Ἀργὴ .....                         | 869        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 869        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 871        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....      | 873        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....      | 875        |
| <b>Τῆς Μεσοπεντηκοστῆς</b> .....   | <b>878</b> |
| Σύντομοι .....                     | 878        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....          | 878        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....           | 882        |
| θ' ὥδη τῆς ἐορτῆς .....            | 885        |

|                                                   |            |
|---------------------------------------------------|------------|
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                           | 886        |
| Κανών α΄, ᾠδὴ θ΄ .....                            | 886        |
| Κανών β΄, ᾠδὴ θ΄.....                             | 888        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 891        |
| Κανών α΄, ᾠδὴ θ΄ .....                            | 891        |
| Κανών β΄, ᾠδὴ θ΄.....                             | 893        |
| <b>Καταβασία θ΄ ᾠδῆς.....</b>                     | <b>895</b> |
| Σύντομος.....                                     | 895        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 895        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                          | 896        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 897        |
| Ἀργὴ.....                                         | 898        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 898        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                          | 899        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 900        |
| <b>Τῆς Ἀναλήψεως (προεόρτιες).....</b>            | <b>902</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                             | <b>902</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 902        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                           | 905        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                     | 908        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 911        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                                | <b>915</b> |
| Πέτρου Πελοποννησίου .....                        | 915        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                     | 918        |
| <b>Ἐν Κυριακῇ - ᾠδὴ θ΄.....</b>                   | <b>923</b> |
| Κανὼν τοῦ Πάσχα.....                              | 923        |
| Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου .....                    | 923        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                          | 926        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                      | 929        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 933        |
| Κανὼν τῆς Θεοτόκου.....                           | 936        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                          | 936        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 938        |
| <b>Ἐν Καθημερινῇ - Τιμιωτέρα ἤχος πλ.α΄ .....</b> | <b>940</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                    | 941        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 942        |
| <b>Καταβασία θ΄ ᾠδῆς.....</b>                     | <b>947</b> |
| Σύντομος.....                                     | 947        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 947        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                          | 948        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                      | 948        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 949        |
| Ἀργὴ.....                                         | 949        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 949        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                      | 950        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 951        |
| <b>Τῆς Ἀναλήψεως.....</b>                         | <b>952</b> |

|                                                 |      |
|-------------------------------------------------|------|
| Σύντομοι .....                                  | 952  |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 953  |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                         | 956  |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                   | 961  |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                   | 965  |
| Άργαί .....                                     | 969  |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....      | 969  |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                         | 976  |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                   | 982  |
| ὥδῃ θ' τῆς ἑορτῆς.....                          | 988  |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                         | 990  |
| ὥδῃ θ', κανὼν α' .....                          | 990  |
| ὥδῃ θ', κανὼν β' .....                          | 992  |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                   | 996  |
| ὥδῃ θ', κανὼν α' .....                          | 996  |
| ὥδῃ θ', κανὼν β' .....                          | 997  |
| Καταβασία θ' ὥδῆς.....                          | 1002 |
| Σύντομος.....                                   | 1002 |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                       | 1002 |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                        | 1003 |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                   | 1003 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 1004 |
| Άργῇ.....                                       | 1005 |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....       | 1005 |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                       | 1006 |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                        | 1007 |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                    | 1008 |
| Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Πεντηκοστῆς.....             | 1010 |
| Σύντομοι .....                                  | 1010 |
| Τιμιωτέρα ἤχος πλ.β' .....                      | 1014 |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                  | 1014 |
| Καταβασία θ' ὥδῆς.....                          | 1015 |
| Σύντομος.....                                   | 1016 |
| Άργῇ.....                                       | 1016 |
| Τῆς Πεντηκοστῆς.....                            | 1019 |
| Σύντομοι .....                                  | 1020 |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 1021 |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                         | 1029 |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                   | 1038 |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                   | 1047 |
| Άργαί .....                                     | 1056 |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου. Άργές, διασκευασμένοι ..... | 1056 |
| ὥδῃ θ' τῆς ἑορτῆς.....                          | 1069 |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 1070 |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                         | 1075 |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                   | 1079 |

|                                            |             |
|--------------------------------------------|-------------|
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 1084        |
| <b>Καταβασίαι θ' ᾠδῆς.....</b>             | <b>1088</b> |
| Σύντομος.....                              | 1089        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 1089        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου .....                   | 1090        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 1092        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 1093        |
| Ἀργὴ.....                                  | 1094        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 1094        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....  | 1096        |
| <b>Τῆς Πεντηκοστῆς ἱαμβικαὶ.....</b>       | <b>1099</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                      | <b>1099</b> |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                   | 1100        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                    | 1103        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 1108        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 1112        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                         | <b>1116</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου ..... | 1116        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                    | 1123        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 1129        |
| <b>ᾠδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....</b>              | <b>1135</b> |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                   | 1136        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                    | 1141        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 1146        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 1150        |
| <b>Καταβασίαι θ' ᾠδῆς.....</b>             | <b>1155</b> |
| Σύντομος.....                              | 1155        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 1155        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου .....                   | 1156        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....               | 1157        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....               | 1157        |
| Ἀργὴ.....                                  | 1158        |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 1158        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....  | 1159        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου .....                   | 1160        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....               | 1161        |
| <b>Τῆς Μεταμορφώσεως (προεόρτιες).....</b> | <b>1163</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                      | <b>1163</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 1163        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 1167        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                         | <b>1170</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                   | 1170        |
| <b>Τιμιωτέρα ἤχος δ'.....</b>              | <b>1175</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....             | 1176        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 1177        |
| <b>Καταβασίαι θ' ᾠδῆς.....</b>             | <b>1181</b> |



|                                                   |             |
|---------------------------------------------------|-------------|
| Σύντομος.....                                     | 1182        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1182        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1182        |
| Ἀργή.....                                         | 1183        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1183        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                           | 1184        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1184        |
| <b>Τῆς Μεταμορφώσεως 6/8</b>                      | <b>1186</b> |
| Σύντομοι.....                                     | 1186        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1186        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1191        |
| Ἀργαὶ.....                                        | 1195        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....         | 1195        |
| ὠδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....                            | 1201        |
| ὠδὴ θ', κανὼν α'.....                             | 1202        |
| ὠδὴ θ', κανὼν β'.....                             | 1205        |
| Καταβασία θ' ὠδῆς.....                            | 1207        |
| Σύντομος.....                                     | 1208        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1208        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1209        |
| Ἀργή.....                                         | 1210        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1210        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1212        |
| Κωνσταντίνου Λάμπρου.....                         | 1214        |
| <b>Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)</b> | <b>1217</b> |
| Σύντομοι.....                                     | 1217        |
| Ἀργαὶ.....                                        | 1221        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....         | 1221        |
| Τιμιωτέρα ἤχος δ'.....                            | 1227        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου.....                     | 1227        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1228        |
| Καταβασία θ' ὠδῆς.....                            | 1233        |
| Σύντομος.....                                     | 1233        |
| Ἀργή.....                                         | 1234        |
| Ἀργὴ (διασκ. Παπαγιάννη).....                     | 1235        |
| <b>Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου 15/8</b>         | <b>1237</b> |
| Σύντομοι.....                                     | 1238        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1238        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1247        |
| Ἀργαὶ.....                                        | 1257        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....       | 1257        |
| ὠδὴ θ' τῆς ἐορτῆς.....                            | 1273        |
| Κανὼν α' τῆς Θεοτόκου, ὠδὴ θ'.....                | 1274        |
| Κανὼν β' τῆς Θεοτόκου, ὠδὴ θ'.....                | 1276        |
| Καταβασία θ' ὠδῆς.....                            | 1281        |
| Σύντομος.....                                     | 1281        |

|                                                  |             |
|--------------------------------------------------|-------------|
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1281        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                     | 1283        |
| Ἀργὴ.....                                        | 1285        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1285        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....      | 1288        |
| <b>Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (μεθεόρτες)</b> | <b>1292</b> |
| Σύντομοι.....                                    | 1292        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1293        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                     | 1297        |
| Ἀργαὶ.....                                       | 1302        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1302        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....      | 1309        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου).....     | 1320        |
| Τιμιωτέρα ἤχος α΄.....                           | 1328        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου.....                    | 1328        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                     | 1329        |
| Καταβασία θ΄ ᾠδῆς.....                           | 1334        |
| Σύντομος.....                                    | 1334        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1334        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                     | 1335        |
| Ἀργὴ.....                                        | 1336        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1336        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....      | 1338        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου).....     | 1339        |
| <b>Εἰς ἑορτὰς τῆς Θεοτόκου</b>                   | <b>1342</b> |
| Σύντομοι.....                                    | 1342        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1342        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                          | 1346        |
| Ἀργαὶ.....                                       | 1350        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη).....   | 1350        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου).....   | 1355        |
| Τιμιωτέρα ἤχος δ΄.....                           | 1361        |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου.....                    | 1361        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                     | 1362        |
| Καταβασία θ΄ ᾠδῆς.....                           | 1367        |
| Σύντομος.....                                    | 1367        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1367        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                          | 1368        |
| Ἀργὴ.....                                        | 1369        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                         | 1369        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη).....   | 1370        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου).....   | 1371        |



# Εἰς τὸ Γενέσιον τῆς Θεοτόκου

8 Σεπτεμβρίου

ἤχος πλ.δ'

- α **Σ**ταυρόν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὖρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στειρευούσῃ δὲ πρῶην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνηθη, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.
- δ **Ε**ἰσακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.
- ε **Ω** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.
- ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπέζωγράφησε, τοῦ σαρκὶ προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριμέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.
- ζ **Ε**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔψαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.**
- η **Ε**ὐλογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα βδω την

Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πεζευσαν τι την

δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ μα σι κρο τη

σας η νω σεν επ ευ ρους δι α γραψα α ας το α ητ τη

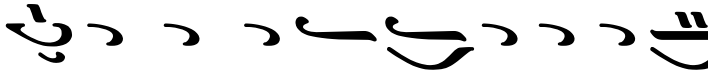
τον ο ο πλον δι ο Χρι στω α σωμεν τω Θε ω

η μων ο τι δε δο ξα σται

Ρ α βδος εις τυ υ πον του μυ στη ρι ου πα ρα λαμ

βα νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

ε α τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

—    
ἐξ ἡν ἠθῆσεν  χορὸς α' ξυλὸν Σταυροῦ εἰς κράτος καὶ στερε

 ωμα    
ὠδὴ δ' 

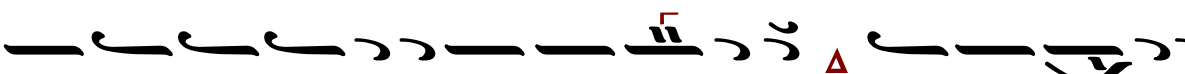
  
Εἰσακήκη αὐτοῦ Κυρίου τοῦ νομίμου

  
σου τοῦ μυστηρίου κατενόησά τα ἐργά σου καὶ ἐ

 δοξάσας σου τὴν Θεοτητα    
ὠδὴ ε' 

  
ὦ τρισμακάριε ὁ ξυλὸν ἐν ᾧ ἐτα

 αὐθιχὸς Χριστὸς ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος  διου

 πεπτωκὲν ὁ ξυλὸς ἀπατήσας  τὸ ἐν σοὶ δέλε

 ἀσθεὶς Θεὸς ὠτὼ προσπάγει ἐν τῇ σαρκὶ  τὼ πά

 ρεχοῦντες τὴν εἰρηνηταὶς ψυχὰς ἡμῶν    
ὠδὴ ζ'

**Ν** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας <sup>γ</sup> το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε <sup>Δ</sup> του σα ρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερ σει τον κο ο σμον φω τι σα αντος <sup>γ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ε** εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυσ σε

βους λα ους ε κλο νη σε <sup>δ</sup> <sup>λ</sup> πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

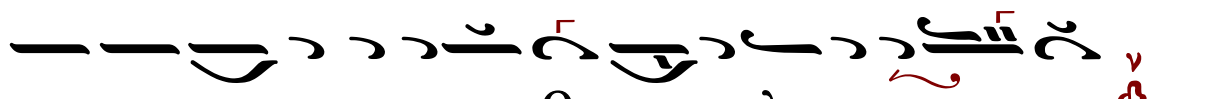
ι α ας θε ο στυ γους <sup>γ</sup> <sup>δ</sup> ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα



τω ω ω σε  θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον 

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευμα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον  ο υ περ υ μνη η το ος

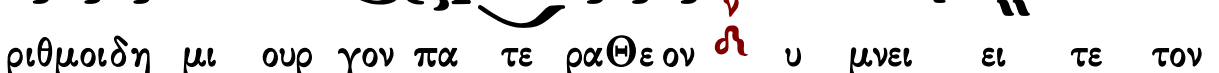
των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη το ος ει 

ὥδῃ ἡ'

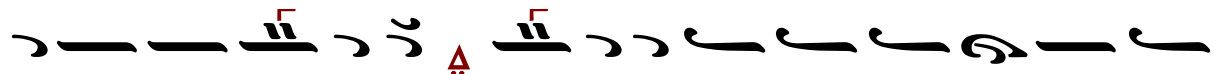
  ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

 Κυ ρι ον 

  υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δος ις α

 ριθμοιδη μι ουρ γον πα τε ρα Θε ον  υ μνει ει τε τον

 συγ κα τα βαν τα λο ο ο γον  και το πυρ εις δρο ο σον

  
 με τα ποι ησαντα  και υ περ υ ψου τε το πα α σι  
  
 ζω ην πα ρε ε χον  Πνε ευμα παν α γι ον εις τους  
  
 αι ω ω να α α ας 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ὥδη α΄

Ἦχος λ ρι 

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*

  
 C  ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα  
  
 βδω την Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πε ζευ σαν  
  
 τι  την δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ  
  
 μα σι κρο τη σας η νω σεν  επ ευ ρους δι α γρα ψα ας  
  
 το α ητ τη τον ο πλον  δι ο Χρι στω α σω μεν 

$\Omega$   
 $\gamma$   
 $\Omega \quad \dot{\omega} \delta \eta \gamma'$

P

١٤

2

३



—

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων

**N** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σαρ κι προσ πα γεν τος Χρι

στου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε ρσει

ῥῶδῃ ζ'

e

ד'תק"ל

[illegible]

יְהוָה יִשְׁמַר אֶת־עַמּוֹ יִשְׂרָאֵל מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם אָמֵן

[illegible]

ὥδ' ἦ'

 $\alpha$ 

אני רוצה



θει ει ει ει α ας ρα α α βδω την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως Φα ρα ω

τοι οισ αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν επ

ευ ρους δι α α γρα α α ψας το α ητ τη τον ο

ο ο πλον δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν τω

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται

Ρ α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου

πα α ρα α λα αμ βα α α νε ε ε ε ται τω

βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου χορός α'

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

στε ρε ε ε ε ε ω ω ω ω μα

ῥωδὴ δ'

Ε ισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

κο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα ῥωδὴ ε'

Ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον εν



ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευς και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ ος πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νην ταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οστα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι ι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Ε υ λο γει ει ει τε παι αι αι δε ες ν της  
 Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον  
 Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον ν υ μνει  
 ει τε τον συγ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον ς και το  
 ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α ν και  
 υ περ υ υ ψου ου ου ου τε ς το ο πα σι ι ζω η  
 ην πα α ρε ε ε ε χον ς Πνευ ευ μα παν α γι ι ονεις τους  
 αι ω ω να α α α ας ν

## ὠδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Κανὼν α' τῆς Θεοτόκου, ὠδὴ θ'

## ἤχος β'

«**Ἡ** τὸν πρὸ ἡλίου φωστῆρα, τὸν Θεὸν ἐξανατείλαντα, σωματικῶς ἡμῖν ἐπιδημήσαντα, ἐκ λαγόνων παρθενικῶν, ἀφράστως σωματώσασα, εὐλογημένη πάνταγενε, σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν». (β')

**Υ**περαγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

**Ο** τοῖς ἀπειθοῦσι λαοῖς, ἐξ ἀκροτόμου βλύσας νάματα, τοῖς εὐπειθοῦσιν ἔθνεσι χαρίζεται, ἐκ λαγόνων στερωτικῶν, καρπὸν εἰς εὐφροσύνην ἡμῖν, σὲ Θεομήτορ ἄχραντε, ἣν ἐπαξίως μεγαλύνομεν.

**Υ**περαγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

**Τ**ὴν τῆς ἀποτόμου ἀρχαίας, ἀναιρέτιν ἀποφάσεως, καὶ τῆς προμήτορος τὴν ἐπ' ἀνθρώποις, τὴν τοῦ γένους τῆς πρὸς Θεὸν αἰτίαν οἰκειώσεως, τὴν πρὸς τὸν κτίστην γέφυραν, σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κανὼν β' τῆς Θεοτόκου, ᾠδὴ θ'

Ἀλλότριον τῶν μητέρων ἢ παρθενία

## ἤχος πλ.δ'

**Υ**περαγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

**Ε**πάξιον Θεομήτορ τῆς σῆς ἀγνείας, τὸν τόκον ἐκληρώσω δι' ἐπαγγελίας· τῇ ποτὲ γὰρ ἀκάρπῳ, θεόβλαστος καρπὸς ἐδόθη· διὸ σε πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς, ἀπαύστως μακαρίζομεν.

**Υ**περαγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

**Π**επλήρωται τοῦ βοῶντος ἡ προφητεία, φησὶ γάρ· ἀναστήσω σκηνὴν τὴν πεπτωκυῖαν, τοῦ ἱεροῦ Δαυὶδ, ἐν σοί, ἄχραντε προτυπωθεῖσαν, δι' ἧς ὁ σύμπαρς τῶν ἀνθρώπων χοῦς, εἰς σῶμα ἀνεπλάσθη Θεῷ.

**Υ**περαγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

**Τ**ὰ σπάργανα προσκυνοῦμέν σου Θεοτόκε, δοξάζομεν τὸν δόντα καρπὸν τῇ πρώῃν στείρα, καὶ ἀνοίξαντα μήτραν, τὴν ἄγονον ἐκ παραδόξου· ποιεῖ γὰρ πάντα ὅσα βούλεται, Θεὸς ὢν παντεξούσιος.

**Υ**περαγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

**Ε**βλάστησας νυμφοτόκε Ἄννα θεόφρον, ἐκ μήτρας παρ' ἐλπίδα, καὶ ἐξ ἐπαγγελίας, παρθενόφυτον ἄνθος, θεόβλαστον ἀγνείας κάλλος· διὸ σε πάντες μακαρίζομεν, ὡς ῥίζαν τῆς ζωῆς ἡμῶν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Ἀλλότριον τοῖς ἀνόμοις ἐστὶ δοξάζειν, τὴν ἀναρχὸν Τριάδα, Πατέρα καὶ Υἱόν τε, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὴν ἀκτιστὸν παγκρατορίαν, δι' ἧς ὁ σύμπας κόσμος ἡδράσται, τῷ νεύματι τοῦ κράτους αὐτῆς.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἐχώρησας ἐν γαστρὶ σου παρθενομῆτορ, τὸν ἕνα τῆς Τριάδος Χριστὸν τὸν βασιλέα, ὃν ὕμνεῖ πᾶσα κτίσις, καὶ τρέμουσιν οἱ ἄνω θρόνοι· αὐτὸν δυσώπει πανσεβάσμιε, σωθῆναι τὰς ψυχὰς ἡμῶν.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κανὼν α' ᾠδὴ θ'

ὁ εἰρμὸς

Ἦχος  Πά

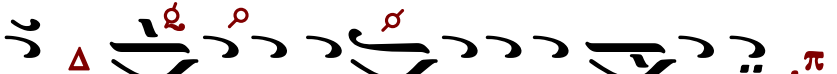
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.105/1804#

Η   
τον προ η λι ου φω στη ρα  τον Θε ον

  
ἐξ α α να τει λαν τα  σω μα τι κως η μιν ε πι δη

  
μη σαν τα  εκ λα γο ο νων παρ θε νι κων α φρα

  
στως σω ω μα τω σα σα  ευ λο γη με νη παν α

  
γνε  σε ε Θε ο το κε με γα λυ νο μεν  (β')

Υ   
περ α γι α Θε ο το κε σω σον η

μας

Ο τοις α πει θου ου σι λα οις εξ α κρο το

μου βλυ σας να μα τα τοις ευ πει θου σιν ε θνε σι

χα ρι ξε ται εκ λα γο ο νων στει ρω τι κων καρ

πον εις ευ φρο συ νην η μιν σε Θε ο μη τορ α χραν τε

η ην ε πα ξι ως με γα λυ νο μεν

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η

μας

Τ ην της α πο το μου αρ χαι ας α ναι

ρε τιν α πο φα σε ως και της προ μη το ρος την

ε παν ορ θω σιν την του γε ε νους προς τον Θε ον

αι τι αν οι οι χει ω σε ως την προς τον κτι στην γε

φυ ραν σε ε Θε ο το κε με γα λυ νο μεν

Κανών β' ὠδὴ θ'

Ἀλλότριον τῶν μητέρων ἢ παρθενία

Ἦχος λ' ϝ' Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.106/1805#

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Ε πα ξι ι ον Θε ο μη η τορ της σης α γνει

ας τον το κον ε κλη ρω ω σω δι ε παγ γε λι

ας τη πο τε γαρ α κα αρ πω θε ο βλα στος

καρ πος ε δο θης δι ο σε πα σαι αι φυ λαι τη ης



γης α παυ στως μα κα ρι ι ζο ο μεν

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Π ε πλη ρω ω ται του βο ω ων τος η προ φη τει

α φη σι γαρ α να στη η σω σκη νην την πε πτω κυι

αν του ι ε ρου Δα βιδ εν σοι οι α χραν τε προ

τυ πω θει σαν δι ης ο συμ πας των αν θρω πω

ων χους εις σω μα α νε πλα σθη Θε ω

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Τ α σπαρ γα α να προσ κυ νου ου μεν σου Θε ο το

κε δο ξα ζο μεν τον δον τα καρ πον τη πρω ην στει ρα

και α νοι ξαν τα μη η τραν την α γο νον εκ

πα ρα δο ξου ποι ει γαρ παν τα ο σα βου λε ε

ται Θε ος ω ων παν τε ξου ου σι ι ος

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Ε βλα στη η σας νυμ φο το κε Α αν να θε ο

φρον εκ μη τρας παρ ελ πι ι δα και εξ ε παγ γε

λι ας παρ θε νο φυ τον αν θος θε ο βλα στον α

γνει ας καλ λος δι ο σε παν τες μα κα ρι ζο ο μεν

ως ρι ζαν της ζω η ης η η μων

Δ ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>ν</sup>

**Α** λ λο τρι ι ον τοις α νο ο μοις ε στι δο ξα

ζειν την α ναρ χον Τρι α α δα Πα τε ρα και Υι ον

τε και το α γι ον Πνευ μα την α κτι στον παγ

κρα το ρι αν δι ης ο συμ πας κο σμος η δρα α

σται τω νευ μα τι του κρα τους αυ της

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην

**Ε** χω ρη η σας εν γα στρι ι σου Παρ θε νο μη

τωρ τον ε να της Τρι α α δος Χρι στον τον ζω ο δο την

ον υ μνει πα σα κτι σις και τρε μου σιν οι α νω  
θρο ο νοι αυ τον δυ σω πει παν σε βα σμι ι ε σω  
θη ναι τας ψυ χα ας η η μων

## Καταβασία θ' ὀδῆς

ἦχος πλ.δ'

Μυστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῇ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήργηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρα διαλέλγεται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κωνσταντίνου Λάμπρου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ὥδῃ θ'

ἦχος λ π ρ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

**Μ** υ στι κο ς ει Θε ο το κε Πα ραδειςος α γε

ω ρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον υφ ου το του Σταυ ρου ζω

η φο ο ρον εν γη πε φυ του ου ρ γη ται δε ενδρον

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντε σ αυ τον σε με

γα \* λυ νο ο μεν

\* λυ νο με ε ε ε ε ε εν

έτέρα

**Ο** δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει

προ σ γε νο με νος θανατος δι α Σταυ ρου κα τη η ρ

γη ται ση με ρον της γαρ προ μη το ρος η πα γ γε νης

κα τα ρα δι ι α λε λυ ται τω βλα στω της α

γνη ἡς Θεοῦ μητορὸς ἡν πασαι αἰδυνααμεῖς  
των οὐρανῶν μεγαλυνούσι ι ι ι

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

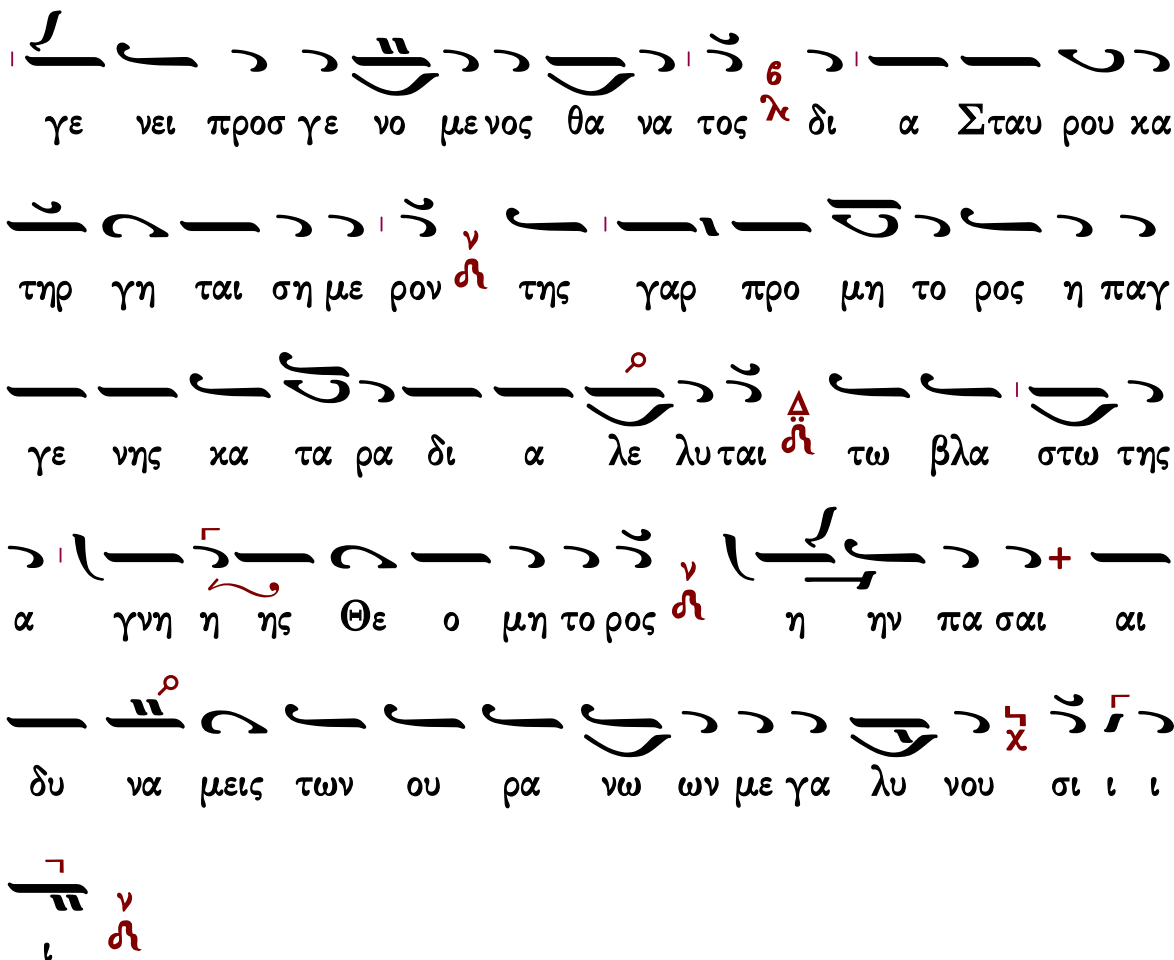
ᾠχος λ π ρ Νη

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.295/1644\*

Μυστικός εἰ Θεοῦ τοκέ παρὰ δεισὸς α  
γεωργήτως βλάστησάσα Χριστὸν υφ' οὗ τοῦ  
σταυρουζωήφορόρον ἐν γῇ πεφυτούργηται  
δενδρόν δι' οὗ νυν ὑψοῦμε ἐνὸς προσκυνοῦν  
τες αὐτὸν σεμεγαλυνούομεν  
λυνόμεεν ἐν

ἐτέρα

Οδία βρωσέως τοῦ ξυυλου τῷ



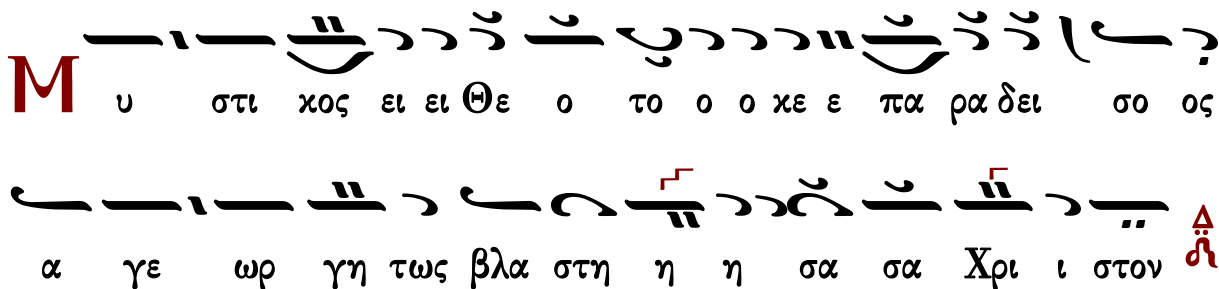
’Аегѣ

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ὡδὴ θ'

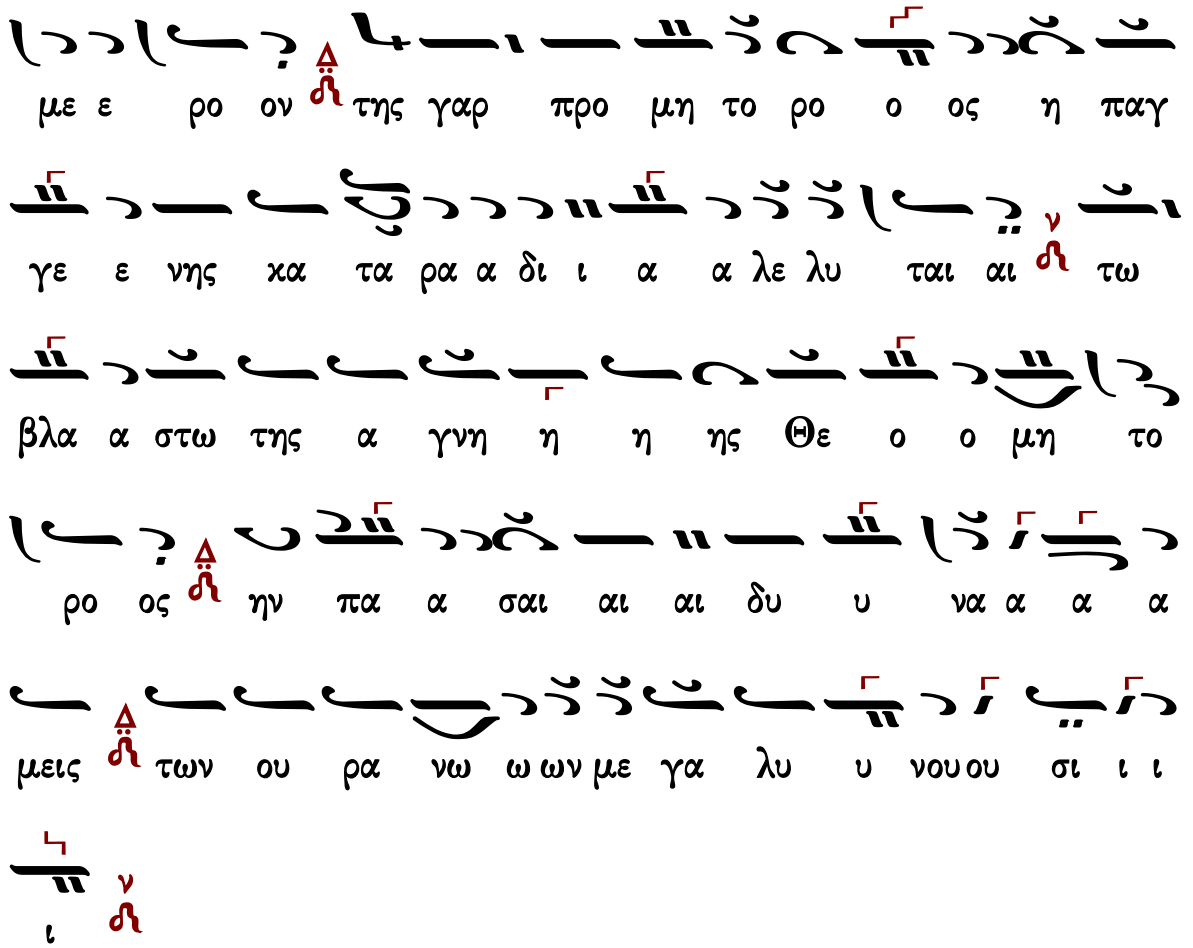
Ἡχος λ π ρ Νη

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.91#







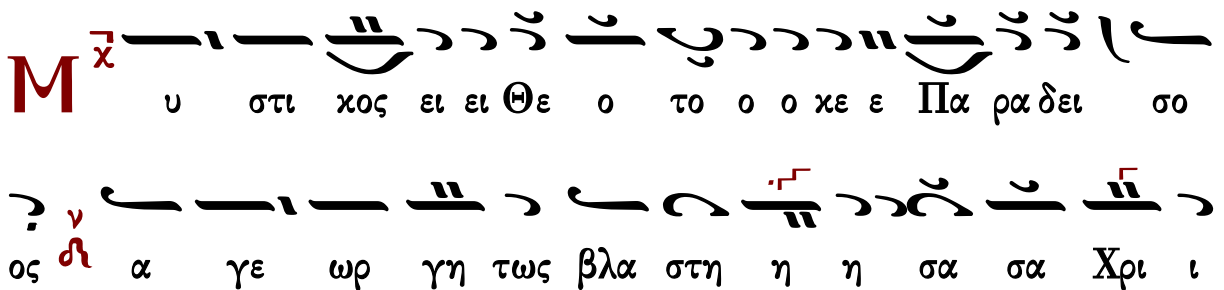


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π ρη Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.291/1640\*



στον υφ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο

ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται

αι αι δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου

με ε ε ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ες α

α αυ τον σε με γα λυ υ υ υ νο ο ο ο μεν

το τέλος σε ε ε με γα λυ νο ο με ε ε εν

έτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

τος δι ι α Στα αυ ρου κα τη η ηρ γη η ται ση με ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης

κα τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι τω

βλα στω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα

νω ωων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

το τέλος των ου ρα α α νω ων με γα λυ υ νου

ου σι ι ι ι

Κωνσταντίνου Λάμπρου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος λ ρ Νη

Κωνσταντίνου Λάμπρου  
05 Θεία Λειτουργία 5.25 σ.257\*

Μ υ στι χο ος ει ει Θε ε ο ο το ο ο ο κε ε

πα ρα δει σο ος α α γε ωρ γη η τως βλα α στη

η σα α σα Χρι στο ο ον υφ ου ου το ο του ου

Στα α αυ ρου ζω η φο ο ο ο ρον εν γη πε

ε φυ υ υ του ου ουρ γη ται δε ε ε εν δρον δι

ου ου νυν υ ψου με ε ε ε νου προσ κυ νου ου

ου ουν τες α α αυ το ον σε με ε ε γα λυ υ

υ υ νο ο ο ο μεν

τὸ τέλος

λυ υ νο ο ο μεε ε ε εν

ἑτέρα

Ο δι α βρω ω ω σε ω ω ω ως του ου ξυ

υ υ λου ου <sup>γ</sup> τω γε νει ει προ ος γε ε νο ο ο ο

ο με ε νο ος θα α να το ος <sup>γ</sup> δι α Σταυ

ρου κα τη η η ηρ γη ται αι ση η με ε ρο ον <sup>Δ</sup>

της γαρ προ μη το ρος η πα αγ γε νης κα τα α

ρα α δι ι α α λε ε λυ ται αι <sup>γ</sup> τω βλα α στω της

α γνη η η ης θε ο ο μη το ο ρο ος <sup>Δ</sup> ην

πα α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις <sup>Δ</sup> των ου

ρα νω ωων με γα λυ υ νου ου ου σι ι ι ι ι <sup>γ</sup>

# Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ (προεόρτιες/μεθεόρτιες)

1/8, 6-13/8, 24/8-21/9

ἤχος πλ.δ'

- α **Σ**ταυρὸν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἥνωσεν, ἐπ' εὖρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδοξασται.
- γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στειρευούσῃ δὲ πρώην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνθησε, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.
- δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.
- ε **Ὡ**τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθεὶς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.
- ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπεζωγράφησε, τοῦ σαρκὶ προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριμέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.
- ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔψαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαὶ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ὥδῃ α΄

Ἦχος λ ρ̣ ρ̣ ρ̣

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.225#

ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα βδω την

Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πεζευσαν τι την

δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ μα σι κρο τη

σας η νω σεν επ ευ ρους δι α γραψα α ας το α ητ τη

τον ο ο πλον δι ο Χρι στω α σωμεν τω Θε ω

η μων ο τι δε δο ξα σται η δῃ γ' ρ̣ ρ̣

Ρ α βδος εις τυ υ πον του μυ στη ρι ου πα ρα λαμ

βα νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

ε α <sup>ν</sup> τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

εξ ην θη η σε <sup>Α</sup> χορός α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε

ω ω μα <sup>ν</sup> ὠδή δ' <sup>Γ</sup> η

Ε ι σα κη η κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

σου το μυ στη ρι ον κα τε νο η σα τα ερ γα σου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα <sup>Γ</sup> ὠδή ε' <sup>Β</sup> ν <sup>Α</sup>

Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος <sup>ν</sup> δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας <sup>Α</sup> τω εν σοι δε λε

α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σαρ κι <sup>Α</sup> τω πα



ρε εχουντι την ει ρη νηνταις ψυχαις η ημων ν ᾠδὴς'

N ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας ν ᾠδὴς' το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η μερος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε Δ ᾠδὴς' του σαρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ουου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερσει τον κο ο σμον φω τι σα αντος ν ᾠδὴς'

E εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυσ σε

βους λα ους εκλο νη σε 6 ν ᾠδὴς' πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυγους ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα

τω ω ω σε θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη το ος ει

ὥδῃ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον

Ε υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δος ις α

ριθμοιδη μι ουρ γον πα τε ρα Θε ον υ μνει ει τε τον

  
 συγ κα τα βαντα λο ο ο γον και το πυρ εις δρο ο σον  
  
 με τα ποι ησαντα και υ περ υ ψου τε το πα α σι  
  
 ζω ην πα ρε ε χον Πνε ευμα παν α γι ον εις τους  
  
 αι ω ω να α α ας

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ὥδη α'

Ἦχος λ π δ' —<sup>2</sup>

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*

  
 ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα  
  
 βδω την Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πε ζευσαν  
  
 τι την δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ  
  
 μα σι κρο τη σας η νω σεν επ ευ ρους δι α γρα ψα ας

το α ητ τη τον ο πλον δι ο Χρι στω α σω μεν

τω Θε ω η μων ο τι δε δο ξα σται

Ρ α βδος εις τυ πον του μυ στη ρι ου πα ρα λαμ βα

νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

α τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

εξ ην θη σε χορὸς α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε ε

ω ω μα

Ε ισ α κη κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας σου

το μυ στη ρι ον κα τε νο η σα τα ερ γα σου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα

ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων

ὥδῃς'

Ν ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η μερος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σαρ κι προσ πα γεν τος Χρι

σου του Θεου και τρι η με ρω ε γε ερσει

τον κο ο σμον φω τι ι σα αν τος

Εκ νο ον προσ τα γμα τυ ραν νου δυσ σε βους

λα ους ε κλο νη σε πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει

μα τω σε θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον αλλ

αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψαλ λον ο υ περ υ μνη η το ος των πα

τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη τος ει

Αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν

τον Κυριον 

υ λο γει ει τε παι αι αι δεσ της Τρι α δος ι

σα ρι θμοι δη μι ουρ γον Πα τε ρα Θε ον υ μνει ει

τε τον συγ κα τα βαν τα Λο ο ο γον και το πυρ

εις δρο ο σον με τα ποι η σαν τα και υ περ υ ψου

τε το πα α σι ζω ην πα ρε ε χον Πνευ μα παν α γι ον εις

τους αι ω ω να α α ας 

Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>2</sup>

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π ς 

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.287/1636\*

C<sup>χ</sup> ταυ ρον χα ρα α ξας Mω ω ση η ης επ ευ

θει ει ει ει α ας ρα α α βδω<sup>χ</sup> την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με<sup>δ</sup> τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι<sup>ν</sup> την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως<sup>Δ</sup> Φα ρα ω

τοι οis αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν<sup>δ</sup> επ

ευ ρους δι α α γρα α α ψας<sup>Δ</sup> το α ητ τη τον ο

ο ο πλον<sup>δ</sup> δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν<sup>δ</sup> τω

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται<sup>δ</sup> <sup>ν</sup> <sup>δ</sup> φδὴ γ'

P α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου<sup>Δ</sup>

πα α ρα α λα αμ βα α α νε ε ε ε ται<sup>Δ</sup> τω



βλα στω ω ω γαρ προ ο ο κρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α **η** τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εχ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε **δι** ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου **δι** χορός α΄

ΕΙΣ ΚΡΑ ΑΤΟΣ ΚΑΙ ΣΤΕ ΡΕ Ε Ω Ω ΜΑ

στε ρε ε ε ε ε ω ω ω ω μα

Εἰς αὐτὴν ἡμεῖς Κυρίου ἐκτε-  
την ἡμῶν οἰοί-  
μεθα.

χο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα ς ς ὡδὴ ε΄

ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον εν

ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευσ και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ ος πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νην ταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

N ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οσ τα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει ὧδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Ευ λο γει ει ει ει τε παι αι αι δε ες της

Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον

Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον υ μνει

ει τε τον συγ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον και το

ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α και

υ περ υ υ ψου ου ου ου τε το ο πα σι ι ζω η

ην πα α ρε ε ε ε χον Πνευ ευ μα παν α γι ι ονεις τους

αι ω ω να α α ας

## Τιμιωτέρα ἡχος πλ.δ΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55


 την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο


 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ραφιμ  την α δι α


 φθο ρως Θε ον λο ο γον τε κου σαν  την ον τως Θε


 ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


 ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι


 ον  και η γαλ λι α σε το  πνευ μα μου ε πι


 τω Θε ω ω ω τω σω τη ρι μου 

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκρι ι ι τως των Σεραφιμ την α

διαφθορως Θεον Λοογον τεκουσαν την ον

τως Θεοτοκον σεεμεγαλυνοομεν

Οτιεπεβλεψεν επιτην ταπεινωσιν

της δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μακαρι

ουσι με πασαι αι γενεαι

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκρι ι ι τως των Σεραφιμ την α

διαφθορως Θεον Λοογον τεκουσαν την ον



τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ο τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ

να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του και το

ε λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι ι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου ουσαν την ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του δι ε σχορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυτων

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι ι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου ου σαν την ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ

υ ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ<sup>ρ</sup> την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν<sup>ρ</sup> την ο ο

ον τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν<sup>ν</sup>

Α<sup>χ</sup> ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους<sup>ρ</sup> κα θως ε λα λη σε προς τους

πα τε ρας η μων<sup>ρ</sup> τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι

αυ του ε ως αι ω νος<sup>ρ</sup>

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ<sup>ρ</sup> και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ<sup>ρ</sup> την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν<sup>ρ</sup> την ο ο

ον τως Θεο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν ν δλ

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.δ'

**Μ**υστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὕφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῇ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

**Ὁ** διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήργηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρρα διαλέλνται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη  
Κωνσταντίνου Λάμπρου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π δλ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

**Μ**υστικός εἶ Θεοτόκε Παράδεισος α γε  
ωρ γη τως βλα στη σασα Χρι στον δλ υφ ου το του Σταυ ρου ζω

η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται δε ενδρον

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντες αυ τον σε με

γα λυ νο ο μεν

λυ νο με ε ε ε ε ε εν

έτέρα

Ο δι α βρω σε ω ω σ του ξυ υ υ λου τω γε νει

προ σ γε νο με νος θανατος δι α Σταυ ρου κα τη ηρ

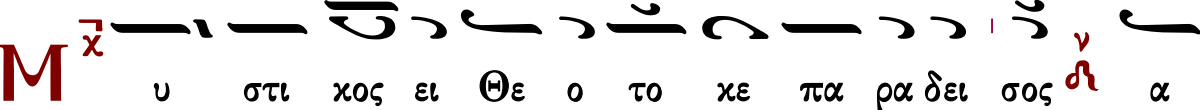
γη ται ση με ρον της γαρ προ μη το ρος η πα γ γε νης

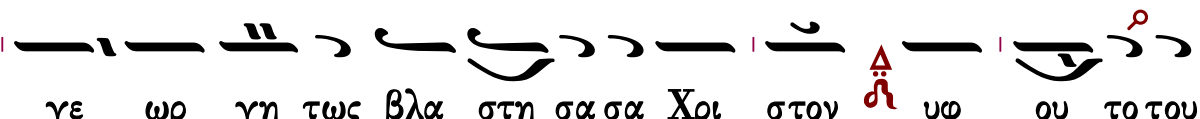
κα τα ρα δι ι α λε λυ ται τω βλα στω της α

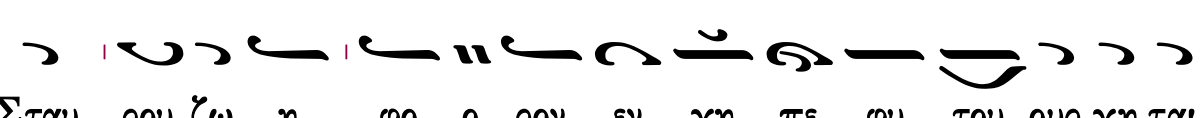
γνη ης Θε ο μη το ρος ην πα σαι αι δυ να α μεις

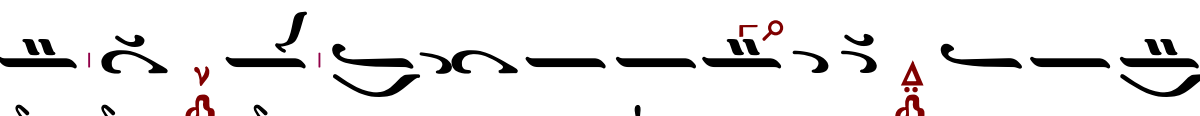
των ου ρα νω ων με γα λυ νου σι ι ι ι

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


 υ στι κος ει Θε ο το κε πα ρα δει σος α


 γε ωρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον υφ ου το του


 Σταυ ρου ζω η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται


 δεν δρον δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νουν


 τες αυ τον σε με γα λυ υ νο ο μεν λυ νο με ε ε εν

ἑτέρω

Ὁ <sup>χ</sup> δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου <sup>γ</sup> α τω  
γε νει προσ γε νο μενος θα να τος <sup>ε</sup> α δι α Σταυ ρου κα  
τηρ γη ται ση με ρον <sup>γ</sup> α της γαρ προ μη το ρος η παγ  
γε νης κα τα ρα δι α λε λυται <sup>δ</sup> α τω βλα στω της

α γνη η ης Θε ο μη το ρος η ην πα σαι αι  
δυ να μεις των ου ρα νω ων με γα λυ νου σι ι ι  
ι

Ἄεγν

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ δὲ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.91#

Μ υ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε πα ρα δει σο ος  
α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι στον  
υφ ου ου το του ου στα α αυ ρου ζω η φο ο ρον  
ε εν γη πε φυ υ του ου ου ουρ γη ται αι αι  
δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου με ε ε

ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ες α αυ τον

σε με γα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν

το τέλος λυ υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε ε ε ε ε

εν

έτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το

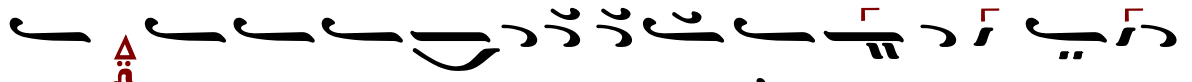
ος δι α Στα αυ ρου κα τη η η ηρ γη ται αι ση

με ε ρο ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ

γε ε νης κα τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι τω

βλα α στω της α γνη η η ης Θε ο ο μη το



  
 ρο ος  ην πα α σαι αι αι δυ υ να α α α  
  
 μεις  των ου ρα νω ωων με γα λυ υ νου ου σι ι ι  
  
 ι 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ὥδῃ θ'

Ἦχος λ π ς Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.291/1640\*

  
 Μ  υ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε Πα ρα δει σο  
  
 ος  α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι  
  
 στον  υφ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο  
  
 ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται  
  
 αι αι δε ε ε εν δρον  δι ου ου νυν υ ψου

με ε ε ε νου  προσ κυ νου ου ου ουουν τε ες α

α αυ τον  σε μεγα λυ υ υ υ νο ο ο ο μεν 

 το τέλος

σε ε ε με γα λυ νο ο με ε ε εν 

έτέρα

 δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

 του ου  τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

 τος  δι ι α Στα αυ ρου κα τη η η ρ γ η η ται ση με ρο

 ον  της γαρ προ μη το ρο ο ος η πα γ γε ε νης

κα τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι  τω

βλα στω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος  ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα

νω ωων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

των ου ρα α α νω ων με γα λυ υ νου

ου σι ι ι ι

Κωνσταντίνου Λάμπρου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ ρ Νη

Κωνσταντίνου Λάμπρου  
05 Θεία Λειτουργία 5.25 σ.257\*

Μ υ στι χο ος ει ει Θε ε ο ο το ο ο κε ε

πα ρα δει σο ος α α γε ωρ γη η τως βλα α στη

η σα α σα Χρι στο ο ον υφ ου ου το ο του ου

Στα α αυ ρου ζω η φο ο ο ο ρον εν γη πε

ε φυ υ υ του ου ουρ γη ται δε ε ε εν δρον δι

ου ου νυν υ ψου με ε ε ε νου προσ κυ νου ου

ου ουν τες α α αυ το ον σε με ε ε γα λυ υ

υ υ νο ο ο ο μεν

το τέλος λυ υ νο ο ο με ε ε ε εν

έτέρα

Ο δι α βρω ω ω σε ω ω ω ως του ου ξυ

υ υ λου ου τω γε νει ει προ οσ γε ε νο ο ο ο

ο με ε νο ος θα α να το ος δι α Σταυ

ρου κα τη η η ηρ γη ται αι ση η με ε ρο ον

της γαρ προ μη το ρος η πα αγ γε νης κα τα α

ρα α δι ι α α λε ε λυ ται αι τω βλα α στω της

α γνη η η ης θε ο ο μη το ο ρο ος ην

πα α σαι αι αι δυ υ να α α α α μεις των ου

ρα νω ωων με γα λυ υ νου ου ου σι ι ι ι ι

# Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ

14 Σεπτεμβρίου

ἤχος πλ.δ'

- α **Σ**ταυρὸν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὐρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στερειούσῃ δὲ πρῶην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνθησε, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.
- δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.
- ε **Ὡ** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.
- ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπεζωγράφησε, τοῦ σαρκὶ προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριμέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.
- ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔψαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαὶ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

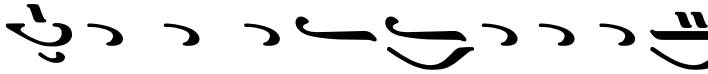
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

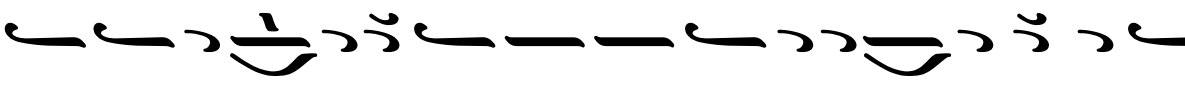
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

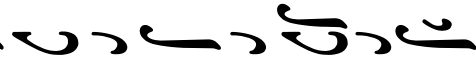


—    
ἐξ ἡν ἡ σὲ  χορὸς α' ξυ λον Σταυ ρου εἰς κρα τος και στε ρε

 ω ω μα    
ὠδὴ δ' 

  
Εἰ σα κη ἡ κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

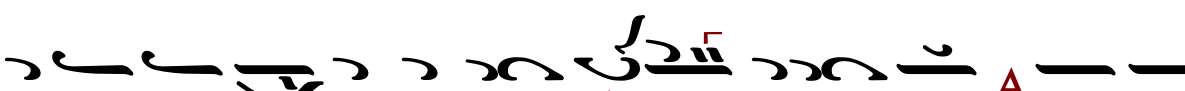
  
σου το μυ στη ρι ον κα τε νο ἡ σα τα ερ γα σου και ε

—    
δο ξα σα σου την Θε ο τη τα    
ὠδὴ ε' 

  
Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

  
α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος  δι ου

—    
πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη ἡ σας  τω εν σοι δε λε

   
α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σα ρ κι  τω πα

   
ρε ε χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις ἡ ἡ μων    
ὠδὴ ζ'



**Ν** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας **γ** το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε **Δ** του σα ρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερ σει τον κο ο σμον φω τι σα αντος **γ** **ὠδὴ ζ'**

**Ε** εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυσ σε

βους λα ους ε κλο νη σε **β** πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους **γ** ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα

τω ω ω σε  θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον 

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευμα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον  ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη το ος ει 

ὠδὴ ἡ'

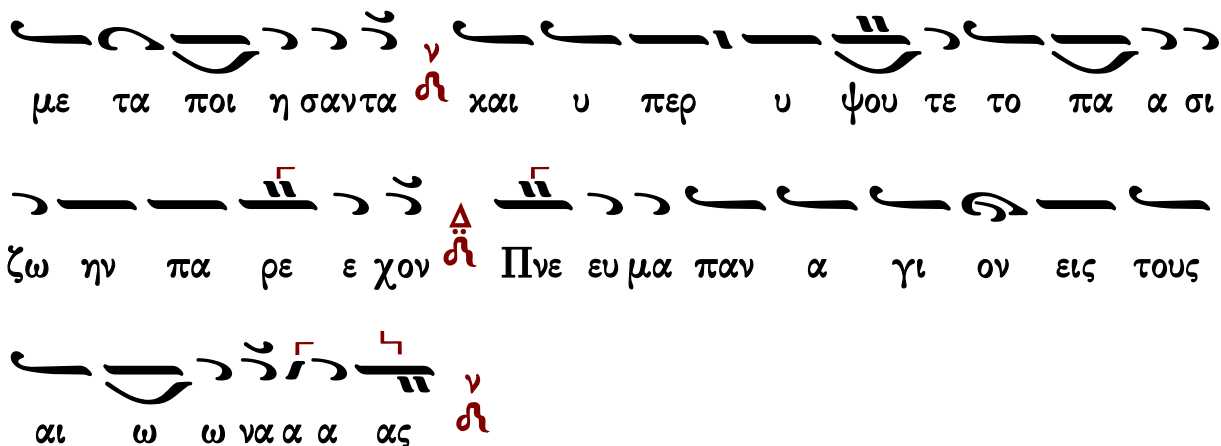
 ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον 

 υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δος ισ α

ριθμοι δε μι ουρ γον πα τε ρα Θε ον  υ μνει ει τε τον

συγ κα τα βαν τα λο ο ο γον  και το πυρ εις δρο ο σον



## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος λ ρι

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*



$\Omega$   
 $\gamma$   
 $\Omega \quad \dot{\omega} \delta \eta \gamma'$

P



١٤

2

 $\frac{1}{2}$ 

—

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων

**N** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σα ρ κι προσ πα γεν τος Χρι

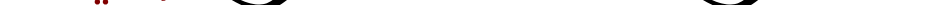
στου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε ρσει

ῥῶδῃ ζ'

e

[illegible]

דנט | ז | - | דט | ז | ד-||



יְהוָה יִשְׁמַרְנוּ יְהוָה יִשְׁמַרְנוּ יְהוָה יִשְׁמַרְנוּ

[illegible]

ὥδ' ἦ'

 $\alpha$ 

— ۱۱۱ —



θει ει ει ει α ας ρα α α βδω την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως Φα ρα ω

τοι οισ αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν επ

ευ ρους δι α α γρα α α ψας το α ητ τη τον ο

ο ο πλον δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν τω

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται

Ρ α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου

πα α ρα α λα αμ βα α α νε ε ε ε ται τω

βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε



ε ε ρε ε ε ε α τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου χορός α'

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

στε ρε ε ε ε ε ω ω ω ω μα ὠδὴ δ'

Ε ισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

κο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα ὠδὴ ε'

Ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον εν

ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευς και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ ος πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νην ταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οστα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Ε υ λο γει ει ει τε παι αι αι δε ες ν της  
 Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον  
 Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον ν υ μνει  
 ει τε τον συγ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον ε και το  
 ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α ν και  
 υ περ υ υ ψου ου ου ου τε το ο πα σι ι ζω η  
 ην πα α ρε ε ε ε χον Πνευ ευμα παν α γι ι ονεις τους  
 αι ω ω ναα α α ας

## ὁδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α'

ἦχος πλ.δ'

«Μυστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ

Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῇ, πεφυτούργηται δένδρον· δι’ οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν». (β')

Ἀγαλλέσθω τὰ δρυμοῦ ξύλα σύμπαντα, ἀγιασθείσης τῆς φύσεως αὐτῶν, ὑφ’ οὗ περ ἐξ ἀρχῆς, ἐφυτεύθη Χριστοῦ, τανυθέντος ἐν ξύλῳ· δι’ οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦμεν αὐτὸν καὶ μεγαλύνομεν.

Ἰερὸν ἡγέρθη κέρας θεόφροσι, τῆς κεφαλῆς τῶν ἀπάντων ὁ Σταυρός, ἐν ᾧ ἁμαρτωλῶν νοουμένων, συνθλῶνται τὰ κέρατα πάντα, δι’ οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦμεν αὐτὸν καὶ μεγαλύνομεν.

κανὼν β'

«Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήργηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρα διαλέλγεται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις, τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσι».

Μὴ τὴν πικρίαν τὴν τοῦ ξύλου, ἐάσας ἀναιρέσιμον Κύριε, διὰ Σταυροῦ τελείως ἐξήλειψας· ὅθεν καὶ ξύλον ἔλυσε ποτέ, πικρίαν ὑδάτων Μερρᾶς, προτυποῦν τοῦ Σταυροῦ τὴν ἐνέργειαν· ἣν πᾶσαι αἱ Δυνάμεις, τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἀδιαλείπτως βαπτομένους, τῷ ζόφῳ τοῦ προπάτορος Κύριε, διὰ Σταυροῦ ἀνύψωσας σήμερον· ὥς γὰρ τῇ πλάνῃ ἄγαν ἀκρατῶς, ἡ φύσις προκατηνέχθη, παγκλήρως ἡμᾶς πάλιν ἀνώρθωσε, τὸ φῶς τὸ τοῦ Σταυροῦ σου· ὃν οἱ πιστοὶ μεγαλύνομεν.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἵνα τὸν τύπον ὑποδείξης, τῷ κόσμῳ προσκυνούμενον Κύριε, τόν τοῦ Σταυροῦ ἐν πᾶσιν ὥς ἔνδοξον, ἐν οὐρανῷ ἐμόρφωσας, φωτὶ ἀπλέτῳ ἡγλαϊσμένον, βασιλεῖ πανοπλίαν ἀήττητον· ἣν πᾶσαι αἱ Δυνάμεις, τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανὼν α' ὑδὴ θ'

ὁ εἰρμὸς Ἦχος λ π ρι Νη Ιωάννου Πρωτοψάλτου Ειρμολόγιον 1903 σ.235#

Μ υ στι κος ει Θε ο το κε Πα ραδεισος ρι α γε

ωρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον  υφ ου το του Σταυ ρου ζω

η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται δε ενδρον 

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντες αυ τον σε με

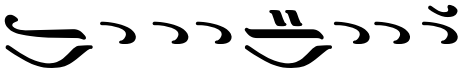
 γα λυ νο ο μεν  (β')

 γαλ λε σθω τα δρυ μου ξυ λα συμ παν τα α

γι α σθει σης της φυ σε ως αυ των  υφ ου περ εξ αρ

χης ε φυ τε ευ θη Χρι στου τα νυ θε εν τος εν ξυ

λω  δι ου νυν υ ψου με ε νου  προσ κυ νου ου μεν αυ

 τον και με γα λυ νο ο μεν 

 ε ρον η γε ρθη κε ρας θε ο φρο σι  της κε

φα λης των α παν των ο Σταυ ρος εν ω α μαρ τω λων νο ου

με ε νων <sup>Δ</sup>δι συν θλωνται τα κε ε ρα τα παν τα <sup>ν</sup>δι

ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ου μεν αυ τον και με

γα λυ νο ο μεν <sup>ν</sup>δι

Κανών θ' ὠδὴ θ'

εἰρμός ἄλλος

Ἦχος λ π ς Νη

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.236#

Ο δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει

προσγε νο με νος θανατος <sup>ν</sup>δι δι α Σταυ ρου κα τη ηρ

γη ται ση μερον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης

κα τα ρα δι ι α λε λυ ται <sup>ν</sup>δι τω βλα στω της α



γνη ἡς Θεοῦ οὐ μὴ τοῦτος ἦν πασαι αἰδύναα μεις

των οὐρανῶν μεγαλύνοῦσιν

Μητὴν πικριαντὴν τοῦ ξυλλοῦ εα

σας ἀναρῆσαι μόν Κυριε διὰ Σταυροῦ τε

λείπει ὡς ἐξηλείψας ὁ θεὸς καὶ ξυλλοῦ ἐλύσε πο

τε πικριαντοῦ δατῶν Μερρας προτοπουντοῦ

Σταυροῦ οὐτὴν ἐνεργειαν ἦν πασαι αἰδύναα

μεις των οὐρανῶν μεγαλύνοῦσιν

Δοξα Πατρι καὶ Υἱο καὶ ἀγίω Πνεύματι

τι

**Α** δι α λει πτως βα α πτο με ε ε νους τω ζο

φω του προ πα το ρος Κυ ρι ε **ν** δι α Σταυ ρου α

νυ ψω σας ση μερον ως γαρ τη πλα νη α γαν α κρα

τως η φυ σεις προ κα τη νε ε χθη **ν** παγ κλη ρως η μας

πα λιν α νωρ θω σε το φως το του Σταυ ρου ου σου ον

οι πι στοι οι μεγα λυ νο ο μεν **ν**

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην **ν**

**Ι** να τον τυ πον α α πο δει ει ει ξης τω κο σμω προς

κυ νου με νον Κυ ρι ε **ν** τον του Σταυ ρου εν πα σιν

ως εν δοξον εν ου ρα νω ε μορ φωσας φω τι α πλε  
τω η γλα ι σμε ε νον βα σι λει παν ο πλι αν  
α ητ τητον ην πα σαι αι Δυ να α μεις των ου  
ρα νω ωνμεγα λυ νουουσιν

## Καταβασία Θ' φδῆς

ἦχος πλ.δ'

**Μ**υστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὕφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῇ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

**Ὁ** διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήργηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρα διαλέλυται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη  
Κωνσταντίνου Λάμπρου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Μ** υ στι κο ς ει Θε ο το κε Πα ραδειςος ρ α γε

ω ρ γη τω ς βλα στη σα σα Χρι στον ρ υφ ου το του Σταυ ρου ζω

η φο ο ρον εν γη πε φυ του ου ρ γη ται δε ενδρον ρ

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντες αυ τον σε με

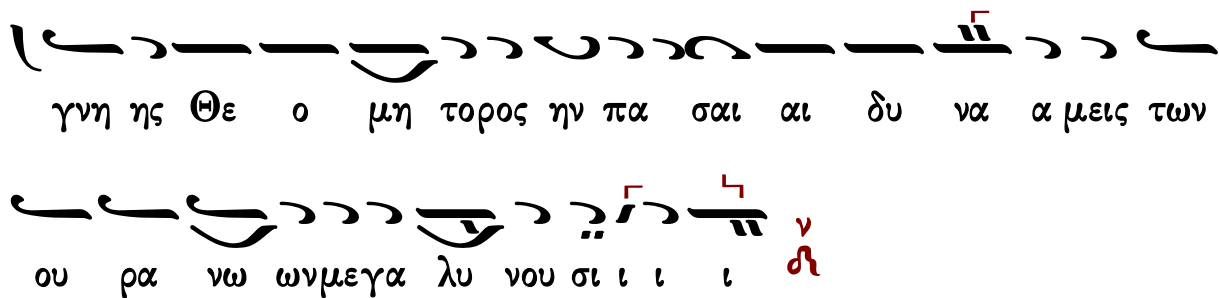
γα λυ νο ο μεν ρ

**Ο** δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει

προ σ γε νο με νος θανατος ρ δι α Σταυ ρου κα τη ηρ

γη ται ση με ρον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης

κα τα ρα δι ι α λε λυ ται ρ τω βλα στω της α



Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ ϝ Νη

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.295/1644\*





ε εν γη πε φυ υ του ου ου ουρ γη ται αι αι

δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου με ε ε

ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ες α αυ τον

σε μεγα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ λου

ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το ος δι

α στα αυ ρου κα τη η η ηρ γη ται αι ση με ε ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι τω βλα α στω της α

γνη η η ης Θε ο ο μη το ρο ος ην πα

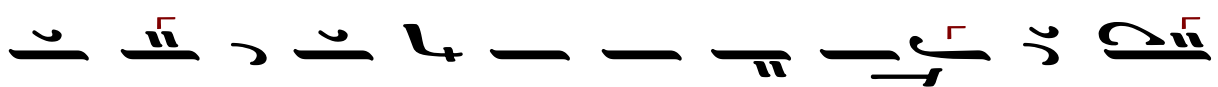
  
 α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις  των ου ρα νω  
  
 ωων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ῥῳδῆ θ'

Ἦχος λ π ρι Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.291/1640\*

  
 Μ  υ στι χος ει ει Θε ο το ο ο κε ε Πα ρα δει σο  
  
 ος  α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι  
  
 στον  υφ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο  
  
 ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται  
  
 αι αι δε ε ε εν δρον  δι ου ου νυν υ ψου  
  
 με ε ε ε νου  προσ κυ νου ου ου ουουν τε ες α



α αυ τον σε μεγα λυ υ υ υ νο ο ο ο μεν

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

τος δι ι α Στα αυ ρου κα τη η ηρ γη η ται ση με ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

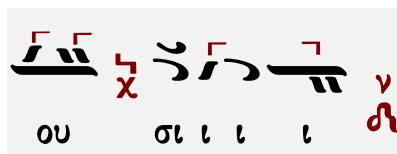
τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι τω βλα

πτω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος ην πα α σαι

αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα νω ω ω ν

με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

το τέλος των ου ρα α α νω ω ν με γα λυ υ νου



## Κωνσταντίνου Λάμπρου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π ρ Νῆ

Κωνσταντίνου Λάμπρου  
05 Θεία Λειτουργία 5.25 σ.257\*

**Μ** υ στι χο ος ει ει Θε ε ο ο το ο ο ο κε ε  
πα ρα δει σο ος α α γε ωρ γη η τως βλα α στη  
η σα α σα Χρι στο ο ον υφ ου ου το ο του ου  
Στα α αυ ρου ζω η φο ο ο ο ρον εν γη πε  
ε φυ υ υ του ου ουρ γη ται δε ε ε εν δρον δι  
ου ου νυν υ ψου με ε ε ε νου προσ κυ νου ου  
ου ουν τες α α αυ το ον σε με ε ε γα λυ υ

υ υ νο ο ο ο μεν ν

Ο δι α βρω ω ω σε ω ω ω ως του ου ξυ υ

υ λου ου ν τω γε νει ει προ ος γε ε νο ο ο ο ο με

ε νο ος θα α να το ος ν δι α Σταυ ρου κα

τη η η ηρ γη ται αι ση η με ε ρο ον ν της γαρ

προ μη το ρος η πα αγ γε νης κα τα α ρα α δι ι

α α λε ε λυ ται αι ν τω βλα α στω της α γνη

η η ης θε ο ο μη το ο ρο ος ν ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α α μεις ν των ου ρα

νω ωων με γα λυ υ νου ου ου σι ι ι ι ι ν

# Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)

8-20 Νοεμβρίου

ἤχος δ'

- α Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί· καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν Εἴσοδον.
- γ Τοὺς σοὺς ὕμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θιάσον συγκροτήσαντας, πνευματικὸν στερέωσον· καὶ τῇ σεπτῇ Εἰσόδῳ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαζε· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐν τῇ σεπτῇ εἰσόδῳ σου· σὺ γάρ, ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔνδον εἰσῆλθες ἐν τῷ ναῷ τοῦ Θεοῦ, ὥσπερ καθαρώτατος ναός, πᾶσι τοῖς ὕμνοῦσί σε, τὴν εἰρήνην βραβεύουσα.
- ς Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα, Θεὸν δοξάζοντες.
- ζ Οὐκ ἐλάτρευσαν, τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα· ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- η Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος· νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἅπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Σύντομοι

ὥδ' α'

Ἦχος ὲ ς Βε

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξο μαι τη βα σι λι δι Μη

τρι και ο φθη σο μαι φαι δρωσ παν η γυ ρι ζων και

α σω γη θο μενος ταυ της την εισ ο δον

ὥδὴ γ'

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη θι α σον συγ κρο τη σαν

τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον καν τη σε πτη εισ

ο δω σου στε φα νων δο ξης α ξι ω σον

ὥδὴ δ'

Τ ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην της εκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως σου του υ ψι στου

ο προ φη της Αβ βα κουμ <sup>6</sup>κα τα νο ων ε κραυ

γα ξε <sup>Δ</sup>δο ξατηδυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>←ειρημολόγιον ΖΩΗC ὠδὴ ε'

<sup>Ε</sup>ξε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη εισ ο

δω σου <sup>Δ</sup>συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε εν

δον εισ η ηλθες εν τω να ω ω του Θε ου ου ωσ

περ κα θα ρω τα τος να ος πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup>την ει

ρη η νην βρα βευ ουσα <sup>6</sup>ὠδὴ ε'

<sup>Τ</sup>ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος <sup>π</sup>δευ τε τας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

6  
λ  
τες

ὠδὴ ζ'

Ο υκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα 6 λ αλ λα πυ ρο ος α πει λην 6 αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον 6 λ υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

6  
λ  
ος ει

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6 λ

Π αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το ο το τε

μεν τυ που μενος νυν δε εν ερ γου με ε νος την ου

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλ λου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

ΤΕΙΣ ΠΑΝ ΤΑΣ ΤΟΥΣ ΑΙ Ω Ω ΝΑ Α Α Α Ας

Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ῥῶδῃ α'

ἤχος ὁ ὡς Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.370/2707\*

νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ω



πα αν η η γυ υ ρι ζων <sup>π</sup> και α α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην εισ ο ο δο ον <sup>6</sup>

ῥῶδῃ γ'

**T** ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε <sup>Δ</sup> ως ζω ω ω ω σα α και αι

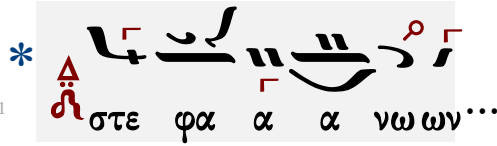
α α α φθο νος πη η γη <sup>Δ</sup> θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον <sup>π</sup> καν τη σε πτη ει εισ ο ο δω ω σου χορὸς α'

\* <sup>Δ</sup> στε φα α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον <sup>6</sup>



ὡδή δ'

**Τ** ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ ψι

σου ου ο προ φη η της Αβ βα α κουμ κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε δο ο ο ο ξα

τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

**Ε** ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η ει εισ ο ο δω ω σου συ υ υ γα α

α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε

εν δον εισ η η η η ηλ θες εν τω να α α ω ω

ω ω ω του ου Θε ε ε ου ω ωσπερ κα θα ρω

ω τα α το ος να α ο ο ο ος πα α σι ι τοι οις

υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη ην

βρα βε ευ ου ου σα α

ὠδὴς'

Την θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ηην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος δευ τετας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες

Ο υχ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σαν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον υ περ υ υ υ μνη η

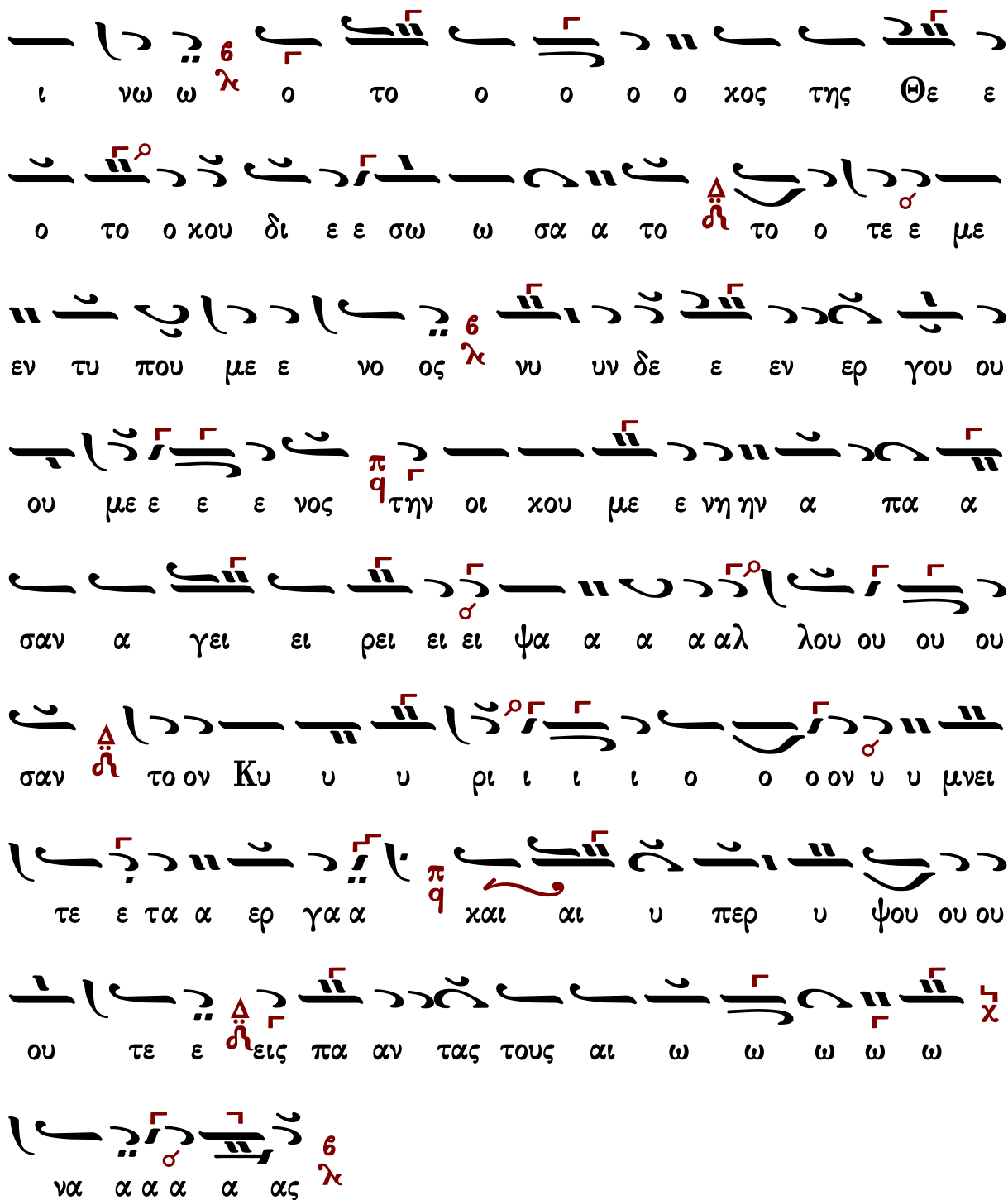
η η τε ε ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι



## Τιμιωτέρα ἡχος δ΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Την τιμιωτέραν των Χερουβιμ<sup>6</sup> και ενδοξο  
 τεραν ασχριτως των Σεραφιμ<sup>6</sup> την αδια  
 φθорως Θεον Λογον τεκουσαν<sup>6</sup> την οντως Θεο  
 το οκονσεμεγααλυνομεν<sup>6</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Μεγαλυνει η ψυχη μου τον Κυριον<sup>6</sup>  
 και η γαλια σε το πνευμα μου επιτω Θε  
 ωωτωσωτηριμου<sup>6</sup>

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λ

Ο <sup>λ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νωσιν

<sup>σ</sup> της δου λης <sup>σ</sup> αυ του <sup>6</sup>λ ι δου γαρ α πο του <sup>λ</sup> νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup>λ

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο



το κον σε μεγα λυ νομεν<sup>6 λ</sup>

Ο<sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

τος<sup>6 λ</sup> και α γι ον το ο νο μα αυ του<sup>6 λ</sup> και το ε λε

ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον<sup>6 λ</sup>

Τ ην<sup>σ</sup> τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ<sup>6 λ</sup> και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ<sup>6 λ</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν<sup>6 λ</sup> την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν<sup>6 λ</sup>

Ε<sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του δι ε σκορπισεν υ περ η φανους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Κα θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>Δ</sup> την α δι α φθο

ρως <sup>Δ</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π</sup> την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>

<sup>χ</sup> ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους <sup>6</sup> κα θως ε λα λη σε προς τους πα

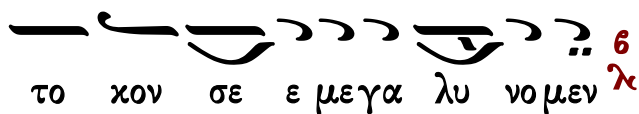
τε ρας η μων <sup>6</sup> τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος <sup>6</sup>

<sup>Τ</sup> την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ</sup> και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>Δ</sup> την α δι α φθο

ρως <sup>Δ</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π</sup> την ον τως Θε ο



## Καταβάσια θ' ᾠδῆς

ἦχος δ΄

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυριζέτω δέ, αὐλῶν νόων, φύσις γεραίρουσα, τὰ ἱερὰ Εἰσόδια, τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

## Σύντομος

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

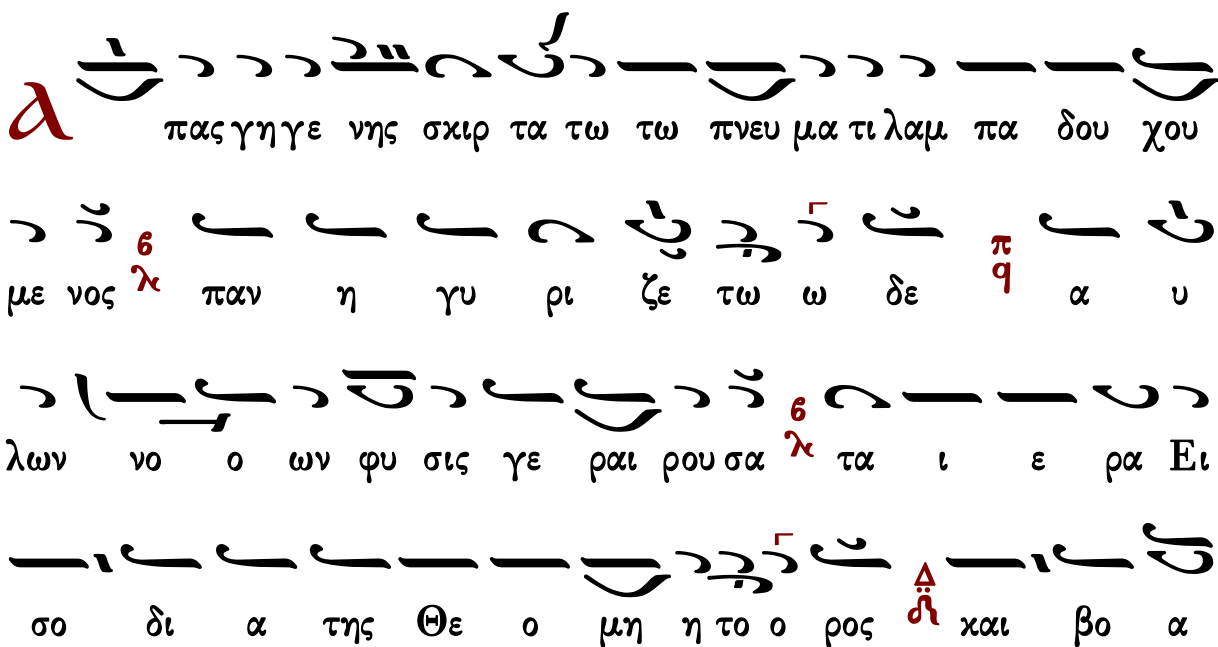
διασκ. Κωνστ.Παπαγιάννη

## Σύντομος

မုၢ်သဲၣ် ၵုၢ်

Ἦχος Λ ϣ Ϟ Βϛ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.330#



α α α α τω χαι ρις παμμα κα ριστε Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε ε ε ε ε

Ἀρχή

ὥδ' ἔ

Ἦχος δὲ Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1905 σ.55#

α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ξε ε ε τωω ω ω δε α υ λωων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρουου σα α τα ι

ε ρα α Ειεις ο ο δι ι α της Θε ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α

α α τω  χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε 

Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε 

Ἀρχή (διασκ. Παπαγιάννη)

ῥοδὴ θ'

Ἦχος  Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*

 α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ος  παν η γυ υ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε  α υ λω ων νο ο

ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α  τα ι ε

ρα α Ει ει σο ο δι ι α της Θε ο ο ο μη η η

η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α

τω <sup>Δ</sup>χαι αι ροι οis πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup>λ Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε <sup>6</sup>λ

# Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου 21/11

21 Νοεμβρίου

ἤχος α΄

- α **Χ**ριστὸς γεννᾶται, δοξάσατε. Χριστὸς ἐξ οὐρανῶν ἀπαντήσατε. Χριστὸς ἐπὶ γῆς, ὑψώθητε, ἄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν εὐφροσύνῃ, ἀνυμνήσατε λαοί, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Τ**ῷ πρὸ τῶν αἰώνων, ἐκ Πατρὸς γεννηθέντι ἀρρεύστως Υἱῷ, καὶ ἐπ' ἐσχάτων ἐκ Παρθένου, σαρκωθέντι ἀσπόρως, Χριστῷ τῷ Θεῷ βοήσωμεν· ὁ ἀνυψώσας τὸ κέρας ἡμῶν, ἅγιος εἶ Κύριε.
- δ **Ρ**άβδος ἐκ τῆς ρίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐξ αὐτῆς Χριστέ, ἐκ τῆς Παρθένου ἀνεβλάστησας· ἐξ ὅρους ὁ αἰνετὸς κατασκίου δασέος ἤλθες σαρκωθείς ἐξ ἀπειράνδρου, ὁ ἄυλος καὶ Θεός. Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Θ**εὸς ὢν εἰρήνης, Πατὴρ οἰκτιρμῶν, τῆς μεγάλης βουλῆς σου τὸν ἄγγελον, εἰρήνην παρεχόμενον ἀπέστειλας ἡμῖν· ὅθεν θεογνωσίας, πρὸς φῶς ὁδηγηθέντες, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντες, δοξολογοῦμέν σε φιλόανθρωπε.
- ς **Σ**πλάγχχνων Ἰωνᾶν, ἔμβρυον ἀπήμεσεν ἐνάλιος θῆρ οἷον ἐδέξατο· τῇ Παρθένῳ δέ, ἐνοικήσας ὁ Λόγος, καὶ σάρκα λαβὼν διελήλυθε φυλάξας ἀδιάφθορον· ἥς γὰρ οὐχ ὑπέστη ρεύσεως, τὴν τεκοῦσαν κατέσχευ ἀπήμαντον.
- ζ **Οἱ** Παῖδες εὐσεβεῖα συντραφέντες, δυσσεβοῦς προστάγματος καταφρονήσαντες, πυρὸς ἀπειλὴν οὐκ ἐκπτοήθησαν, ἀλλ' ἐν μέσῳ τῆς φλογὸς ἐστῶτες ἔψαλλον· ὁ τῶν πατέρων Θεός, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Θ**αύματος ὑπερφυοῦς ἡ ὁροσοβόλος, ἐξεικόνισε κάμινος τύπον· οὐ γὰρ οὐς ἐδέξατο φλέγει νέους, ὥς οὐδὲ πῦρ τῆς Θεότητος, Παρθένου ἦν ὑπέδου νηδύν· διὸ ἀνυμνοῦντες ἀναμέλψωμεν. Εὐλογοίτω ἡ κτίσις πᾶσα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψούτω, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου



Χ ρι στος γεν ναι ται δο ξα σα τε Χ ρι στος εξ ου ρα νων

α παν τη σα τε <sup>π</sup> <sub>9</sub> Χ ρι στο ος ε πι γης υ ψω θη τε α

σα τε τω Κυ ρι ω πα σα η γη η η και εν ευ φρο

συ υ νη α νυ μνη σα τε λα οι ο τι δε δο ο ξα α

σται <sup>π</sup> <sub>9</sub> ὥδὴ γ'

Τ ω προ των αι ω νων <sup>π</sup> <sub>9</sub> εκ Πα τρος γεν νη θεν τι

αρ ρε ευ στως Υι ω και επ ε σχα των εκ Παρ θε νου

<sup>π</sup> <sub>9</sub> σα ρκω θεν τι α σπο ρως Χ ρι στω ω τω Θε ω βο

η σω μεν <sup>π</sup> <sub>9</sub> ο α νυ ψω σας το κε ρας η μων <sup>Δ</sup> <sub>9</sub>

χορὸς α' α γι ος ει Κυ υ ρι ι ε <sup>π</sup>9 ὤδῃ δ'

**Ρ** α βδος εκ της ρι ζης Ι εσ σαι <sup>Δ</sup>και αν θος εξ αυ της

Χρι στε εκ της Παρ θε νου α νε βλα στησας εξ ο ρους

ο αι νε τος κα τα σκι ου δα σε ος <sup>π</sup>9 ηλ θες σαρ

κω θεις εξ α πειρ αν δρου ο α υ λος και Θε ος <sup>Δ</sup>

δο ξα τη δυ να μεισου Κυ υ ρι ι ε <sup>π</sup>9 ὤδῃ ε'

**Θ** ε ος ων ει ρη νης Πα τη η ηρ οι κτιρ μων <sup>Δ</sup>της

με γα λης βου λη ης σου τον Αγ γε λον <sup>π</sup>9 ει ρη νην

πα ρε χο μενον α πε στει λας η μιν ο θεν θε ο

γνω σι ας <sup>Δ</sup>προς φως ο δη γη θεν τες εκ νυ

κτος ορ θρι ζοντες δο ξο λογουμεν σε φι λα ανθρω ω πε π ρ

ὠδὴ ζ'

Cπλαγχων Ι ω ναν εμ βρυ ον α πη με σεν ε να λι ος

θη ροι ον ε δε ε ξα α το τη Παρ θε νω δε ε νοι

κη σας ο Λο γος και σα αρκαλα βων π ρ δι ε λη λυ θε

φυ λα ξας α δι α φθορον η ης γαρ ουχ υ πε στη

ρευ σεως την τε κου σαν κα τε σχεν α πη η μα αν τον π ρ

ὠδὴ ζ'

O ι παι δες ευ σε βει α συν τρα φεν τες π ρ δυσ σε

βους προσ τα γμα τος κα τα φρο νη σαν τες πυ ρο ος

α πει λην ουκ ε πτο η θησαν Δ ρ αλλ εν με σω της φλο

γος ε στω τες ε ψαλ λον <sup>π ρ</sup> ο των πα τε ε

ρων Θε ος ευλογη τος ει <sup>π ρ</sup> ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Δ ρ</sup>

Θ αυ ματος υ περ φυ ους η δρο σο βο λος εξ ει

κο νι σε κα μι νος τυ υ υ πον ου γαρ ους ε δε ξατο

φλε γει νε ους ως ου δε πυρ της Θε ο τη τος

Παρ θε νου ην υπ ε ε δυ νη δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο α νυ

μνουν τες α να μελ ψωμεν <sup>Δ ρ</sup> ευ λο γει τω η κτι σις πα

α σα τον Κυ ρι ον <sup>π ρ</sup> και υ περ υ ψου ου τω εις παν

τας τους αι ω ω να α α ας π<sup>9</sup>

Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Χριστουγέννων  
ὥδῃ α΄

Ἦχος 4<sup>η</sup> Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.7\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε π<sup>9</sup> Χρι στο ος εξ ου ου ρα α α

νω ω ωων α α παν τη η η σα α α τε ε π<sup>9</sup>

Χρι στο ο ος x<sup>9</sup> ε πι ι γη η η ης z υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε Δ α σα α α α α τε ε τω

ω Κυ υ ρι ωω π<sup>9</sup> πα α α σα α η η γη η η η και αι

εν ευ φρο ο συ υ υ νη Δ α νυ μνη η σα

τε ε ε λαα οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο

ξαα α α σται <sup>π</sup> <sub>9</sub> ὥδῃ γ'

**T** ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων <sup>π</sup> <sub>9</sub> εκ πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως υι υι υι ω <sup>π</sup> <sub>9</sub> και επ ε σχα α των ε εκ

παρ θε ε ε ε νου <sup>Δ</sup> <sub>8</sub> σα α α αρ κω θε εν τι ι α

α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω <sup>π</sup> <sub>9</sub> τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν <sup>π</sup> <sub>9</sub> ο α

νυ ψω ωσας το κε ε ε ρας η η μων χορός α' α α γι ο

ος ει ει Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π</sup> <sub>9</sub> ὥδῃ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α αν ε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα α

σε ε ε ο ος ηλ θε σαρκω ω θει εις εξ α α α πει

ει ρα α αν δρου ο α α υ λο ος και Θε ε

ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ὥδῃ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ν ει ει ρη η η νης Πα τη

η η η ηρ οι οι κτι ιρ μων της με γα α

λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α ααγ γε ε

λο ον <sup>π</sup>ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α πε ε

στει ει λας η η μιν <sup>π</sup>ο ο θε ε ε εν θε ε ο ο γνω

σι ι ι ι ι ας <sup>Δ</sup>προς φω ω ω ως ο ο δη η

γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ον τε ε

ες <sup>Δ</sup>δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α α α

αν θρω ω ω ω πε <sup>π</sup>ὠδὴς'

**C**πλα ααγ χνω ω ων Ι ι ω ω ω ναν <sup>π</sup>εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π</sup>ε να α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup>οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα



α α το ο <sup>π</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π</sup> εν οι κη η

σα ας ο ο ο λο γο ος και αι σα α α αρ κα

α λα α α βων <sup>π</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα α α

ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π</sup> η η η ης γα αρ ου χ υ

πε ε στη η ρευ σε ε ως <sup>π</sup> την τε κου ου σα αν

κα α α τε σχεν α α πη η η η η μα α α αν

<sup>π</sup> τον

ὥδῃ ζ'

**Ο** ι παι αι δες ευ σε βει ει α συ υ υ υντρα α φε

ε εν τες <sup>π</sup> δυς σε ε ε βου ους <sup>Δ</sup> προσ τα α γμα

το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα α αν

τε ες <sup>π q</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην ουκ

ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ δ</sup> αλλ ε

εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος ε

ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π q</sup> ο των

πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π q</sup> ὡδὴ ἡ'

<sup>χ</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον <sup>Δ δ</sup>

Θ α α αυ μα ατος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος <sup>π q</sup> ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον <sup>π</sup>ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε ους <sup>π</sup>

ως ου δε ε πυρ τη ης θε ο τη η η το ος <sup>Α</sup> Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν <sup>π</sup>δι ο ο ο ο αν υ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν <sup>Α</sup>ευ λο γει τω ω η χτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον <sup>π</sup>και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω

να α α ας <sup>π</sup>

# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Καταβασίαι Χριστουγέννων  
ᾠδὴ α'

Ἦχος ♭ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.375/2712\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε Χρι στο ος εξ ου ρα α α

νω ω ω ωων α α παν τη η η σα α τε ε

Χρι στο ο ος ε πι ι γη η η ης υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε α σα α α α α τε ε

τω ω Κυ υ ρι ωω πα α α σα α η η γη η η η

και αι εν ευ φρο ο συ υ υ νη α νυ μνη η

σα τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο

ο ξα α α σται <sup>π</sup>q ῥδῆ γ'

**T** ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων <sup>π</sup>q εκ Πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως Υι υι υι ω <sup>π</sup>q και επ ε σχα α των ε εκ

Παρ θε ε ε ε νου <sup>Δ</sup> \* σα α α αρ κω θε εν τι ι

α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω <sup>π</sup>q τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν <sup>π</sup>q ο

α νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων <sup>Δ</sup> χορὸς α' α α

γι ο ος ει ει Κυ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π</sup>q

<sup>Δ</sup> \* <sup>Δ</sup> σαρ κω θεν τι ι α α σπο ο ο ρως

διασκευη πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

Χρι στω ω ω τω Θε ε ω βο η η η η

σω ωω ω ω μεν ο α νυ ...

ὠδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α α νε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα

α σε ε ε ο ος ηλ θες σαρ κω ω θει εις εξ α α α

πει ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε

ε ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ὠδὴ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ω ν ει ει ρη η η νης <sup>π</sup>9 Πα

τη η η η η ρ οι οι κτι ιρ μων <sup>Δ</sup>η της με γα

α λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α α αγ

γε ε λο ον <sup>π</sup>9 ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α

πε ε στει ει λας η η μιν <sup>π</sup>9 ο ο θε ε ε εν θε ε ο

ο γνω σι ι ι ι ι ας <sup>Δ</sup>η προ φω ω ω ως ο ο

δη η γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ν

τε ε ες <sup>Δ</sup>η δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α

α α αν θρω ω ω ω πε <sup>π</sup>9 ῥδῆς'

C πλα α αγ χνω ω ω ν I ι ω ω ω ναν <sup>π</sup>9 εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π q</sup> εν α α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο <sup>π q</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π q</sup> εν οι κη η

σας ο ο ο Λο γο ος και αι σα α α α αρ

κα α λα α α βων <sup>π q</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα

α α ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π q</sup> η η η ης γα αρ

ουχ υ πε ε στη η ρε ευ σε ε ως <sup>π q</sup> την τε κου

ου <sup>ρ</sup> σα αν κα α α τε σχεν α α πη η η η

η μα α α αν τον <sup>π q</sup>

ὥδ᾽ ἔ

**Ο** ι παι αι δεσ ευ σε βει ει α συ υ υ υν τρα α



φε ε εν τες <sup>π q</sup> δυσ σε ε ε βου ους προσ τα α

γμα το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα

α αν τε ες <sup>π q</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην

ουκ ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ</sup> <sup>2</sup> <sup>π q</sup> αλλ

ε εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος

ε ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π q</sup> ο

των πα τε ε ε ρω ω ων <sup>Θ</sup>ε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π q</sup>

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

<sup>1</sup> <sup>π q</sup> ευ σε βει α συ υ υ υν...

<sup>2</sup> <sup>Δ</sup> <sup>π q</sup> αλλ εν με ε σω ω ω ω ω τη ης φλο ο γο ος

ε ε στω ω τε ες ...

π  
ῥδῆ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος π  
ε εξ ει ει χο ο νι ι

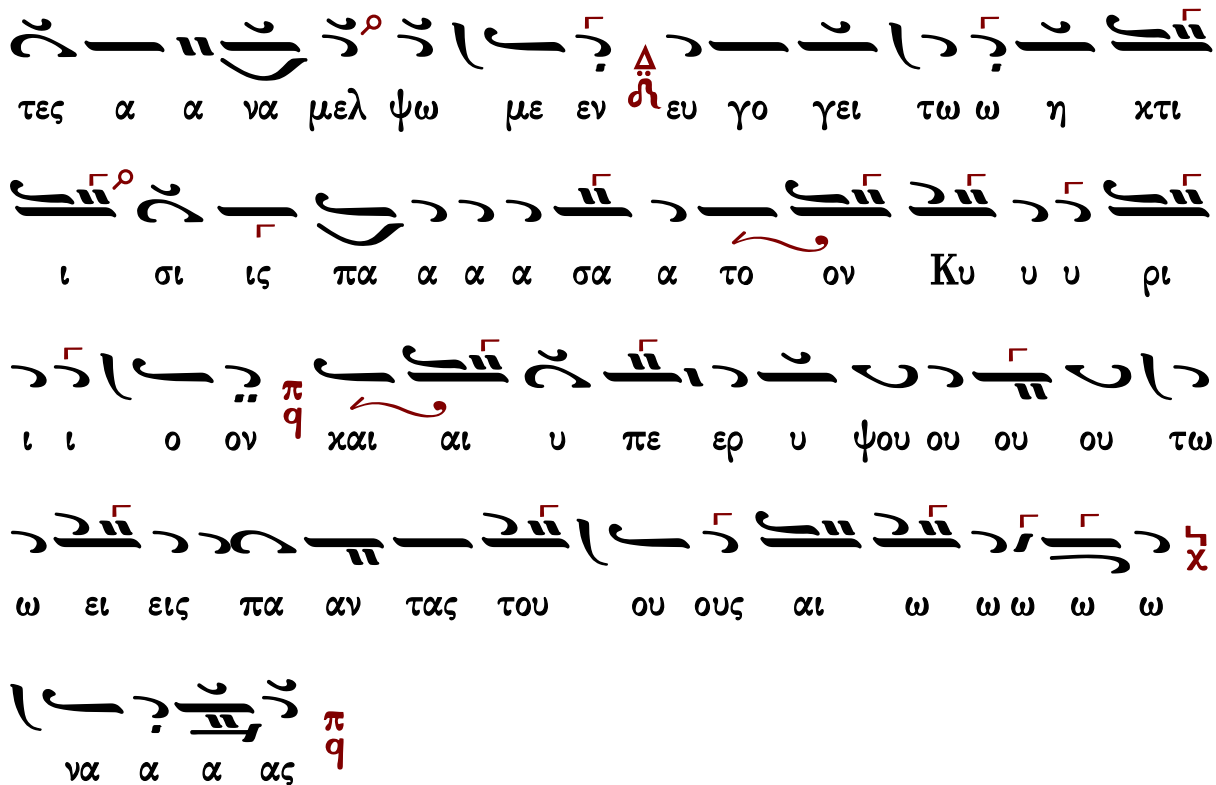
σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον π  
ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε

π  
ους ως ου δε ε πυρ τη ης Θε ο τη η τος Α Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν π  
δι ο ο ο ο α νυ μνου ουν



## Θ' ὁδὴ τῶν Εἰσοδίων

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α'

ἦχος δ'

Ἀγγελοι τὴν εἴσοδον τῆς πανάγου, ὁρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

«Ὡς ἐμφύχῳ Θεοῦ κιβωτῷ, ψαυέτω μηδαμῶς χεὶρ ἀμυήτων, χεῖλη δὲ πιστῶν, τῇ Θεοτόκῳ ἀσιγήτως, φωνὴν τοῦ ἀγγέλου ἀναμέλποντα, ἐν ἀγαλλιάσει βοάτω· ὄντως ἀνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἀγνή».

Ἀγγελοι τὴν εἴσοδον τῆς Παρθένου, ὁρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς παραδόξως εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

Υπερίπταται Θεοτόκε ἀγνή τὸ θαῦμά σου τὴν δύναμιν τῶν λόγων· σῶμα γὰρ ἐν σοὶ κατανοῶ ὑπὲρ λόγον, ῥοῆς ἁμαρτίας ἀνεπίδεκτον· ὅθεν εὐχαρίστως βοῶ σοι· ὄντως ἀνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἀγνή.

Ἀγγελοι καὶ ἄνθρωποι τῆς Παρθένου, τὴν εἴσοδον τιμήσωμεν,  
ὅτι ἐν δόξῃ εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

**Παραδόξως** προδιετύπου άγνή, ό νόμος σε σκηνήν καί θείαν στάμνον, ξένην κιβωτόν, καί καταπέτασμα καί ράβδον, ναόν άκατάλυτον, καί πύλην Θεοῦ· όθεν έκδιδάσκει σοι κράζειν· όντως άνωτέρα πάντων, ύπάρχεις Παρθένε άγνή.

**Άγγελοι** τήν είσοδον τής Παρθένου, όρώντες κατεπλήττοντο,  
πώς θεαρέστως είσήλθεν, είς τά άγια τών άγίων.

**Μελωδών** σοι προεκελάδει Δαυΐδ, λαλών σε θυγατέρα βασιλέως, κάλλει άρετών, έκ δεξιών παρισταμένην, ιδών τοῦ Θεοῦ πεποικιλμένην σε· όθεν προφητεύων έβόα· όντως άνωτέρα πάντων, ύπάρχεις Παρθένε άγνή.

**Άγγελοι** σκιρτήσατε σύν άγίοις, παρθένοι συγχορεύσατε·  
ή γάρ θεόπαις είσήλθεν, είς τά άγια των άγίων.

**Θεοδόχον** προθεωρών Σολομών, ήνοίζατο σε πύλην βασιλέως, ζώσαν τε πηγήν έσφραγισμένην, έξ ής τό άθόλωτον ήμιν προήλθεν, ύδωρ τοίς έν πίστει βοώσιν· όντως άνωτέρα πάντων, ύπάρχεις Παρθένε άγνή.

**Άγγελοι** καί άνθρωποι τήν Παρθένον, έν ύμνοις μεγαλύνωμεν  
θεοπρεπώς γάρ είσήλθεν, είς τά άγια τών άγίων.

**Διανέμοις** τών χαρισμάτων τήν σήν, γαλήνην Θεοτόκε τή ψυχή μου, βρύουσα ζωήν, τοίς σέ τιμώσι κατά χρέος, αύτή περιέπουσα καί σκέπουσα, καί διατηροῦσα βοάιν σοι· όντως άνωτέρα πάντων, ύπάρχεις Παρθένε άγνή.

κανών β'  
Τήν φωτοφόρον Νεφέλην

ήχος α'

**Μεγάλυνον** ψυχή μου, τήν προσενεχθεΐσαν, έν τῷ ναῷ Κυρίου, καί εύλογηθεΐσαν, χερσὶ τών ιερέων.  
**Έκ** τών δικαίων προήλθεν, Ίωακείμ καί τής Άννης, έπαγγελίας ό καρπός, ή θεόπαις **Μαρία**, καί ως θυμίαμα δεκτόν, σαρκὶ νηπιάζουσα προσφέρεται, ιερῷ έν άγίῳ, ως άγία, είς τά άγια οίκεϊν.

**Μεγάλυνον** ψυχή μου, τήν προσενεχθεΐσαν, έν τῷ ναῷ Κυρίου, καί εύλογηθεΐσαν, χερσὶ τών ιερέων.  
**Τήν** νηπιάζουσαν φύσει, καί ύπέρ φύσιν μητέρα, άναδειχθεΐσαν τοῦ Θεοῦ, εύφημησωμεν ύμνοις, έν τῷ ναῷ τῷ νομικῷ· Κυρίῳ γάρ σήμερον προσφέρεται, είς όσμήν εύωδίας, τών δικαίων, ως καρπός πνευματικός.

**Μεγάλυνον** ψυχή μου, τήν προσενεχθεΐσαν, έν τῷ ναῷ Κυρίου, καί εύλογηθεΐσαν, χερσὶ τών ιερέων.  
**Η** τών άγίων άγία, καί θεομήτωρ **Μαρία**, ταίς ίκεσίαις σου άγνή, έλευθέρωσον ήμᾶς, έκ τών παγίδων τοῦ έχθροῦ, καί πάσης αίρέσεως καί θλίψεως, τοῦς πιστῶς προσκυνούντας, τήν εικόνα, τής άγίας σου μορφῆς.

**Μεγάλυνον** ψυχή μου, τήν προσενεχθεΐσαν, έν τῷ ναῷ Κυρίου, καί εύλογηθεΐσαν, χερσὶ τών ιερέων.  
**Τῶν** Χερουβίμ ύπερτέρα, τών Σεραφίμ άνωτέρα, καί πλατυτέρα οὐρανῶν, άνεδείχθης Παρθένε, ως τόν άχώρητον παντί, έν μήτρᾳ χωρήσασα Θεόν ήμῶν, καί τεκοῦσα άφράστως, όν δυσώπει, έκτενῶς ύπέρ ήμῶν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου Θεότητος τὸ κράτος.

Τὴν τρισυπόστατον φύσιν, καὶ ἀδιαίρετον δόξαν, τὴν ἐν θεότητι μιᾷ, ὑμνουμένην ἀπαύστως, ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς. Τριάδα ἀχώριστον δοξάσωμεν, σὺν Υἱῷ τὸν Πατέρα, καὶ τὸ Πνεῦμα προσκυνοῦντες εὐσεβῶς.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω Στρατευμάτων.

Υπὸ τὴν σὺν εὐσπλαγχνίαν, τοὺς καταφεύγοντας πίστει, καὶ προσκυνοῦντας εὐσεβῶς, τὸν Υἱόν σου Παρθένε, θεογεννήτορ ὡς Θεόν, τοῦ κόσμου καὶ Κύριον ἰκέτευε, ἐκ φθορᾶς καὶ κινδύνων λυτρωθῆναι, καὶ παντοίων πειρασμῶν.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κανὼν α', ψδὲ θ'

ὁ εἰρμός

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννης  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.257/2595#

Α γ γε λοι την εισ ο δον της παν α γνου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως η Παρ θε νος εισ η ηλθεν

εις τα α αγι α των α γι ων

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω ψαυ ε τω

μηδα μως χει ειρ α μυ η των χει λη δε πι στων τη

Θε ο τοκω α σι γη η τως φω νη ην του αγ γε λου

α να μελ ποντα εν α γαλ λι α σει βο α τω

ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ θε νε α

γνη

Α γ γε λοι την εισ ο δον της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως πα ρα δο ξως εισ η ηλ

θεν εις τα α α γι α των α γι ων

Υ περ ι πταται Θε ο το κε α γνη το θαυ

μα σου την δυ να μιν των λο ο γων σω μα γαρ εν

σοι κα τα νο ω ω υ περ λο ο γον ρο η ης α μαρ

τι ας αν ε πι δεκτον<sup>6λ</sup> ο θεν ευ χα ρι στως

βο ω σοι<sup>π9</sup> ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις

Παρ θε νε α γνη<sup>6λ</sup>

Α γ γε λοι και αν θρω ποι της Παρ θε νου την

εις ο δον τι μη σωμεν<sup>6λ</sup> ο τι εν δο ξη εις η ηλθεν

εις τα α α γι α των α γι ων<sup>6λ</sup>

Π α ρα δο ο ξως προ δι ε τυ που α γνη<sup>6λ</sup> ο

νο μος σε σκη νην και θει αν στα α μνον<sup>6λ</sup> ξε νην κι

βω τον και κα τα πε τα σμα και ρα α βδον<sup>Δδ</sup> να

ο ον α κα τα λυ τον και πυ λην Θε ου<sup>6λ</sup> ο θεν εκ δι

δα σκει σοι κρα ζειν <sup>π</sup>ον τως α νω τε ρα παν των υ

παρ χεις Παρ θε νε α γνη <sup>6</sup>

Α γ γε λοι την εισ ο δον της Παρ θε νου ο

ρων τες κα τε πλητ τον το <sup>6</sup>πως θε α ρε στως εισ η ηλ

θεν εις τα α α γι α των α γι ων <sup>6</sup>

Μ ε λω δων σοι προ ε κε λα δει Δα βιδ <sup>6</sup>λα λων σε

θυγα τε ρα βασι λε ως <sup>6</sup>καλ λει α ρε των εκ δι

ξι ων πα ρι στα με ε νην <sup>Δ</sup>ι δω ων του Θε ου πε

ποι κιλ με ε νην <sup>6</sup>ο θεν προ φη τευ ων ε βο

α <sup>π</sup>ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ θε



νε α γνη<sup>6λ</sup>

Α γ γε λοι σκιρ τη σα τε συν α γι οis παρ θε

νοι συγ χο ρευ σα τε<sup>6λ</sup> η γαρ θε ο παις εισ η ηλθεν

εις τα α α γι α των α γι ων<sup>6λ</sup>

Θ ε ο δο χον προ θε ω ρων Σο λο μων<sup>6λ</sup> η νι

ξα το σε πυ λην βα σι λε ε ως<sup>6λ</sup> ζω σαν τε πη γην ε

σφρα γι σμε ε νην εξ η ης το α θο λω τον η μιν προ

ηλ θεν υ υ δωρ<sup>6λ</sup> τοις εν πι στει βο ω σιν<sup>π9</sup> ον τως

α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ θε νε α γνη<sup>6λ</sup>

Α γ γε λοι και αν θρω ποι την Παρ θε νον εν

υ μνοις με γα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ θε ο πρε πως γαρ εισ η

ηλθεν εις τα α α γι α των α γι ων <sup>6</sup>λ

**Δ** ι α νε μοις των χα ρι σμα των την σην γα λη η

νην Θε ο το κετηψυ χη ημου <sup>6</sup>λ βρυ ου σα ζω ην

τοις σε τι μω σι κα τα χρε ε ος αυ τη η πε ρι

ε που σα και σκε που σα <sup>6</sup>λ και δι α τη ρου σα βο

αν σοι <sup>π</sup>9 ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ

θε νε α γνη <sup>6</sup>λ

Κανών θ', ψδὴ θ'

Τὴν φωτοφόρον Νεφέλην

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>9</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννης  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.260/2598#

**Μ**<sup>ⲓ</sup> ε γα λυ νον ψυ χη μου την προσ ε νε χθει σαν εν  
τω να ω Κυ ρι ι ου **Δ**<sup>ⲓ</sup> και ευ λο γη θει σαν χερ  
σι των ι ε ρε ων **π**<sup>ⲑ</sup>

**Ε** κ των δι και ων προ ηλθεν **Δ**<sup>ⲓ</sup> Ι ω α κειμ και

της Αν νης **π**<sup>ⲑ</sup> ε παγ γε λι ας ο καρ πος η θε ο

παις Μα ρι ι α **π**<sup>ⲑ</sup> και ως θυ μι α μα δε κτον σαρ

κι ι νη πι α ζου σα προσ φε ρε ε ται **π**<sup>ⲑ</sup> ι ε

ρω εν α γι ω ως α γι ι α **Δ**<sup>ⲓ</sup> εις τα α γι α

οι κει ειν **π**<sup>ⲑ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου την προσ ε νε χθει σαν εν

— ı ı ı ı ı ı π ϑ  
σ ι τ ω ν ι ε ρ ε ω ν

Μη τε ρα <sup>πρ</sup> α να δει χθει σαν του Θε ου ευ φη μη


  
 ρι ι ω γαρ ση με ρον προσ φε ρε ε ται π εις ο

μα τι κος πρ

τω να ω Κυ ρι ι ου και ευ λο γη θει σαν χερ

σι των ι ε ρε ων <sup>π ρ</sup>

**Η** των α γι ων α γι α <sup>Δ</sup> και Θε ο μη τωρ

**Μ**α ρι α <sup>π ρ</sup> ταις ι κε σι αις σου α γνη ε λευ

θε ρω σον η μας <sup>π ρ</sup> εκ των πα γι δων του ε χθρου και

πα α σης αι ρε σεως και θλι ψε ε ως <sup>π ρ</sup> τους πι στως προς

κυ νου ουν τας την ει κο να της α γι ας σου μορ φης ης <sup>π ρ</sup>

**Μ**ε γα λυ νον ψυ χη μου την προσ ε νε χθει σαν εν

τω να ω Κυ ρι ι ου <sup>Δ</sup> και ευ λο γη θει σαν χερ

σι των ι ε ρε ων <sup>π ρ</sup>

**Τ**ων Χε ρου βιμ υ περ τε ρα <sup>Δ</sup> των Σε ρα φιμ α

νω τε ρα <sup>π ρ</sup> και πλα τυ τε ρα ου ρα νων α νε δει

χθης Παρ θε ε νε <sup>π ρ</sup> ως τον α χω ρη τον παν τι εν

μη η τρα χω ρη σα σα Θε ον η η μων <sup>π ρ</sup> και τε κου

σα α φρα α στως ον δυ σω πει εκ τε νως υ περ η

μων <sup>π ρ</sup>

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>Δ ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα α

του <sup>Δ ρ</sup> και α δι αι ρε ε του Θε ο τη τος το κρα

τος <sup>π ρ</sup>

**Τ**ην τρις υ πο στα τον φυ σιν **Δ** και α δι αι ρε

τον δο ξαν **π** την εν Θε ο τη τι μι α υ μνου με

νην α πα αυ στως εν ου ρα νω και ε πι γης **Δ** Τρι

α δα α χω ρι στον δο ξα σω ω μεν **π** συν Υι ω τον

Πα τε ε ρα και το Πνευ μα προσ κυ νουν τες ευ σε βω ως **π**

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην **Δ**

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου την τι μι ω τε ε

ραν **Δ** και εν δο ξο τε ε ραν των α νω στρα τευ μα

των **π**

Υπο την σην εσπλαγχνι αν τους κα τα φευ  
γον τας πι στει και προσ κυ νουν τας ευ σε βως τον Υι  
ον σου Παρ θε ε νε θε ο γεν νη τορ ως Θε ον  
του κο ο σμου και Κυ ρι ον ι κε τε ευ ε εκ φθο  
ρας και κιν δυ νων λυ τρω θη η ναι και παν τοι ων  
πει ρα σμω ων

Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

[Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Μυστήριον ξένον, ὁρῶ καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ Σπήλαιον· θρόνον Χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλήθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν.

Ἀρχή

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

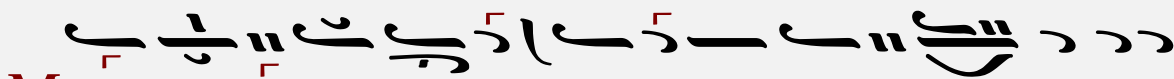
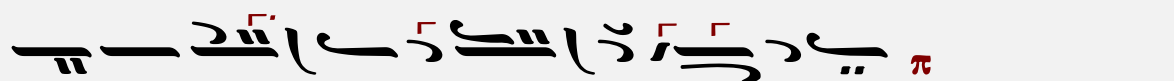


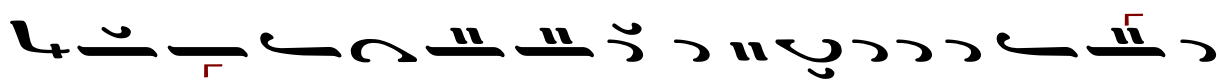
Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου την τι μι ω τε  
ε ραν και εν δο ξο τε ε ραν των α νω στρα τευ  
μα α των <sup>π</sup>q

Μ υ στη ρι ον ξε νον <sup>π</sup>q ο ρω ω και πα ρα δο  
ξον <sup>π</sup>q ου ρα νον το σπη λαι ον θρο νον <sup>Δ</sup>q Χε ρου βι κον  
την Παρ θε νον την φα α την η χω ρι ι ον εν ω ω  
α νε κλι θη ο α χω ρη τος Χρι στο ος ο Θε ος  
ον α νυ μνουν τες με γα λυ υ νο ο με ε ε εν <sup>π</sup>q

Ἀγνή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

  
**Μ** ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου  
  
ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν   
  
και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α  
  
α νω στρα α α τευ μα α α α των 

**Μ**   
υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον  ο ρω  
  
ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον  Ου ρα  
  
νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον  θρο ο ο νο ον   
  
Χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α  
  
την χω ω ρι ι ι ον  ε νω ω ω ω α νε

κλι ι ι θη ο ο α χωρη το ος Χρι στο ο ος ο

Θε ε ος ον α νυ μουν τες με γα α λυ υ υ υ

υ νο ο ο ο μεν με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδῃ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.379/2716\*

Μ ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου

ου ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν

και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α

νω στρα α α τευ μα α α α των

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον ο

ρω ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον <sup>π</sup>ου

ρα νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον <sup>π</sup>θρο ο ο νο

ον χει ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα

α την χω ω ρι ι ι ον <sup>π</sup>εν ω ω ω ω α νε

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος <sup>Α</sup>Χρι στο ο ος

ο Θε ε ος <sup>Α</sup>ον α νυ μνουν τες με γα α λυ υ

υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν <sup>π</sup>

## Ὦδὴ α΄

Χριστὸς ἐν πόλει Βηθλεὲμ βρεφουργεῖται  
τὴν ἡμῶν ὡς εὐσπλαχνος καινουργῶν φύσιν·  
προθύμως δεῦτε γηγενεῖς τῇ καρδίᾳ  
ᾄσμα μελωδοῦ ᾄσωμεν τῷ Δεσπότῃ·  
εἰς αἰῶνας ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.

## Ὦδὴ γ΄

Υψιμέδων ἀναρχε εὐμενὲς Λόγε,  
ἐπίβλεψον πρόσχες μοι δακρυρροοῦσα  
ἡ σεπτὴ ἐβόα σοι πρόπαλαι Ἄννα·  
ἀλλ' ὡς ἐκείνης ἤκουσας θρηνωδούσης  
καὶ ἡμῶν στερέωσον τὰς φρένας, ἄναξ,  
τοῦ ἀξίως ὑμνεῖν σου τὰ γενέθλια.

## Ὦδὴ δ΄

Ἀκηκοὺς ὁ προφήτης, Χριστέ, τὴν ἀκοήν σου  
ἐφοβήθη, ὅτι μέλλεις ἐκ Παρθένου προελθεῖν.  
Καὶ ἐβόησε τρόμῳ· δόξα τῇ δυνάμει σου, Κύριε.

ἀντὶ τῆς παραπάνω

[Ἀββακοῦμ τὴν ἐνδοξόν σου παρουσίαν  
ἄκτιστε, Λόγε, προῖδὼν ἐμελώδει  
ἀκήκοα, Δέσποτα, ὅτι ἐξ ὄρους  
ἀγίου ἦξεις εἰς βροτῶν σωτηρίαν  
καὶ δέους πλήρης γεγονὼς ἀνακράζω  
ὡς μεγάλα τὰ ἔργα, Χριστέ μου, τῆς σῆς δόξης.]

## Ὦδὴ ε΄

Ὡ παντεπόπτα τῶν ἀνάκτων τὸ κλέος  
τίς σου τὸ φιλάνθρωπον γηγενῶν οὐ θαυμάσει;  
ἐν γῇ γὰρ ὥφθης μὴ λιπὼν τὰ πατρῷα  
σήμερον πᾶσαν ἐγκαινίζων τὴν κτίσιν  
καὶ εἰρήνην ὡς μόνος εἰρηνάρχης βραβεύων.

## Ὦδὴ ς΄

Εἰς βυθὸν ἀπωλείας ἡ ταλαίπωρος φύσις

Χριστέ μου Λόγε, καταντήσασα πάλαι  
ἔκειτο φεῦ μοι! σκοτεινοῖς ἐν κευθμῶσιν·  
ἐπεὶ δὲ τῇ σῇ θεϊκῇ δυναστείᾳ  
πρὸς οὐρανῶν μετέβη τὰ τερπνότατα κάλλη·  
θύσω σοι, σῶτερ, ἑβόα, θυσίαν αἰνέσεως.

ᾠδὴ ζ'

Ὡς οἱ παῖδες πάλαι σοι κράζομεν, Λόγε·  
γενοῦ σῶν δούλων ἕρκος φύλαξ καὶ σκέπη  
καὶ σῶσον πάντας προσβολῆς ἐναντίας  
ὅπως ὑμνοῦντές σε σοῖς γενεθλίοις  
εἰς αἰῶνας λέγομεν· εὐλογητὸς εἶ.

ᾠδὴ η'

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
Νεουργέ τοῦ σύμπαντος κόσμου καὶ σῶστα  
ὑμνεῖ σε πᾶσα μετ' ἁγγέλων ἡ κτίσις  
σκιρτᾷ χορεύει καὶ ἀγάλλεται τρόμῳ,  
εὐλογεῖτε λέγουσα πάντα τὰ ἔργα  
τὰ σεπτὰ Γενέθλια τοῦ λυτρωτοῦ μου  
σὺν ἐμοὶ εἰς τοὺς αἰῶνας πόθῳ ὑπερυψοῦντα.

Σύντομοι

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

Ἀντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος

Ἀργαί

Πέτρου Μπερεκέτη

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομοι

### Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

ᾠδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου  
Νέον Ειρμολόγιον  
1998 σ.227\*

Χ ρι στος εν πο ο λει ει Βη θλε ем бρε φουρ γει

ει ται την η μωνως ευ σπλαγ χνος και νουρ γω ων φυ σιν <sup>π</sup>9

προ θυ μως δευ τε ε γη γε νει εις τη καρ δι ι α

α σμα μελωδον α α σω μεν τω Δε σπο ο τη <sup>π</sup>9 εις αι

ω ω ω νας εν δο ξως γαρ δε ε δο ο ξα α σται <sup>π</sup>9 Ὡδὴ γ'

ψι με δων α ναρχε ευ με νε ες Λο γε ε

πι ι βλε ψον προ σχες μοι δα κρυρ ρο ου σα <sup>π</sup>9 ε κτε

νωσ ε βο α σοι προ πα λαι Α αν να αλλ ως ε

κει ει νης η η κου σας θρη νω δου σης <sup>π</sup>9 και η μων

στε ρε ω ω σον τας φρε νας Α α ναξ χορὸς α' του α ξι ως υ

μνειν σου τα γε νε ε θλι ι α <sup>π</sup>9 Ὡδὴ δ'

Α κη κο ως ο προ φη η της Χρι στε την

α κο ην σου ε φο βη η θη <sup>π q</sup> ο τι με ελ λεις εκ Παρ

θε νου προ ελ θειν και ε βο η σε τρο ο μω Δο ξα

τη δυ να μει σου Κυ υ ρι ι ε <sup>π q</sup> Ὡδὴ ε'

Ω παν τε πο ο πτα α των α να κτων το

κλε ε ος τις σου το φι λαν θρω πον γη γε νω ων μη θαυ

μα α σει <sup>π q</sup> εν γη γαρ ω φθη ης μη λι πω ων τα πα

τρω ω α ση μερον πα α σαν εγ και νι ι ζων την κτι ι

σιν <sup>π q</sup> και ει ρη η νην ως μο ο νος ει ρη να αρ

χη ης βρα βευ ων <sup>π q</sup> Ὡδὴ ε'



Ε ις βυ θον α πω λει ει α ας η τα λαι

πω ρος φυ υ σις Χρι στε μου Σω ω τερ κα ταν τη η

σα σα πα λαι <sup>π</sup>ε κει το φε ευ μοι οι σκο τει

νοι οις εν κευ θμω ω σιν ε πει δε τη ση θε ι κη η δυ να

στει ει α <sup>π</sup>ρος ου ρα νων α νε βη η τα τερ πνο ο τα τα

κα αλ λη θυ σω σοι Σω ω τερ βο α θυ σι αν αι νε ε

σε ε ως <sup>π</sup> ᾠδὴ ζ'

Ω ς οι παι δες πα α λαι αι σοι κραυ γα ζο

μεν Λο ο γε γε νου σων δου ου λων Σω ω τερ φυ

λαξ και σκε ε <sup>π</sup>πη και σω σον παν τα ας προσ βο λη

ης ε ναν τι ι ας ο πως υ μνουν τες σοις γε νε θλι ι

οις <sup>π</sup> εις αι ω νας λεγωμεν ευ λο γη τος ει <sup>π</sup> Ὡδὴ η'

<sup>χ</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Δ</sup>

<sup>Ν</sup> ε ουρ γε του συ μπαν τος κο ο σμου και σω ω

στα υ μνει σε πα α σα μετ αγ γε ε λων η κτι

σις <sup>π</sup> σκιρ τα χο ρευ ει ει και α γα αλ λε ται τρο ο

μω ευ λο γει τε λε γου σα παν τα τα ερ γα <sup>π</sup> τα

σε πτα γε νε θλι ι α του Αυ τρω του ου μου συν ε μοι

εις τους αι ω νας πο θω υ περ υ ψουν τα α α

π  
α

## Αργαί

### Ἀντωνίου ιερέως καὶ Νομοφύλακος4

Μέλος Ἀντωνίου ιερέως καὶ Νομοφύλακος τῆς Ἀγίας τοῦ Χριστοῦ Μεγάλης Ἐκκλησίας  
(τέλη ις' -ἀρχὲς ιη' αἰ.)

ῥδὴ α'

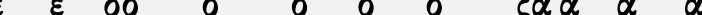
Ἦχος ᾠ Πα

Εμμανουὴλ Γιαννόπουλου  
IMS-RASMB, Series Musicologica Balcanica  
1.2.2021.  
e-ISSN: 2654-248X\*

Χ ρι στο ος ε εν πο λει Βη θλε ε ε εμ βρε φου  
ουρ γει ει ει ται την η μω ων ως ε ευ σπλα  
α χνο ος και νου ουρ γων φυ υ υ υ σιν προ θυ μω  
ως δευ τε ε ε γη η γε ε νεις τη η κα αρ δι ι  
ι α α σμα με λω ω ω δο ον α α α α σω ω

4 Οἱ καταβασίεις αὐτές, ποίημα ἀδόηλου ὁμονογράφου (ἴσως τοῦ ια' ἢ ιβ' αἰῶνος), ἐξηγήθησαν στὴν Νέα Μέθοδο ἀναλυτικῆς ψαλτικῆς σημειογραφίας τὸν Ἰανουάριο τοῦ ἔτους 2017 ἐκ τῶν κωδίκων μονῆς Ἰβήρων 968 (ἔτους 1724) καὶ Ψ'άρχου-Γρηγορίου 78<sup>Α</sup> (αὐτογράφων τοῦ μελοποιῦ), ἀπὸ τὸν Ἐμμανουὴλ Γιαννόπουλο, ἐπικουρο καθηγητὴ τοῦ Τμήματος Μουσικῶν Σπουδῶν τοῦ Ἀριστοτελείου Πανεπιστημίου Θεσσαλονίκης. Ἐπιβεωρήθηκε καὶ πληκτρολογήθηκε ἡ ἐξήγησις τὸν Αὐγούστο τοῦ ἴδιου ἔτους.

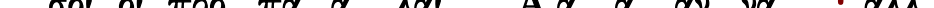
εν δο ο ο ζωσ γαρ δε ε δο ξα α α α σται

\*  π ρ


  
 ψι με δων α α να αρ χε ε ευ με νες

Λο ο ο ο γε ε πι βλε ε ψον προ ο σχε ες

μοι οι δα α χρυ ρο ο ου σα α π ε κτε νω ως ε βο


  
 α α σοι οι προ πα α λαι Α α α αν να π<sup>9</sup> αλλ ω ως



| Symbol | Name    |
|--------|---------|
| ε      | epsilon |
| ε      | epsilon |
| χει    | chei    |
| ει     | ei      |
| ει     | ei      |
| ει     | ei      |
| νης    | nihs    |
| η      | eta     |
| η      | eta     |
| η η    | eta eta |
| η η    | eta eta |
| κου    | ku      |
| ου     | ou      |
| σας    | sa      |
| θη     | the     |
| νω     | no      |

ω δου ου ου σης και η μων στε ε ρε ε ω σο ο ο

ο ον τα ας φρε ε να ας Α ναξ <sup>π</sup> του ου α α ξι ι

ι ι ως χορὸς α' υ μνείν σου τά γε ε νε θλι ι ι ι

α π q

Σύμφωνα με τὸν κώδικα Ψάχου-ἀρχεῖο Γρηγορίου 78Α:

\* γε ε νε ε ε ε ε θλι ι ι ι α π q ὥδῃ δ'

α κη η κο ο ως ο προ ο φη η η της

Χρι στε την α κο ο η η ην σου ε ε ε ε φο ο βη

η η θη π q ο ο τι με ε ε ελ λεις ε εκ Παρ

θε ε νου προ ο ε ελ θειν και ε ε βο ο ο

η η σε τρο ο ο ο μω π q δο ο ξα τη η δυ υ

να μει σου ου Κυ ρι ι ι ι ε π q

Σύμφωνα με τὸν κώδικα Ψάχου-ἀρχεῖο Γρηγορίου 78Α:

\* σου ου Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε π ϩ

ὤδῃ ε΄

ω παν τε πο ο ο πτα α των α α να α α κτω

ων το ο κλε ε ε ος Α ϩ τις σου το φι ι λαν θρω ω

πο ον γη η γε ε νων ου θαυ μα α α α σει π ϩ εν

γη η η η γα αρ ω ω ω φθης μη λι ι πω ω ων τα πα

α τρω ω ω α Α ϩ ση με ρον πα α α σαν Α ϩ εγ και αι νι

ι ι ζων την κτι ι ι ι σιν π ϩ και ει ρη η νην

ω ως μο ο ο νο ος π ϩ ει ρη η να α α αρ χης

βρα βε ε ε ε ων π ϩ

ὤδῃ ε΄

Ε ις βυ θο ον α α α α πω ω λει ει ει ας π ϩ η τα

λαι αι πω ω ω ω ρο ος φυ υ υ σις π ρ Χρι στε ε μου Σω

ω ω ω ω τερ \* κα ταν τη η σα σα α α α πα α

λαι ε χει ει το π ρ φε ευ μοι σκο τει ει ει νοις ε

ε ε εν κε ευ θμω ω ω σιν π ρ ε πει ει ει δε ε τη η ση

θε ε ι ι κη η η δυ να α στει ει ει α προς

ου ρα α α νω ω ω ων α α νε ε ε βη η

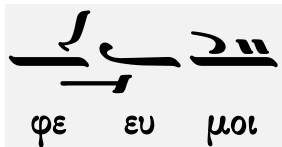
τα τε ερ πνο ο ο τα α τα κα α α αλ λη π ρ θυ

σω ω σοι Σω ω τε ερ βο ο α θυ σι αν αι αι

νε ε ε ε ε σε ε ε ε ως π ρ

Προτεινόμενη όμαλοποίηση χωρισμού φράσης:

\* κα ταν τη η σα α σα α πα α α λαι ε χει ει το



ῥῶδῃ ζ'


















ς    οι    παι    αι    αι    δες    πα    α    λαι    σοι    κρα    α    α

ζο ο ο μεν Λο ο ο ο γε γε γε νου ου σω ων δου ου

ου ου λων Σω ω ω τε ε ερ φυ λα αξ και σχε ε

ε ε πη πη και σω ω σο ον πα α αν τα ας προσ βο ο

λ η ε ν τ ι α ο π ω υ


  
 μου ου ου ουν τες σοις γε νε ε θλι ι ι οις εις

αι ω ω νας λε γο ο με εν ευ λο ο γη το ο ο ος



ὥδ' ἦ'


  
 ι    νου    μεν    ευ    λο    γου    μεν    και    προσ    κυ    νου    με



εν τον Κυ ρι ι ον

π  
9

**N** ε ουρ γε ε του συ υμ πα αν τος κο σμου και

αι Σω ω ω στα υ μνει ει σε ε πα α α σα α

μετ α αγ γε ε ε λων η κτι ι ι ι σις σκιρ

τα χο ο ρε ε ευ ει ει και α γαλ λε ε ε ται αι

τρο ο ο μω ευ λο ο γει τε λε γου ου σα α παν

τα α α τα ε ε ε ερ γα τα σε ε πτα γε νε

θλι ι α του Λυ υ τρω ω του ου ου μου συν ε μοι οι οι

οι οι εις του ους αι αι αι ω νας πο ο ο θω ω υ

πε ερ υ ψου ου ου ουν τα τα α α α

# Πέτρου Μπερεκέτη5

ᾠδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πά

χειρόγραφο Γρηγορίου Πρωτοψάλτου  
Βιβλιοθήκη Κ.Α.Ψάχου\*

Χ ρι στος εν πο ο ο ο λει Βη η θλε ε ε ε εμ  
βρε φου ουρ γει ει ει ται ᾠ την η μων ω ως ευ σπλα  
αγ χνο ος και νου ουρ γω ω ων φυ υ υ υ σιν π q προ  
θυ μως δε ε ευ τε γη γε ε νει εις τη κα αρ δι  
ι ι α ᾠ α σμα με ε λω ω δον α α α α σω  
ω μεν τω ω δε ε ε σπο ο ο ο τη π q εις αι ω  
νας ε εν δο ο ο ξως γα α α α α αρ δε ε  
δο ο ο ο ο ξα α α α σται π q

ᾠδὴ γ'

5 Οἱ προεόρτιες ἱαμβικὲς Καταβασίς (ἀνυνήμως φερόμενες, ι'-ιὰ αἰ.) μέλος ἀρχὸ ἐιρμολογικὸ Πέτρου Μπερεκέτη (α' τέταρτο ιη' αἰ.). ᾠδή Γρηγορίου Πρωτοψάλτου (†1821)

ψι με ε ε ε δων α α ναρ χε ευ με νε

ες Λο ο ο γε ε πι ι ι βλε ε ε ψο ον

προ ο σχε ες μοι δα κρυ υρ ρο ου ου ου ου ση εκ

τε νως ε βο α α σοι οι προ πα λαι αι Α α αν να

αλλ ως ε ε ε ε χει ει ει ει νη ης η η η η

κου ου σας θρη η νω ω ω δου ου ου ου σης και η

μω ων στε ε ε ρε ε ω ω ω σο ον τας φρε να

ας α α α ναξ του α ξι ι ι ι ως υ υ μνειν

σου ου τα χορός α' γε ε νε ε ε ε ε θλι ι ι ι

α

ὠδὴ δ'

Α κη κο ω ως ο προ φη η η τη ης Χρι ι στε

ε την α α κο ο ο ο η ην σου ε φο ο βη η η

θη ο τι ι με ε ελ λεις ε εκ Παρ θε νου προ ο ο

ε ε ελ θει ει ν π q και αι αι αι ε ε βο η σε

ε τρο ο ο μω δ o o o ο ξα τη δυ υ να α

α μει ει σου ου Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε π q

ὥδ' ἔ'

Ω πα α α α αν τε ε ε ε πο ο ο πτα τω

ων α να α α κτωων το ο ο κλε ε ε ε ος π q

τις σου το φι λαν θρω ω πον γη η γε νω ω ων ου ου

θα α αυ μα α α α σει π q εν γη γα αρ ω ω ω φθης

μη η η η λι ι πων τα πα α τρω ω ω α

ση με ρον πα α α σαν ε ε ε εγκαι αι νι ζω ων

τη η ην κτι ι ι ι σιν και ει ρη νηνως μο ο ο

ο νο ο ος ει ει ρη η να α α αρ χης βρα βε ε ε ευ

ων

εις βυ θο ο ο ον α πω λει ει ει ει ας η τα

λαι αι πω ρος φυ υ υ υ σις Χρι στο ος μου ου ου Σω

ω ω τερ κα α τα αν τη σα α σα α α πα α α α

λαι ε χει ει ει ει το ο φε ε ε ευ μοι σκο τει ει νοι

οι οι οις ε εν κε ε ευ θμω ω ω ω σιν ε πι

δε τη η ση η θε ε ι ι κη δυ να α στει ει

ει α προ ος ου ρα νων α α νε ε ε βη τα α τε ερ

πνο τα τα κα α α α λ λη θυ υ σω σοι οι Σω ω ω τερ

βο α θυ υ σι ι α α α α αν αι αι νε

ε ε ε ε σε ε ε ε ως

ς οι παι αι αι αι δεσ πα α λαι αι σοι κρα ζω ω

με εν Λο ο ο ο ο γε γε νου σων δου ου ου λων Σω ω

τε ερ φυ λα αξ και αι αι σκε ε ε ε πη και

σω σον πα α α αν τας προ ος βο ο λη ης ε

ε να αν τι ι ι ι ι ας ο πω ω ως υ υ μνου

ου ου ουν τες σοις γε νε θλι ι ι ι οις <sup>π</sup> εις αι αι ω

ω ω ω νας <sup>η</sup> λε ε γο ο μεν ε ε ευ λο ο γη η η

το ο ο ο ος ει <sup>π</sup> ὠδὴ η'

<sup>χ</sup> **Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον <sup>Α</sup> <sup>π</sup>

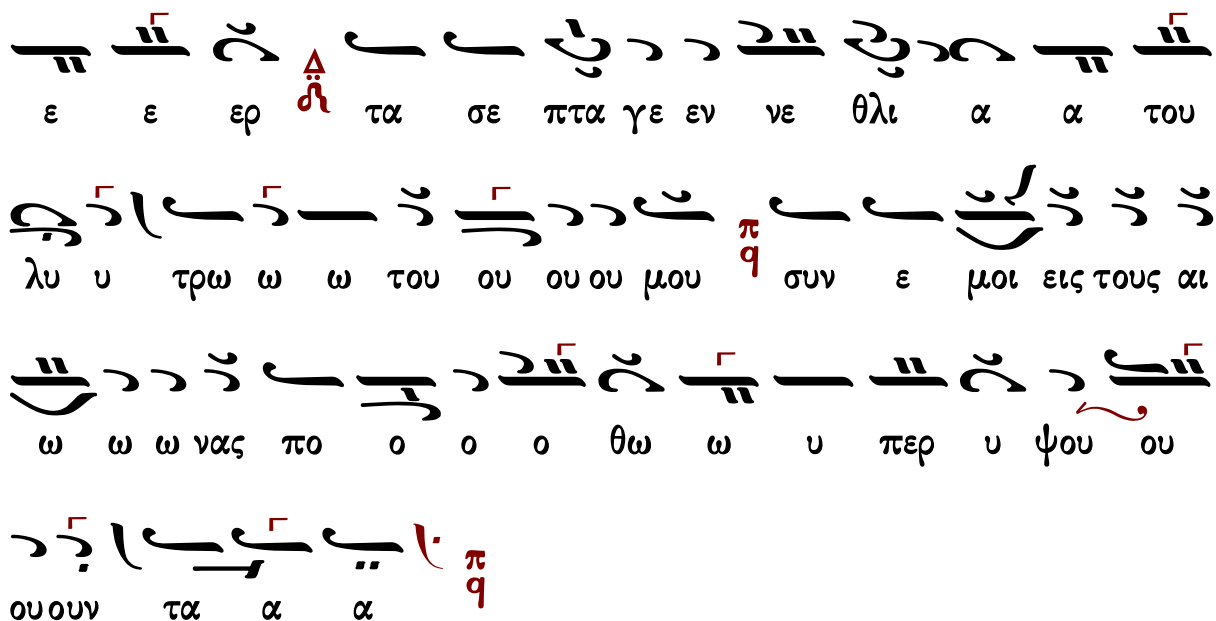
**Ν** ε ουρ γε του συμ πα αν τος κο σμου και αι Σω ω

ω στα <sup>Α</sup> υ μνει σε πα α α α σα με ετ αγ γε

ε ε λω ων η η η κτι ι ι ι σις <sup>π</sup> σκιρ τα α

χο ρε ε ευ ει και αι α γαλ λε ται αι τρο ο ο

μω <sup>Α</sup> ευ λο γει τε λε γου ου σα παν τα τα α ε



Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014)6

ὥδ᾽ αʹ

Ἦχος 4̣ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Καλοφωνικὸν Εἰρμολόγιον 1995\*



6 Οἱ παρόντες προσόρτιοι τῶν Χριστουγέννων εἰρμοί, μὴ ὑπάρχοντες εἰς τὰ ἐν χρήσει λειτουργικὰ βιβλία, ἐτονίσθησαν εἰς ἀργὸν εἰρμολογικὸν μέλος κατὰ μίμησιν τῶν ἱαμβικῶν καταβασίων τῶν Χριστουγέννων. [π.Κ.Π. 21.6.1988]



ε ευ τε γη γε νει ει εις τη η κα α αρ δι ι

ι ι ι α α σμα με λω ω δου ου ου α α α α

σω ω μεν τω ω ω Δε ε ε σπο ο ο ο ο τη

εις αι ω ω ω ω νας εν δο ο ξωσ γα αρ δε ε

δο ο ο ο ξαα α α σται

ψι με ε δων α α νααρ χε ε ευ με νε

ες Λο ο ο γεε ε ε πι ι βλεε ψο ον προ ο

σχε ε ες μοι δα κρυρ ρο ου ου ου ου σα η σε

πτη η ε ε βο ο α α σοι οι προ ο ο ο πα α

λαι αι αι Α α α α αν να αλλ ως ε χει νη ης η

η η η κου ου σας θρη η νω ω δου ου ου ση η  
 ης και η μω ων στε ε ρε ε ω ω σον τας φρε ε ε  
 να α ας α α α α ναξ του α ξι ι ι ως υ  
 μνει ειν σου χορὸς α' τα γε ε νε ε ε ε θλι ι ι ι  
 α  
 α  
 κη κο ο ως ο προ φη η η τη ης Χρι  
 ι ι στε την α κο η η η η ην σου ου ε φο  
 βη η η η θη η ο τι με ε ελ λεις εκ Παρ θε ε  
 νου ου προ ο ε ελ θει ει ει ει ει ει ειν και ε βο  
 ο η η σε ε τρο ο ο ο ο μω δο ο ξα α τη δυ υ

να α α μει σου ου Κυ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π</sup>q

ἀντὶ τοῦ παραπάνω

α β βα α κουμ <sup>χ</sup>q την εν δο ξον σου πα α α ρου σι

ι ι αν <sup>Δ</sup> α α κτι ι στε ε ε Λο ο ο ο ο γε

προ ι ι δων ε ε ε με λω ω ω ω δει <sup>π</sup>q α κη

η κο α α Κυ ρι ι ε <sup>χ</sup>q ο τι εξ ο ο ο ρου ους

α γι ι ι ι ου <sup>χ</sup>q η η η η η η ξεις εις βρο τω

ω ω ων σω ω ω τη ρι ι ι ι αν <sup>π</sup>q και δε ε ους

πλη η ρηης γε ε γο ο νως <sup>χ</sup>q α να κρα α α ζω <sup>π</sup>q

ως με γα λα τα α ε ε ερ γα α α Χρι στε ε ε ε μου

τη ης ση η ης δο ο ο ο ξης <sup>π</sup>q

ὥδῃ ε'

ω παν τε πο ο ο πτα α των α να α α

κτω ων το ο ο κλε ε ε ε ε ος τις σου το φι ι

λα αν θρω ω πον γη γε νω ω ων ου ου ου

θα α αυ μα α α α σει εν γη η γαρ ω ω

ω ω ω ω ω φθης μη η λι ι πω ω ω ω ω ων

τα α πα α α τρω ω ω ω α ση με ρον πα

α α α σα αν ε εγ και αι νι ι ι ζω ων τη

ην κτι ι ι σι ι ιν και ει ρη νη ην ω ως

μο ο ο νο ος ει ρη να α α αρ χη ης βρα α

α βε ε ε ε ευ ων

ὠδὴς'

e



۲۰

۱۷



۲۰

—



5



ε σε ε ε ε ως π<sup>9</sup>

ὠδὴ ζ'

ω ς οι παι αι δε ες πα α λαι αι σοι κρα ζο ο με

εν Λο ο ο γε ε ε γε νου ου σω ων δου ου ου

λω ων Σω ω ω τερ φυ λα αξ και αι αι σκε ε ε ε

ε πη και σω σον πα α α αν τα ας προσ βο ο λη η

ης ε εν α αν τι ι ι α α ας

ο ο πως υ υ μνου ντε ες σε ε ε σοι οι οις γε ε ε

νε ε ε θλι ι ι ι οις εις αι ω ω ω νας

λε ε ε γω ω μεν ε ε ευ λο ο γη η η το

ο ο ο ος ει π<sup>9</sup>

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Ν ε ουρ γε ε του ου συ υμπα αν το ος χο ο

σμου και αι σω ω ω στα α α υ μνει σε πα α

α α σα α μετ αγ γε ε ε ε λω ων η η η κτι ι

ι ι σις σκιρ τα χο ρε ε ε ευ ει ει και αι α α

γα α α αλ λε ε ται αι αι τρο ο ο ο μω ευ λο ο

γει ει τε ε λε γου ου ου σα πα α α αν τα α τα α

α ε ε ε ε ερ γα τα σε πτα γε ε νε ε θλι

ι α του λυ τρω του ου ου μου ου συν ε μοι οι εις

του ους αι αι ω ω ω νας ς πο ο ο θω ω ω

υ υ πεερ υ υ υ ψου ουου ου ουν τα π ς

\* τα α α α π ς

## Τιμιωτέρα ἦχος α΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος α΄

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου



- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
 α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

# Ἦχος ♯ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#

**Μ**  ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι

 ον  και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου  ε πι

 τω Θε ω τωσω τη ρι μου 

**Τ**  ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο ξο

 τε ραν α συγ χρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α

 φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

 το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

**Ο**  τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω

 σιν της δου λης αυ του  ι δου γαρ α πο του νυν μα χα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ο τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>π q</sup> την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ δ</sup> την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π q</sup>

<sup>Ε χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

του <sup>Δ δ</sup> δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>Ε χ</sup> φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των <sup>Δ δ</sup>

<sup>Τ</sup> ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ δ</sup> και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>π q</sup> την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ δ</sup> την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π q</sup>

**Κ** α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

**Α** ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του εως αι ω νος ἤ

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ ἤ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ ἤ την α δι

α φθο ρως ἤ Θε ο ον Λο γον τε κου σαν π η την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π η

## Καταβασία θ' ὀδῆς

Ὁδὴ θ'

Χαίροις, πάναγνε θεοδέγμον Μαρία,  
χαίροις, ἄχραντε τῶν πεπτωκότων βάσις·  
ἐν σοὶ γὰρ ὤφθη σήμερον ὁ Δεσπότης  
ὦ θαῦμα! καινουργῶν τοὺς φθαρέντας  
καὶ πρὸς φῶς ἐπανάγων τὸ ἀνέσπερον, Κόρη.

Σύντομος

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

Αντωνίου ιερέως καὶ Νομοφύλακος

Ἀργὴ

Πέτρου Μπερεκέτη

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

Χ α ι ρ ο ι ς π α ν α γ ν ε ε θ ε ο δ ε γ μ ο ν Μ α ρ ι ι α  
χ α ι ρ ο ι ς α χ ρ α ν τ ε τ ω ν π ε π τ ω κ ο τ ω ν β α σ ι ς π <sup>π</sup><sub>9</sub> ε ν σ ο ι γ α ρ  
ω φ θ η σ η μ ε ρ ο ν ο Δ ε σ π ο ο τ η ς ω ω θ α α υ μ α κ α ι  
ν ο υ ρ γ ω ω ν τ ο υ ς φ θ α ρ ε ε ν τ α ς π <sup>π</sup><sub>9</sub> κ α ι π ρ ο ς φ ω ω ς ε π α ν α α  
γ ο ν τ ο α ν ε ε σ π ε ρ ο ν κ ο ρ η η η η π <sup>π</sup><sub>9</sub>

Ἀρχή

Ἀντωνίου ιερέως καὶ Νομοφύλακος

Χ α ι ρ ο ι ς π α α ν α α γ ν ε ε Θ ε ο ο δ ε ε ε γ μ ο ν  
Μ α α ρ ι ι ι α <sup>Δ</sup><sub>8</sub> χ α ι ρ ο ι ς α α χ ρ α α ν

τε ε τω ω ων πε ε πτο χο τω ω βα α α σις

εν σοι οι γα αρ ω ω ω φθη ση η η η με ε ρον ο ο

Δε σπο ο ο ο της ω θα α α α α α α

α α αυ μα α και νου ουρ γω ω ων τους φθα ρε ε

ε εν τας και προ ος φως ε πα α να α α γων

το ο ο ο α α νε σπε ε ρον Κο ο ο ο ρη

\* ρη η η η

Πέτρου Μπερεκέτι

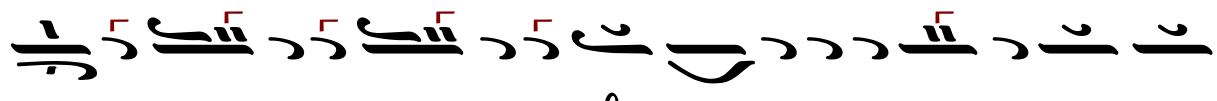
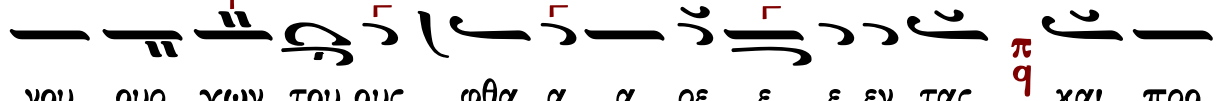
ὁδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

χειρόγραφα Γρηγορίου Πρωτοψάλτου  
Βιβλιοθήκη Κ.Α.Ψάχου\*

Χ αι ρις παν α α γνε ε ε θε ε ε ε ο δε ε γμω



  
 ων Μα α ρι ι ι α  χαι ροις α χραν τε ε τω ων  
  
 πε ε πτω κο ο τω ω ων βα α α α σις  εν  
  
 σοι οι γα α αρ ω ω ω φθη ση η η η με ε ρον ο  
  
 Δε ε σπο ο ο της  ω θα α α αυ μα και αι αι  
  
 νου ουρ γων του ους φθα α α ρε ε ε εν τας  και προ  
  
 ος φως ε πα να α α γω ω ω ω ων το ο α α νε  
  
 ε ε ε σπε ρον κο ο ο ο ρη η η η 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος  Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Καλοφωνικὸν Εἰρμολόγιον 1995\*

  
 Χ αι αι ροις παν α α γνε ε θε ε ο ο δε ε ε ε

γμο ον Μα α α ρι ι ι α και ροις α α χρα αν

τε ε τω ω ω ω ν πε ε πτω χο ο ο τω ω ω ν βα

α α α α σις εν σοι οι γαρ ω ω φθη η η

ση η με ε ε ρον ο ο Δε ε ε σπο ο ο ο

ο της ω θα α α α αυ μα και νουρ γω ω ω ω ω ν

τους φθα α ρε ε εν τα ας και προς φω ω ως ε ε

πα α α να α α α α γων το α νε ε ε

ε σπε ε ρο ο ο ν Κο ο ο ο ο ρη

ρη η η η

ο Δε σπο ο ο ο της ω

# Τῶν Χριστουγέννων

Πεζαὶ καὶ ἱαμβικαὶ  
25, 26 καὶ 31 Δεκεμβρίου

## ἤχος α'

α **Χ**ριστὸς γεννᾶται, δοξάσατε. Χριστὸς ἐξ οὐρανῶν ἀπαντήσατε. Χριστὸς ἐπὶ γῆς, ὑψώθητε, ἄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν εὐφροσύνῃ, ἀνυμνήσατε λαοί, ὅτι δεδοξάσται.

**Ὶ**σωσε λαόν, θαυματουργῶν Δεσπότης, ὑγρὸν θαλάσσης κύμα χερσώσας πάλαι· ἐκὼν δὲ τεχθεὶς ἐκ Κόρης, τρίβον βατὴν, πόλου τίθησιν ἡμῖν· ὃν κατ' οὐσίαν, ἴσόν τε Πατρί, καὶ βροτοῖς δοξάζομεν.

γ **Τ**ῷ πρὸ τῶν αἰώνων, ἐκ Πατρὸς γεννηθέντι ἀρρεύστως Υἱῷ, καὶ ἐπ' ἐσχάτων ἐκ Παρθένου, σαρκωθέντι ἀσπόρως, Χριστῷ τῷ Θεῷ βοήσωμεν· ὁ ἀνυψώσας τὸ κέρας ἡμῶν, ἅγιος εἶ Κύριε.

**Ν**εῦσον πρὸς ὕμνους οἰκετῶν εὐεργέτα, ἐχθροῦ ταπεινῶν τὴν ἐπηρμένην ὀφρύν, φέρων τε παντεπόπτα τῆς ἁμαρτίας, ὑπερθεν ἀκλόνητον, ἐστηριγμένους, μάκαρ, μελωδοὺς τῇ βάσει τῆς πίστεως.

δ **Ὶ**άβδος ἐκ τῆς ρίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐξ αὐτῆς Χριστέ, ἐκ τῆς Παρθένου ἀνεβλάστησας· ἐξ ὅρους ὁ αἰνετὸς κατασκήλου δασέος ἦλθες σαρκωθείς ἐξ ἀπειράνδρου, ὁ ἄυλος καὶ Θεός. Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

**Γ**ένους βροτείου τὴν ἀνάπλασιν πάλαι, ἄδων προφήτης Ἀββακούμ, προμηνύει, ἰδεῖν ἀφράστως ἀξιωθείς τὸν τύπον. Νέον βρέφος γάρ, ἐξ ὅρους τῆς Παρθένου, ἐξῆλθε λαῶν, εἰς ἀνάπλασιν Λόγος.

ε **Θ**εὸς ὢν εἰρήνης, Πατὴρ οἰκτιρμῶν, τῆς μεγάλης βουλῆς σου τὸν ἄγγελον, εἰρήνην παρεχόμενον ἀπέστειλας ἡμῖν· ὅθεν θεογνωσίας, πρὸς φῶς ὁδηγηθέντες, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντες, δοξολογοῦμέν σε φιλάνθρωπε.

**Ὶ**κ νυκτὸς ἔργων, ἐσκοτισμένης πλάνης ἱλασμὸν ἡμῖν Χριστέ τοῖς ἐγρηγόρως, νῦν σοι τελοῦσιν ὕμνον, ὡς εὐεργέτη, ἔλθοις πορίζων εὐχερῇ τε τὴν τρίβον, καθ' ἣν ἀνατρέχοντες, εὐροῖμεν κλέος».

ς **Σ**πλάγχχνων Ἰωνᾶν, ἔμβρυον ἀπήμεσεν ἐνάλιος θήρ οἷον ἐδέξατο· τῇ Παρθένῳ δέ, ἐνοικήσας ὁ Λόγος, καὶ σάρκα λαβὼν διελήλυθε φυλάξας ἀδιάφθορον· ἥς γὰρ οὐχ ὑπέστη ρεύσεως, τὴν τεκοῦσαν κατέσχευ ἀπήμαντον.

**Ν**αίων Ἰωνᾶς, ἐν μυχοῖς θαλαττίοις, ἐλθεῖν ἐδεῖτο, καὶ ζάλην ἀπαρκέσαι. Νυγεῖς

ἐγὼ δέ, τῷ τυραννοῦντος βέλει, Χριστέ προσαυδῶ, τὸν κακῶν ἀναιρέτην, θᾶπτον μολεῖν σε τῆς ἐμῆς ῥαθυμίας.

ζ **Οἱ** παῖδες εὐσεβεῖα συντραφέντες, δυσσεβοῦς προστάγματος καταφρονήσαντες, πυρὸς ἀπειλὴν οὐκ ἐκπτοήθησαν, ἀλλ' ἐν μέσῳ τῆς φλογὸς ἐστῶτες ἔψαλλον· ὁ τῶν πατέρων Θεός, εὐλογητὸς εἶ.

**Τῷ** παντάνακτος ἐξεφάυλισαν πόθῳ, ἅπλητα θυμαίνοντος ἡγκιστρωμένοι, παῖδες τυράννου δύσθεον γλωσσαλγίαν, οἷς εἶκαθε πῦρ ἄσπετον, τῷ Δεσπότῃ, λέγουσιν· εἰς αἰῶνας εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Θαύματος** ὑπερφυῶς ἡ ὁροσοβόλος, ἐξεικόνισε κάμινος τύπον· οὐ γὰρ οὐς ἐδέξατο φλέγει νέους, ὥς οὐδὲ πῦρ τῆς Θεότητος, Παρθένου ἦν ὑπέδου νηδύν· διὸ ἀνυμνοῦντες ἀναμέλψωμεν. Εὐλογεῖτω ἡ κτίσις πᾶσα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψούτω, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

**Μήτραν** ἀφλέκτως εἰκονίζουσι Κόρης, οἱ τῆς παλαιᾶς πυρπολούμενοι νέοι, ὑπερφυῶς κύουσαν, ἐσφραγισμένην. Ἄμφω δὲ δρωῖσα, θαυματουργία μιᾷ, λαοὺς πρὸς ὕμνον ἐξανίστησι χάρις.

Ἀργαί

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδ' ἁ'

Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.248#

**Χ** ρι στος γεν ναι ται δο ξα σα τε Χρι στος εξ ου ρα νων  
α παν τη σα τε <sup>π</sup> **Χ**ρι στο ος ε πι γης υ ψω θη τε α

σα τε τω Κυ ρι ω πα σα η γη η η και εν ευ φρο

συ υ νη α νυ μνη σα τε λα οι ο τι δε δο ο ξα α

π  
9  
σται

Ε σω σε λα ον θαυ μα τουρ γων Δε σπο ο της υ

γρον θα λα ασ σης κυ μα χερ σω σας πα α λαι ε

κων δε τε χθεις εκ κο ρης τρι βον βα την πο λου τι

π  
9  
θη σιν η μιν ον κατ ου σι αν ι σον τε Πα τρι και βρο

π  
9  
τοις δο ξα α ζο ο μεν

ᾠδὴ γ'

π  
9  
Τ ω προ των αι ω νων εκ Πα τρος γεν νη θεν τι

αρ ρε ευ στως Ὑι ω και επ ε σχα των εκ Παρ θε νου

σαρ κω θεν τι α σπο ρως Χρι στω ω τω Θε ω βο

η σω μεν ο α νυ ψω σας το κε ρας η μων

α γι ος ει Κυ υ ρι ι ε

Ν ευ σον προς υ υ μνου ους οι κε των ευ ερ γε

ε τα ε χθρου ουταπει νων την ε πηρ με ε νην ο φρυν

φε ρων τε παν τε πο πτα της α μαρ τι ας υ πεερθεν

α κλο νητον ε στη ρι γμε ε νους μα καρ μελω δους

χορὸς ἀ' τη βα σει της πι ι στε ε ως

Ρ α βδος εκ της ρι ζης Ι εσ σαι και αν θος εξ αυ

της Χρι στε εκ της Παρ θε νου α νε βλα στησας εξ ο

ρους ο αι νε τος κα τα σκι ου δα σε ος <sup>π</sup>ηλ θες

σαρκω θεις εξ α πειρ αν δρου ο α υ λος και Θε ος <sup>Δ</sup>

δο ξα τη δυ να μει σου Κυ υ ρι ι ε <sup>π</sup>

Γ ε νους βρο τει ει ου ου την α να πλα σιν πα

α λαι <sup>Δ</sup> α δων προ φη η της Αβ βα κουμ προ μη νυ

ει ι δειν α φρα α στως α ξι ω θεις τον τυ υ

πον <sup>Δ</sup> νε ον βρε φος γαρ εξ ο ρους της Παρ θε ε νου <sup>π</sup> ε

ξηλ θε λα ων <sup>π</sup> χορὸς β' εις α να πλα σιν Λο γος <sup>π</sup> ὠδὴ ε'

Θ ε ος ων ει ρη νης Πα τη η ηρ οι κτιρ μων <sup>Δ</sup> της

με γα λης βου λη ης σου τον Αγ γε λον <sup>π</sup> ει ρη νην

πα ρε χο μενον α πε στει λας η μιν ο θεν θε ο

γνω σι ας <sup>Α</sup> προς φως ο δη γη θεν τες εκ νυ

κτος ορ θρι ζοντες δο ξο λογουμεν σε φι λα ανθρω ω πε <sup>π</sup><sub>9</sub>

<sup>Ε</sup> κ νυ κτος ε ερ γων ε σκο τι σμε νοις πλα α

νης ι λα σμον η μιν Χρι στε τοις ε γρη γο ο ρως νυν

σοι τε λου σιν υ μνον ως ευ ερ γε ε τη ελ θοις

πο ρι ι ζων ευ χε ρη τε την τρι ι βον <sup>π</sup><sub>9</sub> καθ ην α

να τρε χον τες <sup>χ</sup>ορὸς α' ευ ροι μεν κλε ος <sup>π</sup><sub>9</sub> ὥδῃς'

<sup>С</sup> πλαγ χνων Ι ω ναν εμ βρυ ον α πη με σεν ε να λι ος

θηρ οι ον ε δε ε ξα α το τη Παρ θε νω δε ε νοι



κη σας ο Λο γος και σα αρκαλα βων <sup>π ρ</sup> δι ε λη λυ θε

φυ λα ξας α δι α φθορον η ης γαρ ουχ υ πε στη

ρευ σεως την τε κου σαν κα τε σχεν α πη η μα αν τον <sup>π ρ</sup>

**Ν** αι ων Ι ω να ας εν μυ χοις θα λατ τι ι οis

ελ θειν ε δει το και ζα λην α παρ κε εσαι νυ γεις ε γω

δε τω τυ ραν νουν τος βε ε λει <sup>Α</sup> Χρι στε ε προσ αυδω τον

κα κων α ναι ρε ε την θατ τον μο λει ει ει ν σε χορδς

β' της ε μης ρα θυ μι ας <sup>π ρ</sup> ῶδὴ ζ'

**Ο** ι παι δες ευ σε βει α συν τρα φεν τες <sup>π ρ</sup> δυσ σε

βους προσ τα γμα τος κα τα φρο νη σαν τες πυ ρο ος

α πει λην ουκ ε πτο η θησαν <sup>Δ</sup> αλλ εν με σω της φλο

γος ε στω τες ε ψαλ λον <sup>π</sup> ο των πα τε ε

ρων Θε ος ευλογη τος ει <sup>π</sup>

<sup>Τ</sup>ω παν τα να κτο ος εξ ε φαυ λι σαν πο ο θω

α πλη τα θυ μαι νον τος ηγ κι στρω με ε νοι <sup>π</sup> παι δες

τυ ραν νου δυσ θε ον γλωσ σαλ γι ι αν <sup>Δ</sup> οις ει ει κα

θε πυρ α α σπε τον τω Δε σπο τη λε γου σιν <sup>χορὸς α'</sup>

εις αι ω ω νας ευ λο γη τος ει <sup>π</sup> <sup>ὠδὴ η'</sup>

<sup>Α</sup>ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Δ</sup>

Θ αυ μα τος υ περ φυ ους η δρο σο βο λος εξ ει

κο νι σε κα μι νος τυ υ υ πον ου γαρ ους ε δε ξα το

φλε γει νε ους ως ου δε πυρ της Θε ο τη τος

Παρ θε νου ην υπ ε ε δυ νη δυν <sup>π</sup> <sub>9</sub> δι ο ο α νυ

μνουν τες α να μελ ψω μεν <sup>Δ</sup> <sub>8</sub> ευ λο γει τω η κτι σις πα

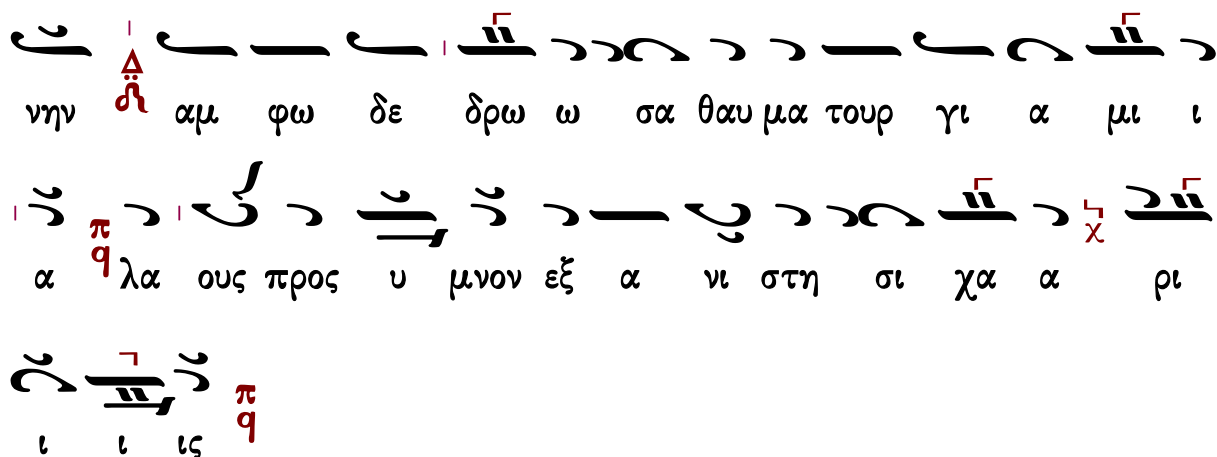
α σα τον Κυ ρι ον <sup>π</sup> <sub>9</sub> και υ περ υ ψου ου τω εις παν

τας τους αι ω ω νας <sup>π</sup> <sub>9</sub>

Μ η τραν α φλε ε κτω ως ει κο νι ι ζου

σι κο ο ρης <sup>Δ</sup> <sub>8</sub> οι της πα λαι α ας πυρ πο λου ου με

νοι νε οι <sup>π</sup> <sub>9</sub> υ περ φυ ως κυ ου σαν ε σφρα γι σμε ε



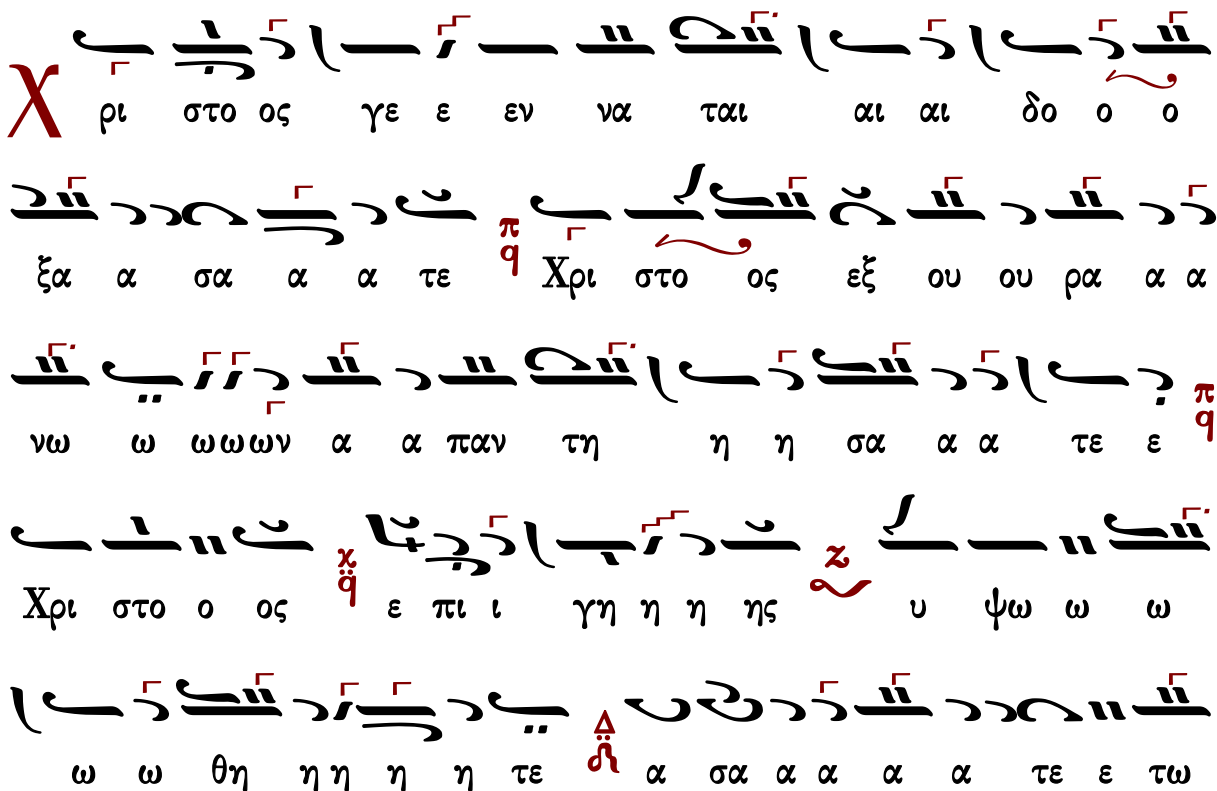
## Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ α΄

Ἦχος ᾠ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.7\*



ω Κυ υ ρι ωω πα α α σα α η η γη η η η και αι

εν ευ φρο ο συ υ υ νη α νυ μνη η σα

τε ε ε λαα οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο

ξα α α α σται

ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα α

του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της υ γρο ον θα

λα α α α α σ της κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α λαι ε κων δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η ην

πο λου τι ι θη η σι ιν η η η μι ιν ον

κα α τ ου ου ου σι ι ι ι ι αν π q ι ι ι ι

ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι ι και

βρο τοι οis δο ο ξα α α α α σωω ω ω μεν π q

Ὡδὴ γ'

Τ ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων π q εκ πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως υι υι υι ω π q και επ ε σχα α των ε εκ

παρ θε ε ε ε νου δ σα α α αρ κω θε εν τι ι α

α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω π q τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν π q ο α


  
 νυ ψω ω σας το χε ε ε ρας η η μων α α γι ο


  
 ος ει ει Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

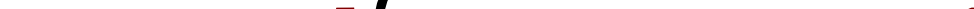
**N** ευ σο ο ο ο ο ον προς υ υ υ υ υ υ υ μου

Ου Ου Ου ΟΥς Ιο Ιο Ιο Χε Ε Ε Ε Τω ω Ων ε ε ευ




ερ      γε ε    ε    ε    τα      π 9    ε    χθρου    ου    ου ου    τα    α    πει

ει ει νω ων την ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη


 ην ο ο ο φρυν π<sub>q</sub> φε ε ε ρω ων τε x<sub>q</sub> παν τε πο ο ο

ο πτα α της α μαρ τι α ας υ υ περ θε εν α

κ λ ο ο ν η η τ ο ο ν ε σ τ η η ρ ι ι ι γ μ ε ε ε ε ε

λω ω δου ου ους χορὸς α' τη βα α σει ει τη ης πι ι

ι ι ι στε ε ε ε ως

Ὡδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α αν ε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα α

σε ε ε ο ος ηλ θε σαρκω ω θει εις εξ α α α πει

ει ρα α αν δρου ο α α υ λο ος και Θε ε

ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ



υ υ υ υ ρι ι ι ι ε π q

ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α α

πλα α σι ιν πα α α λαι α δων προ ο φη η η τη ης

Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ υ υ

ει ι δειν α φρα α α α στω ως α α α α ξι ι

ω θει εις τον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

ε ε εξ ο ο ο ρους τη ης παρ θε ε ε ε νου

εξ η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω

ω ω ων χορδς β' ει εις α α να α α πλα α

σι ι ιν Λο ο ο ο ο γος

Θ ε ο ος ω ω ωων ει ει ρη η η νης Πα τη

η η η ηρ οι οι κτι ιρ μων της με γα α

λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α ααγ γε ε

λο ον ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α πε ε

στει ει λας η η μιν ο ο θε ε ε εν θε ε ο ο γνω

σι ι ι ι ι ας προς φω ω ω ως ο ο δη η

γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ον τε ε

ες δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α α α

αν θρω ω ω ω πε

ε χ νυ κτος ε ε ερ γω ων ε ε ε σκο ο τι σμε

νοι οἰς πλα α α νης ι λα σμον η η μι ιν

Χρι στε ε τοις ε ε γρη γο ο ο ο ρως νυν σοι τε

λου ου ου ου σι ιν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ ε

ερ γε ε ε τη ην ελ θοις οἰς πο ο ρι ι ι

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι ι

ι βον καθ ην α να τρε χο οντες χορὸς ᾠ ε ε ευ ροι οι μεν

κλε ε ε ε ε ος

Ὡδὴς'

πλα α αγ χνω ω ων Ι ι ω ω ω ναν εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν ε να α α λι ι

ο ος θηρ **Α** οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο **π** τη Παρ θε νω ω δε **π** εν οι κη η

σα ας ο ο ο λο γο ος και αι σα α α α αρ κα

α λα α α βων **π** δι ε λη η λυ θε ε φυ λα α α

ξα ας α δι α φθο ο ρον **π** η η η ης γα αρ ου χ υ

πε ε στη η ρευ σε ε ως **π** την τε κου ου σα αν

κα α α τε σχεν α α πη η η η η μα α α αν

**π**  
τον

**N** αι αι ων Ι ι ω ω ω να ας ε εν μυ υ χ οι

οι οισ θα λα ατ τι ι ι οι οισ **Α** ε ελ θει ει ν

ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην α

α α παρ κε ε ε ε ε σαι <sup>π</sup>νυ γεις ε γω ω ω ω

δε ε του ου ου ου τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει <sup>Δ</sup>Χρι στε ε ε ε προ ος α α αυ <sup>Δ</sup>δω

το ον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε ε ε

την <sup>π</sup>θατ τονμο λει ει ει ει ειν σε ε ε ε ε ε χορὸς β'

τη η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι

ι ι <sup>π</sup>ας

<sup>Ω</sup>δὴ ζ'

**Ο** ι παι αι δες ευ σε βει ει α συ υ υ υντρα α φε

ε εν τες π δυσ σε ε ε βου ους προσ τα α γμα

το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα α αν

τε ες πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην ουκ

ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν αλλ ε

εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος ε

ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον ο των

πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει π

Τ ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε ε φα αυ λι ι

σα αν πο ο ο ο ο θω α πλη τα θυ μαι αι νο ον το

ος η η ηγ γι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι π q

παι δες τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υ σθε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει κα

α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν χορός α'

εις αι ω ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει π q

ᾠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος <sup>π</sup>ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον <sup>π</sup>ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε ους <sup>π</sup>

ως ου δε ε πυρ τη ης θε ο τη η η το ος <sup>Δ</sup>Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν <sup>π</sup>δι ο ο ο ο αν υ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν <sup>Δ</sup>ευ λο γει τω ω η κτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον <sup>π</sup>και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω



νας <sup>π  
9</sup>

**Μ** η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο νι

ι ι ζου ου σι ι κο ο ο ο ο ρης <sup>χ  
9</sup> οι της πα λαι α ας

πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε ε ε

οι <sup>π  
9</sup> υ περ φυ υ ως κυ υ ου ου σα αν ε σφρα α

γι ι σμε ε ε νη ην <sup>Δ  
9</sup> αμ φω ω δε δρω ω ω

σα α θα α αυ μα α τουρ γι ι α μι ι ι ι ι

α <sup>π  
9</sup> λα ους προς υ υ υ υ υ μνο ο ο ο ο ον ε

ε εξ α αν ι ι ι ι στη η σι χα α α α α

ρι ι ι ις <sup>π  
9</sup>

# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>7</sup>

ὥδῃ α'

Ἦχος ♭ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.297/3020\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε Χρι στο ος εξ ου ρα α α

νω ω ω ωων α α παν τη η η σα α τε ε

Χρι στο ο ος ε πι ι γη η η ης υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε α σα α α α α τε ε

τω ω Κυ υ ρι ωω πα α α σα α η η γη η η η

και αι εν ευ φρο ο συ υ υ νη α νυ μνη η

σα τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο

<sup>7</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἑλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.

ο ξα α α σται π  
9

Ε ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα α

του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της χ  
9 υ γρο ον θα

λα α α α α α σης Δ  
9 κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α α λαι π  
9 ε κων δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η η

ην Δ  
9 πολου τι ι θη η σι ιν Δ  
9 η η η μι ιν

ον κα ατ ου ου ου σι ι ι ι ι αν π  
9 ι ι

ι ι ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι

ι και βρο τοι οισ δο ο ξα α α α α ζο ο ο

ο μεν π q

ἄλλη γραμμή

\* τι ι θη η σι ι εν η η μιν η ο ο ον ...

ῥδῆ γ'

Τ ω προ τω ω ω ν αι αι ω ω ω ν ω ν π q εκ Πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως Υι υι υι ω π q και επ ε σχα α των ε εκ

Παρ θε ε ε ε νου Δ q \* σα α α αρ κω θε εν τι ι

α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω π q τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν π q ο

α νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων Δ q α α γι

ο ος ει ει Κυ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π</sup>q

\* <sup>Δ</sup>σαρ κω θεν τι ι α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω

ω τω Θε ε ω <sup>Δ</sup>βο η η η η σω ω ω ω

ω μεν <sup>Δ</sup>ο α νυ ... <sup>π</sup>q

**N** ευ σο ο ο ο ον προς υ υ μνου ου ου ους οι

οι οι κε ε τω ω ω ων ε ε ευ ερ γε ε ε ε

τα <sup>π</sup>q ε χθρου ου ου ου τα α πει ει ει νω ων <sup>γ</sup> την

ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη ην ο ο ο φρυν <sup>π</sup>q

φε ε ε ρω ων τε παν τε πο ο ο πτα α <sup>η</sup> της α

μαρ τι α ας υ υ πε ερ θε εν <sup>Δ</sup>α κλο ο νη η το ον

ε στη η ρι ι ι γμε ε ε ε ε νους <sup>π ρ</sup> \* μα α

α α α α κα α α α α αρ με λω ω δου ου

ους <sup>ζ</sup> χορός α' τη βα α σει ει τη ης πι ι ι ι

ι στε ε ε ε ως <sup>π ρ</sup>

αλλι γραμμή \* μα κα αρ με λω ω δου ου ου ου ους <sup>ζ</sup> χορός α' τη βα

α ...

ὥδῃ δ'

**P** α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι <sup>Δ</sup> και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε <sup>π ρ</sup> εκ της Παρ θε ε νου α α νε ε βλα στη η σας <sup>π ρ</sup>

ἐξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα

α σε ε ε ο ος ηλ θες σαρ κω ω θει εις εξ α α α

πει ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε

ε ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

Ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α

α πλα α σι ιν πα α α λαι α δων προ ο φη η η

τη ης Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ

υ υ ει ι δειν α φρα α α α στω ως α α ξι ι

ω θει εις το ον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

εξ ο ο ο ρους τη ης Παρ θε ε ε ε νου <sup>π</sup>εξ

η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω ω ω

ων <sup>ζ</sup> χορός β' ει εις α α να α α πλα α σι ι ιν

Λο ο ο ο γος <sup>π</sup>

ὥδ' ἔ'

Θ ε ο ος ω ω ω ων ει ει ρη η η νης <sup>π</sup>Πα

τη η η η ηρ οι οι κτι ιρ μων <sup>Δ</sup> της με γα

α λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α α αγ

γε ε λο ον <sup>π</sup>ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α

πε ε στει ει λας η η μιν <sup>π</sup>ο ο θε ε ε εν θε ε ο



ο γνω σι ι ι ι ι ας προ φω ω ω ως ο ο

δη η γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ον

τε ε ες δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α

α α αν θρω ω ω ω πε

Ε κ νυ κτος ε ε εργων ε ε σκο ο τι σμε νη

ης πλα α α νης ι λα σμον η η μι ιν Χρι στε

ε τοις ε ε ε γρη γο ο ο ο ρως νυν σοι τε

λου ου ου ου σι ιν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ

ε εργε ε ε τη η ελ θοις πο ο ρι ι ι

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι

ι ι βον <sup>π</sup> καθ ην α να τρε χο ον τες <sup>ν</sup> χορός α' ε ε ευ

ροι οι μεν κλε ε ε ε ε ος <sup>π</sup>

ᾠδὴς'

**C** πλα α αγ χνω ω ων I ι ω ω ω ναν <sup>π</sup> εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π</sup> εν α α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο <sup>π</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π</sup> εν οι κη η

σα ας ο ο ο Λο γο ος και αι σα α α α αρ

κα α λα α α βων <sup>π</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα

α α ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π</sup> η η η ης γα αρ

ουχ υ πε ε στη η ρε ευ σε ε ως π q την τε κου

ου σα αν κα α α τε σχεν α α πη η η η

η μα α α αν τον π q

N αι αι ων I ι ω ω ω να ας ε εν μυ υ χοι

οι οισ θα α λα ατ τι ι ι οι οισ ε ελ

θει ειν ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην

α α α παρ κε ε ε ε ε σαι π q νυ γεις ε γω

ω ω ω δε ε τω ω τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει Xρι στε ε ε ε ε προ οσ α α αυ

δω το ον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε

ε ε την π θατ τον μο λει ει ει ει ειν σε η χορὸς β' τη

η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι ι ι

ας π q

ῶδὴ ζ'

O ι παι αι δεσ ευ σε βει ει α συ υ υ υν τρα α

φε ε εν τες π q δυσ σε ε ε βου ους προσ τα α

γμα το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα

α αν τε ες π q πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην

ουκ ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν αλλ

ε εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος

ε ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π q</sup> ο

των πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π q</sup>

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

\* <sup>π q</sup> ευ σε βει α συ υ υ υν...

\* <sup>Δ</sup> αλλ εν με ε σω ω ω ω ω τη ης φλο ο γο ος

ε ε στω ω τε ες ... <sup>π q</sup>

**T** ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε φα αυ λι ι

σα αν πο ο ο ο θω <sup>χ q</sup> α πλη τα θυ μαι αι νον το

<sup>Δ</sup> ος <sup>\*</sup> η η ηγ κι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι <sup>π q</sup>

παι δες τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υσ θε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν  οις ει ει ει ει

κα α θε ε ε πυρ  α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη  λε ε γου ου σιν χορός α' εις αι

ω ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει 

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

 η ηγ κι στρω με ε ε νοι παι αι αι αι δεσ  τυ

ρα α α αν...

 οις ει ει ει ει κα α α α θε  πυ υ υρ α

α σπε ε ε τον  τω Δε σπο ο τη η λε γου ου σιν 

χορός α' εις αι ω ω ω νας... 

ᾠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε

ους ως ου δε ε πυρ τη ης Θε ο τη η τος Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν δι ο ο ο ο α νυ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν ευ γο γει τω ω η κτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω

νας

Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο

νι ι ι ζου ου σι ι Κο ο ο ο ο ρης οι της πα λαι

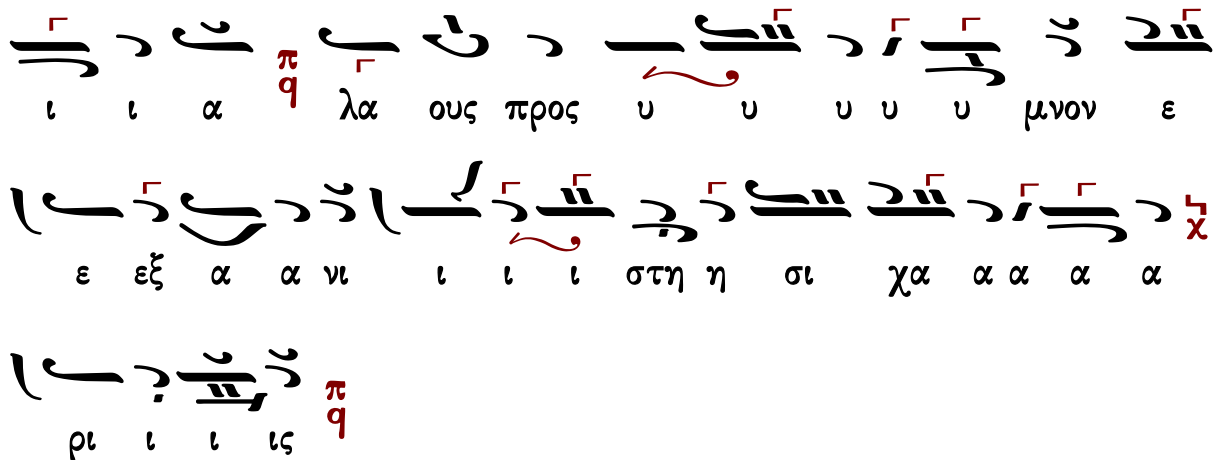
αι ας πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε

ε ε οι υ περ φυ υ ως κυ υ ου ου σα αν ε

σφρα α γι ι σμε ε ε νη ην αμ φω δε

ε δρω ω ω σα α θα αυ μα τουρ γι ι ι α α μι





## ὥδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὥδὴ θ' κανὼν α'

ἦχος α'

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.  
«**Μ**υστήριον ξένον, ὁρῶ καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ σπηλαιοῦ θρόνον χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλήθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν».

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς Παρθένου, Θεὸν σαρκὶ τεχθέντα.  
**Ἐ**ξαίσιον δρόμον, ὁρῶντες οἱ μάγοι, ἀσυνήθους νέου ἀστέρος ἀρτιφαοῦς, οὐρανοῦ ὑπερλάμποντος, Χριστὸν βασιλέα ἐτεκμήραντο, ἐν γῇ γεννηθέντα Βηθλεέμ, εἰς σωτηρίαν ἡμῶν.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐν τῷ σπηλαίῳ, τεχθέντα βασιλέα.  
**Ν**εηγενὲς μάγων λεγόντων, παιδίον ἀναξ, οὗ ἀστὴρ ἐφάνη, ποῦ ἐστίν; εἰς γὰρ ἐκείνου προσκύνησιν ἤκομεν· μανεῖς ὁ Ἡρώδης ἐταράττετο, Χριστὸν ἀνελεῖν, ὁ θεομάχος φρουαττόμενος.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τῶν ὑπὸ τῶν μάγων, Θεὸν προσκυνηθέντα.  
**Ἡ**κρίβωσε χρόνον Ἡρώδης ἀστέρος, οὗ ταῖς ἡγεσίαις οἱ μάγοι ἐν Βηθλεέμ, προσκυνοῦσι Χριστῷ σὺν δώροις· ὅφ' οὗ πρὸς πατρίδα ὁδηγοῦμενοι, δεινὸν παιδοκτόνον, ἐγκατέλιπον παιζόμενον.

ὥδὴ θ' κανὼν β'

ἦχος α'

**Σ**ήμερον ἡ Παρθένος, τίττει τὸν Δεσπότην, ἔνδον ἐν τῷ σπηλαίῳ.

«Στέργειν μὲν ἡμᾶς, ὡς ἀκίνδυνον φόβῳ, ῥᾶον σιωπῇν, τῷ πόθῳ δὲ Παρθένε, ὕμνους ὑφαίνειν, συντόνως τεθηγμένους, ἐργῶδές ἐστιν, ἀλλὰ καὶ Μήτηρ σθένης, ὅση πέφυκεν ἢ προαίρεσις δίδου».

Σήμερον ὁ Δεσπότης, τίκτεται ὡς βρέφος, ὑπὸ Μητρὸς Παρθένου. ✠

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου, Θεότητος τὸ κράτος.

Τύπους ἀφεργεῖς καὶ σχιᾶς παρηγμένας, ὦ Μήτηρ ἀγνή, τοῦ Λόγου δεδορκότες, νέου φανέντος, ἐκ πύλης κεκλεισμένης, δοξούμενοί τε, τῆς ἀληθείας φάος, ἐπαξίως σὴν εὐλογοῦμεν γαστέρα.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Πόθου τετευχώς, καὶ Θεοῦ παρουσίας, ὁ χριστοτερπῆς λαὸς ἠξιωμένος, νῦν ποτνιαῖται τῆς παλιγγενεσίας. ὡς ζωοποιοῦ· τὴν χάριν δὲ Παρθένε, νέμοις ἄχραντε, προσκυνῆσαι τὸ κλέος.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κανὼν Κοσμᾶ, ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#

Μεγαλυνον ψυχῇ μου σου την τιμιωτεε

ραν και ενδοξοτεε ραντων ανωστρατευμαα

των  
π

Μυστηριον ξενον ορω και παραδο

ξον <sup>π ρ</sup> ου ρα νον το σπη λαι ον θρο νον <sup>Δ ρ</sup> Χε ρου βι κον

την Παρ θε νον την φα α την η χω ρι ι ον εν ω ω

α νε κλι θη ο α χω ρη τος Χρι στο ος ο Θε ος

ον α νυ μνουντες με γα λυ υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον εκ της Παρ θε ε

νου Θε ον σαρ κι τε χθεν τα <sup>π ρ</sup>

**Ε** ξ αι σι ον δρο μον ο ρων τες οι μα α α

γοι <sup>π ρ</sup> α συν η θους νε ου α στε ε ε ρος αρ τι φα

ους <sup>Δ ρ</sup> ου ρα νι ου υ περ λαμ πον τος Χρι στο

ον Βα σι λε α ε τε κμη ραν το εν γη γεν νη θεν τα

Βῆ θλε εμ εις σω τη ρι ι αν η μων <sup>π ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον εν τω σπη λαι αι

ω <sup>Δ ρ</sup> τε χθεν τα βα σι λε α <sup>π ρ</sup>

**Ν** ε η γε νες μα γων λε γο ο ον των παι δι ον

α α να ξ ου α στηρ ε φα νη που ε στιν <sup>π ρ</sup> εις γαρ

ε χει νου προσ κυ νη σιν η κο μεν μα νει εις ο

Η ρω δης ε τα ρατ τε το Χρι στο ον α νε λειν <sup>Δ ρ</sup> ο

θε ο μα χος φρυ ατ το ο με ε νος <sup>π ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον υ πο των Μα α

γων <sup>Δ ρ</sup> Θε ον προσ κυ νη θεν τα <sup>π ρ</sup>


**Η** χρι βω σε χρο νον Η ρω δης α στε ε ε ρος <sup>π ρ</sup>  

ου ταις η γε σι αις οι μα α α γοι εν Βη θλε εμ  

προσ κυ νου σι Χρι στον συν δω ω ω ροις <sup>π ρ</sup> υφ ου ου προς  

πα τρι δα ο δη γου με νοι <sup>Δ ρ</sup> δει νον παι δο κτο ο  

νον εγ κα τε λι πον παι ζο ο με ε νον <sup>π ρ</sup>

Κανών ἱαμβικός, Ἰωάννου μοναχοῦ, ψδὴ θ'

Ἦχος <sup>Λ ρ</sup> Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.266#


**Σ** η με ρον η Παρ θε ε νο ος τι κτει τον Δε σπο ο  

την <sup>Δ ρ</sup> εν δον εν τω σπη λαι ω <sup>π ρ</sup>  

**Σ** τερ γειν μεν η μα ας ως α κιν δυ νον φο ο βω ρα ον

σι ω πην τω πο θω δε Παρ θε νε υ μνους υ φαι νειν συν

το νως τε θη γμε ε νους ερ γω ω δεσ ε στιν αλ λα και μη

τηρ σθε ε νος <sup>π ρ</sup> ο ση πε φυ κεν η προ αι ρε σις δι ι

δου <sup>π ρ</sup>

**Σ** η με ρον ο Δε σπο ο τη ης τι κτε ται ως βρε ε

φος υ πο μη τρος Παρ θε νου <sup>π ρ</sup> τὸ αὐτὸ ↗

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι <sup>Δ ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρισ υ πο στα

του <sup>Δ ρ</sup> και α δι αι ρε ε του Θε ο τη τος το κρα

τος <sup>π ρ</sup>

**Τ** υ πους α φεγ γει εις και σκι ας πα ρη γμε ε νας ω

μη η τερ α γνη του Λο γου δε δορ κο ο τες νε ου φα

νεν τος εκ πυ λης κε κλει σμε ε νης **Α** δο ξου με

νοι οι τε της α λη θει ας φα α ος **π** επ α ξι ως

σ ην ευ λο γου μεν γα στε ρα **π**

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων α

μην **Α**

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου την λυ τρω σα με

νην **Α** η μας εκ της κα τα ρας **π**

**Π** ο θου τε τευ χω ως και Θε ου πα ρου σι ι ας **Α**

ο χρι στο τερ πης λα ος η ξι ω με ε νος νυν πο τνι  
α ται της πα λιγ γε νε σι ι ας ως ζω ο ποι ου  
την χα ριν δε Παρ θε νε νε μοις α χραν τε προσ κυ νη  
σαι το κλε ε ος

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Μυστήριον ξένον, ὁρῶ καὶ παραδόξον! οὐρανὸν τὸ σπήλαιον· θρόνον Χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλήθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Στέργειν μὲν ἡμᾶς, ὡς ἀκίνδυνον φόβῳ, ῥᾶσιον σιωπῇ, τῷ πόθῳ δὲ Παρθένε, ὕμνους ὑφαίνειν, συντόνως τεθηγμένους, ἐργῶδές ἐστιν, ἀλλὰ καὶ Μήτηρ σθένος, ὅση πέφυκεν ἡ προαίρεσις δίδου.

Ἀργαὶ

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#



Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ε

ρ α ν κ α ι ε ν δ ο ξ ο τ ε ε ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α α

των <sup>π ρ</sup>

Μ υ σ τ η ρ ι ο ν ξ ε ν ο ν <sup>π ρ</sup> ο ρ ω ω κ α ι π α ρ α δ ο

ξ ο ν <sup>π ρ</sup> ο υ ρ α ν ο ν τ ο σ π η λ α ι ο ν θ ρ ο ν ο ν <sup>Δ ρ</sup> Χ ε ρ ο υ β ι κ ο ν

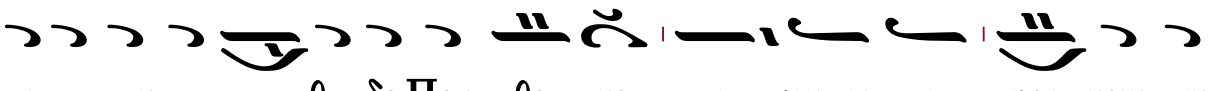
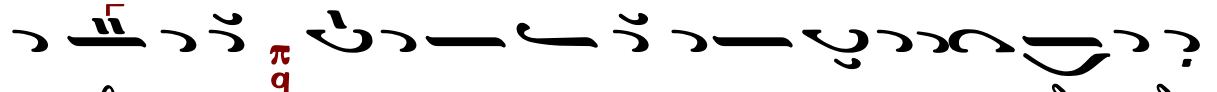
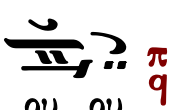
τ η ν Π α ρ θ ε ν ο ν τ η ν φ α α τ η ν η ν χ ω ρ ι ι ο ν ε ν ω ω

α ν ε κ λ ι θ η ο α χ ω ρ η τ ο ς Χ ρ ι σ τ ο ο ς ο Θ ε ο ς

ο ν α ν υ μ ν ο υ ν τ ε ς μ ε γ α λ υ υ ν ο ο μ ε ν <sup>π ρ</sup>

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ν λ υ τ ρ ω σ α μ ε ε

ν η ν <sup>Δ ρ</sup> η μ α ς ε κ τ η ς κ α τ α ρ α ς <sup>π ρ</sup>

  
**C**τερ γειν μεν η μα αςως α κιν δυ νον φο ο βω ρα ον  
  
 σι ω πην τω πο θω δε Παρ θε νε υ μνους υ φαι νειν συν  
  
 το νως τε θη γμε ε νους ερ γω ωδες ε στιν αλ λα και μη  
  
 τηρ σθε ε νος <sup>π</sup>ο ση πε φυ κεν η προ αι ρε σις δι ι δου  
  
 ου ου <sup>π</sup>

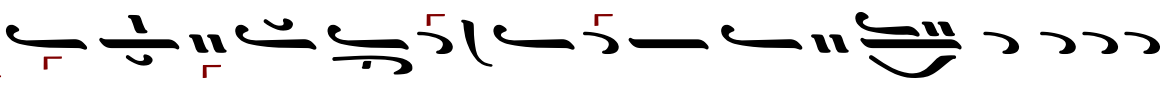
Ἄεγι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος <sup>4</sup>η Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.15#

  
**M**ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου ου  
  
 τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν <sup>Δ</sup> και  
  
 αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α νω

στρα α α τευ μα α α των π q

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον ο ρω π q

ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον ου ρα π q

νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον θρο ο ο νο ον Α α

Χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α

την χω ω ρι ι ι ον ε νω ω ω ω α νε π q

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος ο

Θε ε ος ον α νυ μνουν τες με γα α λυ υ υ υ Α α

υ νο ο ο ο μεν π q

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η μου ου τη

ην λυ τρω σα με ε ε νην η η μα ας εκ της κα

τα α α α ρας π  
q

το μεγαλυνάριο από την έκδοση Ι.Μ.Βατοπαιδίου 2016 σ.307\*

C τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α

κι ιν δυ υ νο ον φο ο ο βω x  
q ρα ον σι ω πη η A  
A

τω ω ω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε ε νε π  
q υ

μνους υ φαι αι αι αι νει ειν συ υ υ υν το ο νως τε

ε θει ει γμε ε ε νουους A  
A ερ γω ω ω ω

δε ες ε ε ε στιν A  
A α α αλ λα α και Μη η

τηρ σθε ε ε ε ε νος π  
q ο ο ο ο ο ο ση η

η η η πε φη η κε ε ε ε ε ε εν z η η προ ο

αι αι αι ρε ε σις δι ι ι ι ι ι δου ου ου π<sup>9</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδ' ἔ'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.309/3032\*

Μ ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου

ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν Α

και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α

νω στρα α α τευ μα α α των π<sup>9</sup>

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον π<sup>9</sup> ο

ρω ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον π<sup>9</sup> ου

ρα νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον π<sup>9</sup> θρο ο ο νο

ον χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα

α την χω ω ρι ι ι ον εν ω ω ω ω α νε

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος

ο Θε ε ος ον α νυ μνουν τες με γα α λυ υ

υ υ υ νο ο ο ο μεν

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η μου ου τη

ην λυ τρω σα με ε ε νην η η μα ας εκ της κα

τα α α α ρας

το μεγαλυνάριο από την έκδοσι Ι.Μ.Βατοπαιδίου 2016 σ.307\*

Σ τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α

κι εν δυ υ νο ον φο ο ο βω ρα ον σι ω πη ην

τω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε νε <sup>π</sup>9 υ μνους υ

φαι αι αι αι νει ειν συ υν το ο νως τε ε θη

η γμε ε ε νου ους <sup>Δ</sup>9 ερ γω ω ω ω δε ες ε

ε ε στιν <sup>Δ</sup>9 αλ λα α και Μη η τηρ σθε ε ε ε

νος <sup>π</sup>9 ο ο ο ο ο ο ση η η η η πε φυ υ κε ε

ε ε ε ε ε εν <sup>ζ</sup>9 η η προ ο αι αι αι ρε ε

σις δι ι ι ι ι δου ου ου ου <sup>π</sup>9

Ἀλλη πρωτ.Κων.Παπαγιάννη κατ' ἔννοιαν τονισθεῖσα

<sup>C</sup><sup>χ</sup> τε ερ γει ει ειν με εν η η μας ως α κι ιν δυ

υ υ νον φο ο ο βωω ω <sup>Δ</sup>9 ρα α ο ον σι ω ω

πη ην <sup>π</sup>9 τω πο θω ω δε Πα αρ θε ε ε νε <sup>Δ</sup>9

υ μνου ους υ υ φαι αι νειν <sup>Δ</sup> συν το νως τε θη η

γμε ε ε νου ους <sup>Δ</sup> ερ γω ω ω ω δε ες ε ε

ε στιν <sup>π ρ</sup> αλ λα και Μη η η τηησθε ε ε νος <sup>Δ</sup> ο

ση πε ε φυ υ κεν η η προ αι αι αι ρε ε σις δι

ι <sup>χ</sup> δου ου ου <sup>π ρ</sup>



# Τῶν Χριστουγέννων, πεζαί

21/11 – 24/12

ἤχος α΄

- α **Χ**ριστὸς γεννᾶται, δοξάσατε. Χριστὸς ἐξ οὐρανῶν ἀπαντήσατε. Χριστὸς ἐπὶ γῆς, ὑψώθητε, ἄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν εὐφροσύνῃ, ἀνυμνήσατε λαοί, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Τ**ῷ πρὸ τῶν αἰώνων, ἐκ Πατρὸς γεννηθέντι ἀρρεύστως Ὑῖῳ, καὶ ἐπ’ ἐσχάτων ἐκ Παρθένου, σαρκωθέντι ἀσπύρως, Χριστῷ τῷ Θεῷ βοήσωμεν· ὁ ἀνυψώσας τὸ κέρας ἡμῶν, ἅγιος εἶ Κύριε.
- δ **Ρ**άβδος ἐκ τῆς ρίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐξ αὐτῆς Χριστέ, ἐκ τῆς Παρθένου ἀνεβλάστησας· ἐξ ὅρους ὁ αἰνετὸς κατασκήνιον δασέος ἤλθες σαρκωθείς ἐξ ἀπειράνδρου, ὁ αὔλος καὶ Θεός. Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Θ**εὸς ὢν εἰρήνης, Πατὴρ οἰκτιρμῶν, τῆς μεγάλης βουλῆς σου τὸν ἄγγελον, εἰρήνην παρεχόμενον ἀπέστειλας ἡμῖν· ὅθεν θεογνωσίας, πρὸς φῶς ὁδηγηθέντες, ἐκ νυκτός ὀρθρίζοντες, δοξολογοῦμέν σε φιλόνηρωπε.
- ς **Σ**πλάγχχνων Ἰωαννῶν, ἔμβρυον ἀπήμεσεν ἐνάλιος θήρ οἶον ἐδέξατο· τῇ Παρθένῳ δέ, ἐνοικήσας ὁ Λόγος, καὶ σάρκα λαβὼν διεληλύθε φυλάξας ἀδιάφθορον· ἥς γὰρ οὐχ ὑπέστη ρεύσεως, τὴν τεκοῦσαν κατέσχευ ἀπήμαντον.
- ζ **Οἱ** Παῖδες εὐσεβεῖα συντραφέντες, δυσσεβοῦς προστάγματος καταφρονήσαντες, πυρὸς ἀπειλὴν οὐκ ἐκποτήθησαν, ἀλλ’ ἐν μέσῳ τῆς φλογὸς ἐστῶτες ἔψαλλον· ὁ τῶν πατέρων Θεός, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Θ**αύματος ὑπερφουῶς ἡ ὁροσοβόλος, ἐξεικόνισε κάμινος τύπον· οὐ γὰρ οὐς ἐδέξατο φλέγει νέους, ὥς οὐδὲ πῦρ τῆς Θεότητος, Παρθένου ἦν ὑπέδυνηδύν· διὸ ἀνυμνοῦντες ἀναμέλψωμεν. Εὐλογοίτω ἡ κτίσις πᾶσα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψούτω, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἀργαί

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Χ ρι στος γεν ναι ται δο ξα σα τε Χ ρι στος εξ ου ρα νων

α παν τη σα τε <sup>π</sup> Χ ρι στο ος ε πι γης υ ψω θη τε α

σα τε τω Κυ ρι ω πα σα η γη η η και εν ευ φρο

συ υ νη α νυ μνη σα τε λα οι ο τι δε δο ο ξα α

σται <sup>π</sup>

ὥδὴ γ'

Τ ω προ των αι ω νων <sup>π</sup> εκ Πα τρος γεν νη θεν τι

αρ ρε ευ στως Υι ω και επ ε σχα των εκ Παρ θε νου

<sup>π</sup> σα ρ κω θεν τι α σπο ρως Χ ρι στω ω τω Θε ω βο

η σω μεν <sup>π</sup> ο α νυ ψω σας το κε ρας η μων <sup>Δ</sup>

χορὸς α' α γι ος ει Κυ υ ρι ι ε π ρ ῥδὴ δ'

P α βδος εκ της ρι ζης I εσ σαι Δ δ και αν θος εξ αυ της

Χρι στε εκ της Παρ θε νου α νε βλα στησας εξ ο ρους

ο αι νε τος κα τα σκι ου δα σε ος π ρ ηλ θες σαρ

κω θεις εξ α πειρ αν δρου ο α υ λος και Θε ος Δ δ

δο ξα τη δυ να μεισου Κυ υ ρι ι ε π ρ ῥδὴ ε'

Θ ε ος ων ει ρη νης Πα τη η ηρ οι κτιρ μων Δ δ της

με γα λης βου λη ης σου τον Αγ γε λον π ρ ει ρη νην

πα ρε χο μενον α πε στει λας η μιν ο θεν θε ο

γνω σι ας Δ δ προς φως ο δη γη θεν τες εκ νυ

κτος ορ θρι ζοντες δο ξο λογουμεν σε φι λα ανθρω ω πε π ρ

ὠδὴ ζ'

Cπλαγχων Ι ω ναν εμ βρυ ον α πη με σεν ε να λι ος

θη ροι ον ε δε ε ξα α το τη Παρ θε νω δε ε νοι

κη σας ο Λο γος και σα αρκαλα βων π ρ δι ε λη λυ θε

φυ λα ξας α δι α φθορον η ης γαρ ουχ υ πε στη

ρευ σεως την τε κου σαν κα τε σχεν α πη η μα αν τον π ρ

ὠδὴ ζ'

O ι παι δες ευ σε βει α συν τρα φεν τες π ρ δυσ σε

βους προσ τα γμα τος κα τα φρο νη σαν τες πυ ρο ος

α πει λην ουκ ε πτο η θησαν Δ ρ αλλ εν με σω της φλο

γος ε στω τες ε ψαλ λον <sup>π ρ</sup> ο των πα τε ε

ρων Θε ος ευλογη τος ει <sup>π ρ</sup> ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Δ ρ</sup>

Θ αυ ματος υ περ φυ ους η δρο σο βο λος εξ ει

κο νι σε κα μι νος τυ υ υ πον ου γαρ ους ε δε ξατο

φλε γει νε ους ως ου δε πυρ της Θε ο τη τος

Παρ θε νου ην υπ ε ε δυ νη δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο α νυ

μνουν τες α να μελ ψωμεν <sup>Δ ρ</sup> ευ λο γει τω η κτι σις πα

α σα τον Κυ ρι ον <sup>π ρ</sup> και υ περ υ ψου ου τω εις παν

τας τους αι ω ω να α α ας <sup>π q</sup>

Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

<sup>ῥδῆ α'</sup> Ἦχος <sup>4</sup>q Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.7\*

**Χ** ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο  
ξα α σα α α τε <sup>π q</sup> Χρι στο ος εξ ου ου ρα α α  
νω ω ωων α α παν τη η η σα α α τε ε <sup>π q</sup>  
Χρι στο ο ος <sup>χ q</sup> ε πι ι γη η η ης <sup>z</sup> υ ψω ω ω  
ω ω θη η η η η τε <sup>Δ q</sup> α σα α α α α τε ε τω  
ω Κυ υ ρι ωω <sup>π q</sup> πα α α σα α η η γη η η η και αι  
εν ευ φρο ο συ υ υ νη <sup>Δ q</sup> α νυ μνη η σα

τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο

ξα α α α σται π  
q ῥδῆ γ'

T ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων π  
q εκ πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως υι υι υι ω π  
q και επ ε σχα α των ε εκ

παρ θε ε ε ε νου Δ  
δ σα α α αρ κω θε εν τι ι α

α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω π  
q τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν π  
q ο α

νυ ψω ωσας το κε ε ε ρας η η μων χορδς α' α α γι ο

ος ει ει Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε π  
q ῥδῆ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α αν ε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα α

σε ε ε ο ος ηλ θε σαρκω ω θει εις εξ α α α πει

ει ρα α αν δρου ο α α υ λο ος και Θε ε

ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ὥδῃ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ν ει ει ρη η η νης Πα τη

η η η ηρ οι οι κτι ιρ μων της με γα α



λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α ααγ γε ε

λο ον <sup>π</sup>ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α πε ε

στει ει λας η η μιν <sup>π</sup>ο ο θε ε ε εν θε ε ο ο γνω

σι ι ι ι ι ας <sup>Δ</sup>προς φω ω ω ως ο ο δη η

γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ον τε ε

ες <sup>Δ</sup>δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α α α

αν θρω ω ω ω πε <sup>π</sup>ὠδὴς'

**C**πλα ααγ χνω ω ων Ι ι ω ω ω ναν <sup>π</sup>εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π</sup>ε να α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup>οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο <sup>π</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π</sup> εν οι κη η

σα ας ο ο ο λο γο ος και αι σα α α αρ κα

α λα α α βων <sup>π</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα α α

ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π</sup> η η η ης γα αρ ου χ υ

πε ε στη η ρευ σε ε ως <sup>π</sup> την τε κου ου σα αν

κα α α τε σχεν α α πη η η η η μα α α αν

τον <sup>π</sup> ὠδὴ ζ'

**Ο** ι παι αι δες ευ σε βει ει α συ υ υ υντρα α φε

ε εν τες <sup>π</sup> δυσ σε ε ε βου ους <sup>Δ</sup> προσ τα α γμα

το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα α αν

τε ες <sup>π q</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην ουκ

ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ δ</sup> αλλ ε

εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος ε

ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π q</sup> ο των

πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π q</sup> ὡδὴ ἡ'

<sup>χ</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον <sup>Δ δ</sup>

Θ α α αυ μα ατος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος <sup>π q</sup> ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον <sup>π</sup>ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε ους <sup>π</sup>

ως ου δε ε πυρ τη ης θε ο τη η η το ος <sup>Α</sup> Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν <sup>π</sup>δι ο ο ο ο αν υ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν <sup>Α</sup>ευ λο γει τω ω η χτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον <sup>π</sup>και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω

να α α ας <sup>π</sup>

# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου8

ὥδῃ α'

Ἦχος 4 Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.375/2712\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε Χρι στο ος εξ ου ρα α α

νω ω ω ωων α α παν τη η η σα α τε ε

Χρι στο ο ος ε πι ι γη η η ης υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε α σα α α α α τε ε

τω ω Κυ υ ρι ωω πα α α σα α η η γη η η η

και αι εν ευ φρο ο συ υ υ νη α νυ μνη η

σα τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο

8 Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἑλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.

ο ξα α α σται <sup>π</sup>q ῥδῆ γ'

**T** ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων <sup>π</sup>q εκ Πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως Υι υι υι ω <sup>π</sup>q και επ ε σχα α των ε εκ

Παρ θε ε ε ε νου <sup>Δ</sup> \* σα α α αρ κω θε εν τι ι

α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω <sup>π</sup>q τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν <sup>π</sup>q ο

α νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων <sup>Δ</sup> χορός α α

γι ο ος ει ει Κυ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π</sup>q

<sup>Δ</sup> \* <sup>Δ</sup> σαρ κω θεν τι ι α α σπο ο ο ρως

διασκευη πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

Χρι στω ω ω τω Θε ε ω βο η η η η

σω ω ω ω ω μεν ο α νυ ...

ὠδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α α νε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα

α σε ε ε ο ος ηλ θες σαρ κω ω θει εις εξ α α α

πει ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε

ε ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ὠδὴ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ω ν ει ει ρη η η νης <sup>π</sup>η Πα

τη η η η η ρ οι οι κτι ιρ μων <sup>Δ</sup>της με γα

α λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α α αγ

γε ε λο ον <sup>π</sup>ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α

πε ε στει ει λας η η μιν <sup>π</sup>ο ο θε ε ε εν θε ε ο

ο γνω σι ι ι ι ι ας <sup>Δ</sup>προ φω ω ω ως ο ο

δη η γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ν

τε ε ες <sup>Δ</sup>δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α

α α αν θρω ω ω ω πε <sup>π</sup> ῥδῆς'

ϸ <sup>π</sup>πλα α αγ χνω ω ω ν Ι ι ω ω ω ναν <sup>π</sup>η εμ



βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π q</sup> εν α α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο <sup>π q</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π q</sup> εν οι κη η

σα ας ο ο ο Λο γο ος και αι σα α α α αρ

κα α λα α α βων <sup>π q</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα

α α ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π q</sup> η η η ης γα αρ

ουχ υ πε ε στη η ρε ευ σε ε ως <sup>π q</sup> την τε κου

ου <sup>ρ</sup> σα αν κα α α τε σχεν α α πη η η η

η μα α α αν τον <sup>π q</sup>

ὥδ᾽ ᾿

**Ο** ι παι αι δεσ ευ σε βει ει α συ υ υ υν τρα α

φε ε εν τες <sup>π q</sup> δυσ σε ε ε βου ους προσ τα α

γμα το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα

α αν τε ες <sup>π q</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην

ουκ ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ</sup> <sup>2</sup> <sup>π q</sup> αλλ

ε εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος

ε ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π q</sup> ο

των πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π q</sup>

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

<sup>1</sup> <sup>π q</sup> ευ σε βει α συ υ υ υν...

<sup>2</sup> <sup>Δ</sup> <sup>π q</sup> αλλ εν με ε σω ω ω ω ω τη ης φλο ο γο ος

ε ε στω ω τε ες ...

π  
ῥδῆ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος π  
ε εξ ει ει χο ο νι ι

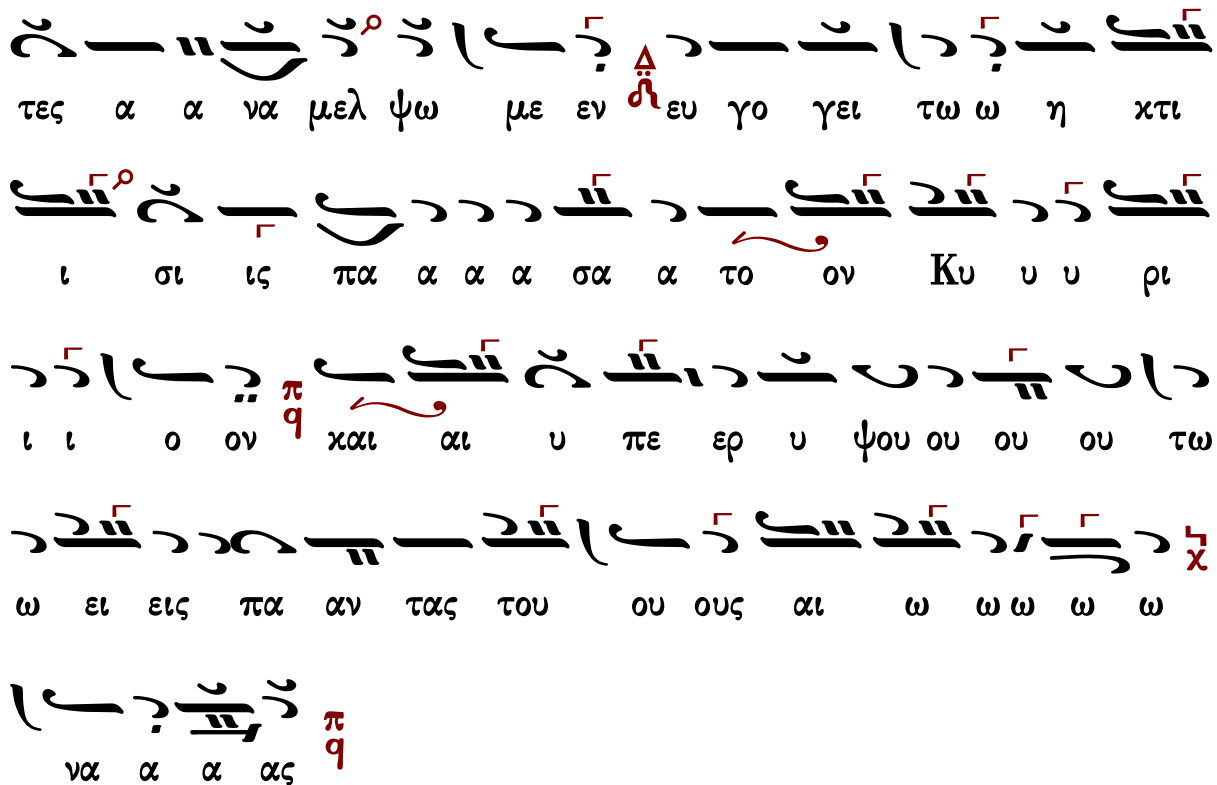
σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον π  
ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε

π  
ους ως ου δε ε πυρ τη ης Θε ο τη η τος Α Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν π  
δι ο ο ο ο α νυ μνου ουν



## Τιμιωτέρα ἡχος α'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος α'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς

πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἑνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Ἦχος ᾠ Πα

Λουκᾶ κεφ. 4

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Ἦχος ᾠ Πα

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.501#

**Τ** ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν  την ον τως Θε ο  
το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος  Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#

 **Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι

 ον  και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου  ε πι

 τω Θε ω τωσω τη ρι μου 

 **Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο ξο

 τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α

 φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω

σιν της δου λης αυ του <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> ι δου γαρ α πο του <sup>χ</sup> <sup>ρ</sup> νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub>

**Τ** <sup>Δ</sup> ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο



ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>π</sup> την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup> την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup>

<sup>χ</sup> Κα θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους <sup>ζ</sup> πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων <sup>χ</sup> και

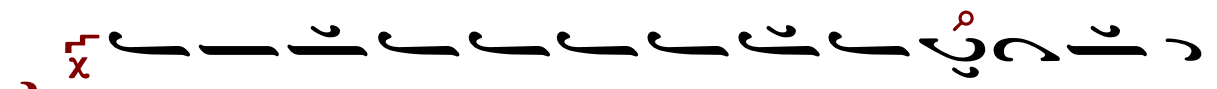
πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους <sup>η</sup>

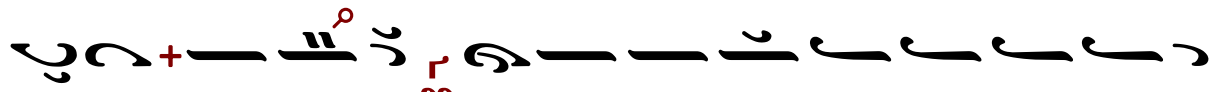
<sup>ο</sup> Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>η</sup> και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>η</sup> την α δι

α φθο ρως <sup>η</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π</sup> την ον τως Θε

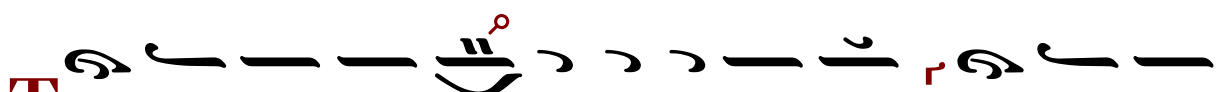
ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup>


  
 ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη


  
 σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα


  
 τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ


  
 του ε ως αι ω νος


  
 την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο


  
 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι


  
 α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε


  
 ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος α'

[Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Μυστήριον ξένον, ὁρῶ καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ Σπήλαιον· θρόνον Χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλήθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν

ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν.

Ἀργή

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε  
ε ρ α ν κ α ι ε ν δ ο ξ ο τ ε ε ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ  
μ α α τ ω ν

Μ υ σ τ η ρ ι ο ν ξ ε ν ο ν ο ρ ω ω κ α ι π α ρ α δ ο  
ξ ο ν ο υ ρ α ν ο ν τ ο σ π η λ α ι ο ν θ ρ ο ν ο ν Χ ε ρ ο υ β ι κ ο ν  
τ η ν Π α ρ θ ε ν ο ν τ η ν φ α α τ η ν η χ ω ρ ι ο ν ε ν ω ω  
α ν ε κ λ ι θ η ο α χ ω ρ η τ ο ς Χ ρ ι σ τ ο ο ς ο Θ ε ο ς

ον α νυ μνουντες με γα λυ υ νο ο με ε ε εν π q

Ἄρχη

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

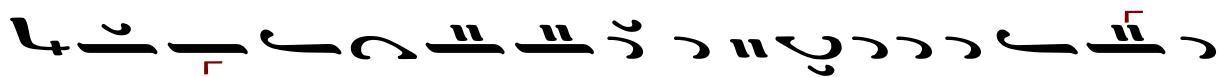
ᾠδὴ θ'

Ἦχος 4̣ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.15#

M ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου  
ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν Δ ς  
και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α  
α νω στρα α α τευ μα α α α των π q

M υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον π q ο ρω  
ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον π q Ου ρα  
νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον π q θρο ο ο νο ον Δ ς

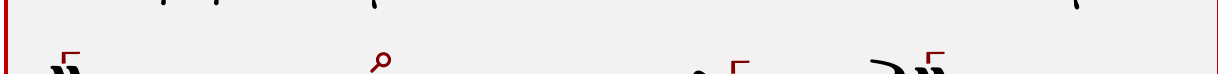
  
 Χε ρου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α  
  
 την χω ω ρι ι ι ον <sup>π</sup>ε νω ω ω α νε  
  
 κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος ο  
  
 Θε ε ος <sup>Δ</sup>ον α νυ μνουν τες με γα α λυ υ υ υ  


Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ψδλθ'

Ἦχος <sup>4</sup> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.379/2716\*

  
**Μ** <sup>χ</sup>ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου  
  
 ου ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν <sup>Δ</sup>  
  
 και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α

νω στρα α α τευ μα α α α των π q

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον ο π q

ρω ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον ου π q

ρα νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον θρο ο ο νο π q

ον χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα

α την χω ω ρι ι ι ον εν ω ω ω ω α νε π q

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος Δ

ο Θε ε ος ον α νυ μνουν τες με γα α λυ υ Δ

υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν π q

# Τῶν Χριστουγέννων, ἱαμβικαὶ

27-30 Δεκεμβρίου

ἤχος α΄

- α **Ἦ**σωσε λαόν, θαυματουργῶν Δεσπότης, ὑγρὸν θαλάσσης κύμα χερσώσας πάλαι· ἐκὼν δὲ τεχθεὶς ἐκ Κόρης, τρίβον βατήν, πόλου τίθησιν ἡμῖν· ὃν κατ' οὐσίαν, ἴσόν τε Πατρί, καὶ βροτοῖς δοξάζομεν.
- γ **Ν**εῦσον πρὸς ὕμνους οἰκετῶν εὐεργέτα, ἐχθροῦ ταπεινῶν τὴν ἐπηρμένην ὀφρύν, φέρων τε παντεπόπτα τῆς ἁμαρτίας, ὑπερθεὶς ἀκλόνητον, ἐστηριγμένους, μάκαρ, μελωδοὺς τῇ βάσει τῆς πίστεως.
- δ **Γ**ένους βροτείου τὴν ἀνάπλασιν πάλαι, ἄδων προφήτης Ἀββακούμ, προμηνύει, ἰδεῖν ἀφράστως ἀξιωθεὶς τὸν τύπον. Νέον βρέφος γάρ, ἐξ ὄρους τῆς Παρθένου, ἐξῆλθε λαῶν, εἰς ἀνάπλασιν Λόγος.
- ε **Ἐ**κ νυκτὸς ἔργων, ἐσκοτισμένης πλάνης ἱλασμὸν ἡμῖν Χριστὲ τοῖς ἐγρηγόρως, νῦν σοι τελοῦσιν ὕμνον, ὡς εὐεργέτη, ἔλθοις πορίζων εὐχερῇ τε τὴν τρίβον, καθ' ἣν ἀνατρέχοντες, εὐροῖμεν κλέος.
- ς **Ν**αίων Ἰωνᾶς, ἐν μυχοῖς θαλαττίοις, ἐλθεῖν ἐδεῖτο, καὶ ζάλην ἀπαρκέσαι. Νυγεῖς ἐγὼ δέ, τῷ τυραννοῦντος βέλει, Χριστὲ προσαυδῶ, τὸν κακῶν ἀναιρέτην, θᾶπτον μολεῖν σε τῆς ἐμῆς ῥαθυμίας.
- ζ **Τ**ῷ παντάνακτος ἐξεφάλυσαν πόθῳ, ἀπλῆτα θυμαίνοντος ἡγκιστρωμένοι, παῖδες τυράννου δύσθεον γλωσσαλγίαν, οἷς εἵκαθε πῦρ ἄσπετον, τῷ Δεσπότη, λέγουσιν· εἰς αἰῶνας εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Μ**ήτηρ ἀφλέκτως εἰκονίζουσι Κόρης, οἱ τῆς παλαιᾶς πυρπολούμενοι νέοι, ὑπερφυῶς κύουσιν, ἐσφραγισμένην. Ἀμφω δὲ δρῶσα, θαυματουργίᾳ μιᾷ, λαοὺς πρὸς ὕμνον ἐξάνιστησι χάρις.

Ἀργαὶ

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ε σω σε λα ον θαυ μα τουρ γων Δε σπο ο της υγ

ρον θα λα ασ σης κυ μα χερ σω σας πα α λαι ε

κων δε τε χθεις εκ κο ρης τρι βον βα την πο λου τι

θη σιν η μιν ον κατ ου σι αν ι σον τε Πα τρι και βρο

τοις δο ξα α ζο ο μεν

ὠδὴ γ'

Ν ευ σον προς υ υ μνου ους οι κε των ευ ερ γε

ε τα ε χθρου ουτα πει νων την ε πηρ με ε νην ο φρυν

φε ρων τε παν τε πο πτα της α μαρ τι ας υ πεερθεν

α κλο νητον ε στη ρι γμε ε νους μα καρ μελω δους



χορὸς ἀ' τη βα σειτης πι ι στε ε ως π ρ ῥδὴ δ'

Γ ε νους βρο τει ει ου ου την α να πλα σιν πα

α λαι Α ρ α δων προ φη η της Αβ βα κουμπρο μη νυ

ει ι δειν α φρα α στως α ξι ω θεις τον τυ υ

πον Α ρ νε ον βρε φος γαρ εξ ο ρους της Παρ θε ε νου π ρ ε

ξηλ θε λα ων εις α να πλα σιν Λο γος π ρ ῥδὴ ε'

Ε κ νυ κτος ε ερ γων ε σκο τι σμε νοις πλα α

νης ι λα σμον η μιν Χρι στε τοις ε γρη γο ο ρως νυν

σοι τε λου σιν υ μνον ως ευ ερ γε ε τη ελ θοις

πο ρι ι ζων ευ χε ρη τε την τρι ι βον π ρ καθ ην α

να τρεχοντες ευροιμεν κλεος π ρ ῥδῆς'

**Ν**αιων Ιωναας εν μυχοις θαλαττιοις

ελθειν εδειτοκαι ζαλην απαρκεσαι νυγεις εγω

δε τω τυραννοντος βεελει Α ρ Χριστε επροσ αυδω τον

κακων αναιρετην θαυτον μολειειν σε της

εμης ραθυμιας π ρ ῥδῆς'

**Τ**ω παντα ναικτοος εξεφωλισαν ποοθω

απλητα θυμινοντος ηγκι στρωμενοι π ρ παιδες

τυραννου δυσθεον γλωσσαλγιαν Α ρ οισ ειεικα

θεπυρα ασπετον τω Δεσποτη λεγουσιν εις αι

ω ω νας ευ λο γη τος ει <sup>π ρ</sup>

ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Α</sup>

Μ η τραν α φλε ε κτω ως ει κο νι ι ζου

σι κο ο ρης <sup>Α</sup> οι της πα λαι α ας πυρπο λου ουμε

νοι νε οι <sup>π ρ</sup> υ περ φυ ως κυ ου σαν ε σφρα γι σμε ε

νην <sup>Α</sup> αμ φω δε δρω ω σα θαυμα τουρ γι α μι ι

α <sup>π ρ</sup> λα ους προς υ μνον εξ α νι στη σι χα α ρι

ι ι ις <sup>π ρ</sup>

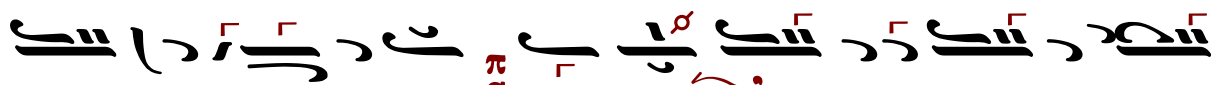
Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ε ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα α  
του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της υ γρο ον θα  
λα α α α α σ σης κυ υ υ μα α χερ σω  
ω ω σας πα α α α α λαι ε κων δε τε ε χθει εις  
ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η ην  
πο λου τι ι θη η σι ιν η η η μι ιν ον  
κα ατ ου ου ου σι ι ι ι ι αν ι ι ι ι  
ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι ι και  
βρο τοι οισ δο ο ξα α α α α σω ω ω μεν

Ν   
ευ σο ο ο ο ο ον προς υ υ υ υ υ υ μνου

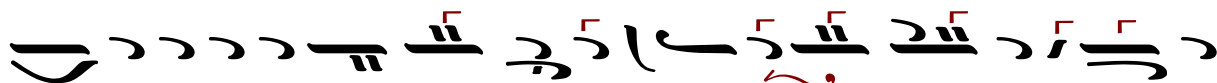
  
ου ου ου ους οι οι οι κε ε ε τω ω ων ε ε ευ

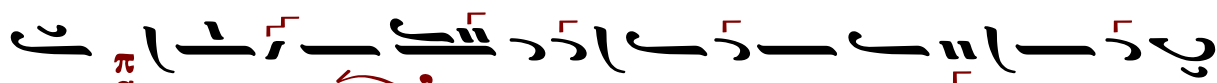
  
ερ γε ε ε ε τα π ρ ε χθρου ου ου ου τα α πει

  
ει ει νω ων την ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη

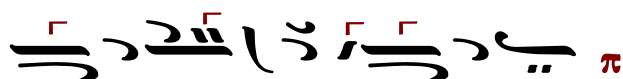
  
ην ο ο ο φρυν π ρ φε ε ε ρω ων τε χ ρ παν τε πο ο ο

  
ο πτα α της α μαρ τι α ας υ υ πε ερ θε εν α

  
κλο ο νη η το ον ε στη η ρι ι ι γμε ε ε ε ε

  
νους π ρ μα α α α α α κα α α α α α αρ με

  
λω ω δου ου ους ζ χορὸς α' τη βα α σει ει τη ης πι ι

  
ι ι ι στε ε ε ε ως π ρ

ὠδὴ δ'

Γ ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α α

πλα α σι ιν πα α α λαι α δων προ ο φη η η τη ης

Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ υ υ

ει ι δειν α φρα α α α στω ως α α α α ξι ι

ω θει εις τον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

ε ε εξ ο ο ο ρους τη ης παρ θε ε ε ε νου

εξ η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω ω

ω ω ων ει εις α α να α α πλα α σι ι ιν

Λο ο ο ο ο γος

Ε χ νυ κτος ε ε ερ γω ων ε ε ε σκο ο τι σμε

νοι οἰς πλα α α νης ι λα σμον η η μι ιν

Χρι στε ε τοις ε ε γρη γο ο ο ο ρως νυν σοι τε

λου ου ου ου σι ιν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ ε

ερ γε ε ε τη ην ελ θοις οἰς πο ο ρι ι ι

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι ι

ι βον καθ ην α να τρε χο οντες ε ε ευ ροι οἰ μεν κλε

ε ε ε ε ος

ὥδῃς'

**N** αι αι ων Ι ι ω ω ω να ας ε εν μυ υ χοι

οι οἰς θα λα ατ τι ι ι οι οἰς ε ελ θει ειν

ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην α

α α παρ κε ε ε ε ε σαι <sup>π</sup>νυ γεις ε γω ω ω ω

δε ε του ου ου ου τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει <sup>Δ</sup>Χρι στε ε ε ε προ οσ α α αυ δω <sup>Δ</sup>

το ον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε ε ε

την <sup>π</sup>θατ τονμο λει ει ει ει ει ν σε ε ε ε ε ε τη

η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι ι ι

ας <sup>π</sup> ῥδῆζ'

**T** ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε ε φα αυ λι ι

σανπο ο ο ο ο θω <sup>χ</sup>α πλη τα θυ μαι αι νο ον το

ος <sup>Δ</sup> η η ηγ γι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι <sup>π</sup>



παι δες τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υ σθε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει κα

α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν εις αι

ω ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει ὠδὴ ἡ'

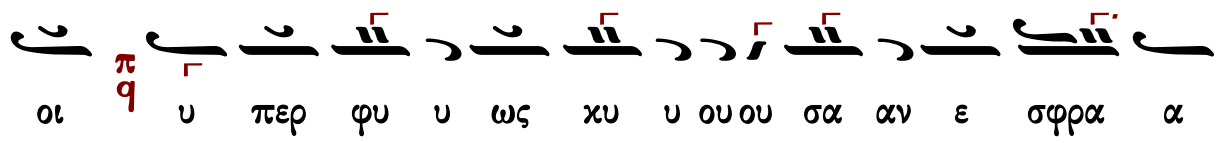
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

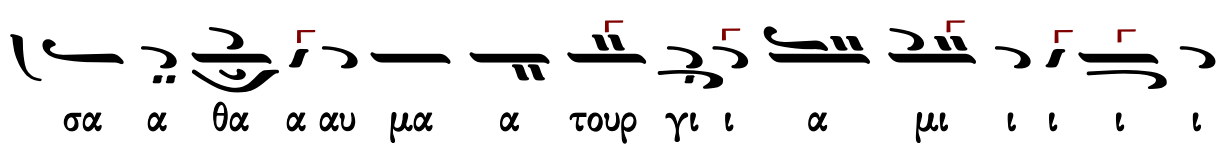
Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο νι

ι ι ζου ου σι ι κο ο ο ο ο ρης οι της πα λαι α ας

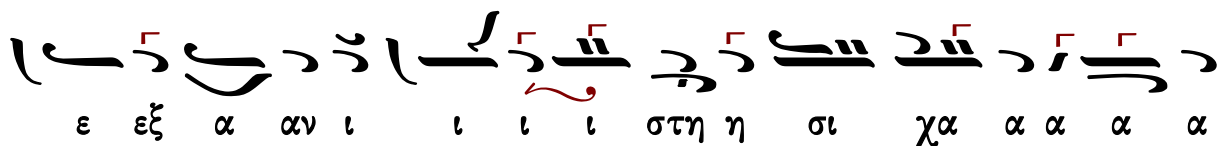
πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε ε ε


 οι <sup>π</sup>υ περ φυ υ ως κυ υ ουου σα αν ε σφρα α


 γι ι σμε ε ε νη ην <sup>Δ</sup>αμ φω ω δε δρω ω ω


 σα α θα α αυ μα α τουρ γι ι α μι ι ι ι ι


 α <sup>π</sup>λα ους προς υ υ υ υ υ μνο ο ο ο ο ον ε


 ε εξ α αν ι ι ι ι στη η σι χα α α α α

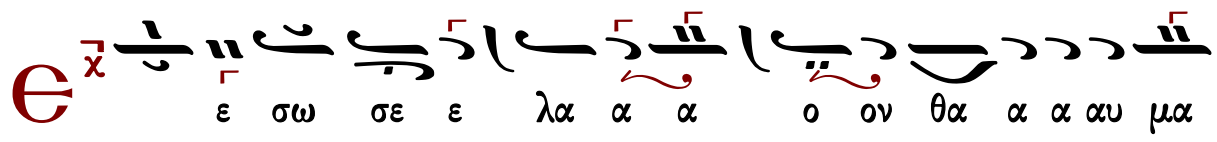

 ρι ι ι ις <sup>π</sup>

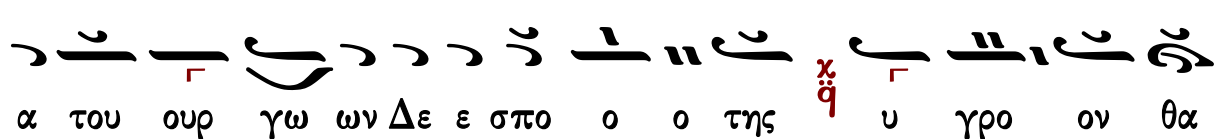
## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>9</sup>

ᾠδὴ α'

Ἦχος <sup>4</sup> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.297/3020\*


 ε <sup>χ</sup>ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα


 α του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της <sup>χ</sup>υ γρο ον θα

<sup>9</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἑλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.

λα α α α α α σης κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α λαι ε κων δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η η

ην πολου τι ι θη η σι ιν η η η μι ιν

ον κα ατ ου ου ου σι ι ι ι ι αν ι ι

ι ι ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι

ι και βρο τοι οισ δο ο ξα α α α α ζο ο ο

ο μεν

αλλι γραμμή  
τι ι θη η σι ι ιν η η μιν ο ο ον ...

ῥδὴ γ'

Ν ευ σο ο ο ο ον προς υ υ μνου ου ου ους οι

οι οι κε ε τω ω ω ων ε ε ευ ερ γε ε ε ε

τα <sup>π q</sup> ε χθρου ου ου ου τα α πει ει ει νω ων <sup>γ ρ</sup> την

ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη ην ο ο ο φρυν <sup>π q</sup>

φε ε ε ρω ων τε παν τε πο ο ο πτα α <sup>η</sup> της α

μαρ τι α ας υ υ πεερ θε εν <sup>Δ ρ</sup> α κλο ο νη η το ον

ε στη η ρι ι ι γμε ε ε ε ε νους <sup>π q</sup> <sup>\*</sup> μα α

α α α α κα α α α α αρ με λω ω δου ου

ους <sup>ζ</sup> χορδς α' τη βα α σει ει τη ης πι ι ι ι

ι στε ε ε ε ως <sup>π q</sup>

ἄλλη γραμμή

\* μα κα αρμελω ω δου ου ου ου ους χορός α' τη βα

α ...

ῶδὴ δ'

Γ ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α

α πλα α σι ιν πα α α λαι α δων προ ο φη η η

τη ης Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ

υ υ ει ι δειν α φρα α α α στω ως α α ξι ι

ω θει εις το ον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

εξ ο ο ο ρους τη ης Παρ θε ε ε ε νου εξ

η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω ω ω ω

ων ει εις α α να α α πλα α σι ι ιν Λο ο ο

ο ο γος π q

ὥδ' ἔ'

Ε κ νυ κτος ε ε εργων ε ε σκο ο τι σμε νη

ης πλα α α νης ι λα σμον η η μι ιν Χρι στε

ε τοις ε ε ε γρη γο ο ο ο ρως νυν σοι τε

λου ου ου ου σι ιν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ

ε ερ γε ε ε τη η ελ θοις πο ο ρι ι ι

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι

ι ι βον καθ ην α να τρε χο οντες ε ε ευ ροι οι

μεν κλε ε ε ε ε ος π q

ὠδὴς'

Ν αι αι ων Ι ι ω ω ω να ας ε εν μυ υ χοι

οι οισ θα α λα ατ τι ι ι οι οισ ε ελ

θει ειν ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην

α α α παρ κε ε ε ε ε σαι νυ γεις ε γω

ω ω ω δε ε τω ω τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει Χρι στε ε ε ε ε προ οσ α α αυ

δω το ον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε

ε ε την θατ τον μο λει ει ει ει ει εν σε τη

η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι ι ι

ας π q

ῶδῆ ζ'

ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε φα αυ λι ι

σα αν πο ο ο ο θω α πλη τα θυ μαι αι νον το

ος η η ηγ κι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι

παι δες τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υσ θε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει

κα α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν εις αι ω



ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει π q

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

\* η ηγ κι στρω με ε ε νοι παι αι αι αι δεσ π q τυ

ρα α α αν...

\* οις ει ει ει ει κα α α α θε π q πυ υ υρ α

α σπε ε ε τον π q τω Δε σπο ο τη η λε γου ου σιν η

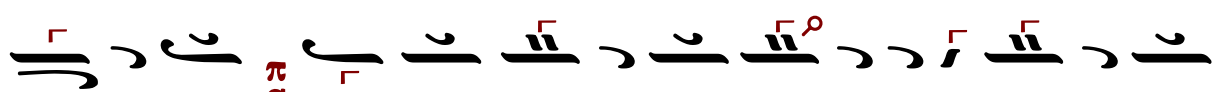
εις αι ω ω ω νας π q

ᾠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον π q

Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο

  
 νι ι ι ζου ου σι ι Κο ο ο ο ο ρης <sup>χ</sup><sub>q</sub> οι της πα λαι  
  
 αι ας πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε  
  
 ε ε οι <sup>π</sup><sub>q</sub> υ περ φυ υ ως κυ υ ου ου σα αν ε  
  
 σφρα α γι ι σμε ε ε νη ην <sup>Δ</sup><sub>h</sub> αμ φω δε  
  
 ε δρω ω ω σα α <sup>Δ</sup><sub>h</sub> θα αυ μα τουρ γι ι ι α α μι  
  
 ι ι α <sup>π</sup><sub>q</sub> λα ους προς υ υ υ υ υ μνον ε  
  
 ε εξ α α νι ι ι ι στη η σι χα α α α α  
  
 ρι ι ι ις <sup>π</sup><sub>q</sub>

## Τιμιωτέρα ἡχος α΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος α΄

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτῆρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

### Ἦχος ᾠ Πα —

Λουκᾶ κεφ. 1

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
ξο τε ραν α συγ χρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν την ον τως Θε ο  
το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#

Μ ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι  
ον και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου ε πι  
τω Θε ω τωσω τη ρι μου

**Τ**ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο

τοκον σεμεγαλυνοομεν **π**  
**9**

**Ο**τι επεβλεψεν επι την ταπεινω

σιντης δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μακα

ρι ουσι με πασαι αιγε νειαι

**Τ**ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup>η

Ο <sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του <sup>Δ</sup> και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον <sup>Δ</sup>

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ</sup> και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>π</sup>η την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup> την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup>η

Ε <sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>η</sup> την α δι

α φθο ρως <sup>η</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π η</sup> την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π η</sup>

<sup>χ</sup> Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους <sup>η</sup> κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων <sup>η</sup> τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ <sup>χ</sup>

του ε ως αι ω νος <sup>η</sup>

<sup>Τ</sup> ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>η</sup> και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>η</sup> την α δι

α φθο ρως <sup>η</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π η</sup> την ον τως Θε



ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π ρ

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος α'

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Στέργειν μὲν ἡμᾶς, ὡς ἀκίνδυνον φόβῳ, ῥᾶον σιωπῇ, τῷ πόθῳ δὲ Παρθένε, ὕμνους ὑφαίνειν, συντόνως τεθηγμένους, ἐργῶδές ἐστιν, ἀλλὰ καὶ Μήτηρ σθένης, ὅση πέφυκεν ἡ προαίρεσις δίδου».

Ἀργή

Σύντομος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.266#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ε

ρ α ν κ α ι ε ν δ ο ξ ο τ ε ε ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α α

των π ρ

Σ τ ε ρ γ ε ι ν μ ε ν η μ α α σ ω ς α κ ι ν δ υ ν ο ν φ ο ο β ω ρ α ο ν

σι ω πην τω πο θω δε Παρ θε νε υ μνους υ φαι νειν συν

το νως τε θη γμε ε νους ερ γω ω δεσ ε στιν αλ λα και μη

τηρ σθε ε νος <sup>π q</sup> ο ση πε φυ κεν η προ αι ρε σις δι ι δου

ου ου <sup>π q</sup>

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>q</sub> Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.15#

**M** ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου ου

τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν <sup>Δ</sup> και

αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α νω

στρα α α τευ μα α α α των <sup>π q</sup>

C τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α

χι εν δυ υ νο ον φο ο ο βω ρα ον σι ω πη η

τω ω ω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε ε νε υ

μνους υ φαι αι αι αι νει εν συ υ υ υν το ο νως τε

ε θει ει γμε ε ε νουους ερ γω ω ω ω

δε ες ε ε ε στιν α α αλ λα α και Μη η

τηρ σθε ε ε ε ε νος ο ο ο ο ο ο ση η

η η η πε φη η κε ε ε ε ε ε εν η η προ ο

αι αι αι ρε ε σις δι ι ι ι ι ι δου ου ου

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

**M** ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου  
ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν  
και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α  
νω στρα α α τευ μα α α των  
**C** τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α  
κι εν δυ υ νο ον φο ο ο βω ρα ον σι ω πη ην  
τω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε νε υ μνους υ  
φαι αι αι αι νει ειν συ υν το ο νως τε ε θη  
η γμε ε ε νου ους ερ γω ω ω ω δε ες ε

ε ε στιν αλ λα α και Μη η τηρ σθε ε ε ε

νος ο ο ο ο ο ο ση η η η η πε φυ υ κε ε

ε ε ε ε εν η η προ ο αι αι αι ρε ε

σις δι ι ι ι ι δου ου ου ου

Ἀλλη πρωτ.Κων.Παπαγιάννη κατ' ἔννοιαν τονιστεῖσα

τε ερ γει ει εν με εν η η μας ως α κι ιν δυ

υ υ νον φο ο ο βω ω ρα α ο ον σι ω ω

πη ην τω πο θω ω δε Πα αρ θε ε ε νε

υ μνου ους υ υ φαι αι νειν συν το νως τε θη η

γμε ε ε νου ους ερ γω ω ω ω δε ες ε ε

ε στιν <sup>π</sup>αλ λα και Μη η η τη ησθε ε ε νος <sup>Δ</sup>ο

ση πε ε φυ υ κεν η η προ αι αι αι ρε ε σις δι

ι <sup>χ</sup>δου ου ου <sup>π</sup>

## ἤχος β'

- α **Β**υθοῦ ἀνεκάλυψε πυθμένα, καὶ διὰ ξηρᾶς οἰκείους ἔλκει, ἐν αὐτῷ κατακαλύψας ἀντιπάλους, ὁ κραταιός, ἐν πολέμοις Κύριος, ὅτι δεδόξασται.
- Σ**τείβει θαλάσσης, κυματούμενον σάλον, ἥπειρον αὖθις, Ἰσραὴλ δεδειγμένον. Μέλας δὲ πόντος, τριστάτας Αἰγυπτίων, ἔκρυσεν ἄρδην, ὕδατόστρωτος τάφος, Ῥώμη κραταιᾷ, δεξιᾷ τοῦ Δεσπότη.
- γ **Ἰ**σχὺν ὁ διδούς, τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν Κύριος, καὶ κέρασ χρηστῶν αὐτοῦ ὕψων, Παρθένου ἀποτίκτεται, μολεῖ δὲ πρὸς τὸ βάπτισμα· διὸ πιστοὶ βοήσωμεν· οὐκ ἔστιν ἅγιος, ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος, πλὴν σου Κύριε.
- Ὅ**σοι παλαιῶν, ἐκλελύμεθα βρόχων, βορῶν λεόντων, συντεθλασμένων μύλας, ἀγαλλιῶμεν, καὶ πλατύνωμεν στόμα, λόγῳ πλέκοντες, ἐκ λόγων μελωδίαν, ᾧ τῶν πρὸς ἡμᾶς, ἥδεται δωρημάτων.
- δ **Ἀ**κήκοε Κύριε φωνῆς σου, ὃν εἶπας· φωνὴ βοῶντος ἐν ἐρήμῳ ὅτε ἐβρόντησας πολλῶν ἐπὶ ὕδατων, τῷ σῶ μαρτυρούμενος Ὑῖῳ, ὅλος γεγονώς τοῦ παρόντος, Πνεύματος δὲ ἐβόησε· σὺ εἶ Χριστός, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις.
- Π**υρσῷ καθαρθεὶς μυστικῆς θεωρίας, ὕμνων προφήτης τὴν βροτῶν καινουργίαν, ῥήγνυσι γῆρυν, Πνεύματι κροτουμένην, σάρκωσιν ἐμφαίνουσιν ἀρρήτου Λόγου, ᾧ τῶν δυναστῶν τὰ κράτη συνετρίβη.
- ε **Ἰ**ησοῦς ὁ ζωῆς ἀρχηγός, λῦσαι τὸ κατάκριμα ἥκει, Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλάστου· καθαρσίων δέ, ὡς Θεὸς μὴ δεόμενος, τῷ πεσόντι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ· ἐν ᾧ τὴν ἔχθραν κτείνας, ὑπερέχουσιν πάντα νοῦν, εἰρήνην χαρίζεται.
- Ἐ**χθροῦ ζοφώδους καὶ βεβορβορωμένου, ἰὼν καθάρσει Πνεύματος λελουμένοι, νέαν προσωρμίσθημεν ἀπλανῇ τρίβον, ἄγουσαν ἀπρόσιτον εἰς θυμηδίαν, μόνοις προσιτήν, οἷς Θεὸς κατηλλάγη.
- ς **Ἡ** φωνὴ τοῦ Λόγου, ὁ λύχνος τοῦ φωτός, ὁ ἑωσφόρος, ὁ τοῦ ἡλίου Πρόδρομος, ἐν τῇ ἐρήμῳ. Μετανοεῖτε, πᾶσι βοᾷ τοῖς λαοῖς, καὶ προκαθαίρεσθε· ἰδοὺ γὰρ πάρεστι Χριστός, ἐκ φθορᾶς τὸν κόσμον λυτρούμενος.

¶μερτὸν ἐξέφηνε σὺν πανολβίῳ, ἥχῳ Πατῆρ, ὃν γαστρὸς ἐξηρεύξατο. Ναί φησιν, οὗτος, συμφυῆς γόνος πέλων, φώταυγος ἐξώρουσεν ἀνθρώπων γένους, Λόγος τέ μου ζῶν, καὶ βροτὸς προμηθεΐα.

ζ Νέους εὐσεβεῖς, καμίνῳ πυρὸς προσομιλήσαντας, διασυρίζον πνεῦμα δρόσου, ἀβλαβεῖς διεφύλαξε, καὶ θείου ἀγγέλου συγκατάβασις· ὅθεν ἐν φλογὶ δροσιζόμενοι, εὐχαρίστως ἀνέμελπον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

¶Εφλεξε ρείθρῳ τῶν δρακόντων τὰς κάρας, ὁ τῆς καμίνου τὴν μετάρσιον φλόγα, νέους φέρουσαν εὐσεβεῖς κατευνάσας, τὴν δυσκάθεκτον ἀχλὺν ἐξ ἁμαρτίας, ὅλην πλύνει δέ, τῇ δρόσῳ τοῦ Πνεύματος.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Μυστήριον παράδοξον, ἡ Βαβυλῶνος ἔδειξε κάμιнос, πηγάσασα δρόσον, ὅτι ρείθροις ἔμελλεν, ἄυλον πῦρ εἰσδέχεσθαι ὁ Ἰορδάνης, καὶ στέγειν σαρκί, βαπτιζόμενον τὸν κτίστην, ὃν εὐλογοῦσι λαοί, καὶ ὑπερυψοῦσιν, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

¶Ελευθέρα μὲν ἡ κτίσις γνωρίζεται. Υἱοὶ δὲ φωτός, οἱ πρὶν ἐσκοτισμένοι. Μόνος στενάζει, τοῦ σκοτόუს ὁ προστάτης. Νῦν εὐλογεῖτω συντόνως τὸν αἵτιον, ἡ πρὶν τάλαινα τῶν ἐθνῶν παγκληρία.

| Ἀργαί                                  | Σύντομοι            |
|----------------------------------------|---------------------|
| Πέτρου Λαμπαδαρίου                     | Ἰωάννου Πρωτοψάλτου |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) |                     |

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασαί τῶν Θεοφανείων  
ὥδῃ α'

Ἦχος Ψα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειμολόγιον 1903 σ.267#

Β υ θου α νε κα λυ ψε πυ θμε να και δι α ξη



ρας οι χει ει ους ελ χει εν αυ τω κα τα κα λυ ψας

αν τι πα λους ο κρα ται ος εν πο λε μοις Κυ ρι ος

ο ο τι δε δο ξα σται

ᾠδὴ α' ἱαμβική

Ἦχος Β̣

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.268#

C τει βει θα λασ σης κυ μα του με νον σα α λον η πει

ρον αυ θις Ισ ρα ηλ δε δει γμε νον με λας δε πο

ον τος τρι στα τας Αι γυ πτι ι ων ε κρυ ψεν αρ

δη ην υ δα το στρω τος τα α φος ρω μη κρα ται α δε

ξι ας του ου Δε σπο του

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Π̣

**I** σχυν ο δι δους τοις βα σι λευ σιν η μων Κυ ρι ος

και κε ρας χρι στων αυτου υ ψων **π** Παρ θε νου α α πο τι κτε

ται μο λει δε προς το βα πτι σμα δι ο πι στοι βο η

σω μεν ουκ ε στιν α γι ος ως ο Θε ος η μων **Δ** και ουκ

υ **π** ε στι δι και ος πλην σου Κυ ρι ε

ᾠδὴ γ' ἱαμβικὴ

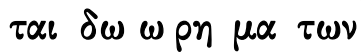
**Ἦχος** **Β**

**O** σοι παλαι ων εκ λε λυ με θα βρο ο χων **Δ** βο

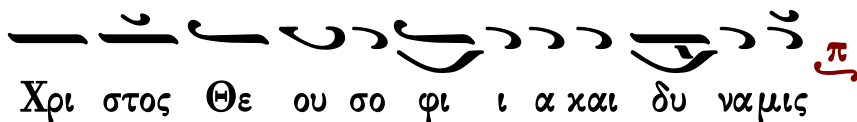
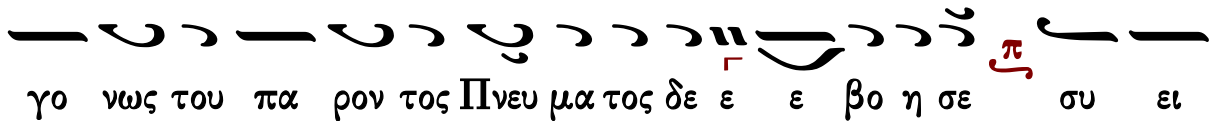
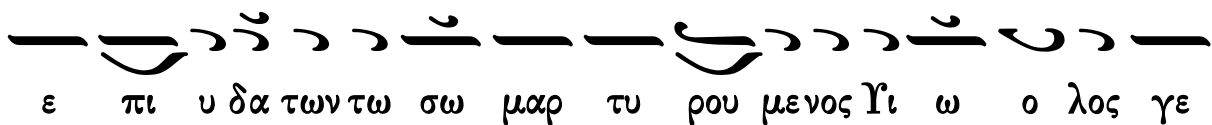
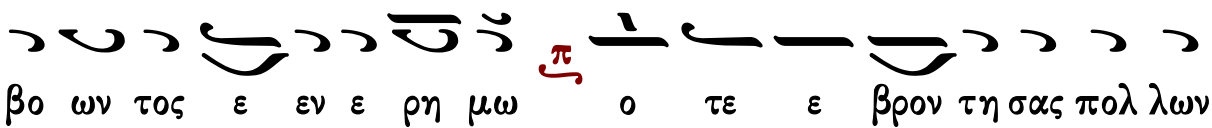
ρων λε ον των συν τε θλα σμε νων μυ υ λας α γαλ λι

ω ω μεν και πλα τυ νω μεν στο ο μα **Δ** Λο γω πλε

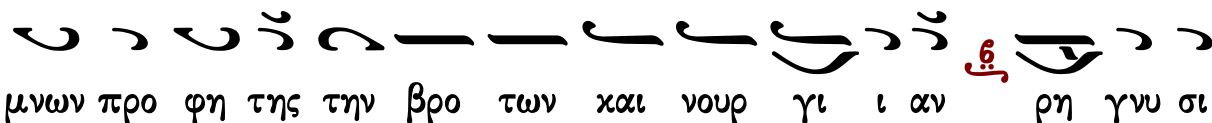
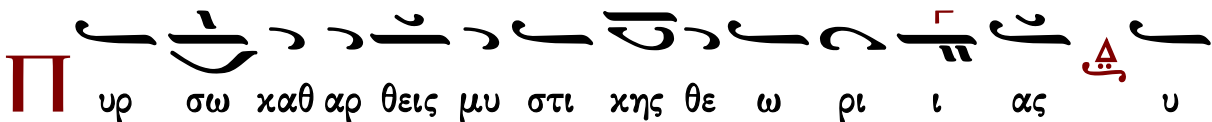
κοντες εκ λο γων με ε λω δι ας ω των προς η μας **χορὸς α'** η δε



Ἦχος Πά



Ἦχος πλ. β.



γῆ ἡ ρυν Πνευματικὸς τοῦ με ἐν ἡν σαρκα

σιν ἐμφανίσαν ἀρχὴ τοῦ Λόγου ὧ των δύνα

στων χορὸς β' τα κρατήσιν ἐτρίβη

ὥδ' ἐ' Ἦχος Πά

ἡ σους ὁ ζωῆς ἀρχηγὸς ἄλυσαι τὸ κα

τα κριμαῖα καὶ Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλαστοῦ καὶ θάρ

σιων δὲ ὡς Θεοοσμηδὲ ὁ μένος τῶ πέσον

τι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ἐν ὧ τὴν ἐ

χθρὰν κτείνει ἐν ἡν ὑπερεχούσαν πάντων ἐ

ρη ἡν ἡν χαρίζεται

Ε  
 χθρου ζο φω δους και βε βορ βο ρω με ε νου ι  
 ον κα θαρ σει Πνευ μα τος λε λου με ε νοι νε αν προ  
 σωρ μι σθη μεν α πλα νη τρι ι βον α γου σαν α  
 προ σι τον εις θυ μη δι αν μο νοις προ σι την χορὸς α'  
 οις Θε ος κα τηλ λα γη

Η  
 φω νη του Λο ο γου ο λυ χνος του φωτος ο  
 ε ω σφο ρος ο του Η λι ου προδρομος εν τη ε ρη  
 με τα νο ει τε πα σι βο α α τοις λα οις και

προ ο κα θαι ρε σθε ι δου γαρ παρ ε στι Χρι στος εκ

φθο ρας τον κο ο σμον λυ τρου μενος

ᾠδὴ ζ' ἱαμβική

Ἦχος Β̣

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ταυ

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

ζων χορὸς β' και βρο τος προ ο μη θει α

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος Π̣

Ν ε ους ευ σε βεις κα μι ι νου πυ ρος προσ ο ο μι λη

σαν τας δι α συ ρι ζον Πνευ μα δρο σου α βλα βεις δι ε

φυ λα ξε και θει ει ου Αγ γε λου συυγ κα τα βα σις

ο θεν εν φλο γι δρο σι ζο ο μενοι ευ χα ρι ι στω

ως αν ε μελ πον υ περ υ μνη τε ο των πα τερων Κυ ρι

ος και Θε ος ευ λο γητος ει

ᾠδὴ ζ' ἱαμβική

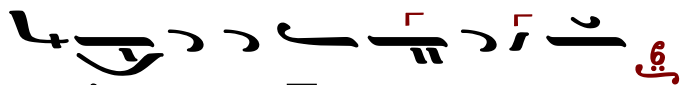
Ἦχος Β̃

Ε φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

της κα μι ι ι νου την με тар σι ον φλο ο ο γα νε ους

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

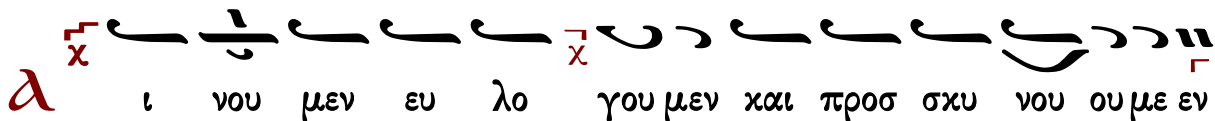
κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυ νει δε χορὸς α'



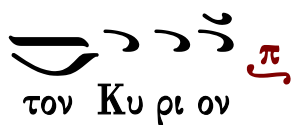
τη δρο σω του Πνε ευ μαα τος

ὥδῃ ἡ'

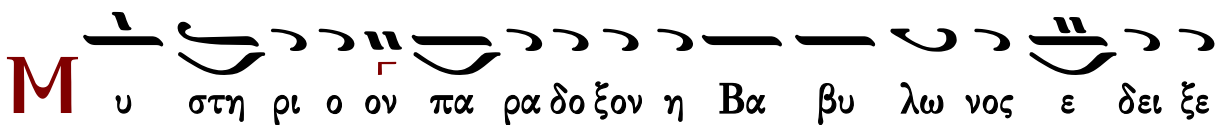
Ἦχος Πά



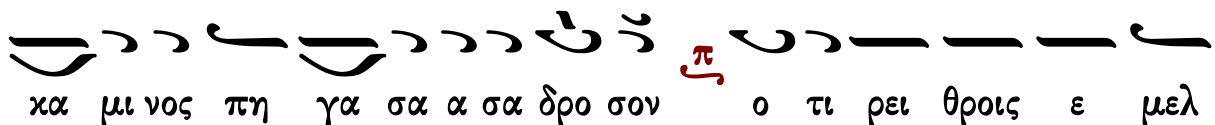
ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ σκυ νου ου με εν



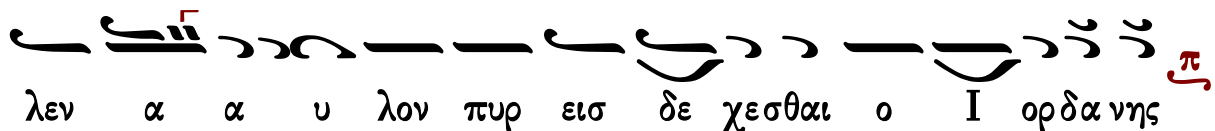
τον Κυ ρι ον



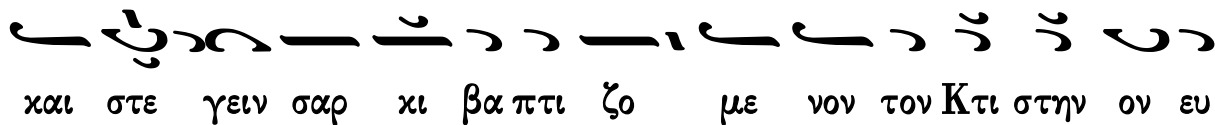
υ στη ρι ο ον πα ρα δο ξον η Βα βυ λω νος ε δει ξε



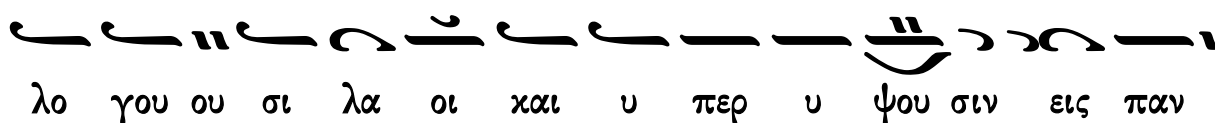
κα μι νος πη γα σα α σα δρο σον ο τι ρει θροις ε μελ



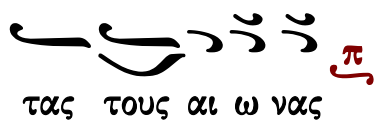
λεν α α υ λον πυρ εις δε χεσθαι ο Ι ορδα νης



και στε γειν σαρ κι βα πτι ζο με νον τον Κτι στην ον ευ



λο γου ου σι λα οι και υ περ υ ψου σιν εις παν



τας τους αι ω νας



Ελευθερά μεν η χτι ι ι σις γνωριζεται υι  
οι δε φωτος οι πριν εσκοτισμε ενοι μονος  
στε να ζει του σκοτους ο προστααατης νυν ευλογει  
τω συν το ο ο νως τον αιτιον η πριν ταλαινα  
των ε θνων πααγκληρι ι ααααα

Ἀργαῖ

Πέτρου Λαμπαδαρίου<sup>10</sup>

Καταβασίαι τῶν Θεοφανείων  
ὥδ' ἁ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

υ ψε πυ θμε ε ε ε ε ε να α α α και

δι ι α ξη η ρα ας οι χει ει ους ε ε ε ε ελ χει ει

εν αυ τω ω κα τα κα α λυ υ υ ψα ας α αν

τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ο ο ο ο ο

ος εν πο λε ε μοις Κυ υ ρι ι ος ο ο ο ο

τι δε ε δο ο ο ο ο ο ο ο ο ξα σται

τει βει θα λα α ασ ση η η ης κυ υ υ μα α του

ου με ε ε νον σα α α α α λο ον η η πει

ει ρο ον α α αυ θι ι ι ις Ι ισ ρα α η ηλ δε ε ε

δει ει γμε ε ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο

ον το ο ο ο ο ος τρι στα ταας Αι αι αι γυ υ

πτι ι ι ι ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη η

η ην υ υ δα α το ο στρω ω ω το ος τα α α

α α φος ρω ω ω ω ω ω ω μη η η η κρα

ται αι α α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι

λε ευ σι εν η η μων Κυ ρι ο ος και αι κε ε ρας χρι

στων α αυτου υ υ ψων Παρ θε ε νου ου α α πο τι κτε

ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα δι ο πι στοι

οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε ε εν

ουκ ε ε στιν α γι ι ος ω ω ωως ο ο Θε

ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι και αι ο ο

ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Ο σοι οι οι οι πα λαι αι ω ω ωων ε ε εκ λε ε

λυ υ με ε ε θα βρο ο ο ο ο χω ων βο ρω

ω ων λε ε ο ο ον τω ω ων συν τε ε θα α σμε ε ε

νω ων μυ υ υ υ υ λας α γαλ λι ω ω ω ω

με ε ε ε ε ε εν και αι αι πλα α τυ υ νω ω ω

μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο

ον τε εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων

προς η η μα ας χορός α' η η δε ε ται δω ω ω ω

ω ρη η μα α α των

Ὡδὴ δ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε

ε βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μεις

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ σι γη

η η ρυ υ υ υ υν Πνευ μα α τι κρο ο ο του

με ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ

φαι νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο

ο ο γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ωων

δυ να α στω ων χορὸς β' τα κρα α τη συ υ υ

υν ε ε τρι ι ι βη

Ὁδὴ ε'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.124\*

η σους ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ υ

σαι αι το κα α τα κρι μα η η η κει Α α δα α αμ

του ου πρω ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων

δε ως Θε ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος

τω πε σο ο ον τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε

εν τω ω Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε

χθρα αν κτει ει ει νας υ περ ε ε ε ε χου ου σαν

παν τα α νουν ει ρη η η η νη ην χα α ρι ι ι

ι ι ι ι ι ζε ται

<sup>6</sup>Ε χθρου ου ζο ο φω ω ω δου ου ους και βε ε βο ορ

βο ο ο ρω με ε ε ε ε νου ου ι ο



ο ον κα α θα αρ σει Πνευ μα α τος λε ε ε

λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν προ οσ ωρ

μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι ι ι ι

ι βο ον α γου σα α αν α α προσ ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορδς α' οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

Ὁδὴς'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η<sup>χ</sup> φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ως φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ου ου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει τε

πα α α α σι βο ο α τοις λα οι οισ και αι προ ο

κα θαι ρε σθε ε ι δου ου γα αρ πα α ρε στι

Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον λυ τρου με

νο ος

<sup>6</sup> μερ το ο ον ε εξ ε φη νε ε συ υ υν πα

α αν ολ βι ι ι ω η χω ω Πα α α τηρ ον

γα στρο ο ο ος ε εξ η η η ρε ευ ξα α α

το ναι φησιν ου ου ου το ο ο ο ο ο ος συ υ υμ

φυ υ ης γο νο ος πε ε ε ε ε λω ων φω ται

γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν α α αν θρω ω ω πω ων

γε ε ε νους Λο ο ο ο ο ο ο ο γο ο

ο ος τε μου ου ζω ων χορὸς β' και βρο τος προ ο ο ο

ο μη η θει ει ει α

Ὠδὴ ζ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ζο ο ο ον πνευ μα δρο σου ου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε καθ θει ου α αγ γε ε ε λου ου

συγ κα τα α βαα σις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε ε κτο

ον α χλυν ε εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι

ας ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει

δε ε ε χορός α' τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα α

α το ος

ᾠδὴ η'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

**Μ**υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εισ δε χε ε σθαι αι

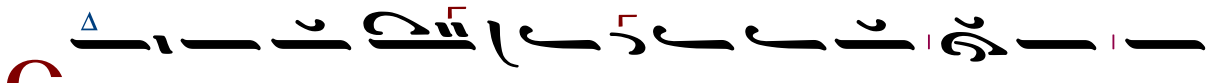
αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε

ε γει ει ει ν σα αρ κι βα πτι ι ζο ο ο με ε νο

ον τον κτι ι ι ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α

οι και υ περ υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν

τας του ους αι ω ω ω ω νας


 λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω  

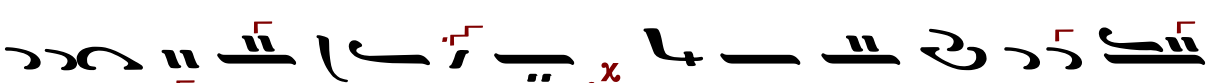
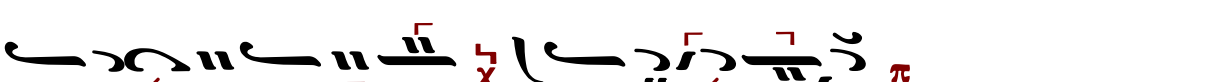
 ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε  

 φω ω το ος οι πριν ε ε σκο ο ο τι σμε ε ε ε ε  

 νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο  

 του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν  

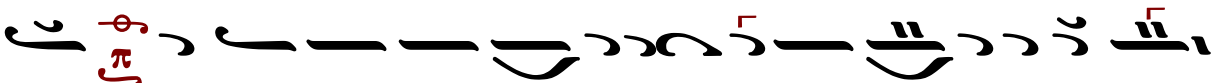
 ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι  

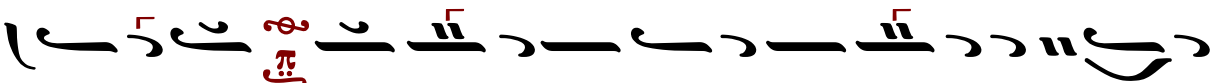
 αι τι ι ι ι ον η πρι ι ι ι ι ι ιν τα  

 α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α  

 αγ κλη η ρι ι ι α α α α α α

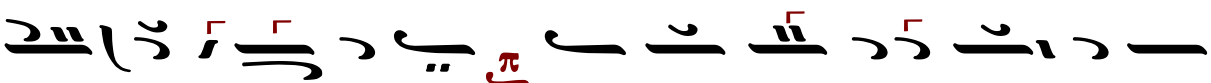
Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)<sup>11</sup>

<sup>11</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινων γραμμῶν.

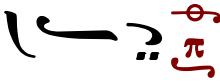
Β   
υ θου ου α νε κα λυ ψε ε πυ θμε ε ε ε

  
να και δι α ξη ρα ας οι οι οι χει ει ει ους ε

  
ε ελ χει εν α αυ τω κα τα κα λυ υ ψα ας α αν

  
τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ος εν πο

  
λε ε μοι οis Κυ ρι ι ος ο ο ο τι ι δε δο ο ξα

  
σται αι

Σ   
τει βει θα λα α ασ ση ης κυ μα του ου με ε

  
ε νον σα α α α α λο ον η η πει ει ρο

  
ον α α αυ θι ις Ισ ρα η ηλ δε ε ε δει ει γμε ε



ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο ο ο ον

το ος τρι στα τα ας Αι αι αι γυ υ πτι ι ι ι

ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη ην υ δα το

ο στρω ω ω το ος τα α α α α φος ρω ω μη

η κρα ται αι α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λευ

σιν η μω ω ωων Κυ υ ρι ι ι ος και αι

κε ε ρας χρι στων α αυ του υ υ ψων Παρ θε ε νου ου

α α πο τι κτε ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα

δι ο πι στοι οι βο η η σω με ε ε ε ε ε ε

ε ε ε εν ουκ ε ε στιν α γι ι ος ως ο

Θε ο ο ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι

και αι ο ο ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Ο σοι οι πα λαι αι ων εκ λε λυ υ με ε ε θα βρο

ο ο ο ο χω ων βο ρω ω ων λε ε ο ο ο ν

των συν τε θλα σμε ε ε νω ων μυ υ υ υ υ

λας α γαλ λι ω ω ω μεν και πλα τυ υ νω ω



υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ υ

σι ι γη η η ρυν Πνευ μα α τι κρο ο ο του με

ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ φαι

νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο ο ο

γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων δυ

να α στω ων χορὸς β' τα κρα α τη συ υ υ υν ε ε

τρι ι ι βη

Ὡδὴ ε'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.124\*

η σους ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ σαι

το κα τα κρι μα η η η κει Α α δα α αμ του ου πρω

ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων δε ως Θε

ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος τω πε

σο ο ον τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε εν τω ω

Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε χθρα αν κτει

ει ει νας υ περ ε χου σαν παν τα α νουν ει ρη η η

η η η νην χα ρι ι ι ι ζε ε ε ε ται

Ε<sup>6</sup> χθρου ου ζο ο φω ω ω δους και βε βορ βο ρω με

ε νου ου ι ι ι ον κα θαρ σει Πνευ μα α τος

λε ε ε λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν

προ οσ ωρ μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι

ι ι ι ι βο ον α γου σαν α προσ ι ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορὸς α' οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

Ὡδὴς'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει ει ει

ει τε πασι βο α α α α τοις λα α οις και προ

κα θαι αι αι ρε ε ε ε σθε ι δου ου γαρ πα ρε ε

στι ι ι Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον

λυ τρου με νο ος

μερ το ο ον ε εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ι

ω ω η χω ω Πα α α τηρ ον γα στρο ο ο ος

ε εξ η η η ρε ευ ξα α α το ναι φη σι

ιν ου ου τος συμ φυ η ης γο νο ος πε ε ε ε ε

λω ων φω ταυ γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν

α α αν θρω ω ω πω ων γε ε ε νους Λο ο



ο ο ο ο ο ο γο ο ο ος τε μου ου ζω ων χορός

β' και βρο τος προ ο ο ο ο μη η θει ει ει α

Ὡδή ζ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ι ι ζον πνευ μα δρο ο ο σου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε και θει ου α αγ γε ε ε λου συγ

κα α τα βα α σι ις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ουου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε εκτον α

χλυ υν εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι ας

ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει δε ε

ε χορός α' τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα α α το

ος

ᾠδὴ η'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εις δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε ε

γει ειν σαρ κι ι βα πτι ζο ο με νο ον τον κτι ι ι

ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α οι και υ περ

υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν τας του ους αι ω ω

ω ω νας

Ε λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σκο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν



Τοῦ ἀρχιποίμενος ὡς πρόβατον, πιστὸν Χριστοῦ Βασίλειε, τοῖς ζωηφόροις ἔχνεσιν ἐπηκολούθησας· τῷ τυράννῳ γὰρ τὴν σαυτοῦ ψυχὴν πάτερ προδέδωκας, προκινδυνεύων ἄριστα, τῆς Ἐκκλησίας παμμακάριστε.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐκ Καισαρείας, Βασίλειον τὸν Μέγαν.

Τὸ τῆς Ἐκκλησίας πανίερον, Χριστοῦ κατιδὼν σύστημα, ὑπὸ τῆς σῆς κοσμούμενον ἱεραρχίας σοφέ, ὁ πανώλης ἐμβροντηθεὶς, καταπέπτωκε τύραννος· τὴν γὰρ ἐν σοὶ τοῦ Πνεύματος, αἶγλην οὐκ ἤνεγκε Βασίλειε.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου, θεότητος τὸ κράτος.

Τῆς τῶν ἀποστόλων καθέδρας, τῆς χορείας τε τῶν ἀθλοφόρων, Χριστοῦ πατριαρχῶν σκηνῆς, καὶ τῶν δικαίων τρυφῆς, τῆς χορείας τε τῶν προφητῶν, ἡξιώθης Βασίλειε· τῆς Θεοτόκου μύστης γάρ, καὶ τῆς Τριάδος λάτρις γέγονας.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Ὅ τὰ ὑπερῶα ἐν ὕδασι, στεγάζων μόνος Κύριος, ἀναχαιτίζων θάλασσαν, ἀβύσσους τε ὁ ξηραίνων, ἐκ σοῦ ἀγνή τὴν σάρκα προσλαβόμενος, ἐκ Βηθλεὲμ ἐπείγεται, πρὸς Ἰορδάνην βαπτισθῆναι σαρκί.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὠδὴ θ', κανὼν τῆς ἐορτῆς

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.35/33\*

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ε

ρ αν των α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Η τον προ η λι ου φω στη ρ α τον Θε ον εξ α

α να τει λαν τα σω μα τι κως η μιν ε πι δη μη σαν

τα εκ λα γο ο νων παρ θε νι κων α φρα στως σω

ω μα τω σα σα ευ λο γη με νη παν α γνε σε ε Θε

ο το κε με γα λυ νο μεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον κα τα τον νο ο

μον σαρ κι πε ρι τμη θεν τα

Η τον προ η λι ου φω στη ρα τον Θε ον εξ α

α να τει λαν τα σω μα τι κως η μιν ε πι δη μη σαν

τα εκ λα γο ο νων παρ θε νι κων α φρα στως σω

ω μα τω σα σα ευ λο γη με νη παν α γνε σε ε Θε

ο το κεμεγαλυνομεν

Μεγαλυνον ψυχη μου τον εν τη ο γδο η περι

το μην λαβοντα

Υπερβας τους ο ρους Χριστος της ανθρωπινης

ολης φυσεως υπερφυως εκ Παρθενου αποτι

κτεται και το γραμμα το νομικον καθως διαα

κελευεται την σαρκα περιτεμνεται και πληρω

της του νομου δεικνυται

Сημερον ο Δεσποτης σαρκι περιετμηθη

και Ιησους εκληθη



Δευ τε του Δε σπο του τα εν δοξα Χρι στου ο νο μα

στη ρι α εν α γι ο τη τι παν η γυ ρι σω μεν

Ι η σου ους γαρ θε ο πρε πως α νη γο ο ρε ευ

ται ση με ρον συν του τοις και την μνη μην δε του ι

ε ραρ χου με γα λυ νω μεν

ὑδὴ θ', κανὼν τοῦ ἁγίου...

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.36/34\*

Με γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εν ι ε ρα αρ

χαις Βα σι λει ον τον με γαν

Τ ου αρ χι ποι με νος ως προ βα τον πι στον Χρι στου ου

Βα σι λει ε  τοις ζω η φο ροις ι χνε σιν ε πη κο

λου θησας  τω τυ ραν νω γαρ την σαυ του ψυ χην πα α

τερ προ δε δω κας  προ κιν δυ νευ ων α ρι στα της

Εκ κλη σι  ας παμ μα κα ρι στε 

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ Και σα ρει ει ας

Βα σι λει ον τον με γαν 

**Τ** ο της Εκ κλη σι ι ας παν ι ε ρον Χρι στου

κα τι δων συ στη μα  υ πο της σης κο σμου με νον ι

ε ραρ χι ας σο φε  ο παν ω ω λης εμ βρον τη θεις 

κα τα πε ε πτω ω  κε τυ ραν νος  την γαρ εν σοι

του Πνευματος αι γλην ουκ ηνεγκε Βασιλειε

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευματι

Μεγαλυνον ψυχη μου ουτης τρισυποστατου

και αδιαριτου Θεοτητος τοκρατος

Της των αποστολων καθεδρας της χορειας

τε των αθλοφορων Χριστου πατρι αρχων σκηνης

και των διακαιων τρυφης της χορειας των προφη

των ηξιωωθηης Βασιλειε της Θεοτο

κου μυστης γαρ και της Τριαδος λατρης γεγονας

Και νυν και αι και εις τους αιωνας των αιωνων

νων α μην

Μεγαλυνον ψυχη μου την λυτρωσα μενην η

μας εκ της καταρας

Οτα υπερωωαενυδασιστε

γαζωνμονος Κυριος αναχαιτιζων θαλασσαν

αβυσσους τε οοξηραινων εκσουαγνητηνσαρ

καπροσλαβομενος εκ Βηθλεεμ επειγεται

προς Ιορδανην βαπτισθηναισαρκι

καταβασίαι θ' φδῆς

ἦχος β'

Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἄξιαν, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Ὡ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάνταγνε, Μῆτερ εὐλογημένη δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Ἀργαῖ

Σύντομοι

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ῥαδὴ θ'

Ἦχος Ψα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε

ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρ ει πα α σα γ λ ω σ σα ε υ φ η μ ει ει ν π ρ ο ς α ξ ι α ν

ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ ς κ αι υ π ε ρ κ ο σ μ ι ο ς υ μ ν ει ν σ ε Θ ε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στιν

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων συ

υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα λυ νο μεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της καταρας

ἱαμβική

Ἦχος Β̣

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.285#

ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα

ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον φε ρον τες

υ μνον ευ χα ρι στι ι α α α ας

Ἀρχή

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ῥοδῆ θ'

Ἦχος Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

Μ ε γα α λυ νον ψυ χη η η η η μου

ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρα αν

και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α α των

Α πο ρει πα α α σα γλω ω ωσ σα ε

ευ φη η μει ει ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν

ι λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ

πε ερ κο σμι ι ος υ υ μνει ει ειν σε ε Θε ε ο

το ο ο ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου

σα α τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα

αρ τον πο θον οι οι οι οι δα ας το ον ε ε εν

θε ε ε ο ον η η η μων συ υ γαρ Χρι

στι α α νων ει ει προ ο στα α τisz σε ε ε με ε γα λυ

νο με εν

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η η μου

ου τη ην λυ τρω ω ω σα α με ε ε ε νη ην η

η μα ας εκ τη ης κα τα α α α ρας



Ω τω ω ω ω ν υ υ υ πε ερ νου ου ου ουν του

το κου σου ου ου θαυ μα α α α α τω ω ν Νυ

υ υ μ φ η η πα αν α α α γνε ε ε Μη τε

ερ ευ λο ο ο γ η η με ε ε ε ε ν η δι

ης τυ χο ο ο ο ν τε ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε

λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α ας ε ε

πα ξι ον κρο ο του ου ου με εν ω ω ως ε ε ε ευ

ερ γε ε ε τη δω ω ω ω ρο ο ο ο ν φε

ε ρο ο ο ν τε ε ες υ υ μ νο ο ν ευ χα α α

α α ρι ι στι ι ι α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

Μ ε γ α α λυ νον ψυ υ χ η η η η μου ου

τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ρ αν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α α των

Α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ

φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι

λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

χο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι

ι τη του ου Προδρο ο ο ο μου

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ο ο ον τε

ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε λου ους σω ω ω τη

ρι ι ι ι ι α ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του

ου ου με εν ω ω ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη

δω ω ω ω ρο ο ο ον γε ε ρο ο ον τε ε

ες υ υ μνο ον ευ χα α α α α ρι ι στι ι

ι α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Ῥοδῆ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

Μ ε γ α α λ υ ν ο ν ψ υ υ χ η η η η μ ο υ ο υ Δ

τ η η ν τ ι ι μ ι ω ω τ ε ε ε ρ α ν τ ω ω ν α α ν ω

σ τ ρ α α τ ε υ μ α α α α τ ω ν π

Α π ο ρ ει π α α α σ α γ λ ω ω ω σ σ α ε ε υ

φ η η μ ει ει ει ει ν π ρ ο ο ς α ξ ι ι ι ι α ν ι π

λ ι γ γ ι α α α δ ε ε ε ε ν ο υ ο υ ς κ αι υ π ε ε ρ

κ ο σ μ ι ι ο ς υ υ μ ν ει ει ει ν σ ε ε Θ ε ε ο τ ο ο ο

ο κ ε ο μ ω ς α γ α θ η υ υ υ π α ρ χ ο υ ο υ σ α α

τη η ην πι ι ι σιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι

ι τη του ου Προδρο ο ο ο μου

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουν του το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ον τε

ες παν τε λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α

ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του ου ου με εν ω ω

ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη δω ω ω ρο ον φε

ε ρο ο ον τε ες υ υ μνο ον ευ χα α α α

α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

# Τῶν Θεοφανείων

Πεζαὶ καὶ ἱαμβικαὶ  
1, 6, 14 Ἰανουαρίου

## ἤχος β'

- α **Β**υθοῦ ἀνεκάλυψε πυθμένα, καὶ διὰ ξηρᾶς οἰκείους ἔλκει, ἐν αὐτῷ κατακαλύψας ἀντιπάλους, ὁ κραταιός, ἐν πολέμοις Κύριος, ὅτι δεδόξασται.
- Σ**τείβει θαλάσσης, κυματούμενον σάλον, ἡπειρον αὖθις, Ἰσραὴλ δεδειγμένον. Μέλας δὲ πόντος, τριστάτας Αἰγυπτίων, ἔκρυσεν ἄρδην, ὕδατόστρωτος τάφος, Ῥώμη κραταιᾷ, δεξιᾷ τοῦ Δεσπότη.
- γ **Ἰ**σχὺν ὁ διδούς, τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν Κύριος, καὶ κέρας χρηστῶν αὐτοῦ ὑψῶν, Παρθένου ἀποτίκτεται, μολεῖ δὲ πρὸς τὸ βάπτισμα· διὸ πιστοὶ βοήσωμεν· οὐκ ἔστιν ἅγιος, ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος, πλὴν σου Κύριε.
- Ὅ**σοι παλαιῶν, ἐκλελύμεθα βρόχων, βορῶν λεόντων, συντεθλασμένων μύλας, ἀγαλλιῶμεν, καὶ πλατύνωμεν στόμα, λόγῳ πλέκοντες, ἐκ λόγων μελωδίαν, ᾧ τῶν πρὸς ἡμᾶς, ἥδεται δωρημάτων.
- δ **Ἀ**κήκοε Κύριε φωνῆς σου, ὃν εἶπας· φωνὴ βοῶντος ἐν ἐρήμῳ ὅτε ἐβρόντησας πολλῶν ἐπὶ ὕδατων, τῷ σῶ μαρτυρούμενος Υἱῷ, ὅλος γεγονώς τοῦ παρόντος, Πνεύματος δὲ ἐβόησε· σὺ εἰ Χριστός, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις.
- Π**υρσῷ καθαρθεὶς μυστικῆς θεωρίας, ὕμνων προφήτης τὴν βροτῶν καινουργίαν, ῥήγνυσι γῆρυν, Πνεύματι κροτουμένην, σάρκωσιν ἐμφαίνουσιν ἀρρήτου Λόγου, ᾧ τῶν δυναστῶν τὰ κράτη συνετρίβη.
- ε **Ἰ**ησοῦς ὁ ζωῆς ἀρχηγός, λῦσαι τὸ κατάκριμα ἥκει, Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλάστου· καθαρσίῳν δέ, ὡς Θεὸς μὴ δεόμενος, τῷ πεσόντι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ· ἐν ᾧ τὴν ἔχθραν κτείνας, ὑπερέχουσιν πάντα νοῦν, εἰρήνην χαρίζειται.
- Ἐ**χθροῦ ζοφώδους καὶ βεβορβορωμένου, ἰὼν καθάρσει Πνεύματος λελουμένοι, νέαν προσωρμίσθημεν ἀπλανῇ τρίβον, ἄγουσαν ἀπρόσιτον εἰς θυμηδίαν, μόνοις προσιτήν, οἷς Θεὸς κατηλλάγη.
- ς **Ἡ** φωνὴ τοῦ Λόγου, ὁ λύχνος τοῦ φωτός, ὁ ἑωσφόρος, ὁ τοῦ ἡλίου Πρόδρομος, ἐν τῇ ἐρήμῳ. Μετανοεῖτε, πᾶσι βοᾷ τοῖς λαοῖς, καὶ προκαθαίρεσθε· ἰδοὺ γὰρ πάρεστι Χριστός, ἐκ φθορᾶς τὸν κόσμον λυτρούμενος.



Ἦμερτὸν ἐξέφηνε σὺν πανολβίῳ, ἤχῳ Πατὴρ, ὃν γαστροὺς ἐξηρεύζατο. Ναί φησιν, οὗτος, συμφυῆς γόνος πέλων, φῶταυγος ἐξώρουσεν ἀνθρώπων γένους, Λόγος τέ μου ζῶν, καὶ βροτὸς προμηθεΐα.

ζ **Ν**έους εὐσεβεῖς, καμίνῳ πυρὸς προσομιλήσαντας, διασυρίζον πνεῦμα δρόσου, ἀβλαβεῖς διεφύλαξε, καὶ θείου ἀγγέλου συγκατάβασις· ὅθεν ἐν φλογὶ δροσιζόμενοι, εὐχαρίστως ἀνέμελπον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Ἦφλεξε ρείθρῳ τῶν δρακόντων τὰς χάρας, ὁ τῆς καμίνου τὴν μετάρσιον φλόγα, νέους φέρουσαν εὐσεβεῖς κατευνάσας, τὴν δυσκάθεκτον ἀχλὺν ἐξ ἁμαρτίας, ὅλην πλύνει δέ, τῇ δρόσῳ τοῦ Πνεύματος.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Μ**υστήριον παράδοξον, ἡ Βαβυλῶνος ἔδειξε κάμινος, πηγάσασα δρόσον, ὅτι ρείθροις ἔμελλεν, ἄυλον πῦρ εἰσδέχεσθαι ὁ Ἰορδάνης, καὶ στέγειν σαρκί, βαπτιζόμενον τὸν κτίστην, ὃν εὐλογοῦσι λαοί, καὶ ὑπερυψοῦσιν, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἦλευθέρα μὲν ἡ κτίσις γνωρίζεται. Υἱοὶ δὲ φωτός, οἱ πρὶν ἐσκοτισμένοι. Μόνος στενάζει, τοῦ σκότους ὁ προστάτης. Νῦν εὐλογεῖτω συντόνως τὸν αἴτιον, ἡ πρὶν τάλαινα τῶν ἐθνῶν παγκληρία.

| Ἀργαί                                  | Σύντομοι            |
|----------------------------------------|---------------------|
| Πέτρου Λαμπαδαρίου                     | Ἰωάννου Πρωτοψάλτου |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) |                     |

Σύντομοι

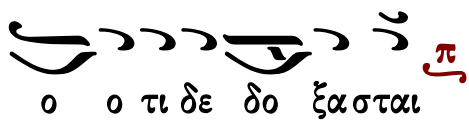
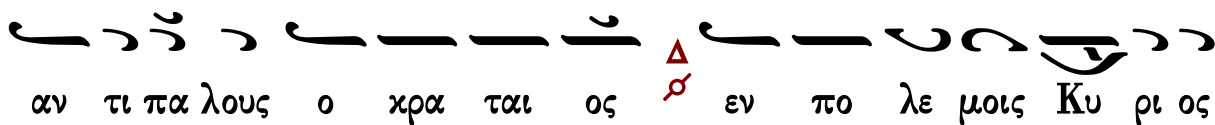
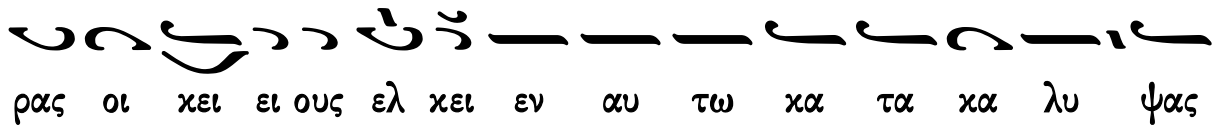
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι τῶν Θεοφανείων  
ὥδ' α'

Ἦχος Ψα

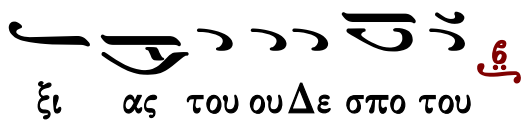
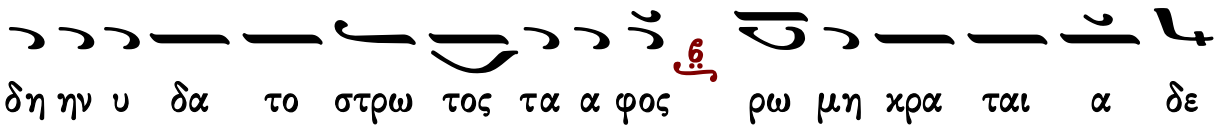
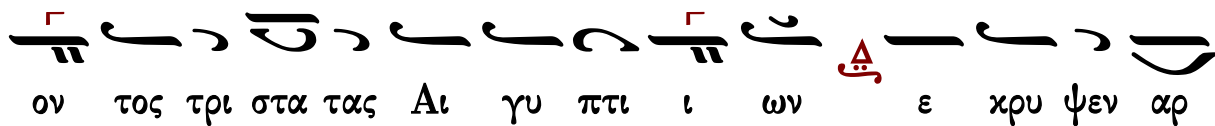
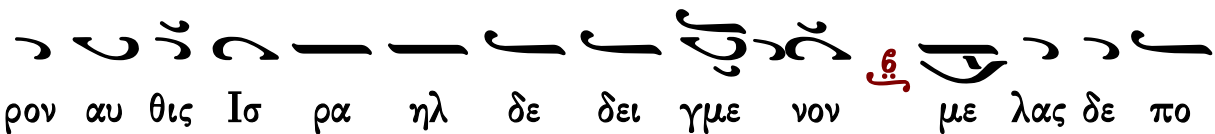
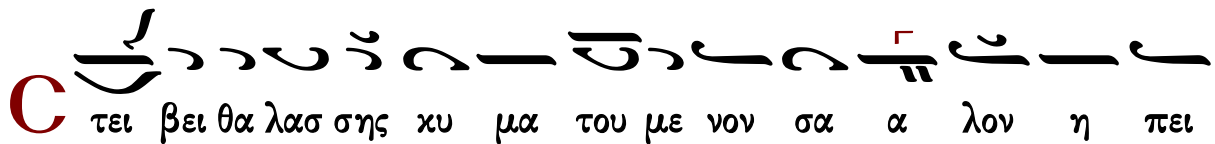
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.267#

Β υ θου α νε κα λυ ψε πυ θμε να και δι α ξη



**ἤχος**    **𐌆𐌿𐍂𐌰**    **B8**

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.268#



ἤχος  Πα

**I** σχυν ο δι δους τοις βα σι λευ σιν η μων Κυ ρι ος

και κε ρας χρι στων αυτου υ ψων **π** Παρ θε νου α α πο τι κτε

ται μο λει δε προς το βα πτι σμα δι ο πι στοι βο η

σω μεν ουκ ε στιν α γι ος ως ο Θε ος η μων **Δ** και ουκ

υ **π** ε στι δι και ος πλην σου Κυ ρι ε

ᾠδὴ γ' ἱαμβική

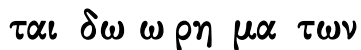
Ἦχος **Β**

**O** σοι παλαι ων εκ λε λυ με θα βρο ο χων **Δ** βο

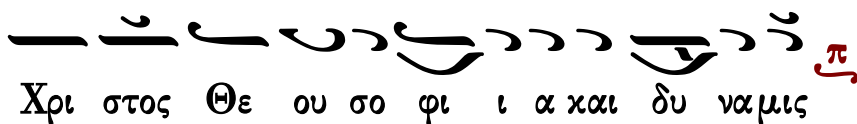
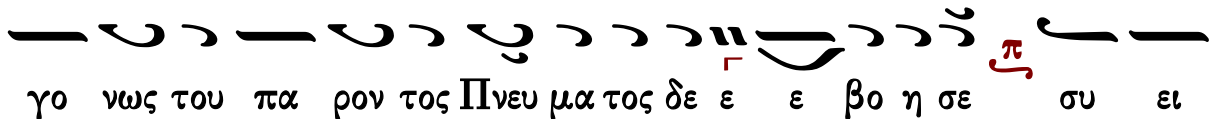
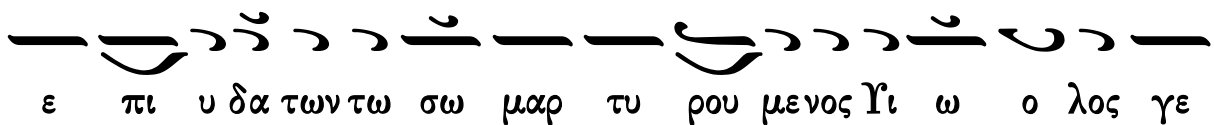
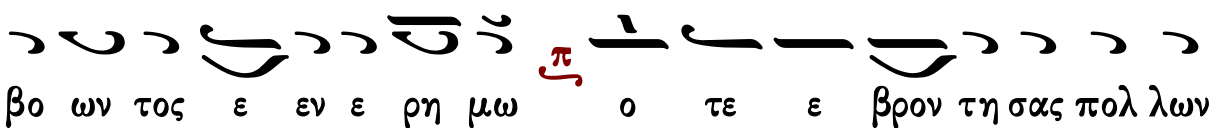
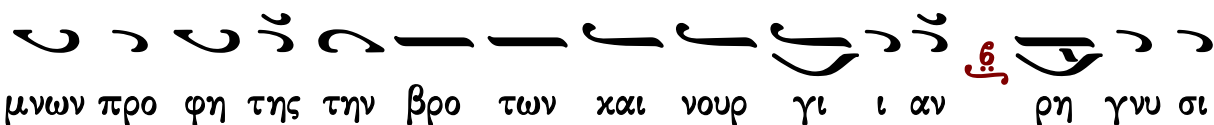
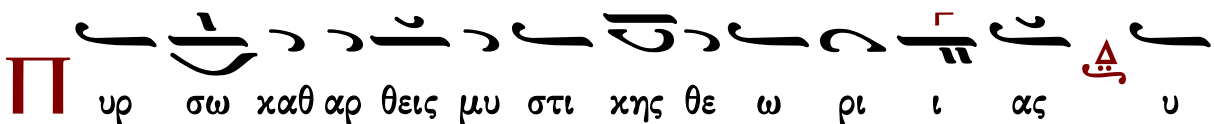
ρων λε ον των συν τε θλα σμε νων μυ υ λας α γαλ λι

ω ω μεν και πλα τυ νω μεν στο ο μα **Δ** Λο γω πλε

κοντες εκ λο γων με ε λω δι ας ω των προς η μας **χορὸς α'** η δε



Ἦχος Πά

[illegible]

γῆ ἡ ρυν Πνευματικὸς τοῦ με ἐν ἡν σαρξ

σιν ἐμφανίσαν ἀρχὴ τοῦ Λόγου ὧ των δύνα

στων χορὸς β' τα κράτησιν ἐτρίβη

ὥδ' ἐ' Ἦχος Πά

ἡ σους ὁ ζωῆς ἀρχηγὸς ἄλυσαι τὸ κα

τάκριμα ἡ κεῖ Ἀδάμ τοῦ πρωτοπλαστοῦ καθάρ

σιων δὲ ὡς Θεοοσμηδέομενος τω πέσον

τι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ἐν ὧ τὴν ἐ

χθρὰν κτείνει ἐν ἡν ὑπερεχούσαν πάντων ἐ

ρη ἡν ἡν χαρίζεται

Ε  
 χθρου ζο φω δους και βε βορ βο ρω με ε νου ι  
 ον κα θαρ σει Πνευ μα τος λε λου με ε νοι νε αν προ  
 σωρ μι σθη μεν α πλα νη τρι ι βον α γου σαν α  
 προ σι τον εις θυ μη δι αν μο νοις προ σι την χορὸς α'  
 οις Θε ος κα τηλ λα γη

Η  
 φω νη του Λο ο γου ο λυ χνος του φωτος ο  
 ε ω σφο ρος ο του Η λι ου προδρομος εν τη ε ρη  
 με τα νο ει τε πα σι βο α α τοις λα οις και

προ ο κα θαι ρε σθε ι δου γαρ παρ ε στι Χρι στος εκ

φθο ρας τον κο ο σμον λυ τρου μενος

ᾠδὴ ζ' ἱαμβική

Ἦχος Β̣

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ταυ

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

ζων χορὸς β' και βρο τος προ ο μη θει α

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος Π̣

Ν ε ους ευ σε βεις κα μι ι νου πυ ρος προσ ο ο μι λη

σαν τας δι α συ ρι ζον Πνευ μα δρο σου α βλα βεις δι ε

φυ λα ξε και θει ει ου Αγ γε λου συυγ κα τα βα σις

ο θεν εν φλο γι δρο σι ζο ο μενοι ευ χα ρι ι στω

ως αν ε μελ πον υ περ υ μνη τε ο των πα τερων Κυ ρι

ος και Θε ος ευ λο γητος ει

ᾠδὴ ζ' ἱαμβική

Ἦχος Β

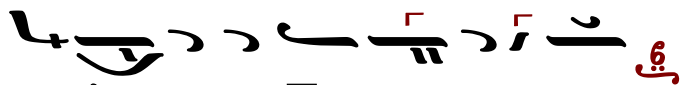
Ε φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

της κα μι ι ι νου την με тар σι ον φλο ο ο γα νε ους

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυ νει δε χορὸς α'

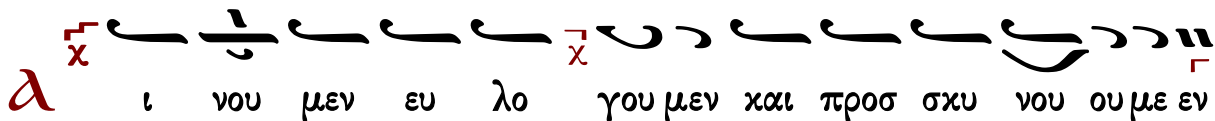




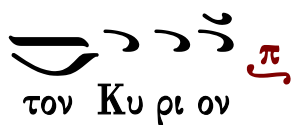
τη δρο σω του Πνε ευ μαα τος

ὥδῃ ἡ'

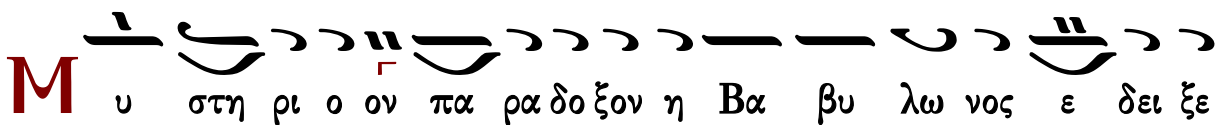
Ἦχος Πά



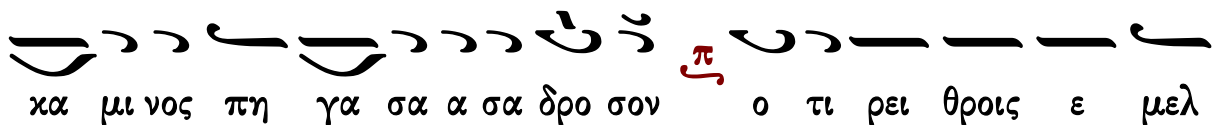
ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ σκυ νου ου με εν



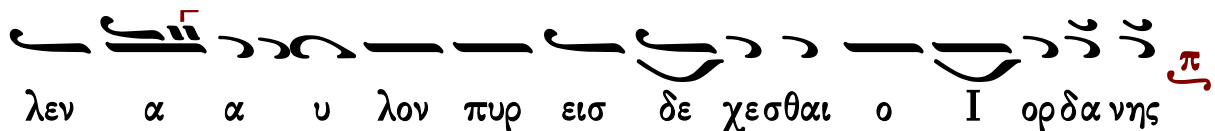
τον Κυ ρι ον



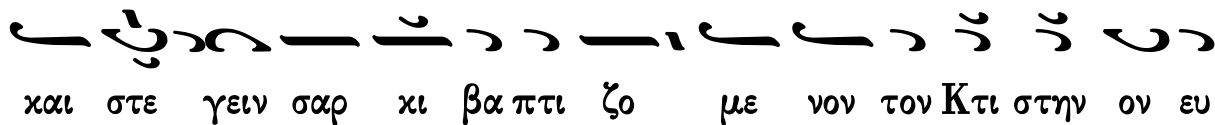
υ στη ρι ο ον πα ρα δο ξον η Βα βυ λω νος ε δει ξε



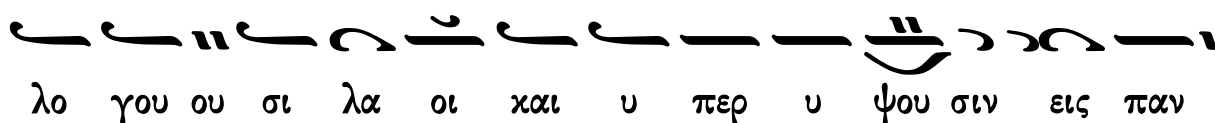
κα μι νος πη γα σα α σα δρο σον ο τι ρει θροις ε μελ



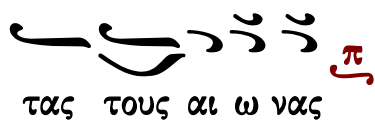
λεν α α υ λον πυρ εις δε χεσθαι ο Ι ορδα νης



και στε γειν σαρ κι βα πτι ζο με νον τον Κτι στην ον ευ



λο γου ου σι λα οι και υ περ υ ψου σιν εις παν



τας τους αι ω νας

ελευθερα μενην κτι ι ι σις γνωριζεται υι  
 οι δε φωτος οι πριν εσκοτισμε ενοιμο νος  
 στε να ζει του σκοτους ο προστααα της νυν ευλογει  
 τω συντο ο ο νως τον αιτιον η πριν ταιλα να  
 των εθνων πααγκληρι ι ααααα

Ἀργαῖ

Πέτρου Λαμπαδαρίου<sup>12</sup>

Καταβάσαι τῶν Θεοφανείων  
ᾠδὴ αʹ

Ἦχος  Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

**12** Εἰς τὰς καταβάσεις ταύτας ἐπεφέρονται ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων.

υ ψε πυ θμε ε ε ε ε ε να α α α και

δι ι α ξη η ρα ας οι χει ει ους ε ε ε ε ελ χει ει

εν αυ τω ω κα τα κα α λυ υ υ ψα ας α αν

τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ο ο ο ο ο

ος εν πο λε ε μοις Κυ υ ρι ι ος ο ο ο ο

τι δε ε δο ο ο ο ο ο ο ο ο ξα σται

ττει βει θα λα α ασ ση η η ης κυ υ υ μα α του

ου με ε ε νον σα α α α α λο ον η η πει

ει ρο ον α α αυ θι ι ι ις Ι ισ ρα α η ηλ δε ε ε

δει ει γμε ε ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο

ον το ο ο ο ο ος τρι στα ταας Αι αι αι γυ υ

πτι ι ι ι ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη η

η ην υ υ δα α το ο στρω ω ω το ος τα α α

α α φος ρω ω ω ω ω ω ω μη η η η κρα

ται αι α α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι

λε ευ σι εν η η μων Κυ ρι ο ος και αι κε ε ρας χρι

στων α αυτου υ υ ψων Παρ θε ε νου ου α α πο τι κτε

ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα δι ο πι στοι

οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε ε εν

ουκ ε ε στιν α γι ι ος ω ω ωως ο ο Θε

ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι και αι ο ο

ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Ο σοι οι οι οι πα λαι αι ω ω ωων ε ε εκ λε ε

λυ υ με ε ε θα βρο ο ο ο ο χω ων βο ρω

ω ων λε ε ο ο ον τω ω ων συν τε ε θα α σμε ε ε

νω ων μυ υ υ υ υ λας α γαλ λι ω ω ω ω

με ε ε ε ε ε εν και αι αι πλα α τυ υ νω ω ω

μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο

ον τε εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων

προς η η μα ας χορός α' η η δε ε ται δω ω ω ω

ω ρη η μα α α των

Ὡδὴ δ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε

ε βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μεις

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ σι γη

η η ρυ υ υ υ υν Πνευ μα α τι κρο ο ο του

με ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ

φαι νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο

ο ο γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ωων

δυ να α στω ων χορὸς β' τα κρα α τη συ υ υ

υν ε ε τρι ι ι βη

Ὁδὴ ε'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.124\*

η σους ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ υ



σαι αι το κα α τα κρι μα η η η χει Α α δα α αμ

του ου πρω ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων

δε ως Θε ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος

τω πε σο ο ον τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε

εν τω ω Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε

χθρα αν κτει ει ει νας υ περ ε ε ε ε χου ου σαν

παν τα α νουν ει ρη η η η νη ην χα α ρι ι ι

ι ι ι ι ι ζε ται

<sup>6</sup>Ε χθρου ου ζο ο φω ω ω δου ου ους και βε ε βο ορ

βο ο ο ρω με ε ε ε ε νου ου ι ο

ο ον κα α θα α αρ σει Πνευ μα α τος λε ε ε

λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν προ οσ ωρ

μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι ι ι ι

ι βο ον α γου σα α αν α α προσ ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορὸς α' οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

Ὁδὴς'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η<sup>χ</sup> φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ως φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ου ου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει τε

πα α α α σι βο ο α τοις λα οι οις και αι προ ο

κα θαι ρε σθε ε ι δου ου γα αρ πα α ρε στι

Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον λυ τρου με

νο ος

<sup>6</sup> μερ το ο ον ε εξ ε φη νε ε συ υ υν πα

α αν ολ βι ι ι ω η χω ω Πα α α τηρ ον

γα στρο ο ο ος ε εξ η η η ρε ευ ξα α α

το ναι φησιν ου ου ου το ο ο ο ο ο ος συ υ υμ

φυ υ ης γο νο ος πε ε ε ε ε λω ων φω ται

γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν α α αν θρω ω ω πω ων

γε ε ε νους Λο ο ο ο ο ο ο ο ο γο ο

ο ος τε μου ου ζω ων χορὸς β' και βρο τος προ ο ο ο

ο μη η θει ει ει α

Ὠδὴ ζ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ζο ο ο ον πνευ μα δρο σου ου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε καθ θει ου α αγ γε ε ε λου ου

συγ κα τα α βαα σις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε ε κτο

ον α χλυν ε εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι

ας ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει

δε ε ε χορὸς α' τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα α

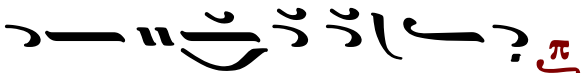
α το ος

ᾠδὴ η'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

**A**  ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

  
ου με εν τον Κυ ρι ο ον

**M**  υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

  
λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

  
α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

  
λεν α α α υ λο ον πυρ εισ δε χε ε σθαι αι

  
αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε

  
ε γει ει ει ν σα αρ κι βα πτι ι ζο ο ο με ε νο

  
ον τον κτι ι ι ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α

  
οι και υ περ υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν

τας του ους αι ω ω ω ω νας

τας του ους αι ω ω ω ω νας

Ε λευ θε ρα α α μεν η χτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σκο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

αι τι ι ι ι ον η πρι ι ι ι ι ι ιν τα

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α

αγ κλη η ρι ι ι α α α α α α

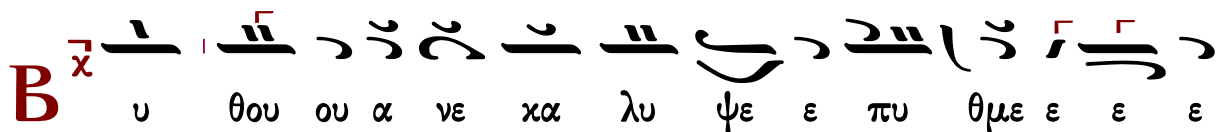


# Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)<sup>13</sup>

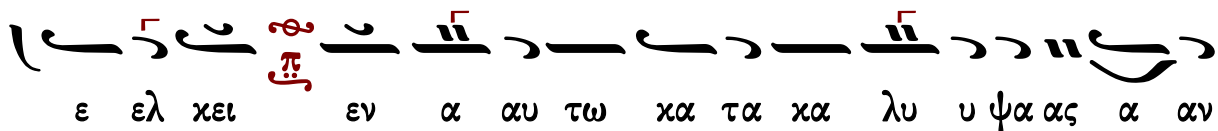
Καταβασίαι τῶν Θεοφανείων  
ὥδ' ἄ'

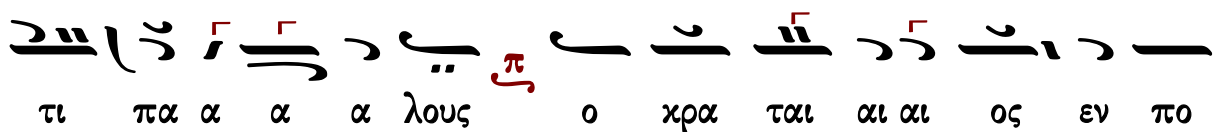
Ἦχος Ψα

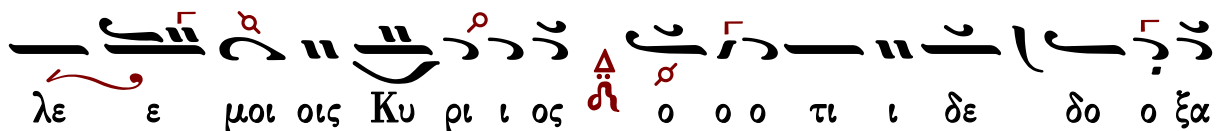
πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

Β    
υ θου ου α νε κα λυ ψε ε πυ θμε ε ε ε

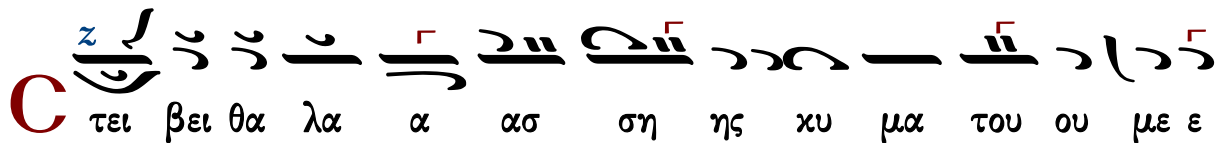
   
να και δι α ξη ρα ας οι οι οι χει ει ει ους ε

   
ε ελ χει εν α αυ τω κα τα κα λυ υ ψα ας α αν

   
τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ος εν πο

   
λε ε μοι οis Κυ ρι ι ος ο ο ο τι ι δε δο ο ξα

   
σται αι

C    
τει βει θα λα α ασ ση ης κυ μα του ου με ε

   
ε νον σα α α α α λο ον η η πει ει ρο

<sup>13</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινων γραμμῶν.

ον α α αυ θι ις Ισ ρα η ηλ δε ε ε δει ει γμε ε

ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο ο ο ον

το ος τρι στα ταας Αι αι αι γυ υ πτι ι ι ι

ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη ην υ δα το

ο στρω ω ω το ος τα α α α α φος ρω ω μη

η κρα ται αι α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λευ

σιν η μω ω ωων Κυ υ ρι ι ι ος και αι

κε ε ρας χρι στων α αυ του υ υ ψων Παρ θε ε νου ου

α α πο τι κτε ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα

δι ο πι στοι οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε

ε ε ε εν ουκ ε ε στιν α γι ι ος ως ο

Θε ο ο ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι

και αι ο ο ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Ο σοι οι πα λαι αι ων εκ λε λυ υ με ε ε θα βρο

ο ο ο ο χω ων βο ρω ω ων λε ε ο ο ον

των συν τε θλα σμε ε ε νω ων μυ υ υ υ υ

λας α γαλ λι ω ω ω μεν και πλα τυ υ νω ω

ω μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο ο ν

τες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω τωων προς η η μα ας χορὸς α' η η

δε ε ται δω ω ω ω ω ρη η μα α α των

Ὡδὴ δ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ω ν

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε

ε βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

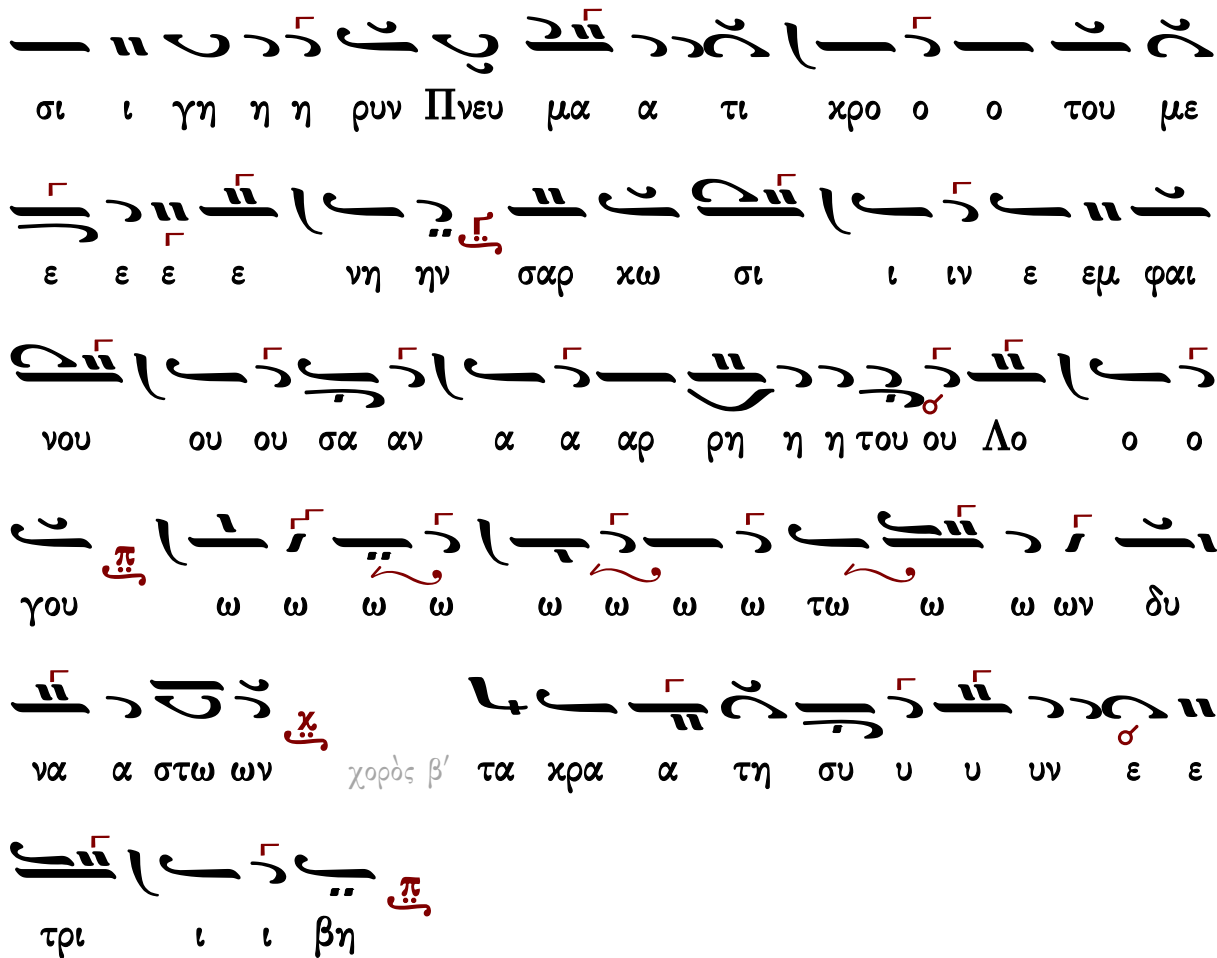
ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

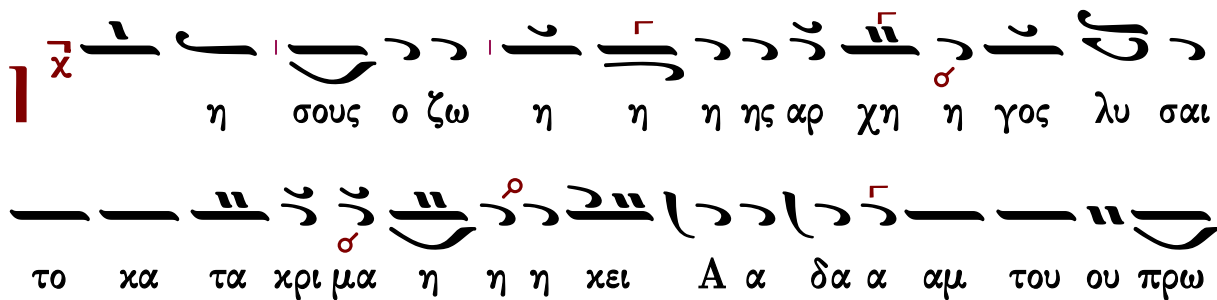
των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ υ



Ὡδὴ ε΄

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.124\*



ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ω ν δε ως Θε

ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος τω πε

σο ο ο ν τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε εν τω ω

Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε χθρα αν κτει

ει ει νας υ περ ε χου σαν παν τα α νουν ει ρη η η

η η η νην χα ρι ι ι ι ζε ε ε ε ε ται

<sup>6</sup>  
Ε χθρου ου ζο ο φω ω ω δους και βε βορ βο ρω με

ε νου ου ι ι ι ον κα θαρ σει Πνευ μα α τος

λε ε ε λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν

προ οσ ωρ μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι

ι ι ι ι βο ον α γου σαν α προσ ι ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορὸς α' οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

Ὡδὴς'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ως φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ου ου ου Προδρο ο μο ος ε ε



εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει ει ει

ει τε πα σι βο α α α α τοις λα α οις και προ

κα θαι αι αι ρε ε ε ε σθε ι δου ου γαρ πα ρε ε

στι ι ι Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον

λυ τρου με νο ος

6  
μερ το ο ον ε εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ι

ω ω η χω ω Πα α α τηρ ον γα στρο ο ο ος

ε εξ η η η ρε ευ ξα α α το ναι φη σι

ιν ου ου τος συμ φυ η ης γο νο ος πε ε ε ε ε

λω ων φω ταυ γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν

α α αν θρω ω ω πω ων γε ε ε νους Λο ο

ο ο ο ο ο ο γο ο ο ος τε μου ου ζω ων χορός

β' και βρο τος προ ο ο ο ο μη η θει ει ει α

Ὡδή ζ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ι ι ζον πνευ μα δρο ο ο σου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε και θει ου α αγ γε ε ε λου συγ

κα α τα βα α σι ις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

— σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε εκτον α

χ λ υ υ ν   ε ξ   α   α   α   μα   αρ   τι   ι   ι   ι   ι   α ς

ο   ο   ο   ο   λ η   η   η   η ν   π λ υ   υ   ν ει   ει   ει   δε   ε

ε   χο ρὸς α'   τη   η   δ ρ ο   σω   του Π νε   ε   ε   ευ   μα   α   α   το

ος

Ὡδὴ η'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

ι   ν ο υ   μ εν   ευ   λ ο   γ ο υ μ εν   και   π ρ ο σ   κυ   ν ο υ   ο υ ο υ

ο υ   μ ε   εν   τον Κυ ρι   ο   ο ν

υ   σ τη   η   ρ ι   ι   ο   ο ν   πα ρ α δο   ξ ο ο ν   η Β α   β υ

λ ω   ν ο ο   ο ς   ε   δ ει   ξ ε   ε   ε   κα   μι   ι ν ο ς   π η   γ α   σα   α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εισ δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε ε

γει ειν σαρ κι ι βα πτι ζο ο με νο ον τον κτι ι ι

ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α οι και υ περ

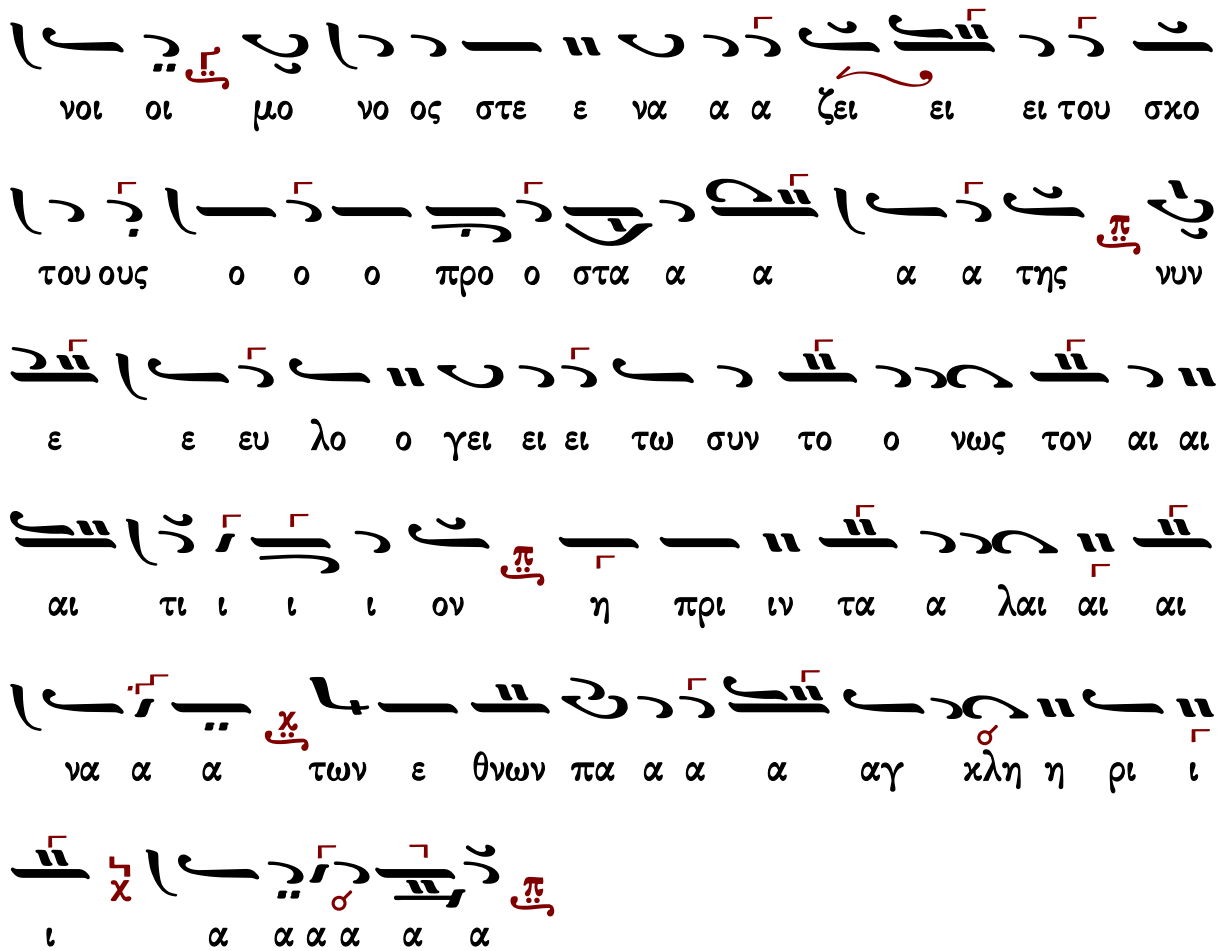
υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν τας του ους αι ω ω

ω ω νας

Ε λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε



## ὥδῃ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὥδῃ θ' κανὼν α'

ἤχος β'

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

**Ἀ**πορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἁγίαν, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὑμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐν Ἰορδάνῃ ἐλθόντα βαπτισθῆναι.

**Δ**αυτῷ πάρεσο, Πνεύματι τοῖς φωτιζομένοις· νῦν προσέλθετε, ἃς πρὸς Θεόν, ἐν πίστει λέγων φωτίσθητε· οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξεν Ἀδὰμ ἐν πτώσει· καὶ γὰρ αὐτοῦ εἰσήκουσε Κύριος ἐλθών, ρέιθροις τοῦ Ἰορδάνου, φθαρέντα δὲ ἀνεκαίνισεν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ὑπὸ Προδρόμου τὸ βάπτισμα λαβόντα.

Ὁ Ἡσαΐας λούσασθε, καὶ καθάρθητε φάσκει· τὰς πονηρίας ἔναντι, ἀφέλεσθε Κυρίου· οἱ διψῶντες, ὕδωρ ἐπὶ ζῶν πορεύεσθε· ῥανεῖ γὰρ ὕδωρ καινοποιὸν Χριστός, τοῖς προστρέχουσιν αὐτῷ ἐν πίστει, καὶ πρὸς ζωὴν τὴν ἀγήρω, βαπτίζει Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς πατρώας φωνῆς μαρτυρηθέντα.

Συντηρώμεθα χάριτι, πιστοὶ καὶ σφραγιδι· ὥς γὰρ ὄλεθρον ἔφυγον, φλιᾶς Ἑβραῖοι πάλαι αἵμαχθείσης· οὕτω καὶ ἡμῖν, ἐξόδιον τὸ θεῖον τοῦτο, τῆς παλιγγενεσίας λουτήριον ἔσται· ἔνθεν καὶ τῆς Τριάδος, ὁψόμεθα φῶς τὸ ἄδυτον.

ὥδῃ θ' κανὼν β'

ἦχος β'

Σήμερον ὁ Δεσπότης, κλίνει τὸν αὐχένα χειρὶ τῇ τοῦ Προδρόμου.

Ὡ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάνταγνε, Μῆτερ εὐλογημένη· δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Σήμερον Ἰωάννης, βαπτίζει τὸν Δεσπότην ἐν ρεῖθροις Ἰορδάνου. ✠

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαίρετου, Θεότητος τὸ κράτος.

Ἰδμεν τὰ Μωσεῖ τῇ βάτῃ δεδειγμένα, δεῦρο ξένοις, θεσμοῖσιν ἐξειργασμένα. Ὡς γὰρ σέσωσται, πυρφοροῦσα Παρθένος, σελασφόρον τεκοῦσα τὸν εὐεργέτην, Ἰορδάνου τε, ρεῖθρα προσδεδεγμένα.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Χρίεις τελειῶν, τὴν βρότειον οὐσίαν, ἀναξ ἀναρχε, Πνεύματος κοινωνία, ῥοαῖς ἀχράντοις, ἐκκαθάρας καὶ σκότους, ἰσχὺν θριαμβεύσας τε, τὴν ἐπηρμένην, νῦν εἰς ἄληκτον, ἐξαμείβειαι βίον.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ

ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε

ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρ ει πα α σα γ λ ω σ σα ευ φ η μ ει ει ν π ρ ο ς α ξ ι α ν

ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ ς κ αι υ π ε ρ κ ο σ μ ι ο ς υ μ ν ει ν σ ε Θ ε

ε ο τ ο κ ε ο μ ω ς α γ α θ η υ π α ρ χ ο υ σα τ η ν π ι σ τ ι ν

δ ε χ ο υ κ αι γ α ρ τ ο ν π ο θ ο ν ο ι δ α ς τ ο ν ε ν θ ε ο ν η μ ω ν σ υ

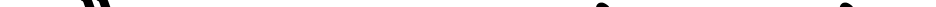
υ γ α ρ χ ρ ι σ τ ι α ν ω ν ει π ρ ο σ τ α τ ι ς σ ε ε μ ε γ α λ υ ν ο μ ε ν

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ ο ν ε ν Ι ο ρ δ α α

ν η ε λ θ ο ν τ α β α π τ ι σ θ η ν αι

Δ α β ι δ πα ρ ε σ ο π ν ε υ μ α τ ι τ ο ι ς φ ω τ ι ι ζ ο μ ε ν ο ι ς




  
 νυν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω ων



πτωσει και γαρ αυ του εισ η κου σε Κυ ρι ος ελ θων


  
 ρει ει θροις του Ι ορδανου φθα ρε εν τα δε αν ε και νι σεν π



**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ ο ν υ π ο π ρ ο δ ρ ο μ ο υ τ ο


  
 βα    πτι   σμα   λαβον   τα   π

Ο Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα σκει

τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε Κυ ρι

ου  $\pi$  οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε σθε  $\pi$


 ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος

χου σιν αυ τω εν πι στει <sup>π</sup> και προς ζω ην την α γη ρω

βα πτι ζει Πνευ μα τι <sup>π</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεν τα <sup>π</sup>

**Σ** υν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σφρα γι δι <sup>π</sup>

ως γαρ ο λε θρον ε φυ γον φλι ας Εβραι οι πα λαι αι

αι μα χθει σης ου τω και η μιν ε ξο δι ον το θει ον του

<sup>π</sup> το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε σται <sup>π</sup>

ε ενθεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυ τον <sup>π</sup>

Κανὼν 6'

C η με ρον ο Δε σπο τη ης κλι νει τον αυ χε ε να

χει ρι τη του Προδρομου π Β8

ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των Δ

νυμ φη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα

ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον φε ρον τες

υ μνον ευ χα ρι στι ας π Β8

C η με ρον Ι ω αν νης βα πτι ζει τον Δε σπο την εν

ρει θροις Ι ορδα νου π Β8

Ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα

ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον φε ρον τες

υ μνον ευ χα ρι στι ας

Πα

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε του Θε ο τη τος τοκρατος

Β

Ι δ μεν τα Μω σει τη βα τω δε δει γμε ε να δευ ρο

ξέ νοις θε σμοι σιν ε ξει ειρ γα σμε να ως γαρ σε σω σται

πυρ φο ρου σα Παρ θε ε νος σε λα σφο ρον τε κου σα

τον ευ ερ γε την Ι ορ δα νου τε ρει θρα προσ

δε δε γμε να Πα

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της καταρας π ΒϷ

Χ ρι εις τελει ων την βρο τει ον ου σι ι αν α

ναξ α ναρ χε Πνευ μα τος κοι νω νι ι α ρο αις α χρα

αν τοις εκ κα θα ρας και σκο ο τους ι σχυν θρι αμ

βευ σας τε την ε ε πηρ με νην νυν εις α λη κτον εξ α μει

βε ε αι βι ον

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανὼν α'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.130\*

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου την τι μι ω τε ραν των α

νω στρα τευ μα των

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φη μειν προς α ξι

αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν

σε Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την

πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον

η μων συ υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε

ε μεγα λυ νομεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα νη ελ

θον τα βα πτι σθη ναι

Δ α βιδ πα ρε σο Πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις

νυν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω

ων φω τι σθη τε ου τος ο πτω χος ε κε κρα ξεν Α

δαμ εν πτω σει και γαρ αυ του εις η κου σε Κυ ρι ος

ελ θων ρει ει θροις του Ι ορ δα νου φθα ρεν τα δε ε α

νε και νι σε π

νε και νι σε

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον υ πο Προδρο ο μου

το βα πτι σμα λαβον τα π

Ο Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα

σκει π τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε

Κυ ρι ου π οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε

σθε π ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις

προσ τρε χου σιν αυ τω εν πι στει π και προς ζω ην την

α γη ρω βα πτι ζει Πνευ μα τι π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης



μαρ τυ ρηθεν τα 

**C**υν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σρα γι δι 

ως γαρ ο λεθρον ε φυγον φλι ας Ε βραι οι πα λαι αι 

αι μα χθει σης  ου τω και η μιν εξ ο δι ον το θει ον

του το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε 

σται  ε ενθεν και της Τρι α δος ο ψο μεθαφως το α δυ

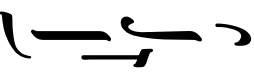
  
τον

## Κανών 6'

ἱαμβικός

Ἦχος  Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.131\*

**C**η με ρον ο Δε σπο τη ης κλι νει τον αυ χε ε να 

χει ρι τη του Προδρομου

ων υπερ νουν του το κου σου θαυμα α των

νυμφη παν α γνε Μητερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης

τυ χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε

πα ξι ον κρο του μεν ως ε ευερ γε τη δω ρον φε ρον

τες υ μνον ευ χα ρι στι ας

η με ρον Ι ω αν νης βα πτι ζει τον Δε σπο την εν

ρει θροις Ι ορδα νου το ιδιο

ων υπερ νουν του το κου σου θαυμα α των

νυμφη παν α γνε Μητερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης

τυ χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε

πα ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον φε ρον

τες υ μνον ευ χα ρι στι ας

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε του Θε ο τη τος το κρα

τος

δμεν τα Μω σει τη βα τω δε δει γμε ε να δευ

ρο ξε νοις θε σμοι σιν εξ ει ειρ γα σμε να ως γαρ σε

σω σται πυρ φο ρου σα παρ θε ε νος σε λα σφο ρον

τε κου σα τον ε ευ ερ γε την Ι ορ δα νου τε ρει

θρα προσ δε δε γμε να

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της καταρας

Χ ρι εις τελει ων την βρο τει ον ου σι ι αν

α ναξ α ναρχε Πνευ μα τος κοι νω νι ι α ρο αις α

χραν τοις εκ κα θα α ρας και σκο τους ι σχυν θρι αμ

βευ σας τε την ε ε πηρ με νην νυν εις α λη κτον εξ

α    μεις    βε    ε    αι    βι    ον

## Καταβασία Θ' φδῆς

ἦχος β'

Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὑμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Ὡ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάνταγνε, Μῆτερ εὐλογημένη· δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Ἀργαί

Σύντομοι

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ῥδῆ θ'

Ἦχος Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν    ψ υ χ η    μ ο υ    τ η ν    τ ι    μ ι    ω    τ ε  
ρ α ν    τ ω ν    α    ν ω    σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φημει εις προς α ξι αν

ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν σε Θε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στιν

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων συ

υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα λυ νο μεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της καταρας

ἱαμβική

Ἦχος Β̣

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.285#

Ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

  
 χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα  
  
 ξι ον κρο του μεν ως ε ευερ γε τη δω ρον φε ρον τες  
  
 υ μνον ευ χα ρι στι ι α α α ας

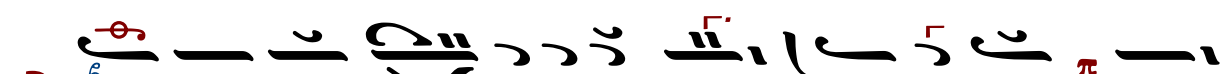
Ἄεγν

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

  
**Μ** ε γα α λυ νον ψυ χη η η η η μου  
  
 ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρα αν  
  
 και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ραν τω ων α α νω  
  
 στρα α τευ μα α α α των  
  
**Α** πο ρει πα α α σα γλω ω ωσ σα ε

ευ φη η μει ει ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν

ι λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ

πε ερ κο σμι ι ος υ υ μνει ει εν σε ε Θε ε ο

το ο ο ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου

σα α τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα

αρ τον πο θον οι οι οι οι δα ας το ον ε ε εν

θε ε ε ο ον η η η μων συ υ γαρ Χρι

στι α α νων ει ει προ ο στα α τισ σε ε ε με ε γα λυ

νο με εν

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η η μου



ου τη ην λυ τρω ω ω σα α με ε ε ε νη ην η

η μα ας εκ τη ης κα τα α α α ρας

ἱαμβική

Ἦχος Β

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.55#

ω τω ω ω ων υ υ υ πε ερ νου ου ου ουν του

το κου σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ

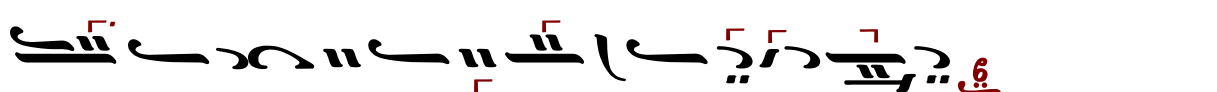
υ υμ φη η πα αν α α α γνε ε ε Μη τε

ερ ευ λο ο ο γη η με ε ε ε ε νη δι

ης τυ χο ο ο ον τε ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε

λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α ας ε ε

πα ξι ον κρο ο του ου ου με εν ω ω ως ε ε ε ευ

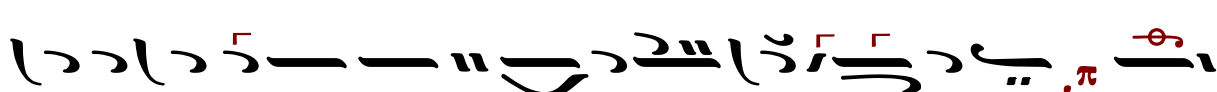
  
 ἐρ γε ε ε τη δω ω ω ω ρο ο ο ον φε  
  
 ε ρο ο ον τε ε ες υ υ μνο ον ευ χα α α  
  
 α α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

## Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

  
**Μ** ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου  
  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω  
  
 στρα α τευ μα α α α των  
  
**Α** πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ  
  
 φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι

λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

κο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι

ι τη του ου Προδρο ο ο ο μου

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πεερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυμα α α α α τω ων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τεερ ευ λο ο ο

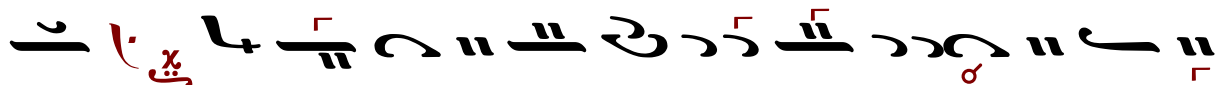
γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ο ο ον τε

ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε λου ους σω ω ω τη

ρι ι ι ι ι α ας ε ε πα ξι ι ο ον χρο ο του

ου ου με εν ω ω ως ε ε ευ εερ γε ε ε τη

δω ω ω ω ρο ο ο ον γε ε ρο ο ον τε ε

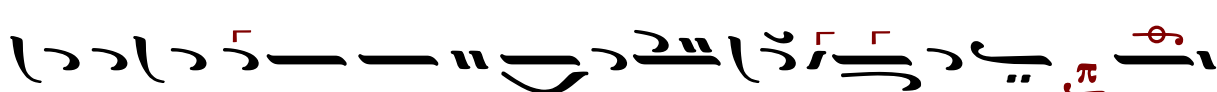
  
 ες υ υ μνο ον ευ χα α α α α ρι ι στι ι  
  
 ι α α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

  
 Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου  
  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω  
  
 στρα α τευ μα α α α των  
  
 Α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ  
  
 φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι  
  
 λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

χο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι

ι τη του ου Προδρο ο ο ο μου

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουν του το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ον τε

ες παν τε λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι α

ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του ουου με εν ω ω

ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη δω ω ω ρο ον φε

ε ρο ο ον τε ες υ υ μνο ον ευ χα α α α

α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

# Τῶν Θεοφανείων, πεζαί

2-5 Ἰανουαρίου

## ἤχος β'

- α **Β**υθοῦ ἀνεκάλυψε πυθμένα, καὶ διὰ ξηρᾶς οἰκείους ἔλκει, ἐν αὐτῷ κατακαλύψας ἀντιπάλους, ὁ κραταιός, ἐν πολέμοις Κύριος, ὅτι δεδοξασται.
- γ **Ἰ**σχὺν ὁ διδούς, τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν Κύριος, καὶ κέρας χρηστῶν αὐτοῦ ὑψῶν, Παρθένου ἀποτίκτεται, μολεῖ δὲ πρὸς τὸ βάπτισμα· διὸ πιστοὶ βοήσωμεν· οὐκ ἔστιν ἅγιος, ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος, πλήν σου Κύριε.
- δ **Ἀ**κήκοε Κύριε φωνῆς σου, ὃν εἶπας· φωνὴ βοῶντος ἐν ἐρήμῳ ὅτε ἐβρόντησας πολλῶν ἐπὶ ὑδάτων, τῷ σῷ μαρτυρούμενος Ὡς, ὅλος γεγωνὼς τοῦ παρόντος, Πνεύματος δὲ ἐβόησε· σὺ εἰ Χριστός, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις.
- ε **Ἰ**ησοῦς ὁ ζωῆς ἀρχηγός, λῦσαι τὸ κατάκριμα ἥκει, Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλάστου· καθαρσίῳν δέ, ὡς Θεὸς μὴ δεόμενος, τῷ πεσόντι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ· ἐν ᾧ τὴν ἔχθραν κτείνας, ὑπερέχουσαν πάντα νοῦν, εἰρήνην χαρίζεται.
- ς **Ἡ** φωνὴ τοῦ Λόγου, ὁ λύχνος τοῦ φωτός, ὁ ἑωσφόρος, ὁ τοῦ ἡλίου Πρόδρομος, ἐν τῇ ἐρήμῳ. Μετανοεῖτε, πᾶσι βοᾷ τοῖς λαοῖς, καὶ προκαθαίρεσθε· ἰδοὺ γὰρ πάρεστι Χριστός, ἐκ φθορᾶς τὸν κόσμον λυτρούμενος.
- ζ **Ν**έους εὐσεβεῖς, καμίνῳ πυρὸς προσομιλήσαντας, διασυρίζον πνεῦμα δρόσου, ἀβλαβεῖς διεφύλαξε, καὶ θείου ἀγγέλου συγκατάβασις· ὅθεν ἐν φλογὶ δροσιζόμενοι, εὐχαρίστως ἀνέμελπον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- η **Μ**υστήριον παράδοξον, ἡ Βαβυλῶνος ἔδειξε κάμιнос, πηγάσασα ὁρόσον, ὅτι ρεῖθροις ἔμελλεν, αὔλον πῦρ εἰσδέχεσθαι ὁ Ἰορδάνης, καὶ στέγειν σαρκί, βαπτιζόμενον τὸν κτίστην, ὃν εὐλογοῦσι λαοί, καὶ ὑπερυψοῦσιν, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

## Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου



**Β** υ θου α νε κα λυ ψε πυ θμε να <sup>π</sup> και δι α ξη

ρας οι χει ει ους ελ χει εν αυ τω κα τα κα λυ ψας

αν τι πα λους ο κρα ται ος <sup>Δ</sup> εν πο λε μοις Κυ ρι ος

ο ο τι δε δο ξα σται <sup>π</sup>

ὠδὴ γ'

**Ι** σχυν ο δι δους τοις βα σι λευ σιν η μων Κυ ρι ος

και κε ρας χρι στων αυ του υ ψων <sup>π</sup> Παρ θε νου α α πο τι κτε

ται μο λει δε προς το βα πτι σμα δι ο πι στοι βο η

σω μεν ουκ ε στιν α γι ος ως ο Θε ος η μων <sup>Δ</sup> <sup>σ</sup> και

ουκ ε στι δι και ος πλην σου Κυ ρι ε <sup>π</sup>

ὠδὴ δ'

Α κη κο ε Κυ ρι ε φω νη ης σου ον ει πας φω νη

βο ων τος ε εν ε ρη μω ο τε ε βρον τη σας πολ λων

ε πι υ δα των τω σω μαρ τυ ρου μενος Υι ω ο λος γε

γο νως του πα ρον τος Πνευ ματος δε ε ε βο η σε συ ει

Χρι στος Θε ου σο φι ι α και δυ ναμεις ὠδὴ ε΄

η σους ο ζω η ης αρ χη γος Δ ρ λυ σαι το κα

τα κρι μα η κει Α δαμ του πρω το πλα στου κα θαρ

σι ων δε ως Θε ο ος μη δε ο μενος τω πε σον

τι κα θαι ρε ται εν τω Ι ορ δα νη εν ω την ε

χθραν κτει ει ει νας Δ ρ υ περ ε ε χου σαν παν τανουν ει

ρη η νην χα ρι ζεται

ὥδῃ στ'

Η φω νη του Λο ο γου ο λυ χνος του φω τος ο

ε ω σφο ρος ο του Η λι ου προ δρο μος εν τη ε ρη

μω με τα νο ει τε πα σι βο α α τοις λα οις και

προ ο κα θαι ρε σθε ι δου γαρ παρ ε στι Χρι στος εκ

φθο ρας τον κο ο σμον λυ τρου μενος

ὥδῃ ζ'

Ν ε ους ευ σε βεις κα μι ι νου πυ ρος προσ ο ο μι λη

σαν τας δι α συ ρι ζον Πνευ μα δρο σου α βλα βεις δι ε

φυ λα ξε και θει ει ου Αγ γε λου συ υγ κα τα βα σις

ο θεν εν φλο γι δρο σι ζο ο μενοι ευ χα ρι ι στως

ως αν εμελπον υ περ υ μνη τε ο των πατερων Κυ ρι

ος και Θε ος ευ λο γητος ει

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γουμεν και προσ σκυ νου ουμε εν

τον Κυ ρι ον

Μ υ στη ρι ο ον πα ρα δο ξον η Βα βυ λω νος ε δει ξε

κα μι νος πη γα σα α σα δρο σον ο τι ρει θροις ε μελ

λεν α α υ λον πυρ εις δε χε σθαι ο Ι ορ δα

νης και στε γειν σαρ κι βα πτι ζο με νον τον Κτι στην

ον ευ λο γου ου σι λα οι και υ περ υ ψου σιν εις

παν τας τους αι ω ω να α ας

# Ἀργαί

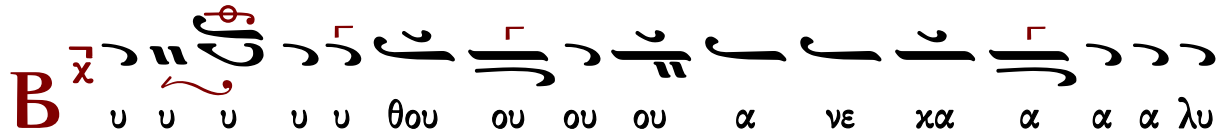
## Πέτρου Λαμπαδαρίου

Θίς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

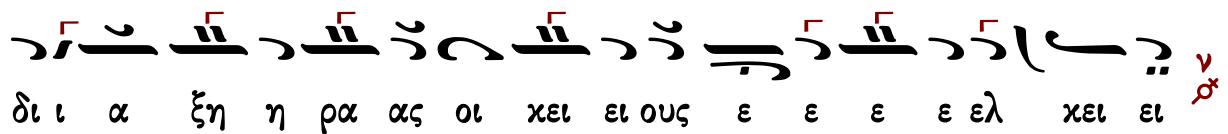
Ῥδὴ α'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

Β   
υ υ υ υ υ θου ου ου ου α νε κα α α α λυ

  
υ ψε πυ θμε ε ε ε ε ε να α α α και

  
δι ι α ξη η ρα ας οι χει ει ους ε ε ε ε ελ χει ει

  
εν αυ τω ω κα τα κα α λυ υ υ ψα ας α αν

  
τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ο ο ο ο ο

  
ος εν πο λε ε μοις Κυ υ ρι ι ος ο ο ο ο

  
τι δε ε δο ο ο ο ο ο ο ο ο ξα σται

Ῥδὴ γ'

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λε

ευ σι ιν η η μων Κυ ρι ο ος και αι κε ε ρας χρι στων

α αυ του υ υ ψων Παρ θε ε νου ου α α πο τι κτε

ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα δι ο πι στοι

οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε ε εν

ουκ ε ε στιν α γι ι ος ω ω ω ως ο ο Θε

ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι και αι ο ο

ος χορὸς ἀ' πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η η

ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων το ος

ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε ε

βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μεις

Ὁδὴ ε΄

η σουσ ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ υ

σαι αι το κα α τα κρι μα η η η κει Α α δα α αμ

του ου πρω ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων

δε ως Θε ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος

τω πε σο ο ον τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε

εν τω ω Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε

χθρα αν κτει ει ει νας υ περ ε ε ε ε χου ου σαν

παν τα α νουν ει ρη η η η νη ην χα α ρι ι ι

ι ι ι ι ι ζε ται

Ὡδὴς'

**Η** φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ου ου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει τε



πα α α α σι βο ο α τοις λα οι οις και αι προ ο

κα θαι ρε σθε ε ι δου ου γαρ πα α ρε στι

Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον λυ τρου με

νο ος

Ὡδὴ ζ'

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ζο ο ο ον πνευ μα δρο σου ου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυ λα ξε ε καθ θει ου α αγ γε ε ε λου ου

συγ κα τα α βαα σις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ὡδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εισ δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε

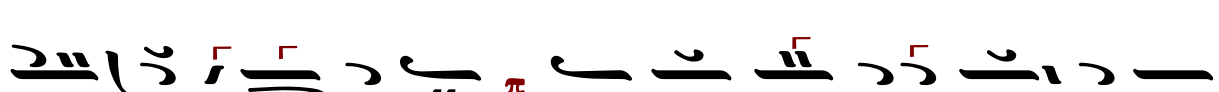
  
 ε γει ει ει ν σα αρ κι βα πτι ι ζο ο ο με ε νο  
  
 ον τον κτι ι ι ι στήν ον ευ λο γου ου ου σι λα α  
  
 οι και υ περ υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν  
  
 τας του ους αι ω ω ω ω να α α ας

## Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

θίς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινων γραμμῶν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

Ὡδὴ α' **Ἦχος Πά**  

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.119\*

**Β**   
 υ θου ου α νε κα λυ ψε ε πυ θμε ε ε ε  
  
 να και δι α ξη ρα ας οι οι οι χει ει ει ους ε  
  
 ε ελ χει εν α αυ τω κα τα κα λυ υ ψα ας α αν  
  
 τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ος εν πο

λε ε μοι οἰς Κυ ρι ι ος ο ο ο τι ι δε δο ο ξα

σται αι

Ὡδὴ γ'

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λευ

σιν η μω ω ωων Κυ υ ρι ι ι ος και αι

κε ε ρας χρι στων α αυ του υ υ ψων Παρ θε ε νου ου

α α πο τι κτε ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα

δι ο πι στοι οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε

ε ε ε εν ουκ ε ε στιν α γι ι ος ως ο

Θε ο ο ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι

και αι ο ο ος χορὸς ἀ' πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η η

ης σου ον ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων το ος

ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε ε

βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νως του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μεις

η σους ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ σαι το

κα τα κρι μα η η η χει Α α δα α αμ του ου πρω ω

το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ω ν δε ως Θε

ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος τω πε

σο ο ο ν τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε εν τω ω

Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε χθρα αν κτει

ει ει νας υ περ ε χου σαν παν τα α νουν ει ρη η η

η η η νην χα ρι ι ι ι ζε ε ε ε ται

Ὁδὴς'

Η φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει ει ει

ει τε πα σι βο α α α α τοις λα α οις και προ

κα θαι αι αι ρε ε ε ε σθε ι δου ου γαρ πα ρε ε

στι ι ι Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον

λυ τρου με νο ος

Ὁδὴ ζ'

**Ν** ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ι ι ζον πνευ μα δρο ο ο σου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε και θει ου α αγ γε ε ε λου συγ

κα α τα βα α σι ις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ὡδή η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ



λεν α α α υ λο ον πυρ εισ δε χε ε σθαι αι  
 αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε ε  
 γει ειν σαρ κι ι βα πτι ζο ο με νο ον τον κτι ι ι  
 ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α οι και υ περ  
 υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν τας του ους αι ω ω  
 ω ω να α α ας

## ὥδῃ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὥδῃ θ' κανὼν α'

ἤχος β'

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

**Ἄ**πορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἁγίαν, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐν Ἰορδάνῃ ἐλθόντα βαπτισθῆναι.

**Δ**αβὶδ πάρεσο, Πνεύματι τοῖς φωτιζομένοις· νῦν προσέλθετε, ἅδε πρὸς Θεόν, ἐν πίστει λέγων φωτίσθητε· οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξεν Ἀδὰμ ἐν πτώσει· καὶ γὰρ αὐτοῦ εἰσήκουσε Κύριος ἐλθών, ρέιθροις τοῦ Ἰορδάνου, φθαρέντα δὲ ἀνεκαίνισεν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ὑπὸ Προδρόμου τὸ βάπτισμα λαβόντα.

Ὁ Ἡσαΐας λούσασθε, καὶ καθάρθητε φάσκει· τὰς πονηρίας ἔναντι, ἀφέλεσθε Κυρίου· οἱ διψῶντες, ὕδωρ ἐπὶ ζῶν πορεύεσθε· ῥανεῖ γὰρ ὕδωρ καινοποιὸν Χριστός, τοῖς προστρέχουσιν αὐτῷ ἐν πίστει, καὶ πρὸς ζωὴν τὴν ἀγήρω, βαπτίζει Πνεύματι.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς πατρώας φωνῆς μαρτυρηθέντα.

Συντηρώμεθα χάριτι, πιστοὶ καὶ σφραγιῖδι· ὥς γὰρ ὄλεθρον ἔφυγον, φλιᾶς Ἑβραῖοι πάλαι αἰμαχθεΐσης· οὕτω καὶ ἡμῖν, ἐξόδιον τὸ θεῖον τοῦτο, τῆς παλιγγενεσίας λουτήριον ἔσται· ἔνθεν καὶ τῆς Τριάδος, ὁψόμεθα φῶς τὸ ἄδυτον.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κανὼν α' κυρίου Κοσμά  
ὥδῃ θ'

Ἦχος Ψα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ρ α ν τ ω ν

α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρ ει πα α σα γ λ ω σ σα ευ φ η μ ει ει ν π ρ ο ς α ξ ι α ν

ι λ ι γ γ ι α δε ν ο υ ς και υ πε ρ κο σ μ ι ο ς υ μ ν ει ν σε Θε

ε ο το κε ο μ ω ς α γ α θ η υ πα ρ χ ο υ σα τ η ν π ι σ τ ι ν

δεχου και γαρ τον ποθον οι δας τον εν θεον ημων <sup>Δ</sup>συ

υ γαρ χριστι <sup>σ</sup>α νων ει προστατις σε <sup>π</sup>ε μεγαλυνομεν

**Μ**εγαλυνον ψυχη μου τον εν <sup>+</sup>Ιορδαα νη

ελθον <sup>π</sup>τα βαπτισθηναι

**Δ**αβιδ παρσοπνευματι <sup>π</sup>τοις φωτι ιζομενοις

νυν προσελθε τε <sup>π</sup>α δε προς Θεον εν πιστει λεεγων

φωτισθητε <sup>π</sup>ουτος ο πτωχος εκεκραξεν Αδαμ εν

πτωσει και γαρ αυτου εισ <sup>Δ</sup>ηκουσε Κυριος ελθων

ρει ειθροις του <sup>π</sup>Ιορδανου φθαρε ενταδε ανεκαι νισεν

**Δ**οξα Πατρι και Υιω και Αγιω Πνευματι <sup>π</sup>

Με γα λυ νον ψυ χη μου τον υ πο Προ δρο μου το  
βα πτι σμα λαβον τα

Ο Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα σκει  
τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε Κυ ρι  
ου οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε σθε

ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις προσ τρε  
χου σιν αυ τω εν πι στει και προς ζω ην την α γη ρω  
βα πτι ζει Πνευ μα τι

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων  
α μην

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου ου τον εκ της πα τ ρ ω α σ φ ω ν η ς

μα ρ τυ ρ η θ εν τ α

Σ υ ν τη ρ ω ω με θ α χ α ρ ι τι πι σ τοι οι και σ φ ρ α γ ι δι

ω ς γ α ρ ο λε θ ρ ο ν ε φυ γ ο ν φ λ ι α ς Ε β ρ α ι ο ι πα λ α ι αι

αι μα χ θ ει σ η ς ου τ ω και η μ ι ν ε ξ ο δι ο ν το θ ει ο ν τ ου

το της πα λι γ γε νε σ ι α σ λ ο υ τη ρ ι ι ο ν ε σ τ α ι ε

εν θ εν και της Τ ρ ι α δ ο ς ο ψ ο με θ α φ ω ς το α δ υ τ ο ν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.130\*

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου ου την τι μι ω τε ρ αν των α

νω στρα τευ μα των

νω στρα τευ μα των

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φη μειν προς α ξι

αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν

σε Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την

πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον

η μων ου γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε

ε μεγα λυ νομεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα νη ελ

θον τα βα πτι σθη ναι

Δ α βιδ πα ρε σο Πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις

π νυν προσ ἐλ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω

ων φω τι σθη τε π ου τος ο πτω χος ε κε κρα ξεν Α

δαμ εν πτω σει π και γαρ αυ του εισ η κου σε Κυ ρι ος

ελ θων ρει ει θροις του Ι ορδα νου π φθα ρεν τα δε ε α

νε και νι σε

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον υ πο Προδρο ο μου

το βα πτι σμα λαβον τα π

Ο Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα

π σκει τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε

Κυ ρι ου  οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε

σθε  ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις

προσ τρε χου σιν αυ τω εν πι στει  και προς ζω ην την

 α γη ρω βα πτι ζει Πνευ μα τι

**K** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

 α μην

**M** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

 μαρ τυ ρηθεν τα

**C** υν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σρα γι δι 

 ως γαρ ο λε θρον ε φυ γον φλι ας Ε βραι οι πα λαι αι



αι μα χθει σης    ου τω και    η μιν    εξ    ο δι ον το    θει ον  
του το    της πα λιγ γε νε    σι ας λου τη ρι ι ον ε  
σται    ε εν θεν και της Τρι α δος ο    φο με θα φως το α δυ  
τον

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος β'

[Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἁλίαν, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Ἀρχή

Σύντομος

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥδῆ θ'

ἦχος    Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε

ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρ ει πα α σα γ λ ω σ σα ευ φ η μ ει ει ν π ρ ο ς α ξ ι α ν

ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ ς κ αι υ π ε ρ κ ο σ μ ι ο ς υ μ ν ει ν σε Θε

ε ο τ ο κ ε ο μ ω ς α γ α θ η υ π α ρ χ ο υ σα τ η ν π ι σ τ ι ν

δ ε χ ο υ κ αι γ α ρ τ ο ν π ο θ ο ν ο ι δ α ς τ ο ν ε ν θ ε ο ν η μ ω ν συ

υ γ α ρ χ ρ ι σ τ ι α ν ω ν ει π ρ ο σ τ α τ ι ς σε ε μ ε γ α λ υ ν ο μ ε

ε εν

Ἄεγι

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ῥδῆ θ'

Ἦχος Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

Μ ε γ α α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η η η η μου

ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρα

αν και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ραν τωων α α

νω στρα α τευ μα α α α των

Α πο ρει πα α α σα γλω ω ωσ σα ε

ευ φη η μει ει ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν

ι λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ

πε ερ κο σμι ι ος υ υ μνει ει ει εν σε ε Θε ε ο

το ο ο ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου

σα α τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα

αρ τον πο θον οι οι οι οι δα ας το ον ε ε εν

θε ε ε ο ον η η η μων συ υ γαρ Χρι

στι α α νων ει ει προ ο στα α τας σε ε ε με ε γα

λυ υ νο ο με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου

τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τωων α α νω

στρα α τευ μα α α των

Α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ

φη η μεις ει ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν ι

λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

χο σμι ι ος υ υ μνει ει εν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

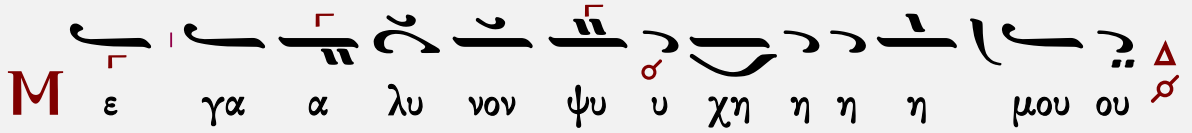
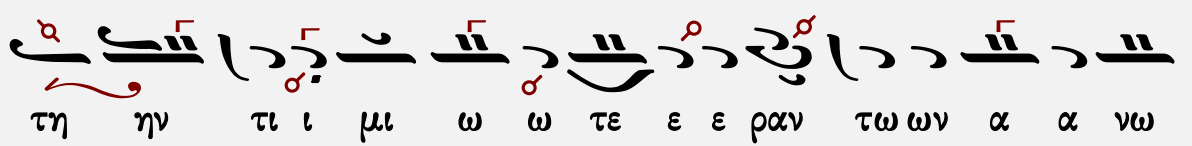
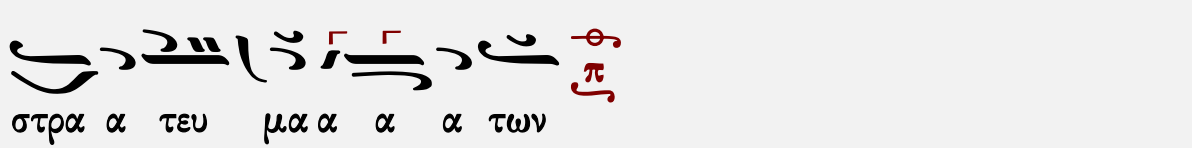
τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

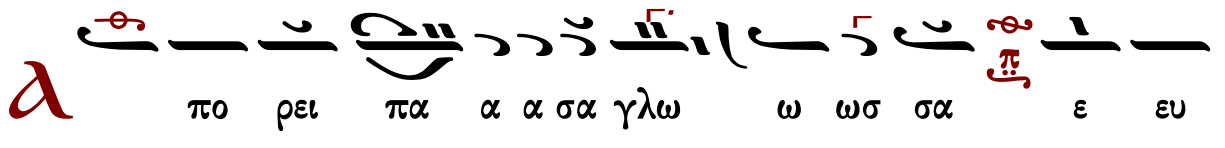
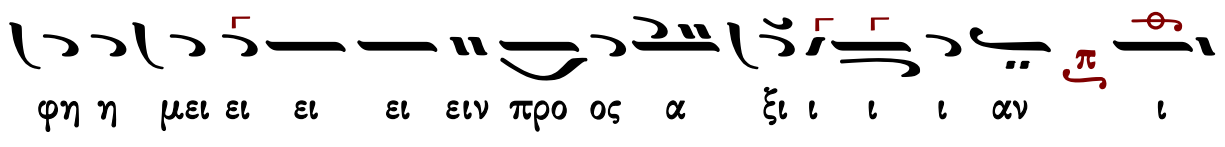
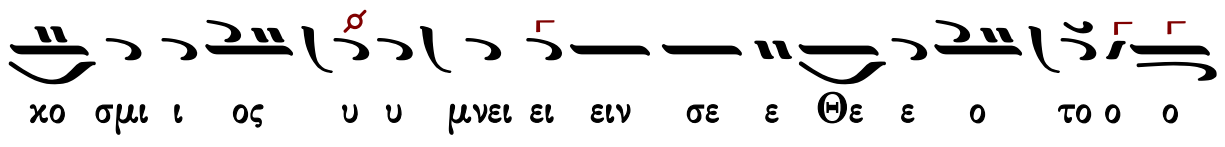
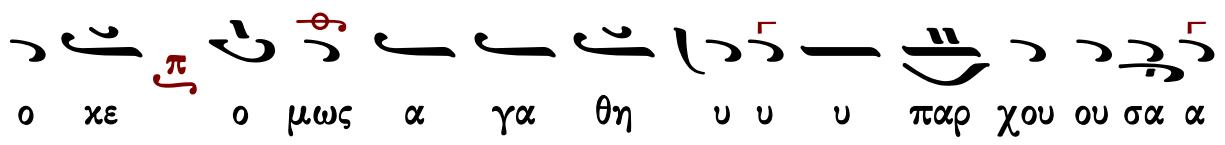
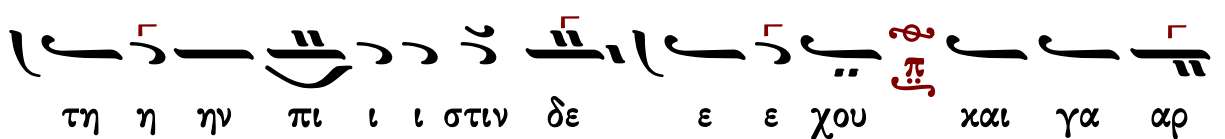
ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο ο

με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

  
 ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου  
  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τωων α α νω  
  
 στρα α τευ μα α α α των

  
 πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ  
  
 φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι  
  
 λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ  
  
 κο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο  
  
 ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α  
  
 τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο ο

με ε ε εν

# Τῶν Θεοφανείων, ἱαμβικαί

7-13 Ἰανουαρίου

## ἤχος β'

- α **Σ**τείβει θαλάσσης, κυματούμενον σάλον, ἥπειρον αὔθις, Ἰσραὴλ δεδειγμένον. Μέλαις δὲ πόντος, τριστάτας Αἰγυπτίων, ἔκρυψεν ἄρδην, ὕδατόστρωτος τάφος, ῥώμη κραταιᾷ, δεξιᾷς τοῦ Δεσπότη.
- γ **Ὅ**σοι παλαιῶν, ἐκλελύμεθα βρόχων, βορῶν λεόντων, συντεθλασμένων μύλας, ἀγαλλιῶμεν, καὶ πλατύνωμεν στόμα, λόγῳ πλέκοντες, ἐκ λόγων μελωδίαν, ᾧ τῶν πρὸς ἡμᾶς, ἥδεται δωρημάτων.
- δ **Π**υρσῷ καθαρθεὶς μυστικῆς θεωρίας, ὕμνων προφήτης τὴν βροτῶν καινουργίαν, ῥήγγυσι γῆρυν, Πνεύματι κροτουμένην, σάρκωσιν ἐμφαίνουσιν ἀρρήτου Λόγου, ᾧ τῶν δυναστῶν τὰ κράτη συνετρίβη.
- ε **Ἐ**χθοῦ ζοφώδους καὶ βεβορβορωμένου, ἰὸν καθάρσει Πνεύματος λελουμένοι, νέαν προσωρμίσθημεν ἀπλανῇ τρίβον, ἄγουσαν ἀπρόσιτον εἰς θυμηδίαν, μόνοις προσιτήν, οἷς Θεὸς κατηλλάγη.
- ς **Ἰ**μερτὸν ἐξέφηνε σὺν πανολβίῳ, ἤχῳ Πατὴρ, ὃν γαστρὸς ἐξηρεύζατο. Ναὶ φησιν, οὗτος, συμφυῆς γόνος πέλων, φώταυγος ἐξώρουσεν ἀνθρώπων γένους, Λόγος τέ μου ζῶν, καὶ βροτὸς προμηθεΐα.
- ζ **Ἐ**φλεξε ρείθρῳ τῶν δρακόντων τὰς κάρας, ὃ τῆς καμίνου τὴν μετάρσιον φλόγα, νέους φέρουσιν εὐσεβεῖς κατευνάσας, τὴν δυσκάθεκτον ἀχλὺν ἐξ ἁμαρτίας, ὅλην πλύνει δέ, τῇ δρόσῳ τοῦ Πνεύματος.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἐ**λευθέρα μὲν ἡ κτίσις γνωρίζεται. Υἱοὶ δὲ φωτός, οἱ πρὶν ἐσκοτισμένοι. Μόνος στενάζει, τοῦ σκότους ὁ προστάτης. Νῦν εὐλογεῖτω συντόνως τὸν αἵτιον, ἡ πρὶν τάλαινα τῶν ἐθνῶν παγκληρία.

Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομοι

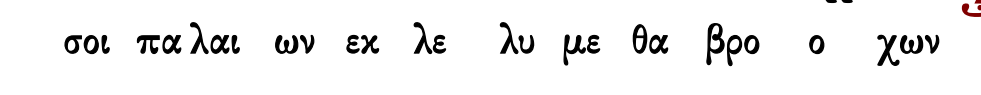
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

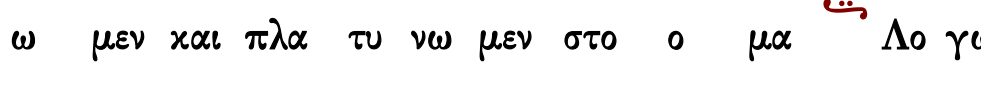


C τει βει θα λασ σης κυ μα του με νον σα α λον η πει  
 ρον αυ θις Ισ ρα ηλ δε δει γμε νον με λας δε πο  
 ον τος τρι στα τας Αι γυ πτι ι ων ε κρυ ψεν αρ  
 δη ην υ δα το στρω τος τα α φος ρω μη κρα ται α δε  
 ξι ας του ου Δε σπο του


 σοι παλαιων εκ λελυμεθα βροο χων βο


 ρων λεοντων συντεθλασμενων μυυλας αγαλλι


 ω ω μεν και πλατυνωμεν στοομα Λογω πλε


 κοντες εκλογων μελωδιαν ω των προς ημας χορος α' η δε

ται δω ω ρη μα των

 $\omega\delta\eta\delta'$ 

υρ σω καθ αρ θεις μυ στι κης θε ω ρι ι ας υ

μνων προ φη της την βρο των και νουρ γι ι αν ρη γνυ σι

γη η ρυν Πνευ μα τι κρο του με ε νην σαρ κω

σιν εμ φαί νου σαν αρ ρη του Λο γου ω των δυ να

στων τα κρατη συν ε τρι βη

ὥδ' ἔ

Ε χθρου ζο φω δους και βε βορ βο ρω με ε νου ι

ον κα θαρ σει Πνευ μα τος λε λου με ε νοι νε αν προ

στω  $\mu_i$  σθη μεν  $\alpha$  πλα νη τρι ι βον  $\alpha$  γου σαν  $\alpha$

προ σι τον εις θυ μη δι αν μο νοις προ σι την οις

ⲉⲟⲩ ⲕⲁ ⲧⲉⲗ ⲗⲁ ⲕⲉ

Θε ος κα τηλ λα γη

ⲱⲃⲏ ⲥⲧ'

ⲙⲉⲣ ⲧⲟⲛ ⲉⲗ ⲉ ⲫⲏ ⲛⲉ ⲥⲟⲛ ⲡⲁⲛ ⲟⲗ ⲃⲓ ⲓ ⲱ ⲏ

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

ⲕⲱ ⲡⲁ ⲧⲏⲣ ⲟⲛ ⲕⲁ ⲥⲧⲣⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲉ ⲗⲏ ⲣⲉⲱ ⲗⲁ ⲧⲟ ⲛⲁⲓ ⲫⲏⲥⲓⲛ

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

ⲟⲩ ⲟⲩ ⲧⲟⲥ ⲥⲱⲡⲏ ⲫⲱ ⲏⲥ ⲕⲟ ⲛⲟⲥ ⲡⲉ ⲉ ⲗⲱⲛ ⲫⲱ ⲧⲁⲩ

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ταυ

ⲕⲟⲥ ⲉ ⲗⲱ ⲣⲟⲩ ⲥⲉⲛ ⲁⲛ ⲑⲣⲱ ⲡⲱⲛ ⲕⲉ ⲛⲟⲩⲥ ⲕⲟ ⲕⲟⲥ ⲧⲉ ⲙⲟⲩ

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

ⲕⲱⲛ ⲕⲁⲓ ⲃⲣⲟ ⲧⲟⲥ ⲡⲣⲟ ⲟ ⲙⲏ ⲧⲉⲓ ⲁ

ζων και βρο τος προ ο μη θει α

ⲱⲃⲏ ⲥ'

ⲫⲗⲉ ⲗⲉ ⲣⲉⲓ ⲑⲣⲱ ⲧⲱⲛ ⲃⲣⲁ ⲕⲟⲛ ⲧⲱⲛ ⲧⲁⲥ ⲕⲁ ⲁ ⲣⲁⲥ ⲟ

φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

ⲧⲏⲥ ⲕⲁ ⲙⲓ ⲓ ⲓ ⲛⲟⲩ ⲧⲏⲛ ⲙⲉ ⲧⲁⲣ ⲥⲓ ⲟⲛ ⲫⲗⲟ ⲟ ⲟ ⲕⲁ ⲛⲉ ⲟⲩⲥ

της κα μι ι ι νου την με ταρ σι ον φλο ο ο γα νε ους

ⲫⲉ ⲣⲟⲩ ⲥⲁⲛ ⲉⲩ ⲥⲉ ⲃⲉⲓ ⲕⲁ ⲧⲉⲩ ⲛⲁ ⲁ ⲥⲁⲥ ⲧⲏⲛ ⲃⲱⲥ ⲕⲁ ⲧⲉ

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

ⲕⲧⲟⲛ ⲁ ⲕⲗⲟⲛ ⲉⲗ ⲁ ⲙⲁⲣ ⲧⲓ ⲓ ⲓ ⲁⲥ ⲟ ⲗⲏⲛ ⲡⲗⲱ ⲛⲉⲓ ⲃⲉ ⲧⲏ

κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυνει δε τη

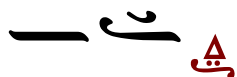


δρο σω του Πνε ευ μα α τος

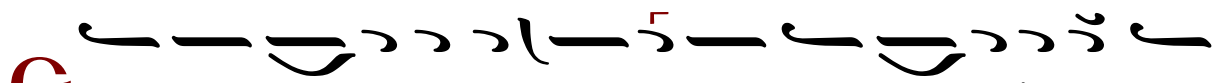
ὥδὴ ἡ'



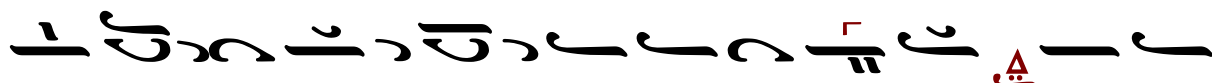
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον Κυ



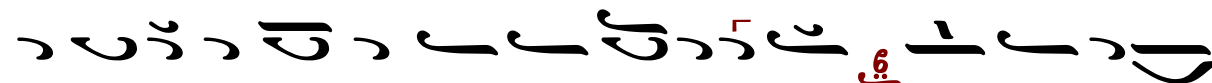
ρι ον



Ε λευ θε ρα μεν η κτι ι ι σις γνω ρι ζε ται υι



οι δε φω τος οι πριν ε σκο τι σμε ε νοι μο νος



στε να ζει του σκο τους ο προ στα α α της νυν ευ λο γει



τω συν το ο ο νως τον αι τι ον η πριν τα λαι να

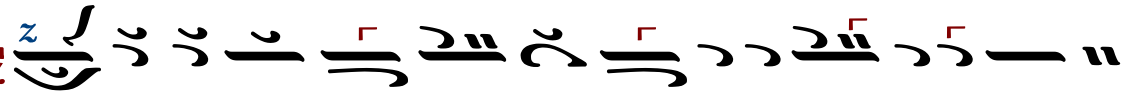
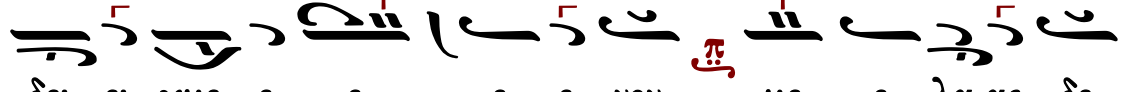
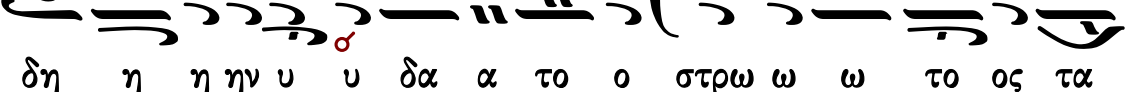
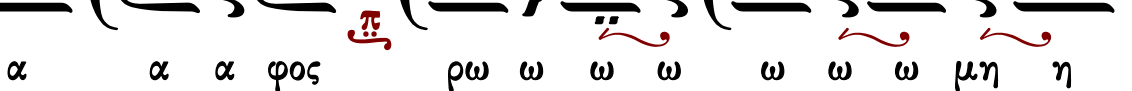


των ε θνων πα αγ κλη ρι ι α α α α α

Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Θις τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστοχού χωρισμοῦ λέξεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

C <sup>z</sup> <sup>x</sup>   
 τει βει θα λα α ασ ση η η ης κυ υ υ μα α  
  
 του ου με ε ε νον σα α α α λο ον η η  
  
 πει ει ρο ον α α αυ θι ι ι ις Ι ισ ρα α η ηλ δε ε  
  
 ε δει ει γμε ε ε ε ε νον με ε λα ας δε  
  
 πο ο ον το ο ο ο ο ος τρι στα τα ας Αι αι αι  
  
 γυ υ πτι ι ι ι ι ω ων ε χρυ υ ψε εν α  
  
 α αρ δη η η ην υ υ δα α το ο στρω ω ω το ος τα  
  
 α α α α φος ρω ω ω ω ω ω ω μη η  
  
 η η κρα ται αι α α α δε ξι ας του ου ου ου

ου Δε ε σπο ο ο του

Ὁδὴ γ'

Ο σοι οι οι οι πα λαι αι ω ω ωων ε ε εκ λε ε

λυ υ με ε ε θα βρο ο ο ο ο χω ων βο ρω

ω ων λε ε ο ο ον τω ω ων συν τε ε θλα α σμε ε ε

νω ων μυ υ υ υ υ λας α γαλ λι ω ω ω ω

με ε ε ε ε ε εν και αι αι πλα α τυ υ νω ω ω

μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο

ο ον τε ες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων

προς η η μα ας χορὸς α' η η δε ε ται δω ω ω ω

ω ρη η μα α α των

Ὡδὴ δ'

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ σι γη

η η ρυ υ υ υ υν Πνευ μα α τι χρο ο ο του

με ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ

φαι νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο

ο ο γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ωων

δυ να α στω ων τα κρα α τη συ υ υ υν ε ε

τρι ι ι βη

Ὡδή ε'

Ε<sup>6</sup> χθρου ου ζο ο φω ω ω δου ου ους και βε ε βο ορ

βο ο ο ρω με ε ε ε ε νου ου ι ο

ο ον κα α θα ααρ σει Πνευ μα α τος λε ε ε

λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν προ οσ ωρ

μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι ι ι ι

ι βο ον α γου σα α αν α α προσ ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι ος προσ ι ι τη η ην

οι ος Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα



ⲁ ⲁ ⲕⲏ  
α α γη

Ὠδὴ ς'

<sup>6</sup>  
ⲙⲉⲣ ⲧⲟ ⲟ ⲟⲛ ⲉ ⲉϭ̅ ⲉ ⲫⲏ ⲛⲉ ⲉ ⲥⲩ ⲩ ⲩⲛ ⲡⲁ  
|

ⲁ ⲁⲛⲟⲗ ⲃⲓ ⲓ ⲓ ⲱ ⲏ ⲕⲱ ⲱ ⲡⲁ ⲁ ⲁ ⲧⲏⲣ ⲟⲛ

ⲕⲁ ⲥⲧⲣⲟ ⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲉ ⲉϭ̅ ⲏ ⲏ ⲏ ⲣⲉ ⲉⲩ ⲭⲁ ⲁ ⲁ

ⲧⲟ ⲛⲁⲓ ⲫⲏ ⲥⲓⲛ ⲟⲩ ⲟⲩⲟⲩ ⲧⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲥⲩ ⲩⲩⲙ

ⲫⲩ ⲩ ⲏⲥ ⲕⲟ ⲛⲟ ⲟⲥ ⲡⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲗⲱ ⲱⲛ ⲫⲱ ⲧⲁⲩ

ⲕⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲉ ⲉϭ̅ ⲱ ⲣⲟⲩ ⲥⲉ ⲉⲛ ⲁ ⲁ ⲁⲛ ⲑⲣⲱ ⲱ ⲱ ⲡⲱ ⲱⲛ

ⲕⲉ ⲉ ⲉ ⲛⲟⲩⲥ ⲕⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲕⲟ ⲟ

ⲟ ⲟⲥ ⲧⲉ ⲙⲟⲩ ⲟⲩ ⲕⲱ ⲱⲛ ⲕⲁⲓ ⲃⲣⲟ ⲧⲟⲥ ⲡⲣⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲙⲏ ⲏ

ⲑⲉⲓ ⲉⲓ ⲉⲓ ⲁ  
ⲧⲉⲓ ⲉⲓ ⲉⲓ ⲁ

Ὠδὴ ζ'

Ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε ε κτο

ον α χλυν ε εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι

ας ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει

δε ε ε τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα α α

το ος

Ὡδή η'

**Α** <sup>6</sup>  
ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με εν

τον Κυ υ υ ρι ον

**Ε** λευ θε ρα α α μεν η χτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σκο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

αι τι ι ι ι ον η πρι ι ι ι ι ι ιν τα

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α

αγ κλη η ρι ι ι α α α α α α

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)<sup>14</sup>

ᾠδὴ α΄ Ἦχος λ π Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.120\*

τει βει θα λα α ασ ση ης κυ μα του ου με ε

ε νον σα α α α α λο ον η η πει ει ρο

ον α α αυ θι ις Ισ ρα η ηλ δε ε ε δει ει γμε ε

ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο ο ο ον

το ος τρι στα τα ας Αι αι αι γυ υ πτι ι ι ι

ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη ην υ δα το

ο στρω ω ω το ος τα α α α α φος ρω ω μη

<sup>14</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινων γραμμῶν.

η κρα ται αι α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ᾠδὴ γ'

Ο σοι οι πα λαι αι ων εκ λε λυ υ με ε ε θα βρο

ο ο ο ο χω ων βο ρω ω ων λε ε ο ο ον

των συν τε θλα σμε ε ε νω ων μυ υ υ υ υ

λας α γαλ λι ω ω ω μεν και πλα τυ υ νω ω

ω μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο ον

τες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω τωων προς η η μα ας χορὸς α' η η

δε ε ται δω ω ω ω ω ρη η μα α α των

ᾠδὴ δ'

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ υ

σι ι γη η η ρυν Πνευ μα α τι χρο ο ο του με

ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ φαι

νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο ο ο

γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων δυ

να α στω ων τα κρα α τη συ υ υ υν ε ε τρι

ι ι βη

ᾠδὴ ε'

<sup>6</sup>  
Ε χθρου ου ζο ο φω ω ω δους και βε βορ βο ρω με

ε νου ου ι ι ι ον κα θαρ σει Πνευ μα α τος

λε ε ε λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν

προ οσ ωρ μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι

ι ι ι ι βο ον α γου σαν α προσ ι ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

Ὡδὴς'

<sup>6</sup>  
I μερ το ο ον ε εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ι

ω ω η χω ω Πα α α τηρ ον γα στρο ο ο ος

ε εξ η η η ρε ευ ξα α α το ναι φη σι

ιν ου ου τος συμ φυ η ης γο νο ος πε ε ε ε ε

λω ων φω ταυ γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν

α α αν θρω ω ω πω ων γε ε ε νους Λο ο

ο ο ο ο ο ο γο ο ο ος τε μου ου ζω ων και

βρο τος προ ο ο ο ο μη η θει ει ει α

Ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον



φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε εκτον α

χλυ υν εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι ας

ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει δε ε

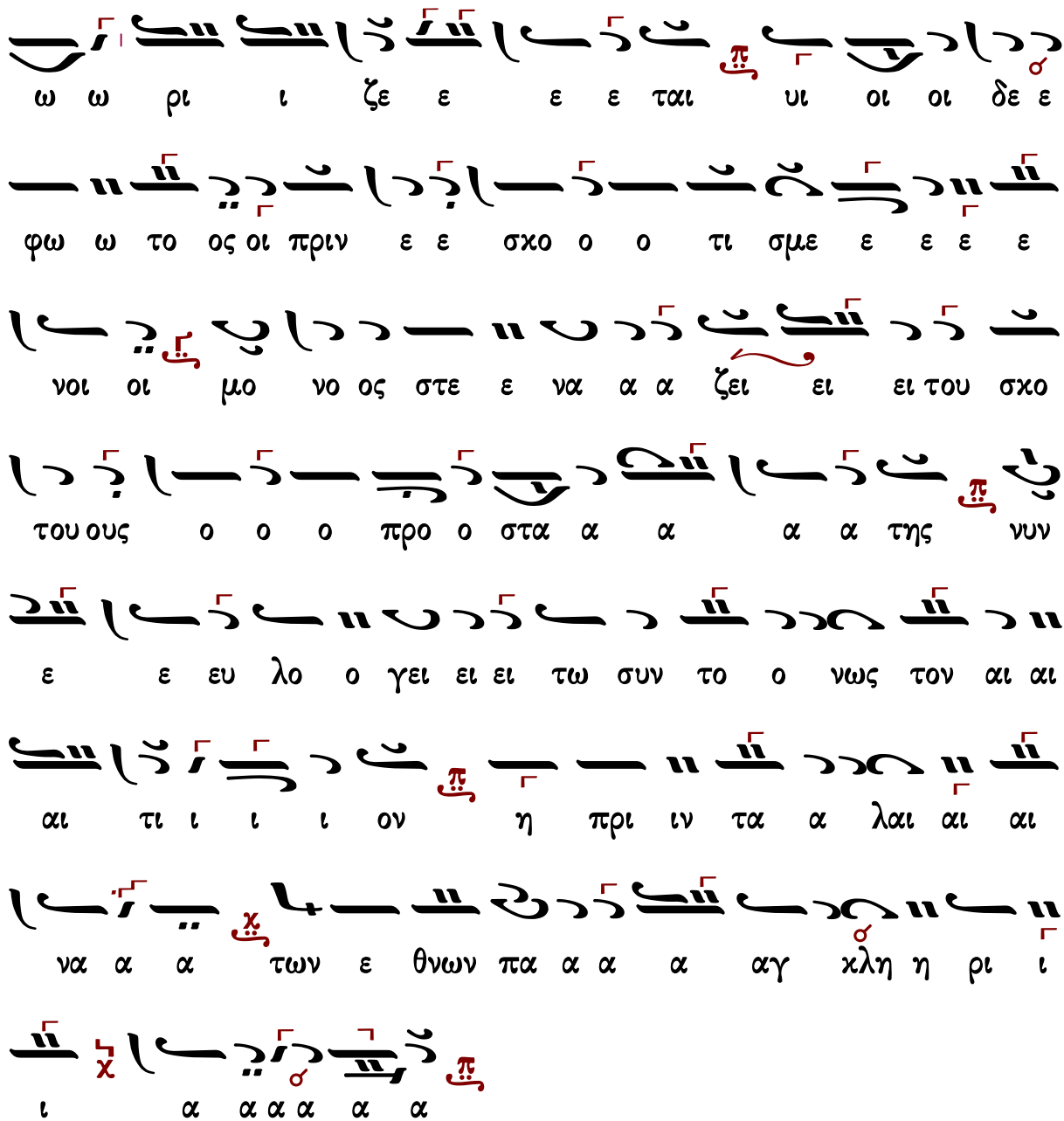
ε τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα α α το ος

Ὡδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με εν

τον Κυ υ υ ρι ον

Ε λευ θε ρα α α μεν η χτι ι σις γνω



## ὁδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὁδὴ θ' κανὼν α'

ἤχος β'

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἄξιαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὑμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐν Ἰορδάνῃ ἐλθόντα βαπτισθῆναι.

Δαβὶδ πάρεσο, Πνεύματι τοῖς φωτιζομένοις· νῦν προσέλθετε, ἅδε πρὸς Θεόν, ἐν πίστει λέγων φωτίσθητε· οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξεν Ἀδὰμ ἐν πτώσει· καὶ γὰρ αὐτοῦ εἰσήκουσε Κύριος ἐλθόν, ρείθροις τοῦ Ἰορδάνου, φθαρέντα δὲ ἀνεκαίνισεν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ὑπὸ Προδρόμου τὸ βάπτισμα λαβόντα.

Ὁ Ἡσαΐας λούσασθε, καὶ καθάρθητε φάσκει· τάς πονηρίας ἔναντι, ἀφέλεσθε Κυρίου· οἱ διψῶντες, ὕδωρ ἐπὶ ζῶν πορεύεσθε· ρανεῖ γὰρ ὕδωρ καινοποιὸν Χριστός, τοῖς προστρέχουσιν αὐτῷ ἐν πίστει, καὶ πρὸς ζωὴν τὴν ἀγήρω, βαπτίζει Πνεύματι.

Καὶ νῦν καὶ ἄει καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς πατρώας φωνῆς μαρτυρηθέντα.

Συντηρώμεθα χάριτι, πιστοὶ καὶ σφραγιῖδι· ὥς γὰρ ὅλεθρον ἔφυγον, φλιᾶς Ἑβραῖοι πάλαι αἱμαχθείσης· οὕτω καὶ ἡμῖν, ἐξόδιον τὸ θεῖον τοῦτο, τῆς παλιγγενεσίας λουτήριον ἔσται· ἔνθεν καὶ τῆς Τριάδος, ὁψόμεθα φῶς τὸ ἄδυτον.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ  
ῥῶδῃ θ'

Ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ρ α ν τ ω ν

α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρ ει πα α σα γ λ ω σ σα ε υ φ η μ ει ει ν π ρ ος α ξ ι α ν

ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν σε Θε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στιν

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων συ

υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα λυ νομεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα α νη

ελ θον τα βα πτι σθη ναι

Δ α βιδ πα ρε σο πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις

νυν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω ων

φω τι σθη τε ου τος ο πτω χος ε κε κρα ξεν Α δαμ εν

πτω σει και γαρ αυ του εις η κου σε Κυ ρι ος ελ θων

ρει ει θροις του Ι ορδανου φθα ρε εν τα δε αν ε και νι σεν π

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον υ πο Προδρο μου το

βα πτι σμα λαβον τα π

Ο Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα σκει

τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε Κυ ρι

ου π οι δι ψων τεσ υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε σθε π

ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος Δ τοις προσ τρε

χου σιν αυ τω εν πι στει π και προς ζω ην την α γη ρω

βα πτι ζει Πνευ μα τι π

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην

Με γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεν τα

Συν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σφρα γι δι

ως γαρ ο λε θρον ε φυγον φλι ας Εβραι οι πα λαι αι

αι μα χθει σης ου τω και η μιν ε ξο δι ον το θει ον του

το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε σται ε

ενθεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυ τον

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ουτην τι μι ω τε ραν των α

νω στρα τευ μα των

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φη μειν προς α ξι

αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν

σε Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την

πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον

η μων συ υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε

ε μεγα λυ νομεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα νη ελ

ὁν τα βα πτι σθη ναι

Δ α βιδ πα ρε σο Πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις

π νυν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω

ων φω τι σθη τε ου τος ο πτω χος ε κε κρα ξεν Α

δαμ εν πτω σει και γαρ αυ του εισ η κου σε Κυ ρι ος

ελ θων ρει ει θροις του Ι ορδα νου φθα ρεν τα δε ε α

νε και νι σε

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον υ πο Προδρο ο μου

το βα πτι σμα λαβον τα



**Ο** Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα

σκει <sup>π</sup> τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε

Κυ ρι ου <sup>π</sup> οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε

σθε <sup>π</sup> ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις

προσ τρε χουσιν αυ τω εν πι στει <sup>π</sup> και προς ζω ην την

α <sup>π</sup> γη ρω βα πτι ζει Πνευ μα τι

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

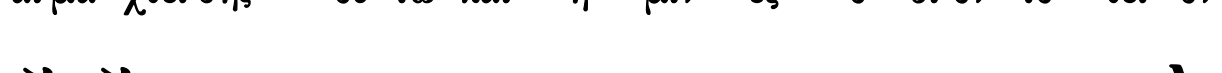
α <sup>π</sup> μην

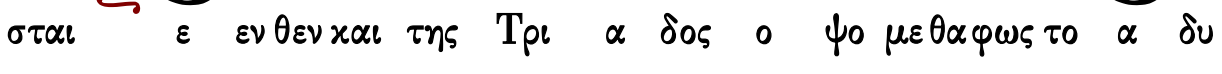
**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεν τα <sup>π</sup>


 υν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σρα γι δι  

 ως γαρ ο λε θρον ε φυ γον φλι ας Ε βραι οι πα λαι αι  

 αι μα χθει σης ου τω και η μιν εξ ο δι ον το θει ον  

 του το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε  

 σται ε εν θεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυ  

 τον

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος β'

[Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

ᾠ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάντα γνε, Μῆτερ εὐλογημένη δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Ἀργή

Σύντομος

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομος

Ὡδή θ'

Ἦχος Πά

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου την τι μι ω τε  
ραν των α νω στρατευμα των

Ἦχος Β

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.285#

Ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των  
νυμφη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ  
χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα  
ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον φε ρον τες  
υ μνον ευ χα ρι στι ι α α α ας

Ἀγνή

# Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ῥοδῆ θ'

Ἦχος Πά

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

Μ ε γ α α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η η η η μου  
ου τη η ν τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρ α  
αν και αι ε εν δο ξ ο ο τε ε ε ρ αν τ ω ω ν α α  
νω στρα α τευ μα α α α των

Ἦχος Β

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.55#

ω τ ω ω ω ν υ υ υ πε ε ρ ν ο υ ο υ ο υ ν τ ο υ  
το κου σου ου ου θαυ μα α α α α τ ω ω ν Ν υ  
υ υ μ φ η η πα αν α α α γ ν ε ε ε Μ η τε  
ε ρ ευ λο ο ο γ η η με ε ε ε ε ν η δι

ης τυ χο ο ο ον τε ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε  
 λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α ας ε ε  
 πα ξι ον χο ο του ου ου με εν ω ω ως ε ε ε ευ  
 ερ γε ε ε τη δω ω ω ω ρο ο ο ον φε  
 ε ρο ο ον τε ε ες υ υ μνο ον ευ χα α α  
 α α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

Με γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τωων α α νω

στρα α τευ μα α α των

στρα α τευ μα α α των

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

Μουσικόν Μηνολόγιον

2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουν του το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

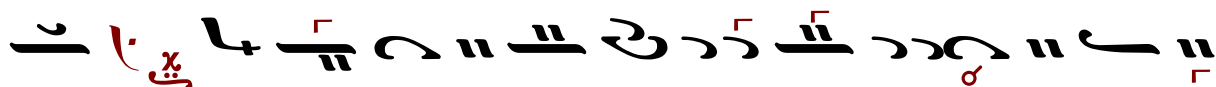
γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ο ο ον τε

ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε λου ους σω ω ω τη

ρι ι ι ι ι α ας ε ε πα ξι ι ο ον χρο ο του

ου ου με εν ω ω ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη

δω ω ω ω ρο ο ο ον φε ε ρο ο ον τε ε

  
 ες υ υ μνο ον ευ χα α α α α ρι ι στι ι  
  
 ι α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

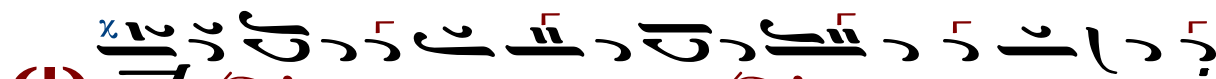
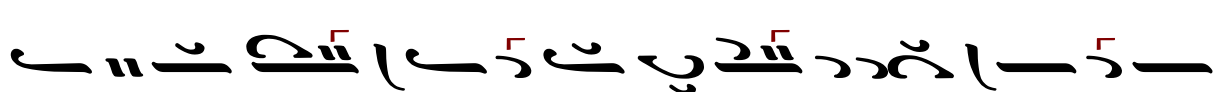
ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

  
 Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου  
  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τωων α α νω  
  
 στρα α τευ μα α α των

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

  
 ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουν του το κου ου  
  
 σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ  
  
 φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ον τε

ες παν τε λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α

ας ε ε πα ξι ι ο ον χρο ο του ου ου με εν ω ω

ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη δω ω ω ρο ον φε

ε ρο ο ον τε ες υ υ μνο ον ευ χα α α α

α ρι ι στι ι ι α α α α α ας



# Τῆς Ὑπαπαντῆς (προεόρτιες)

15 Ἰανουαρίου μέχρι τῆς ἀποδόσεως τῆς ἑορτῆς τῆς Ὑπαπαντῆς

## ἦχος γ'

- α **Χ**έρσον ἄβυσσοτόκον πέδον ἥλιος, ἐπεπόλευσέ ποτε· ὥσεί τεῖχος γὰρ ἐπάγη, ἐκατέρωθεν ὕδωρ, λαῶ πεζοποντοποροῦντι, καὶ θεαρέστως μέλποντι. Ἄσωμεν τῷ Κυρίῳ· ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.
- γ **Τ**ὸ στερέωμα, τῶν ἐπὶ σοὶ πεποιθότων, στερέωσον Κύριε τὴν Ἐκκλησίαν, ἣν ἐκτήσω, τῷ τιμίῳ σου αἵματι.
- δ **Ἐ**κάλυψεν οὐρανοῦς, ἡ ἀρετὴ σου Χριστέ· τῆς κιβωτοῦ γὰρ προελθὼν, τοῦ ἁγιάσματος σου, τῆς ἀφθόρου Μητρός, ἐν τῷ ναῷ τῆς δόξης σου, ὥφθης ὡς βρέφος, ἀγκαλοφορούμενος, καὶ ἐπληρώθη τὰ πάντα τῆς σῆς αἰνέσεως.
- ε **Ὡ**ς εἶδεν Ἡσαΐας συμβολικῶς, ἐν θρόνῳ ἐπηρμένῳ Θεόν, ὑπ' ἀγγέλων δόξης δορυφορούμενον, ὦ τάλας! ἐβόα, ἐγὼ· πρὸ γὰρ εἶδον σωματούμενον Θεόν, φωτὸς ἀνεσπέρου, καὶ εἰρήνης δεσπόζοντα.
- ς **Ἐ**βόησέ σοι, ἰδὼν ὁ πρέσβυς, τοῖς ὀφθαλμοῖς τὸ σωτήριον, ὃ λαοῖς ἐπέστη· ἐκ Θεοῦ Χριστέ σὺ Θεός μου.
- ζ **Σ**ὲ τὸν ἐν πυρὶ δροσίσαντα, παῖδας θεολογήσαντας, καὶ Παρθένω, ἀκηράτῳ, ἐνοικήσαντα, Θεὸν Λόγον ὑμνοῦμεν, εὐσεβῶς μελωδοῦντες· Εὐλογητὸς ὁ Θεός, ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἀ**στέκτῳ πυρὶ ἐνωθέντες, οἱ θεοσεβεῖας προεστῶτες νεανίαί, τῇ φλογὶ δὲ μὴ λωβηθέντες, θεῖον ὕμνον ἔμελπον· Εὐλογεῖτε πάντα τὰ ἔργα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ᾠδὴ α'

Ἦχος ἡ Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.286#

Χερσοναβυσσοτον πεδονηλιος<sup>χ</sup> επεπολευ

σεποτεωσειτειχοςγαρεπαγηεκατεερωθεν

υυδωρ<sup>π</sup>λαωπεζοποντοπορουουσυντικαι

θεαρεστωσμελποντι<sup>π</sup>ασωμεντωΚυριιι

ωενδοξωσγαρδεδοο<sup>ζ</sup>ξαα<sup>η</sup>σται<sup>ωδὴ γ'</sup>

Τοστερεωμα<sup>Δ</sup>τωνεπισοιπεεποιθο

οοτων<sup>π</sup>στερεωσονΚυριετηνΕκκλησιιαν

ηνεκτησω<sup>χ</sup>χορδςα'τωτιμiiωσουαιαιμαα

τι<sup>η</sup><sup>ωδὴ δ'</sup>

ΕκααλυψενουρανουςηαρετησουΧρι

στε <sup>x̣q̣</sup> της κι βω του γαρ προ ελ θων του α γι α σμα

τος σου της α α φθο ο ρου μητρος π<sup>9</sup> εν τω να ω της δο ξης

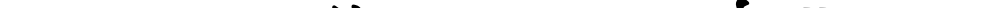
σου ω φθη ηςως βρε φος αγ κα λοφο ο ρου ου με ε νος και

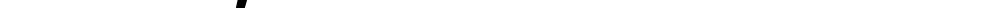
ε π λ η ρ ω θ η τ α π α ν τ α τ η ς σ η ς α ι ν ε ε σ ε ε

11  
 ως ἡ

ὡς δὲ ε'

ω ς ει δεν Η σα ι ας συμ βο λι κως εν θρο νω


  
 ε π η ρ μ ε ν ω Θ ε ο ν υ π Α γ γ ε λ ω ν δ ο ξ η ς δ ο ρ υ φ ο ο


  
 ρου ου με ε νον ω τα α λας ε βο α ε γω προ γαρ ει

  
 δον σωμα του με νον Θε ον φω τος α α νε σπε ρου και

ει ρη η νης δε σπο ο ζο ον τα ρη  
 ει ρη η νης δε σπο ο ζο ον τα ρη

Ε βο ο ο η σε ε ε σοι ι δων ο πρε ε ε

σβυς π q τοις ο φθαλ μοι οισ το σω ω τη η ρι ι ον π q ο λα

οις ε πε στη εκ Θε ου Χρι στε συ υ Θε ος μου η ὠδὴ ζ'

Ε τον εν πυ ρι δρο σι σαν τα παι δας θε ο λο ο γη η

σαντας και Παρ θε νω α κη ρα τω εν οι κη σαν τα x q

Θε ον Λο ο γον υ μνου ουμεν π q ευ σε βως με ε λω δου ου

ουντες π q ευ λο γη το ο ος ο Θε ος ο των πα τε

ε ρων η μων η ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν x q και προσ κυ νου ουμεν το

ον Κυ ρι ι ον π q



τε ε <sup>π q</sup> ως ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α γη <sup>χ q</sup>

ε ε κα τε ε ε ε ρω ω θεν υ υ υ υ

δω ωρ <sup>π q</sup> λα ω πε ζο ο πο ον το πο ρου ου

ου ου ου ουν τι ι <sup>χ q</sup> και θε α ρε ε στω ως με ελ

πο ο ο ον τι ι <sup>π q</sup> α σω μεν τω ω ω ω Κυ ρι

ω ω εν δο ο ξως γαρ δε ε δο ο ο ο ο ο ξα

α σται <sup>η</sup>

διασκευή

<sup>χ</sup>ερ σον α βυσ σο το ο κον πε ε ε ε ε δον <sup>π q</sup>

<sup>♀</sup> η η λι ι ος ε πε πο ο λε ευ σε ε ε πο ο

τε ε <sup>π</sup>ωσ ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α

γη <sup>χ</sup>ε κα τε ε ρω ω θεν υ υ υ υ

δω ωρ <sup>π</sup>λα ω πε ζο πον το πο ρου ου ου ου ουν

τι ι <sup>δ</sup>και θε α ρε ε στως με ελ πο ο ο ον

τι ι <sup>π</sup>α σω μεν τω ω ω ω Κυ ρι ω ω εν δο

ο ξως γαρ δε ε δο ο ο ο ο ο ο ξα α σται <sup>η</sup>

ὥδ' ἡ γ'

**Τ**ο στε ε ε ρε ε ε ε ε ω ω μα α α

α α των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω

ων <sup>π</sup>στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε

ε την Ε εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π<sub>q</sub></sup> η η η

ην ε ε κτη η η σω <sup>χ<sub>q</sub></sup> χορὸς ἀ' τω ω τι μι ι ι ι ω

σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι <sup>η</sup>

διασκευή

**T** ο στε ε ρε ε ε ω ω ω ω μα α <sup>π<sub>q</sub></sup>

των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω

ων <sup>π<sub>q</sub></sup> στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε

ε την Ε εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π<sub>q</sub></sup> η η

η ην ε ε κτη η η σω <sup>χ<sub>q</sub></sup> χορὸς ἀ' τω ω τι μι ι ι

ι ω σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι <sup>η</sup>

ᾠδὴ δ'



Ε — κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α

ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε

της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του ου α α α γι

α α σμα το ο ο ος σου ου της α φθο ο ο

ρου ου Μη η τρο ο ος εν τω ω να ω ω τη ης δο ο

ο ξη η η ης σου ου ω ω φθη η ης ω ως βρε

ε ε φος α αγκα λο ο φο ο ρου ου ου με ε ε

ε νο ος και ε πλη ρω ω ω θη τα α πα α αν

τα α της σης αι αι νε ε ε ε ε σε ε

ως

Ε κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α  
 ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε  
 της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του α γι α  
 σμα α α το ο ος σου ου της α φθο ο ο ρου ου  
 Μη η τρο ος εν τω να ω ω ω της δο  
 ο ξη ης σου ω ω φθη η η ης ω ως βρε ε ε  
 φος αγ κα λο φο ρου ου ου με ε ε ε νο ος  
 και ε πλη ρω ω θη τα α πα α αν τα α της  
 σης αι αι νε ε ε ε ε σε ε ως

ὥδ' ἐ'

ω ς ει δε εν Η η σα ι ι ι ι ας <sup>♀</sup>χ<sup>q</sup> συ υμ

βο ο λι ι ι κω ω ως <sup>♂</sup>χ<sup>q</sup> εν θρο νω ε ε

ε πηρ με ε ε ε ε νω ω Θε ε ε ον <sup>♀</sup>χ<sup>q</sup> υπ αγ

γε λωων δο ο ο ξης δο ο ρυ υ φο ρου ου ου με

ε ε ε ε νο ον <sup>♂</sup>π<sup>q</sup> ω τα α α α α α α α

λα ας <sup>♂</sup>χ<sup>q</sup> ε βο ο ο α α ε ε ε γω ω προ <sup>♀</sup>χ<sup>q</sup>

γαρ ει ει ει δο ον <sup>\*</sup>σω μα α του ου με νο ο ον Θε ε

ε ε ο ον <sup>♂</sup>π<sup>q</sup> φω το ο ος α α α νε σπε ε

ε ε ρου <sup>♂</sup>χ<sup>q</sup> και ει ρη η η νης δε ε σπο ο ο ο ο

ο ζο ον τα <sup>♂</sup>η

ἄλλη γραμμὴ

\* σω μα του ου με νο ον Θε ε ο ον π

ῥδῆς'

βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι ι δω ω π

ω ων ο ο πρε ε ε σβυ υς τοις ο φθαλ μοι οι οις το ο π

σω τη η η ρι ι ι ο ον ο ο λα οι οι π

οι οις ε ε πε ε ε στη εκ Θε ου Χρι στε συ υ π

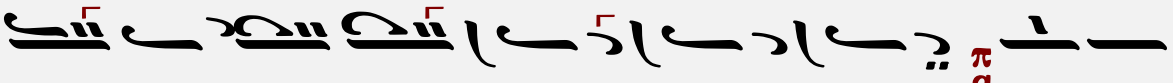
υ υ υ Θε ος μου ου η

διασκευή

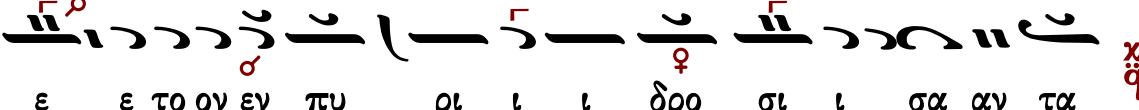
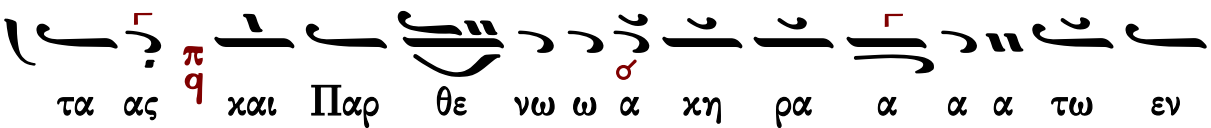
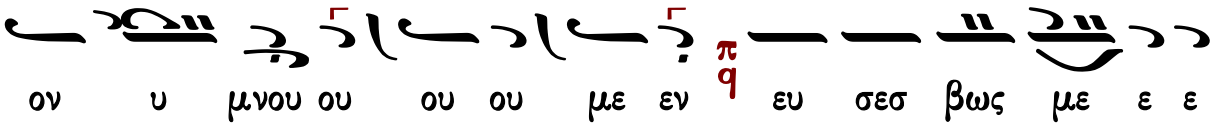
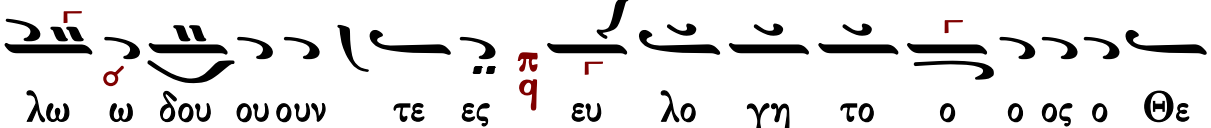
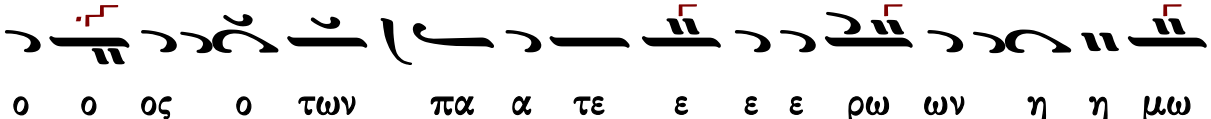
βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι ι δω π

ω ων ο ο πρε ε ε σβυ υς τοις ο φθαλ μοι οι οις π

το ο σω τη η η ρι ο ο ον ο ο ο λα π

  
 οι οἷς ε πε ε ε ε ε στη η <sup>π</sup>ε εκ Θε  
  
 ου Χρι στε συ υ υ υ υ Θε ος μου ου <sup>η</sup>

ᾠδὴ ζ'

**C**   
 ε ε το ον εν πυ ρι ι ι δρο σι ι σα αν τα <sup>χ</sup>η  
  
 παι αι αι δας θε ο ο λο ο γη η η σα α α αν  
  
 τα ας <sup>π</sup>και Παρ θε νω ω α κη ρα α α α τω εν  
  
 οι κη η σα αν τα <sup>χ</sup>η Θε ο ο ον Λο ο ο ο γο  
  
 ον υ μνου ου ου ου με εν <sup>π</sup>ευ σεσ βως με ε ε  
  
 λω ω δου ουουν τε ες <sup>π</sup>ευ λο γη το ο ο ος ο Θε  
  
 ο ο ος ο των πα α τε ε ε ε ρω ων η η μω

ων

ὡδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

μεν το ον Κυ υ υ ρι ι ι ο ον

Α στε ε κτω πυ ρι ι ι ι ε εν ω θε ε

ε εν τες οι οι θε ο σε βει ει ει α ας προ ο

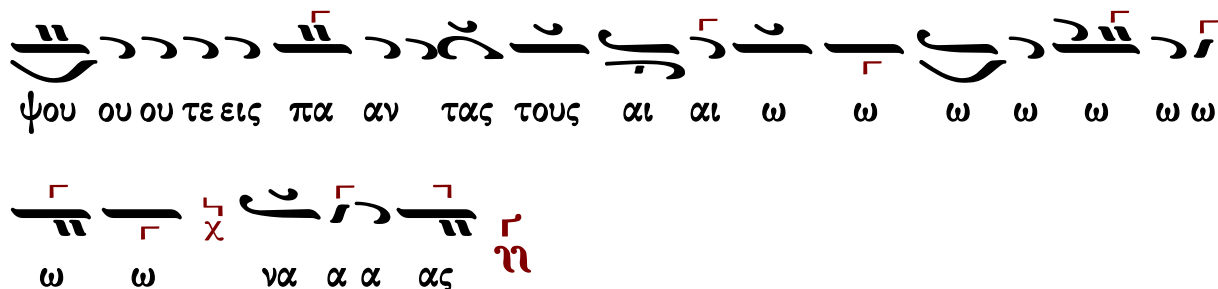
ε ε στω ω ω τες νε ε α νι ι ι ι αι

αι τη φλο γι δε μη η λω ω βη θε ε ε εν

τες θει ει ον υ υ μνο ον ε ε ε με ε ε ελ πο

ον ευ λο γει τε πα α αν τα α α τα α ε ε ερ

γα τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ον και υ περ υ υ



## Τιμιωτέρα ἤχος γ'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος γ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

Ἦχος ἠ Γα

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτήρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος ἡ Γα Πα

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.502#

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα α φιμ την α δι  
α φθο ρως Θε ον λο γον τε κου ου σαν την ον τως Θε  
ο το κον σε με γα λυ υ νο ο μεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος ἡ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.24#



**Μ** <sup>χ</sup> ε γ α λ υ ν ει η ψ υ χ η μου τον Κυ ρι

ον <sup>χ</sup> και η γ α λ λι α σε το <sup>χ</sup> πνευ μα μου ε πι

τω Θε ω ω τω σω ω τη ρι ι μου <sup>π</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ρ αν των <sup>σ</sup> Χε ρ ου βιμ και εν δο

<sup>♀</sup> ξο τε ρ αν α συγ χρι τω σ των Σε ρ α φιμ <sup>χ</sup> την α

δι α φθο ρω σ Θε ον Λο γον τε κου ου σ αν <sup>π</sup> την ον

τως Θε ο το κον σε με γ α λ υ υ νο ο μεν <sup>η</sup>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω

σιν της δου λης αυ του <sup>χ</sup> ι δου γαρ α πο του <sup>χ</sup> νυν μα

κα ρι ου σι με πα α σαι αι γε νε αι <sup>η</sup>

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν δο

ξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την α

διαφθορας Θεον Λογον τεκουουσαν την ον

τως Θεοτοκον σεμεγαλυυνοομεν η

Οτι επισημοι μεγαλαιο

δυνατος και αγιον το ονομα αυτου και

το ελεος αυτου εις γενεαν και γενεαν τοις

φοβου ου νοις αυτον π

Την τιμιωτεραν των Χερυβιμ και εν

δοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>χ</sup>η την ον

τως Θε ο το κον σε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>η</sup>

Ε <sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ του <sup>χ</sup>η

δι ε σχορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι α καρ

δι ι ας αυτων <sup>π</sup>η

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βι ιμ <sup>χ</sup>η και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>η</sup> την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>χ</sup>η την ον

τως Θε ο το κον σε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>η</sup>

Κ <sup>χ</sup> α θει λε δυ να στας α πο θρο νων <sup>ν</sup>η και υ

υ ψω σε τα πει νους <sup>Γ</sup>η πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους <sup>Γ</sup>η

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των <sup>σ</sup>Χε ρου βι ιμ <sup>χ</sup>η και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>χ</sup>η την α δι

α φθο ο ρως <sup>σ</sup>Θε ο ον Λο γον τε κου ου σαν <sup>π</sup>η την ο ο

ον τως <sup>σ</sup>Θε ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>Γ</sup>η

**Α** <sup>χ</sup>ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους <sup>+</sup><sup>♀</sup><sup>χ</sup>η κα θως ε λα λη σε προς τους

πα τε ρας η μων <sup>χ</sup>η τω Α βρα <sup>χ</sup>αμ και τω σπερ μα τι αυτου

ε ως αι ω ω νος <sup>π</sup>η

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βι ιμ και εν  
 δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
 α φθο ο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου ου σαν την ο ο  
 ον τως Θε ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος γ'

[Θεοτόκε ἡ ἐλπίς, πάντων τῶν χριστιανῶν, σκέπε φρούρει φύλαττε, τοὺς ἐλπίζοντας εἰς σέ.]

Ἐν νόμῳ σκιᾷ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν  
 διανοῖγον, ἅγιον Θεῶ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρὸς ἀνάρχου Υἱόν,  
 πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρῳ, μεγαλύνομεν.

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Ἀργή

Σύντομος

Ἀργή

## Πέτρου Λαμπαδαρίου (Σύντομος)

φδῆ θ'

Ἦχος ἡ Γα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
 Εἰρμολόγιον 1903 σ.293#

Θ ε ο το ο κε η η ελ πι ι ις παν των

τω ων Χρι στι ι α α νων η σκε πε φρου ου ρει  
φυ υ λατ τε ε ε του ους ελ πι ι ζον τα  
ας ει εις σε η

ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα  
τι ι δω με εν οι οι πι ι στοι παν αρ σεν το την μη τραν δι α  
νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω π q δι ο πρω το ο το κον  
Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με  
νον μη τρι α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα λυ νο με  
x ε ε εν η

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Σύντομος)

Θ <sup>χ</sup> ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις <sup>η</sup>

παν των τω ων χρι στι α νων <sup>η</sup> σκε πε φρου ου ρει

φυ υ λα ατ τε ε ε <sup>η</sup> του ους ελ πι

ι ζον τας ει σε <sup>η</sup>

ε <sup>χ</sup> ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι <sup>η</sup> τυ υ πον

κα τι ι δω μεν οι πι στοι <sup>η</sup> παν αρ σεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω <sup>π</sup> δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον <sup>η</sup> πρω το το κου

με νον Μη τρι α πει ρα α αν δρω <sup>η</sup> \* με γα λυ υ νο

ο μὲν

τὸ τέλος

\* με γα λυ νο

Πέτρου Λαμπαδαρίου (Ἀρχή)

ῥῶδῃ θ'

# Ἦχος ἠ Γα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρημολόγιον 1903 σ.50#

Θ ε ο το ο ο κε η η η η η η η  
ε ελ πι ι ι ι ι ις η πα αν των  
τω ω ω ω ων χρι στι ι ι α α νων η σκε πε φρου  
ου ου ρει ει φυ υ υ υ υ υ λα ατ τε  
ε ε ε ε ε η του ους ελ πι ι ι ι ι ζον  
τα α ας ει εις σε η

Ε ν νο ο μ ω σ χ ι ι α α και γ ρ α α α μ μα τι ι ι ι



τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι ι  
 στοι οι πα αν α αρσεν το την μη τρα αν δι ι α νοι  
 οι οι οι γο ο ον α α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε  
 ω ω δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον λο ο ο  
 ο γον πα προς α να α α αρ χου ου υι υι υι  
 ο ο ον πρω το το κου με νο ον μη η η τρι ι  
 ι α α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα α λυ υ  
 υ υ υ νο ο ο με ε ε εν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Άρχή)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.75/522\*

Θ ε ο το ο ο κε η η η η η η η

ε ελ πι ι ι ι ι ι ι ις η πα αν

των τω ω ω ωων χρι στι ι ι α α νων η σκε πε

φρου ου ου ρει φυ υ υ υ υ υ λα ατ τε

ε ε ε ε ε η του ους ελ πι ι ι ι ι ζον

τα α ας ει εις σε η

τὸ αὐτὸ συντετμημένον

Θ ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις η πα

αν των τω ων χρι στι ι α α νων η σκε πε φρου

ου ρει φυ υ λα ατ τε ε ε η του ους ελ πι

ι ζον τα ας ει εις σε η

Ε ν νο ο μω σκι ι α α και γρα α αμ μα τι ι ι

ι τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι

ι στοι οι πα αν α αρ σεν το την μη τρα αν δι ι α

νοι οι οι οι γο ο ον α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε

ω ω δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον Λο ο

ο ο γον Πα τρος α να α α αρ χου ου Υι υι

υι ο ο ον πρω το το κου με νο ον Μη η η τρι

ι ι α α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα α λυ

υ υ υ υ νο ο ο με ε ε εν

\* γον α α γι ο ον Θε ε ω ω

ἄλλη γραμμὴ

## Τῆς Ὑπαπαντῆς 2/2

2 Φεβρουαρίου

ἦχος γ'

- α **Χ**έρσον ἄβυσσοτόκον πέδον ἥλιος, ἐπεπόλευσέ ποτε· ὥσεί τεῖχος γὰρ ἐπάγη, ἐκατέρωθεν ὕδωρ, λαῶ πεζοποντοποροῦντι, καὶ θεαρέστως μέλποντι. ᾠσωμεν τῷ Κυρίῳ· ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.
- γ **Τ**ὸ στερέωμα, τῶν ἐπὶ σοὶ πεποιθότων, στερέωσον Κύριε τὴν Ἐκκλησίαν, ἣν ἐκτήσω, τῷ τιμίῳ σου αἵματι.
- δ **Ἐ**κάλυψεν οὐρανοῦς, ἡ ἀρετὴ σου Χριστέ· τῆς κιβωτοῦ γὰρ προελθὼν, τοῦ ἁγιάσματός σου, τῆς ἀφθόρου Μητρός, ἐν τῷ ναῷ τῆς δόξης σου, ὤφθης ὡς βρέφος, ἀγκαλοφορούμενος, καὶ ἐπληρώθη τὰ πάντα τῆς σῆς αἰνέσεως.
- ε **Ὡ**ς εἶδεν Ἡσαίας συμβολικῶς, ἐν θρόνῳ ἐπηρμένῳ Θεόν, ὑπ' ἀγγέλων δόξης δορυφορούμενον, ὦ τάλας! ἐβόα, ἐγὼ· πρὸ γὰρ εἶδον σωματούμενον Θεόν, φωτὸς ἀνεσπέρου, καὶ εἰρήνης δεσπόζοντα.
- ς **Ἐ**βόησέ σοι, ἰδὼν ὁ πρέσβυς, τοῖς ὀφθαλμοῖς τὸ σωτήριον, ὃ λαοῖς ἐπέστη· ἐκ Θεοῦ Χριστέ σὺ Θεός μου.
- ζ **Σ**ὲ τὸν ἐν πυρὶ δροσίσαντα, παῖδας θεολογήσαντας, καὶ Παρθένῳ, ἀκηράτῳ, ἐνοικήσαντα, Θεὸν Λόγον ὑμνοῦμεν, εὐσεβῶς μελωδοῦντες· Εὐλογητὸς ὁ Θεός, ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἀ**στέκτω πυρὶ ἐνωθέντες, οἱ θεοσεβεῖας προεστῶτες νεανίαί, τῇ φλογὶ δὲ μὴ λωβηθέντες, θεῖον ὕμνον ἔμελπον· Εὐλογεῖτε πάντα τὰ ἔργα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδη α'

Ἦχος ἡ Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.286#

χερσονησιος πεδονηλιος επεπολευ

σε πο τε ω σ ει τει χος γαρ ε πα γη ε κα τε ε ρω θεν


 υ υ δωρ πρ


 θε α ρε στω ως μελ πο ον τι

ω εν δοξωσ γαρ δε δο ο ξα α σται η


 Τ  
 ο στε ρε ε ω μα των ε πι σοι πε ε ποι θο

ο ο των <sup>πρ</sup> στε ρε ω σον Κυ ρι ε την Εκ κλη σι ι αν

















































































































































Εκαλυψεν ουρανους η αρετη σου Χρι

στε <sup>x̣q̣</sup> της κι βω του γαρ προ ελ θων του α γι α σμα

τος σου της α α φθο ο ρου μητρος π<sup>9</sup> εν τω να ω της δο ξης

σου ω φθη ηςως βρε φος αγ κα λοφο ο ρου ου με ε νος και

ε π λ η ρ ω θ η τ α π α ν τ α τ η ς σ η ς α ι ν ε ε σ ε ε

11  
 ως ἡ

ὡς δὲ ε'

ω ς ει δεν Η σα ι ας συμ βο λι κως εν θρο νω









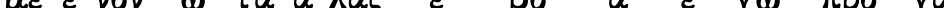









ε    πηρ   με νω   Θε   ον   υπ   Αγ   γε λων   δο   ξης δο ρυ φο ο


  
 ρου ου με ε νον ω τα α λας ε βο α ε γω προ γαρ ει

  
 δον σωμα του με νον Θε ον φω τος α α νε σπε ρου και

ει ρη η νης δε σπο ο ζο ον τα ρη  
 ει ρη η νης δε σπο ο ζο ον τα ρη

Ε βο ο ο η σε ε ε σοι ι δων ο πρε ε ε

σβυς <sup>π ρ</sup> τοις ο φθαλ μοι οισ το σω ω τη η ρι ι ον <sup>π ρ</sup> ο λα

οις ε πε στη εκ Θε ου Χρι στε συ υ Θε ος μου <sup>η</sup> ὠδὴ ζ'

Ε τον εν πυ ρι δρο σι σαν τα παι δας θε ο λο ο γη η

σαντας και Παρ θε νω α κη ρα τω εν οι κη σαν τα <sup>κ ρ</sup>

Θε ον Λο ο γον υ μνου ουμεν <sup>π ρ</sup> ευ σε βως με ε λω δου ου

ουντες <sup>π ρ</sup> ευ λο γη το ο ος ο Θε ος ο των πα τε

ε ρων η μων <sup>η</sup> ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν <sup>κ ρ</sup> και προσ κυ νου ουμεν το

ον Κυ ρι ι ον <sup>π ρ</sup>





τε ε <sup>π q</sup> ως ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α γη <sup>χ q</sup>

ε ε κα τε ε ε ε ρω ω θεν υ υ υ υ

δω ωρ <sup>π q</sup> λα ω πε ζο ο πο ον το πο ρου ου

ου ου ου ουν τι ι <sup>χ q</sup> και θε α ρε ε στω ως με ελ

πο ο ο ον τι ι <sup>π q</sup> α σω μεν τω ω ω ω Κυ ρι

ω ω εν δο ο ξως γαρ δε ε δο ο ο ο ο ο ξα

α σται <sup>η</sup>

διασκευή

**Χ**ερ σον α βυσ σο το ο κον πε ε ε ε ε δον <sup>π q</sup>  
<sup>♀</sup> η η λι ι ος ε πε πο ο λε ευ σε ε ε πο ο

τε ε <sup>π</sup>ωσ ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α

γη <sup>χ</sup>ε κα τε ε ρω ω θεν υ υ υ υ

δω ωρ <sup>π</sup>λα ω πε ζο πον το πο ρου ου ου ου ουν

τι ι <sup>δ</sup>και θε α ρε ε στως με ελ πο ο ο ον

τι ι <sup>π</sup>α σω μεν τω ω ω ω Κυ ρι ω ω εν δο

ο ξως γαρ δε ε δο ο ο ο ο ο ο ξα α σται <sup>η</sup>

ὥδ' ἡ γ'

**Τ**ο στε ε ε ρε ε ε ε ε ω ω μα α α

α α των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω

ων <sup>π</sup>στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε

ε την Ε εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π<sub>q</sub></sup> η η η

ην ε ε κτη η η σω <sup>χ<sub>q</sub></sup> χορὸς ἀ' τω ω τι μι ι ι ι ω

σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι <sup>η</sup>

διασκευή

**T** ο στε ε ρε ε ε ω ω ω ω μα α <sup>π<sub>q</sub></sup>

των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω

ων <sup>π<sub>q</sub></sup> στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε

ε την Ε εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π<sub>q</sub></sup> η η

η ην ε ε κτη η η σω <sup>χ<sub>q</sub></sup> χορὸς ἀ' τω ω τι μι ι ι

ι ω σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι <sup>η</sup>

ῥδῆ δ'

Ε — κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α

ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε

της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του ου α α α γι

α α σμα το ο ο ος σου ου της α φθο ο ο

ρου ου Μη η τρο ο ος εν τω ω να ω ω τη ης δο ο

ο ξη η η ης σου ου ω ω φθη η ης ω ως βρε

ε ε φος α αγκα λο ο φο ο ρου ου ου με ε ε

ε νο ος και ε πλη ρω ω ω θη τα α πα α αν

τα α της σης αι αι νε ε ε ε ε σε ε

ως

Ε κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α  
 ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε  
 της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του α γι α  
 σμα α α το ο ος σου ου της α φθο ο ο ρου ου  
 Μη η τρο ος εν τω να ω ω ω της δο  
 ο ξη ης σου ω ω φθη η η ης ω ως βρε ε ε  
 φος αγ κα λο φο ρου ου ου με ε ε ε νο ος  
 και ε πλη ρω ω θη τα α πα α αν τα α της  
 σης αι αι νε ε ε ε ε σε ε ως

ὥδῃ ἐ'

ω ς ει δε εν Η η σα ι ι ι ι ας σου υμ

βο ο λι ι ι κω ω ως εν θρο νω ε ε

ε πηρ με ε ε ε ε νω ω Θε ε ε ον υπ αγ

γε λωων δο ο ο ξης δο ο ρυ υ φο ρου ου ου με

ε ε ε ε νο ον ω τα α α α α α α α

λα ας ε βο ο ο α α ε ε ε γω ω προ

γαρ ει ει ει δο ον σω μα α του ου με νο ο ον Θε ε

ε ε ο ον φω το ο ος α α α νε σπε ε

ε ε ρου και ει ρη η η νης δε ε σπο ο ο ο ο

ο ζο ον τα

\* ἄλλη γραμμὴ  
 σω μα του ου με νο ον Θε ε ο ον

ῥδῆς'

βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι ι δω ω

ω ων ο ο πρε ε ε σβυ υς τοις ο φθαλ μοι οι οις το ο

σω τη η η ρι ι ι ο ον ο ο λα οι οι

οι οις ε ε πε ε ε στη εκ Θε ου Χρι στε συ υ

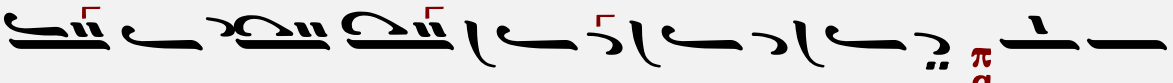
υ υ υ Θε ος μου ου

διασκευή

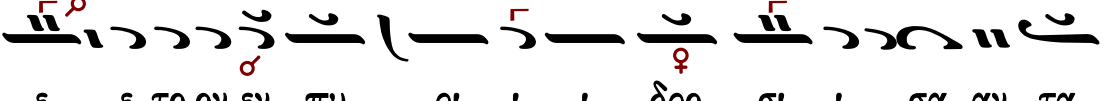
βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι ι δω

ω ων ο ο πρε ε ε σβυ υς τοις ο φθαλ μοι οι οις

το ο σω τη η η ρι ο ο ον ο ο ο λα

  
 οι οἷς ε πε ε ε ε ε στη η <sup>π</sup>ε εκ Θε  
  
 ου Χρι στε συ υ υ υ υ Θε ος μου ου <sup>η</sup>

ᾠδὴ ζ'

**C**   
 ε ε το ον εν πυ ρι ι ι δρο σι ι σα αν τα <sup>χ</sup>η

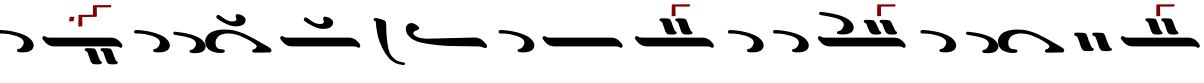
  
 παι αι αι δας θε ο ο λο ο γη η η σα α α αν

  
 τα ας <sup>π</sup>η και Παρ θε νω ω α κη ρα α α α τω εν

  
 οι κη η σα αν τα <sup>χ</sup>η Θε ο ο ον Λο ο ο ο γο

  
 ον υ μνου ου ου ου με εν <sup>π</sup>η ευ σεσ βως με ε ε

  
 λω ω δου ουουν τε ες <sup>π</sup>η ευ λο γη το ο ο ος ο Θε

  
 ο ο ος ο των πα α τε ε ε ε ρω ων η η μω



ων

ὡδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

μεν το ον Κυ υ υ ρι ι ι ο ον

Α στε ε κτω πυ ρι ι ι ι ε εν ω θε ε

ε εν τες οι οι θε ο σε βει ει ει α ας προ ο

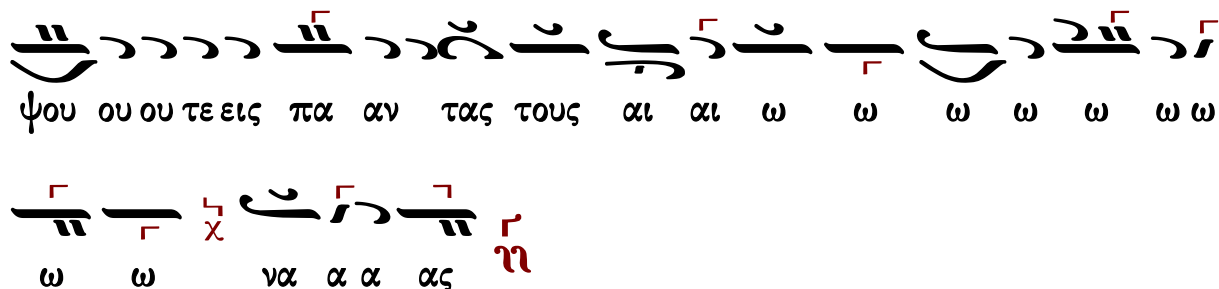
ε ε στω ω ω τες νε ε α νι ι ι ι αι

αι τη φλο γι δε μη η λω ω βη θε ε ε εν

τες θει ει ον υ υ μνο ον ε ε ε με ε ε ελ πο

ον ευ λο γει τε πα α αν τα α α τα α ε ε ερ

γα τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ον και υ περ υ υ



## Θ' ὁδὴ τῆς Ὑπαπαντῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἤχος γ'

Ἀκατάληπτόν ἐστι, τὸ τελούμενον ἐν σοί, καὶ ἀγγέλοις καὶ βροτοῖς, Μητροπάρθενε ἀγνή.

Ἀγκαλίζεται χερσίν, ὁ πρεσβύτες Συμεών, τὸν τοῦ νόμου ποιητήν, καὶ Δεσπότην τοῦ παντός.

Βουληθεὶς ὁ Πλαστουργός, ἵνα σῶσῃ τὸν Ἀδάμ, μήτραν ὥκησε τὴν σὴν, τῆς Παρθένου καὶ ἀγνῆς.

Γένος ἅπαν τῶν βροτῶν, μακαρίζει σε ἀγνή, καὶ δοξάζει σε πιστῶς, ὡς Μητέρα τοῦ Θεοῦ.

Δεῦτε ἴδετε Χριστόν, τὸν Δεσπότην τοῦ παντός, ὃν βαστάζει Συμεών, σήμερον ἐν τῷ ναῷ.

Ἐπιβλέπεις πρὸς τὴν γῆν, καὶ ποιεῖς τρέμειν αὐτήν, καὶ πῶς γέρων κεκμηκώς, σὲ κατέχει ἐν χερσὶ;

Ζήσας ἔτη Συμεών, ἕως εἶδε τὸν Χριστόν, καὶ ἐβόα πρὸς αὐτόν. Νῦν ἀπόλυσιν ζητῶ.

Ἡ λαβὶς ἡ μυστικὴ, ἡ τὸν ἄνθρακα Χριστόν, συλλαβοῦσα ἐν γαστρί, σὺ ὑπάρχεις Μαριάμ.

Θέλων ἐννηθρώπησας, ὁ προάναρχος Θεός, καὶ ναῷ προσφέρεσαι, τεσσαρακονθήμερος.

Κατελθόντ' ἐξ οὐρανοῦ, τὸν Δεσπότην τοῦ παντός, ὑπεδέξατο αὐτόν, Συμεών ὁ ἱερεὺς.

Λάμπρυνόν μου τὴν ψυχὴν, καὶ τὸ φῶς τὸ αἰσθητόν, ὅπως ἴδω καθαρῶς, καὶ κηρύξω σε Θεόν.

Ἐν νόμῳ σκιᾶ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν διανοῖγον, ἅγιον Θεῷ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρὸς ἀνάρχου Υἱόν, πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρῳ, μεγαλύνομεν.

Μητροπάρθενε ἀγνή, τί προσφέρεις τῷ ναῷ, νέον βρέφος ἀποδούς, ἐν ἀγκάλαις Συμεών;

Ἐν νόμῳ σκιᾶ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν διανοῖγον, ἅγιον Θεῷ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρὸς ἀνάρχου Υἱόν, πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρῳ, μεγαλύνομεν.

Νῦν ἀπόλυσιν ζητῶ, ἀπὸ σοῦ τοῦ πλαστοουργοῦ, ὅτι εἶδόν σε Χριστέ, τὸ σωτήριόν μου φῶς.

Τοῖς πρὶν νεογνῶν τρυγόνων ζευγος, δυάς τε ἦν νεοσσῶν, ἀνθ' ὧν ὁ θεῖος Πρέσβυς, καὶ σώφρων Ἄννα προφῆτις, τῷ ἐκ Παρθένου τεχθέντι, καὶ οἷῳ γόνυ Πατρός, ἐν τῷ ναῷ προσιόντι, λειτουργοῦντες ἐμεγάλυνον.

Ὅν οἱ ἄνω λειτουργοί, τρόμῳ λιτανεύουσι, κάτω νῦν ὁ Συμεὼν, ἀγκαλίζεται χερσί.

Τοῖς πρὶν νεογνῶν τρυγόνων ζευγος, δυάς τε ἦν νεοσσῶν, ἀνθ' ὧν ὁ θεῖος πρέσβυς, καὶ σώφρων Ἄννα προφῆτις, τῷ ἐκ Παρθένου τεχθέντι, καὶ οἷῳ γόνυ Πατρός, ἐν τῷ ναῷ προσιόντι, λειτουργοῦντες ἐμεγάλυνον.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἡ τῇ φύσει μὲν Μονάς, τοῖς προσώποις δὲ Τριάς, φύλαττε τοὺς δούλους σου, τοὺς πιστεύοντας εἰς σέ.

Ἀπέδωκάς μοι ἐβόα Συμεὼν, τοῦ σωτηρίου σου Χριστέ ἀγαλλίασιν' ἀπόλαβέ σου τὸν λάτριν, τὸν τῇ σκιᾷ κεκμηκότα, νέον τῆς χάριτος, ἱεροκήρυκα μύστην, ἐν αἰνέσει μεγαλύνοντα.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Θεοτόκε ἡ ἐλπίς, πάντων τῶν χριστιανῶν, σκέπε φρούρει φύλαττε, τοὺς ἐλπίζοντας εἰς σέ.

Ἱεροπρεπῶς ἀνθωμολογεῖτο, Ἄννα ὑποφητεύουσα, ἡ σώφρων καὶ ὁσία, καὶ πρέσβυρα τῷ Δεσπότῃ, ἐν τῷ ναῷ διαρρήδην, τὴν Θεοτόκον δὲ ἀνακηρύττουσα, πᾶσι τοῖς παροῦσιν ἐμεγάλυνεν.

|                    |                         |
|--------------------|-------------------------|
| I.M.Σίμωνος Πέτρας | Κωνσταντίνου Παπαγιάννη |
|--------------------|-------------------------|

I.M.Σίμωνος Πέτρας

θ' ᾠδὴ

Ἦχος ἡ Γα

Ἀγγελικὸς Χορὸς, Ὁρθρὸς  
I. M. Σίμωνος Πέτρας  
Ἅγιος Όρος, 2001#

κα τα α λη πτον ε στι ι ι το ο τε

λου με νο ον εν σοι η και αγ γε ε λους και βρο

τοι οι οis Μη η τρο παρ θε νε ε α γνη η

Α γ κα λι ι ξε ται χερ σι ι ιν ο ο πρε

σβυ της Συ υ με ων τον του νο ο μου ποι η

τη η ην και αι Δε σπο οτην του ου παν τος

Β ου λη θεις ο Πλα στουρ γο ο ος ι ι να σω

ση τον Α δαμ μη τραν ω ω κη σε ε την ση η ην

τη ης Παρ θε ενου και αι α γνης

Γ ε νος α α παν τω ων βρο τω ων μα α κα ρι ζει

σε ε ε α γνη και δο ξα α ζει σε ε πι στω ως

ως μη τε ε ε ρα του ου Θε ου

Δ ευ τε ι ι δε τε ε Χρι στο ο ον το ον Δε σπο ο

την του ου παν τος **η** ον βα στα α ζει Συ υ με ω ω ων

ση με ρο ον εν τω να ω **η**

**Ε** πι βλε πεις προς την γη η ην και ποι εις

τρε μει ει ν αυ την **χ η** και πως γε ρων κε ε κμη κως σε

ε κα τε χει ε εν χει ρι **η**

**Ζ** η σας ε τη Συ με ω ων ε ε ως ει δε

το ον Χρι στον **η** και ε βο α προ ος αυ τον νυ υν α

πο ο λυ σι εν ζη τω **η**

**Η** λα βις η μυ υ στι κη η η η η τον

α αν θρα κα α Χρι στον **χ η** συλ λα βου σα ε εν γα

στρι ι ι συ υ υ πα αρχεις Μαα ρι αμ η

Θ ε λων εν ην θρω ω πη σα α ας ο ο προ α α

ναρ χοος Θε ος η και να ω προσ φε ερεσαι τε

εσ σα ρα κον θηη με ρος η

Κ α τελ θοντ εξ ου ρα νου ου ου το ον Δε σποτην

του ου παν τος η υ πε δε ε ξα το ο αυ τον

Συ με ων ο ι ι ε ρευς η

Λ αμ πυ νον μου την ψυ χη η ην και αι το φως το

αι αι σθη τον ο πως ι δω κα α θα ρω ως και

κη ρυ υ ξω σε Θε ον η

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα

τι ι δω με εν οι οι πι ι στοι παν αρσεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω <sup>π</sup> <sub>q</sub> δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με

νον Μη τρι <sup>χ</sup> <sub>q</sub> α πει ραν δρω με γα λυ υ νο μεν <sup>η</sup>

Μ η τρο παρ θε νε α γνη τι ι προ σφε ρεις εν να

ω <sup>χ</sup> <sub>q</sub> νε ον βρε φος α α πο δους εν αγ κα α λαις

Συ υ με ων <sup>η</sup>

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα

τι ι δω με εν οι οι πι ι στοι παν αρσεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γον α γιον Θεω <sup>π</sup>δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με

νον Μη τρι <sup>χ</sup>α πει ραν δρω με γα λυ υ νο μεν <sup>η</sup>

**Ν**υν α πο λυ σιν ζη τω ω ω α α πο σου του

πλα στουρ γου <sup>η</sup>ο τι ει δον σε ε Χρι στε τω σω

τη ρι ο ον μου φως <sup>η</sup>

**Τ**οις πρι ν νε ο γνων τρυ γονων ζευ γος <sup>χ</sup>δυ ας τε η

ην νε οσ σων <sup>π</sup>αν θων ο θει ος πρε ε σβυς και σω φρον Α αν

να προ φη η τις <sup>π</sup>τω εκ Παρ θε ε νου τε χθεν τι και

οι ω γο ο νω Πα τρος <sup>χ</sup>εν τω να ω προ σι ον



τι λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ νον

Ο ν ο ι α ν ω λ η ι τ ο υ ρ γ ο ι σ ι σ ι τ ρ ο μ ω λ ι ι τ α

νε ευ ου σι κα τω νυν ο Συ με ω ω ων αγ

κα λι ζε ται αι χερ σι η

Τ
—
ⲡ
ⲓ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ
ⲕ
ⲛ
ⲧ
ⲧ
ⲛ
ⲟ

ην νε οσ σων
 
 αν θων ο θει ος πρε ε σβυς και σω φρον Α αν

να προφηη τις <sup>πρ</sup>τω εκ Παρ θε ε νου τε χθεν τι και

οι ω γο ο νω Πα προς εν τω να ω προσι ον

π λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ νον

















τι ἡ

Η τη φυ σει μεν Μο να α ας τοι οis προ σω

ποις δε ε Τρι ας ἡ φυ λατ τε τους δου ουλους σου ου

ου του ους πι στευ ον ταας εις σε ἡ

Α πε δω κας μοι ε βο α Συ με ων χῡ του σω τη

ρι ουσου Χρι στε ε α γα αλ λι α α σιν πῡ α πο λα βε ε σου

τον λα α τριν τον τη σκι α κε εκμη κο ο ο τα πῡ νε ε ον

της χα ρι τος ι ε ρο κη ρυ κα μυ υ υ στην χῡ

εν αι νε σει με γα λυ υ νο ον τα ἡ

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων α μην ς η

Θ ε ο το κε η ελ πι ι ις πα αν των των

Χρι στι ι α νων η σκε πε φρου ου ρει φυ υ λατ τε ε

ε του ους ελ πι ζον τα ας εις σε η

ε ρο πρε πως ανθρωμο λο γει ει το η Αν να υ

πο φη τευ ου σα η σω φρων και ο σι ι α π και πρε σβυ

ρα α τω Δε σπο τη η εν τω Να ω δι ι αρ ρη η η δην π

την Θε ο το κον δε α να κη ρυτ του σα η πα α σι

τοις πα ρου σιν ε με γα α λυ υ νε η

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

κα τα λη πτον ε στι ι ι το ο τε λου ου με

νο ον εν σοι και αγ γε λους και βρο τοι οι ος Μη

η τρο πα αρ θε νε ε α γνη

α γ κα λι ζεται χερ σι ιν ο πρε σβυ υ της Συ υ

με ων τον του νο μου ποι η τη ην και Δε σπο την

του ου παν τος

Β ου λη θεις ο πλα στουρ γο ος ι ι να σω ω ση το

ον Α δαμ μη τραν ω κη σε την ση ην της Παρ θε ε νου

και αι α γνης

17 Τὰ μεγαλυνάρια τῆς ᾠδῆς ταύτης ἐτονίσθησαν εἰς ἀμιγῆ τρίσημον ρυθμόν, ἐνῶ τὰ τροπάρια εἰς τὸν συνήθη τονικὸν τοιοῦτον.

Γ ε νος α παν των βρο τω ων μα κα ρι ι ζει σε ε

α γνη η και δο ξα ζει σε πι στω ως ως Μη τε ρα του ου

Θε ου η

Δ ευ τε ι δε τε Χρι στο ον το ον Δε σπο ο την του ου παν

τος η ον βα στα ζει Συ με ω ων ση με ρον εν τω ω να ω η

Ε πι βλε πεις προς την γη η ην και ποι ει εις

τρε μει ει ν αυ την η και πω ως γε ρων κε κμη κω ως σε

κα τε χει εν χερ σι η

Ζ η σας ε τη Συ με ω ων ε ως ει δε τον Χρι στον α

νε βο α προς αυ το ον νυν α πο ο λυ σι ιν ζη τω η

Η λα βις η μυ στι κη η η η τον αν θρα κα α Χρι

στον ἡ συλ λα βου σα εν γαστρι ι συ υ πα αρχεις Μα α

ρι αμ ἡ

Θ ε λων ε εν ην θρω πη σας ο προ α ναρχος Θε ος και

να ω προσ φε ρεσαι τεσ σα ρα κον θη μερος ἡ

Κ α τελ θοντ εξ ου ρα νου ου τον Δε σπο ο την του ου

παν τος ἡ υ πε δε ξα το αυ το ον Συ με ω ων ο

ι ι ε ρευς ἡ

Λ αμ πρυ νον μου την ψυ χη ην και το φως το αι σθη τον

ο πως ι δω κα θα ρως και αι κη ρυ υ ξω σε Χρι ι

στον ἦ

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα

τι ι δω μεν οι πι στοι παν αρ σεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου

με νον Μη τρι α πει ρα α αν δρω με γα λυ υ νο

ο μεν ἦ

Μ η τρο παρ θε νε ε α γνη η τι προσ φε ρεις τω να ω

νε ον βρε φος α πο δου ουσ εν αγ κα α λαις Συ υ με

ων ἦ

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι <sup>♀</sup>χ<sub>q</sub> τυ υ πον κα

τι ι δω μεν οι πι στοι <sup>♂</sup>η παν αρ σεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω <sup>π</sup>q δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον <sup>χ</sup>q πρω το το κου

με νον Μη τρι α πει ρα α αν δρω <sup>χ</sup>q με γα λυ υ νο

<sup>♂</sup>ο <sup>♂</sup>μεν <sup>η</sup>

Ν υν α πο λυσιν ζητω α πο σου του πλα στουρ γου <sup>χ</sup>q ο τι

ει δον σε Χρι στε ε το ο σω τη η ρι ο ον μου φως <sup>η</sup>

Τ οις πρι ιν νε ο γνων τρυ γο νων ζευ γος δυ ας τε η

ην νε ο σσων <sup>π</sup>q ανθ ων ο θει ος πρε σβυς και σω φρων Α αν να



προφηητις π<sup>q</sup> τω εκ Παρ θε ε νου τε χθεν τι και οι

ω γο ο νω Πα τρος χ<sup>q</sup> εν τω να ω προσ ι ο ο ον

τι χ<sup>q</sup> λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ υ νον η

Ο ν οι α νω λει τουρ γοι οι τρο μω λι ι τα νευ ου σι φ<sup>q</sup> κα τω

νυν ο Συ με ω ων αγ κα λι ζε ται αι χερ σι η

Τ<sup>q</sup> οις πρι ιν νε ο γνων τρυ γο νων ζευ γος δυ ας τε η

ην νε ο σ σων π<sup>q</sup> ανθ ων ο θει ος πρε σβυς και σω φρων Α αν να

προφηητις π<sup>q</sup> τω εκ Παρ θε ε νου τε χθεν τι και οι

ω γο ο νω Πα τρος χ<sup>q</sup> εν τω να ω προσ ι ο ο ον

τι χ<sup>q</sup> λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ υ νον η

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευμα τι

Η τη φυ σει μεν μο να α ας τοι οις προσ ω ποις δε ε

Τρι ας φυ λατ τε ε τους δου ουλους σου τους πι στευ οντα ας

εις σε

Α πε δω κας μοι ε βο α Συ με ων του σω τη

ρι ου σου Χρι στε ε α γα αλ λι α α σιν α πο λα βε ε

σου τον λα τριν τον τη σκι α α κε κμη κο ο τα νε ε ον

της χα ρι τος ι ε ρο κη ρυ κα μυ υ υ στην εν

αι νε σει με γα λυ υ νο ον τα

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων α μην ᾠ

Θ ε ο το κε η η ελ πι ι ις παν των τω ων Χρι

στι ι α νων ᾠ σκε πε φρου ου ρει φυ υ λατ τε τους ελ πι

ζον τας εις σε ᾠ

ε ρο πρε πως ανθ ω μο λο γει το ᾠ Αν να υ πο

φη τευ ου ου σα π η σω φρων και ο σι α και πρε σβυ

ρα τω ω Δε σπο τη ᾠ εν τω να ω ω δι αρ ρη η δην π την

Θε ο το κον δε α να κη ρυτ του σα ᾠ πα σι τοις πα

ρου σιν ε με γα α λυ υ νε ᾠ

Καταβασία θ' ᾠδῆς

ᾠχος γ'

Θεοτόκε ἡ ἑλπίς, πάντων τῶν χριστιανῶν, σκέπε φρουρεί φύλαττε, τοὺς ἐλπίζοντας εἰς σέ.  
**Ἐν νόμῳ** σκιᾶ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν  
 διανοῖγον, ἅγιον Θεῷ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρός ἀνάρχου Υἱόν,  
 πρωτοτοκοῦμενον Μητρί, ἀπειράνδρῳ, μεγαλύνομεν.

Ἀργή

## Πέτρου Λαμπαδαρίου (Σύντομος)

Θ ε ο το ο κε η η ελ πι ι ις παν των  
τω ων Χρι στι ι α α νων η σκε πε φρου ου ρει φυ  
υ λατ τε ε ε του ους ελ πι ι ζον τα  
ας ει εις σε η

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα  
τι ι δω με εν οι οι πι ι στοι παν αρσεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω <sup>π</sup> <sub>9</sub> δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με

νον Μη τρι α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα λυ νο με

ε ε εν <sup>η</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Σύντομος)

ὥδ' ἔ'

Ἦχος ἡ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.74/521\*

Θ <sup>χ</sup> <sup>♀</sup> ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις <sup>η</sup> παν

των τω ων χρι στι α νων <sup>η</sup> σκε πε φρου ου ρει φυ

υ λα ατ τε ε ε <sup>η</sup> του ους ελ πι ι ζον τας ει

σε <sup>η</sup>

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον

κα τι ι δω μεν οι πι στοι παν αρ σεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου

με νον Μη τρι α πει ρα α αν δρω με γα λυ υ νο

ο μεν

τὸ τέλος

με γα λυ νο με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου (Ἀρχή)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ἡ Γα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.50#

Θ ε ο το ο ο κε η η η η η η η

ε ελ πι ι ι ι ι ις πα αν των

τω ω ω ω ων χρι στι ι ι α α νων η σκε πε φρου

ου ου ρει ει φυ υ υ υ υ υ λα ατ τε

ε ε ε ε ε η του ους ελ πι ι ι ι ι ζον τα

α ας ει εις σε η

Ε ν νο ο μω σκι ι α α και γρα α αμ μα τι ι ι

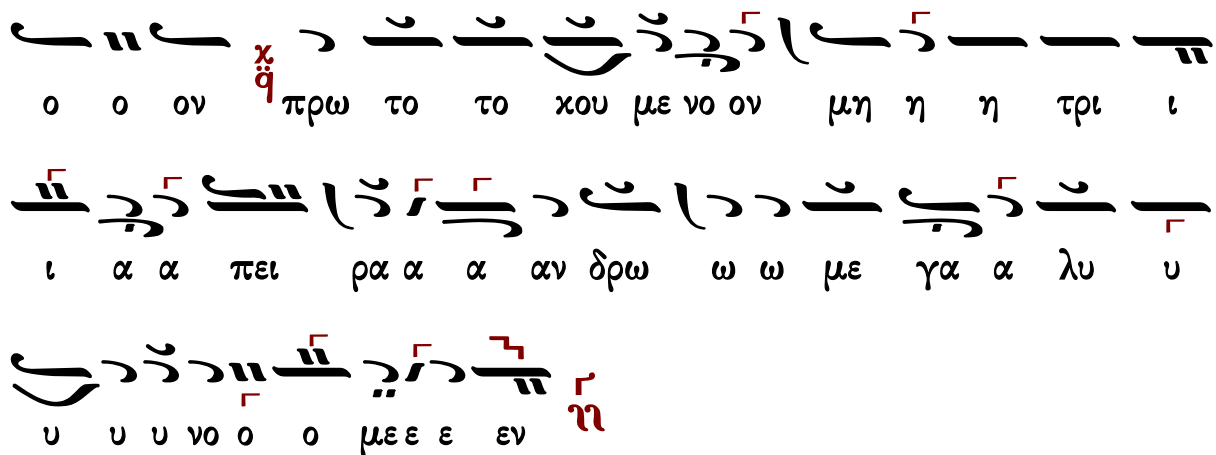
ι τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι

ι στοι οι π q πα αν α αρ σεν το την μη τρα αν δι ι α

νοι οι οι οι γο ο ον α α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε

ω ω π q δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον λο ο ο

ο γον x q πα προς α να α α αρ χου ου υι υι υι

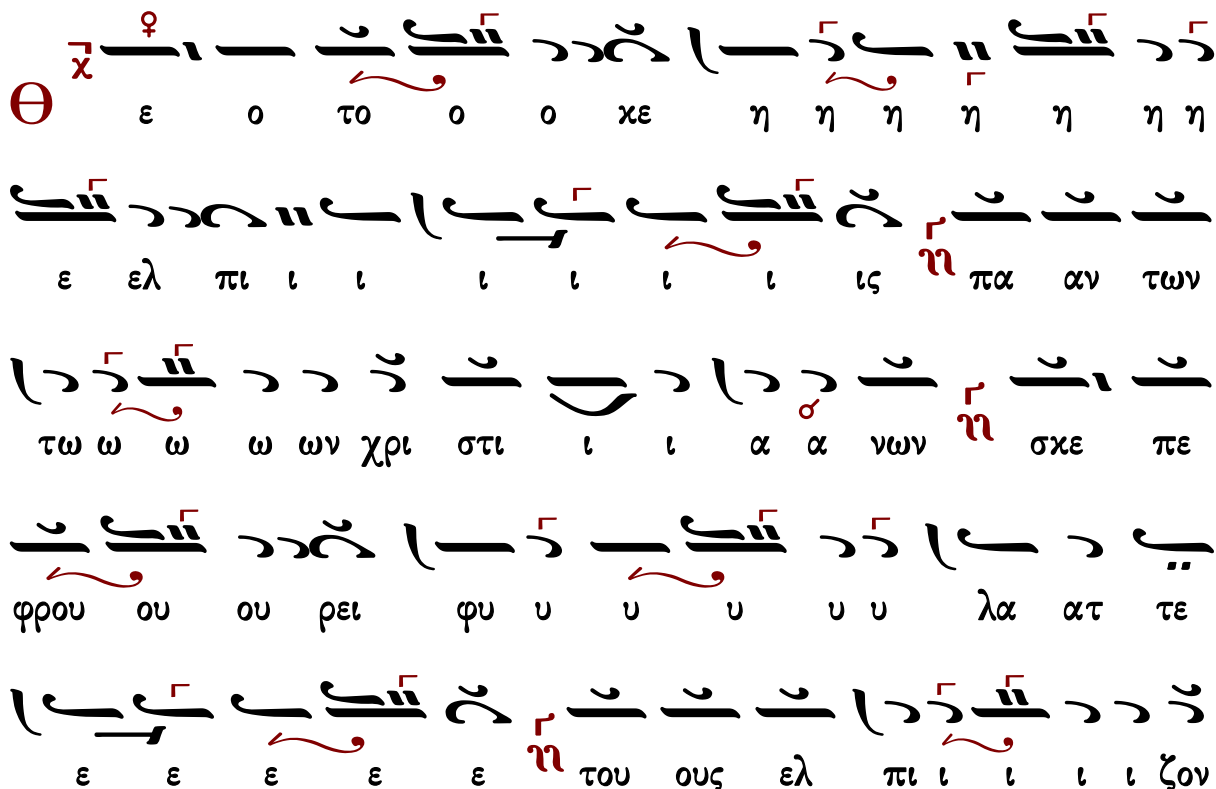


## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Άρχή)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ἠ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2002 σ.75/522\*





τά α ας ει εις σε η

τὸ αὐτὸ συντετμημένον

Θ ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις η πα

αν των τω ων χρι στι ι α α νων η σκε πε φρου

ου ρει φυ υ λα ατ τε ε ε η του ους ελ πι

ι ζον τα ας ει εις σε η

ε ν νο ο μω σκι ι α α και γρα α αμ μα τι ι ι

ι τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι

ι στοι οι πα αν α αρ σεν το την μη τρα αν δι ι α

νοι οι οι οι γο ο ον α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε

ω ω δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον Λο ο

ο ο γον <sup>χ</sup> Πα τρος α να α α αρ χου ου Υι υι

υι ο ο ον <sup>χ</sup> πρω το το κου με νο ον Μη η η τρι

ι ι α α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα α λυ

υ υ υ υ νο ο ο με ε ε εν <sup>η</sup>

ἄλλη γραμμὴ

\* γον α α γι ο ον Θε ε ω ω <sup>π</sup>

# Τῶν Κυριακῶν Τελώνου-Φαρισαίου καὶ Τυρινῆς

Ἐάν ἐγένετο ἡ ἀπόδοσις τῆς ἑορτῆς τῆς Υπαπαντῆς

ἤχος πλ.β'

α Ὡς ἐν ἡπείρῳ πεζεύσας ὁ Ἰσραήλ, ἐν ἀβύσσῳ ἵχνεσι, τὸν διώκτην Φαραῶ, καθορῶν ποντούμενον, Θεῷ ἐπινίκιον ὠδὴν, ἐβόα, ἄσωμεν.

γ Οὐκ ἔστιν ἅγιος ὡς σύ, Κύριε ὁ Θεός μου, ὁ ὑψώσας τὸ κέρας, τῶν πιστῶν σου ἀγαθέ, καὶ στερεώσας αὐτούς, ἐν τῇ πέτρᾳ τῆς ὁμολογίας σου.

δ Χριστός μου δύναιμι, Θεὸς καὶ Κύριος, ἡ σεπτὴ Ἐκκλησία θεοπρεπῶς, μέλπει ἀνακράζουσα, ἐκ διανοίας καθαρὰς, ἐν Κυρίῳ ἑορτάζουσα.

ε Τῷ θείῳ φέγγει σου ἀγαθέ, τὰς τῶν ὀρθριζόντων σοὶ ψυχὰς, πόθῳ καταύγαυσον δέομαι, σὲ εἰδέναι Λόγε Θεοῦ, τὸν ὄντως Θεόν, ἐκ ζόφου τῶν πταισμάτων ἀνακαλούμενον.

ς Τοῦ βίου τὴν θάλασσαν, ὑψουμένην καθορῶν, τῶν πειρασμῶν τῷ κλύδωνι, τῷ εὐδίῳ λιμένι σου προσδραμῶν, βοῶ σοί, ἀνάγαγε ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου πολυέλεε.

ζ Δροσοβόλον μὲν τὴν κάμινον εἰργάσατο, ἄγγελος τοῖς ὁσίοις παισί, τοὺς Χαλδαίους δὲ καταφλέγον πρόσταγμα Θεοῦ, τὸν τύραννον ἔπεισε βοᾶν. Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Ἐκ φλογὸς τοῖς ὁσίοις, δρόσον ἐπήγασας, καὶ δικαίου θυσίαν, ὕδατι ἔφλεξας, ἅπαντα γὰρ ὀρᾷς Χριστέ, μόνῳ τῷ βούλεσθαι. Σὲ ὑπερυψοῦμεν εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Αργαὶ

Σύντομοι

ὥδῃ α'

Ἦχος λ π̣ Ḅ —

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Αναστασιματάριον  
1905 σ.283#

ω ς εν η πει ρω πε ζευ σας ο Ι σρα ηλ εν

— υ ι χ ν ε σ ι τ ο ν δι ω κ τ η ν Φ α ρ α ω κα θ ο


 ρων πον του με νον


 βο α α σω ω με εν 6 A ὠδὴ γ'

Ο υχ ε στιν Α γι ος ως συ Κυ ρι ε ο Θε

ος μου ο υ ψω σας το κε ρας των πι στων σου Αγα θε

και στε ρε ω σας η μας χορὸς ἀ' ἐν τῇ πετρα τῆς ο

— — — — —  
μο λο γι α ας σου

Χριστος μου δυναμις Θεος και Κυριος η σε

πτῆ Ἐκ κλή σι α θε ο πρε πως μελ πει α να κρα

ζου σα εκ δι α νοι ας κα θα ρας εν Κυ ρι ω

ε ορ τα ζουουσα

π Δ

ὠδὴ ε'

Τ ω θει ω φεγ γει σου Α γα θε τας των ορ θρι ζον

των σοι ψυ χας πο θω κα τα αυ γα σον δε ο μαι σε ει

δε ναι Λο γε Θε ου τον ον τως Θε ον εκ ζο φου των

πται σμα α των α να κα λου με ε νον

ὠδὴ στ'

Τ ου βι ου την θα λασ σαν υ ψου με νην κα θο ρων

των πει ρα σμων τω κλυ δω νι τω ευ δι ω λι

με νι σου προσ δρα μων βο ω σοι α να γα γε εκ φθο

ρας την ζω ην μου Πο λυ ε λε ε ε

π Δ

ὠδὴ ζ'

Δ ρο σο βο λον μεν την κα μι νον ειρ γα σα το Αγ

γε λος τοις ο σι οις παι σι τους Χαλ δαι ους δε κα τα φλε

γον προσ τα γμα Θε ου τον τυ ραννον ε πει σε βο αν

ευ λο γη τος ει ο Θε ος ο των πα τε ρων η μω

ων ωδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

Ε κ φλο γος τοις ο σι ι ι οις δρο σον ε πη

γα σας και δι και ου θυ σι αν υ υ δα τι ε φλε

ξας α παν τα γαρ δρας Χρι στε μο νω τω βο υ λε σθαι

σε υ περ υ ψου μενεις παν τας του ους αι ω ω να

α α α ας

## Άργαι

Πέτρου Βυξαντίου

ὠδὴ α'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.12\*

ω ς εν η πει ρω ω πε ζε ε ε ευ σα α

ας ο Ισ ρα α ηλ εν α βυσσω ω ι ι χνε ε σι τον

δι ω ω ω κτην Φα ρα α ω κα θο ρω ων πο ο

ον του ου με ε ε νον Θε ω ω ω ε πι ι

ι νι ι κι ι ο ο ον ω δη ην ε βο ο ο

α α α α σω ω με εν

ὠδὴ γ'

Ο υχ ε στιν α α γι ος ω ως συ Κυ ρι ι

ε ο ο Θε ε ο ο ος μου ο υ ψω ω

ω σα ας το ο ο κε ε ε ρας τω ω ων πι στω ων

σου ου ου α α γα α α θε και στε ρε ω ω

ω ω σα ας η η μας χορός α' εν τη πε ε ε ε ε

τρα τη η ης ο μο ο ο λο ο γι ι α ας σου ου

ὠδὴ δ'

Χ ρι στο ος μου ου ου δυ υ να α α μιν Θε

ο ο ος και αι Κυ υ ρι ι ο ος η σε πτη Εκ

κλη σι ι ι ι α α α θε ο πρε ε πω ως μελ



πει α να κρα α α ζου σα εκ δι α νοι α α ας

κα α θα α α ρας εν Κυ ρι ι ι ω ε ε

ε ο ορ τα α ζου ου σα α

ὠδὴ ε'

Τ ω θει ω φε ε ε εγ γει ει ει σου α γα α

θε τας των ορ θρι ζον των σοι ψυ υ υ χας πο θω ω κα

τα αυ γα α σον δε ο μαι αι σε ει δε ναι Λο ο

ο γε ε Θε ε ε ου τον ο ο ο ον τω ως

Θε ε ον ε εκ ζο ο ο ο ο φου των πται σμα α α

τω ων α να α α κα α λου ου με ε νο ον

ὠδὴ ε'

Τ ου ου βι ου ου την θα α α λασ σαν υ υ ψου

με ε νη η ην κα α θο ο ο ρων των πει ρα

σμων τω ω κλυ υ δωω νι τω ευ δι ω ω λι με ε ε

ε νι ι ι σου προσ δρα α μω ων βο ω ω

ω ω σοι α α α να α γα α γε εκ φθο ρα α α

α ας την ζω η η ην μου πο ο ο λυ υ ε ε

λε ε ε ε

ὠδὴ ζ'

Δ ρο σο βο λον μεν τη ην κα α μι νον ει ει ειρ γα

α σα α το α α αγ γε ε ε λος τοι οι οισ ο σι ι

ι ι ι οι οισ παι αι αι σι τους Χαλ δαι αι ου

ους δε κα τα φλε γον προ ο οσ τα γμα Θε ε ου ου τον

τυ υ υ υ ραν νο ον ε ε πει ει ει σε ε βο

ο ο αν ευ λο γη το ο ο ο ος ει ο Θε

ο ο ος ο τω ω ων πα α τε ε ε ε ε ρω

ων η η η μων

ὠδή η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

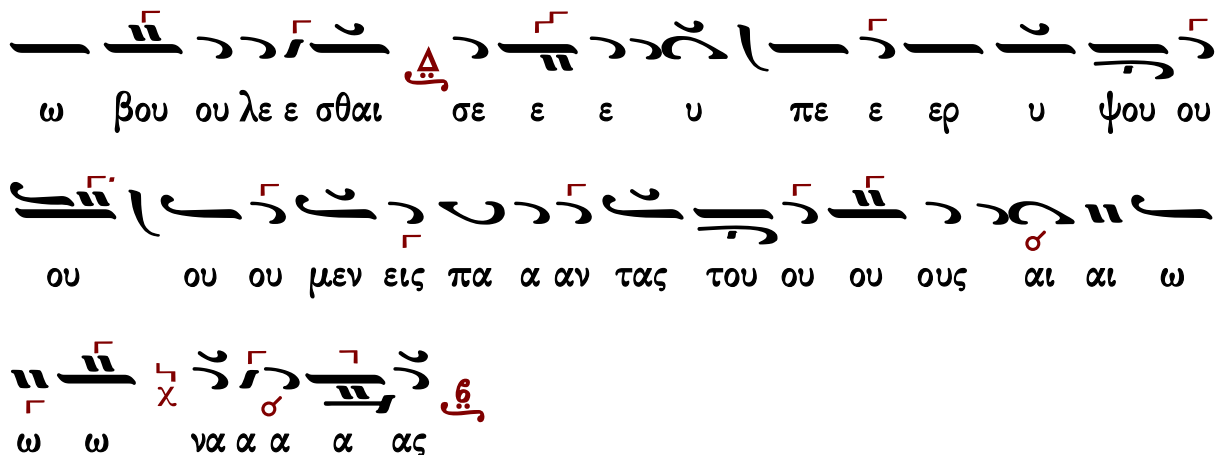
εν τον Κυ υ υ ρι ον

Ε κ φλο γος τοι ο ις ο ο σι ι ι ο ις δρο ο ο σο ο ον

ε ε πη η γα α σα ας και δι και ου ου θυ υ σι

ι ι αν υ υ υ δα α α τι ι ε ε φλε ε ξα

ας α α παν τα γα αρδρας Χρι ι στε ε μο νω τω ω



## Τιμιωτέρα ἡχος πλ.β'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος πλ.β'

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῇρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α  
 φθο ο ρως Θε ον Λο γο ον τε κου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε με γα λυ νο ο με εν

Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος πλ.β'

Θεὸν ἀνθρώποις ἰδεῖν ἀδύνατον, ὃν οὐ τολμᾷ ἁγγέλων ἀτενίσαι τὰ τάγματα, διὰ σοῦ δὲ Πάναγνε ὥράθη βροτοῖς, Λόγος σεσαρκωμένος, ὃν μεγαλύνοντες, σὺν ταῖς οὐρανίαις στρατιαῖς, σὲ μακαρίζομεν.

Σύντομος

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Βυζαντίου

## Σύντομος

ὥδῃ θ'

ἦχος λ π Β ς

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Αναστασιματάριον  
1905 σ.292#

Θ ε ο ν α ν θ ρ ω ω π ο ι ς ι δ ε ι ν α δ υ ν α τ ο ν ο ν  
ου τολ μα Α γ γε λ ω ν α τε ν ι σαι τα τα γ μα τα δι α  
σου δε παν α γνε ω ρ α θ η β ρ ο τ ο ι ς Λ ο γ ο ς σε σα ρ κ ω  
με ν ο ς ο ν με γ α λ υ ν ο ν τ ε ς σ υ ν τ α ι ς ο υ ρ α ν ι α ι ς  
στ ρ α τ ι α ι ς σε μα κα ρ ι ι ζ ο ο με ε εν

Ἀργὴ Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ θ'

ἦχος λ π Β ς

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.78#

Θ ε ο ν αν θρω ω ποι ο ις ι δει ει ει ν α α δυ  
 υ να α το ο ν ο ν ου τολ μα α αγ γε ε λων α τε  
 νι σαι τα τα γμα τα α δι α σου ου δε ε Πα αν  
 α γνε ε ω ω ω ρα α α θη βρο ο τοι ο ις Λο γο ος σε  
 σα αρ κω ω με ε ε νος ο ο ο ν με γα α  
 α λυ υ νο ο ν τε ς συ υ υ ν ται ς ου ου ου ρα νι ι  
 ι ι ι αι ς στρα τι αι αι αι ς σε μα κα ρι ζο ο  
 με ε ε εν

Ἀρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ὠδὴ θ'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Τριώδιον Α'  
 2003 σ.15\*

Θ ε ον αν θρω ω ω ω ποι οis ι δει ει ειν

α α δυ υ να α το ον ον ου τολ μα α αγ γε ε ε

λων α τε νι σαι τα ταγμα τα α δι α σου ουδε

ε πα α αν α γνε ω ω ω ρα α αθη βρο ο τοι οis

Λο γο οs σε σα αρ κω ω με ε ε νοs ο ο

ον με γα α α λυ υ νο ον τεs συν ταιs ου ρα νι ι

ι ι ι αιs στρα τι αιs σε μα κα α ρι ι ζο ο

με ε εν

καὶ οὕτω

\* συν ταιs ου ρα νι αι αι αιs στρα α τι ι ι

αιs σε ε ε ε μα α α κα α ρι ι ζο ο με ε





# Τῆς Κυριακῆς τοῦ Ἀσώτου

Ἐὰν ἐγένετο ἡ ἀπόδοσις τῆς ἐορτῆς τῆς Ὑπαπαντῆς

ἤχος β'

- α **Τ**ὴν Μωσέως ὥδην, ἀναλαβοῦσα βόησον ψυχή. Βοηθὸς καὶ σκεπαστής, ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν, οὗτός μου Θεὸς καὶ δοξάσω αὐτόν.
- γ **Σ**τειρωθέντα μου τὸν νοῦν, καρποφόρον ὁ Θεὸς ἀνάδειξόν με, γεωργὲ τῶν καλῶν, φυτουργὲ τῶν ἀγαθῶν, τῇ εὐσπλαγχνίᾳ σου.
- δ **Τ**ὴν ἐκ Παρθένου σου γέννησιν, ὁ προφήτης προβλέπων, ἀνεκήρυττε βοῶν· Τὴν ἀκοήν σου ἀκήκοα καὶ ἐφοβήθην, ὅτι ἀπὸ Θαιμάν, καὶ ἐξ ὄρους ἁγίου κατασκίου, ἐπεδήμησας, Χριστέ.
- ε **Τ**ῆς νυκτὸς διελθούσης, ἤγγικεν ἡ ἡμέρα, καὶ τὸ φῶς τῷ κόσμῳ ἐπέλαμψε· διὰ τοῦτο ὑμνεῖ σε τάγματα ἀγγέλων καὶ δοξολογεῖ σε Χριστέ ὁ Θεός.
- ς **Β**υθῷ ἁμαρτημάτων, συνέχομαι Σωτήρ, καὶ ἐν πελάγει τοῦ βίου βυθίζομαι ἀλλ' ὥσπερ τὸν Ἰωάνν ἐκ τοῦ θηρός, καὶ τῶν παθῶν ἀνάγαγε, καὶ διάσωσόν με.
- ζ **Τ**ὰ Χερουβὶμ μιμούμενοι, Παῖδες, ἐν τῇ καμίνῳ ἐχόρευον βοῶντες· Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεός, ὅτι ἐν ἀληθείᾳ καὶ κρίσει, ἐπήγαγες ταῦτα πάντα διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν, ὁ ὑπερύμνητος καὶ δεδοξασμένος εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.
- Αἰ**νοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Τ**ὸν ἐν τῇ βάτῳ Μωσῆ, τῆς Παρθένου τὸ θαῦμα, ἐν Σιναίῳ τῷ ὄρει προτυπώσαντα ποτέ, ὑμνεῖτε, εὐλογεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Αργαί

## Σύντομοι

ὥδη α'

Ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.320#

**Τ** ην Μω σε ε ως ω δην α να λα βου σα βο

η σονψυχη βο ο η θος και σκε πα στης ε γε νε το ο

μοι εις σω τη ρι ι αν ου τος μου Θε ος και δο ξα

σω αυτον

ᾠδὴ γ'

Τει ει ρω θεν τα μου τον νουν καρ πο φο ρον ο Θε

ος α να α δει ξον με γε ωρ γε ε των κα λων χορὸς α'

φυ τουρ γε των α γα θων τη ευσπλαγ χνι α σου

ᾠδὴ δ'

Την εκ Παρ θε ε νου σου γεν νη σιν ο Προ φη η της

προ βλε πων α αν ε κη ρυτ τε βο ων την α κο ην

σου α κη κο α και ε φο βη θην ο ο τι α πο Θαι मान

και εξ ο ρους α γι ου κατα σκι ι ου επ ε δη μη

σας Χρι στε

ὠδὴ ε'

Τ ης νυ κτος δι ελ θου σης η ηγ γι κεν η η με ρα

και το φως τω κο σμω επ ε λαμψε δι α του ου το υ

μνει σε ταγ μα τα Αγ γε ε λων και δο ξο λο γει σε Χρι

στε ο Θε ος

ὠδὴ ζ'

Β υ θω α μαρ τη μα των συν ε χο μαι Σω τηρ και εν

πε λα γει του βι ι ου ου βυ θι ζομαι αλλ ω ωσ περ τον

Ι ω ναν εκ του θη ρος κα με των πα θων α να α

γα γε και δι α σωσον με

ὠδὴ ζ'

Τ α Χε ρου βιμ μι μου μενοι παι αι δες εν τη κα μι νω

ε χο ρευ ο ον βο ων τες <sup>π</sup> ευ λο γη τος ει ο Θε ος <sup>π</sup>

ο ο τι εν α λη θει α και χρι σει επ η η γα γες ταυ <sup>δ</sup> <sup>σ</sup>

τα πα αν τα δι α τας α μαρ τι ας η μων ο υ περ

υ μνητος και δε δο ξα σμε νος εις παν τας τους αι ω νας <sup>π</sup>

ὥδὴ ἡ'

<sup>Α</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν το ον <sup>π</sup>

Κυ ρι ον <sup>π</sup>

<sup>Τ</sup> ον εν τη βα α τω Μω ση <sup>Δ</sup> της Παρ θε ε νου το <sup>σ</sup>

θαυ μα εν Σι ναι ω τω ο ρει προ τυ πω σαν τα πο

τε <sup>π</sup> υ μνει τε ευ λο γει τε <sup>Δ</sup> και υ περ υ ψου <sup>σ</sup>

τε εις παν τας τους αι ω ω να α ας

## Αργαί

Πέτρου Βυζαντίου

ὠδὴ α'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.30\*

Την Μω σε ε ε ω ω ως ω ω δην α να λα βου

ου σα α α βο ο η σο ον ψυ υ υ χη βο η

θο ος και σκε πα α στης ε γε νε το ο ο ο μοι οι

οι ει εις σω ω τη ρι ι ι ι αν ου ου τος μου

Θε ε ος και αι δο ο ξα α α α σω ω α α

αυ τον

ὠδὴ γ'

C τει ει ρω ω θεν τα α μου ου το ο ον νου ου ου ουν

κα αρ πο ο φο ρο ον ο ο Θε ε ε ος α

να δει ει ει ξο ο ον με ε γε ωρ γε ε ε ε

τω ω ων κα α λων χορός α' φυ τουρ γε ε των α γα θω ων

τη η ε ευσπλαγχνη α σου ου ὠδή δ'

Την εκ Παρ θε νου σου ου ου γεν νη η σιν ο προ φη η

τη η ης προ βλε ε ε πων α α νε ε κη ρυ υτ τε

ε βο ο ο ων την α κο η η ην σου ου α

κη κο ο α α α και αι ε ε φο βη η η η θην

ο ο τι α α πο Θαι αι μαν και εξ ο ρους α

γι ι ου κα τα σκι ι ι ου ου ε ε πε ε

ὥδ' ἔ

ὠδὴ 5'



ου ου χει μα ζο μαι αι π α αλλ ω ω σπερ τον Ι ι

ω ω ναν ε εκ του ου θη η η ρος κα με ε

καὶ αἱ διὰ σωσομένων με

Τ α Χ ε ρ ο υ ο υ β ι μ μ ι μ ο υ μ ε ε ν ο ι π α ι α ι α ι α ι δ ε ε

— — “ ∩ ∩ ( ζ ρ ρ ρ π ε χ ο ρ ευ ο

ες ε εν τη η κα μι ι ι ι νω ε χο ρευ ο

ο ον βο ω ω ων τες ευ λο ο γη η τος ει ει ο


  
 0    Θ ε    ε    ε    ος    π    ο    ο    τι    εν    α    λη    θει    α    α    α

καὶ χρι  
ι ι σει  
ε πη γα  
γε ες τας  
τας πα α

αν τα α δι α τας α μαρ τι ι ι ι α

ας η η η μων ο υ περ υ υ μνη το ο ο

ο ο ο ο ο ο ο ος και δε δο ξα σμε ε ε

ε νος εις πα αν τας του ους αι ω ω ω ω νας ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ ρι ο ον

Τ ον εν τη βα α α τω Μω ω ση της Παρ θε ε ε

νου ου το θα α α αυ μα ε εν Σι ι ναι αι ω ω

ω τω ο ο ο ρει προ ο τυ υ πω σα αν τα

α πο ο ο τε υ μνει ει τε ευ λο γει ει ει

ει τε ε και αι υ υ περ υ υ ψου ου ου τε ει

εις πα α αν τα ας του ους αι ω ω ω ω να α α

ας

## Τιμιωτέρα ἡχος β΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν..

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος β΄

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος Πά

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτήρί μου. 46-47

- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος Πά

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.502#

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο  
ξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια  
φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο  
τον σε μεγαλυνομεν

Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος β'

Τῶν γηγενῶν τίς ἤκουσε τοιοῦτον, ἢ τίς ἐώρακε ποτέ; ὅτι παρθένος εὗρέθη ἐν γαστρὶ ἔχουσα, καὶ ἀνωδίνως τὸ βρέφος ἀποτεκοῦσα τοιοῦτόν σου τὸ θαῦμα καὶ σὲ ἀγνή Θεοκυῆτορ Μαρία μεγαλύνομεν.

## Σύντομος

ὠδὴ θ'

Ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.325#


 των γη γε νων τις η κου σετοι ου ου τον η τις


 ε ω ρα κεπο τε ο τι Παρ θε νος ευ ρε θη εν γα


 στρι ε χου σα και α νω δυ νως το βρε ε φος α πο τε κου


 σα ται ου τον σου το θαυ μα και σε α γνη Θε ο κυ


 η ητορ Μα ρι α μεγα λυ νο με ε εν

## Ἀρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὠδὴ θ'

Ἦχος λ Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.45#


 των γη γε ε νων τις η η κου ου σε ται οι ου ου

ου το ον η τι ις ε ε ε ω ω ρα κε ε πο  
 ο ο τε ο τι παρ θε νος ε ε ευ ρε ε ε θη εν γα  
 στρι ε ε χου ου σα και α νω δυ υ υ υ νω ως  
 το βρε ε ε ε φο ο ος α α πο ο τε κου ου ου ου  
 σα τοι ου ου τον σου το ο θα α αυ μα α και  
 σε α α γνη θε ο κυ υ η το ορ Μα ρι α α α με  
 γα λυ υ νο ο ο με ε ε εν

## Ἀρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ὠδὴ θ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Τριώδιον Α'  
 2003 σ.33\*

των γη γε ε νων τις η η κου ου σε τοι οι ου

ου ου το ον η τι ις ε ε ε ω ω ρα κε

ε πο ο ο τε ο τι Παρ θε νος ε ε ευ ρε ε ε θη

εν γα στρι ι ε ε χου ου σα και α νω δυ υ υ υ

νω ως το βρε ε ε ε φο ο ος α α πο ο τε κου

ου ου ου σα τοι ου ου τον σου το ο θα α αυ

μα α και σε Α α γνη θε ο κυ υ η η η τορ Μα

ρι ι α α με γα λυ υ νο ο ο με ε ε εν

# Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Ἀπόκρεφ

Ψυχασάβατον

ἤχος πλ.δ'

- α Ἄσμα ἀναπέμψωμεν λαοί, τῷ θαυμαστῷ Θεῷ τῷ ἡμῶν, ἀπαλλάξαντι τὸν Ἰσραὴλ ἐκ δουλείας, ὧδ' ἔτι ἐπινίκιον ἄδοντες καὶ βοῶντες· Ἄσωμέν σοι, τῷ μόνῳ Δεσπότῃ.
- β Ἴδετε, ἴδετε, ὅτι ἐγὼ εἰμι ὁ Θεὸς ὑμῶν, ὁ πρὸ τῶν αἰώνων γεννηθεὶς ἐκ τοῦ Πατρὸς, καὶ ἐκ τῆς Παρθένου ἐπ' ἐσχάτων, πλήν ἀνδρὸς κυηθεὶς, καὶ λύσας τὴν ἀμαρτίαν, τοῦ προπάτορος Ἀδάμ, ὡς φιλάνθρωπος.
- γ Ὁ στερεώσας ἐν τῇ χειρὶ σου, Λόγε Θεοῦ τοὺς οὐρανοὺς ἐν τῷ φωτισμῷ, τῆς σῆς ἀληθοῦς ἐπιγνώσεως, στερέωσον καὶ ἡμῶν, τῶν ἐπὶ σοὶ πεποιθότων τὰς καρδίας.
- δ Ἐξ ὅρους κατασκίου, Λόγε ὁ προφήτης, τῆς μόνης Θεοτόκου, μέλλοντος σαρκουῖσθαι, θεοπτικῶς κατενόει, καὶ τῷ φόβῳ, ἐδοξολόγει σου τὴν δύναμιν.
- ε Ὁ ρθρίζει τὸ πνεῦμά μου, πρὸς σέ ὁ Θεός, διότι φῶς τὰ προστάγματα, τῆς παρουσίας σου· ἐν αὐτοῖς οὖν καταύγασον, τὸν νοῦν ἡμῶν Δέσποτα, καὶ ὁδήγησον, ἐν τρίβῳ ζωῆς.
- ς Συνεχόμενον δέξαι με φιλάνθρωπε, ἐκ πταισμάτων πολλῶν, προσπίπτοντα τοῖς οἰκτιρμοῖς σου, ὡς τὸν προφήτην Κύριε, καὶ σῶσόν με.
- ζ Ὁ ἐν ἀρχῇ, τὴν γῆν θεμελιώσας, καὶ οὐρανοὺς τῷ λόγῳ, στερεώσας, εὐλογητὸς εἶ εἰς τοὺς αἰῶνας Κύριε, ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν.
- η Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
Τὸν ἐν ὄρει, ἀγίῳ δοξασθέντα, καὶ ἐν βάτῳ, πυρὶ τὸ τῆς Ἀειπαρθένου, τῷ Μωϋσῇ μυστήριον γνωρίσαντα, Κύριον ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἀποστόλου Παπαχρήστου

Σύντομοι

Ἀπόστολος Παπαχρήστου



Α σμα α να μελ ψωμεν λα οι τω θαυ μα στω Θε

ω η μων τω α παλ λα ξαν τι τον Ισ ρα ηλ δου λει

ας ω δην ε πι νι κι ον α α δοντες και βο ων τες α

σο με εν σοι τω μο ο νω Δε σπο τη

ψδὴ β'

ι δε τε ι δε τε ο τι ε γω ει μι ο

Θε ος η μων ο προ των αι ω νων γεν νη

θεις εκ του Πα τρος και εκ της Παρ θε νου επ ε σχα

α α των πλην αν δρος κυ η θεις και λυ υ σας την α μαρ τι

ι αν του προ πα τορος Α δα αμως φι λα ανθρω ω πος

ψδὴ γ'

Ο στε ρε ω σας εν τη χει ρι σου Λο γε Θε

ου τους ου ρα νους εν τω φω τι σμω της σης α λη

θους ε πι γνω σεως στε ρε ω σον και η μων των ε πι

σοι οι πε ποι θο των τας καρ δι ας ὡδὴ δ'

Ε ξ ο ρους κα τα σκι ου Λο γε ο προ φη της της

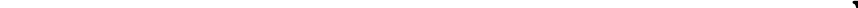
μο νης Θε ο το ο κου μελ λον τας αρ κου σθαι θε ο πι

κως κα τε νο η σεν εν φο ο βω και ε δο ξο λο

γει σου την δυ να α μιν ὡδὴ ε'

Ο ρ θρι ι ζει το πνευ μα μου προς σε ε ο Θε ος

δι ο τι φως τα προσ τα γμα τα της πα ρου σι ας σου

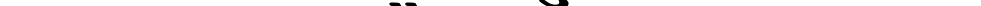

  
 συν αυ τοι οις ουν κα ταυ γα σον τον νουν η μων Δε σπο τα

και ο δη γησον εν τρι βωζωης <sup>ν</sup> ς

πται σμα των πολ λων προσ πι πτον τα τοις οι κτιρ μοις σου

ως τον προφητην Κυριε και σωωσον με Ωδὴ ζ'

Ο εν αρχη την γην θε με λι ω σας και ου


  
 ει εις τους αι ω νας Κυ ρι ι ε ο Θε ος ο των πα τε

ῥων ημων <sup>ν</sup>δλ ὠδὴ η'

Αἰ νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον

Τ ον εν ο ρει α γι ω δο ξα σθε εν τα και εν  
βα α τω πυ ρι το της α ει παρ θε νου τω  
Μω υ ση μυ στη ρι ον γνω ρι σαν τα Κυ ρι ον υ  
μνει τε και υ περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω να  
α α ας

## Τιμιωτέρα ἤχος πλ.δ'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκά κεφ. 1

ἤχος πλ.δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ Νη

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

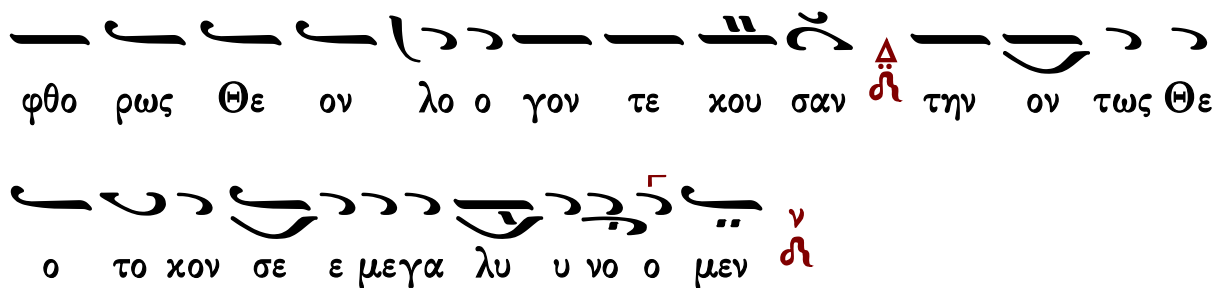
∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ Νη

Πανδέκτη, Ὁρθρος  
1850 σ.504#

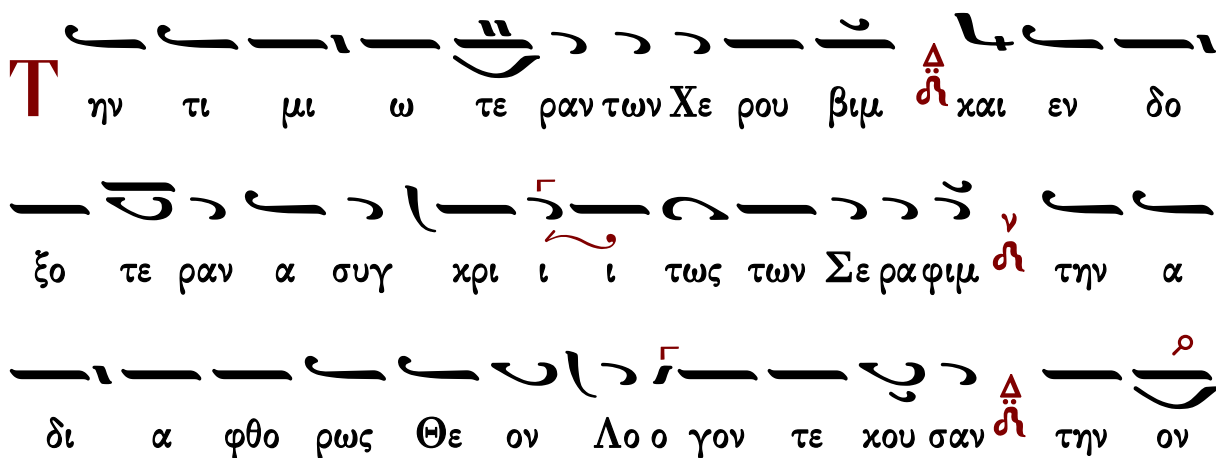
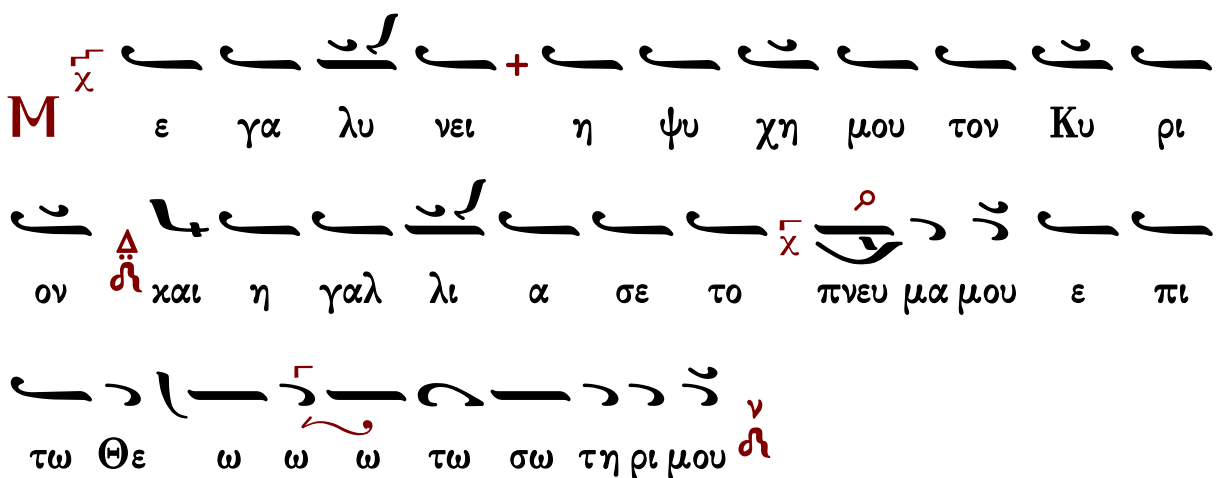
**Τ**ὴν τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.



Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ π ς Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.36#



τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω σιν

της δου λης αυτου ι δου γαρ α πο του νυν μα κα ρι

ου σι με πα σαι αι γε νε αι

την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι ι τως των Σε ραφιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ

να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του και το

ε λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι ι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου ου σαν την ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυτων

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο



ξο τε ραν α συγ κρι ι ι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου ουσαν την ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

**Κ** α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ

υ ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ο ο

ον τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ἀ ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του  
 μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους  
 πα τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι  
 αυ του ε ως αι ω νος  
 Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
 α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ο ο  
 ον τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

### Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.δ'

Τὸν προδηλωθέντα ἐν ὄρει τῷ νομοθέτῃ, ἐν πυρὶ καὶ βάτῳ, τόκον τὸν τῆς Ἀειπαρθένου, εἰς ἡμῶν τῶν πιστῶν σωτηρίαν, ὕμνοις ἀσιγήτοις μεγαλύνομεν.

Σύντομος

✠ Ἀπόστολου Παπαχρήστου ✠

Ἀργή

## Σύντομος Ἀπόστολου Παπαχρήστου

ὥδῃ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ Νη

Ἀπόστολος Παπαχρήστου  
Εἱρμολόγιον 1998 σ.235#

**Τ**ον προ δη λω θε εν τα εν ο ο ρει τω νο μο

θε τη εν πυ ρι και βα τω το ο κον τον της α ει παρ

θε νου <sup>ν</sup> εις η μων των πι στω ων σω τη ρι

αν <sup>Δ</sup> υ υ μνοις α σι γη τοις <sup>\*</sup> μεγα λυ νο ο μεν <sup>ν</sup>

<sup>\*</sup> μεγα λυ νο με ε ε εν <sup>ν</sup>

## Ἀρχὴ Ἀπόστολου Παπαχρήστου

ὥδῃ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ Νη

Ἀπόστολος Παπαχρήστου  
Εἱρμολόγιον 1998 σ.22#

**Τ**ον προ δη λω ω θε ε ε εν τα <sup>Δ</sup> εν ο ρει ει τω νο

μο ο θε ε ε τη η <sup>Δ</sup> εν πυ ρι ι και αι βα τω το

ο ο ο κον τον τη ης α ει πα α αρ θε ε ε

ε νου γ εις η μω ωωντων πι ι στω ω ων σω ω

τη η η ρι ι ι ι ι αν Δ υ μνοι οις α σι γη η

τοις με γα λυ υ νο ο με ε ε εν γ

# Τῆς Κυριακῆς τῆς Ἀπόκρεφ

Ἐὰν ἐγένετο ἡ ἀπόδοσις τῆς ἐορτῆς τῆς Ὑπαπαντῆς

ἤχος πλ.β'

Ποίημα Θεοδώρου τοῦ Στουδίτου

- α Βοηθὸς καὶ σκεπαστὴς ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν, οὗτός μου Θεός, καὶ δοξάσω αὐτόν, Θεὸς τοῦ Πατρός μου καὶ ὑψώσω αὐτόν· ἐνδόξως γὰρ δεδοξασται.
- γ Στερέωσον, Κύριε, ἐπὶ τὴν πέτραν τῶν ἐντολῶν σου, σαλευθεῖσαν τὴν καρδίαν μου, ὅτι μόνος ἅγιος ὑπάρχεις καὶ Κύριος.
- δ Ἀκήκοεν ὁ προφήτης, τὴν ἔλευσίν σου Κύριε, καὶ ἐφοβήθη, ὅτι μέλλεις ἐκ Παρθένου τίκτεσθαι, καὶ ἀνθρώποις δείκνυσθαι, καὶ ἔλεγεν· Ἀκήκοα τὴν ἀκοήν σου καὶ ἐφοβήθην· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε Ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντα φιλάνθρωπε, φώτισον δέομαι, καὶ ὁδήγησον καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί σου, καὶ δίδαξόν με ποιεῖν, αἰεὶ τὸ θέλημά σου.
- ς Ἐβόησα, ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, πρὸς τὸν οἰκτίρμονα Θεόν, καὶ ἐπήκουσέ μου, ἐξ Ἄδου κατωτάτου, καὶ ἀνήγαγεν, ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου.
- ζ Ἠμάρτομεν, ἡνομήσαμεν, ἡδίκησαμεν ἐνώπιόν σου, οὐδὲ συνετηρήσαμεν, οὐδὲ ἐποιήσαμεν, καθὼς ἐνετείλω ἡμῖν, ἀλλὰ μὴ παραδώῃς ἡμᾶς εἰς τέλος, ὁ τῶν πατέρων Θεός.
- η Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
Ὅν στρατιαὶ οὐρανῶν δοξάζουσι καὶ φρίττει τὰ Χερουβὶμ καὶ τὰ Σεραφίμ, πᾶσα πνοὴ καὶ κτίσις ὑμνεῖτε, εὐλογεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

ψδὴ α'

Ἦχος λ π Βε ρ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.325#

Β ο η θος και σκε πα στης ε γε νε το ο μοι εις σω

τη ρι ι αν ου τος μου Θε ος και δο ξα σω αυτον

Θε ος του Πα τρος μου και υ ψω σω αυτον εν δο ξως γαρ

δε δο ξα α σται

ὥδὴ γ'

τε ρε ω σον Κυ ρι ε ε πι την πε ε τραν

των εν το λω ων σου σα λευ θει σαν την καρ δι ανμου

ο τι μο νος α γι ος χορὸς α' υ πα αρ χεις και Κυ υ

ρι ι ο ος

ὥδὴ δ'

κη κο εν ο ο Προ φη της την ε λευ σιν σου

Κυ ρι ε και ε φο βη η θη ο τι μελ λεις εκ

Παρ θε νου τι κτε σθαι και αν θρω ποις δει κνυ σθαι αι και ε λε

γεν α κη κο α την α κο ην σου και ε φο βη η

θην δο ξατη δυ να α μει σου Κυ υ ρι ι ε ε ὠδὴ ε'

Ε χ νυ κτος ορ θρι ζοντα φι λαν θρω πε φω τι σον δε ο

μαι και ο δη γη σον κα με ε εν τοις προσ τα γμα σι ι

σου και δι δα ξο ον με Σωτηρ ποι ειν το θε ε λη μα σου ὠδὴ ς'

Ε βο η σα εν ο λη καρ δι α μου προ ος τον οι

κτιρ μο να Θε ον και ε πη κου σε ε μου εξ α δου κα

α τω τα του και α νη γα γεν εκ φθο ρας τη ην ζω ην

μου ὠδὴ ζ'

**Η** μαρ το μεν η νο μη σα μεν η δι κη σα μεν ε

νω πι ο ον σου ου δε συν ε τη ρη σα μεν ου

δε ε ποι η σα μεν κα θως ε νε τει λω η μιν αλ λα μη πα

ρα δω ω ης η μας εις τε ε λος ο των πα τε ε

ρων Θε ο ος

ὠδὴ η'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου με εν τον Κυ

ρι ον

**Ο** ν στρα τι αι ου ρα νων δο ξα ζου σι και φριτ τει τα Χε ρου

βι ιμ και τα Σε ρα φιμ πα α σα πνο η και κτι ι σις

υ μνει τε ευ λο γει ει τε και υ περ υ ψου ου τε εις



παν τας του ους αι ω ω να α ας

## Αργαί

Πέτρου Βυξαντίου

ὠδὴ α'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.52\*

Β ο η θος και αι σκε πα α α στη ης ε γε νε το ο

μοι εις σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α α αν ου τος

μου Θε ε ε ος και αι αι δο ξα α α α α σω

ω α α αυ τον Θε ος του ου ου Πα τρο ο ο ο

ος μου ου και υ ψω ω ω σω ω α αυ το ον εν δο

ο ο ξως γα α αρ δε ε ε δο ο ο ο ο ξα α

α α σται

ὠδὴ γ'

C τε ε ρε ω ω σον Κυ υ υ ρι ε ε πι τη ην

πε τραν των ε ε εν το λω ω ω ω ων σου ου σα

λευ θει σαν την κα α αρ δι ι α αν μου ο τι μο νο ος

α α α γι ι ι ος χορὸς α' υ πα α αρ χει ει εις

και αι Κυ υ ρι ι ο ος

ὠδὴ δ'

A κη κο ε ε εν ο ο ο προ φη η η της

την ε λευ σι ι εν σου ου Κυ ρι ι ε και ε φο

ο βη η η η η θη η ο τι με ε ελ

λει εις εκ Παρ θε ε νου ου ου τι ι κτε ε ε

σθαι και αν θρω ποις δει ει ει κνυ σθαι αι και αι ε

ε λε ε ε γεν α κη κο α α τη ην α κο

ην σου ου και ε ε ε ε φο ο βη η η θην δο

ξα τη δυ να α α μει ει ει σου ου Κυ υ ρι ι ε

ε ὠδὴ ε'

Ε κ νυ κτος ο ο ορ θρι ζο ον τα φι ι ι λαν θρω ω

πε φω ω ω τι σο ο ον δε ε ο ο μαι και αι

αι ο δη η γη η η σο ον κα α α με

ε ε ε εν τοι οι οις προσ τα γμα σι ι ι ι σου

και δι δα ξο ον με Σω ω τηρ ποι ει ει ει ν το θε ε ε

ε λη η μα α α σου ὠδὴ ε'

Ε βο ο η σα α α α α ε εν ο λη η καρ δι ι

ι α μου προ ο ο ος το ο ον οι κτιρ μο να

α Θε ε ε ον και ε πη κου ου σε μου ου εξ α δου

κα α α τω ω τα α α του και α νη η γα α γε

εν εκ φθο ρας τη η η η ην ζω ω η η ην μου

ὠδὴ ζ'

Η μα αρ το με ε ε ε εν η νο μη η η σα

μεν η δι κη σα α μεν εν ω πι ο ο ο ο ον σου

ου ου δε ε συν ε τη η η ρη η σα α α

μεν ου δε ε ε ε ποι οι οι η η σα α μεν κα θως

ε εν ε τει ει ει ει ει λω ω η η η μιν

αλ λα μη η η πα ρα α δω η ης η μα α α ας ει

εις τε ε ε λο ος ο τω ω ων πα α α τε

ε ε ε ρω ων Θε ε ε ος

ὠδή η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

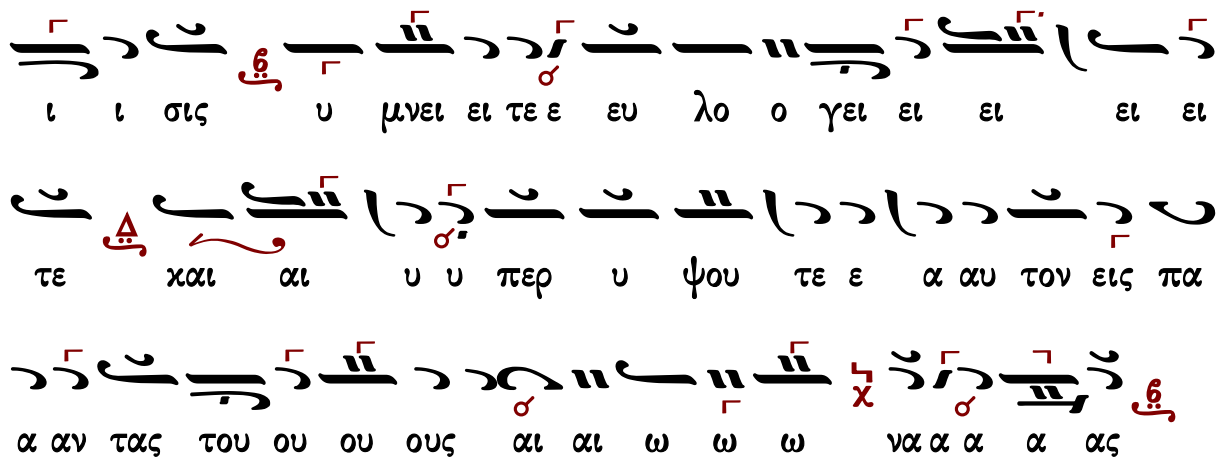
εν τον Κυ υ υ ρι ον

Ο ο ον στρα α τι ι αι ου ου ου ρα νω ων

δο ο ο ξα α ζου ου ου σι και φρι ι ιτ τει

τα Χε ε ρου ου βι ι ι ιμ και τα Σε ε ρα α α

φιμ πα α α α σα α α πνο η η η και κτι ι



## Τιμιωτέρα ἡχος πλ.β΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος πλ.β΄

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῇρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α  
 φθο ο ρως Θε ον Λο γο ον τε κου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε με γα λυ νο ο με εν

Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος πλ.β΄

Ἀσπόρου συλλήψεως, ὁ τόκος ἀνερμήνευτος, Μητρὸς ἀνάνδρου, ἄσπορος ἡ κύησις· Θεοῦ  
γὰρ ἡ γέννησις καινοποιεῖ τὰς φύσεις· διὸ σε πᾶσαι αἱ γενεαί, ὡς Θεόνυμφον Μητέρα,  
ὀρθοδόξως μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀρχή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Βυζαντίου

## Σύντομος

ψδὴ θ΄

Ἦχος λ̣ π̣ ̣ ̣ Ḅ ̣ ̣

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.329#

Ἀ σπο ρου συλ λη ψε ως ο το κος α νερ μη νευ  
τος μη τρο ος α ναν δρου α φθο ρος η κυ η σις Θε  
ου γαρ η γεν νη σις και αι νο ποι ει τας φυ υ σεις δι  
ο σε πα σαι αι γε νε αι ως Θε ο νυμ φον μη  
τε ρα ορ θο δο ξως με γα λυ νο με ε εν

## Ἀρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Βυζαντίου  
ψδὴ θ΄

Ἦχος λ̣ π̣ ̣ ̣ Ḅ ̣ ̣

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.82#



Α α σπο ρου ου συλ λη η η ψε ως ο το κος

α νε ε ερ μη νευ τος μη η η τρο ο ος α να α αν

δρου ου α φθο ρο ο ος η κυ υ η η σι ις

θε ε ου ου ου γαρ η η η γε εν νη η σι ις και αι αι

αι νο ο ο ποι ει ει ει τας φυ υ υ σει εις δι

ο σε πα α α α σαι αι αι αι γε νε ε αι

ως θε ο νυμ φο ο ον Μη τε ε ε ε ε ρα ορ

θο δο ξως μεγα α λυ υ νο ο με ε ε εν

Ἀρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.55\*

α σπο ρου ου συλ λη η η ψε ως ο το κος

α νε ε ερ μη νευ τος Μη η η τρο ο ος α να

α αν δρου ου α φθο ρο ο ος η κυ υ η η

σι ις Θε ε ου ου ου γαρ η η η γε εν νη η σι

ις και αι αι αι νο ο ο ποι ει ει ει τας φυ υ υ

σει εις δι ο σε πα α α α σαι αι αι αι γε

νε ε αι ως Θε ο νυμ φο ο ον Μη τε ε ε

ε ε ρα ορ θο δο ξως με γα α λυ υ νο ο με ε

ε εν

## Τῆς α΄ Κυριακῆς τῶν νηστειῶν

ἤχος δ΄

- α **Θ**αλάσσης τὸ ἐρυθραῖον πέλαγος, ἀβρόχοις ἵχνεσιν, ὁ παλαιὸς πεζεύσας Ἰσραήλ, σταυροτύποις Μωσέως χερσί, τοῦ Ἀμαλήκ τὴν δύναμιν, ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐτροπώσατο.
- γ **Ε**ὐφραίνεται ἐπὶ σοί, ἡ Ἐκκλησία σου Χριστέ κράζουσα· σύ μου ἰσχύς Κύριε, καὶ καταφυγὴ καὶ στερέωμα.
- δ **Ἐ**παρθέντα σε ἰδοῦσα ἡ Ἐκκλησία, ἐπὶ Σταυροῦ τὸν ἥλιον τῆς δικαιοσύνης, ἔστη ἐν τῇ τάξει αὐτῆς, εἰκότως κραυγάζουσα· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Σὺ** Κύριέ μου φῶς, εἰς τὸν κόσμον ἐλήλυθας, φῶς ἅγιον ἐπιστρέφον, ἐκ ζοφώδους ἀγνοίας, τοὺς πίστει ἀνυμνοῦντάς σε.
- ς **Θ**ύσω σοι, μετὰ φωνῆς αἰνέσεως Κύριε, ἡ Ἐκκλησία βοᾷ σοι· ἐκ δαιμόνων λύθρου κεκαθαρμένη, τῷ δι' οἶκτον, ἐκ τῆς πλευρᾶς σου ρεύσαντι αἵματι.
- ζ **Ἐ**ν τῇ καμίνῳ, Ἀβραμιᾶοι παῖδες τῇ περσικῇ, πόθῳ εὐσεβείας μᾶλλον ἢ τῇ φλογί, πυρπολούμενοι ἐκραύγαζον· εὐλογημένος εἶ, ἐν τῷ ναῷ τῆς δόξης σου Κύριε.

**Αἰ**νοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

- η **Χ**εῖρας ἐκπετάσας Δανιήλ, λεόντων χάσματα, ἐν λάκκῳ ἔφραξε· πυρὸς δὲ δύναμιν ἔσβεσαν, ἀρετὴν περιζωσάμενοι, οἱ εὐσεβείας ἑρασταί, παῖδες κραυγάζοντες· εὐλογεῖτε, πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Αργαί

### Σύντομοι

ᾠδὴ α΄

Ἦχος δ΄

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Αναστασιματάριον 1905 σ.178#

Θ α λ α σ σ η ς τ ο ε ρ υ θ ρ α ι ο ν π ε λ α γ ο ς α β ρ ο χ ο ι ς

ι χνε σιν <sup>6</sup>λ ο πα λαι ος πε ζευ σας Ισ ρα ηλ σταυ ρο

τυ ποις Μω σε ως χερ σι <sup>π9</sup> του Α μα ληκ την δυ ναμιν

εν τη ε ρη μω ε τρο πω σατο <sup>6</sup>λ ῥδὴ γ'

<sup>Ε</sup> υ φραι νεται ε πι σοι η Εκ κλη σι α σου Χρι στε

κραζουσα <sup>π9</sup> συ μου ι σχυς Κυ ρι ε χορὸς α' και κα τα φυ γη και

στε ρε ωμα <sup>6</sup>λ ῥδὴ δ'

<sup>Ε</sup> παρ θεν τα σε ι δου ου σα η Εκ κλη σι ι

α ε πι Σταυ ρου τον Η λι ον της δι και ο συ νης <sup>6</sup>λ ε

στη εν τη τα ξει αυτης <sup>π9</sup> ει κο ο τως κραυ γα ζου σα δο ξα

τη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ ῥδὴ ε'

Κυ ρι ε μου φως εις τον κο σμον ε λη λυ υ θας φως

α γι ον ε πι στρε φον εκ ζο φω δους α γνοι οι ας

τους πι στει α νυ μνουν τας σε

ὠδὴ ζ'

Θ υ σω ω σοι με τα φω νης αι νε σε ως Κυ ρι ε

η Εκ κλη σι α βο α σοι εκ δαι μο νων λυ υ

θρου κε κα θαρ με νη τω δι οι κτον εκ της πλευ ρας σου

ρευ σαν τι αι μα τι

ὠδὴ ζ'

Ε ν τη κα μι νω Α βρα μι αι οι Παι δες τη Περ σι

κη πο θω ευ σε βει ας μαλ λον η τη φλο γι πυρ πο

λου με νοι ε κραυ γα α ζον ευ λο γη με νος ει εν τω

Να ω της δο ξηςσου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λκ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λκ

Χ ει ει ρας εκ πε τα σας Δα νι ηλ λε ον των

χα σματα εν λακ κω ε φρα ξε <sup>6</sup>λκ πυ ρος δε δυ ναμιν ε

σβε σαν α ρε την πε ρι ζω σα με ε νοι <sup>π</sup>9 οι ευ σε βει

ας ε ρα σται Παι δες κραυ γα ζον τες ευ λο γει τε παν τα

τα ερ γα Κυ ρι ου τον Κυ ρι ο ο ο ο ον <sup>6</sup>λκ

Αργαί

Πέτρου Βυξαντίου

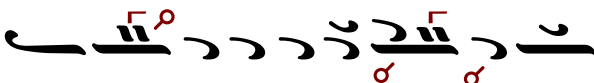
Ἦχος <sup>4</sup>δλ Βε

ὠδὴ α'

πρωτ.Κων.Πασιγιάνη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.94\*

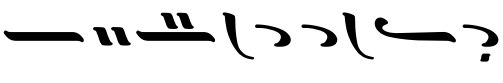
Θ  α λα α α ασ σης  το ε ρυ θραι αι ο ον πε λα

 γος α α βρο ο χους ι ι χνε ε σι ιν  ο πα λαι ος

 πε ζε ευ σα ας Ισ ρα α ηλ  σταυ ρο τυ ποις Μω ω σε

 ε ε ω ως χε ερ σι ι  του Α μα ληκ την δυ

 υ υ να α α α μι ιν  εν τη ε ε ρη η μω ω ε

 τρο ο πω σα α το ο  ᾠδὴ γ'

Ε  υ φραι νε ε ται αι αι αι ε πι ι σοι οι  η Εκ κλη

 σι α σου Χρι στε ε κρα α α α ζου ου ου ου ου

 σα  συ υ υ υ υ μου ι ι σχυς Κυ υ υ ρι ι ι ι

 ε ε  χορός α' και κα τα φυ γη η η και αι στε ρε ε ω

ω μα α <sup>6</sup>λ

ὥδῃ δ'

Ε παρ θε εν τα σε ι ι ι δου ου ου σα η η Εκ

κλη η η σι ι ι α α <sup>6</sup>λ ε πι στα αυ ρου τον η

λι ι ο ο ο ο ν της δι ι και ο ο ο συ υ υ νη

ης <sup>6</sup>λ ε στη εν τη η τα α α ξει ει α αυ τη ης <sup>π</sup>9

ει κο ο ο τω ως κρα α αυ γα α ζου ου ου

σα <sup>Δ</sup>δο ο ξα τη δυ να α α μει σου ου Κυ ρι ι ε

ε <sup>6</sup>λ <sup>ὥδῃ ε'</sup>

С υ υ υ υ Κυ ρι ι ε μου ου φως <sup>6</sup>λ εις τον κο ο ο

σμο ον ε λη η λυ υ θα ας <sup>6</sup>λ φω ω ως α α α α γι ι



ον ε ε πι ι στρε φο ον <sup>π</sup>9 εκ ζο φω ω ω δου ους

α α α γνοι οι οι οι οι ας <sup>Δ</sup> τους πι ι στει ει α νυ

υ μνουν τα ας σε ε <sup>6</sup>λ ῥδῆς'

**Θ** υ σω σοι οι οι με τα φω ω νης αι νε ε ε σε

ε ως Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup>λ <sup>σ</sup>η Εκ κλη σι ι ι α α

βο ο ο α α α α α σοι <sup>Δ</sup> εκ δαι μο ο ο

ο νω ων λυ υ υ θρου κε κα α α α α θα αρ με

ε ε νη <sup>6</sup>λ τω δι οι οι οι οι οι κτον <sup>Δ</sup> εκ

τη ης πλε ευ ρα α ας σου ρε ε ε ευ σαν τι ι αι μα α

τι ι <sup>6</sup>λ ῥδῆς'

Ε ν τη η κα α μι νω ω Α βρα μι αι αι αι αι οι

παι αι αι δεσ τη περ σι ι κη πο θω ε ευ σε βει

ει ει ας μα ααλ λο ον η τη η φλο ο γι πυρ πο

λου με ε νοι οι ε κρα α αυ γα α α α ζον ευ λο

γη με ε ε νο ο ο ος ει ει εν τω να ω ω της

δο ο ο ξης σου Κυ ρι ι ε ε

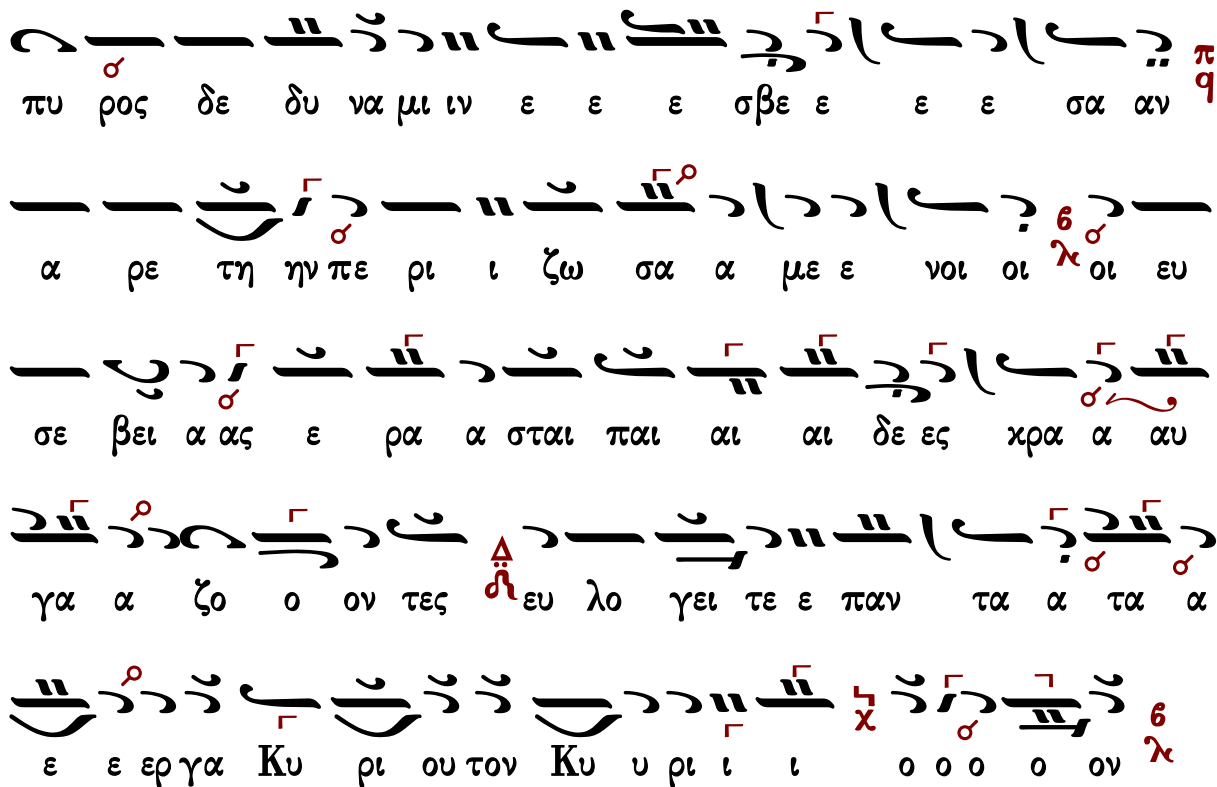
ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Χ ει ρας εκ πε τα α σας Δα α νι ι ηλ λε ο

ον των χα σμα α τα ε εν λα ακ κω ε ε φρα α ξε ε



### Τιμιωτέρα ἦχος δ΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος δ΄

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς

πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἑνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν  
ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ  
σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί  
με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς  
γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν.  
51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ  
πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς  
πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δ' Ββ

Πανδέκτη  
Ὁρθρος 1850 σ.502#

**Τ** ἡ ν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν δο ξο  
τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι α  
φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως Θε ο

το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup>δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

<sup>χ</sup>Μ ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

<sup>σ</sup>και η γαλ λι α σε το <sup>χ</sup>πνευ μα μου ε πι τω Θε

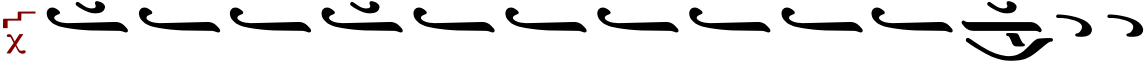
ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup>λ

<sup>σ</sup>Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε με γα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

Ο   
τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νωσιν

  
της δου λης αυ του  ι δου γαρ α πο του νυν μα κα

  
ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι 

Τ   
ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

  
ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α

  
φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

  
το κον σε μεγα λυ νο μεν 

Ο   
τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

  
τος  και α γι ον το ο νο μα αυ του  και το ε λε

  
ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον <sup>6</sup>λ

**Τ**ην <sup>σ</sup>τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup>ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λ

**Ε** <sup>λ</sup>ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του <sup>6</sup>λ δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>λ</sup>φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων <sup>6</sup>λ

**Τ**ην <sup>σ</sup>τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup>ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του



μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Αἶθος ἀχειρότμητος ὄρους, ἐξ ἀλαξεύτου σου Παρθέने, ἀκρογωνιαίος ἐτμήθη, Χριστὸς συνάψας τὰς διεστῶτας φύσεις. Διὸ ἐπαγαλλόμενοι σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου

Σύντομος

Λ ι θος α χει ρο τμη τος ο ο ρους εξ α λα ξευ  
 του σου Παρ θε νε α κρο γω νι αι ος ε τμη θη Χρι  
 στος συν α α ψας τας δι ε στω σας φυ υ σεις δι  
 ο ε πα γαλ λο μενοι σε Θε ο το κεμεγα λυ νομε ε ε ε  
 εν

Ἀρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Λ ι θος α χει ρο τμη τος ο ο ο ο ο ρους εξ  
 α λα α ξευ του ου σου Πα αρ θε ε ε νε ε α α

α κρο γω νι αι ος ε ε τμη η η θη Χρι στος συν α α

α α ψας τα ας δι ε ε στω ω σα ας φυ υ υ σει εις 6 λ

δι ο ο επα γαλ λο ο ο ο ο ο με ε ε ε

νοι σε ε Θε ο το ο κε ε με γα λυ υ νο ο ο με ε

ε ε ε εν 6 λ

## Ἀρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος 4 δὲ Βα

πρωτ.Κων.Πασιγιάννη  
Μουσικόν Τριῶδιον Β'  
2003 σ.97\*

λ ι θος α χει ρο τμη τος ο ο ο ο ρου ους εξ

α λα α ξευ του ου σου Πα αρ θε ε ε νε ε α κρο

γω νι αι ος ε ε τμη η θη η η Χρι ι ι

στο ος <sup>π</sup>9 συν α α α α ψας τα α ας δι ε

ε στω σα ας <sup>σ</sup>φυ υ υ σεις εις <sup>6</sup>λ δι ο ο

ε πα γα <sup>σ</sup>αλ <sup>σ</sup>λο ο ο ο ο ο με ε ε ε νοι <sup>Δ</sup>δ

σε ε <sup>σ</sup>Θε ο το ο κε ε <sup>σ</sup>με γα λυ υ νο ο ο <sup>λ</sup>με ε ε ε

<sup>6</sup>εν <sup>λ</sup>

# Εἰς ἑορτάς τῆς Θεοτόκου (ἐν Τριωδίῳ)

Τῇ β', δ' καὶ ε' Κυριακῇ τῶν Νηστειῶν

ἤχος δ'

α Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεῦξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὰ θαύματα.

γ Τοὺς σοὺς ὕμνολόγους Θεοτόκε, ὡς ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θίασον συγχροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· καὶ ἐν τῇ θείᾳ δόξῃ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.

δ Ὁ καθήμενος ἐν δόξῃ, ἐπὶ θρόνου Θεότητος, ἐν νεφέλῃ κούφῃ, ἦλθεν Ἰησοῦς ὁ ὑπέρθεος, τῇ ἀκηράτῳ παλάμῃ/παρθένῳ, καὶ διέσωσε, τοὺς κραυγάζοντας· Δόξα Χριστὲ τῇ δυνάμει σου.

δ Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης, Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαξε· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

ε Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐπὶ τῇ θείᾳ δόξῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔσχες ἐν μήτρᾳ, τὸν ἐπὶ πάντων Θεόν, καὶ τέτοκας ἄχρονον Υἱόν, πᾶσι τοῖς ὕμνουσί σε, σωτηρίαν βραβεύοντα.

ς Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα Θεὸν δοξάζοντες.

ζ Οὐκ ἐλάτρευσαν τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν· ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος, νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἅπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Σύντομοι

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται  
 πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξο μαι τη βα σι λι δι Μη  
 τρι και ο φθη σο μαι φαι δρως πα νη γυ ρι ζων και  
 α σω γη θο μενος ταυ της τα θαυ μα τα

ᾠδὴ γ'

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η  
 ζω ω σα και α φθο νος πη γη θι α σον συ γ κρο τη σαν  
 τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον και εν τη θει α

δο ξη σου χο ρὸς α' στε φα νων δο ξης α ξι ω σον

ᾠδὴ δ'

Ο κα θη μενος εν δο ο ξη ε πι θρο νου Θε

ο τητος <sup>6</sup>λ εν νε φε λη κου ου φη <sup>Δ</sup>λ ηλ θεν Ι

η σουους ο υ περ θεος <sup>6</sup>λ τη α κη ρα τω πα λα

μη και δι ε σω σε <sup>π</sup>9 τους κραυ γα ζοντας δο ξα Χρι στε τη

δυ να μει σου <sup>6</sup>λ σ.331

έτέρα ὥδῃ δ'

Τ ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην <sup>6</sup>λ της εκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως <sup>6</sup>λ σου του υ ψι στου <sup>6</sup>λ

ο Προ φη της Αβ βα κουμ <sup>6</sup>λ κα τα νο ων ε

κραυ γα ξε <sup>Δ</sup>λ δο ξα τη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ ←ειρμολόγ. ΖΩΗC

ὥδῃ ε'

Ε ξε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο

ξη σου <sup>Δ</sup> σου υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε

σχες εν μη η τρα τον ε πι πα αν των Θε ον και τε ε

το κας α χρο νον Υι ον πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup> σω τη <sup>λ</sup>

ρι ι αν βρα βευ ον τα <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴς'

**Τ**ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος <sup>π</sup> <sup>9</sup> δευ τε τας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

τες <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴς'

**Ο**υκ ε λα α τρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα <sup>6</sup> <sup>λ</sup> αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>6</sup> <sup>λ</sup> αν



δρει ως πα τή σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον <sup>6</sup> λ υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

ος ει <sup>6</sup> λ ὥδῃ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup> λ

Π αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το ο το τε

μεν τυ που μενος νυν δε ε νερ γου με ε νος <sup>π</sup> ρ την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλ λου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας 6 λ

## Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ψδὴ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
2003 σ.112\*

Α νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη  
η σε ε ται Πνευ μα α το ος 6 λ και λο ο γο ον ε ε ρε  
ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι  
ι 6 λ και ο φθη σο ο μαι αι 6 λ φαι δρω ω ω ως  
πα αν η η γυ υ ρι ζων π 9 και α α σω ω γη η θο ο  
με ε ε νος τα α α αυ τη ης τα α θ αυ μα α τα α 6 λ

ψδὴ γ'

**Τ** ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι

α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον και εν τη θει α α δο ο ξη η σου χορὸς α'

στε φα α α α α α α α α νω ων δο ο ο ο ξη

ης α α ξι ω ω σο ον ὧδὴ δ'

**Ο** κα θη με νο ος εν δο ο ο ξη ε πι θρο ο ο

νου ου θε ο τη η το ος εν νε φε ε λη κου

ου ου φη η ηλθεν Ι η σου ου ους ο ο υ περ

θε ε ο ος <sup>6</sup>λ τη α κη ρα τω πα α λα μη η και αι

δι ι ε ε ε σω ω ω ω σε ε <sup>π</sup>q τους κραυ γα α

α α α α ζο ο ο ον τας <sup>Δ</sup>δ δο ο ξα τη δυ να α α α

<sup>σ</sup>μει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup>λ

ἄλλη γραμμὴ

\* πα α λα μη η <sup>π</sup>q και δι ε ε σω ω ω ω σε ε <sup>π</sup>q

ἑτέρα ὥδῃ δ'

**T** ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

<sup>σ</sup>βου <sup>σ</sup>ου <sup>σ</sup>λη η ην <sup>6</sup>λ της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ

<sup>π</sup>q ψι στου ου ο προ φη η της Αβ βα ακουμ <sup>Δ</sup>δ κα

τα νο ο ων ε ε κραυ γα α ξε ε δο ο ο ο

ξα τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

ὡδὴ ε'

ε ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α ε πι

τη θει ει α α δο ο ξη η σου συ υ υ γα α α

α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε ε

σχες εν μη η η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α

α αν τω ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο ο

κας α α χρο ο νο ον Υι υι ο ο ο ον πα α σι

ι τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη

ην βρα βε ευ ο ον τα α <sup>6</sup>λ

ῥδῆς'

**Τ**ην θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος <sup>π</sup>9 δευ τε τας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν <sup>Δ</sup>τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε ε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες <sup>6</sup>λ ῥδῆς'

**Ο**υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α <sup>6</sup>λ αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον <sup>6</sup>λ υ περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π</sup>ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει <sup>6</sup>λ ῥδὴ ἡ'

Αι <sup>σ</sup>νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup>λ

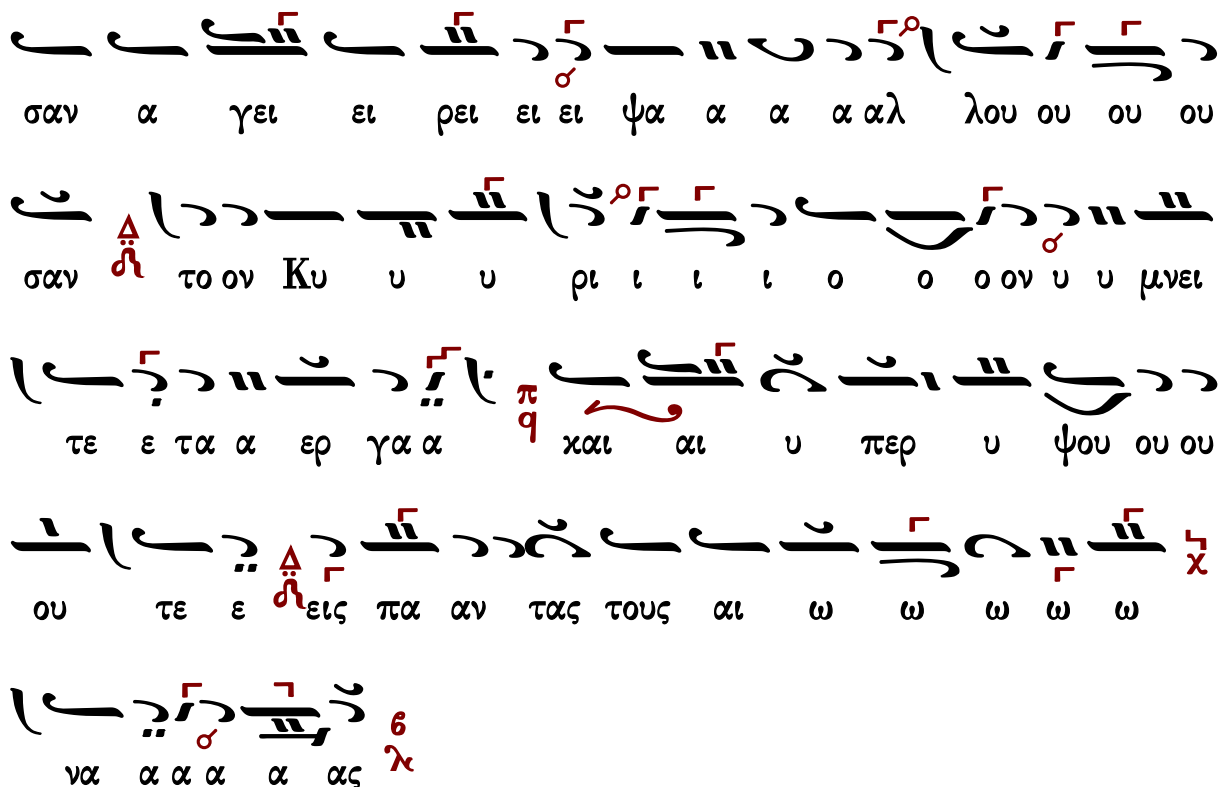
Παι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

ι νω ω <sup>6</sup>λ ο το ο ο ο ο ο κος της Θε ε

ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το Δ το ο τε ε με

εν τυ που με ε νο ος <sup>6</sup>λ νυ υν δε ε ε νερ γου ου

ου με ε ε ε νος <sup>π</sup>την οι κου με ε νη ην α πα α



## Τιμιωτέρα ἡχος δ'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς



πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἑνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δὲ Ββ

Πανδέκτη  
Ὁρθρος 1850 σ.502#

**Τ**ὴν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν δο ξο  
τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι α  
φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως Θε ο

το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup>δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

<sup>χ</sup>Μ ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

<sup>σ</sup>και η γαλ λι α σε το <sup>χ</sup>πνευ μα μου ε πι τω Θε

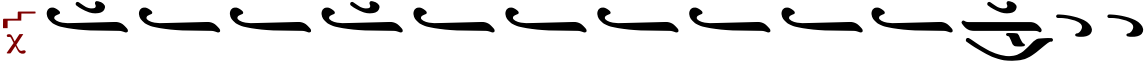
ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup>λ

<sup>σ</sup>Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε με γα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

Ο   
τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νωσιν

  
της δου λης αυ του  ι δου γαρ α πο του νυν μα κα

  
ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι 

Τ   
ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

  
ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α

  
φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

  
το κον σε μεγα λυ νο μεν 

Ο   
τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

  
τος  και α γι ον το ο νο μα αυ του  και το ε λε

  
ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον <sup>6</sup>λ

**Τ**ην <sup>σ</sup>τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup>ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λ

**Ε** <sup>χ</sup>ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του <sup>6</sup>λ δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>χ</sup>φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων <sup>6</sup>λ

**Τ**ην <sup>σ</sup>τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup>ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

## Καταβασία Θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυριζέτω δέ, αὐλῶν νόων, φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱερὰν πανήγυριν, τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

Σύντομος

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Πελοποννησίου

Σύντομος

α πας γηγε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου χου  
 με νος παν η γυ ρι ξε τω ω δε α υ  
 λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα την ι ε ραν παν  
 η γυ ριν της Θε ο μη η το ο ρος και βο α  
 α α α α τω χαι ροις παμ μα κα ρι στε Θε ο  
 το κε α γνη η α ει παρ θε νε ε ε ε ε

## Ἄρχὴ Ιωάννου Πρωτοψάλτου

α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ  
 υ ρι ξε ε ε τω ω ω ω δε <sup>π</sup>α υ λω ων νο ο  
 ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>6</sup>την ι  
 ε ρα αν πα αν η η γυ υ ριν της Θε ο ο ο μη  
 η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α  
 α α τω <sup>Δ</sup>χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup>  
 Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε  
 ε ε <sup>6</sup>

Ἀρχὴ Πέτρου Πελοποννησίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
2003 σ.115\*



α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος παν η γυ υ

υ ρι ξε ε ε τωω ω ω δε α υ λωων νο ο

ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι ε

ρα αν πα αν η η γυ υ ριν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α α

τω χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε

## Τῆς Σταυροπροσκυνήσεως

ἤχος α΄

- α **Ο** θειότατος προετύπωσε πάλαι Μωσῆς, ἐν ἐρυθρᾷ θαλάσῃ, διαβιβάσας Ἰσραὴλ, τῷ Σταυρῷ σου τὴν ὑγρὰν, τῇ ῥάβδῳ τεμῶν, ὥδῃν σοι ἐξόδιον, ἀναμέλπων Χριστέ ὁ Θεός.
- γ **Σ**τερέωσον δέσποτα Χριστέ, τῷ Σταυρῷ σου ἐν πέτρᾳ με τῇ τῆς πίστεως μὴ σαλευθῆναι τὸν νοῦν, ἐχθροῦ προσβολαῖς τοῦ δυσμενοῦς· μόνος γὰρ εἶ ἅγιος.
- δ **Ε**πὶ σταυροῦ σε δυνατὲ φωστήρ ὁ μέγας κατιδὼν τρόμῳ ἐπαρθεὶς τὰς ἀκτῖνας συνέστειλεν ἔκρυψε, πᾶσα δὲ κτίσις ὕμνησεν, ἐν φόβῳ τὴν σὴν μακροθυμίαν· καὶ γὰρ ἐπλήσθη ἡ γῆ, τῆς σῆς αἰνέσεως.
- ε **Ο**ρθρίζοντες σὲ ἀνυμνοῦμεν, Σωτὴρ τοῦ κόσμου εἰρήνην, εὐράμενοι τῷ Σταυρῷ σου, δι' οὗ ἀνεκαίνισας, τὸ γένος τὸ ἀνθρώπινον, φῶς πρὸς ἀνέσπερον ἄγων ἡμᾶς.
- ς **Τ

ζ **Φ**λογώσεως ὁ παῖδας ῥυσάμενος σάρκα προσλαβόμενος, ἦλθεν ἐπὶ γῆς καὶ Σταυρῷ προσηλωθεὶς, σωτηρίαν ἡμῖν ἐδωρήσατο, ὁ μόνος εὐλογητὸς τῶν πατέρων Θεός, καὶ ὑπερένδοξος.

η **Χ**εῖρας ἐν τῷ λάκκῳ βληθεὶς τῶν λεόντων ποτέ, ὁ μέγας ἐν προφήταις, σταυροειδῶς ἐκπετάσας, Δανιὴλ ἀβλαβῆς ἐκ τῆς τούτων καταβρώσεως σέσωσται, εὐλογῶν Χριστόν τὸν Θεὸν εἰς τοὺς αἰῶνας.**

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

ὥδῃ α΄

ἤχος ᾧ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.432#

Ο θει ο τα τος προ ε τυ πω σε πα λαι Μω

σης εν Ε ρυ θρα θα λα ας ση  δι α βι βα σας

Ισ ρα ηλ τω Σταυ ρω σου την υ γραν τη ρα α βδω τε μων

ω δη ην σοι ε ξο δι ον α να μελ πων Χρι στε ε ο Θε

ος  

 τε ρε ω σον δε σπο τα Χρι στε τω Σταυ ρω σου εν πε

ε τρα με τη της πι στε ως  μη σα λευ θη ναι τον νουν 

ε χθρου ου προσ βο λαις του δυσ με νους  χορδς α' μο νος γαρ

 ει α α γι ι ος  

 πι Σταυ ρου σε δυ να τε  φω στηρ ο με γας κα τι

 δων τρο μω ε παρ θεις τας α κτι ι νας  συν ε ε στει

λεν ε κρυψε πα α σα δε κτι σις υ μνησεν εν φο βω την

ση ην μα κρο θυ μι αν και γαρ ε πλη η σθη η

γη της σης αι νε ε σε ε ως π q ῥδῆ ε'

O ρ θρι ζον τεσ σε α νυ μνου ου ου μεν Σω τηρ οι κτι

ιρ μον ει ρη νην ευ ρα α με νοι τω Σταυ ρω ω

σου π q δι ου α νε και νι σας το γε νος το αν θρω πι νον

φως προς α νε σπερον α α γων η μα ας π q ῥδῆ ε'

T ον τυ ποντου θει ου Σταυ ρου Ι ω να ας εν κοι

λι ι α του κη η τους Δ δ τε τα με ναις πα λα αμαις

προ δι ε χα ρα ξε και α νε θο ρε π q σε σω σμε νος

του θη ρος **η** τη δυ να μει σου Λο ο γε **π**<sup>9</sup> ὠδὴ ζ'

**Φ** λο γω σε ως ο παι δας ρυ σα μενος **Δ**<sup>Δ</sup> σαρ κα προσ λα

βο μενος ηλ θες ε πι γης και εν Σταυ ρω προσ η λω

θεις **Δ**<sup>Δ</sup> σω τη ρι αν η μιν ε δω ρη η σω Χρι στε **π**<sup>9</sup> ο

μο ο νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων **Δ**<sup>Δ</sup> Θε ος και

υ περ ε εν δο ο ξος **π**<sup>9</sup> ὠδὴ η'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον **Δ**<sup>Δ</sup>

**Χ** ει ρας εν τω λακ κω βλη θεις των λε ον των πο τε **Δ**<sup>Δ</sup>

ο με γας εν Προ φη η ταις σταυ ρο ει δω ως εκ πε τα α

  
 σας <sup>π ρ</sup> Δα νι ηλ α βλα βης εκ της του ου των <sup>Δ</sup> κα τα  
  
 βρω ω σε ως σε σω σται ευ λο γων Χρι στον <sup>Δ</sup> τον Θε  
  
 ον εις τους αι ω ω να α ας <sup>π ρ</sup>

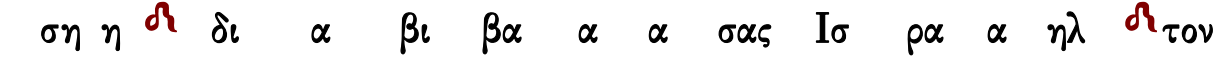
## Αργαί

Πέτρου Βυξαντίου

ψδὴ α'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>q</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Τριώδιον  
 τ.Α' 2003 σ.133\*

**Ο** <sup>χ ρ</sup>   
 θει ο ο τα τος <sup>χ ρ</sup> προ ε τυ υ υ  
  
 πω ω σε ε ε πα α α α λαι αι Μω ω ω σης <sup>Δ</sup>  
  
 ε ε ε εν Ε ε ρυ θρα α θα α λα α ασ  
  
 ση η <sup>Δ</sup> δι α βι βα α α σας Ισ ρα α ηλ <sup>Δ</sup> τον  
  
 Σταυ ρο ον σου την υ γρα αν τη η ρα α α α

α βδω ω τε ε ε μων πω δη η η ην σοι οι

ε ε εξ ο ο δι ι ι ον α να α μελ πω ων

Χρι ι στε ε ε ε ε ο ο Θε ε ε ος

\* Γράφεται συνήθως κατά δοτικήν «τῷ Σταυρῷ σου» ἀντὶ αἰτιατικῆς. Ἀλλ' ἡ γραφὴ αὕτη εἶναι ἐσφαλμένη συντακτικῶς καὶ ἱστορικῶς· συντακτικῶς μὲν διότι ἀφήνει ἄνευ ἀντικειμένου το ρῆμα «προετύπωσεν» ἐνῷ προσθέτει καὶ δευτέραν δοτικὴν ὀργανικὴν εἰς τὴν μετοχὴν «τεμῶν» («τῷ Σταυρῷ σου», «τῇ ράβδῳ»)· ἱστορικῶς δε, διότι ὁ Μωϋσῆς δὲν ἔτεμε τὴν θάλασσαν «τῷ Σταυρῷ» ἀλλὰ «τῇ ράβδῳ», προετύπωσε δὲ διὰ τῶν κινήσεων τῆς ράβδου τὸν Σταυρὸν (βλ. ἀναλυτικωτέραν διατύπωσιν εἰς τὸν εἰρμόν «Σταυρὸν χαράξας Μωσῆς». ὅθεν ἐγράψαμεν τὴν ὀρθὴν γραφὴν, τόσον εἰς τὸν εἰρμόν, ὅσον καὶ ἐνταῦθα, τροποποιήσαντες ἐλαφρῶς τὸ μέλος. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

ὥδ' ἔγ'

τε ρε ω σον Δε ε σπο τα Χρι ι στε τω Σταυ

ρω ω σου εν πε ε τρα α με ε ε ε τη η η ης

πι ι στε ε ε ω ως μη σα λευ θη η η ναι το ον

νουν ε χθρου ου προσ βο λαι αις του δυσ με ε ε νου

ους χορὸς ἀ' μο ο νος γα αρ ει ει α α α α

α γι ι ι ι ος π q

ὥδῃ δ'

Ε πι Σταυ ρου ου ου ου σε ε ε Δυ να α

τε φω στη ηρ ο με ε γα α ας κα α

τι ι ι δων τρο μω ε πα αρ θει εις τας α κτι ι ι

να ας συν ε ε ε ε στει ει λε εν ε ε κρυ υ υ

ψε ε πα α σα δε ε ε ε κτι ι σι ι ις

υ υ μνη η η σεν εν φο ο βω την ση η η η

ην μα κρο θυ υ υ μι ι αν και γαρ ε ε πλη η η

σθη η η γη η της ση ης αι αι νε ε ε ε σε ε

ε ε ως π q

ὥδῃ ε'



Ο ρ θρι ι ζο ον τες σε α νυ μνου ου ου ου με εν Σω

τη ηρ του ου κο ο ο σμου ου ει ρη η

η νην ευ ρα α α α με ε νοι τω ω Σταυ ρω ω ω ω ω

σου δι ου ου α α νε και αι νι ι σας το ο

γε ε νος το ο α α αν θρω ω πι ι ι

νον φω ως προ ος α α α νε σπε ε ρο ον α

α α α α γω ων η η η μας

Τ ον τυ υ υ υ πον του θει ει ει ει ου Στα

α αυ ρου ου ου ου Ι ι ω ω ω νας ε εν κοι οι

λι ι ι α α του ου κη η η του ους τε

τα με ε ναις πα λα α μαι αις προ ο ο ο δι ι

ε ε χα α ρα α α ξε ε και α α νε θο ο

ρε ε σε σω σμε ε ε νος του θη η ρος τη δυ υ

να α α μει ει σου Λο ο ο ο ο γε

ὠδὴ ζ'

Φ λο γω ω σε ω ως ο παι αι αι δας ρυ σα

α με ε νο ος σα αρ κα α προ ος λα βο με ε νο

ος ηλ θε εν ε πι ι γης και αι αι ε εν Σταυ ρω

ω ω προσ η η λω ω ω θεις σω τη ρι ι

αν η μι ιν ε ε δω ω ρη η η η σα α α α α

το ο μο ο ο νος ευ λο γη η το ο ος τω

ων πα α τε ε ε ρω ων Θε ο ος και

υ υ πε ερ ε ε ε ε εν δο ο ο ο ζος π q ὡδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ ρι ι ον Δ δλ

Χ ει ει ρας εν τω λα ακ κω βλη η θεις των λε

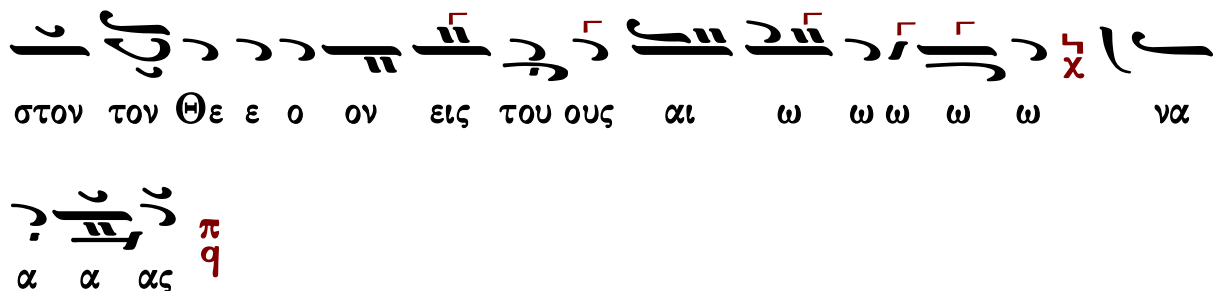
ο ο ον τω ων ο με ε ε γα ας ε εν

προ ο φη η η ται αις σταυ ρο ει ει δω ω ως ε εκ

πε τα α α α α σας Δα α νι ι ηλ α βλα

βης εκ τη ης του ου ου τω ων κα τα βρω ω ω ω σε ε

ως σε ε ε σω ω σται αι ευ λο γων Χρι ι



## Τιμιωτέρα ἡχος α΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος α΄

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

ἡχος ᾠ Πα

Λουκᾶ κεφ. 1

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτήρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπραδρίου

Ἦχος ᾠ Πα

Πανδέκτη  
Ὅρθος 1850 σ.501#

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν την ον τως Θε ο  
το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#

**Μ** <sup>χ</sup> ε γ α λ υ ν ει η ψ υ χ η μου τον Κυ ρι

ον <sup>Δ</sup> και η γ α λ λι α σε το πνευ μα μου <sup>χ</sup> <sup>Δ</sup> ε πι

τω Θε ω τωσω τη ρι μου <sup>Δ</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ρ αν των Χε ρ ου βιμ <sup>Δ</sup> και εν δο ξο

τε ρ αν α συ γ κρι ι τωσ των Σε ρ α φιμ <sup>Δ</sup> την α δι α

φθο ρωσ Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup> την ον τωσ Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup> <sup>q</sup>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω

σιν της δου λης αυ του <sup>Δ</sup> ι δου γαρ α πο του <sup>χ</sup> <sup>ρ</sup> νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>Δ</sup>

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π q

Ο τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

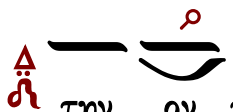
δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

 ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

του  δι ε σκορ πι σεν υ περ η  φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των 

 ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

 α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα



πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

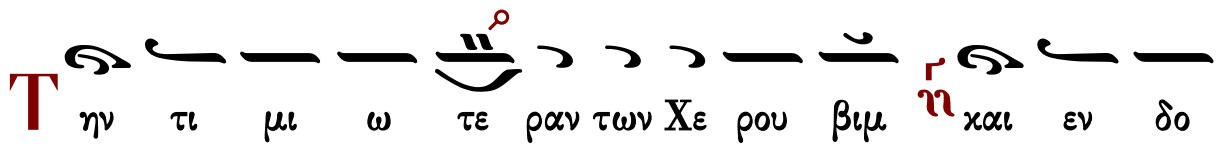
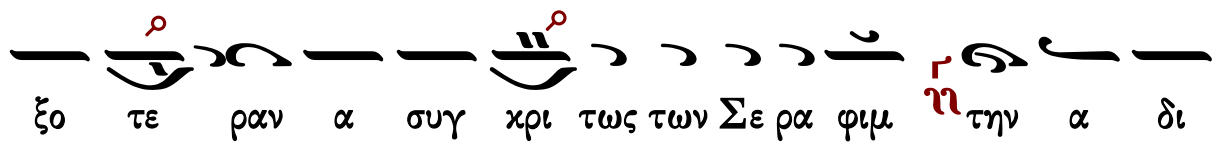
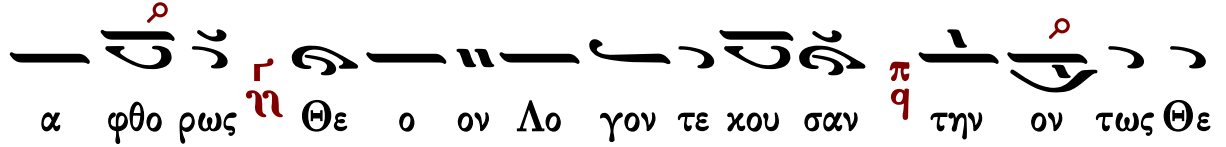
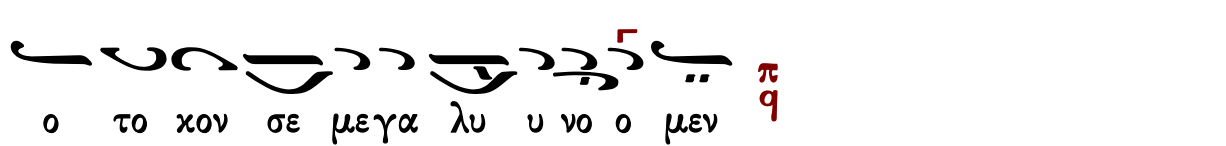
ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος


 Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο  

 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ  την α δι  

 α φθο ρως  Θε ο ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε  

 ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος α'

 Ω Μῆτερ Παρθένε, καὶ Θεοτόκε ἀψευδής, ἡ τεκοῦσα ἀσπόρως, Χριστὸν τὸν Θεὸν ἡμῶν, τὸν ἐν Σταυρῷ ὑψωθέντα σαρκί, σὲ οἱ πιστοί, ἅπαντες ἀξίως, σὺν τούτῳ νῦν μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

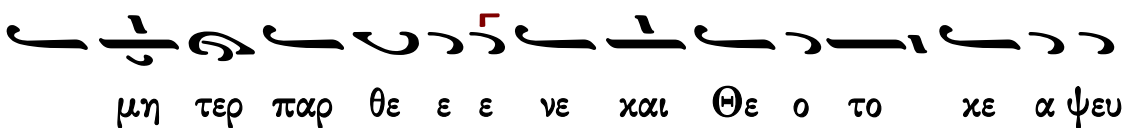
Πέτρου Βυζαντίου

Σύντομος

ᾠδὴ θ'

ἦχος  Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.439#



 μη τερ παρ θε ε ε νε και Θε ο το κε α ψευ

δης η τε κου σα α σπο ο ρως Χρι στο ον τον Θε ον

η μων τον εν Σταυ ρω ω ω υ ψω θε εν τα σαρ κι

σε ε οι πι στοι οι οι α παντες α ξι ι ως συν του τω νυν

μεγα λυ υ νο ο με ε ε εν

Ἀρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ θ'

Ἦχος ♯ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.21#

ω μη η η τερ Παρ θε ε ε νε ε και Θε

ε ε ο ο το ο κε ε α α α ψε ε ευ

δη ης η τε κου ου σα α α α σπο ο ρως Χρι

στο ο ο ον το ον Θε ε ο ον η η η μω ων το



## Ἀρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ♯ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριῶδιον  
τ.Α' 2003 σ.136\*



στο ο ο ον το ον Θε ε ο ον η η η μω ων π q το

ο ον ε εν Στα αυ ρω ω ω υ υ ψω θε ε ε

ε εν τα α σα α αρ χι Δ σε ε ε ε οι

οι πι ι ι στοι οι οι οι α α παν τε ες α

α ξι ι ι ω ως Δ συν του ουτω ω νυν με ε γα

α λυ υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν π q

# Εἰς τὸν Εὐαγγελισμόν

25/3

ἤχος δ'

- α **Ἀ**νοίξω τὸ στόμα μου καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν σύλληψιν.
- γ **Τ**οὺς σοὺς ὕμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θιάσον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· καὶ τῇ σεπτῇ συλλήψει σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ **Ὁ** καθήμενος ἐν δόξῃ, ἐπὶ θρόνου Θεότητος, ἐν νεφέλῃ κούφῃ, ἦλθεν Ἰησοῦς ὁ ὑπέρθεος, τῇ ἀκηράτῳ παλάμῃ/παρθένῳ, καὶ διέσωσε, τοὺς κραυγάζοντας· Δόξα Χριστὲ τῇ δυνάμει σου.
- ε **Ἐ**ξέστη τὰ σύμπαντα, ἐπὶ τῇ θείᾳ δόξῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔσχες ἐν μήτρᾳ τὸν ἐπὶ παντὶ Θεόν, καὶ τέτοκας ἄχρονον Υἱόν, πᾶσι τοῖς ὕμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύοντα.
- ς **Ἐ**βόησε, προτυπῶν τὴν ταφὴν τὴν τριήμερον, ὁ προφήτης, Ἰωνᾶς ἐν τῷ κήτει δεόμενος· Ἐκ φθορᾶς με ῥῦσαι, Ἰησοῦ βασιλεῦ τῶν δυνάμεων.
- ζ **Οὐ**κ ἐλάτρευσαν, τῇ κτίσκει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Ἀ**ἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἀ**κουε κόρη Παρθένε ἀγνή, εἰπάτω δὴ ὁ Γαβριήλ, βουλὴν Ὑψίστου ἀρχαίαν ἀληθινήν. Γενοῦ πρὸς ὑποδοχὴν ἐτοιμῇ Θεοῦ· διὰ σοῦ γὰρ ὁ ἀχώρητος, βροτοῖς ἀναστραφήσεται· διὸ καὶ χαίρων βοῶ· Εὐλογεῖτε, πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Ἀργαὶ

Σύντομοι

ὥδ' α'

Ἦχος δ'  Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.330#

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ ματος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βασι λι δι Μη

τρι και ο φθη σομαι φαι δρωσ πα νη γυ ρι ζων <sup>π 9</sup> και

α σωγη θο μενος ταυ της την συλ ληψιν <sup>6</sup> ὠδὴ γ'

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη σαν

τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π 9</sup> καν τη σε πτη συλ

λη ψει σου <sup>Δ</sup> χορὸς α' στε φα νων δο ξης α ξι ω σον <sup>6</sup> ὠδὴ δ'

Ο κα θη μενος εν δο ο ξη <sup>Δ</sup> ε πι θρο νου Θε

ο τη τος <sup>6</sup> εν νε φε λη κου ου φη <sup>Δ</sup> ηλθεν Ι

η σου ους ο υ περ θε ος <sup>6</sup>λ τη α κη ρα τω πα λα

μη και δι ε σω σε <sup>π</sup>9 τους κραυ γα ζον τας δο ξα Χρι στε τη

δυ να μει σου <sup>6</sup>λ σ.331\*

ὠδὴ ε΄

Ε ξε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο

ξη σου <sup>A</sup>δ σου υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε

σχες εν μη η τρα τον ε πι πα αν των Θε ον και τε ε

το κας α χρο νον Υι ον πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup>λ σω τη

ρι ι αν βρα βευ ου σα <sup>6</sup>λ

ὠδὴ ς΄

Ε βο ο η η σε προ τυ πων την τα φη η ην τη ην

τρι η με ρον <sup>6</sup>λ ο προ φη η η η η της Ι ω



νας εντω κη η η τει ει δε ο μενος <sup>6</sup> εκ φθο ρας με <sup>λ</sup>

ρυ υ σαι Ι η σου βασι λε ευτωνδυ να μεων <sup>6</sup> <sup>λ</sup> σ.295\* ὠδὴ ζ'

Ο υκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα <sup>6</sup> αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>6</sup> αν <sup>λ</sup>

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον <sup>6</sup> υ περ υ μνη <sup>λ</sup>

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

ος ει <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Α κου ε χο ρη Παρ θε νε α γνη ει πα τω δη



ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζων και α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην συλ λη η ψι ιν

αλλι γραμμή  
και α α α α σω γη η θο με ε νος...

ὥδῃ γ'

Τους σου ου ουους υ μνο ο λο ο γουους Θε ε ο ο

το ο ο ο κε ως ζω ω ωω σα α και αι α α α

φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ κρο τη η σα αν

τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω ω ω σον

καν τη σε πτη συυλ λη η ψει ει σου χορὸς α' στε φα

α α α α α α α νω ων δο ο ο ο ξη ης α

α ξι ω ω σο ον

\*  
ἄλλη γραμμὴ χορὸς α' στε φα α νω ων δο ο ο ξη ης α α ξι

ω ω σο ον

ὥδῃ δ'

Ο κα θη με νο ος εν δο ο ο ξη ε πι θρο ο ο

νου ου θε ο τη η το ος εν νε φε ε λη κου

ου ου φη η ηλθεν Ι η σου ου ους ο ο υ περ

θε ε ο ος τη α κη ρα τω πα α λα μη η και αι

δι ι ε ε ε σω ω ω ω σε ε τους κραυ γα α

α α α α ζο ο ο ον τας δο ο ξα τη δυ να α α α

μει σου Κυ ρι ι ε ε

ἄλλη γραμμή

\* πα α λα μη η και δι ε ε σω ω ω ω σε ε

ὥδ' ἔ'

ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η συυλ λη η ψει ει σου συ υ υ γα α α

α αρ α πει ει ρο γα α με Παρ θε ε ε νε ε ε σχες

εν μη η η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α α αν

τω ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο ο

κας α α χρο ο νο ον Υι υι ο ο ο ον πα α σι

ι τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη

ην βρα βε ευ ο ον τα α <sup>6</sup>λ

ἄλλη γραμμὴ  
\* ον <sup>Δ</sup> και αι τε το ο κας α α χρο ο νον Υι υι

ον <sup>Δ</sup> πα α σι ι τοι οis...

ᾠδὴ ς'  
Ε \* ε βο ο ο η η η η σε ε ε ε προ τυ υ

πω ων την τα φη ηην τη ην τρι η με ε ρο ον <sup>6</sup>λ \* ο

προ φη η η η η της <sup>π</sup>q Ι ω να α α ας εν

τω κη η η τει ει δε ο ο με ε νο ος <sup>6</sup>λ εκ φθο

ρα α α ας με ε ρυ υ υ σαι <sup>Δ</sup> Ι η σου ουβα

σι λε ε ε ευ τω ων δυ υ να με ε ω ων <sup>6</sup>λ ἄλλη γραμμὴ

\* Ε βο ο η η η η σε ε <sup>π</sup>q προ τυ πω ω ω

ων την τα ...

\*<sup>2</sup> 6 λ ο προ φη η η τη ης Ι ω ω νας εν τω ...

ᾠδὴ ζ'

Ο υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α 6 λ αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

3 λ λη ην 6 λ αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον 6 λ υ περ υ υ υ μνη

η η η η τε ε π 9 ο των πα τε ρω ων \* Κυ

ρι ι ο ος και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει

ει 6 λ

ἄλλη γραμμή

\* Κυ ρι ι ο ο ο ος και Θε ε ος ευ λο γη το

ο ος ει ει 6 λ

ᾠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον 6 λ

Α α κου ε ε Κο ο ρη Πα αρ θε ε νε ε α α γνη

η 6 λ ει πα α τω ω δη ο ο Γα βρι ι ηλ π 9 βου λην Υ

ο ψι ι ι στου α α αρ χαι αι αι αν α λη η θι ι νη

η 6 λ γε νου προς υ υ πο δο ο χην ε τοι οι οι οι οι

μη η Θε ε ε ου Δ δι α σου ου γα αρ ο ο α



χω ρη η το ος <sup>6</sup>λ βρο τοι οis α να α στρα φη η η σε

ε ε ε ται <sup>π</sup>9 \* δι ο και αι χαι αι ρω ων βο ω ω

ω ε ευ λο γει ει ει ει ει τε <sup>Δ</sup>α πα αν τα τα α ε ε

ερ γα α <sup>Δ</sup>α Κυ ρι ι ου ου το ον Κυ υ ρι ι ο ο ο

ο ον <sup>6</sup>λ

<sup>π</sup>9 \* δι ο ο και χαι αι αι αι ρω ων βο

ο ο ω <sup>Δ</sup>α ευ λο γει ει τε πα α αν τα τα α ε

ε ερ γα Κυ ρι ι ου τον Κυ υ ρι ι ο ο ο ο

ον <sup>6</sup>λ

## Θ' φδὴ τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἦχος δ'

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

«Ὡς ἐμφύχῳ Θεοῦ κιβωτῷ, ψαυέτω μηδαμῶς χεὶρ ἀμυήτων. Χεῖλη δὲ πιστῶν τῇ Θεοτόκῳ ἀσιγήτως· φωνὴν τοῦ ἀγγέλου ἀναμέλποντα, ἐν ἀγαλλιάσει βοάτω· χαῖρε κεχαριτωμένη ὁ Κύριος μετὰ σοῦ».

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Υπὲρ ἔννοιαν συλλαβοῦσα Θεόν, τῆς φύσεως θεσμούς· ἔλαθες κόρη. Σὺ γὰρ ἐν τῷ τίκτειν τὰ μητέρων διέδρας. Πρυστὴ φύσις περ καθεστηκυῖα· ὅθεν ἐπαξίως ἀκούεις· χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Πῶς πηγάζεις γάλα Παρθένε ἀγνή; Οὐ φέρει ἐξειπεῖν γλῶσσα βροτεία· ξένον γὰρ φύσεως ἐπιδείκνυσαι πρᾶγμα. Νομίμου γονῆς ὅρους ὑπερβαῖνον· ὅθεν ἐπαξίως ἀκούεις· Χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Μυστικῶς ταῖς ἱεροτεύκτοις γραφαῖς, λαλεῖται περὶ σοῦ, Μῆτερ Ὑψίστου. Κλίμακα γὰρ πάλαι Ἰακώβ σε προτυποῦσαν· ἰδὼν ἔφη· βάσις Θεοῦ αὕτη· ὅθεν ἐπαξίως ἀκούεις· Χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Θαυμαστὸν τῷ ἱεροφάντῃ Μωσεῖ· ἡ βάτος καὶ τὸ πῦρ ἔδειξε τέρας. Ζητῶν δὲ τὸ πέρας εἰς διάβασιν χρόνου. Ἐν κόρῃ ἀγνῇ, ἔφη, κατοπτεύσω· ἥ ὡς Θεοτόκῳ λεχθεῖν· Χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Δανιήλ σε ὅρος καλεῖ νοητόν· γεννήτριαν Θεοῦ ὁ Ἡσαΐας· βλέπει δὲ ὡς πόκον Γεδεὼν, ὁ Δαυτὶδ δέ, ἀγίασμα φάσκει, πύλην δὲ σε ἄλλος· ὁ δὲ Γαβριήλ σοι κραυγάζει· χαῖρε κεχαριτωμένη· ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δ' α' Ββ

ψδθ θ'

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.225/672#

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω ψαυ ε

τω μη δα μως χει ειρ α μυ η των χει λη δε πι

στων τη Θε ο το κω α σι γη τως φω νη ην του

αγ γε λου α να μελ πον τα εν α γαλ λι α

σει βο α τω χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι

ος μετα σου

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

**Υ** περ εν νοι αν συλ λα βου σα Θε ον της

φυ σε ως θεσμούς ε ελαθες Κο ρη συ γαρ εν τω

τι κτειν τα μη τε ε ρων δι ε εδρας ρευ στη η φυ

σις περ καθ ε στη κυι α ο θεν ε πα ξι ως α

κου εις χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος μετα

σου

**Ε** υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

**Π** ως πη γα ζεις γα λα Παρ θε ε νε α γνη ου

φε ρει εξ ει πειν γλω ωσ σα βρο τει α ξε νον γαρ φυ σε

ως ε πι δει ει κνυ σαι πρα α γμα νο μι

μου γο νης ο ρους υ περ βαι νον ο θεν ε πα

ξι ως α κου εις χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος

μετα σου

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

Μ υ στι κως ταις ι ε ρο τευ κτοις γρα φαις

λα λει ται πε ρι σου Μη η τερ Υ ψι ι στου κλι μα

κα γαρ πα λαι Ι α κωβ σε προ τυ που ουσαν ι

δω ων ε φη βα σις Θε ου ου αυ τη ο θεν ε πα

ξί ως α κου εις <sup>π</sup> <sup>9</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
χαι ρε Κεχα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
μετα σου

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
Δ ο ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
λην <sup>Δ</sup> <sup>9</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
Θ αυ μα στον τω ι ε ρο φαν τη Μω σει η

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
βα τος και το πυρ ε ε δει ξε τε ρας ζη των δε το

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
πε ρας εις δι α α βα σιν χρο ο νου <sup>Δ</sup> <sup>9</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
εν Κο

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
ρη α γνη ε φη κα το πτευ σω η ως Θε ο το

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
κω λε χθει η <sup>π</sup> <sup>9</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
χαι ρε Κεχα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος μετα

σου <sup>6</sup>λ


  
**K** α ν υ ξ α ε ι ε χ ι ε τ ο υ ς α ω ν υ τ ω ν α


 ω νων α μην

λὴν αἰ νει εἰ τε εὐ ρα νοι Θε οὐ την δο ο ξαν

Α ν ι η λ σ ε ο ρ ο ς κ α λ ε ι ν ο η τ ο ν γ ε ν

νη τρι αν Θε ου ο Ησα ι ας βλε πει δε ως πο κον

Γε δε ων ο Δα βιδ δε α γι ι α σμα φα α

σκει <sup>A</sup><sub>δὲ</sub> πυ λην δε σε αλ <sup>6</sup><sub>χ</sub> λος ο δε Γα βρι ηλ σοι










κραυ    γα    ζει    χαι    ρε    Κε    χα    ρι    τω    με    νη    ο    Κυ    ρι    ος    με    τα

σου 6 λ

Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος δ'

Εὐαγγελίζου γῇ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.  
Ὡς ἐμφύχῳ Θεοῦ κιβωτῷ, ψαυέτω μηδαμῶς χεὶρ ἀμυήτων. Χείλη δὲ πιστῶν τῇ  
Θεοτόκῳ ἀσιγῆτως· φωνὴν τοῦ ἀγγέλου ἀναμέλποντα, ἐν ἀγαλλιάσει βοάτω· Χαῖρε  
Κεχαριτωμένη ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Πελοποννησίου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

ἦχος δ' B8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.297\*

Ε υ α γ γε λι ι ζου γη χα ραν με γα α λην αι νει

ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν 6 λ

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω 6 λ ψαυ ε ε τω



μη δα μως χει ρα μυ υ των <sup>6</sup> χει λη δε πι στων τη

Θε ο το κω α σι γη τως φω νη ην του αγ γε λου

α να μελ πον τα εν α γαλ λι α σει βο α τω <sup>π</sup>

χαι ρε κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος με τα σου ου <sup>6</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>Λ</sup> δὴ Ββ

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.225/672#

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην <sup>Δ</sup> αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν <sup>6</sup>

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω <sup>6</sup> ψαυ ε

τω μη δα μως χει ειρ α μυ η των <sup>6</sup> χει λη δε πι

στων τη Θε ο το κω α σι γη τως <sup>6</sup>φω νη ην του

αγ γε λου α να μελ πον τα <sup>6</sup>εν α γαλ λι α

σει βο α τω <sup>π</sup>χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι

ος με τα σου ου ου ου ου <sup>6</sup>

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος <sup>4</sup>Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1905 σ.55#

Ε υ αγ γε λι ι ι ι ζου γη χα α ραν

με ε ε ε γα α α α λην <sup>Δ</sup>αι νει ει τε ου ρα α νοι

οι Θε ε ου τη ην δο ο ο ξααν <sup>6</sup>

Ω ς εμ ψυ υ χω Θε ε ου ου κι ι βω ω τω ω <sup>6</sup>

ψαυ ε ε τω μη δα α μως χει ειρ α μυ υ η η

η τωων <sup>6</sup>λ χει ει ει ει λη δε πι ι στων τη Θε ο ο

το κω ω α σι ι ι γη η η τωως <sup>6</sup>λ φω νη

η η ην του αγ γε ε ε λου α να μελ πο ον τα

α <sup>6</sup>λ εν α α γα α α αλ λι α σει βο ο α τωω <sup>π</sup>π <sup>9</sup>λ \* χαι ρε

Κε χα ρι τω ω με ε ε νη ο Κυ ρι ι ο ος με τα

σου ου ου ου <sup>6</sup>λ

Η παρακάτω αρχική κατάληξη της καταβασίας του Ιωάννου, ταίριαζε στα θισόδια και γιαυτό πήρα την κατάληξη από την αργή του Πέτρου και την πρόσθεσα στην καταβασία του Ιωάννου.

\* ον τως α νω τε ε ρα πα α αν των υ υ πα αρ

χεις Παρ θε ε νε ε Α α γνη η η η η <sup>6</sup>λ

Πέτρου Πελοποννησίου

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ρα αν

με ε ε γα α α α α λην αι νει ει τε ου ρα α νοι

οι Θε ε ε ου ου την δο ο ο ξαν

Ω ς εμ ψυ υ χω Θε ε ου ου κι ι βω ω τω

ω ψαυ ε ε τω μη δα α μως χει ειρ α μυ υ η

η η τωων χει ει ει λη δε πι ι στων τη Θε ο

ο το κω ω α σι ι ι γη η η τω ως φω

νη η η ην του αγ γε ε ε λου α να μελ πο ον

τα α εν α γαλ λι α σει βο ο α τω χαι ρε Κε

χαριτω ω με ε ε νη ο Κυ ρι ι ο ος με τα σου

ου ου ου ου λ

# Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῶν Βαΐων

Τοῦ Λαζάρου

ἤχος πλ.δ'

α Ὑγρὰν διοδεύσας ὥσεί ξηράν, καὶ τὴν αἰγυπτίαν, μοχθηρίαν διαφυγών, ὁ Ἰσραηλῆτης ἀνεβόα· τῷ λυτρωτῇ καὶ Θεῷ ἡμῶν ἄσωμεν.

γ Οὐρανίας ἀψῖδος, ὀροφουργέ Κύριε, καὶ τῆς Ἐκκλησίας δομῆτορ, σὺ μὲ στερέωσον, ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ σῇ, τῶν ἐφετῶν ἡ ἀκρότης, τῶν πιστῶν τὸ στήριγμα, μόνε φιλάνθρωπε.

δ Σὺ μου ἰσχύς, Κύριε, σὺ μου καὶ δύνამις, σὺ Θεός μου, σὺ μου ἀγαλλίαμα, ὁ πατρικὸς κόλπος μὴ λιπών, καὶ τὴν ἡμετέραν, πτωχείαν ἐπισκεψάμενος· διὸ σύν τῷ προφῆτῃ, Ἀββακούμ σοι κραυγάζω· τῇ δυνάμει σου δόξα φιλάνθρωπε.

ε Ἵνα τί με ἀπώσω, ἀπὸ τοῦ προσώπου σου, τὸ φῶς τὸ ἄδυτον, καὶ ἐκάλυψέ με, τὸ ἀλλότριον σκότος τὸν δείλαιον· ἀλλ' ἐπίστρεψόν με, καὶ πρὸς τὸ φῶς τῶν ἐντολῶν σου, τὰς ὁδοὺς μου κατεύθυνον δέομαι.

ς Ἰλάσθητί μοι Σωτήρ· πολλαὶ γὰρ αἱ ἀνομίαι μου, καὶ ἐκ βυθοῦ τῶν κακῶν, ἀνάγαγε δέομαι· πρὸς σέ γὰρ ἐβόησα, καὶ ἐπάκουσόν μου, ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου.

ζ Οἱ ἐκ τῆς Ἰουδαίας, καταντήσαντες παῖδες ἐν Βαβυλῶνί ποτε, τῇ πίστει τῆς Τριάδος, τὴν φλόγα τῆς καμίνου, κατεπάτησαν ψάλλοντες· ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον

η Τὸν βασιλέα τῶν οὐρανῶν, ὃν ὕμνοῦσι, στρατιαὶ τῶν ἀγγέλων, ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαὶ

Σύντομοι

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ̣ ϝ̣ Ϟ̣ —<sup>12</sup>

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.468#

Υγραν δι ο δευ σας ω σει ξη ραν και την αι γυ

πτι ανμο χθη ρι αν δι α φυ γων ο Ισ ρα η λι της

α νε βο ο α τω Λυ τρω τη και Θε ω η μων α σω

μεν

ὥδὴ γ'

Ου ρα νι ας α ψι δος ο ρο φουρ γε ε Κυ ρι ε και

της Εκ κλη σι ας δο μη τορ συ με στε ρε ω σον εν

τη α γα α πη τη ση των ε φε των η ακ κρο της

των πι στων το στη ρι γμα μο νε φι λαν θρω πε

ὥδὴ δ'

Συ μου ι σχυς Κυ ρι ε συ μου και δυ να μισ συ

Θε ο ος μου συ μου α γαλ λι α μα ο πα τρι κους

κολ πους μη λι πων και την η με τε ε ραν πτω χει αν

ε πι σκε ψα με νος δι ο συν τω προ φη τη Αβ βα

κουμ σοι κραυ γα ζω τη δυ να μει σου δο ξα φι λαν

θρω πε

ὥδῃ ε'

να τι με α πω σω α πο του προ σω που σου

το φως το α δυ τον και ε κα λυ ψε με το αλ λο τρι ον

σκο τος τον δει λαι ον αλλ ε πι στρε ψον με και προς

το φω ως των εν το λων σου τας ο δους μου κα τευ

θυνον δε ο μαι

ὥδῃ ε'



Ἰ λα σθη τι μοι Σω τηρ πολ λαι γαρ αι α νο μι αι

μου ου και εκ βυ θου των κα κων α να γα γε δε ο μαι

προς σε γαρ ε βο η σα και ε πα κου σο ον μου ο Θε ος

της σω τη ρι ας μου ϣδὴ ζ'

Ο ι εκ της Ι ου δαι ας κα ταν τη σαν τες παι δες

εν Βα βυ λω ω νι πο τε τη πι στει της Τρι α α δος

την φλο γα της κα μι νου κα τε πα α τη σαν ψα λ λον τες

ο των πα τε ρων η μων Θε ος ευ λο γη τος ει ϣδὴ η'

Α ι νου ου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον ϣδὴ θ' Πέτρου Βυζαντίου, Θρημολόγιον 1825 σ.143\*

  
**Τ** ον βα σι λε ε ε α των ου ρα νων ον υ μνου ου σι  
 στρα τι αι των αγ γε ε λων υ μνει τε  και υ πε ρυ ψου  
 τε εις παν τας του ους αι ω ω να α α ας 

## Αργαί

ὑπὸ Γρηγορίου πρωτοψάλτου  
 συντμηθεῖσαι καὶ διασκευασθεῖσαι

ὥδῃ α'

Ἦχος λ π δὲ 

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Τριῶδιον Α'  
 2003 σ.237\*

  
**Υ**  γραν δι ο δε ε ευ σας ω σει ει ξη η ραν   
 και την αι γυ πτι ι ι ι ι α αν μο χθη ρι ι ι  
 αν δι α α φυ υ γων  ο Ισ ρα η λι ι της  
 α νε ε βο ο ο α  τω λυ τρω τη και αι Θε

ω ω ω ω η μων α α σω ω μεν

ῥδῆ γ'

Ο υ ρα νι ας α ψι ι ι ι ι δος ο ρο φουρ

γε ε Κυ υ ρι ι ε και της Εκ κλη σι ι α

α α ας δο ο μη η η τορ συ υ υ με στε ρε

ε ω ω σον εν τη α γα α πη η τη η ση των ε

φε των η α χρο ο ο ο ο της των πι στω ων

το ο ο στη η ρι ι ι γμα χορός α' μο ο ο νε φι

λα αν θρω ω πε

ῥδῆ δ'

Ο υ μου ι ι σχυς Κυ ρι ι ε συ υ μου και

δυ υ να α μιν συ Θε ο ο ο ος μου συ μου α γαλ

λι ι α α μα ο πα τρι κους κο ολπου ους μη λι ι

πων και την η με τε ε ε ε ε ε ρα αν πτω

ω χει ει ει αν ε πι σκε ψα με ε νος δι ο συν τω

προ φη η τη η η Αβ βα α κουμ σοι κρα αυ γα α α ζω

τη δυ να μει ει σου δο ο ο ο ξα φι λα αν θρω ω

πε

ὥδῃ ε'

να τι με α πω ω ω σω α πο του προσ ω που σου

το ο φω ως το α α δυ υ υ τον και ε κα α

λυ ψε ε ε ε με το αλ λο τρι ον σχο ο ο τος τον

δει ει λαι αι ον αλλ ε πι ι στρε ψο ο ο ο ον

με και προς το φω ω ω ω ως των ε εν το λων σου

τας ο δους μου ου κα τε ε ε ευ θυ νον δε ε ο ο

μαι

ᾠδὴς'

λα σθη τι ι μοι Σω ω τη πολ λαι γαρ αι α α

νο ο μι ι αι αι μου και εκ βυ θου των κα α α

κων α να α α γα γε δε ο μαι αι προς σε γαρ

ε ε βο ο η η σα και ε πα κου σο ο ο ο

ο ον μου ο Θε ος της σω τη ρι ι α ας μου

ᾠδὴς'

ι εκ της Ι ου δαι ας κα ταν τη σαν τες παι αι

δες εν Βα βυ λω ω νι ι πο ο τε τη πι στει της

Τρι ι α α α δος την φλο ο ο ο ο γα της κα α

μι ι ι ι νου κα τε πα α τησαν ψα αλ λο ον

τες ο των πα τε ε ε ε ρων η η μων Θε ε

ος ευ λο γη το ο ος ει ει ὥδῃ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου με εν

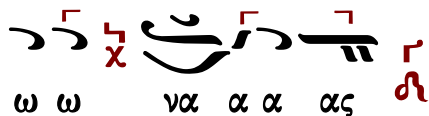
τον Κυ υ ρι ο ον ν

Τ ον βα σι λε ε ε ε α των ου ρα α α νω

ων ο ον υ υ υ μνου ου ου ου ου σι στρα τι αι

των α αγ γε ε ε λω ων υ μνει ει ει τε και υ

περ υ ψου ου ου ου τε εις παν τας του ου ους αι ω



## Θ' φδὴ τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Κανὼν α'

ἦχος πλ.δ'

«Τὴν ἄγνὴν ἐνδόξως τιμήσωμεν, λαοὶ Θεοτόκον, τὴν τὸ θεῖον πῦρ ἐν γαστρὶ, ἀφλέκτως συλλαβοῦσαν, ὕμνοις ἀσιγήτοις μεγαλύνωμεν». (β')

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Οἱ λαοὶ ἰδόντες βαδίζοντα, νεκρὸν τεταρταῖον, ἐκπλαγέντες τῷ θαύματι, ἀνεβόων τῷ Λυτρωτῇ, Θεόν σε ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Προπιστῶν τὴν ἔνδοξον ἔγερσιν, τὴν σὴν ὦ Σωτὴρ μου, νεκρὸν τετραήμερον, ἐκ τοῦ Ἄδου ἐλευθεροῖς, τὸν Λάζαρον, ἐν ὕμνοις μεγαλύνω σε.

Κανὼν β'

Κυρίως Θεοτόκον

ἦχος πλ.δ'

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Τιμῶν σου τὸν Πατέρα, καὶ ἀποδεικνύων, ὡς οὐκ ἀντίθεος ἦσθα, προσεύχη Χριστέ, αὐτεξουσίως ἐγείρας τὸν τετραήμερον.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Ἐκ τάφου τεταρταῖον, Λάζαρον ἐγείρας, τῆς τριημέρου Χριστέ μου Ἐγέρσεως, παναληθέστατον πᾶσι, δεικνύεις μάρτυρα.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Βαδίζεις καὶ δακρύεις, φθέγγῃ τε Σωτὴρ μου. Τὴν ἀνθρωπίνην δεικνύς σου ἐνέργειαν, τὴν θεϊκὴν δὲ μηνύων, ἐγείρεις Λάζαρον.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

Ἐνήργησας ἀφράστως, Δέσποτα Σωτὴρ μου, καθ' ἑκατέρων τῶν δύο σου φύσεων, αὐτεξουσίῳ θελήσει, τὴν σωτηρίαν μου.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Τ ην α γνην εν δο ξως τι μη σω μεν ς λα οι οι Θε  
ο το κον ς την το πυ υρ της θε ο τητος ς δε ξα με  
νην εν τη γαστρι α φλε κτως ς εν υ μνοις μεγα λυ υ νο  
ον τες ς (β')

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ο ος η μων δοξα σοι ς

Ο ι λα οι ι δον τες βα δι ζοντα νε κρο ον τε ταρ  
ται ον ς εκ πλα γε εν τες τω θαυ μα τι ς α νε βο ων τω  
Λυ τρω τη ς Θε ον σε εν υ μνοις μεγα λυ υ νο ο



μεν

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ο ος η μων δοξα σοι

Π ρο πι στων την εν δο ξον ε γερ σιν την ση ην ω

Σω τηρ μου νε κρο ον τετρα η μερον εκ του α δου ε λευ

θε ροις τον Λα ζαρον εν υ μνοις μεγα λυ υ νω ω σε

ὤδὴ θ', κανὼν θ'

Κυρίως Θεοτόκον

Ἦχος λ ρ δ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
2003 σ.240#

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι

Τ ι μω ων σου τον Πα τε ρα και α πο δει κνυ υ

ων ως ουκ αν τι θε ος η σθα προσ ε ευχη Χρι στε

αυ τε ξου σι ως ε γει ρας τον τε τρα η με ρον

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξασοι

Ε χ τα α φου τε ταρ ται ον Λα ζα ρον ε γει ει

ρας της τρι η με ρου Χρι στε μου ε γερ σε ως

πα να λη θε στα τον πα σι δει κνυ εις μαρ τυ ρα

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι

Β α δι ι ζεις και δα κρυ εις φθεγ γη τε Σω τη ηρ

μου την αν θρω πι νην δει κνυς σου ε νερ γει αν

την θε ι κην δε μη νυ ων ε γει ρεις Λα ζα ρον

Και νυν και α ει και εις τους αι ωνας των αι ωνων

α μην

Εν η ηργη σας α φραστως Δε σπο τα Σω τη

η μου καθ ε κα τε ραν των δυ ο σου φυ σε ων

αυ τε ξου σι ω θε λη σει την σω τη ρι αν μου

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.δ'

Κυρίως Θεοτόκον, σὲ ὁμολογοῦμεν, οἱ διὰ σοῦ σεσωσμένοι Παρθένε ἀγνή, σὺν ἁσωματοῖς Χορείαις, σὲ μεγαλύνοντες.

Σύντομος

Ἀργή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Πελοποννησίου

## Σύντομος

ᾠδῆ θ'

Ἦχος λ π δὲ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
2003 σ.241#

Κυ ρι ι ως Θε ο το κον σε ο μο λο γου ου

  
 μεν <sup>κ</sup>λ οι δι α σου σε σω σμε νοι Παρ θε ε νε α  
  
 γνη <sup>ρ</sup>λ συν α σω μα τοις χο ρει αις σε μεγα λυ  
  
 νον τε ε ε ες <sup>ρ</sup>λ

## Ἀρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ θ'

Ἦχος λ π δὲ 

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.95#

**Κ** υ ρι ι ι ι ως Θε ε ο το κον <sup>ρ</sup>λ σε ε  
  
 ο ο μο λο γου ου ου μεν <sup>κ</sup>λ οι δι α σου σε σω ω  
  
 σμε νοι Παρ θε ε νε ε α α γνη <sup>ρ</sup>λ συν α σω μα  
  
 τοις χο ρει αις σε ε ε μεγα λυ υ νο ο ο μεε ε εν <sup>ρ</sup>λ  


## Ἀρχὴ Πέτρου Πελοποννησίου

ὥδῃ θ'

Ἦχος λ π δὲ 

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.241\*

Κ υ ρ ι ι ι ω ς Θ ε ε ο τ ο κ ο ν σε ο μο

λο γου ου ου ου μεν οι δι α σου σε σω ω σμε ε ε νοι

Π αρ θε ε νε ε α α γνη συν α σω μα τοι οις χ ο ο

ρει ει ει αι ς σε ε ε ε με γ α λυ υ νο ο ν

τε ε ε ε ς

## Τῶν Βαῖων

ἦχος δ'

- α Ὑφθησαν, αἱ πηγαὶ τῆς ἀβύσσου, νοτίδος ἄμοιροι, καὶ ἀνεκαλύφθη θαλάσσης, κυμαίνουσης τὰ θεμέλια, τῇ καταιγίδι νεύματι· ταύτης γὰρ ἐπετίμησας, περιούσιον λαὸν δὲ ἔσωσας, ἄδοντα, ἐπινίκιον ὕμνον σοι Κύριε.
- γ Νάουσαν ἀκρότομον, προστάγματι σῶ, στερεὰν ἐθήλασε πέτραν, Ἰσραηλῆτης λαός, ἡ δὲ πέτρα σὺ Χριστέ, ὑπάρχεις καὶ ζωὴ, ἐν ᾗ ἐστερεώθη ἡ Ἐκκλησία κράζουσα· Ὡσαννά, εὐλογημένος εἶ ὁ ἐρχόμενος.
- δ Χριστὸς ὁ ἐρχόμενος ἐμφανῶς Θεὸς ἡμῶν, ἥξει καὶ οὐ χρονιεῖ, ἐξ ὅρους κατασκίου δασέος, κόρης τικτούσης ἀπειράνδρου, προφῆτης πάλαι φησί. Διὸ πάντες βοῶμεν· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε Τὴν Σιών ἐπ' ὅρους ἀνάβηθι, ὁ εὐαγγελιζόμενος, καὶ τὴν Ἱερουσαλήμ, ὁ κηρύσσων ἐν ἰσχύϊ ὕψωσον φωνήν. Δεδοξασμένα ἐλαλήθη περὶ σοῦ, ἡ πόλις τοῦ Θεοῦ, εἰρήνη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ, καὶ σωτήριον ἔθνεσιν.
- ς Ἐβόησαν, ἐν εὐφροσύνῃ δικαίων τὰ πνεύματα, νῦν τῷ κόσμῳ, διαθήκη καινὴ διατίθεται, καὶ ῥαντίσματι, καινουργείσθω λαὸς θεοῦ αἵματος.
- ζ Ὁ διασώσας ἐν πυρί, τοὺς Ἀβραμιαίους σου παῖδας, καὶ τοὺς Χαλδαίους ἀνελών, οἷς ἀδίκως δικαίους ἐνήδρευσαν, ὑπερύμνητε Κύριε, ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον
- η Εὐφράνθητι Ἱερουσαλήμ, πανηγυρίσατε οἱ ἀγαπῶντες Σιών· ὁ βασιλεύων γὰρ εἰς τοὺς αἰῶνας, Κύριος τῶν δυνάμεων ἦλθεν, εὐλαβείσθω πᾶσα ἡ γῆ, ἐκ προσώπου αὐτοῦ, καὶ βοάτω· Πάντα τὰ ἔργα ὑμνεῖτε τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

ὥδ' α'

ἦχος  Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.336#

Ω φθη η σαν αι πη γαι της α βυ υ υσ σου νο

τι ι δος α μοι ροι και α νε κα λυ φθη θα λα

ασ σης κυ μαι νου σης τα θε με λι α τη κα

ται γι δι νευ μα α τι τα αυτης γαρ ε πε τι μη

σας πε ρι ου σι ον λα ον δε ε ε σω ω σας α α δον τα

ε πι νι κι ον υ μνον σοι Κυ ρι ε

ᾠδὴ γ'

Ν α ου σαν α κρο το μον προ στα γμα τι σω στε

ρε αν ε θη λα σε πε τραν Ισ ρα η λι της λα

ος η η δε πε τρα συ Χρι στε υ παρ χεις και ζω η εν

η ε στε ρε ω ω θη η Εκκλη σι α κρα ζου σα

χορὸς





σμε να ε λα λη η θη <sup>Δ</sup>πε ρι σου η πο λις του Θε

ου <sup>6</sup>ει ρη η νη ε πι τον Ισ ρα ηλ και σω τη η ρι ον

ε θνεσιν <sup>6</sup>

ὠδὴς'

Ε βο ο η η σαν εν ευ φρο συ νη δι και αι αι ων

τα πνευ ματα <sup>6</sup>νυν τω κο ο ο σμω <sup>π9</sup>δι α θη κη και

νη η η δι α τι θεται και ραν τι ι σμα τι και νουρ

γει σθω λα ος θει ου αι ματος <sup>6</sup>

ὠδὴς'

Ο δι ι α σω σας εν πυ ρι <sup>6</sup>τους Α βρα μι αι

ους σου παι δας <sup>π9</sup>και του ουσ Χαλ δαι ους α νε λων <sup>6</sup>οις α

δι κως δι και αι αι ους εν η δρευ σαν <sup>6</sup>υ περ υ

μνη τε Κυ ρι ε  ο Θε ος ο των πα τε ρων ευ

λο γη τος ει  

ὥδ' ἡ'

 ι νου μεν ευ λο γουμεν και προ σκυ νου ου μεν τον

 Κυ ρι ον 

 υ φρα ανθη τι Ι ε ρου σα λημ πα νη γυ ρι σα

τε παν τες οι α γα πων τες Σι ων  ο βα σι λευ ων

γα ρεις τους αι ω ω νας Κυ ρι ος των δυνα α με ων η

ηλθεν  ευ λα βει σθω πα α σα η γη εκ προ σω

που αυτου ου και βο α α τω παν τα τα ερ γα υ μνει ει τε

τον Κυ ρι ο ο ο ο ον 

# Ἀργαί

## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδῃ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριῶδιον Α'  
2003 σ.270\*

ὦ φθη η η η σα α α αν αι πη γαι αι τη  
ης α α βυ υ υσ σου ου νο τι δος α μοι οι ροι και  
α νε κα λυ φθη θα α λασ ση ης κυ μαι νου ου σης τα  
θε με ε λι ι α α τη κα ται γι ι δι νε ε  
ευ μα α α α τι τα αυτης γα αρ ε ε πε τι μη  
η σα ας πε ρι ου ου σι ο ον λα α ο ον δε ε  
σω ω σα ας α α δο ο ο ον τα α α α ε πι  
νι ι κι ι ον υ υ υ υ μνο ον σοι Κυ ρι ι ε ε

**N** α ου σαν α κρο ο το μον προ ος τα α γμα α τι

ι σω ω <sup>6</sup> λ στε ρε αν ε θη λα σε ε πε τρα αν Ισ ρα

η η λι ι τη ης λα α ος <sup>6</sup> λ η η δε ε πε ε τρα α συ

Χρι ι στε υ πα α αρ χει εις και αι αι ζω ω ω ω

η η <sup>π</sup> εν η η ε ε στε ρε ω ω ω θη

η <sup>Δ</sup> η Ε εκ κλη η σι ι α κρα ζου ου σα α <sup>6</sup> λ χορὸς α'

ω σαν να α ευ λο γη η με ε νος ει ει ει ο ε

ερ χο με ε νο ος <sup>6</sup> λ

**Χ** ρι στο ος ο ε ερ χο με ε νος ε εμ φα α νω ως

Θε ος η η μω ων <sup>6</sup> λ η η ξει και αι ου χρο νι

ι ει εξ ο ρου ους κα τα σκι ι ι ου ου

δα σε ε ε ε ος Κο ο ρης τι κτου ου ου ου

ου ση ης α α πει ει ραν δρου ου προ φη η της πα α λαι

φη η σι δι ο ο παν τες βο ω ω ω με εν δο ο ξα

τη δυ να α α α μει σου Κυ ρι ι ε ε 6 λ ὠδὴ ε'

T ην Σι ι ων επ ο ρους α να βη η θι ο ε ευ α

αγ γε ε λι ζο με ε νος και την Ι ι ε ε ρου σα

λημ ο κη η ρυσ σω ων εν ι σχυ υ υ υ υ ι ι

ι υ υ υ ψω σο ον φω ω ω νην δε δο ξα

σμε ε να α ε λα α λη η η θη πε ρι σου ου η

η πο ο λης του ου Θε ε ου ου ει ρη η νη ε πι ι

ι τον Ισ ρα α ηλ και σω τη η η η ρι ι ο ον

ε θνε ε σι ιν εθής'

ε βο ο η η η η σα α α αν εν ευ φρο συ

υ υ υ νη δι και αι αι ω ων τα πνευ μα α τα α ελ

νυν τω ω κο ο ο ο ο σμω δια θη η η η κη

και νη η η δι ι α τι θε ε ται και ρα αν τι σμα α

τι και νουρ γει ει σθω λα ο ο ος θει ου ου αι μα α το

ος εθής'

ο δι ι α α σω ω σα ας εν πυ υ ρι του

ους Α βρα μι αι ους σου ου παι δαας και αι του ους Χα

αλ δαι αι ουους α νε ε λων οις α α δι ι κως δι και αι

αι ου ους εν η δρε ευσαν υ περ υ μνη η τε Κυ ρι ι

ε ο Θε ος ο ο των πα α α τε ε ε ρων ε ευ

λο γη η η το ο ος ει ει ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Ε υ φραν θη η τι Ι ε ρου σα α λημ παν η γυ

ρι σα α τε οι οι α α γα πω ων τε Σι ι ω ων ο βα

σι λε ευων γα α αρ εις τους αι ω ω ω ω νας Κυ

ρι ι ος τω ων δυ να α α με ε ω ω ων η η η  
 η ηλ θεν ευ λα βει ει σθω πα α σα η η γη εκ  
 προσ ω ω που αυ του ου ου και αι αι βο α α α  
 α α τω πα αντα τα α ε ερ γα υ μνει ει ει τε  
 ε τον Κυ υ ρι ο ο ο ο ον

## Θ' ὥδῃ τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἥχος δ'

«Θεὸς Κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν, συστήσασθε ἐορτὴν, καὶ ἀγαλλόμενοι, δεῦτε μεγαλύνωμεν Χριστόν, μετὰ βατίων καὶ κλάδων, ὕμνοις κραυγάζοντες· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν». (β')

Ἔθνη ἵνα τί ἐφρυάξατε; Γραφεῖς, καὶ Ἱερεῖς, τί κενὰ ἐμελετήσατε; Τίς οὗτος εἰπόντες· ὦ Παῖδες μετὰ βατίων καὶ κλάδων, ὕμνοις κραυγάζουσιν· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν. (β')

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Οὗτος ὁ Θεός, ὃ παρόμοιος οὐδεὶς, δικαίαν πᾶσαν ὁδὸν ἐξευρών, δέδωκε τῷ ἡγαπημένῳ Ἰσραὴλ· μετὰ δὲ ταῦτα, ἀνθρώποις συνανεστράφη ὀφθείς· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν.

Καὶ νῦν καὶ αἰὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

Σκάνδαλα τρίβου, τί ἐχόμενα ἡμῖν, τιθέατε ἀπειθεῖς; πόδες ὀξεῖς ὑμῶν, αἷμα διεκχεῖαι



Δεσπότου, ἀλλ' ἀναστήσεται πάντων, σῶσαι τοὺς κράζοντας· Εὐλογημένος ὁ  
ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὁ εἰρμὸς

Ἦχος  $\text{L}$   
 $\text{A}$   $\text{B}\text{8}$

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.342#

**Θ** ε ος Κυ ρι ος και αι ε πε φα νεν η μιν  $\text{6}$   
 $\text{A}$  συ

στη σα σθε ε ορ την και α γαλ λο μενοι δε ευ τε

με γα λυ νω μεν Χρι στον  $\text{6}$   
 $\text{A}$  με τα βα ι ων και κλα δων

υ υ μνοις κραυ γα ζον τες  $\text{6}$   
 $\text{A}$  ευ λο γη με νος ο ερ χο

με νος  $\text{A}$  εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων  $\text{6}$   
 $\text{A}$   $\text{(β')}$

**Ε** θνη ι να τι ε φρυ α ξα τε γρα φεις και ι ε ρεις

τι κε να ε με λε τη σα τε  $\text{6}$   
 $\text{A}$  τισ ου τος ει πον τες

ω παι δες <sup>π</sup>9 με τα βα ι ων και κλα δων υ μνον κραυ γα

ζου σιν ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος εν ο νο

μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup>λ (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Δ</sup>λ και α γι ω Πνευ μα

<sup>6</sup>λ  
τι

Ο υ τος ο Θε ος ω ω πα ρο μοι ος ου δεις <sup>6</sup>λ δι και αν

πα α σαν ο δον ε ξευ ρων δε δω κε τω η γα πη με νω

Ισ ρα ηλ <sup>6</sup>λ με τα δε ταυ τα αν θρω ποις συ να νε στρα φη

ο φθεις <sup>6</sup>λ ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος εν ο

νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup>λ

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων Α μην <sup>6</sup>λ

Καν δα λα τρι ι βου τι ε χο με να η μιν <sup>Δ</sup>λ τι

θε ε α τε α πει θεις πο δεσ ο ξεις υ μων αι μα δι εκ

χε αι Δε σπο του <sup>π</sup>q αλλ α να στη σε ται πα αν των σω

σαι τους κρα ζοντας <sup>6</sup>λ ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος

εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὁ εἰρμός

Ἦχος <sup>Λ</sup>δ̣ B8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α΄  
2003 σ.273\*

Θ <sup>χ</sup>σ̣ ε ο ος Κυ ρι ος και αι ε πε φανεν η μιν <sup>6</sup>λ συ

στη η σα σθε ε ορ την και α γαλ λο μενοι <sup>6</sup>λ

δε ευ τε με γα λυ νωμεν Χρι στον <sup>6</sup>λ <sup>♂</sup>με τα βα ι ων

και κλα δων υ υ μνοις κραυ γα ζοντες <sup>6</sup>λ <sup>♂</sup>ευ λο γη με νος

ο ερ χο με νος <sup>Δ</sup>λ εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη

ρος η μων <sup>6</sup>λ (β')

Ε ε θνη ι να τι ι ε φρυ α ξατε <sup>6</sup>λ <sup>♂</sup>γρα φεις και

ι ε ρεις τι κε να ε με λε τη σα τε <sup>6</sup>λ τις ου

τος ει πον τες <sup>π</sup>λ ω παι αι δες με τα βα ι ων και κλα

δων υ υ μνοις κραυ γα ζουσιν <sup>6</sup>λ <sup>♂</sup>ευ λο γη με νος ο ερ

χο με νος <sup>Δ</sup>λ εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η

μων<sup>6</sup>  
(β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι<sup>6</sup>

Ο υ τος ο Θε ος ω ω πα ρο μοι ος ου δεις<sup>6</sup> δι και

αν πα σαν ο δο ον εξ ευ ρων<sup>6</sup> δε δω κε τω η

γα πη μενω Ισ ρα ηλ<sup>6</sup> με τα δε ταυ τα αν θρω ω ποις

συν α νε στρα φη ο φθεις<sup>6</sup> ευ λο γη με νος ο ερ χο

με νος<sup>6</sup> εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος ημων<sup>6</sup>

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην<sup>6</sup>

Σ καν δα λα τρι ι βου τι ε χο με να η μιν τι θε α



### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Θεὸς Κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν, συστήσασθε ἑορτήν, καὶ ἀγαλλόμενοι, δεῦτε μεγαλύνωμεν Χριστόν, μετὰ βαίτων καὶ κλάδων, ὕμνοις κραυγάζοντες· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Ἀργή

Σύντομος

Ἀργή

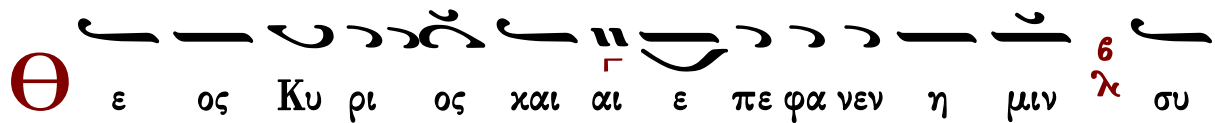
### Σύντομος

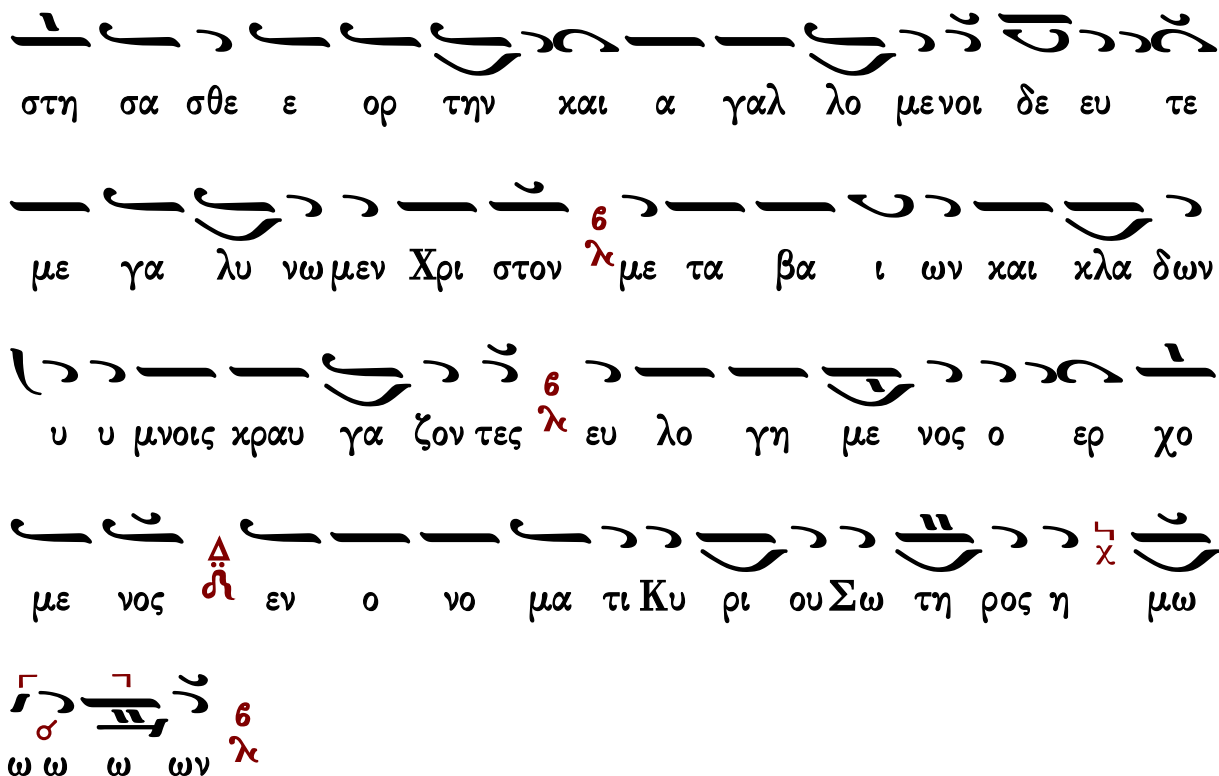
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

ἦχος δ' B8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.342#



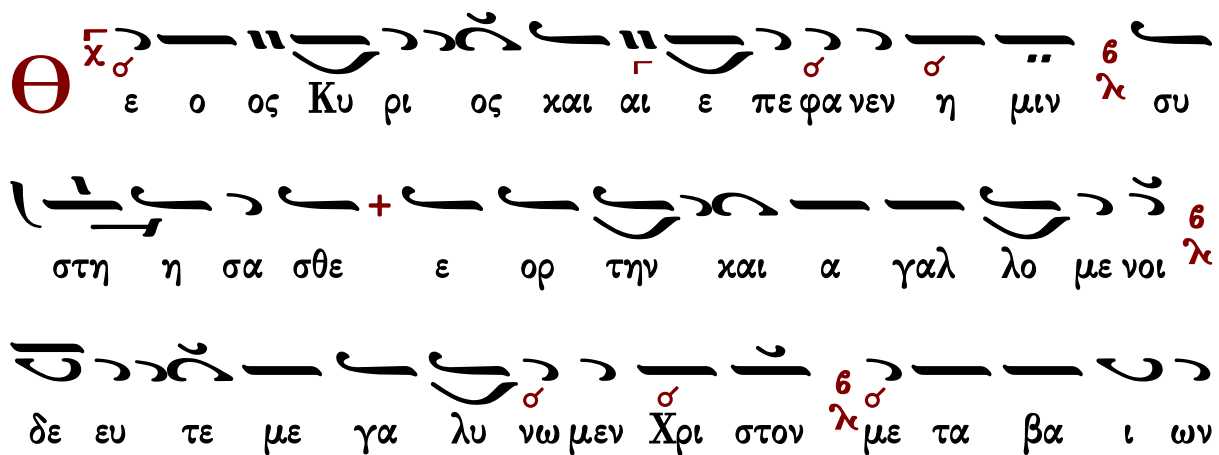


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>Λ</sup>λ Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.273\*



και κλαδων υ υ μνοις κραυγα ζοντες <sup>6</sup>ευ <sup>♂</sup>λο γη με νος  
 ο ερχομενος <sup>Δ</sup>εν ο νοματι Κυριου Σωτη  
 ρος η μων <sup>6</sup><sup>λ</sup>  
 \* <sup>λ</sup> <sup>♂</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup><sup>λ</sup>  
 μω ω ω ω ων

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδ' ἔθ'

Ἦχος <sup>λ</sup> <sup>♂</sup> ΒΨ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.67#

Θ ε ος Κυρι ο ο ος και αι ε ε πε ε φα ανεν η  
 η μιν <sup>π</sup><sup>9</sup> συ στη η σα σθε ε ε ο ορ τη ην και α  
 γαλ λο με ε νοι οι <sup>6</sup><sup>λ</sup> δευ τε ε με ε γα α λυ νω ω μεν Χρι ι  
 στον <sup>π</sup><sup>9</sup> με ε τα βα ι ι ι ων και αι κλα δων υ  
 υ μνοι οι οις κραυγα α α α ζο ο ο ον τες <sup>π</sup><sup>9</sup> ευ λο



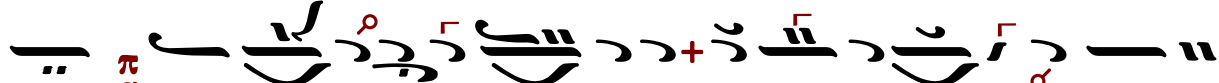
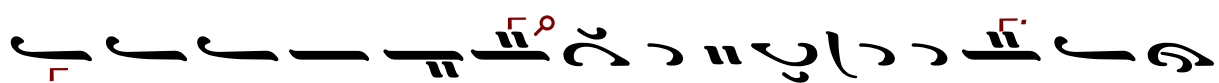
  
 γη με νος ο ο ερ χο με ε νος  εν ο νο μα α  
  
 τι Κυ υ ρι ι ου Σωω τη η ρο ος η η μω ω ω ω ω ν 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ'

Ἦχος  Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.275\*

  
 Θ  ε ο ος Κυ ρι ι ο ος και αι ε ε πε ε φα α νεν η η  
  
 μιν  συ στη η σα α σθε ε ε ε ο ορ τη ην και α α  
  
 γαλ λο με ε νοι οι δευ τε ε με γα λυ υ νω ω μεν Χρι ι στον   
  
 με τα βα ι ι ι ων και αι κλα δω ων υ υ μνοι  
  
 οι οισ κραυ γα α α ζο ο ο ον τεσ  ευ λο γη με  
  
 νος ο ο ερ χο με ε νος  εν ο νο μα α τι Κυ

υ ρι ι ου Σω τη η ρο ος η η μω ω ω ω ν

# Τῷ Ἁγίῳ καὶ Μεγάλῳ Σαββάτῳ

ἤχος πλ.β'

- α **Κ**ύματι θαλάσσης, τὸν κρύψαντα πάλαι, διώκτην τύραννον, ὑπὸ γῆς ἔκρυψαν, τῶν σεσωσμένων οἱ Παῖδες, ἀλλ' ἡμεῖς ὡς αἱ νεάνιδες, τῷ Κυρίῳ ἄσωμεν· Ἐνδόξως γάρ δεδόξασται.
- γ **Σ**ὲ τὸν ἐπὶ ὑδάτων, κρεμάσαντα πᾶσαν τὴν γῆν ἀσχέτως, ἡ κτίσις κατιδοῦσα, ἐν τῷ Κρανίῳ κρεμάμενον, θάμβει πολλῷ συνείχετο. Οὐκ ἔστιν ἅγιος πλήν σου Κύριε, κραυγάζουσα.
- δ **Τ**ὴν ἐν Σταυρῷ σου θείαν κένωσιν, προορῶν Ἀββακοὺμ ἐξεστηκῶς ἐβόα. Σὺ δυναστῶν διέκοψας κράτος Ἀγαθέ, ὁμιλῶν τοῖς ἐν Ἄδῃ, ὡς παντοδύναμος.
- ε **Θ**εοφανείας σου Χριστέ, τῆς πρὸς ἡμᾶς συμπαθῶς γενομένης, Ἡσαΐας φῶς ἰδὼν ἀνέσπερον, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίσας ἐκραύγαζεν· Ἀναστήσονται οἱ νεκροί, καὶ ἐγερθήσονται οἱ ἐν τοῖς μνημείοις, καὶ πάντες οἱ ἐν τῇ γῇ ἀγαλλιάσονται.
- ς **Σ**υνεσχέθη, ἀλλ' οὐ κατεσχέθη, στέρνοις κητόροις Ἰωνᾶς· σοῦ γὰρ τὸν τύπον φέρων, τοῦ παθόντος καὶ ταφῇ δοθέντος· ὡς ἐκ θαλάμου, τοῦ θηρὸς ἀνέθορε, προσεφώνει δὲ τῇ κουστωδίᾳ. Οἱ φυλασσόμενοι μάταια καὶ ψευδῇ, ἔλεον αὐτοῖς ἐγκατελίπετε.
- ζ **Ἀ**φραστον θαῦμα! Ὁ ἐν καμίνῳ ῥυσάμενος, τοὺς δόσιους Παῖδας ἐκ φλογός, ἐν τάφῳ νεκρός, ἅπνους κατατίθεται, εἰς σωτηρίαν ἡμῶν τῶν μελωδούντων. Λυτρωτά, ὁ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον

- η **Ἐ**κστηθι φρίττων οὐρανέ, καὶ σαλευθήτωσαν τὰ θεμέλια τῆς γῆς· ἰδοὺ γὰρ ἐν νεκροῖς λογίζεται, ὁ ἐν ὑψίστοις οἰκῶν, καὶ τάφῳ σμικρῷ ξενοδοχεῖται, ὃν Παῖδες εὐλογεῖτε, ἱερεῖς ἀνυμνεῖτε, λαὸς ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργαὶ

Σύντομοι

Ἀθανασίου Καραμάνη

Σύντομοι

Κωνσταντίνου Πρίγγου

Σύντομοι

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἀργαὶ

Σύντομοι

Ἀθανασίου Καραμάνη

**Κ** υ μα τι θα λα ασ σης τον κρυ ψαν τα πα α  
α λαι δι ω κτην τυραννον υ πο γης ε κρυ ψαν των σε  
σω σμε νω ων οι παι δεσ αλλ η μεις ως αι νε α νι δεσ  
τω Κυ ρι ω α σω μεν εν δο ξως γαρ δε δο ο ξα  
α σται αι

ᾠδὴ γ'

**Σ** ε τον ε πι ι υ δα των κρε μα σαν τα πα σαν  
την γην α σχε τως η κτι σις κα α τι δου σα εν τω Κρα  
νι ι ι ω κρε μα με νον θαμ βει πολ λω συν ει χε  
το χορὸς α' ουκ ε στιν α γι ι ος πλην σου Κυ ρι ε

$\omega\delta\eta\delta'$ 

ὥδ' ἔ

τη γη α γαλ λι α σο ον ται αι ᾠδὴ στ'

C υ νε σχε ε θη αλλ ου κα α τε σχε θη στερ νοις κη

τω οις Ι ω νας σου γαρ τον τυ υ πον φε ρων του πα

θον τος και τα φη δο θε ε εν τος ως εκ θα λα

α μου του θη ρος α νε θο ρε προσ ε φω νει δε τη κου

ου στω δι α οι φυ λας σο ο ο με νοι μα ται α

και ψευ δη ε λε ον αυ τοις εγ κα τε λι πε ε τε

ε ᾠδὴ ζ'

A φρα στον θα αυ μα ο εν κα μι ι ι νω ρυ

σα με νο ος τους ο σι ι ους παι δας εκ φλο γος εν τα φω

νε κρος α πνους κα τα τι θε ται εις σω τη ρι

αν η μων των με λω δουν των λυ τρω τα ο Θε ος

ευ λο ο γη τος ει ᾠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ ρι

ον

Ε κ στη θι φριτ των ουρα νε και σα λευ θη τωσαν τα θε

με λι α της γης ι δου ου γαρ εν νε κροις λο γι ζε ται ο

εν υ ψι στοις οικων και τα φω σμι κρω ξε νο δο

χει ται ον Παι δες ευ λο γει τε Ι ε ρει εις α

νυ μνει τε λα ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας του

ους αι ω ω να α ας

## Κωνσταντίνου Πρίγγου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π Δι

Κωνσταντίνου Πρίγγου  
Μ.Εβδομάς 1969 σ.159\*

Κ υ μα τι θα λα ασ σης τον κρυ φαν τα πα α

α λαι δι ω κτην τυ ραννον υ πο γης ε κρυ φαν

των σε σω σμε νων οι παι δες αλλ η μεις ως αι νε α

νι δες τω Κυ ρι ω α σω μεν εν δο ξως γαρ δε ε δο

ο ξα α σται αι

ᾠδὴ γ'

Σ ε τον ε πι υ δα των κρε μα σαν τα πα σαν

την γην α σχε ε τως η κτι σις κα α τι δου σα εν τω



κ ρ α ν ι ι ι ω κ ρ ε μ α μ ε ν ο ν θ α μ β ε ι π ο λ λ ω σ υ ν ε ι

χ ε τ ο ο υ κ ε σ τ ι ι ν Α α γ ι ι ο ς χ ο ρ ό ς α ' π λ η ν σ ο υ Κυ ρ ι ε

κ ρ α α υ γ α α ζ ο υ ο υ σ α α ὥ δ ῆ δ '

Τ η ν ε ν Σ τ α υ ρ ω σ ο υ ο υ θ ε ι α ν κ ε ν ω σ ι ν π ρ ο ο

ρ ω ν Α β β α κ ο υ μ ε ξ ε σ τ η κ ω ς ε β ο α σ υ δ υ ν α

σ τ ω ν δι ι ε κ ο ψ α ς κ ρ α α τ ο ς α γ α θ ε ο μ ι λ ω ν

τ ο ι ς ε ν Α α δ ῆ ω ς π α ν τ ο ο δ υ υ ν α α μ ο ο ς

ὥ δ ῆ ε '

Θ ε ο φ α ν ε ι α ς σ ο υ Χ ρ ι σ τ ε τ η ς π ρ ο ς η μ α ς σ υ μ π α

θ ω ς γ ε ν ο μ ε ν η ς Η σ α ι α ς φ ω ς ι δ ω ν α ν ε

σπε ρον εκ νυ κτος ορ θρι ι ι σας ε κραυ γα ζεν α

να στη η η η σον ται οι νε κροι και ε γερ

θη σον ται οι εν τοις μνη μει οις και πα α α

αν τες οι εν τη γη α γαλ λι ι α α σοον ται αι

ᾠδὴ στ'

C υν ε σχε ε θη αλλ ου κα τε σχε θη στερ νοις

κη τω οις Ι ω νας σου γαρ τον τυ πον φε ρων του πα

θον τως και τα φη δο θε ε εν το ος ως εκ θα

λα α μου του θη ρος α νε θε ρε προσ ε φω νει δε τη

κου στω δι α οι φυ λασ σο ο ο με νοι μα ται

α και ψευ δη ε λε ον αυ τοις εγ κα τε ε λι ι

πε ε τε ε

ωδὴ ζ'

α φρα στον θα αυ μα ο εν κα μι ι ι νω

ρυ σα με νος τους ο σι ι ι ους παι αι δας εκ φλο

γος εν τα φω νε κρος α πνους κα τα τι θε ται

εις σω τη ρι αν η μων των με λω δουν των λυ

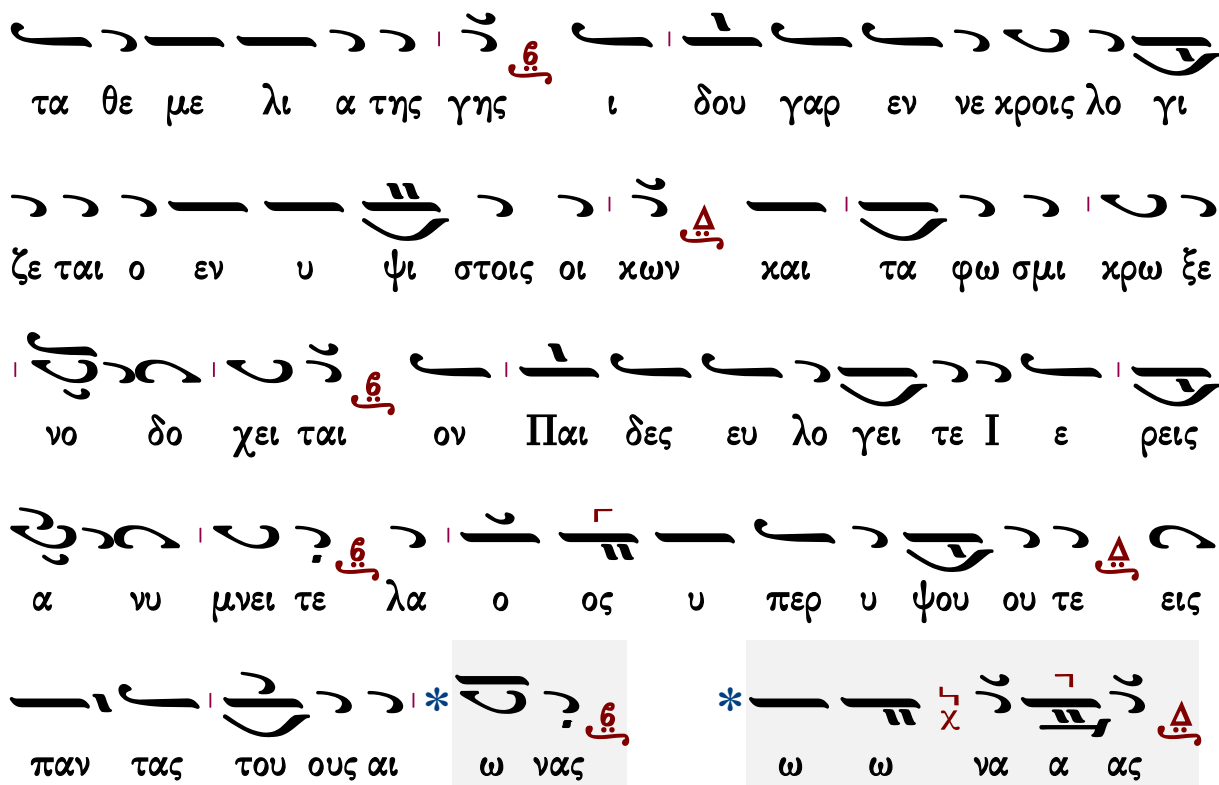
τρω τα ο Θε ος ευ λο ο γη τος ει

ωδὴ η'

α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ ρι

ον

ε κ στη θι φριτ των ου ρα νε και σα λευ θη τω σαν



## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ῥοδὴ α'

Ἦχος λ π Β̃

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.217\*



— — υ — ς — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
τω Κυ ρι ω α σω μεν εν δο ξως γαρ δε δο ξα α

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
σται αι

ὥδῃ γ'

**C** — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
ε τον ε πι ι υ δα των κρε μα σαν τα πα α σαν

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
την γην α σχε τως η κρι σις κα α τι δου σα εν τω Κρα

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
νι ι ι ω κρε μα μενον θα αμ βει πολ λω συν ει

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
χε το ουκ ε στιν α γι ι ος χορὸς α' πλην σου Κυ ρι ε

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
κραυ γα ζου ου σα α

ὥδῃ δ'

**T** — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
ην εν Σταυ ρω σου ου θει αν κε νω σιν προ ο ρων

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
Αβ βα κουμ εξ ε στη κως ε βο α συ δου να

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — — —  
στων δι ε κο ψα ας κρα τος α γα θε ο μι λων

τοῖς ἐν ἀδῆως παντὸ δυνάαμοος

ὠδὴ ε'

Θεοφάνειας σου Χρίστε τῆς πρὸς ἡμᾶς συμπάθως

γενόμενης Ἡσυχίας φωσιδωνάνεσπε

ρον ἐκ νυκτός ορθρίϊϊσας ἐκραυγάζεν ἅ

νάστησονται οἱ νεκροὶ καὶ ἐγερθήσονται οἱ

ἐν τοῖς μνημείοις καὶ πάντες οἱ ἐν τῇ

γῇ ἀγαλλίασονται αἱ

ὠδὴ ς'

Κυνέσχεε θῆαλλου κατέσχεθῆς στερνοῖς

κῆτωις Ἰωνάς σου γὰρ τὸν τυυπὸν φερῶν τοῦ πα

θόντος καὶ ταφήηδοθε ἐέντος ὡς ἐκθαλά

α μου του θη ρος α νε θο ρε προσ ε φω νει δε τη

κου ου στω δι α οι φυ λας σο ο ο με νοι μα ται α

και ψευ δη ε λε ον αυ τοις εγ κα τε λι πε ε τε

ε ὠδή ζ'

Α φρα στον θα αυ μα ο εν κα μι ι ι νω ρυ

σα με νος τους ο σι ι ου ους παι δας εκ φλο γος εν

τα φω νε κρος α πνους κα τα τι θε ται εις σω τη

ρι αν η μων των με ε λω δουν των Λυ τρω τα ο

Θε ος ευ λο ο γη τος ει ὠδή η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ ρι

ον

6

Ε κ στη θι φριτ των ουρα νε και σα λευ θη τω σαν

τα θε με λι α της γης ι δου ου γαρ εν νε κροισ

λο γι ζεται ο εν υ ψι στοις οικων και τα φωσμι κρω ξε

νο ο δο χειται ον παι δες ευ λο γει τε ι ε ρεις α α

νυ μνει τε λα ο ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας του ους

αι ω νας

ω ω να α ας

Αργαι

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π Β̣ϛ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.139#

Κ υ μα τι ι ι θα λα α α α ασ ση ης τον



κρυ ψα αν τα πα α α α λαι αι δι ω κτη ην τυ υ

υ ρα α α αν νον υ πο γη η ην ε ε ε

κρυ ψαν των σε σω ω σμε νω ωων οι οι παι αι αι δεσ

αλλ η μεις ως αι νε ε ε α α νι ι δεσ τω Κυ ρι ι

ω ω α σω ω ω μεν εν δο ο ξως γα α αρ δε

ε ε δο ο ο ο ξα α α α σται

ᾠδὴ γ'

ε τον ε ε ε πι ι ι υ υ δα α α των κρε

μα σαν τα πα α α α σα αν την γη ην α σχε ε ε ε

τως η κτι σις κα αατ ι δου ου ου σα εν τω

κρα νι ι ω κρε ε μα α α με ε ε ε νον

θαμ βει πολ λω συν ει χε το ο ουκ ε ε ε στιν

α α α α γι ι ι ι ος χορός α' πλη ην σου κυ

υ ρι ε ε ε κραυ αυ γα α α α ζου ου ου ου

σα ὥδή δ'

Τ ην εν Σταυ ρω σου ου ου ου θει ει αν κε ε νω

ω ω σιν προ ο ρω ω ων Α α αβ βα α κου

ουμ εξ ε ε στη η η κω ω ως ε ε βο ο ο α

συ δυ να στω ων δι ι ε ε κο ο ψα ας κρα το ος α

α γα α α θε ο μι λω ω ων τοι οι οis εν

Α α α δη η ως πα α αν το ο δυ υ να α μο ος

Θ ε ε ε ε ο ο ο φα νει ει ει ας σου

ου Χρι ι ι στε της προς η μας συμ πα θω ω ω ω

γε ε ε νο ο με ε ε νης Η σα α ι ας φως ι

δων α α α νε ε σπε ε ρο ον εκ νυκτο ος ο ορ θρι ι

σα α ας ε κρα αυ γα α α ζεν α να στη η

η σο ο ον ται οι νε κροι και ε γε ερ θη η

η σο ο ο ον ται αι αι αι αι οι εν τοι οις μνη μει ει

ει ει οις και πα α αν τε ες οι εν τη γη

η η α γα α αλ λι ι α α σο ον ται αι ὥδ' ἔ'

Σ υν ε σχε ε θη η η η η η η α α αλ

λου ου κα α α τε σχε ε ε ε θη στε ε ε ερ

νοι οι οισ κη τω ω ω οισ Ι ι ω ω ω νας

σου γα αρ το ο ον τυ υ υ πο ον φε ε ε ρων του

πα θον τος και τα φη η δο ο ο θε ε εν το ος ως

εκ θα λα α α μου του θη ρος α α αν ε ε

ε θο ο ο ρε ε ε ε ε προ σε φω ω ω νει ει

ει γαρ τη κου ου στω δι ι ι ι α οι φυ λασ σο

ο ο με ε ε νοι οι μα α ται αι α και αι ψευ η

η η η η η η η η η ε ε λε ε ον αυ

τοι οισ εγ κα α α τε ε λι ι πε ε τε ε ῥδῆζ'

Α φρα στον θα α α α αυ μα α ο εν κα

μι ι νω ρυ υ υ σα α α με ε ε ε νος τους ο

ο σι ι ι ου ους παι δα ας ε εκ φλο ο ο γος εν

τα α α φω νε ε ε κρος α πνους κα τα α τι ι

ι θε ε ε ε ται εις σω ω ω τη η ρι ι ι

αν η η μων τω ω ων με ε ε λω ω δου ου ουν των

λυ τρω τα ο ο Θε ε ο ος ευ λο ο ο ο ο γη η

το ο ος ει

ὥδῃ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου με εν τον Κυ

ρι ον

Ε ε εκ στη η η θι φρι ι ιτ των ου

ου ρα α α νε και σα α α λε ευ θη η τωω σαν

τα α θε με ε ε λι α α τη η ης γης ι

δου ου ου γαρ εν νε κροις λο ο γι ι ι ζε ε ε

ε ται ο ο ο ο ε ε εν υ ψι ι ι ι στοι

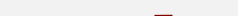
οις οι οι οι κων και αι τα φω σμι ι κρω ξε νο ο ο

δο ο χει ει ει ται ον παι δε ε ες ε ε ευ λο ο γει

ει ει τε ι ε ρεις α α α νυ υ μνει ει ει

τε λα ο ος υ πε ε ερ υ υ ψου ουου τε εις

πα α αν τας του ου ου ους αι αι ω ω ω νας

\* 

Ἦχος λ π ς Βϝ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.217\*

ⲓⲛⲁⲓ

σται αι

ⲱⲃⲏⲗⲏ ⲱⲃ

Ⲙ ⲉ ⲧⲟⲛ ⲉ ⲉ ⲉ ⲡⲓ ⲓ ⲓ ⲩ ⲩ ⲃⲁ ⲁ ⲁ ⲧⲱⲛ ⲕⲣⲉ

ⲙⲁ ⲁ ⲥⲁ ⲁⲛ ⲧⲁ ⲡⲁ ⲁ ⲁ ⲥⲁ ⲁⲛ ⲧⲏⲛ ⲓⲏ ⲏⲛ ⲁ ⲥⲕⲉ ⲉ

ⲉ ⲉ ⲧⲱⲥ ⲏ ⲕⲧⲓ ⲥⲓⲥ ⲕⲁ ⲧⲓ ⲃⲟⲩ ⲟⲩ ⲟⲩ ⲥⲁ ⲉⲛ ⲧⲱ ⲕⲣⲁ

ⲛⲓ ⲓ ⲱ ⲕⲣⲉ ⲉ ⲙⲁ ⲁ ⲁ ⲙⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲛⲟⲛ ⲑⲁⲙ ⲃⲉⲓ

ⲡⲟⲗ ⲗⲱ ⲥⲟⲛ ⲉⲓ ⲕⲉ ⲧⲟ ⲟ ⲟⲩⲕ ⲉ ⲉ ⲥⲧⲓ ⲓⲛ ⲁ ⲁ ⲁ

ⲓⲓ ⲓ ⲓ ⲓ ⲟⲥ ⲕⲟⲣⲟⲥ ⲁⲛ ⲡⲗⲏⲛ ⲥⲟⲩ ⲕⲩ ⲩ ⲣⲓ ⲉ ⲉ ⲉ ⲕⲣⲁ ⲁⲩ

ⲓⲛⲁⲓ ⲓⲛⲁⲓ

γα α ζου ου σα α

ⲱⲃⲏⲗⲏ ⲱⲃ

ⲧ ⲏⲛ ⲉⲛ ⲥⲧⲁⲩ ⲣⲱ ⲥⲟⲩ ⲟⲩ ⲑⲉⲓ ⲉⲓ ⲁ ⲁⲛ ⲕⲉ ⲉ ⲛⲱ ⲱ ⲱ

ⲥⲓⲛ ⲡⲣⲟ ⲟ ⲣⲱ ⲱ ⲱⲛ ⲁ ⲁⲃ ⲃⲁ ⲁ ⲁ ⲕⲟⲩⲙ



Εξ εστη κω ω ως ε ε βο ο ο α συ δυ να

στω ων δι ι ε ε κο ο ψα ας κρα το ος α α γα α

α θε ο μι λω ω ων τοι οι οισ ε εν Α α

δη η ως πα α αν το ο δυ υ να α μο ος ὡδὴ ε'

Θ ε ο φα νει ει ας σου ου Χρι ι ι στε της

προς η μας συμπα α θως γε ε ε νο ο με ε ε νης

Η σα ι ας φως ι δων α α α νε ε σπε ε ρον

εκ νυ κτος ο ορ θρι ι ι ι σα α ας ε ε κρα α

α αυ γα α α α ζεν α να στη η η σο ον ται αι

οι νε ε κροι και ε γερ θη η σο ο ο ον ται αι αι

αι αι οι εν τοι οis μνη μει ει ει οis και πα α

αν τε εs οι εν γη γη η η α γα α αλ λι ι

α α σο ον ται αι

ῥδῆς'

C υν ε σχε ε ε ε θη η η η α αλλ ου ου

κα α α τε σχε ε ε ε θη στε ε ε ερ νοι οi οis

κη τω ω ω οis I ι ω ω ω νας σου γα αρ

το ο ον τυ υ υ πο ον φε ε ε ρων του πα θον

τος και τα φη η δο ο ο θε ε εν το οs ως εκ

θα λα α α μου του θη ρος α α νε ε ε ε ε θο ο

ο ο ρε προσ ε φω ω ω νει ει ει ει δε τη κου ου

στω δι ι ι ι α οι φυ λασ σο ο ο με

ε ε νοι οι μα α ται αι α και αι ψευ δη η η

η η η η η η η η ε ε λε ε ον αυ τοι

οις εγ κα α α τε ε λι ι πε ε τε ε

ὥδῃ ζ'

α φρα στον θα α α α αυ μα α ο εν κα

μι ι νω ρυ υ σα α α με ε ε ε νος τους

ο σι ι ι ι ι ου ους παι δα ας ε εκ φλο ο ο

γος εν τα α α φω νε ε ε κρος α πνους κα τα

τι ι ι θε ε ε ε ται εις σω τη ρι ι ι αν

η η μων τω ω ων με ε ε λω ω δου ου ουν των Λυ

τρω ω τα α α ο Θε ο ος ε ευ λο ο ο

ο γη η τος ει ει

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου με ε

εν το ον Κυ ρι ι ο ον

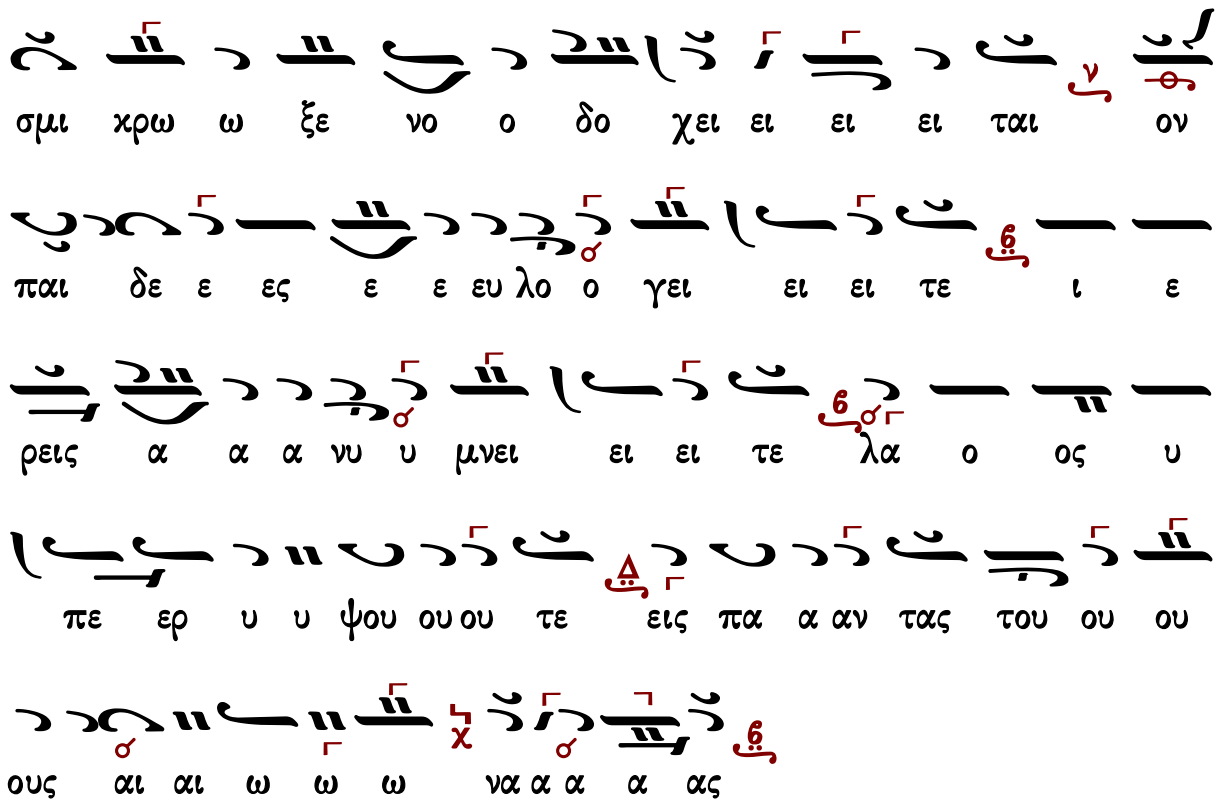
Ε ε ε εκ στη η η θι φρι ι ιτ των ου

ου ρα α α νε και σα λευ θη η τω ω σαν τα θε

με ε λι ι ι α α τη η ης γης ι δου ου

ου γαρ εν νε κροι οis λο ο γι ι ζε ε ται ο εν

υ ψι ι ι ι στοι οis οι οι οι κων και τα α φω



Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.β'

**Μ**ὴ ἐποδύρου μου Μῆτερ, καθορῶσα ἐν τάφῳ, ὃν ἐν γαστρὶ ἄνευ σπορᾶς, συνέλαβες Ὑῖόν· ἀναστήσομαι γὰρ καὶ δοξασθήσομαι, καὶ ὑψώσω ἐν δόξῃ, ἀπαύστως ὡς Θεός, τοὺς ἐν πίστει καὶ πόθῳ σὲ μεγαλύνοντας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ

Σύντομος

Ἀθανασίου Καραμάνη

Σύντομος

Κωνσταντίνου Πρίγγου

Σύντομος

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἀργὴ

Σύντομος

Ἀθανασίου Καραμάνη

ᾠδὴ θ'  
χορὸς α'

Ἦχος λ π τ Δι

Αθανασίου Καραμάνη  
Νέα Μουσική Κυψέλη  
Μ. Εβδομάς, 1971 σ.286#

**Μ** ἡ ε πο δυ ρου μου Μη τε ερ κα θο ρω σα εν  
τα φω ον εν γα στρι α νευ σπο ρας συν ε λα βες Υι  
ον Α να στη η η σο μαι γαρ και δο ξα σθη σο μαι  
και υ ψω σω εν δο ξη α παυ στως ως Θε ος τους εν πι  
στει και πο θω σε με γα λυ νο ον τα α ας

Κωνσταντίνου Πρίγγου

ᾠδὴ θ'  
χορὸς α'

Ἦχος λ π τ Δι

Κωνσταντίνου Πρίγγου  
Μ.Εβδομάς 1969 σ.163\*

**Μ** ἡ ε πο δυ ρου μου Μη τερ κα θο ρω σα εν  
τα φω ον εν γα στρι α νευ σπο ρας συν ε λα βες Υι

ον α να στη η η σο μαι γαρ και δο ξα σθη σο μαι

και υ ψω σω εν δο ο ξη α παυ στως ως Θε ος τους εν

πι στει και πο θω σε με γα α λυ υ νο ον τα ας

τὸ τέλος  
τα α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ'  
χορὸς α'

Ἦχος λ π Β̃

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.233\*

Μ η ε πο δυ ρου μου Μη τε ερ κα θο ρω σα εν

τα φω ο ον εν γα στρι α νευ σπο ρας συν ε λα βες Υι

ον α να στη η η σο μαι γαρ και δο ξα σθη σο μαι και

υ ψω σω εν δο ο ξη α παυ στως ως Θε ος τους εν πι

στει και πο ο θω σε με γα λυ νο ον τα ας

τὸ τέλος  
τα α ας

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'  
χορὸς α'

Ἦχος λ π Βϛ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.156#

Μ η ε ε πο δυ ρου ου μου ου Μ η η

τερ κα θω ρω σα α ε εν τα α α φω ο ο ο ο ον

ε ε εν γα στρι ι ι α νε ευ σπο ο ο ρα ας

συ υ νε ε λα α βε ες Υι υι υι ον α να στη

η η σο μαι γαρ και δο ξα α σθη η η σο ο ο ο



μαι αι αι αι αι και υ ψω ω ω σω ω ω εν δο

ο ξη η α α πα αυ στω ως ω ως Θε ε ε ος

τους εν πι ι ι στει ει ει και πο ο ο θω ω σε

με ε ε γα α λυ υ νο ον τα ας

τὸ τέλος  
τα α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὡδὴ θ'  
χορὸς α'

Ἦχος λ π Β̃

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.234\*

Μ η ε ε πο δυ ρου ου μου ου Μη η η τερ

κα θο ρω σα α α ε εν τα α α φω ο ο ο ον

ε ε εν γα στρι ι α νευ σπο ο ρας συν ε ε λα

α βε ες Υι υι υι ον α να στη η η σο

ο μαι αι αι γαρ και δο ξα σθη η η η σο ο

ο ο μαι αι αι αι αι και υ ψω ω ω σω ω ε ε

εν δο ο ο ξη α πα αυ στω ως ω ως Θε ε ε

ος τους εν πι ι ι στει ει ει και πο ο ο θω

ω σε με ε ε γα α λυ υ νο ον τα α ας

# Τοῦ Πάσχα

Από τῆς Κυριακῆς τοῦ Πάσχα μέχρι τοῦ Σαββάτου πρό τῆς Κυριακῆς τοῦ Τυφλοῦ, ἐκτός τῆς Μεσοπεντηκοστῆς. Ψάλλονται ὡσαύτως καί ἐν τῇ ἀποδόσει τοῦ Πάσχα, ἥτοι τῇ Τετάρτῃ πρό τῆς Ἀναλήψεως.

## ἤχος α'

- α **Ἀ**ναστάσεως ἡμέρα λαμπρυνθῶμεν λαοί, Πάσχα Κυρίου, Πάσχα· ἐκ γὰρ θανάτου πρὸς ζωὴν, καὶ ἐκ γῆς πρὸς οὐρανόν, Χριστὸς ὁ Θεός, ἡμᾶς διεβίβασεν, ἐπινίκιον ἄδοντας.
- γ **Δ**εῦτε πόμα πίνωμεν καινόν, οὐκ ἐκ πέτρας ἀγόνου τερατουργούμενον, ἀλλ' ἀφθαρσίας πηγὴν, ἐκ τάφου ὀμβρήσαντος Χριστοῦ, ἐν ᾧ στερεούμεθα.
- δ **Ἐ**πὶ τῆς θείας φυλακῆς ὁ θεηγόρος Ἀββακούμ, στήτω μεθ' ἡμῶν καὶ δεικνύτω, φασφόρον ἄγγελον, διαπρυσίως λέγοντα· Σήμερον σωτηρία τῷ κόσμῳ, ὅτι ἀνέστη Χριστός ὡς παντοδύναμος.
- ε **Ὁ**ρθρίσωμεν ὀρθρου βαθέος, καὶ ἀντὶ μύρου τὸν ὕμνον προσοίσωμεν τῷ Δεσπότῃ, καὶ Χριστὸν ὀψόμεθα, δικαιοσύνης ἥλιον, πᾶσι ζωὴν ἀνατέλλοντα.
- ς **Κ**ατῆλθες ἐν τοῖς κατωτάτοις τῆς γῆς, καὶ συνέτριψας μοχλοὺς αἰωνίους, κατόχους πεπεδημένων Χριστέ, καὶ τριήμερος ὡς ἐκ κήτους Ἰωνᾶς, ἐξάνεστης τοῦ τάφου.
- ζ **Ὁ** παῖδας ἐκ καμίνου ρυσάμενος, γενόμενος ἄνθρωπος, πάσχει ὡς θνητός, καὶ διὰ πάθους τὸ θνητόν, ἀφθαρσίας ἐνδύει εὐπρέπειαν, ὁ μόνος εὐλογητὸς τῶν πατέρων, Θεὸς καὶ ὑπερένδοξος.
- η **Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- Α**ὕτη ἡ κλητὴ καὶ ἁγία ἡμέρα, ἡ μία τῶν Σαββάτων, ἡ βασιλὶς καὶ κυρία, ἑορτῶν ἑορτή, καὶ πανηγυρις ἐστὶ πανηγύρεων, ἐν ᾗ εὐλογοῦμεν, Χριστὸν εἰς τοὺς αἰῶνας.

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα να του προς

ζω ην <sup>Δ</sup> και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος ο Θε ος η

μας δι ε βι βα σεν ε πι νι κι ον α α δο ον τας <sup>π</sup> <sup>9</sup> ᾠδὴ γ'

Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο ο

νου τε ρα του ρ γου με νον <sup>π</sup> <sup>9</sup> αλλ α φθα ρ σι ας πη γην <sup>Δ</sup>

εκ τα φου ομ βρι σαν τος Χρι στου <sup>π</sup> <sup>9</sup> χο ρός α' εν ω στε ρε

<sup>π</sup> <sup>9</sup> ου ου με ε θα <sup>π</sup> <sup>9</sup> ᾠδὴ δ'

Ε πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ  στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω  φα εσ φο ρον

 αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα  ση με ρον σω τη

 ρι α τω κο ο σμω  ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν

 το δυ υ να α μος  ὥδῃ ε΄

**Ο**  ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ος  και αν τι μυ

 ρου τον υ μνον προ σοι οι σο μεν τω δε σπο ο τη  και

 Χρι στον ο ψο με θα δι και ο συ νης η λι ον  πα σι ζω

 ην α να τε ελ λο ον τα  ὥδῃ ε΄

**Κ**  α τηλ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν ε

 τρι ψας μο χλου ους αι ω νι ι ους κα το ο χους πε

πε δη με ε νων Χρι στε και τρι η μερος ως εκ κη τους Ι

ω να ας εξ α νε στης του τα α φου π ρ ὠδὴ ζ'

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο ο με

νος αν θρωπος π ρ πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον Δ ρ α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν π ρ ο μο νος ευ

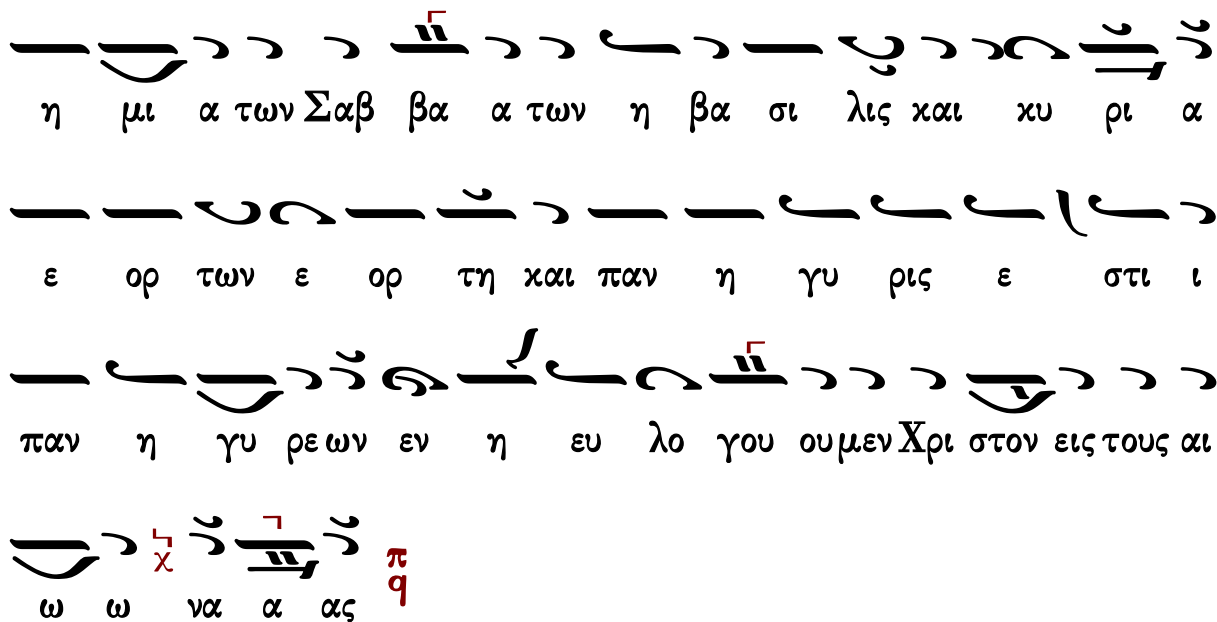
λο γη τος των πα τε ε ρων Δ ρ Θε ος και υ πε ρε εν

δο ο ξος π ρ ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον Δ ρ

Α υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα



Γαβριήλ Κουντιάδου

ὥδη α'

Ἦχος 4̣ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.14\*



κι ον α α δο ον τας π ρ

ὥδὴ γ'

Δευ τε πο μα πι ω μεν και νον Δ ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον π ρ αλλ α φθαρ σι ας πη

γην Δ εκ τα α φου ομ βρι σαντος Χρι στου Δ χορὸς ἀ' εν ω στε

ρε ου ου με ε θα π ρ

ὥδὴ δ'

Επι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ Δ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω Δ φα ε σφο ρον

αγγε λον π ρ δι α πρυ σι ως λε γον τα π ρ ση με ρον σω

τη ρι α τω κο ο σμω Δ ο τι α νε στη Χρι στος ως

παν το δυ υ να α μος π ρ

ὥδὴ ε'



**Ο** ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ε ως **Δ** και αν τι

μου ρου τον υ μνον προσ οι οι σο μεν τω **Δ**ε σπο τη **π**

και Χρι στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον **Δ**

πα σι ζω ην α να τε ελ λο ον τα **π** **ψδῆς'**

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις της γης **π** και

συν ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους **Δ** κα το χους

πε πε δη με ε νων Χρι στε **π** και τρι η μερος ως εκ κη

τους Ι ω νας **Δ** εξ α νε ε στης του τα φου **π** **ψδῆς'**

**Ο** παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος **Δ** γε νο μενος

αν θρω πος **π** πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον  α φ θ α ρ σ ι α ς ε ν δ υ ε ι ε υ π ρ ε π ρ ει α ν  ο μ ο ν ο ς

ε υ λ ο γ η τ ο ς τ ω ν π α τ ε ρ ω ν  Θ ε ο ς κ αι υ π ε ρ ε ε ν

 δ ο ο ξ ο ς

ὠδὴ η'

 ι ν ο υ μ ε ν ε υ λ ο γ ο υ μ ε ν κ αι π ρ ο σ κ υ ν ο υ μ ε ν τ ο ν

Κ υ ρ ι ο ν  

 υ τ η η κ λ η τ η κ αι α γ ι α η μ ε ε ρ α  η

 μ ι α τ ω ν Σ α β β α α τ ω ν η β α σ ι λ ι ι ς κ αι κ υ ρ ι α  ε

ο ρ τ ω ν ε ο ρ τ η  κ αι π α ν η γ υ ρ ι ς ε σ τ ι π α ν η γ υ ρ ε

ω ν  ε ν η ε υ λ ο γ ο υ ο υ μ ε ν Χ ρ ι σ τ ο ν ε ι ς τ ο υ ς α ι ω ν α ς 

 ν α α α α ς 

# Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδὴ α'

Ἦχος 4 Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.103\*

ΠΑ  
Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα  
οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα  
να του προς ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος  
ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι  
νι κι ον α α δο ον τας  
ΠΑ ΝΗ ΠΑ  
Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο  
ο νου τε ρα του ρ γου με νον αλλ α φθα ρ σι ας πη  
γην εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου χο ρὸς α' εν ω

στε ρε ου ουμε ε θα

ὥδὴ δ'

Επι της θειας φυλακης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω φα ε σφο ρον

αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα ση με ρον σω τη

ρι α τω κο ο σμω ο τι α νε ε στη Χρι στος ως

παν το δυ υ να α μος

ὥδὴ ε'

Ο ρ θρι σωμεν ορ θρου βα θε ε ος και αν τι μυ

ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω Δε σπο τη και Χρι

στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον πα σι ζω

ην α να τε ελ λο ον τα

ὥδὴ ς'

ΠΑ

Κ α τηλ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν

ε τρι φας μο χλους αι ω νι ι ους κα το χους πε πε δη

ΜΕΛ

ΝΗ

ΠΑ

με νων Χρι στε και τρι η με ρος ως εκ κη τους

ΝΗ

ΠΑ

Ι ω νας εξ α νε ε στης του τα φου

ὠδὴ ζ'

ΔΙ

ΠΑ

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα με νος γε νο με

ΜΕΛ

ΠΑ

νος αν θρω πος πα σχει ως θνη τος και δι α πα

ΝΗ

θους το θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει

ΠΑ

αν ο μο νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων

ΝΗ

ΠΑ

ος και υ περ ε εν δο ο ξος

ὠδὴ η'

ΠΑ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

α υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα

η μι α των Σαβ βα α των η βα σι λις και κυ ρι

α ε ορ των ε ορ τη και παν η γυ ρις ε

στι ι παν η γυ ρε ων εν η ευ λο γου ου μεν Χρι

στον εις τους αι ω να α α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.5\*

να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα σχα εκ γαρ θα να

Γεράσιμος Μοναχὸς Ἀγιορείτης

4 Ιουλίου 2025

Λουκάς Λουκά

του προς ζω ην  και εκ γης προς ου ρα νον  Χρι στο

ος ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν  ε πι νι κι

ον α α δο ον τας  ὠδὴ γ'

 Δευ τε πο μα πι ω μεν και νον  ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον  αλλ α φθαρ σι ας πη

γην  εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου  χορὸς α' εν

 ω στε ρε ου ου με ε θα ὠδὴ δ'

 Ε πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων  και δει κνυ τω φα εσ φο ρον αγ

γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα  ση με ρον σω τη ρι α

τω κο ο σμω  ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν το

 δυ υ να α μος ὠδὴ ε'

**Ο** ρ θρι σωμεν ορ θου βα θε ε ος  και αν τι μυ

ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω Δε σπο τη  και Χρι

στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον  πα σι ζω

 ην α να τε ελ λο ον τα ὠδὴ ς'

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις της γης  και

συν ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους  κα το χους πε

πε δη με ε νων Χρι στε και τρι η μερος  ως εκ κη

τους Ι ω νας εξ α νε ε στης του τα φου  ὠδὴ ζ'



Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο μενος

αν θρωπος πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το

θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν ο μο

νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων Θε ος και υ περ

ε εν δο ο ξος

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

Α υ τη η κλη τη και α γι α η με ε ρα η

μι α των σαβ βα α των η βα σι λι ις και κυ ρι α

ε ορ των ε ορ τη και πα νη γυ ρις ε στι

ι πα γη γυ ρεων <sup>Α</sup> εν η ευ λο γου ουμεν Χρι στον εις τους  
αι ω νας <sup>π</sup>

## ὁδὴ θ' (κανὼν τοῦ Πάσχα)

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

### ἤχος α'

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν θελουσίως παθόντα καὶ ταφέντα καὶ ἐξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν,  
καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου Χριστὸν τὸν ζωοδότην.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν,  
καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Χ**ριστὸς τὸ καινὸν πάσχα, τὸ ζωόθυτον θῦμα, ἀμνὸς Θεοῦ ὁ αἵρων τὴν ἀμαρτίαν κόσμου.  
**Ω** θείας! ὦ φίλης! ὦ γλυκυτάτης σου φωνῆς! μεθ' ἡμῶν ἀψευδῶς γάρ, ἐπηγγείλω,  
ἔσεσθαι, μέχρι τερμάτων αἰῶνος Χριστέ· ἦν οἱ πιστοί, ἄγκυραν ἐλπίδος, κατέχοντες  
ἀγαλλόμεθα.

**Σ**ήμερον πᾶσα κτίσις ἀγάλλεται καὶ χαίρει, ὅτι Χριστὸς ἀνέστη καὶ ἄδης ἐσκυλεύθη.  
**Ω** θείας! ὦ φίλης! ὦ γλυκυτάτης σου φωνῆς! μεθ' ἡμῶν ἀψευδῶς γάρ, ἐπηγγείλω,  
ἔσεσθαι, μέχρι τερμάτων αἰῶνος Χριστέ· ἦν οἱ πιστοί, ἄγκυραν ἐλπίδος, κατέχοντες  
ἀγαλλόμεθα.

**Δ**όξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου καὶ ἀδιαιρέτου Θεότητος τὸ κράτος.  
**Ω** Πάσχα τὸ μέγα, καὶ ἱερώτατον Χριστέ· ὦ σοφία καὶ Λόγε, τοῦ Θεοῦ καὶ δυνάμεις·  
δίδου ἡμῖν ἐκτυπώτερον, σοῦ μετασχεῖν, ἐν τῇ ἀνеспέρῳ, ἡμέρᾳ τῆς βασιλείας σου.

**Κ**αὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

**Χ**αῖρε, παρθένε, χαῖρε· χαῖρε, εὐλογημένη·

χαῖρε, δεδοξασμένη, σὸς γὰρ Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

**Ω** Πάσχα τὸ μέγα, καὶ ἱερώτατον Χριστέ· ὦ σοφία καὶ Λόγε, τοῦ Θεοῦ καὶ δυνάμεις·

δίδου ἡμῖν ἐκτυπώτερον, σοῦ μετασχεῖν, ἐν τῇ ἀνεσπέρῳ, ἡμέρα τῆς βασιλείας σου.

Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρύσανθου Θεοδοσόπουλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου

ὥδη θ'

Ἦχος ᾠ Πά

Κωνσταντίνος Σ. Σκαρμούτσος 2011#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ ο ν ε θ ε λ ο υ σ ι ι

ω σ π α θ ο ν τ α κ α ι τ α φ ε ε ν τ α α κ α ι ε ξ α ν α σ τ α ν τ α τ ρ ι

η μ ε ρ ο ν ε κ τ α φ ο υ π

Φ ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ι ζ ο υ η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α

λ η μ η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ι ο υ ο υ ε π ι σ ε α ν ε τ ε ι λ ε

π ρ ο ρ ε υ ε ν υ ν κ α ι α γ α λ λ ο υ σ ι ω ν σ υ υ δ ε Α γ γ η η

τ ε ρ π ο υ Θ ε ο τ ο ο κ ε ε ν τ η ε γ ε ρ σ ε ι τ ο υ τ ο ο

κου σου <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ ο ν ε ξ α ν α σ τ α α ν

τ α τ ρ ι η μ ε ρ ο ν εκ τ α α φ ο υ Χ ρ ι σ τ ο ν τ ο ν Ζ ω ο δ ο τ η ν <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Φ** ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ι ζ ο υ η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α

λ η μ <sup>Δ</sup><sub>9</sub> η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ι ο υ ο υ ε π ι σ ε α ν ε τ ρ ι λ ε

<sup>π</sup><sub>9</sub> χ ο ρ ε υ ε ν υ ν και α γ α λ λ ο υ σ ι ω ν σ υ υ δ ε Α γ ν η η

τ ε ρ π ο υ Θ ε ο τ ο ο κ ε <sup>Δ</sup><sub>9</sub> εν τ η ε γ ε ρ σ ε ι τ ο υ τ ο ο

κου σου <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Χ** ρ ι σ τ ο ς τ ο και ν ο ν Πα σ χ α τ ο ζ ω ο θ υ τ ο ν θ υ υ μα

Α μ ν ο ς Θ ε ο υ ο αι αι ρ ω ν τ η ν α μα ρ τι α ν κο σ μ ο υ <sup>π</sup><sub>9</sub>

Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα τηςσουφωνης π 9

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε σθαι π 9

με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε η ην οι πι στοι

αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο ο με

θα π 9

C η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λεται και χαι αι ρει

ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη π 9

Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα τηςσουφωνης π 9

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε σθαι π 9

με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε η ην οι πι στοι

αγ κυραν ελ πι ι δος  κα τε χοντες α γαλ λο ο με

 <sup>π</sup><sub>9</sub>  
θα

      
**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα

   
τι

            
**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα α

             
του και α δι αι ρε του **Θ**ε ο τητος το κρα τος <sup>π</sup><sub>9</sub>

            
**Ω** Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

             
στε <sup>π</sup><sub>9</sub> ω σο φι α και  Λο ο γε του **Θ**ε ου και δυ να

             
μεις <sup>π</sup><sub>9</sub> δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον  σου ου μετα σχειν

             
εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει ας

σου <sup>π</sup>9

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων Α μην <sup>Δ</sup>9

**Χ** αι ρε Παρ θε νε χαι ρε ε χαι ρε ευ λο γη με ε νη

χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη τρι

η με ρος εκ τα φου <sup>π</sup>9

**Ω** Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι στε <sup>π</sup>9

ω σο φι α και Λο ο γε του Θε ου και δυ να μεις <sup>π</sup>9

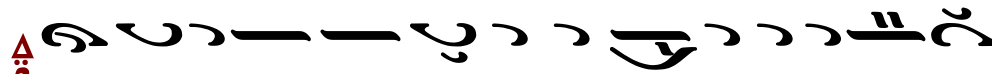
δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον <sup>Δ</sup>9 σου ου με τα σχειν εν

τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει ας σου <sup>π</sup>9

Γαβριήλ Κουντιάδου

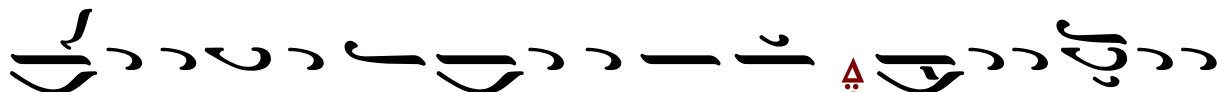




αν τα   τρι η με ρον εκ τα φου Χρι στον τον ζω ο δο την 

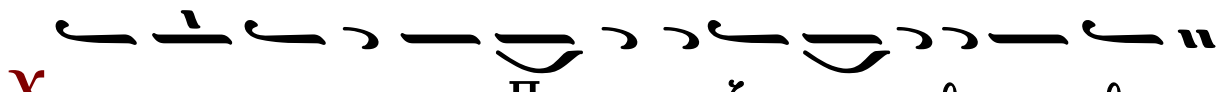
 ω τι ζου φω τι ζου  η νε α Ι ε ρου σα

λημ  η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε 

 χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων  συ δε Α γνη η η

 τερ που Θε ο το ο κε  εν τη ε γερ σει του το ο

   
κου ου σου

 Χ ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο ο θυ τον θυ υ

 μα  α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο

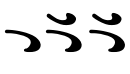
   
σμου

 θει ας ω φι λης  ω γλυ κυ τα της σου φω

νης  μεθ η μων α ψευ δως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι  με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε  ην οι πι

 στοι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος  κα τε χον τες α γαλ λο

 ο μεθα 

 **C** η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει 

 ο τι Χρι στος α νε στη και α δης ε σκυ λευ θη 

 **Ω** θει ας ω φι λης  ω γλυ κυ τα της σου φω

νης  μεθ η μων α ψευ δως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι  με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε  ην οι πι

 στοι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος  κα τε χον τες α γαλ λο

ο μεθα <sup>π ρ</sup>

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι <sup>π ρ</sup>

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα

α του <sup>π ρ</sup> και α δι αι ρε του θε ο τητος το κρα τος <sup>π ρ</sup>

Ω Πα σχα το με γα <sup>π ρ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>π ρ</sup> ω σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μεις <sup>π ρ</sup>

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου μετα σχει ει ει ν εν τη α

νε σπε ε ρω <sup>π ρ</sup> η με ρα της βα σι λει ει ας σου <sup>π ρ</sup>

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην <sup>π ρ</sup>

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε νη <sup>Δ</sup>

χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη τρι η

με ρος εκ τα φου <sup>π</sup>

Ω Πα σχα το με γα <sup>π</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>Δ</sup> ω σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μεις <sup>π</sup>

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου με τα σχει ει ει ν εν τη α

νε σπε ε ρω <sup>Δ</sup> η με ρα της βα σι λει ει ας σου <sup>π</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδῃ θ'

Ἦχος <sup>4</sup> Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.6\*

ΠΑ  
Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον ε θε λου σι ι

ως παθοντα και τα φεντα α και εξα να σταν

τατρι η μερονεκτα φου

Φωτιζου φωτιζου ηνεα Ιερουσα

λημη η γαρ δοξα Κυριου ουου επι σε ανε

τειλε χορευενυν και αγαλλου Σιων συ υ δε Α

γνη η η η τερπου Θεο το ο κε εν τη ε γερσει

του το οκουσου

Μεγαλυνον ψυχη μου ου τον εξα να στα αν

τατρι η μερονεκτα αφου Χριστον τον ζωο

δοτην το ιδιο

ΜΕΛ ΠΑ  
Φ ω τι ζου φω τι ζου <sup>πρ</sup> η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ου ου ε πι σε α νε

τει λε <sup>πρ</sup> χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων <sup>Δ</sup> συ υ δε Α

γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ</sup> εν τη ε γερ σει

ΝΗ ΠΑ  
του το ο κου σου <sup>πρ</sup>

ΠΑ  
Χ ρι στος το και νον Πα α σχα το ζω ο ο θυ τον

θυ υ μα <sup>Δ</sup> α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ

ΝΗ ΠΑ  
τι αν κο σμου <sup>πρ</sup>

ΝΗ ΠΑ  
Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φω νης <sup>πρ</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γα α αρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε <sup>Δ ρ</sup> η ην οι πι

στοι οι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Δ ρ</sup> κα τε χον τες α

<sup>ΝΗ</sup>  
γαλ λο ο με θα <sup>π ρ</sup>

<sup>ΠΑ</sup>  
**Σ** η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει <sup>Δ ρ</sup>

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη <sup>π ρ</sup>

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
**Ω** θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης <sup>π ρ</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γα α αρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε <sup>Δ ρ</sup> η ην οι πι

στοι οι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Δ ρ</sup> κα τε χον τες α

<sup>ΝΗ</sup>  
γαλ λο ο με θα <sup>π ρ</sup>

ΠΑ  
Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ  
μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε ε του Θε ο τητος το κρα τος

ΝΗ ΠΑ  
Ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

πρ στε ω σο φι α και Λο ο γε ε του Θε ου και δυ να

πρ μις δι δου η μιν εκτυ πω τε ρον σου ου μετα σχει ει

ΝΗ  
ει ει ν εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει

ΠΑ  
ας σου

ΠΑ  
Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι



ω νων α μην 

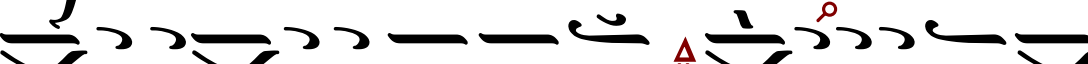
 **Χ** αι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε νη  χαι

 ρε δε δο ξα σμε νησος γαρ Υι ος α νε ε στητρι η

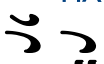
 με ρος εκ τα φου  

 **Ω** Πα σχα το με ε γα  και ι ε ρω τα τον Χρι

 στε  ω σο φι α και Λο ο γε ε του Θε ου και δυ να

 μιν  δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον  σου ου με τα σχει ει

 ει ει ν εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει

 ας σου 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

**Μ** <sup>5̣</sup>ε γα λυ νον ψυ χη μου τον ε θε λου σι ι

ως πα θον τα και τα φεν τα <sup>2̣</sup> και εξ α να στα αν τα

τρι η μερον εκ τα φου <sup>π 9</sup>

**Φ** <sup>5̣</sup>ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π 9</sup> χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων <sup>Δ</sup> συ υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε <sup>Δ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

σου <sup>π 9</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εξ α να στα αν τα τρι

η μερον εκ τα φου Χρι στον τονζω ο δο την <sup>π ρ</sup> τὸ ἴδιο <sup>ϣ</sup>

**Φ** ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ ρ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π ρ</sup> χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων <sup>Δ ρ</sup> συ υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε <sup>Δ ρ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

σου <sup>π ρ</sup>

**Χ** ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο ο θυ τον θυ υ

μα <sup>Δ ρ</sup> α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο ο

σμου <sup>π ρ</sup>

**Ω** θει ας ω φι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης <sup>π ρ</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι με χρι τερ μα των αι ω ωνος Χρι στε ην οι πι

στοι οι αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο

ο με ε θα

η η με ρον πα σα κτι ι σις α γαλ λεται και χαι αι

ρει ο τι Χρι στος α νε ε στη και α δης ε σκυ λευ

θη

ω θει ας ω φι λης ω γλυ κυ τα της σου φω νης

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι με χρι τερ μα των αι ω ωνος Χρι στε ην οι πι

στοι οι αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο

ο με ε θα

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε ε του Θε ο τητος το κρα τος

Ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε ω Σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μεις

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου ου μετασχειν εν τη

α νε σπε ρω η με ρα της βα σι λει ει α ας σου

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

— —  
Α μην

Χ αι ρε Παρ θε νε χαι αι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε

νη χαι ρε δε δο ξα σμε νη σο ο ος γαρ Υι ος α

νε στητρι η μερος εκ τα φου π q τὸ ἴδιο

Ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε π q ω Σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μεις π q

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου ου μετασχειν εν τη

α νε σπε ρω η με ρα της βα σι λει ει α ας σου π q

ὁδὴ θ', (κανὼν τῆς Θεοτόκου)

ἦχος α'

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου καὶ ἀδιαιρέτου θεότητος τὸ κράτος.

Συμφώνως Παρθένε, σὲ μακαρίζομεν πιστοί· Χαῖρε πύλη Κυρίου· χαῖρε πόλις ἔμψυχε·

χαῖρε, δι' ἧς ἡμῖν ἔλαμψε, σήμερον φῶς τοῦ ἐκ σοῦ τεχθέντος, τῆς ἐκ νεκρῶν ἀναστάσεως.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Χαῖρε, παρθένε, χαῖρε· χαῖρε, εὐλογημένη·

χαῖρε, δεδοξασμένη, σὸς γὰρ Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Εὐφραίνου, ἀγάλλου, ἡ θεία πύλη τοῦ φωτός· ὁ γὰρ δύνas ἐν τάφῳ, Ἰησοῦς ἀνέτειλε, λάμψας ἡλίου φαιδρότερον, καὶ τοὺς πιστοὺς πάντας καταυγάσας, θεοχαρίτωτε Δέσποινα.

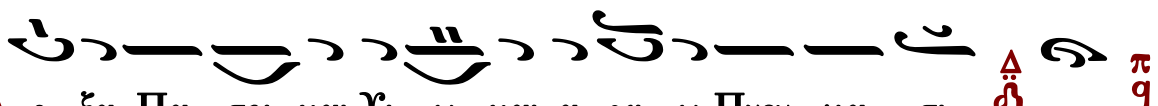
Γαβριὴλ Κουντιάδου

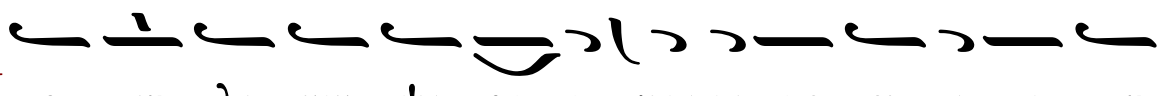
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Γαβριὴλ Κουντιάδου

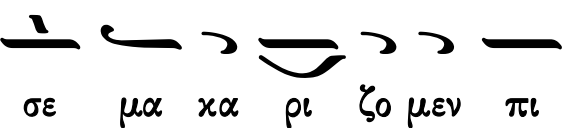
Ἦχος ᾠ Πα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.196\*

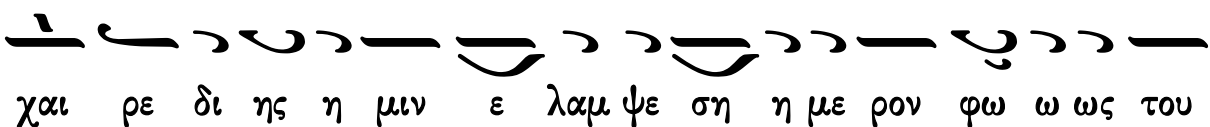
Δοξα Πατρι καὶ Υἱὼ καὶ αἰὼ Πνευματι   

Μεγαλυνον ψυχῆς μου σου τῆς τρισυποστα 

ατοῦ  καὶ αἰδιρετοῦ θεοῦ τῆς τοῦ κράτος 

Συμφωνῶς Παρθενε  σε μακαρίζομεν 

στοι  χαίρετε πολυκή Κυρίου χαίρετε πολυεμφυχε 

χαίρετε διῆς ἡμῖν ἐλάμψεσθε σήμερον φως τοῦ 

ΕΧ ΣΟΥ ΤΕ ΧΘΕ ΕΝ ΤΟΣ <sup>δ</sup>ΤΗΣ ΕΧ ΝΕ ΚΡΩΝ Α ΝΑ ΣΤΑ Α ΣΕΩΣ

καὶ οὐκ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰῶνων

α μην

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε

νη <sup>α</sup> και ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στρ

τρι η μερος εκ τα φου

Εὐφραίνου ἡ γαλῶν<sup>πρ</sup> ἡ θειὰ πύλη τοῦ φω

τος **δ** ο γαρ δυ νας εν τα α φω Ι η σους α νε τει λ

λαμ ψας η λι ου φαι δρο τε ρον και τους πι στου ου ου ου

παν τας κα ταυ γα α σας <sup>δι</sup>θε ο χα ρι τω τε Δε ε σπου



να <sup>π</sup>9

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup>9 Πα

Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
πρ. Κων. Παπαγιάννη  
2005 σ.219#

<sup>π</sup>9 Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα

τι <sup>Δ</sup>9

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε του θε ο τητος το κρα τος <sup>π</sup>9

Σ υμ φω νως Παρ θε νε <sup>ν</sup>9 σε μα κα ρι ζο μεν πι

στοι <sup>π</sup>9 χαι ρε πυ λη Κυ ρι ου <sup>Δ</sup>9 χαι ρε πο λις εμ ψυ χε

<sup>π</sup>9 χαι ρε δι ης η μι ν ε ε λαμψε ση με ρον φως <sup>Δ</sup>9

του εκ σου τε χ<sup>ρ</sup>θε εν τος της εκ νε κρων α να στα α σε ε

ως <sup>π</sup>q

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων Α μην <sup>Δ</sup>α

**Χ** αι ρε Παρ θε νε χαι ρε ε χαι ρε ευ λο γη με ε νη

χαι ρε δε δο ξα σμε νησος γαρ Υι ος α νε στη τρι

η μερος εκ τα φου <sup>π</sup>q

**Ε** υ φραι νου α γαλ λου η θει α πυ λητου φωτος <sup>π</sup>q

ο γαρ δυ νας εν τα φω Ι η σους α νε τει λε <sup>π</sup>q λαμ

φας η λι ουφαι δρο τε ρον <sup>Δ</sup>α και τους πι στου ους παν τας



νη  α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι

 ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η με ρος εκ

 τα φου

**Φ** ω τι ζου φω τι ι ι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ε πι σε α νε τει λε 

 συ υ δε α γνη η

τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο

 σου

 σου ου ου ου

**Χ** ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον πα

τη η σας  και τοις εν τοις μνημα σι ζω ην χα ρι σα

μενος <sup>π ρ</sup>

**Χ** ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον

πα τη η σας <sup>Δ</sup> και τοις εν τοις μνη μασι ζω ην

χα ρι σα μενος <sup>π ρ</sup>

**Χ** ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον

πα τη η σας <sup>Δ</sup> και τοις εν τοις μνη μασι ζω ην χα ρι

σα μενος <sup>π ρ</sup>

**Α** να στας ο Ι η σους α πο του τα α φου κα

θως προ ει ει πεν <sup>Δ</sup> ε δω κεν η μιν την αι ω νι ον ζω

ην και με γα <sup>χ</sup> ε λε ο ο ος <sup>π ρ</sup>

Γαβριήλ Κουντιάδου

မုၢ်စးၣ် ၵုၢ်

Ἦχος ὧ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.28\*

Ο <sup>ϛ</sup> α γ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με

ε νη α γνη Παρ θε νε χαι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι

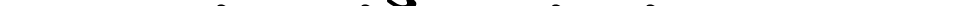

  
 ρε ο σος Υι ος α νε στη τρι η με ρος εκ τα

σου πρ

Φωτισου η νεα Ιερουσα

λημ  η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε  π ρ

χο ρευ ε νυν και α γα αλ λου Σι ων **Α** συ δε Α γνη η η


 τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο

κου ου σου

σου ου ου ου

Χ ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον πα

τη η σας και τοις εν τοις μνη μα σι ζω ην χα ρι

σα α με νος (γ')

Α να στας ο Ι η σους α πο του τα φου κα

θως προ ει ει πεν ε δω κεν η μιν την αι ω

νι ον ζω ην και με γα ε λε ο ο ος

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδῃ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.9\*

ΠΑ  
Ο Α γ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με

ΔΙ ΠΑ  
ε νη α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι

ΝΗ ΠΑ ΝΗ  
ρε ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η με ρος εκ τα

ΠΑ  
φου

ΜΕΛ ΠΑ  
Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ου ου ε πι σε α νε

πει λε χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων συ υ δε Α

γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει

ΝΗ ΠΑ  
του το ο κου σου

ΜΕΛ  
κου ου σου ου ου ου

ΠΑ  
Χ ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να

τον πα τη η σας και τοις εν τοις μνη μασι ζω ην



ΝΗ ΠΑ  
χα ρι σα α με νος (γ')

ΠΑ  
Α να στας ο Ι η σους α πο του τα φου κα

θως προ ει ει πεν ε δω κεν η μιν την αι ω νι

ΝΗ ΜΕΛ  
ον ζω ην και με γα ε λε ο ο ος

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ'

Ἦχος ♪ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.20#

Ο α γ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με

ε νη α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω ω

χαι αι ρε ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η με ρος εκ

τα φου

**Φ**<sup>̅χ</sup> ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα  
 λημ **Δ**<sup>Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε **π**<sup>π</sup> χο  
 ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων **Δ**<sup>Δ</sup> συ υ δε α γνη η τερ που  
 Θε ο το ο κε **Δ**<sup>Δ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο κου ου  
 σου **π**<sup>π</sup>

**Χ**<sup>̅χ</sup> ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον  
 πα τη η σας **Δ**<sup>Δ</sup> και τοις εν τοις μνη μα σι ζω ην χα ρι  
 σα α με ε νος **π**<sup>π</sup> (γ')

**Α** να στας ο Ι η σους α πο του τα α φου κα θως  
 προ ει ει πεν **Δ**<sup>Δ</sup> ε δω κεν η μιν την αι ω νι ον ζω

ην και με γα ε λε ο ο ος π ρ

# Τῆς Κυριακῆς τοῦ Θωμᾶ

Από τῆς Κυριακῆς τοῦ Πάσχα μέχρι τοῦ Σαββάτου πρό τῆς Κυριακῆς τοῦ Τυφλοῦ, ἐκτός τῆς Μεσοπεντηκοστῆς. Ψάλλονται ὡσαύτως καί ἐν τῇ ἀποδόσει τοῦ Πάσχα, ἤτοι τῇ Τετάρτῃ πρό τῆς Ἀναλήψεως.

## ἤχος α΄

- α **Ἀ**ναστάσεως ἡμέρα λαμπρυνθῶμεν λαοί, Πάσχα Κυρίου, Πάσχα· ἐκ γὰρ θανάτου πρὸς ζωὴν, καὶ ἐκ γῆς πρὸς οὐρανόν, Χριστὸς ὁ Θεός, ἡμᾶς διεβίβασεν, ἐπινίκιον ἄδοντας.
- γ **Δ**εῦτε πόμα πίνωμεν καινόν, οὐκ ἐκ πέτρας ἀγόνου τερατουργούμενον, ἀλλ' ἀφθαρσίας πηγὴν, ἐκ τάφου ὀμβρήσαντος Χριστοῦ, ἐν ᾧ στερεούμεθα.
- δ **Ἐ**πὶ τῆς θείας φυλακῆς ὁ θεηγόρος Ἀββακούμ, στήτω μεθ' ἡμῶν καὶ δεικνύτω, φασφόρον ἄγγελον, διαπρυσίως λέγοντα· Σήμερον σωτηρία τῷ κόσμῳ, ὅτι ἀνέστη Χριστὸς ὡς παντοδύναμος.
- ε **Ὁ**ρθρίσωμεν ὀρθρου βαθέος, καὶ ἀντὶ μύρου τὸν ὕμνον προσοίσωμεν τῷ Δεσπότῃ, καὶ Χριστὸν ὀψόμεθα, δικαιοσύνης ἥλιον, πᾶσι ζωὴν ἀνατέλλοντα.
- ς **Κ**ατῆλθες ἐν τοῖς κατωτάτοις τῆς γῆς, καὶ συνέτριψας μοχλοὺς αἰωνίους, κατόχους πεπεδημένων Χριστέ, καὶ τριήμερος ὡς ἐκ κήτους Ἰωῆς, ἐξάνεστης τοῦ τάφου.
- ζ **Ὁ** παῖδας ἐκ καμίνου ρυσάμενος, γενόμενος ἄνθρωπος, πάσχει ὡς θνητός, καὶ διὰ πάθους τὸ θνητόν, ἀφθαρσίας ἐνδύει εὐπρέπειαν, ὁ μόνος εὐλογητὸς τῶν πατέρων, Θεὸς καὶ ὑπερένδοξος.
- η **Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Αὕ**τη ἡ κλητὴ καὶ ἁγία ἡμέρα, ἡ μία τῶν Σαββάτων, ἡ βασιλὶς καὶ κυρία, ἑορτῶν ἑορτῇ, καὶ πανηγυρις ἐστὶ πανηγύρεων, ἐν ᾗ εὐλογοῦμεν, Χριστὸν εἰς τοὺς αἰῶνας.

|          |                             |       |
|----------|-----------------------------|-------|
| Σύντομοι | ☞ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ☞     | Ἀργαί |
| Σύντομοι | ☞ Γαβριὴλ Κουντιάδου ☞      | Ἀργαί |
| Σύντομοι | ☞ Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου ☞ | Ἀργαί |
| Σύντομοι | ☞ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ☞ | Ἀργαί |

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα να του προς

ζω ην <sup>Δ</sup> και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος ο Θε ος η

μας δι ε βι βα σεν ε πι νι κι ον α α δο ον τας <sup>π</sup> <sup>9</sup> ᾠδὴ γ'

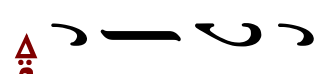
Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο ο

νου τε ρα του ρ γου με νον <sup>π</sup> <sup>9</sup> αλλ α φθα ρ σι ας πη γην <sup>Δ</sup>

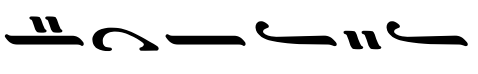
εκ τα φου ομ βρι σαν τος Χρι στου <sup>π</sup> <sup>9</sup> χο ρός α' εν ω στε ρε

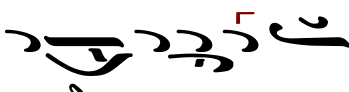
ου ου με ε θα <sup>π</sup> <sup>9</sup> ᾠδὴ δ'

Ε πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ    
στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω φα εσ φο ρον

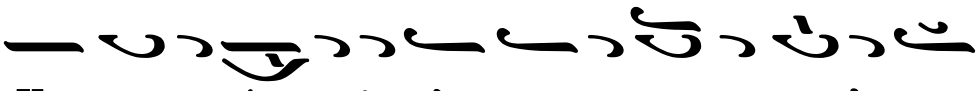
   
αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα  ση με ρον σω τη

   
ρι α τω κο ο σμω  ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν

    
το δυ υ να α μος  

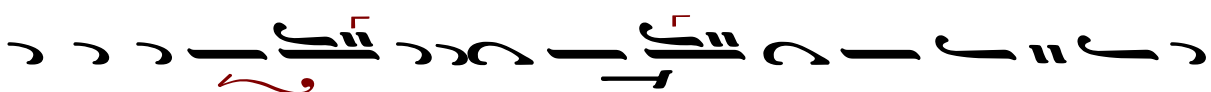
   
**Ο** ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ος  και αν τι μυ

   
ρου τον υ μνον προ σοι οι σο μεν τω δε σπο ο τη  και

   
Χρι στον ο ψο με θα δι και ο συ νης η λι ον  πα σι ζω

   
ην α να τε ελ λο ον τα  

  
**Κ** α τη λ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν ε

  
τρι ψας μο χλου ους αι ω νι ι ους κα το ο χους πε

πε δη με ε νων Χρι στε και τρι η μερος ως εκ κη τους Ι

ω να ας εξ α νε στης του τα α φου π ρ ὤδὴ ζ'

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο ο με

νος αν θρωπος π ρ πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον Δ ρ α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν π ρ ο μο νος ευ

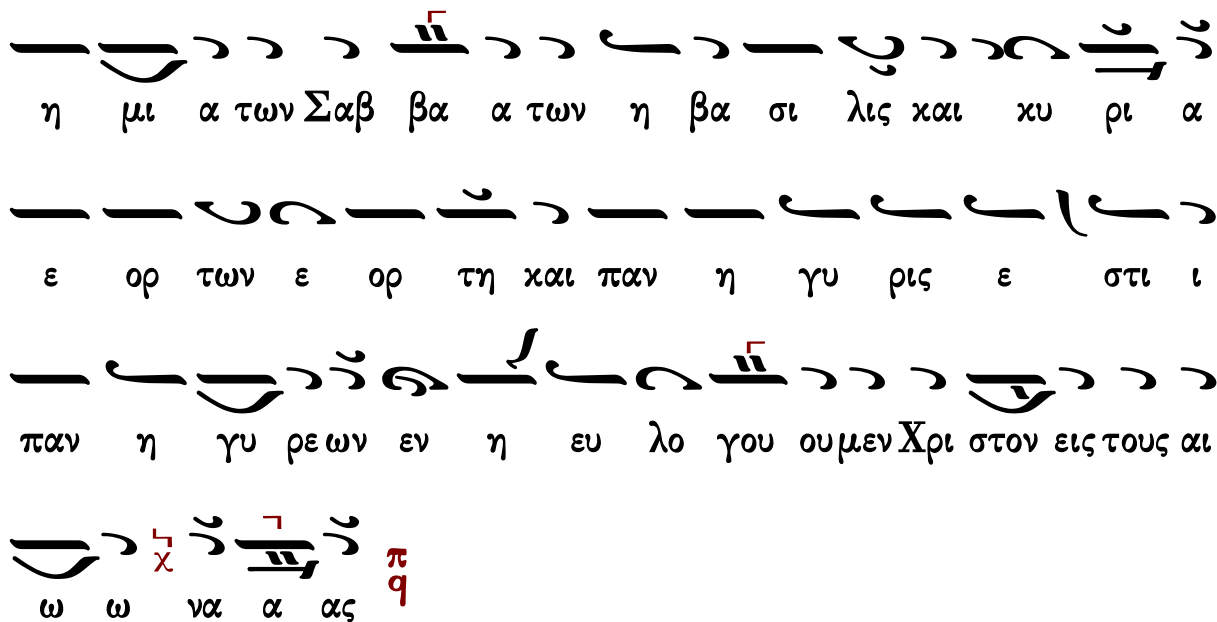
λο γη τος των πα τε ε ρων Δ ρ Θε ος και υ πε ρε εν

δο ο ξος π ρ ὤδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον Δ ρ

Α υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα



Γαβριήλ Κουντιάδου

ὥδη α'

Ἦχος 4̣ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.14\*





κι ον α α δο ον τας π ϩ

ὥδ᾽ γʹ

Δευ τε πο μα πι ω μεν και νον Δ ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον π ϩ αλλ α φθαρ σι ας πη

γην Δ εκ τα α φου ομ βρι σαντος Χρι στου Δ χορὸς ἀʹ εν ω στε

ρε ου ου με ε θα π ϩ

ὥδ᾽ δʹ

Επι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ Δ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω Δ φα ε σφο ρον

α γ γε λον π ϩ δι α πρυ σι ως λε γον τα π ϩ ση με ρον σω

τη ρι α τω κο ο σμω Δ ο τι α νε στη Χρι στος ως

παν το δυ υ να α μος π ϩ

ὥδ᾽ εʹ

**Ο** ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ε ως **Δ** και αν τι

μου ρου τον υ μνον προσ οι οι σο μεν τω **Δ**ε σπο τη **π**

και Χρι στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον **Δ**

πα σι ζω ην α να τε ελ λο ον τα **π** **ψδῆς'**

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις της γης **π** και

συν ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους **Δ** κα το χους

πε πε δη με ε νων Χρι στε **π** και τρι η μερος ως εκ κη

τους Ι ω νας **Δ** εξ α νε ε στης του τα φου **π** **ψδῆς'**

**Ο** παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος **Δ** γε νο μενος

αν θρω πος **π** πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον  α φ θ α ρ σ ι α ς ε ν δ υ ε ι ε υ π ρ ε π ρ ει α ν  ο μ ο ν ο ς

ε υ λ ο γ η τ ο ς τ ω ν π α τ ε ρ ω ν  Θ ε ο ς κ αι υ π ε ρ ε ε ν

 δο ο ξ ο ς

ὡδὴ η'

 ι ν ο υ μ ε ν ε υ λ ο γ ο υ μ ε ν κ αι π ρ ο σ κ υ ν ο υ μ ε ν τ ο ν

Κ υ ρ ι ο ν  

 υ τ η η κ λ η τ η κ αι α γ ι α η μ ε ε ρ α  η

 μι α τ ω ν Σ α β β α α τ ω ν η β α σ ι λ ι ι ς κ αι κ υ ρ ι α  ε

ο ρ τ ω ν ε ο ρ τ η  κ αι π α ν η γ υ ρ ι ς ε σ τ ι π α ν η γ υ ρ ε

 ω ν  ε ν η ε υ λ ο γ ο υ ο υ μ ε ν Χ ρ ι σ τ ο ν ε ι ς τ ο υ ς α ι ω ν α ς 

 \* ν α α α α ς 

# Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδὴ α'

Ἦχος 4 Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.103\*

ΠΑ  
Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα  
οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα  
να του προς ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος  
ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι  
νι κι ον α α δο ον τας  
Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο  
ο νου τε ρα του ρ γου με νον αλλ α φθα ρ σι ας πη  
γην εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου χο ρὸς α' εν ω

στε ρε ου ουμε ε θα

ὥδὴ δ'

Επι της θειας φυλακης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω φα ε σφο ρον

αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα ση με ρον σω τη

ρι α τω κο ο σμω ο τι α νε ε στη Χρι στος ως

παν το δυ υ να α μος

ὥδὴ ε'

Ο ρ θρι σωμεν ορ θρου βα θε ε ος και αν τι μυ

ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω Δε σπο τη και Χρι

στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον πα σι ζω

ην α να τε ελ λο ον τα

ὥδὴ ε'

ΠΑ

Κ α τηλ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν

ε τρι φας μο χλους αι ω νι ι ους κα το χους πε πε δη

ΜΕΛ

ΝΗ

ΠΑ

με νων Χρι στε και τρι η με ρος ως εκ κη τους

ΝΗ

ΠΑ

Ι ω νας εξ α νε ε στης του τα φου

ὠδὴ ζ'

ΔΙ

ΠΑ

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα με νος γε νο με

ΜΕΛ

ΠΑ

νος αν θρω πος πα σχει ως θνη τος και δι α πα

ΝΗ

θους το θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει

ΠΑ

αν ο μο νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων

ΝΗ

ΠΑ

ος και υ περ ε εν δο ο ξος

ὠδὴ η'

ΠΑ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

α υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα

ΔΙ ΠΑ ΝΗ η μι α των Σαβ βα α των η βα σι λις και κυ ρι

ΠΑ α π ε ορ των ε ορ τη και παν η γυ ρις ε

ΝΗ ΠΑ στι ι παν η γυ ρε ων π εν η ευ λο γου ου μεν Χρι

ΜΕΛ στον εις τους αι ω να α α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.5\*

Χ να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα σχα εκ γαρ θα να

του προς ζω ην  και εκ γης προς ου ρα νον  Χρι στο

ος ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν  ε πι νι κι

ον α α δο ον τας  ὥδ' ὁ γ'

 Δευ τε πο μα πι ω μεν και νον  ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον  αλλ α φθαρ σι ας πη

γην  εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου  χορὸς α' εν

 ω στε ρε ου ου με ε θα ὥδ' ὁ δ'

 Ε πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων  και δει κνυ τω φα εσ φο ρον αγ

γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα  ση με ρον σω τη ρι α



τω κο ο σμω  ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν το

 δυ υ να α μος ὠδὴ ε'

**Ο** ρ θρι σωμεν ορ θου βα θε ε ος  και αν τι μυ

ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω Δε σπο τη  και Χρι

στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον  πα σι ζω

 ην α να τε ελ λο ον τα ὠδὴ ς'

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις της γης  και

συν ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους  κα το χους πε

πε δη με ε νων Χρι στε και τρι η μερος  ως εκ κη

τους Ι ω νας εξ α νε ε στης του τα φου  ὠδὴ ζ'

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο μενος

αν θρωπος πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το

θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν ο μο

νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων Θε ος και υ περ

ε εν δο ο ξος

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

Α υ τη η κλη τη και α γι α η με ε ρα η

μι α των σαβ βα α των η βα σι λι ις και κυ ρι α

ε ορ των ε ορ τη και πα νη γυ ρις ε στι

ι πα γη γυ ρεων <sup>Δ</sup> εν η ευ λο γου ουμεν Χρι στον εις τους  
 αι ω νας <sup>π</sup>

## Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι τοῦ Πάσχα  
 ὡδὴ α΄

Ἦχος <sup>Λ</sup> ᾠ <sup>Π</sup> α

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
 Ειρμολόγιον 1903 σ.21#

<sup>Δ</sup> να στα α σε ως η με ε ρα λαμ πρυ  
 υ υν θω ω ω ω με εν λα α α οι <sup>Δ</sup> Πα α α α  
 σχα α Κυ ρι ι ου ου Πα α α σχα α <sup>Δ</sup> εκ  
 γαρ θα να α α του προς ζω ω ην <sup>Δ</sup> και εκ γης προ  
 ος ου ου ρα νο ον Χρι ι στο ο ο ο ος ο  
 ο Θε ε ε ος <sup>π</sup> η μα α α ας δι ι ε

ε ε βι ι βα α α σεν ε πι ι νι κι ι ο

ον α α α α α δο ο ο ον τας

Δ ε ευ τε πο μα πι ι ι ω μεν και αι αι νο ον ουκ

εκ πε τρα ας α α γο ο ο νου τε ε ε ρα

τουρ γου ου με ε νο ον αλλ α φθαρ σι ι ι ας πη η

γην εκ τα α φου ομ βρη η σαν τος Χρι ι στου χορὸς α'

ε ε ε νω στε ρε ε ου ου ου ου ου με ε ε ε

θα

Ε πι της θει ει ει ει α α ας φυ λα α

κης ο ο ο Θε ε η γο ρο ος Α αβ βα α κου ου

ου ουμ  στη τω μεθ η η μω ω ων και αι αι

δει κνυ υ υ υ υ τω  φα ε σφο ο ρον Α αγ

γε ε λον  δι α α α πρυ υ σι ι ω ως λε ε

γο ο ον τα α  ση η με ε ρον  σω ω τη η ρι

ι ι α α α τω κο ο ο ο ο σμω  ο τι α

αν ε ε ε στη Χρι στο ος ως πα αν το ο δυ υ

υ υ υ να α α α μος  ὧδῇ ε'

**Ο** ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ουου βα θε ε

ε ε ως  και αν τι μυ υ υ υ ρου τον υ υ υ

μνο ον προ σοι οι οι οι σο ο μεν τω ω Δε σπο ο ο ο

τη <sup>π ρ</sup> και Χρι στο ον ο ψο ο με ε θα <sup>Δ</sup> δι

ι ι και αι ο συ υ νη η ης Η η λι ι ι

ον <sup>Δ</sup> πα σι ι ζω ω ω ην α α να α τε ε

ε ε ελ λο ο ο ον τα <sup>π ρ</sup> ὠδὴς'

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις τη ης

γης <sup>π ρ</sup> και συ υν ε τρι ι ψας μο ο χλου ου ους αι αι

ω ω νι ι ι ου ους <sup>Δ</sup> κα το ο χους πε

πε ε δη η με ε ε ε ε νω ων Χρι ι ι στε <sup>π ρ</sup>

και τρι ι η με ε ρος <sup>π ρ</sup> ως εκ κη η τους Ι ω ω να

α α α α ας ε ε εξ α α νε ε ε ε στη

η ης του τα α α α α φου <sup>π q</sup>

ῥδῆζ'

**Ο** Παι αι αι αι δας <sup>χ q</sup> εκ κα μι ι ι νου ρυ σα

α με ε νο ο ο ο ος <sup>Δ ῥ</sup> γε νο ο ο ο με ε

νο ος α αν θρω ω ω πο ος <sup>π q</sup> πα α σχει ει ει

ει ει ω ως θνη η τος <sup>Δ η</sup> και αι αι δι ι α πα α

θου ου ους το ο θνη η η τον <sup>Δ ῥ</sup> α φθαρ σι ι ι ι

α ας <sup>χ q</sup> ε ε εν δυ υ υ υ ει ει ε ευ πρε ε ε

πει ει ει α αν <sup>π q</sup> ο μο ο ο νος ευ λο ο γη η

το ο ος τω ων Πα α τε ε ε ρωων <sup>Δ ῥ</sup> Θε

ο ος και υ υ πε ερ ε ε ε ε εν δο ο ο ο

ξος π q

ῥδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου με

εν τον Κυ υ ρι ι ον Δ π q

Α αυ τη η η κλη η η τη η και αι α α

γι ι ι α α η η με ε ε ρα α Δ η

μι α των Σα αβ βα α α τω ων η Βα σι ι λι ι

ις και αι αι κυ ρι ι ι ι α π q ε ο ορ των Δ

ε ορ τη η η η και αι πα νη η η η η γυ υ

υ υ υ ρις Δ ε ε ε στι ι ι ι πα α νη η γυ υ ρε

ε ε ω ων π q εν η η η ε ευ λο ο γου ου ου



με ε εν Χρι ι στο ον εις του ου ους αι ω ω

ω ω ω νας π ρ

## Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασία τοῦ Πάσχα  
ὥδῃ α'  
χρόνος διπλοῦς

Ἦχος ♯̣ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.142\*

α να στα α σε ως η με ε ε ρα λαμ

πρυ υ υν θω ω ω ω με εν λα α α οι Πα α α α

σχα α Κυ ρι ι ου ου Πα α α σχα α εκ

γαρ θα να α α του προς ζω ω ην και εκ γης προ

ος ου ου ρα νο ον Χρι ι στο ο ο ο ος ο

ο Θε ε ε ος η μα α α ας δι ι ε

ε ε βι ι βα α α σεν ε ε πι ι νι ι ι

κι ο ον α α α α α δο ο ο ον τας π q ὠδὴ γ'

Δευ τε πο μα πι ι ι ω μεν και αι νον ουκ εκ

πε τρα ας α α γο ο ο νου τε ε ε ρα του ουρ

γου ου με ε νο ον αλλ α φθαρ σι ι ι ι ας πη

η η γη ην εκ τα α φου ομ βρη η η σαν τος

Χρι ι στου χορὸς α' ε ε εν ω ω ω στε ρε ε ου ου

ου ου ου με ε ε ε θα π q ὠδὴ δ'

ε πι της θει ει ει ει α α ας φυ λα α

κης ο ο ο θε ε η γο ρο ος Α αβ βα α

κου ου ου ου ουμ  στη τω μεθ η μω ω ων και

αι αι δει ει ει κνυ υ υ υ υ τω  φα ε σφο

ο ρον α αγ γε ε λον δι α α α πρυ υ

σι ι ω ω ως λε ε ε γο ο ον τα α  ση η με ε

ρον σω τη ρι ι α τω ω κο ο ο σμω ω  ο τι

α νε ε ε ε στη Χρι ι στο ος ως πα αν το ο δυ υ

υ υ υ να α α α μος  ὠδὴ ε΄

**Ο** ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ου ου βα θε ε

ε ε ος  και αν τι μυ υ υ υ ρου τον υ υ υ

μνο ον  προσ οι οι οι οι σο ο μεν τω ω Δε σπο ο ο

ο τη <sup>π ρ</sup> και Χρι στο ον ο ψο ο με ε θα <sup>Δ</sup>

δι ι ι και αι ο συ υ νη η ης η η λι ι ι

ον <sup>Δ</sup> πα α σι ι ζω ω ω ην α α να α

τε ε ε ε ελ λο ο ο ον τα <sup>π ρ</sup> ῥδῆς'

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις τη ης

γης <sup>π ρ</sup> και συν ε τρι ι ψας μο ο χλους <sup>Δ</sup> αι ω νι ι ι

ι ου ους <sup>κ ρ</sup> κα το ο χλους πε πε ε δῆ η με ε

ε ε ε νω ων Χρι ι ι στε <sup>π ρ</sup> και τρι η με ε ρος

ως εκ κη του ους Ι ω ω νας <sup>Δ</sup> εξ α νε ε ε

στη η ης του τα α α α φου <sup>π ρ</sup> ῥδῆς'

Ο παι αι αι αι δας <sup>χ</sup>εκ κα μι ι ι νου ρυ υ

σα α με ε νο ος <sup>Δ</sup>γε ε νο ο ο ο με ε νο ος α

α αν θρω ω ω πο ος <sup>π</sup>πα α σχει ει ει ει ει

ω ως θνη η τος <sup>Δ</sup>και αι αι δι ι α πα θου ους το

ο θνη η το ο ο ο ον <sup>Δ</sup>α φθαρ σι ι ι ι

α αν <sup>χ</sup>ε ε εν δυ υ υ υ ει ει ε ε ευ πρε ε ε

πει ει ει α αν <sup>π</sup>ο μο ο ο νος ευ λο ο γη

το ος των πα α τε ε ε ρων <sup>Δ</sup>Θε ο ος και υ

υ πε ερ ε ε ε ε εν δο ο ο ο ξος <sup>π</sup> <sup>ωδὴ η'</sup>

Α <sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο γου μεν <sup>χ</sup>και προσ κυ νου ου ου

με εν το ο ον Κυ υ υ ρι ι ι ο ον π<sup>9</sup>

αυ τη η η κλη η η τη η η η και αι α

α γι ι ι α α η η με ε ε ρα α Δ

η μι α των Σα αβ βα α α τω ων Δ η βα σι

ι λι ι ις και αι αι κυ ρι ι ι ι α π<sup>9</sup> ε ορ

των ε ο ορ τη η η η και αι παν η η η

η η γυ υ υ υ ρις Δ ε ε ε στι ι ι ι πα αν

η η η γυ υ υ ρε ε ε ω ων π<sup>9</sup> εν η η η

ε ευ λο γου ου ου με ε εν Χρι ι στο ον εις

του ου ους αι αι αι ω ω ω ω να α α ας π<sup>9</sup>

# Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασίαι τοῦ Πάσχα  
ὥδῃ α'

Ἦχος 4̣ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.106\*

ΠΑ ΔΙ  
Α να στα α σε ως η με ε ε ρα  
ΠΑ ΔΙ  
λα αμ πρυ υ υν θω ω ω ω μεν λα α α οι  
ΠΑ ΔΙ  
Πα α α α σχα Κυ υ ρι ι ου ου ου Πα α α  
ΠΑ ΝΗ ΠΑ  
α σχα α α εκ γαρ θα να α του ου ου προς ζω  
ΠΑ ΔΙ  
ην και εκ γης προ ος ου ου ρα α α νο ον Χρι ι  
ΚΕ ΔΙ  
στο ο ο ο ος ο Θε ε ε ος η μα α α ας  
ΠΑ ΔΙ  
δι ι ε ε ε βι ι ι βα α α σεν ε ε  
ΜΕΛ ΠΑ  
πι ι νι ι ι κι ι ι ο ο ον α α α α α

δο ο ο ον τας π ρ

ὥδὴ γ'

Δ ΔΙ ΠΑ ΝΗ  
ε ευ τε ε πο μα α πι ι ω ω ω μεν και

νον Α ουκ εκ πε ε τρα ας α α γο ο ο ο νου Α

ΔΙ ΠΑ  
τε ε ε ε ρα του ουρ γου ου με ε νο ον Α αλλ

ΝΗ ΠΑ ΔΙ  
α φθαρ σι ι ι ι α ας πη γη η ην Α εκ

ΠΑ ΝΗ ΠΑ  
τα α φου ου ο ο ομ βρη η σα α αν τος Χρι στου Α χορὸς α'

ΝΗ ΠΑ  
ε ε εν ω ω ω στε ρε ε ου ου ου ου ου με ε ε ε

π ρ  
θα ὥδὴ δ'

ΝΗ ΠΑ ΜΕΛ ΝΗ ΠΑ  
Ε πι της θει ει ει ει ει α α ας φυ λα

ΔΙ ΠΑ ΜΕΛ  
κση Α ο ο ο ο θε η γο ο ρο ος Α αβ βα α



κου ου ου ου ουμ <sup>ΔΙ</sup>στη τω μεθ η η μω ω ω ων

και αι <sup>ΠΑ</sup>δει ει ει κνυ υ υ υ υ τω <sup>ΔΙ</sup>φα ε

<sup>ΔΙ</sup>σφο <sup>ΠΑ</sup>ο ρο ον α αγγε ε λον δι α α α πρυ υ

<sup>ΔΙ</sup>σι ι ω ω ως λε ε γο ον τα α <sup>ΠΑ</sup>ση η με ε ρον σω

<sup>ΠΑ</sup>τη ρι ι ι ι α α τω ω ω κο ο ο ο ο σμω

ο τι ι ι ι ι α α νε ε ε ε ε στη η Χρι ι ι

στο ο ος ως πα α αν το ο δυ υ υ υ υ να α α

α <sup>ΠΑ</sup>μοσ <sup>ΔΙ</sup> ᾠδὴ ε΄

**Ο** <sup>ΔΙ</sup>ρ <sup>ΠΑ</sup>θρι ι σω ω μεν <sup>ΔΙ</sup>ο ο ο ορ θρου ουου βα α

<sup>ΜΕΛ</sup>α <sup>ΠΑ</sup>θε ε ε ε ος <sup>ΠΑ</sup>και <sup>ΠΑ</sup>αν <sup>ΠΑ</sup>τι <sup>ΠΑ</sup>μυ υ υ υ υ ρου

ΔΙ ΠΑ  
τον υ υ υ υ υ μνο ον προσ οι οι οι οι σο ο με

εν τω ω ω Δε ε ε σπο ο ο ο τη και Χρι

στο ον ο φο ο με ε θα δι ι ι ι και

ΔΙ  
ο συ υ νη η ης η η λι ι ι ον πα α α

ΠΑ ΜΕΛ ΝΗ ΠΑ  
σι ι ζω ω ω ην α α α να α α τε ε ε

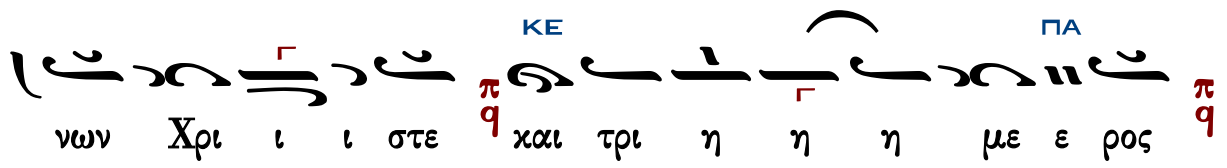
ε ελ λο ο ο ον τα π q ωδής'

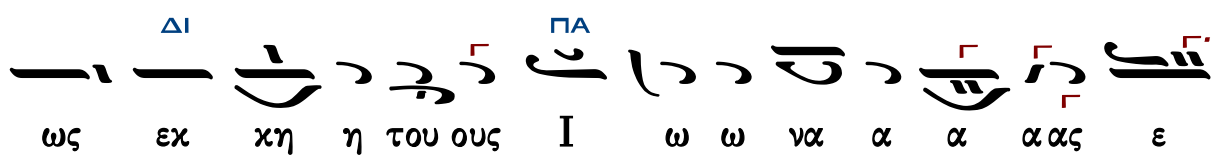
ΝΗ ΠΑ ΚΕ ΔΙ ΜΕΛ  
Κ α τη η ηλ θες εν τοις κα τω τα α α τοις της γης π q

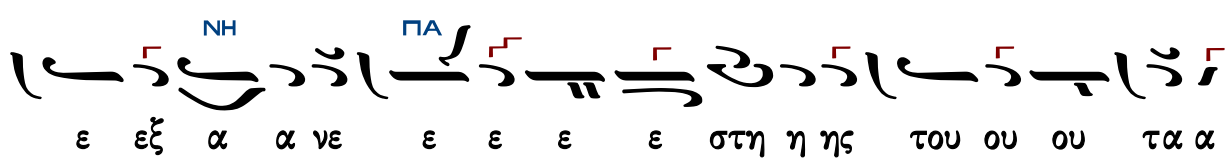
ΔΙ ΠΑ  
και συ υν ε ε ε τρι ι ι φας μο ο χλου ους

ΔΙ ΠΑ  
αι αι ω ω ω νι ι ι ι ου ου ους κα

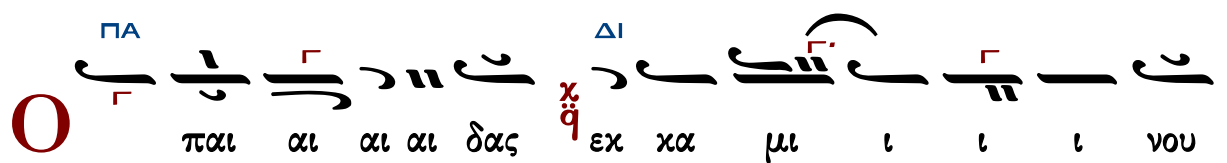
το ο ο χους πε πε ε ε δη η με ε ε ε ε

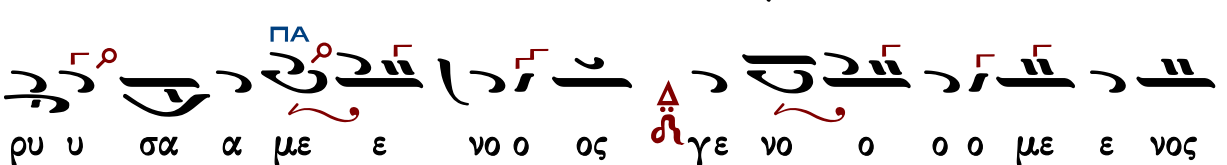

  
 νων Χρι ι ι στε <sup>ΚΕ</sup> και τρι η η η με ε ρος <sup>ΠΑ</sup>

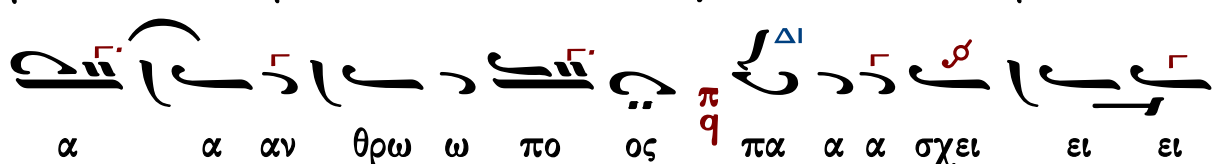

  
 ως εκ κη η του ους Ι ω ω να α α αας ε

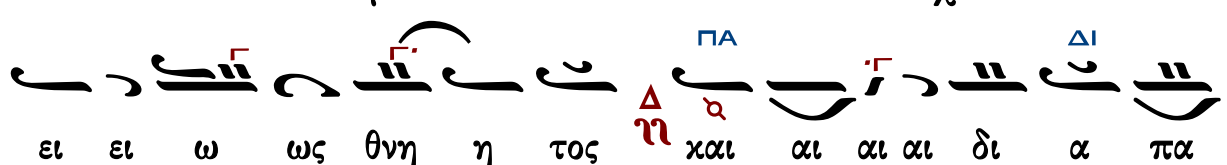

  
 ε εξ α α νε ε ε ε ε στη η ης του ου ου τα α

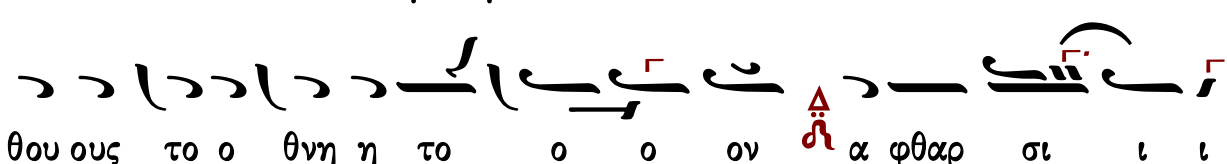

  
 α α φου

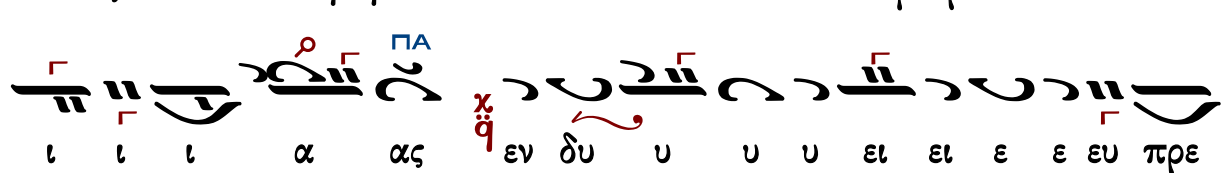

  
 Ο παι αι αι αι δας εκ κα μι ι ι ι νου


  
 ρυ υ σα α με ε νο ο ος γε νο ο ο ο με ε νος


  
 α α αν θρω ω πο ος πα α α σχει ει ει


  
 ει ει ω ως θνη η τος και αι αι αι δι α πα


  
 θου ους το ο θνη η το ο ο ον α φθαρ σι ι ι


  
 ι ι ι α ας εν δυ υ υ υ ει ει ε ε ευ πρε

ε πει ει α αν <sup>π</sup>ο μο ο ο ο ο νος ευ λο ο

γη η το ος τω ων πα α α τε ε ε ε ρω

ω ων <sup>ΠΑ</sup>Θε ο ο ος και αι αι υ υ υ πε ερ ε ε ε

ε εν δο ο ο ο ξος <sup>π</sup>ωδὴ ἡ'

<sup>ΠΑ</sup>Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου με

ε εν τον Κυ υ υ ρι ι ον <sup>Α</sup>

<sup>ΠΑ</sup>Α αυ τη η η κλη η η τη η η η και αι α

α γι ι α α η η η με ε ε ε ρα α

α <sup>Α</sup>η μι α των Σα αβ βα α α α α των <sup>Α</sup>η

βα σι λι ι ι ις και αι Κυ υ υ ρι ι ι ι

α <sup>π</sup> ε ε ορ των <sup>Δ</sup> ε ορ τη η η η και παν  
 η η η η η η γυ υ υ υ ρις <sup>ΠΑ</sup> ε στι ι ι  
 ι πα α αν η η η γυ υ ρε ε ω ν <sup>π</sup> εν η η η  
 η η η ε ε ευ λο γου ου ου με ε εν Χρι ι  
 στο ο ο ον ει εις του ουους αι αι αι ω ω ω ω  
<sup>ΜΕΛ</sup> να α α ας <sup>π</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασάι τοῦ Πάσχα  
ὥδῃ α΄

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>4</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.6\*

να στα α σε ως η με ε ρα λαμ πρυ  
 υ υν θω ω ω ω με εν λα α α οι <sup>Δ</sup> Πα α α α σχα

α Κυ ρι ου ου Πα α α σχα α  εκ γαρ

θα να α του προς ζω ω ην  \* και εκ γης προ

ος ου ου ρα νο ον Χρι ι στο ο ο ος ο

ο  ε ε ος  η μα α α ας δι ι ε ε ε

βι ι βα α α σεν  ε πι ι νι ι ι κι ο ον

α α α α δο ο ο ον τας  ἄλλη γραμμή

\*  και εκ γη ης προ ος ου ρα α α νο ον  Χρι στο

ο ος ο  η μα α α ας δι ι ε

ε ε βι ι βα α α σεν  ε πι ι νι ι ι ...

ὥδ' ἡ γ'

Δ ε ευ τε ε πο μα πι ι ω μεν και αι νον ουκ εκ

πε τρα ας α α γο ο ο νου τε ε ε ρα τουρ γου

ου με ε νο ον αλλ α φθαρ σι ι ι ας πη η γην

εκ τα α φου ομ βρη η σαν τος Χρι ι στου χορὸς α' ε

ε εν ω ω ω στε ρε ε ου ου ου ου με ε ε ε

θα π 9 ἄλλαι γραμμαὶ

\* 1 τε ρα τουρ γου με ε νο ον ...

\* 2 εκ τα φου ομ βρη η σαν τος Χρι ι στου π 9 χορὸς α' ε ..

ε 3 πι της θει ει ει ει α α ας φυ λα α ὥδη δ'

κῆς ο θε η γο ρο ος Α αβ βα α κου ου ου

ουμ στη τω μεθ η μω ω ων και αι δει κνυ υ υ υ υ

τω φα εσ φο ο ρο ον α αγ γε ε λον δι α

α α πρυ υ σι ι ω ως λε ε γο ο ον τα α

ση η με ε ρον σω τη ρι ι ι α α τω κο ο ο ο

ο σμω ο τι α α νε ε ε στη Χρι στο ος ως πα

αν το ο δυ υ υ υ να α α α μος

ἄλλη γραμμὴ

ο τι α νε ε ε στη Χρι ι στος ως πα αν το ο ...

ὥδ' ἐ'

Ο ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ου ου βα θε ε



ε ε ος <sup>π</sup> και αν τι μυ υ υ υ ρου τον υ υ υ

μνο ον <sup>Δ</sup> προς οι οι οι οι σο ο μεν τω ω Δε σπο ο ο

ο τη <sup>π</sup> και Χρι στο ον ο ψο ο με ε θα <sup>Δ</sup>

δι και ο συ υ νη η ης η η λι ι ι ον <sup>Δ</sup>

πα σι ι ζω ω ω ην α να α τε ε ε ελ λο ο

ο ον τα <sup>π</sup> ὠδὴς'

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις τη ης

γης <sup>π</sup> και συ υν ε τρι ι φας μο ο χλου ου ους αι αι

ω ω νι ι ι ουους <sup>Δ</sup> κα το ο χους πε πε

ε δη η με ε ε ε νω ων Χρι ι ι στε <sup>π</sup> και τρι ι

η με ε ρος \* π q ως εκ κη η τους Ι ω ω να ας ε

ε εξ α α νε ε ε ε στη η ης του τα α α α

φου π q

\* π q ἄλλη γραμμή ως εκ κη η του ους Ι ι ω ω ω

νας Δ εξ α νε ε ε ε ε στη η ης... ὠδὴ ζ'

Ο παι αι αι αι δας x q εκ κα μι ι ι νου ρυ σα

α με ε νο ος Δ γε νο ο ο ο με ε νο ος α αν

θρω ω ω πο ος π q πα α σχει ει ει ει ει

ω ως θνη η τος q Δ \* και αι αι δι ι α πα θου ους το

ο θνη η το ο ο ο ον Δ α φθαρ σι ι ι ι α ας x q

Ε Ε ΕΝ ΔΥ Υ Υ Υ ΕΙ ΕΙ Ε

Α ΑΝ Ο ΜΟ Ο Ο ΝΟΣ ΕΥ ΛΟ ΓΗ Η ΤΟ Ο ΟΣ

ΤΩ ΩΝ ΠΑ Α ΤΕ Ε Ε ΡΩΩΝ ΘΕ ΟΣ ΚΑΙ Υ

Υ ΠΕ ΕΡ Ε Ε Ε ΕΝ ΔΟ Ο Ο Ο ΞΟΣ

ΚΑΙ ΔΙ Α ΠΑ ΘΟΥ ΟΥΣ ΤΟ Ο ΘΝΗ Η ΤΟ Ο Ο Ο

ΟΝ

ΕΥ ΛΟ ΓΗ ΤΟ ΟΣ ΤΩΝ ΠΑ ΤΕ Ε ΡΩΩΝ ΘΕ Ε ΟΣ ΚΑΙ

Υ ...

Ι ΝΟΥ ΜΕΝ ΕΥ ΛΟ ΓΟΥ ΜΕΝ ΚΑΙ ΠΡΟΣ ΚΥ ΝΟΥ ΜΕ ΕΝ ΤΟΝ

ΚΥ ΡΙ Ι ΟΝ

αυ τη η η κλη η η τη η και αι α α

γι ι ι α α η η με ε ε ρα α η

μι α των σα αβ βα α α τω ων η βα σι ι λι

ι ις και αι αι κυ ρι ι ι ι α ε ο ορ

των ε ορ τη η η και αι πα νη η η η η γυ υ

υ υ υ ρις ε ε ε στι ι ι ι πα α νη η γυ υ

ρε ε ε ω ων εν η η η ε ευ λο ο γου ου

ου με ε εν Χρι ι στο ον εις του ου ους αι ω

ω ω ω νας

η βα σι λι ι ι ι ις και αι αι

κυ ρι ι ι ι α π ε ορ τω ω ω ω ων

ε ε ο ορ τη και πα νη η γυ υ ρις ε στι ι ι

πα α νη η γυ υ ρε ε ε ω ων εν η η η

ε ευ λο γου ου ου ου με εν Χρι ι ι στο ον εις

του ουους αι ω ω ω ω νας π

## ὁδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἤχος α'

«Σὲ τὴν φαεινὴν λαμπάδα, καὶ Μητέρα Θεοῦ, τὴν ἀρίζηλον δόξαν καὶ ἀνωτέραν πάντων τῶν ποιημάτων ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν». (β')

Δόξα τῇ ἁγίᾳ Ἀναστάσει σου Κύριε.

Σοῦ τὴν φαεινὴν ἡμέραν, καὶ ὑπέρλαμπρον Χριστὲ τὴν δλόφωτον χάριν, ἐν ᾗ ὥραϊος κάλλει τοῖς μαθηταῖς σου, ἐπέστης μεγαλύνομεν. (β')

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Σὲ τὸν χοϊκῇ παλάμῃ, ψηλαφώμενον πλευράν, καὶ μὴ φλέξαντα ταύτην, πυρὶ τῷ τῆς αἵου θείας οὐσίας, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Σὲ τὸν ὡς Θεὸν ἐκ τάφου, ἀναστάντα Χριστόν, οὐ βλεφάροις ἰδόντες, ἀλλὰ καρδίας πόθῳ πεπιστευκότες, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος 4̣ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.382#

ε την φα ει νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του

Θε ου την α ρι ζη λον δο ξαν και α νω τε ραν

πα α αν των των ποι η μα α των εν υ μνοις με γα λυ

υ νο ο μεν (β')

Δ ο ξα τη α γι α α να στα σεις σου Κυ ρι ε

ου την φα ει νην η με ε ραν και υ περ λαμ προν

Χρι στε την ο λο φω τον χα ριν εν η ω ραι ος

κα αλ λει τοις μα θη ται αις σου ε πε στης με γα λυ

υ νο ο μεν  (β')

Δόξα τῇ ἁγίᾳ Ἀναστάσει σου Κύριε.

Σὲ τὸν χοῖκῃ παλάμῃ, ψηλαφώμενον πλευράν, καὶ μὴ φλέξαντα ταύτην, πυρὶ τῷ τῆς αὐτοῦ  
θείας οὐσίας, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Δόξα τῇ ἁγίᾳ Ἀναστάσει σου Κύριε.

Σὲ τὸν ὡς Θεὸν ἐκ τάφου, ἀναστάντα Χριστόν, οὐ βλεφάροις ἰδόντες, ἀλλὰ καρδίας πόθῳ  
πεπιστευκότες, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

## Γαβριὴλ Κουντιάδου

ὥδῃ θ'

Ἦχος  Πα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.148\*

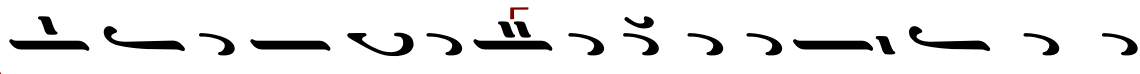
   
C ε την φα ει νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του Θε ου 

  
την α ρι ζη λον δο ξαν και α νω τε ραν παν των

   (β')  
των ποι η μα α των εν υ μνοις μεγα λυ υ νο μεν

   
Δ ο ξα τη α γι α α να στα σει σου Κυ ρι ε

   
C ου την φα ει νην η με ε ραν και υ περ λαμ προν Χρι

στε την ο λο φω τον χα ριν εν η ω ραι ος

καλ λει τοις μα θη ται αις σου ε πε στης με γα λυ υ νο

μεν (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι

ε τον χο ι κη πα λα α μη ψη λα φω με νον πλευ

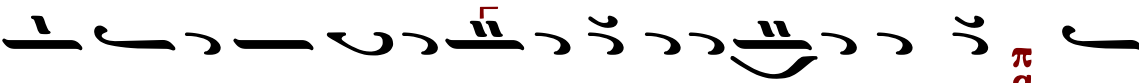
ραν και μη φλε ξαν τα ταυ την πυ ρι τω της α υ

λου θει ας ου σι ι ας εν υ μνοις με γα λυ υ νο μεν

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην




**C** ε τον ως Θε ον εκ τα α φου α να σταν τα Χρι στον <sup>π</sup><sub>9</sub> ου  
 βλε φα ροις ι δον τες αλ λα καρ δι ας πο θω πε πι  
 στευ κο ο τες <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> εν υ μνοις μεγα λυ υ νο μεν <sup>π</sup><sub>9</sub>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὁδὴ θ'

Ἦχος <sup>Λ</sup><sub>9</sub> Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.112\*

<sup>ΠΑ</sup>  
**C** ε την φα ει νην λαμ πα α δα <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> και μη τε ρα του Θε  
 ου <sup>π</sup><sub>9</sub> την α ρι ζη λον δο ξαν <sup>π</sup><sub>9</sub> και α νω τε ραν  
 πα αν των των ποι η μα α των <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> εν η μνοις με γα  
<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
 λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup><sub>9</sub> (β')


**Δ** ο ξα τη α γι α α να στα σει σου Κυ ρι ε <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub>

π ρ

ΠΑ  
C ου ου την φα ει νην η με ε ραν Δ και υ περ λαμ

π ρ την ο λο φω τον χα ριν π ρ εν η ω

ραι ος καλ λει τοις Μα θη ται αις σου Δ ε πε στης με

ΝΗ ΠΑ  
γα λυ υ νο μεν π ρ (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι Δ π ρ

ΠΑ  
C ε τον χο ι κη πα λα α μη η η ψη λα φω μενον

π ρ και μη φλε ξαν τα ταυ την π ρ πυ ρι τω της α

υ υ λου θει ας ου σι ι ας Δ εν υ μνοις με γα

ΝΗ ΠΑ  
λυ υ νο μεν π q

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην Δ π q

ΠΑ C ε τον ως Θε ον εκ τα α φου ου ου α να στα αν

τα Χρι στον π q ου βλε φα ροις ι δον τες π q αλ λα καρ δι

α ς πο θω πε πι στευ κο ο τε ς Δ εν υ μνοις με γα λυ ΝΗ

ΠΑ π q  
υ νο μεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὁ εἰρμὸς  
ᾧ δὴ θ'

Ἦχος ♯ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.172\*

C ε την φα ει νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του Θε

ου <sup>π ρ</sup> την α ρι ζη λον δο ξαν <sup>π ρ</sup> και α νω τε ραν

παν των των ποι η μα α των <sup>Δ ρ</sup> εν υ μνοις μεγα λυ υ

νο ο μεν <sup>π ρ</sup> (β')

Δ ο ξα τη α γι α Α να στα σει σου Κυ ρι ε <sup>Δ ρ</sup>

ου <sup>♀</sup> την φα ει νην η με ε ραν και υ περ λαμ προν

Χρι στε <sup>π ρ</sup> την ο λο φω τον χα ριν <sup>π ρ</sup> εν η ω ραι

ος καλ λει τοις μα θη ταις σου ε πε ε στης <sup>Δ ρ</sup> με γα λυ

υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup> (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>Δ ρ</sup>

**C** ε τον χο ι κη πα λα α μη ψη λα φω μενον πλευ

ραν <sup>π q</sup> και μη φλε ξαν τα ταυ την <sup>π q</sup> πυ ρι τω της α

υ λου θει ας ου σι ι ας <sup>Δ</sup> εν υ μνοις μεγα λυ

υ νο ο <sup>π q</sup> μεν

**K** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην <sup>Δ</sup>

**C** ε τον ως Θε ον εκ τα α φου α να στα αν τα Χρι

στον <sup>π q</sup> ου βλε φα ροις ι δον τες <sup>π q</sup> αλ λα καρ δι ας

πο θω πε πι στευ κο ο τες <sup>Δ</sup> εν υ μνοις μεγα λυ υ νο ο

μεν <sup>π q</sup>

Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Ὁ ἄγγελος ἐβόα τῇ κεχαριτωμένῃ·

Ἄγνη Παρθέने, χαῖρε, καὶ πάλιν ἔρω· Χαῖρε· ὁ σὸς Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Φωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν, καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἄγνη, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

|          |                             |      |
|----------|-----------------------------|------|
| Σύντομος | ✚ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ✚     | Ἀργή |
| Σύντομος | ✚ Γαβριὴλ Κουντιάδου ✚      | Ἀργή |
| Σύντομος | ✚ Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου ✚ | Ἀργή |
| Σύντομος | ✚ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ✚ | Ἀργή |

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.377#

φδῆ θ'

Ο αγ γε λος ε βο ο α τη κε χα ρι τω με ε  
νη α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι  
αι ρε ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η μερος εκ  
τα φου π ρ

Φ ω τι ζου φω τι ι ι ζου η νε α Ι ε ρου σα  
 λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π</sup>η  
 χο ρευ ε νυ υ υν και α γαλ λου Σι ων <sup>Δ</sup> σου υ δε α γνη η  
 τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο  
 κου ου σου <sup>π</sup>η σου ου ου ου <sup>π</sup>η

Γαβριήλ Κουντιάδου

ῥοδὴ θ' Ἦχος <sup>4</sup>η Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 ἐπανεκδόσις 1991 σ.28\*

Ο <sup>χ</sup> α γ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με  
 ε νη <sup>Δ</sup> α γνη Παρ θε νε χαι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι  
 ρε <sup>Δ</sup> ο σος Υι ος α νε στη τρι η με ρος εκ τα

φου <sup>π  
9</sup>

Φ <sup>χ</sup> ω τι ζου φω τι ζου <sup>π  
9</sup> η νε α I ε ρου σα

λημ <sup>Δ  
Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π  
9</sup>

χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων <sup>Δ  
Δ</sup> συ δε Α γνη η η

τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ  
Δ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο

κου ου <sup>Γ</sup> σου <sup>π  
9</sup>

\* σου ου ου ου <sup>π  
9</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδ' ἔθ'

Ἦχος <sup>Λ</sup><sub>9</sub> Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.9\*

ΠΑ  
Ο Αγ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με  
ΔΙ ΠΑ  
ε νη <sup>Δ  
Δ</sup> α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι



ρε <sup>Δ</sup> ο σος <sup>ΝΗ ΠΑ</sup> Υι ος α νε ε στητρι η με ρος εκ τα <sup>ΝΗ</sup>  
 φου <sup>ΠΑ</sup> <sup>π</sup> <sup>q</sup>  
 Φ <sup>ΜΕΛ</sup> ω τι ζου φω τι ζου <sup>ΠΑ</sup> η νε α Ι ε ρου σα <sup>π</sup> <sup>q</sup>  
 λημ <sup>Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ου ου ε πι σε α νε  
 τει λε <sup>π</sup> <sup>q</sup> χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων <sup>Δ</sup> <sup>π</sup> <sup>q</sup> συ υ δε Α  
 γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ</sup> εν τη ε γερ σει  
 του το ο <sup>ΝΗ ΠΑ</sup> <sup>π</sup> <sup>q</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>π</sup> <sup>q</sup> <sup>χ</sup> <sup>χ</sup> σου ου ου ου <sup>π</sup> <sup>q</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ' Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>q</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.20#

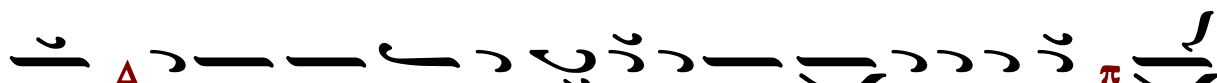
Ο <sup>χ</sup> <sup>π</sup> <sup>q</sup> α γ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με

«»  
ε νη  α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω ω

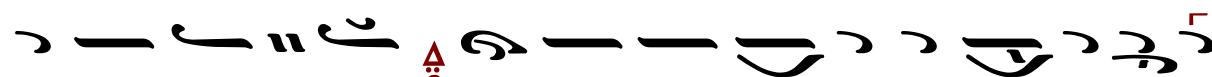
  
χαι αι ρε  ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η με ρος εκ

  
τα φου 

  
  ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

  
λημ  η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε  χο

  
ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων  συ υ δε α γνη η τερ που

  
Θε ο το ο κε  εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

  
σου 

Ἄεγν

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ θ'

Ἦχος  Πά

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.25#

Ο Α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο α α

τη η Κε ε χα ρι ι τω ω με ε ε νη η

Α γνη η Πα αρ θε ε νε ε χαι αι αι αι ρε ε και αι πα

λι ιν ε ε ε ρω χαι αι αι ρε ε ο σο ος

Υι ο ος α νε ε ε στη η η τρι ι η η με

ρο ο ος εκ τα α α α α φου

Φ ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ζου ου η νε

ε ε α α Ι ι ε ε ρου ου σα α α λη ημ

η γαρ δο ο ξα Κυ ρι ι ι ου ου ου ου ου ε ε

πι ι σε ε α α νε ε ε τει ει λε ε χο ο

  
ο ρε ευ ε ε νυ υ υ υν και αι α γα α α α αλ  
  
λου ου Σι ι ι ων  συ υ υ υ δε ε Α α α  
  
γνη η η η τε ερ που Θε ε ο ο το ο ο  
  
κε ε  εν τη η ε ε γερ σει του ου το ο ο ο ο  
  
κου ου ου ου σου ου ου ου 

Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος  Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.149\*

  
**Ο** α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο α α τη η  
  
Κε ε χα ρι ι τω ω με ε ε νη η  α  
  
α γνη η Πα αρ θε ε νε ε χαι αι αι αι αι ρε ε και αι πα

λι ιν ε ε ε ρω χαι αι αι ρε ε ο σο ος

Υι υι ο ος α α νε ε ε ε στη η τρι ι ι η η

η η με ρο ο ος ε ε εκ τα α α α α

φου π q

Φ ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ζου ου η νε

ε ε α α Ι ι ε ε ε ρου ου σα α α λη

ημ η γαρ δο ο ξα Κυ ρι ι ι ου ου ου ου ου

ε ε πι ι σε ε α α α νε ε ε τει ει λε ε

χο ο ο ρε ευ ε ε νυ υ υ υν και αι α γα α

α α αλ λου ου Σι ι ι ων συ υ υ υ υ

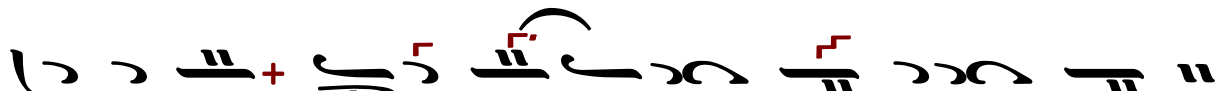
  
 δε ε α α α γνη η η η τε ερ που Θε ε ο  
  
 ο το ο ο κε ε εν τη η Ε ε γε ε ερ σει  
  
 του ου το ο ο ο ο κου ου ου ου σου ου ου ου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδῃ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.39#

ΠΑ  
 Ο α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο ο α α  
  
 τη η Κε χα α ρι ι τω ω ω με ε ε  
  
 ε νη η η α γνη η Πα α αρ θε ε νε ε χαι αι  
  
 αι αι ρε ε και αι πα λιν ε ρω ω χαι αι αι  
  
 αι ρε ε ε ο σο ος Υι υι ο ος α νε ε  


ε ε στη η τρι ι ι η η η η με ε ρο ος

ε ε εκ τα α α α φου

Φ ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ι ι ζου ου η

νε ε α α Ι ι ε ε ε ρου ου ου σα α

λη ημ η γαρ δο ο ξα Κυ ρι ι ι ι ι

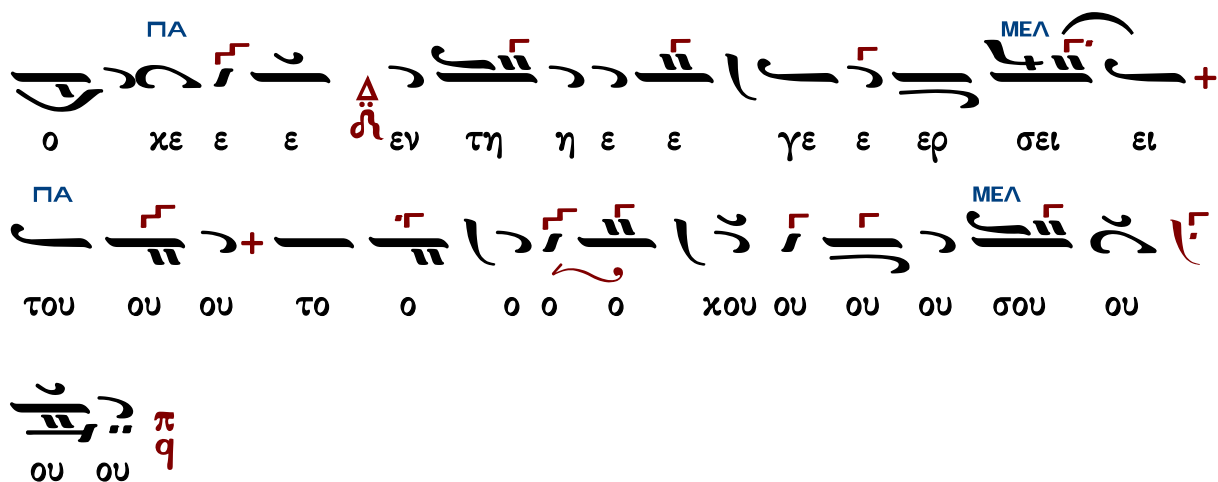
ου ου ου ου ε ε πι ι σε ε ε α α α νε ε

τει ει λε ε χο ο ο ο ο ρε ε ευ ε

ε νυ υ υ υν και α γα α α α α αλ λου Σι

ι ι ων συ υ υ υ υ δε ε α α α γνη

η η η τερ που ου Θε ε ο ο ο το ο ο ο

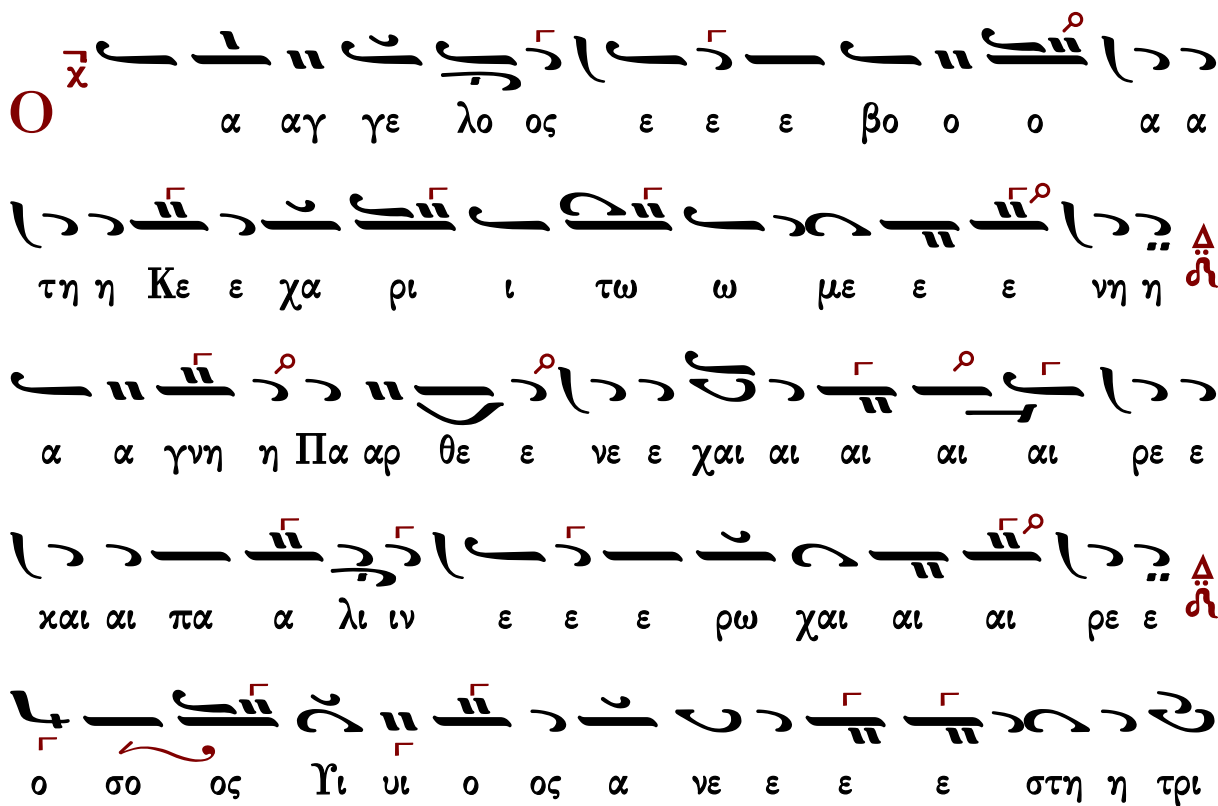


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὡδὴ θ'

Ἦχος ♯̣ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.19#





ι ι η η η η με ρο ος εκ τα α α α α φου π<sup>q</sup>

Φ ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ζου ου η νε ε α

α Ι ι ε ε ρου ου σα α α λη ημ η γαρ δο π<sup>q</sup>

ο ξα Κυ ρι ι ι ου ου ου ου ου ε ε πι ι σε ε

α α νε ε ε τει ει λε ε χο ο ο ρε ευ π<sup>q</sup>

ε ε νυ υ υ υν και αι α γα α α α λ λου

ου Σι ι ι ων συ υ υ υ δε ε Α α α γνη

η η η τε ερ που Θε ε ο ο το ο ο κε

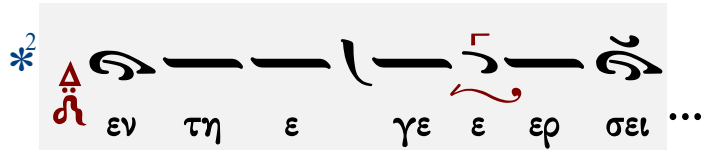
ε εν τη η ε ε γε ε ερ σει του ου το ο ο

ο κου ου ου ου σου π<sup>q</sup>

ἄλλαι γραμμαὶ

\*<sup>1</sup>    
 χο ο ο ρε ε ευ ε ε νυ υ υν και α γα

   
 α ...

\*<sup>2</sup>    
 εν τη ε γε ε ερ σει ...

## Τῆς Μεσοπεντηκοστῆς

ἦχος πλ.δ'

- α **Θ**άλασσαν ἔπηξας, βυθίσας σὺν ἄρμασι τὸν ἀλαζόνα Φαραὼ καὶ λαὸν διέσωσας ἀβρόχως Κύριε, καὶ εἰσήγαγες αὐτοὺς εἰς ὄρος ἀγιάσματος, βοῶντας· Ἄσωμέν σοι τῷ Θεῷ ἡμῶν, ᾧδὴν ἐπινίκιον, τῷ ἐν πολέμοις κραταιῷ.
- γ **Ἑ**στερεώθη ἡ καρδιά μου ἐν Κυρίῳ, ὑψώθη κέρας μου ἐν Θεῷ μου, ἐπλατύνθη ἐπ' ἐχθρούς μου τὸ στόμα μου, εὐφράνθη ἐν σωτηρίῳ σου.
- δ **Ὁ** προφῆτης Ἀββακούμ, τοῖς νοεροῖς ὀφθαλμοῖς προεώρα Κύριε, τὴν παρουσίαν σου· διὸ καὶ ἀνέκραζεν· ἀπὸ Θαιμὰν ἦξει ὁ Θεός· Δόξα τῇ δόξῃ σου Χριστέ, δόξα τῇ συγκαταβάσει σου.
- ε **Κ**ύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, εἰρήνην δὸς ἡμῖν, Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, κτῆσαι ἡμᾶς, Κύριε, ἐκτὸς σοῦ ἄλλον οὐκ οἶδαμεν τὸ ὄνομά σου ὀνομάζομεν.
- ς **Ὡ**ς ὕδατα θαλάσσης φιλάνθρωπε, τὰ κύματα τοῦ βίου χειμάζει με· διό, ὡς Ἰωνᾶ σοι κραυγάζω Λόγε· ἀνάγαγε ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου, εὐσπλαγχνε Κύριε.
- ζ **Τ**ῶν Χαλδαίων ἡ κάμινος, πυρὶ φλογιζομένη, ἐδροσίζετο πνεύματι, Θεοῦ ἐπιστασία, οἱ Παῖδες ὑπέψαλλον· Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἄ**γγελοι καὶ οὐρανοὶ τὸν ἐπὶ θρόνου δόξης ἐποχούμενον, καὶ ὡς Θεὸν ἀπαύστως δοξαζομενον, εὐλογεῖτε, ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

☞ Σύντομοι ☞

Γαβριὴλ Κουντιάδου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾧδὴ α'

ἦχος λ π ς Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.396#

Θ α α λ α σ σ α ν ε π η ξ α σ β υ θ ι σ α σ σ υ ν α ρ μ α σ ι τ ο ν

α λα ζο να Φα ρα ω <sup>ν</sup> και λα ον δι ε σω σας

α βρο χως Κυ ρι ε <sup>6</sup> και εισ η γα γες αυ τους εις

ο ρος α γι α σμα τος βο ων τας <sup>Δ</sup> α σω μεν σοι τω

Θε ω η η μων <sup>Δ</sup> ω δη η η ην ε πι νι κι ον τω εν πο

λε μοις κρα ται ω <sup>6</sup> <sup>ν</sup> ὠδὴ γ'

Ε στε ρε ω θη η καρ δι ι α μου εν Κυ

ρι ι ω υ ψω θη κε ρας μου εν Θε ω ω μου <sup>ν</sup> ε

πλα τυν θη επ ε χθρου ους μου το στο μα μου <sup>ο</sup> χορὸς α' ευ φραν θην

εν σω τη ρι ω ω σου <sup>ν</sup> ὠδὴ δ'

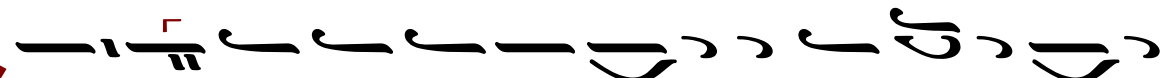
Ο προ φη της Αβ βα κουμ τοις νο ε ροι οις ο

φθαλμοῖς  προεωρα Κυριε την πααρουσιαν σου 

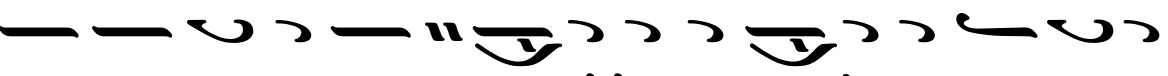
διο και ανεκραζεν απο Θαιμαν ηξει ο Θε 

ος  δοξατη δοξηςου Χριστε  δοξατη συγκατα 

βασει σου    

**Κ**υριε ο Θεος ημων ειρηνηνδος η 

μιν Κυριε ο Θεος ημων κτησαι ημας   

ριε εκτος σου ααα αλλον ουκ οιδαμεν το νο 

μα σου ο νομα ζοομεν    

**Ω**ς υδατα θαλασσης φιλανθρωπετα κυματα του 

βου χειμαζει με     

γα ζω Λο ο γε α να α γα γε εκ φθο ρας την ζω ην

μου ε ευσπλαγ χνε Κυ ρι ι ε <sup>ν</sup> <sub>α</sub> ᾠδὴ ζ'

**T**ων Χαλ δαι αι ων η κα μι νος πυ ρι φλο γι ζο

με ε νη <sup>Δ</sup> <sub>α</sub> ε δρο σι ι ζε το Πνευ μα τι Θε ου ε πι στα

σι ι α <sup>ν</sup> <sub>α</sub> οι παι αι δεσ υ πε ψα αλ ον ευ λο γη

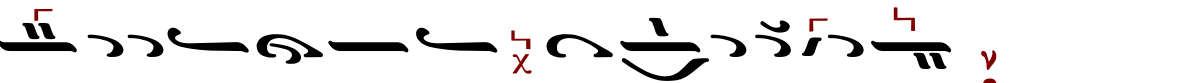
τος ει ο Θε ος ο των πα τε ρων η μων <sup>ν</sup> <sub>α</sub> ᾠδὴ η'

**A** <sup>χ</sup> <sub>α</sub> ι νου μεν ευ λο <sup>ρ</sup> <sub>α</sub> γου μεν και προσ κυ νου ου με εν

τον Κυ ρι ον <sup>ν</sup> <sub>α</sub>

**A** γ γε λοι και ου ρα νοι τον ε πι θρο νου δο ξης ε

πο χου με νον και ως Θε ον α παυ στως δο ο <sup>ρ</sup> <sub>α</sub> ξα ζο με

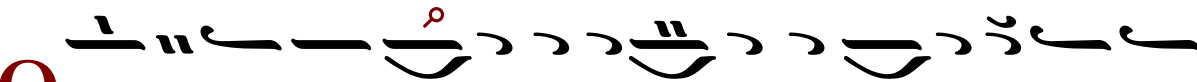
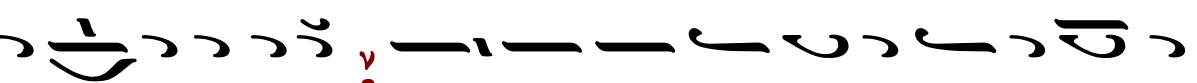
  
 νον <sup>γ</sup> ευ λο γει τε υ μνει ει τε ε και υ περ υ  
  
 ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω να α α ας <sup>γ</sup>

Γαβριήλ Κουντιάδου

ὥδῃ α'

Ἦχος λ π ς Νη

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.249\*

  
 Θ α α λασ σαν ε πηξας βυ θι σας συν αρ μα σι τον α  
  
 λα ζο να Φα ρα ω <sup>γ</sup> και λα ον δι ε σω σας α βρο χως  
  
 Κυ ρι ε <sup>6</sup> και εις η γα γες αυ τους εις ο ρος α γι  
  
 α σμα τος βο ων τος <sup>Δ</sup> α σω μεν σοι τω Θε ω η η  
  
 μων <sup>Δ</sup> ω δην ε πι νι κι ον τω εν πο λε μοις κρα ται ω <sup>γ</sup>

ὥδῃ γ'

  
 Ε στε ρε ω θη η καρ δι ι α μου εν Κυ

ρι ω  υ ψω θη κε ε ε ρας μου εν Θε ω

μου  ε πλα τυν θη επ ε χθρου ους μου το στο μα μου 

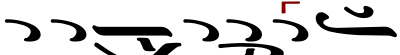
  χορὸς α'  ρι ω ω σου  ὥδῃ δ'

 **Ο** προ φη της Αβ βα κουμ τοις νο ε ροι οis

 ο φθαλ μοis  προ ε ω ρα Κυ ρι ε την πα α ρου σι αν

 σου  δι ο ο και α νε κρα α ζεν  α πο Θαι μαν η

 ξει ο Θε ος δο ξα τη δο ξη σου Χρι στε  δο ξα τη οι

  κο νο μι ι α α σου  ὥδῃ ε'

 **Κ** υ υ ρι ε ο Θε ος η μων ει ρη νην δος η

  μιν  Κυ υ ρι ε ο Θε ος η μω ων κτη σαι η μας 



Κυ ρι ε ε κτος σου αλ λον ουκ οι δαμεν  το ο νο μα

σου ο νο μα α ζο ο μεν 

ὠδὴ ς'

ω ς υ δα τα θα λασ σης φι λαν θρω πε τα κυ μα τα του

βι ι ου χει μα ζει με  δι ο ως Ι ω νας

σοι κραυ γα ζω Λο ο γε  α να γα γε εκ φθο ρας την

ζω ην μου ε ευσπλαγ χνε Κυ υ ρι ι ε 

ὠδὴ ζ'

Τ ων Χαλ δαι αι ων η κα μι νος πυ ρι φλο γι ζο

με ε νη  ε δρο σι ζε το πνευ μα τι Θε ου ε πι στα σι

α  οι παι αι δες υ πε ψα λλον ευ λο γη το ος ο

Θε ος ο των πα τε ρων η μων 

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου με εν  
 τον Κυ ρι ον  
 Α γ γε λοι και ου ρα νοι τον ε πι θρο νου δο ξης ε  
 πο χου με νον και ως Θε ον α παυ στως δο ο ξα ζο μεν  
 ον ευ λο γει τε υ μνει ει τε και υ περ υ ψου ου  
 τε εις παν τας τους αι ω να α α ας

### Θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

καὶνὸν α'

ἦχος δ'

«**Α**ίθος ἀχειρότμητος ὄρους, ἐξ ἀλαξεύτου σου Παρθένε, ἀκρογωνιαῖος ἐτμήθη, Χριστὸς συνάψας τὰς διεσπῶσας φύσεις· διὸ ἐπαγαλλόμενοι, σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν.»

**Ν**έαν καὶ καινὴν πολιτείαν, παρὰ Χριστοῦ μεμαθηκότες ταύτην μέχρι τέλους φυλάττειν διαφερόντως πάντες, σπουδάσωμεν, ὅπως ἁγίου Πνεύματος, τὴν παρουσίαν ἀπολαύσωμεν.

**Σ**ύ μου τὸ θνητὸν Ζωοδότα, περιβολὴν ἀθανασίας, καὶ τῆς ἀφθαρσίας τὴν χάριν, ἐνδύσας Σῶτερ συνεχᾶνέστησας, καὶ τῷ Πατρὶ προσήγαγες τὸν χρόνιόν μου λύσας πόλεμον.

Εἰς τὴν ἐπουράνιον πάλιν, διαγωγὴν ἀνακληθέντες, τῇ τῆς μεσιτείας δυνάμει, τοῦ κενωθέντος μέχρι καὶ δούλου μορφῆς καὶ ἡμᾶς ἀνυψώσαντος, τοῦτον ἀξίως μεγαλύνωμεν.

Ὡς ῥίζαν, πηγὴν καὶ αἰτίαν, τῆς ἀφθαρσίας σε Παρθένε πάντες οἱ πιστοὶ πεπεισμένοι, ταῖς εὐφημίαις καταγεραίρομεν· σὺ γὰρ τὴν ἐνυπόστατον, ἀθανασίαν ἡμῖν ἔβλυσας.

κανὼν β΄. Ἀλλότριον τῶν μητέρων ἦχος πλ.δ΄

Τῆς ἐορτῆς μεσαζούσης τῶν Ἰουδαίων, ἀνῆλθες ὁ Σωτὴρ μου ἐπὶ τὸ ἱερόν σου, καὶ ἐδίδασκες πάντας, ἐθαύμαζον δὲ Ἰουδαῖοι, καὶ πόθεν οὗτος οἶδε γράμματα, μὴ μεμαθηκώς; ἔλεγον.

Ἰάματα χαρισμάτων ὁ λυτρωτὴς μου πηγάζων ἐπετέλει τέρατα καὶ σημεῖα, φυγαδεύων τὰς νόσους, ἰώμενος τοὺς ἀσθενοῦντας, ἀλλ' Ἰουδαῖοι ἐξεμαίνοντο, τῷ πλήθει τῶν θαυμάτων αὐτοῦ.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἀλλότριον τοῖς ἀνόμοις ἐστὶ τὸ σέβειν, τὴν ἀναρχὸν Τριάδα Πατέρα καὶ Υἱόν τε, καὶ τὸ ἅγιον Πνεῦμα, τὴν ἀκτιστὸν παντοκρατορίαν, δι' ἧς ὁ σύμπας κόσμος ἡδραστai, τῷ κράτει τῆς ἰσχύος αὐτῆς.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἐχώρησας ἐν γαστρὶ σου Παρθενομῆτορ, τὸν ἕνα τῆς Τριάδος, Χριστὸν τὸν Ζωοδότην ὃν ὑμνεῖ πᾶσα κτίσις, καὶ τρέμουσιν οἱ ἄνω θρόνοι. Αὐτὸν δυσώπει παμμακάριστε, σωθῆναι τὰς ψυχὰς ἡμῶν.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κανὼν α΄, ᾠδὴ θ΄

Ἦχος δὲ ϞϞ ΒϞ

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.251\*

ὁ εἶρμός

Λ ι θος α χει ρο ο τμη τος ο ρους εξ α λα ξευ

του σου Παρ θε νε <sup>6</sup>α κρο γω νι αι ος ε τμη θη Χρι

στος συν α α ψας τας δι ε στω σας φυ σεις <sup>6</sup>δι

ο ε πα γαλ λο μενοι σε Θε ο το κεμε γα λυ νομεν <sup>6</sup>

**Ν** ε αν και και νηην πο λι τει αν πα ρα Χρι στου

μεμα θη κο τες <sup>6</sup>ταυ την με χρι τε λους φυ λατ τειν δι

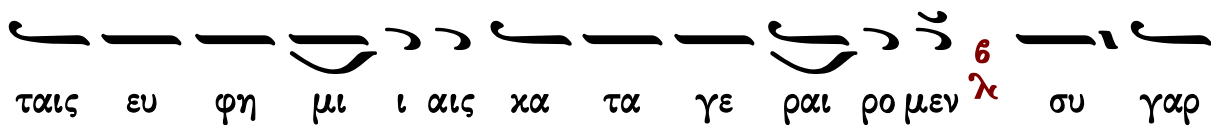
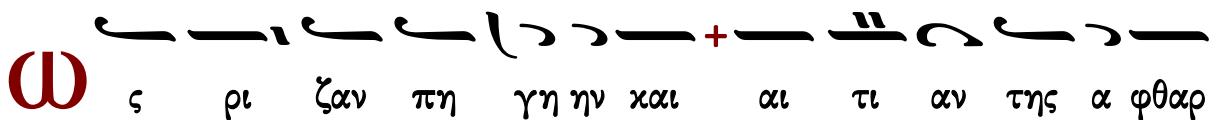
α φε ρον τως πα αν τες σπου δα σω μεν <sup>6</sup>ο πως α

γι ου Πνευματος την πα ρου σι αν α πο λαυ σωμεν <sup>6</sup>

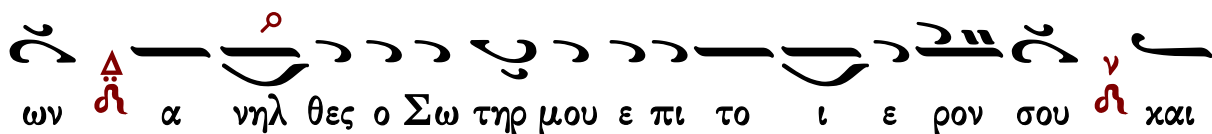
**Σ** υ μου το θνη το ον Ζω ο δο τα πε ρι βο λην

α θα να σι <sup>6</sup>ας και της α φθαρ σι ας την χα ριν εν

δυ σας Σω ω τερ συν εξ α νε στη σας <sup>6</sup>και τω Πα



Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' έκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.253\*



οι και ποθεν ουτος οι δε γραμμαατα μη μεμαθηκως

ελεγον

αμαατα χαρισμαατων ολυτρωτης μου

πηγαζων επετειλετα καισημεια

γαδευωντας νοσους ιωμενοσ τους ασθενου

ου ουντας αλλ ουδαιοι εξεμαινοντοτω

πληθειτωνθαυματων αυτου

ο οξα πατρι και υιω και αγιω

πνευματι

αλλοτριον τοις ανομοις εστι το σεβειν

την <sup>ρ</sup>α ναρχον Τρι α δα Πα τε ρα και Υι ον τε <sup>ν</sup>και

το α γι ον Πνε ευ μα την α κτι στον παν το κρα το ρι

αν <sup>Δ</sup>δι ης ο συμ πας κο σμος η δρα α σται τω κρα τει

της ι σχυ υ ος αυ της <sup>ν</sup>

**Κ** αι <sup>ρ</sup>νυ υν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην <sup>ν</sup>

**Ε** χω ρη η σας εν γα στρι ι σου Παρ θε νο μη

τορ <sup>Δ</sup>τον ε να της Τρι α δος Χρι στον τον ζω ο δο την <sup>ν</sup>

ον υ μνει πα σα κτι ι σις και τρε μου σιν οι α

νω θρο νοι <sup>Δ</sup>αυ τον δυσ ω πει παμ μα κα ρι ι στε σω

θη ναι τας ψυ χα ας η η μων <sup>ν</sup>δ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανὼν α', ψδὴ θ'

ὁ εἰρμὸς

Ἦχος <sup>4</sup>δ̣ Bx

πρωτ.Κων.Παπαγιάννης  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.286/300#

<sup>Γ</sup>ρ ι θος α χει ρο ο τμη τος ο ο ρους εξ α λα

ξευ του σου Παρ θε νε <sup>6</sup>λ α κρο γω νι αι ος ε τμη

η <sup>π</sup>9 Χρι στος συν α α ψας τας δι ε στω σας φυ

σεις <sup>6</sup>λ δι ο ε πα γαλ λο μενοι σε ε Θε ο το κε με γα

λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

<sup>Γ</sup>ρ ε αν και και νη ην πο λι τει ει αν πα ρα Χρι

στου με μα θη κο τες <sup>6</sup>λ ταυ την με χρι τε λους φυ λατ τειν <sup>π</sup>9



δι α φε ρον τως πα αν τες σπου δα σω μεν ο πως

α γι ου Πνευματος την πα ρου σι αν α πο λαυ σω μεν

Ε ις την ε που ρα νι ον πα α λιν δι α γω γην α

να κλη θεν τες τη της με σι τει ας δυ να μει του

κε νω θεν τος με χρι και δου λου μορφης και η μα ας

α νυ ψω σαν τος του ου τον α ξι ως μεγα λυ νω μεν

Ω ς ρι ζαν πη γην και αι τι ι αν της α φθαρ

σι ας σε Παρ θε νε παν τες οι πι στοι πε πει σμε

νοι ταις ευ φη μι αις κα τα γε ραι ρο μεν συ γαρ

την εν υ πο στα τον α θα να σι αν η μιν ε βλυ σας

Ἀλλότριον τῶν μητέρων

ᾠχος λ π ρ Νη

πρωτ. Κων. Παπαγιάννης  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.287/301#

Τ<sup>ϛ</sup> ης ε ορ της με σα ζου ου σης των Ι ου δαι  
αι ων<sup>Δ</sup> α νηλ θες ο Σω τηρ μου ε πι το ι ε ρον σου<sup>ν</sup>  
και ε δι δα σκες παν τας<sup>Δ</sup> ε θαυ μαζον δε Ι ου δαι  
αι οι<sup>Δ</sup> και πο θεν ου τος οι δε γραμ ματα μη με μα θη κως<sup>6</sup>  
ε ε λε ε γον<sup>ν</sup>  
Ι α μα τα χα ρι σμα των ο Λυ τρω τη ης μου πη  
γα ζων<sup>Δ</sup> ε πε τε λει τε ρα τα και ση μει α<sup>ν</sup> φυ γα  
δευ ων τας νο σους ι ω με νος τους α σθε νου ουν τας<sup>Δ</sup>

αλλ I ου δαι οι εξ ε μαι νο ον το τω πλη θει των θαυ μα

των αυτου

Δ ο ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ

μα τι

Α λ λο τρι ι ον τοις α νο ο μοις ε στι το σε ε βειν

την α ναρχον Τρι α α δα Πα τε ρα και Υι ον τε και

το α γι ον Πνε ευμα την α κτι στον παγ κρα το ρι αν

δι ης ο συμ πας κο σμος η δρα α σται τω κρα τει της ι σχυ

ος αυ της

Κ αι νυ υν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην

Ε χω ρη η σας εν γα στρι ι σου παρ θε νο μη η

τορ τον ε να της Τρι α α δος Χρι στον τον ζω ο δο την

ον υ μνει πα σα κτι ι σις και τρε μου σιν οι α νω θρο

νοι αυ τον δυ σω πει παμ μα κα ρι ι στε σω θη ναι τας ψυ

χα ας η η μων

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.δ'

Ἀλλότριον τῶν μητέρων ἢ παρθενία, καὶ ξένον ταῖς παρθένοις ἢ παιδοποιεῖα· ἐπὶ σοὶ Θεοτόκε, ἀμφοτέρα ὠκονομήθη· διό σε πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς ἀπαύστως μακαρίζομεν.

Σύντομος

✠ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ✠

Ἀργή

Σύντομος

✠ Γαβριὴλ Κουντιάδου ✠

Ἀργή

Σύντομος

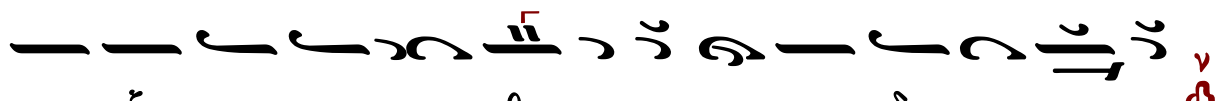
✠ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ✠

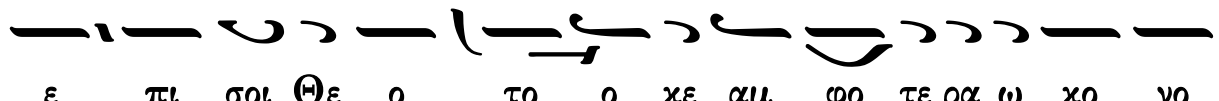
Ἀργή

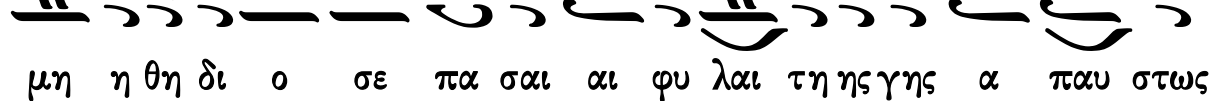
Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου


 λ λο τρι ι ον των μη τε ε ρων η παρ θε νι ι α


 και ξε νον ταις παρ θε ε νοις η παι δο ποι ι α


 ε πι σοι Θε ο το ο κε αμ φο τε ρα ω κο νο


 μη η θη δι ο σε πασαι αι φυ λαι τη ης γης α παυ στως


 μακα ρι ζο με ε ε εν

Γαβριήλ Κουντιάδου


 λ λο τρι ι ον των μη τε ε ρων η παρ θε νι α


 και ξε νον ταις παρ θε νοι οις η παι δο ποι ι α

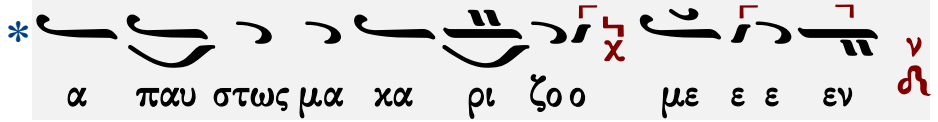


ῥῶδῃ θ'

ἤχος λ π ð Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.289\*

τὸ τέλος



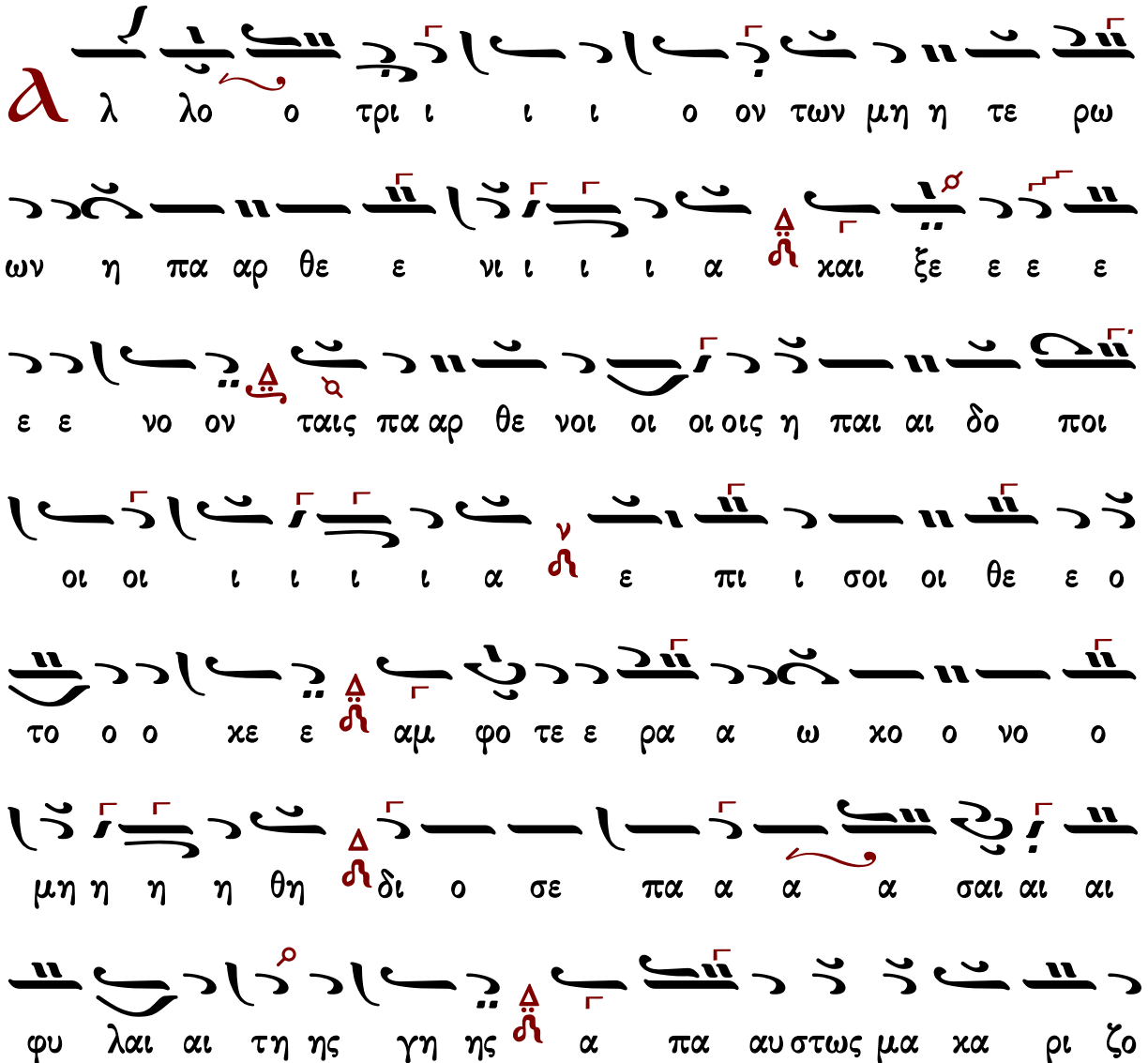
Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π ς Νη

Ιωάννης Πρωτοψάλτης  
Ειρμολόγιον 1903 σ.99#



ο με ε ε εν γ

# Γαβριήλ Κουντιάδου

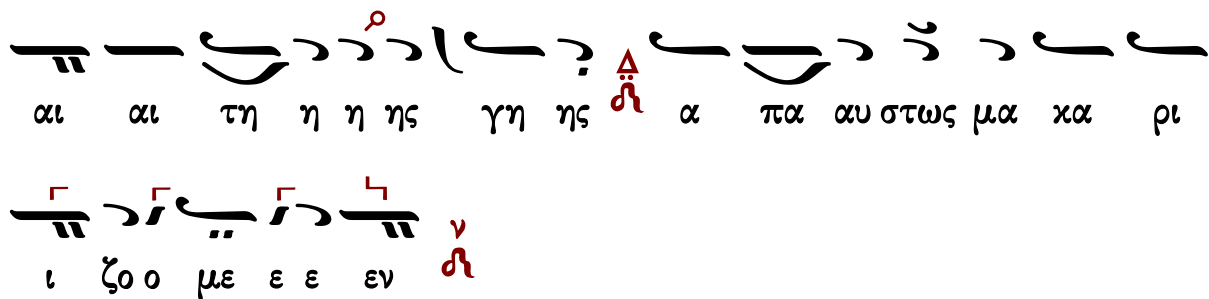
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π ρ Νη

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.268#

α λ λο ο τρι ι ι ι ι ο ον των μη  
τε ε ε ε ε ρω ων η πα αρ θε ε νι ι ι ι  
ι α και ξε ε ε ε ε ε ε ε νο ον ταις  
παρ θε ε νοι οις η παι αι δο ποι οι οι ι ι ι ι  
ι α ε πι σοι οι οι οι Θε ο ο το ο ο  
κε ε αμ φο τε ε ρα α ω χο ο νο ο μη η η  
η η θη δι ο σε πα σαι αι αι φυ λαι

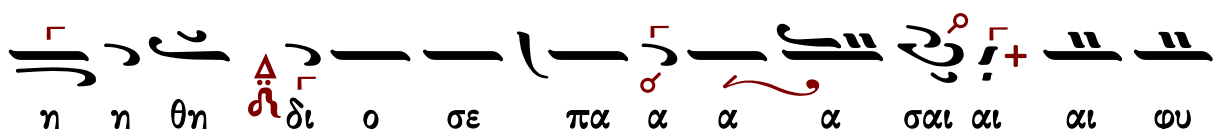
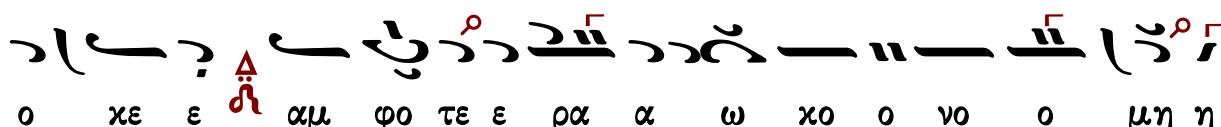
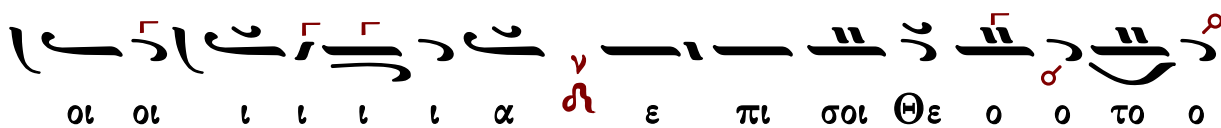
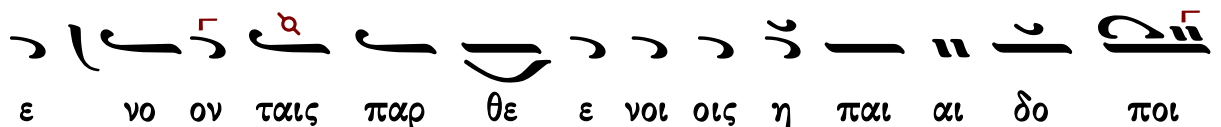
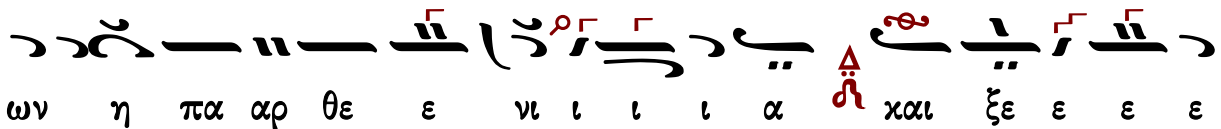
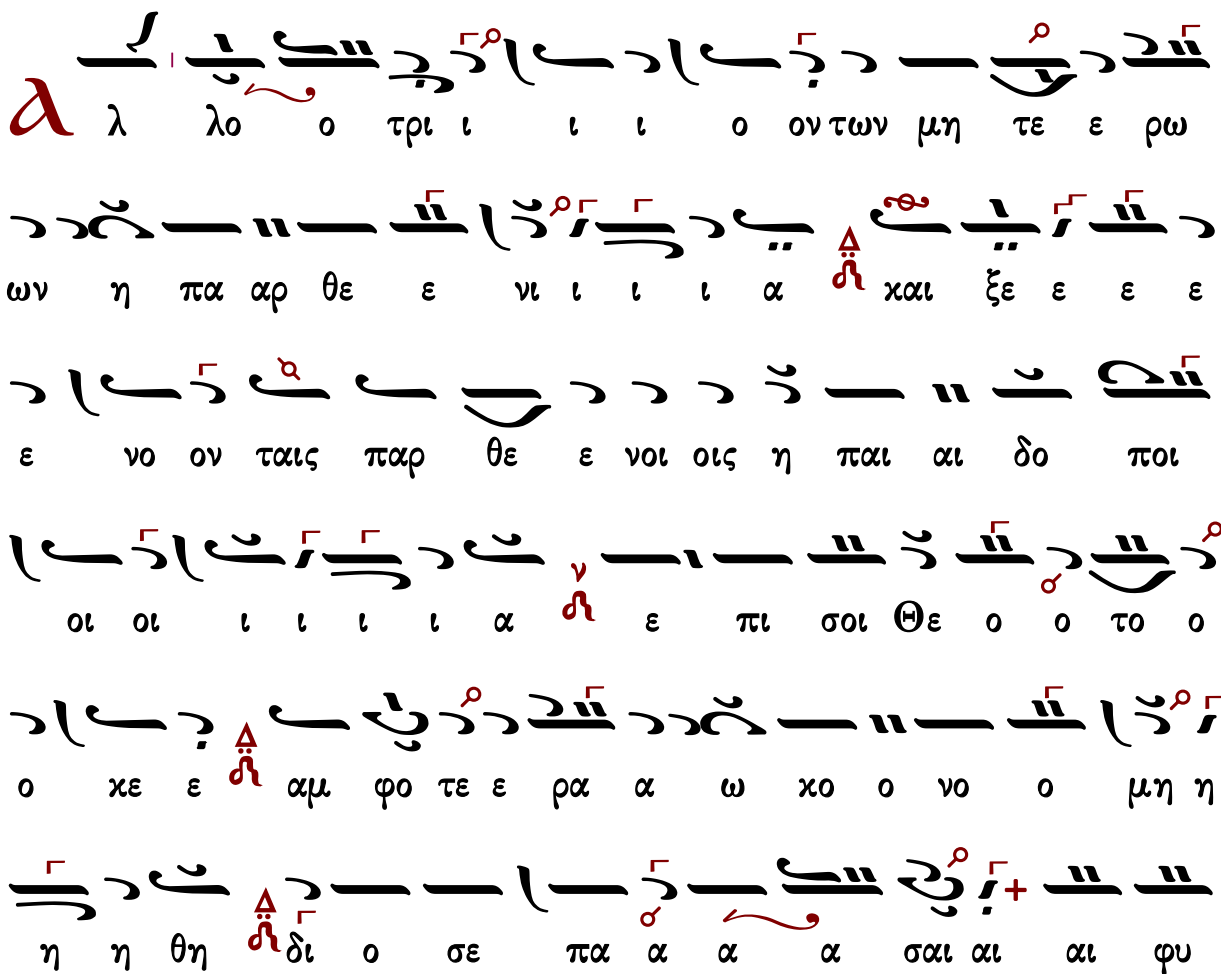




Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ π ς Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.288\*



λαι αι τη ης γη ης α πα αυ στως μα κα ρι ζο ο

με ε ε εν

# Τῆς Αναλήψεως (προεόρτιες)

Απὸ τῆς Κυριακῆς τοῦ Τυφλοῦ μέχρι τῆς Τρίτης πρὸ τῆς ἀποδόσεως τοῦ Πάσχα

## ἤχος πλ.α'

- α **Τ**ῷ Σωτῆρι Θεῷ, τῷ ἐν θαλάσῃ λαόν, ποσὶν ἀβρόχοις ὁδηγήσαντι, καὶ Φαραὼ πανστρατιᾷ καταποντίσαντι, αὐτῷ μόνῳ ἄσωμεν ὅτι δεδόξασται.
- γ **Δ**υνάμει τοῦ Σταυροῦ σου Χριστέ, στερέωσόν μου τὴν διάνοιαν, εἰς τὸ ὑμνεῖν, καὶ δοξάζειν σου τὴν σωτήριον ἀνάληψιν.
- δ **Εἰ**σακήκοα τὴν ἀκοήν, τῆς δυναστείας τοῦ Σταυροῦ σου, ὡς παράδεισος ἡνοίγη δι' αὐτοῦ, καὶ ἐβόησα· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Ὁ**ρθρίζοντες βοῶμέν σοι Κύριε· Σῶσον ἡμᾶς· σὺ γὰρ εἶ Θεὸς ἡμῶν, ἐκτός σου ἄλλον οὐκ οἶδαμεν.
- ς **Ἐ**κύκλωσέ με ἄβυσσος, ταφή μοι τὸ κῆτος ἐγένετο· ἐγὼ δὲ ἐβόησα, πρὸς σὲ τὸν φιλόανθρωπον, καὶ ἔσωσέ με ἡ δεξιὰ σου Κύριε.
- ζ **Ὁ** ἐν καμίνῳ πυρός, τοὺς ὑμνολόγους σώσας παῖδας, εὐλογητὸς ὁ Θεός, ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- η **Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
**Τ**ὸν ἐκ Πατρὸς πρὸ αἰώνων, γεννηθέντα ὕἱον καὶ Θεόν, καὶ ἐπ' ἐσχάτων τῶν χρόνων, σαρκωθέντα, ἐκ παρθένου μητρός, ἱερεῖς ὑμνεῖτε, λαὸς ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

## Σύντομοι

## Ἀργαὶ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομοι

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ̣ ᾠ Κε

Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.416#

Τω Σω τη η ρι Θε ω τω εν θα λασ ση λα ον

πο σιν α βρο χοις ο δη γη σαν τι και Φα ρα ω

παν στρα τι α κα τα πον τι σαν τι αυ τω μο

νω α σωμεν ο ο τι δε δο ξα α σται

ὥδὴ γ'

Δ υ να μει ει του Σταυ ρου σου Χρι στε στε ρε ω σον

μου την δι α νοι αν εις το υ μνει ειν και δο ξα ζειν

σου χορὸς ἀ' την σω τη ρι ον Α να λη η ψιν

ὥδὴ δ'

Ε ι σα κη κο α Κυ ρι ε την α κο ην της δυ να

στει ας του Σταυ ρου ου σου ως πα ρα δει σος η νοι γη δι αυ

του και ε βο η σα δο ξα τη δυ να α μει σου Κυ ρι

ι ε x̣q̣

ὥδῃ ε΄

**Ο** ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ε σω ω σον

η μας συγαρ ει Θε ος η μων x̣q̣ ε κτος σου α αλλον ουκ

οι δα α μεν x̣q̣

ὥδῃ ε΄

**Ε** κυ κλω σε με α βυσ σος τα φη μοι το

κη η η τος ε γεν ε το x̣q̣ ε γω ω δε ε βο η

σα προς σε ε ε τον φι λανθρωπον και ε σω σε ε

με η δε ξι α σου Κυ ρι ι ε x̣q̣

ὥδῃ ζ΄

**Ο** εν κα μι ι νω πυ ρος τους υ μνο λο γους σω σας

παι δας x̣q̣ ευ λο γη τος ο Θε ος ο των πα τε ρων η μων x̣q̣

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Τ ον εκ Πα τρος προ αι ω νων γεν νη θεν τα Υι ον και

Θε ον και επ ε σχα των των χρο νων σαρ κω θεν τα εκ

παρ θε νου μη τρος ι ε ρεις υ μνει ει τε λα ος υ

περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω να α α

α ας

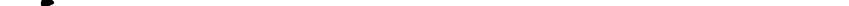
Γαβριήλ Κουντιάδου

Τ ω Σω τη η ρι Θε ω εν θα λα ας ση


  
 λα ον πο σιν α βρο χοις ο δη γη σαν τι και Φα

— ρα — ω — παν — στρα — τι — α — χα — τα — πον — τι — σαν — τι — **χ** — αυ — τω — μο — νω

ἄσσωμεν οὐ οὐτι δεδοξασται



Δ υ ν α μ ε ι τ ο υ Σ τ α υ ρ ο υ ο υ σ ο υ Χ ρ ι σ τ ε ε ε σ τ ε ρ ε ω

σου μου την διανοιαν **εις** το υμνειν και δοξαζει.

ειν σε χορὸς ἀ' την σω τη ρι ον Α να α λη η ψιν ὠδὴ δ'

Εἰς ἀκοήν τῆς δυνάστεως τοῦ

Σταυ ρου ου σου <sup>γ'</sup>η ως πα ρα δει σος η νοι γη δι αυ του <sup>χ</sup>η <sup>q</sup>η

καὶ ἐβοήθησά το ξατὴν δυνάμει σου Κύριε

**J** x̣q      ὦδὲ ε'

Ο ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ε σω σον η

μας <sup>✠</sup>συ γαρ ει Θε ος η ημων ε κτος σου α αλλον ουκ

οι δα α μεν <sup>✠</sup> ῥδῆς'

Ε κυ κλω σε με α βυσ σος τα φη μοι το κη η

η τος ε γε νε το <sup>✠</sup> ε γω δε ε βο η σα προς σε ε

τον φι λαν θρω πον <sup>✠</sup> και ε σω σε ε με η δε ξι α

σου Κυ ρι ι ε <sup>✠</sup> ῥδῆς'

Ο εν κα μι ι νω πυ ρος τους υ μνο λο γους σω

σας παι δας <sup>✠</sup> ευ λο γη τος ο Θε ος ο των πα τε ρων

η μων <sup>✠</sup> ῥδῆ η'



Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου μεν τον

Κυ ρι ι ον

Τ ον εκ Πα τρο ος προ αι ω ω νων γεν νη θεν τα Υι

ον και Θε ον και επ ε σχα των των χρο ο νων σαρ

κω θεν τα εκ παρ θε νου Μη τρος ι ε ρεις υ μνει τε λα

ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω

να α α α ας

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π ᾠ Κε

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.175\*

ΠΑ

Τ ω Σω τη η ρι Θε ω τω εν θα λασ ση λα

ΔΙ ΠΑ ΚΕ ΔΙ ΚΕ  
 ον πο σιν α βρο χοις ο δη γη σαν τι και Φα ρα  
 ΔΙ ΚΕ  
 ω παν στρα τι α κα τα πον τι σαν τι αυ τω  
 ΜΕΛ  
 μο νω α σω μεν ο ο τι δε δο ξα α σται  
 ΔΙ ΠΑ  
 Δ υ να α μει ει του ου Σταυ ρου σου Χρι στε  
 ΔΙ ΚΕ ΔΙ ΚΕ  
 στε ρε ω σον μου την δι α νοι αν εις το υ μνειν  
 ΜΕΛ ΚΕ  
 και δο ξα ζειν σου χορός α' την σω τη ρι ον Α να α λη  
 η ψιν  
 ΔΙ ΚΕ  
 Ε ισ α κη κο α την α κο ην της δυ να στει ας του  
 γ' η  
 Σταυ ρου ου σου ως πα ρα δει σος η νοι γη δι αυ  
 ΜΕΛ  
 του και ε βο ο η η σα δο ξα τη δυ να α μει

σου Κυ υ ρι ι ε ᾠδὴ ε'

Ο ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ε σω ω σον η  
μας ᾠδὴ ε' συ γαρ ει Θε ος η μων ᾠδὴ ε' ε κτος σου α αλ λον ουκ

οι οι δα α μεν ᾠδὴ ε'

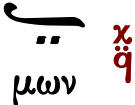
Ε κυ κλω σε με α βυσ σος τα φη μοι το κη η  
τος ε γε νε το ᾠδὴ ε' ε γω ω δε ε βο η σα προς σε ε

τον φι λαν θρω πον ᾠδὴ ε' και ε σω σε ε με η δε ξι α

σου Κυ υ ρι ι ε ᾠδὴ ε'

Ο εν κα μι ι νω πυ ρος τους υ μνο λο γους σω σας

παι αι δας ᾠδὴ ε' ευ λο γη τος ο Θε ος ο των πα τε ρων η


 μων x̣q̣

ὠδὴ η΄

ΜΕΛ  
x̣

 ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου μεν τον

Κυ ρι ι ον x̣q̣

ΚΕ  
T

 ον εκ Πα τρο ος προ αι ω ω νων γεν νη θεν τα Υι

ο ον και Θε ον x̣q̣

 και επ ε σχα α των των χρο ο

νων σαρ κω θεν τα εκ Παρ θε ε νου Μη τρος x̣q̣

 ι ε

ρεις υ μνει 
 ει ει ει τε λα ος υ περ υ ψου ου τε


 εις παν τας τους αι ω ω να α α α ας x̣q̣

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὠδὴ α΄

Ἦχος λ̣ q̣ Κε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.389\*

Τω Σω τη η ρι Θε ω τω εν θα λασ ση

λα ον πο σιν α βρο χους ο δη γη σαν τι

και φα ρα ω παν στρα τι α κα τα πον τι σαν

τι αυ τω μο νω α σω μεν ο ο τι δε δο ξα α

σται

ὥδὴ γ'

Δ υ να μει ει του Σταυ ρου σου Χρι στε στε ρε ω

σον μου την δι α νοι αν εις το υ μνειν και δο

ξα ζειν σου χορὸς ἀ' την σω τη ρι ον Α να λη η ψιν

ὥδὴ δ'

Ε ισ α κη κο α την α κο ην της δυ να στει ας του

Σταυ ρου ου σου <sup>ν'</sup>ως πα ρα δει σος η νοι γη δι αυ του <sup>χ</sup>ῳ

και ε βο η η σα δο ξατη δυ να α μει σου Κυ ρι ι

ε <sup>χ</sup>ῳ ῥδῆ ε'

**Ο** ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ε σω ω σον

η μας <sup>ν'</sup>συ γαρ ει Θε ος η μων <sup>χ</sup>ῳ εκ τος σου α α λλον <sup>σ</sup>

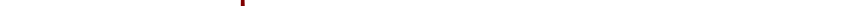
ουκ οι δα α μεν <sup>χ</sup>ῳ ῥδῆ ε'

**Ε** κυ κλω σε με α βυσ σος τα φη μοι το

κη η η τος ε γε νε το <sup>χ</sup>ῳ ε γω ω δε ε βο <sup>+</sup>

η σα προς σε ε ε τον φι λαν θρω πον <sup>χ</sup>ῳ και ε σω σε

ε με η δε <sup>σ</sup>ξι α σου Κυ ρι ι ε <sup>χ</sup>ῳ ῥδῆ ζ'

Ο  εν κα μι ι νω πυ ρος τους υ μνο λο γους σω


  
 σας παι δας x<sub>q</sub> ευ λο γη τος ο Θε ος ο των πα τε ρων η

Ἰωάννης μων

**MEΛ**

**A** ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου μεν τον

Κυ ρι ι ον xq

Τον εκ Πα προς προ αι ω ω νων γεν νη θεν τα Υι


 ον και θε ον


  
 χω    θεν    τα    εκ    Παρ    θε    νου    Μη    τρος    ι    ε    ρεις    υ

— — “ ∪ ∩ ⋆

αι ω ω ω ω νας x q̇

# Πέτρου Πελοποννησίου

$$\hbar \chi_0 \frac{\lambda}{\pi} \dot{q} K \varepsilon$$

Τ<sup>̃</sup>ω Σω τη ρι Θε ε ω ω <sup>ν'</sup>τω ε ε εν θα λα  
 ας ση η λα α α ον <sup>χ</sup>πο σιν α βρο ο χοις ο  
 δη γη η σα αν τι <sup>ν'</sup>και Φα ρα ω παν στρα τι α  
 α α κα τα πον τι ι σα α αν τι <sup>χ</sup>αυ τω μο ο  
 νω ω ω α σω ω μεν <sup>χ</sup>ο ο ο ο τι δε δο ο  
 ο ξα α α σται αι αι <sup>χ</sup>

Δ υ ν α μεις του Σταυρου σου ου Χρι ι στε ε  
 στε ρε ω σο ον μου την δι α α νοι οι οι αν εις



το υ μνειν και δο ο ο ξα ζειειν σου χορός α' την σω τη

ρι ι ον Α να α α λη η η ψι ι ιν ὠδή δ'

Ε ισ α κη χο α α την α χο ο η ην ῆ' της δυ

να στει ει ει ας του Σταυ ρου ου ου ου σου ως πα

ρα δει σο ο ος η νοι γη δι ι α α αυ του και

ε βο η η σα δο ξα τη δυ να α α μει ει σου Κυ υ

υ ρι ι ι ε ε ε ὠδή ε'

Ο ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ι ε ῆ'

σω ω σον η η μας ῆ' συ υ υ γαρ ει Θε ο

ος η η η μων εκ τος σου α α α α λ λο ον ουκ οι

οι οι δα α α με ε εν x̣q̣ ῥδῆς'

Ε κυ κλω σε με α α βυ υσ σος γ' τα φη

μοι το κη η τος ε γε ε νε ε ε το x̣q̣ ε γω ω ω

δε ε βο η σα γ' προς σε ε τον φι λα αν θρω ω

ω πον x̣q̣ και ε σω ω ω σε ε ε με ε η δε ξι

α σου ου Κυ υ υ ρι ι ι ε ε ε x̣q̣ ῥδῆς'

Ο εν κα μι νω πυ υ ρο ος γ' τους υ μνο ο λο ο

ο γους σω σας παι αι αι αι δας x̣q̣ ευ λο γη τος ο Θε ος

ο ο των πα τε ε ε ρων η μω ων x̣q̣ ῥδῆς'

Α ι x̣ φ νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ υ ρι ι ι ον <sup>χ</sup><sub>η</sub>

<sup>κε</sup><sub>η</sub> **Τ**ον εκ Πα τρος προ ο αι ω ω νων <sup>γ</sup><sub>η</sub> γεν νη θεν

τα α Υι ο ον και αι Θε ε ε ον <sup>χ</sup><sub>η</sub> και επ ε

σχα των των χρο ο νων <sup>γ</sup><sub>η</sub> σαρ κω θεν τα ε ε εκ Παρ θε

ε ε ε νου ου Μη η η τρος <sup>χ</sup><sub>η</sub> ι ε ρεις υ υ

μνει ει ει τε λα ος υ περ υ υ ψου ου ου τε εις παν τας τους

αι ω ω ω να α α α ας <sup>χ</sup><sub>η</sub>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π ᾠ κε

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.178\*

<sup>κε</sup><sub>η</sub> **Τ**ω Σω τη ρι Θε ε ω ω <sup>γ</sup><sub>η</sub> τω ε ε εν θα

λα α α ασ ση λα α α ον πο σιν α βρο ο

χοις ο ο δη η γη η σα αν τι ι ι και Φα ρα

ω παν στρα τι α α αν κα τα α α πον τι ι σα

α αν τι αυ τω μο ο νω ω ω α α σω ω ω

μεν ο ο ο ο τι ι ι δε δο ο ο ο ο ξα α

α α σται αι αι

Δ υ να μει του ου Στα αυ ρου ου σου Χρι ι στε

ε στε ρε ω σο ον μου τη η ην δι α α νοι

οι οι αν εις το υ μνειν και αι δο ο ο ξα α ζει

ει ειν σου χορός α' την σω τη η ρι ι ο ο ον Α να α

α α α λη η η η ψι ι εν

✠  
q

ὥδῃ δ'

Ε ισ α κη κο α α την α α κο ο η ην

γ'  
η

της δυ υ να α στει ει ει ας του ου ου Σταυ ρου ου

ου ου σου ✠  
q ως πα ρα δει σο ος η νοι οι οι γη

δι ι α α αυ του ✠  
q και αι ε ε ε βο ο ο

η η η σα ✠  
q δο ξα α τη δυ να α α α μει ει ει σου

Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε ε ε ✠  
q

ὥδῃ ε'

ΚΕ  
O ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι οι οι Κυ υ ρι ι

ε γ'  
η σω ω ω ω ω σον η μας γ'  
η συ υ υ γαρ ει

ει ει Θε ο ος η η η μων ✠  
q ε κτος σου α α α αλ

λο ο ον ουκ οι οι οι οι οι δα α α α με ε

εν ψδῆς'

ΚΕ  
Ε κυ κλω σε με α α α βυ υσ σο ος γῆ

τα χ φη η μοι χῆ το χῆ κη η τος ε γε ε ε νε ε

το ο γῆ ε γω ω ω ω δε ε ε ε βο ο η η

σα α γῆ προς σε ε ε το ο ον φι λα αν θρω ω ω

πον χῆ και ε ε σω ω σε ε ε ε ε με χῆ η

δε ξι α α σου ου Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ε ε

ε ψδῆς'

ΚΕ  
Ο εν κα μι νω πυ υ ρο ος γῆ τους υ υ μνο ο

λο ο ο γους σω ω ω σας παι αι αι αι δας <sup>χ</sup><sub>q</sub> ευ λο

γη το ος ο Θε ο ος ο ο τω ων πα τε ε ε ε

ε ρωων η η μω ω ων <sup>χ</sup><sub>q</sub> ὠδὴ η'

<sup>KE</sup>  
Α <sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο <sup>χ</sup>γου μεν προσ κυ νου ου ου με

ε εν τον Κυ ρι ι ι ον <sup>χ</sup><sub>q</sub>

<sup>KE</sup>  
Τ <sup>q</sup>ον εκ Πα τρο ο ος προ αι αι ω νων <sup>ν'</sup><sub>η</sub> γεν νη

θε εν τα α α Υι ο ο ο ον και αι Θε ε ε

ον <sup>χ</sup><sub>q</sub> και επ ε σχα τω ω ων τω ων χρο ο νων <sup>ν'</sup><sub>η</sub> σαρ κω

θε εν τα ε ε εκ Παρ θε ε ε ε νου ου Μη η

η προς <sup>χ</sup><sub>q</sub> ι ε ρει εις υ υ υ μνει ει ει ει ει

τε <sup>χ</sup><sub>9</sub> λα ος υ περ υ υ ψου ου ου ου τε <sup>χ</sup><sub>9</sub> εις πα αν  
 τα ας του ου ους αι ω ω ω ω να α α α ας <sup>χ</sup><sub>9</sub>

## Ἐν Κυριακῇ - ὥδῃ θ'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

### Κανὼν τοῦ Πάσχα

#### ἦχος α'

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐθελουσίως παθόντα καὶ ταφέντα καὶ ἐξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν,  
 καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου Χριστὸν τὸν ζωοδότην.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν,  
 καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Χ**ριστὸς τὸ καινὸν πάσχα, τὸ ζωόθυτον θῦμα, ἀμνὸς Θεοῦ ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν κόσμου.  
**ᾠ** θείας! ὦ φίλης! ὦ γλυκυτάτης σου φωνῆς! μεθ' ἡμῶν ἀψευδῶς γάρ, ἐπηγγείλω,  
 ἔσεσθαι, μέχρι τερμάτων αἰῶνος Χριστέ· ἦν οἱ πιστοί, ἀγκυραν ἐλπίδος, κατέχοντες  
 ἀγαλλόμεθα.

**Σ**ήμερον πᾶσα κτίσις ἀγάλλεται καὶ χαίρει, ὅτι Χριστὸς ἀνέστη καὶ ἄδης ἐσκυλεύθη.  
**ᾠ** Πάσχα τὸ μέγα, καὶ ἱερώτατον Χριστέ· ὦ σοφία καὶ Λόγε, τοῦ Θεοῦ καὶ δυνάμεις·  
 δίδου ἡμῖν ἐκτυπώτερον, σοῦ μετασχεῖν, ἐν τῇ ἀνεσπέρῳ, ἡμέρᾳ τῆς βασιλείας σου.

Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρῦσανθου Θεοδοσόπουλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου




 ε    γα    λυ    νον    ψυ    χη    η    μου    ου    τον    ε    θε    λου    σι    ι

ως πα θον τα και τα φε εν τα α και ε ξα να σταν τα τρι


 η μερονεχ τα φου

Φωτισήνεα I ερουσα

λημ  η γαρ δο ξα Κυ  ρι  ι ουου ε πι σε α νε τει λε


  
 χο ρευ ε νυν και α γαλ λου σι ων


  
 τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο

σου  
 σου

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ ο ν ε ξ α ν α σ τ α α ν

τα τρι η μερον εκ τα αφου Χρι στον τον Ζω ο δο την

Φ ω τι ζου φω τι ι ζου η νε α I ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ουου ε πι σε α νε τει λε

π χο ρευ ε νυν και α γαλ λου σι ων συ υ δε Α γνη η

τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο

κου σου π

Χ ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο θυ τον θυ υ μα

Α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο σμου π

Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης π

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε σθαι π

με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε η ην οι πι στοι

αγ κυραν ελ πι ι δος  κα τε χοντες α γαλ λο ο με

  
θα 

  
 η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λεται και χαι αι ρει

  
ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη

  
Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

  
στε  ω σο φι α και Λο ο γε του Θε ου και δυ να

  
μεις  δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον  σου ου με τα σχειν

εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει ας

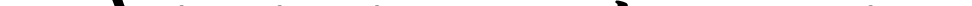
  
σου 

Γαβριήλ Κουντιάδου

ψδλ θ'

Ἦχος  Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.25\*


  
 ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον ε θε λου

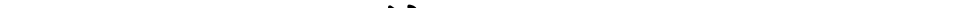
σι ι ως πα θον τα και τα φε εν τα και εξ


  
 να στα αντατρι η μερον εκ τα φου

Φ<sup>χ</sup> ω τι ζου φω τι ζου<sup>πρ</sup> η νε α Ι ε ρου σα

λημ  η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε  π ρ

χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων  συ δε Α γνη η η


 τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο


 π  
 π

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ ο ν ε ξ α ν α σ τ α

αν τα <sup>Α</sup>τρι η με ρον εκ τα φου Χρι στον τον ζω ο δο την <sup>π</sup>9

Φ ω τ ι ζ ο υ φω τ ι ζ ο υ <sup>π ρ</sup> η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α

λ η μ <sup>Δ ρ</sup> η γ α ρ δ ο ξ α Κυ ρ ι ο υ ε πι σε α ν ε τ ει λε <sup>π ρ</sup>

χο ρ ε υ ε ν υ ν και α γ α α λ λ ο υ Σ ι ω ν <sup>Δ ρ</sup> συ δε Α γ η η η

τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ ρ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο

κου ου σου <sup>π ρ</sup>

Χ ρ ι σ τ ο ς το και ν ο ν Πα σ χ α το ζ ω ο ο θ υ τον θ υ υ

μα <sup>Δ ρ</sup> α μ ν ο ς Θε ο υ ο αι αι ρ ω ν την α μα ρ τι αν κο

σμου <sup>π ρ</sup>

Ω θ ει α ς ω φ ι λ η ς <sup>π ρ</sup> ω γ λ υ κυ τα της σου φω

νης <sup>Δ ρ</sup> μεθ η μ ω ν α ψευ δ ω ς γ α ρ ε π η γ γ ει λ ω ε σε

σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε <sup>Δ ρ</sup> ην οι πι

στοι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Δ ρ</sup> κα τε χον τες α γαλ λο

ο μεθα <sup>π ρ</sup>

**Σ** η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει <sup>Δ ρ</sup>

ο τι Χρι στος α νε στη και α δης ε σκυ λευ θη <sup>π ρ</sup>

**Ω** Πα σχα το με γα <sup>π ρ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>Δ ρ</sup> ω σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μεις <sup>π ρ</sup>

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου με τα σχει ει ει ν εν τη α

νε σπε ε ρω <sup>Δ ρ</sup> η με ρα της βα σι λει ει ας σου <sup>π ρ</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ΠΑ

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου ου τον ε θε λου σι ι

ως πα θον τα και τα φεν τα α και εξ α να σταν

τατρι η μερονεκ τα φου

ΜΕΛ

ΠΑ

Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ου ου ε πι σε α νε

τει λε χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων συ υ δε Α

γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει

ΝΗ

ΠΑ

του το ο κου σου

ΠΑ

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου ου τον εξ α να στα αν

τα  τρι η με ρον εκ τα α φου Χρι στον τον ζω ο

  
δο την  τὸ ἴδιον 

  
**Φ**ω τι ζου φω τι ζου  η νε α Ι ε ρου σα

 η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ου ου ε πι σε α νε

 τει λε  χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων  συ υ δε Α

 γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει

  
του το ο κου σου 

  
**Χ**ρι στος το και νον Πα α σχα το ζω ο ο θυ τον

 θυ υ μα α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ

  
τι αν κο σμου 



Ω <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup> π ρ  
θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης

μεθ η μων α ψευ δω ως γα α αρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι π ρ με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε Δ ρ η ην οι πι

στοι οι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος Δ ρ κα τε χον τες α

<sup>ΝΗ</sup>  
γαλ λο ο με θα π ρ

<sup>ΠΑ</sup> C η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει Δ ρ

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη π ρ

Ω <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup> γ ρ  
Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

π ρ στε ω σο φι α και Λο ο γε ε του Θε ου και δυ να

π ρ μισ δι δου η μιν ε κτυ πω τε ρον Δ ρ σου ου με τα σχει ει

ει ειν εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει

ΠΑ

ας σου

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

Ἦχος 4 Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.17\*

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον ε θε λου σι ι

ως πα θον τα και τα φεν τα και εξ α να στα αν τα

τρι η μερον εκ τα φου

Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων συ υ δε α γνη η τερ που

Θεοτοκε εν τη εγερσει του τοκου ου

σου

Μεγαλυνον ψυχη μου τον εξαναστατρι

η μερονεκτα φου Χριστον τον ζωοδοτην το ιδιο

Φωτιζου φωτιζου ηνεα Ιερουσα

λημ η γαρ δοξα Κυριου επι σε ανετειλε χο

ρευενυν και αγαλλου Σιων συ υδεα γνηητερπου

Θεοτοκε εν τη εγερσει του τοκου ου

σου

Χριστος το καινον Πασχατο ζωοοθυτον θυυ

μα α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο ο

σμου

Ω θει ας ω φι λης ω γλυ κυ τα της σου φω νης

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε ην οι πι

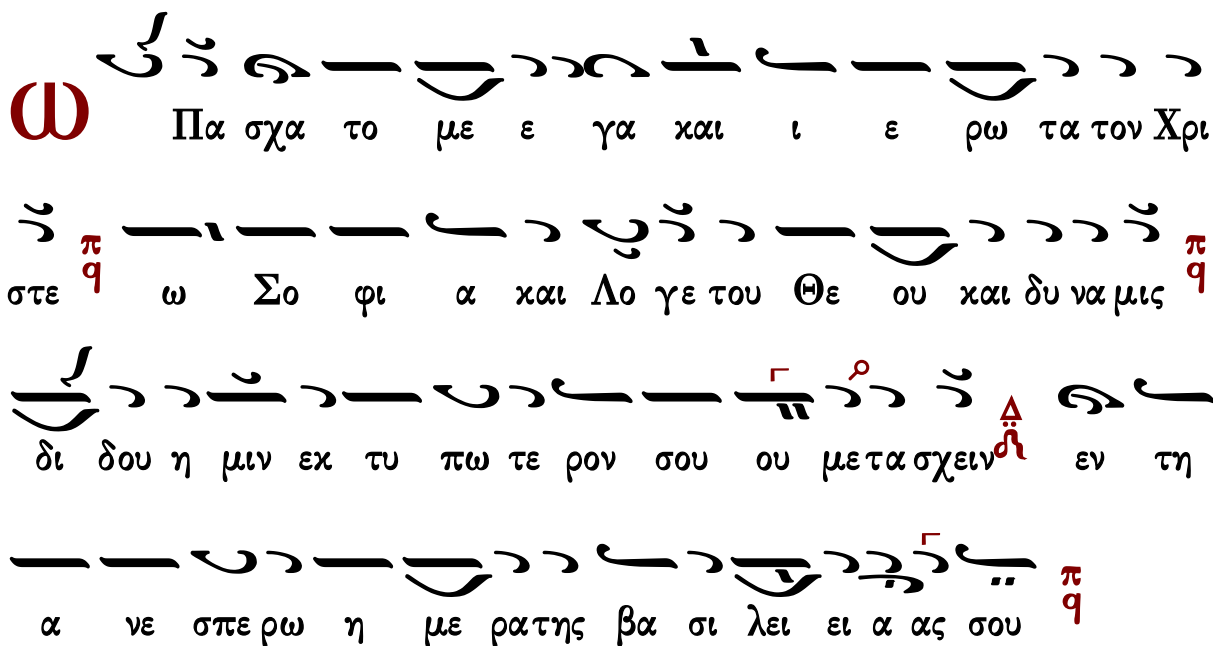
στοι οι αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χον τεσ α γαλ λο

ο με ε θα

Σ η η με ρον πα σα κτι ι σις α γαλ λε ται και χαι αι

ρει ο τι Χρι στος α νε ε στη και α δης ε σκυ λευ

θη



### Κανὼν τῆς Θεοτόκου

ἦχος α'

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου καὶ ἀδιαιρέτου θεότητος τὸ κράτος.

Συμφώνως Παρθένε, σὲ μακαρίζομεν πιστοί· Χαῖρε πύλη Κυρίου· χαῖρε πόλις ἔμψυχε· χαῖρε, δι' ἧς ἡμῖν ἔλαμψε, σήμερον φῶς τοῦ ἐκ σοῦ τεχθέντος, τῆς ἐκ νεκρῶν ἀναστάσεως.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Χαῖρε, παρθένε, χαῖρε· χαῖρε, εὐλογημένη·

χαῖρε, δεδοξασμένη, σὸς γὰρ Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Εὐφραίνου, ἀγάλλου, ἡ θεία πύλη τοῦ φωτός· ὁ γὰρ δύνας ἐν τάφῳ, Ἰησοῦς ἀνέτειλε, λάμψας ἡλίου φαιδρότερον, καὶ τοὺς πιστοὺς πάντας καταυγάσας, θεοχαρίτωτε Δέσποινα.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Ἦχος ᾠ Πα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.196\*

Δ ο ξ α Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι   π ρ

Μ ε γ α λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα 

α του  και α δι αι ρε του θε ο τητος το κρα τος  π ρ

Σ υμ φω νως Παρ θε νε  σε μα κα ρι ζο μεν πι 

στοι  χαι ρε πυ λη Κυ ρι ι ου χαι ρε πο λις εμψυ χε  π ρ

χαι ρε δι ης η μιν ε λαμψε ση η με ρον φω ω ως του 

εκ σου τε χθε εν τος  της εκ νε κρων α να στα α σε ως  π ρ

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων 

α μην   π ρ

Χ αι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε  

νη  χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη

τρι η μερος εκ τα φου 

 υ φραι νου α γαλ λου  η θει α πυ λη του φω

τος  ο γαρ δυ νας εν τα α φω Ι η σους α νε τει λε 

λαμ ψας η λι ου φαι δρο τε ρον και τους πι στου ου ου ους

παν τας κα ταυ γα α σας  θε ο χα ρι τω τε Δε ε σποι

 να

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

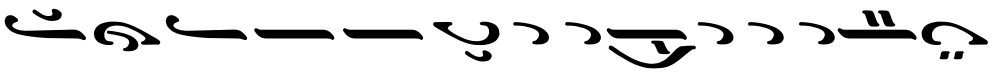
Ἦχος  Πα

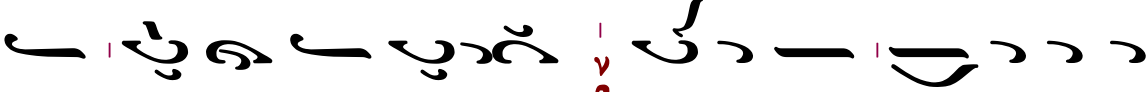
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
πρ. Κων. Παπαγιάννη  
2005 σ.219#

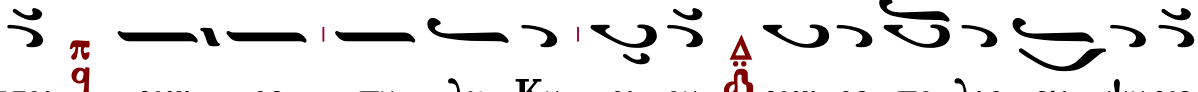
 ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα

τι 

  
**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ς τ ρ ι σ υ π ο σ τ α α

  
του και α δι αι ρ ε του θε ο τητος το κρα τος 

  
**Σ** υ μ φ ω ν ω ς Πα ρ θε νε  σε μα κα ρ ι ζ ο μεν πι

  
στοι  χ αι ρ ε π υ λ η Κυ ρ ι ου  χ αι ρ ε πο λ ι ς ε μ ψ υ χ ε

  
 χ αι ρ ε δι η ς η μι ν ε ε λα μ ψ ε ση με ρ ο ν φ ω ς 

  
του εκ σου τε χ θε εν τος της εκ νε κ ρ ω ν α ν α σ τ α α σε ε

  
ως 

  
**Κ** αι ν υ ν και α ει και ει ς τ ο υ ς αι ω ν α ς τ ω ν αι ω

  
νων Α μην 



Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε ε χαι ρε ευ λο γη με ε νη  
 χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη τρι  
 η με ρος εκ τα φου <sup>π</sup><sub>9</sub>  
 Ε υ φραι νου α γαλ λου η θει α πυ λη του φω τος <sup>π</sup><sub>9</sub>  
 ο γαρ δυ νας εν τα φω Ι η σους α νε τει λε <sup>π</sup><sub>9</sub> λαμ  
 φας η λι ου φαι δρο τε ρον <sup>Δ</sup><sub>9</sub> και τους πι στου ους παν τας  
 κα ταυ γα α σας <sup>Δ</sup><sub>9</sub> θε ο χα ρι τω τε Δε ε σποι οι  
 να <sup>π</sup><sub>9</sub>

## Ἐν Καθημερινῇ - Τιμιωτέρα ἡχος πλ.α΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος πλ.α΄

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτηῆρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ 

Λουκᾶ κεφ. 1

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτηῆρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Τ ἡν τι μι ω τε ραντων Χε ρου βιμ και εν δο ξο τε  
 ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>χ̣ ᾠ̣</sup> την α δι α φθο ο  
 ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>χ̣ ᾠ̣</sup> την ον τως Θε ο το κον  
 σε με γα λυ νο ο μεν <sup>χ̣ ᾠ̣</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ <sup>Κε</sup>πρωτ. Κων. Παπαγιάννης  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.28#

Μ <sup>χ̣</sup> ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>χ̣ ᾠ̣</sup>  
 και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου <sup>χ̣</sup> <sup>γ'</sup> η ε πι τω  
 Θε ω ω τω σω τη ρι μου <sup>χ̣ ᾠ̣</sup>

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ<sup>ν'</sup> και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ<sup>χ̣η̣</sup> την αδια

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν<sup>χ̣η̣</sup> την οντως Θεοτοκον σε

εμεγαλυνοομεν<sup>χ̣η̣</sup>

Ο<sup>χ̣</sup>τι επεβλεψεν επι την ταπεινω

σιν της δουλης αυτου<sup>χ̣η̣</sup> ιδου γαρ απο του νυν μακα

ρι ουσι με πασαι αι γε νεαι<sup>χ̣η̣</sup>

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ<sup>ν'</sup> και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ<sup>χ̣η̣</sup> την αδια

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν<sup>χ̣η̣</sup> την οντως Θεοτοκον σε

ε με γα λυ νο ο μεν

Ο <sup>χ</sup>τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

$\delta\psi$  να τος και α γι ον το ο ο νο μα + αυ του και

το ε λε ος αυ του εις γε νε χ αν και γε νε αν τοις φο

βου με νοις αυ τον

Την τιμιωτέραν των Χερουβιμ<sup>ν'</sup> και ενδοξο

τε ραν α συγ χρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι α

φθo ρως Θε ο ον Λο ο γον τε κου σαν x̅q̅ την ον τως Θε ο

𐤀 𐤋 𐤍 𐤅 𐤁 𐤁 𐤀 𐤋 𐤍  
 το κον σε ε με γα λυ νο μεν

δι ε σκορπισεν υ περ η φανους δι α νοι α καρ

δι ας αυ των x̣q̣

T ην τι μι ω τε ραντων Χε ρου βιμ ν' η και εν δο ξο

τε ραν α συγ χρι ι τως των σ Σε ρα φιμ x̣q̣ την α δι α

φθο ρως Θε ο ον Λο ο γον τε κου σαν x̣q̣ την ον τως Θε ο

το κον σε ε με γα λυ νο μεν σ x̣q̣

K x̣ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ ψω σε τα σ

πει νους x̣q̣ πει νων τας εν ε πλησεν α γα θων x̣ ν' η και πλου

του ν τας εξ α πε στει λε κε νους φ ο x̣q̣

T ην τι μι ω x̣ τε ε ραντων Χε ρου βιμ ν' η και

εν δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>ν'</sup>η την

α δι α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>χ</sup>η την ον

τως Θε ο το ο κον σε ε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>χ</sup>η

<sup>χ</sup>Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ε ους <sup>χ</sup>η κα θως ε λα λη σε προς

τους πα τε ρας η μων <sup>ν'</sup>η τω Α βρα α αμ και τω σπερ μα τι

αυτου ε ως αι ω νος <sup>χ</sup>η

<sup>χ</sup>Τ ην τι μι ω τε ε ραν των Χε ρου βιμ <sup>ν'</sup>η και

εν δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>ν'</sup>η την

α δι α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>χ</sup>η την ον

τῶς Θεο το ο κον σε ε με γα λυ υ νο ο μεν ⲕⲉ

Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.α'

Σὲ τὴν ὑπὲρ νοῦν, καὶ λόγον μητέρα Θεοῦ, τὴν ἐν χρόνῳ τὸν ἄχρονον ἀφράστως  
κυήσασαν, οἱ πιστοὶ ὁμοφρόνως μεγαλύνομεν.

Σύντομος

✠ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ✠

Ἀργὴ

Σύντομος

✠ Γαβριὴλ Κουντιάδου ✠

Σύντομος

✠ Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου ✠

Ἀργὴ

Σύντομος

✠ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ✠

Ἀργὴ

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
Εἰμολόγιον 1903 σ.419#

C ε την υ περ νουν και λο γον μη τε ε ρα Θε  
ου την εν χρο νωτον α χρονον α φρα α στως κυ η σασαν  
οι πι στοι οι ο μο φρο νως με γα λυ νο με  
ε ε εν ⲕⲉ



# Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.322\*

ε την υ περ νουν και λο γον μη τε ε ρα Θε ου την  
εν χρο νω τον α χρο νον α φρα α α στως κυ η σα  
σαν οι πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο με ε ε ε  
εν

# Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.177\*

ε την υ περ νουν και λο γον Μη τε ε ρα Θε ου την  
εν χρο νω τον α χρο νον α φρα α στως κυ η σα σαν  
οι πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο με ε ε ε εν

# Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.401#

Ε τὴν υ περ νουν και λο γον Μη τε ρα Θε  
ου ἤ τὴν ἐν χρόνῳ τον α χρόνον α φρα α στως κυ η  
σα σαν οἱ πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο ο  
μεν

Ἀεγὼ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.75#

Ε τὴν υ υ περ νουν και αι λο ο ο ο  
γον μη τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ου ου ου ἤ τὴν ἐν

χρ ο ο νω το ο ο ν α χρ ο νο ο ο ο ν α φρα στω ως κυ  
η η η σα σαν οι πι στοι οι οι οι οι ο μο  
φρο ο νω ως με γα λυ υ υ νο ο ο ο με ε εν

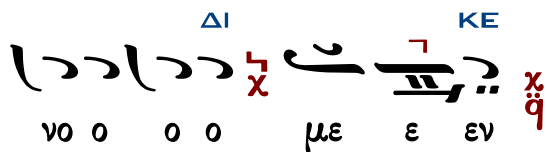
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδῃ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.181\*

ΠΑ ΔΙ ΚΕ  
C ε ε τη ην υ υ περ νουν και αι λο ο ο ο ο  
ΠΑ  
γο ον Μη τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ου ου ου τη ην  
ΠΑ  
ε εν χρ ο ο ο νω ω το ο ν α χρ ο νο ο ο ο ν α φρα  
ΚΕ ΔΙ ΚΕ  
στω ως κυ η η η σα σαν οι πι στοι οι οι οι  
οι ο μο φρο ο νω ως με ε ε γα λυ υ υ υ υ

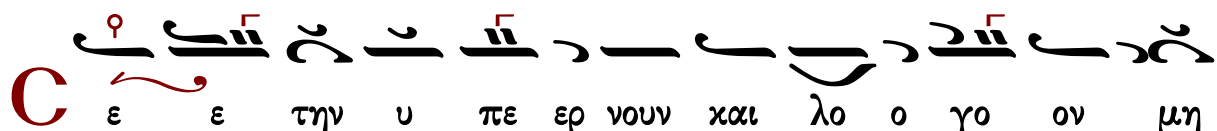

  
 νο ο ο ο με ε εν

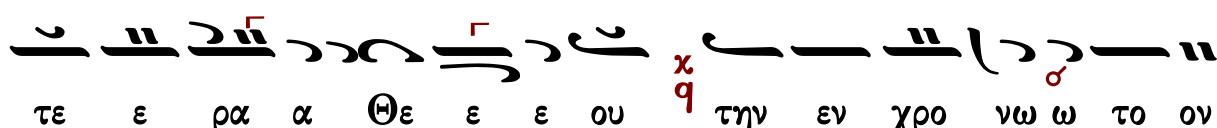
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὥδῃ θ'

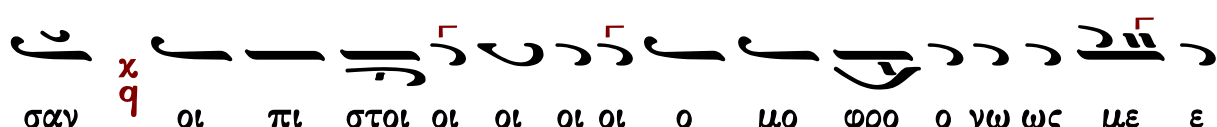
Ἦχος λ π ᾠ Κε

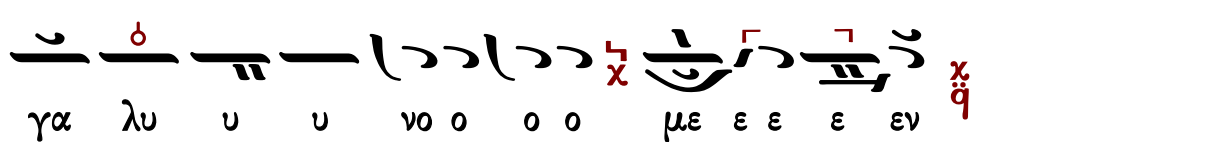
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.354\*


  
 ε ε την υ πε ερ νουν και λο ο γο ον μη


  
 τε ε ρα α Θε ε ε ου την εν χρο νω ω το ον


  
 α χρο ο νον α φρα α α α στω ως κυ η η σα α α


  
 σαν οι πι στοι οι οι οι οι ο μο φρο ο νω ως με ε


  
 γα λυ υ υ νο ο ο ο με ε ε ε εν

# Τῆς Αναλήψεως

Από τῆς Πέμπτης τῆς Αναλήψεως καὶ μέχρι τῆς Παρασκευῆς πρό τῆς Πεντηκοστῆς.

## ἤχος δ'

- α **Θ**εῖω καλυφθεὶς ὁ βραδύγλωσσος γνόφῳ, ἐρρητόρευσε τὸν θεόγραφον νόμον. Ἰλὺν γὰρ ἐκτινάξας ὄμματος νόου, ὄρᾳ τὸν ὄντα καὶ μυεῖται Πνεύματος, γινῶσιν, γεραίρων ἐνθέοις τοῖς ἄσμασιν.
- γ **Ἐ**ρρηξε γαστρὸς ἡτεκνωμένης πέδας, ὕβριν τε δυσκάθεκτον εὐτεκνουμένης, μόνη προσευχῇ τῆς προφήτιδος πάλαι, Ἄννης, φερούσης πνεῦμα συντετριμμένον, πρὸς τὸν δυνάστην καὶ Θεὸν τῶν γνώσεων.
- δ **Ἀ**ναξ ἀνάκτων, οἷος ἐξ οἴου μόνος Λόγος προελθὼν, Πατρὸς ἐξ ἀναιτίου, ἰσοσθενὲς σου Πνεῦμα τοῖς ἀποστόλοις, νημερτὲς ἐξέπεμψας ὡς εὐεργέτης, Ἄδουσι· Δόξα τῷ κράτει σου Κύριε.
- ε **Λ**υτήριον κάθαρσιν ἀμπλακημάτων, πυρίπνοον δέξασθε Πνεύματος δρόσον, ὃ τέκνα φωτόμορφα τῆς Ἐκκλησίας. Νῦν ἐκ Σιῶν γὰρ ἐξελήλυθε νόμος, ἡ γλωσσοπυρσόμορφος Πνεύματος χάρις.
- ς **Τ**λασμὸς ἡμῖν Χριστέ καὶ σωτηρία, ὁ Δεσπότης ἔλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου, ἵν', ὡς προφήτην θηρὸς ἐκ θαλαττίου Στέρνων Ἰωνᾶν, τῆς φθορᾶς διαρπάσῃς ὅλον τὸν Ἀδάμ, παγγενῇ πεπτωκότα.
- ζ **Σ**ύμφωνον ἐθρόησεν ὀργάνων μέλος, σέβειν τὸ χρυσότευκτον ἄψυχον βρέτας, ἡ τοῦ Παρακλήτου δὲ φωσφόρος χάρις, σεβασμιάζει τοῦ βοᾶν· Τριάς μόνη, ἰσοσθενής, ἀναρχος, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Λ**ύει τὰ δεσμά, καὶ δροσίζει τὴν φλόγα, ὁ τρισσοφεγγὴς τῆς θεαρχίας τύπος. Ὑμνοῦσι Παῖδες, εὐλογεῖ δὲ τὸν μόνον Σωτῆρα καὶ παντουργόν, ὡς εὐεργέτην, ἡ δημιουργηθεῖσα σύμπασα κτίσις.

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἀργαὶ

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

## Σύντομοι

# Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Θ εἰ ω κα λυ φθει εἰς ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω <sup>6</sup>λ

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup>λ ι

λυν γαρ εκ τι να α ξας ομ μα τος νο ο ου

ο ρα τον ο ον τα <sup>Δ</sup>δ και μυ ει ται Πνευ μα τος γνω

σιν <sup>6</sup>λ γε ραι αι ρων εν θε ε οἰς τοῖς α σμασιν <sup>6</sup>λ ᾠδὴ γ΄

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας <sup>6</sup>λ υ βριν

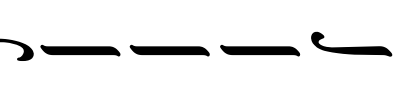
τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης <sup>6</sup>λ μο νη προσ ευ

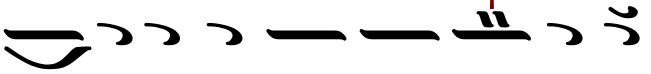
χη της προ φη τι δος πα α λαι <sup>Δ</sup>δ Αν νης φε ρου ου

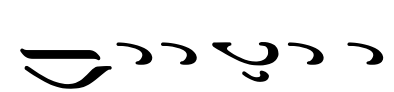
σης Πνευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην 

 χορὸς α' και Θε ον των γνω σεων  

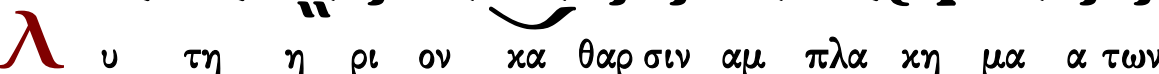
 ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος  Λο 

 γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου  ι σο σθε νες σου 

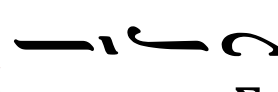
 Πνε ευ μα τοις Α πο στο ο λοις  νη μερ τες ε ξε πεμ 

 φας ως ευ ερ γε ε της α δου σι  δο ξα τω κρα τει σου 

 Κυ ρι ε  

 Λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α των 

 πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο σον ω τε ε 

 κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας  νυν εκ Σι 

ω ων γαρ ε ξελη η λυ θε νο ο μος η γλωσ σο πυρ

σο μορ φος Δ Πνευμα τος χα αρις 6 λ ὠδὴ ζ'

I λα σμος η μιν Χρι στε και σωτη ρι ι α ο δε σπο

της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε νου 6 λ ιν ως προ φη την

θη ρος εκ θα λατ τι ι ου Δ στερ νων Ι ω να αντης φθο

ρα ας δι αρ πα α σης 6 λ ο λον τον Α δαμ παγ γε νη

πε πτω κο ο τα 6 λ ὠδὴ ζ'

C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος 6 λ σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας 6 λ η του Πα ρα

κλη του δε φω σφο ρος χα αρις σε βα σμι α α ζει Δ του



βο αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε νης α ναρχος ευ λο

γη τος ει <sup>6</sup>λ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

Λ υ ει τα δε σμα α καιδρο σι ι ζει την φλο ο γα <sup>6</sup>λ ο

τρις σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ υ προς <sup>6</sup>λ υ μνου σι

παι αι δες ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ουρ γη

θει σα συμ πα σα κτι ι σι ι ι ι ις <sup>6</sup>λ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Θ εἰ ω κα λυ φθει εἰς ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο φω <sup>6</sup>λ

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup>λ

ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ο

ου <sup>Δ</sup>δ ο ρα τον ο οντα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω σιν <sup>6</sup>λ γε ραι ρων εν θε οῖς τοῖς α σμα σι <sup>6</sup>λ ὥδῃ γ΄

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε ε δας <sup>6</sup>λ υ

βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε νης <sup>6</sup>λ μο

νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι <sup>Δ</sup>δ Αν νης

φε ρου ου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον <sup>6</sup>λ χορὸς α΄ προς

τον δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ δ'

<sup>6</sup>λ ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος <sup>6</sup>λ

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ι

ου <sup>6</sup>λ ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο λοις <sup>Δ</sup>λ

νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε της <sup>6</sup>λ α

δου ου σι <sup>π</sup>q δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ ε'

<sup>6</sup>λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα

α α των <sup>6</sup>λ πυ ρι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο

σον <sup>6</sup>λ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι

ι ι ας <sup>Δ</sup>λ νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η λυ θε

νο ο μος <sup>6</sup>η γλωσ σο πυρ σο μορ φος Πνε ευ μα τος χα

α α ρις <sup>6</sup>

ὠδὴς'

λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α <sup>6</sup>ο

Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε νου <sup>6</sup>

ιν ως προ φη την θη ρος εκ θα λατ τι ου <sup>Δ</sup>στερ νων Ι

ω να αν της φθο ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup>ο λον τον Α

δαμ παγ γε νη η πε πτω κο ο τα <sup>6</sup>

ὠδὴ η'

υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος <sup>6</sup>σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε τας <sup>6</sup>η

του Πα ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α α ρις <sup>Δ</sup>σε

βα σμι α α ζει του βο α αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε

νης α ναρχος ευ λο γη το ος ει  
ὠδὴ ζ'

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο

ο ο γα ο τρις σο φηγ γης της θε αρ χι ας

τυ υ πος υ μνου σι παι αι δες ευ λο γει τε τον μο

ο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την

η δη μι ουρ γη θει σα συ υμ πα σα κτι ι ι σι ι ι

ι ις

# Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ὥδὴ α΄

Ἦχος δὲ Βϝ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.247\*

Βϝ

Θ εἰ ω κα λυ φθεις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο ο ο

φω 6 λερ ρη το ρευ σε Δ τον θε ο ο γρα φον νο ο ο

μον 6 λ ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ΔΙ

ου ο ρα τον ο ον τα Βϝ Δ και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω ω σιν 6 λ γε ραι αι ρων εν θε ε οισ τοις α σμα

σι 6 λ σι ὥδὴ γ΄

Βϝ

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης παι αι αι δας 6 λ

ΔΙ ΜΕΛ Βϝ υ βριν τε δυσ κα θεκτον ευ τε κνου με ε ε ε νης 6 λ

μο νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι Αν νης

φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον

δυ να α στην χορός α' και Θε ον των γνω σεων

ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο

ο ο νος Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι

ι ι ου ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο

λοις νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε ε ε

της α δου ου σι δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε

υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α α

των <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο ο ο

σον <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ας <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup>

νυν εκ Σι ων γαρ εξ ε λη η λυ θε νο ο ο ο

μος <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> η γλωσ σο πυρ σο μορ φος <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> Πνε ευ μα τος χα

α α α ρις <sup>6</sup>λ<sup>6</sup>

ὠδὴς'

<sup>Β</sup>λ<sup>Β</sup> λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι ι ι

α <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ο Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε

νου <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ιν ως προ φη η την <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> θη ρος εκ θα λατ τι

ου <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> στερ νων Ι ω ναν της φθο ρα ας δι αρ πα α α

σης <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ο λον τον Α δαμ <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> παγ γε νη η πε πτο κο



0 0 0 τὰ 6 λ

ὠδὴ ζ'

ΒϚ

Ϛ υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε ε λος 6 λ

Δι ΒϚ  
σε βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε ε

ΜΕΛ

ΠΑ

Δι

6 λ  
τας η του Πα ρα κλη του δε φω σφο ρος χα

ΒϚ

Α  
ρις σε βα σμι α α α ζει του βο αν Τρι α ας μο νη

Α  
ι σο σθε νης αν αρχος ευ λο γη το ο ο ος ει 6 λ

ὠδὴ η'

Α  
ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6 λ

ΒϚ

Λ  
υ ει τα δε σμα και δρο σι ι ζει την φλο ο ο ο

ΜΕΛ Βῆ  
 γα 6 λ ο τρι σο φεγ γης της Θε αρ χι ας τυ υ υ  
 πος 6 λ υ μνου σι Παι αι δες Δ λ ευ λο γει ει δε  
ΔΙ Βῆ  
 τον μο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε  
ΜΕΛ Βῆ  
 ε ε ε την 6 λ η δη μι ουρ γη θει ει σα συ υμ πα  
 σα κτι σι ι ι ις 6 λ

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ὥδῃ α΄

Ἦχος Δ λ Βῆ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.491\*

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω 6 λ  
 ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο μον 6 λ ι  
 λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ου

ο ρα τον ο ον τα και μυ ει ται Πνε ευματος γνω

σιν γε ραι αι ρων εν θε ε οιστοις α σμασιν

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης μο νη προσ ευ

χη της προ φη η τι δος πα λαι Α αν νης φε ρου σης

πνε ευμα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην

χορὸς α' και Θε ον των γνωσεων

Α ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο νος

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου ι σο

σθε νες σου Πνε ευματοις α πο στο ο λοις νη μερ τες

ἐξ ἐπεμψας ὡς εὐ ἐρ γε ἐτῆς ἁ δούσι δοξα

τῷ κρατεῖ σου Κύριε ὠδὴ ε'

Λυτῆ ἡρίον καθάρσιν ἀμπλακῆμα α

τῶν πυρίπνοον δεξάσθε Πνεύματος δροο

σον ὡτε ἐκναφωτομορφῆς Ἐκκλησιᾶς

Ἄνουν ἐκ Σιων ὡν γὰρ ἐξ ἑληθηθενοομός η

γλωσσόπυρσομορφος Πνεύματος χαρις ὠδὴ ε'

Ἰλασμός ἡμιν Χρίστε καὶ σωτηρίαι ο Δε

σποτῆς ἐλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου ἵν ὡς προφη

τὴν θῆρος ἐκθαλαττιοῦ Ἄσπερ νων Ἰωνα ἄν

της φθο ρα ας δι αρ πα α σης ο λον τον Α δαμ

παγ γε νη η πεπτω κο ο τα

ὥδὴ ζ'

Ὑμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας η του Πα

ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α ρις σε βα σμι α

α ζει του βο αν Τρι α ας μο νη ι σο σθε νης α

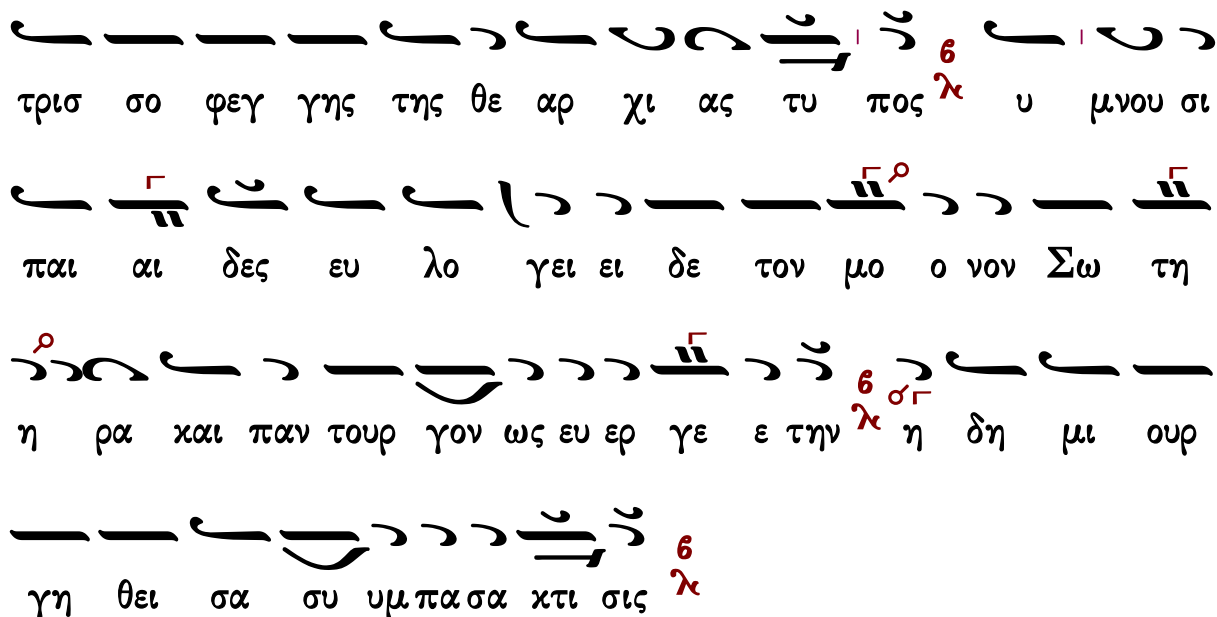
ναρχος ευ λο γη τος ει

ὥδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Λ υ ει τα δε σμα ακαιδρο σι ι ζει την φλο ο γα ο



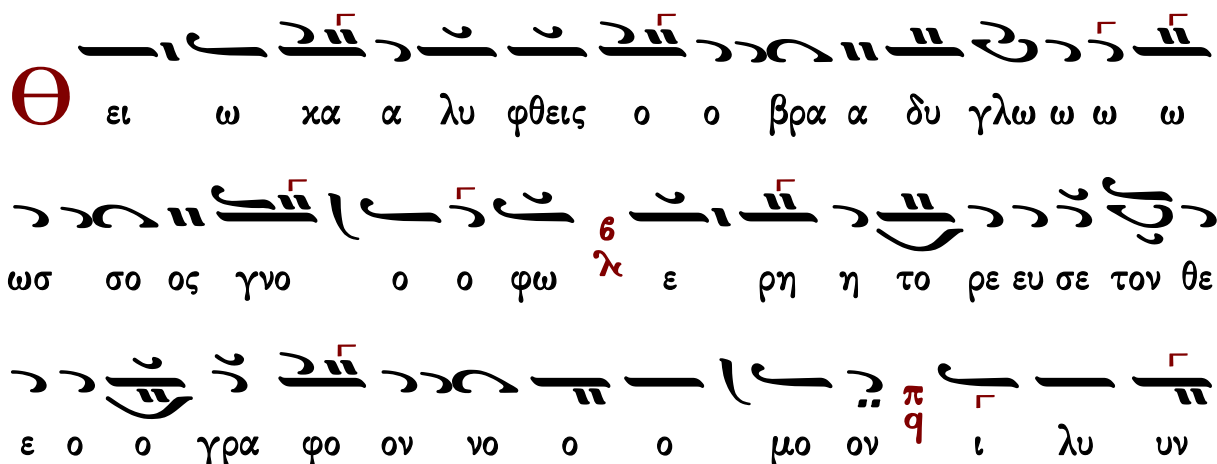
## Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>18</sup>

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστᾶριον  
2005 σ.397\*



<sup>18</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφράς τινας μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.  
[πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

γὰρ ἐκ τῆς ἑνὸς ἀξίας οὐ ματοὺς νοοο

οὐοο<sup>6</sup> οὐ<sup>λ</sup>ο<sup>λ</sup>ρα<sup>λ</sup>α<sup>λ</sup>το<sup>λ</sup>ον<sup>λ</sup>ο<sup>λ</sup>οντα<sup>λ</sup> και<sup>λ</sup>αι<sup>λ</sup>μυ<sup>λ</sup>ει<sup>λ</sup>ει<sup>λ</sup>ται<sup>λ</sup>

Πνευματοὺς γνωωω<sup>6</sup>σιν<sup>λ</sup>γε<sup>λ</sup>ραι<sup>λ</sup>αι<sup>λ</sup>αι<sup>λ</sup>

αι<sup>λ</sup>αι<sup>λ</sup>αι<sup>λ</sup>ρων<sup>λ</sup>εν<sup>λ</sup>θε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>οις<sup>λ</sup>τοις<sup>λ</sup>α<sup>λ</sup>σμα<sup>λ</sup>α<sup>λ</sup>σι<sup>λ</sup>

ιν<sup>6</sup><sup>λ</sup> και<sup>λ</sup>μυ<sup>λ</sup>ει<sup>λ</sup>ται<sup>λ</sup>αι<sup>λ</sup>Πνε<sup>λ</sup>ευ<sup>λ</sup>μα<sup>λ</sup>...

ᾠδὴ γ'

Ερρηξε γὰς ἄστρος ἡ ἡ ἡ τε ἐκνω με ε

ε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>νη<sup>λ</sup>ης<sup>λ</sup>πε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>δας<sup>6</sup><sup>λ</sup>υ<sup>λ</sup>υ<sup>λ</sup>βριν<sup>λ</sup>τε<sup>λ</sup>δυ<sup>λ</sup>υ<sup>λ</sup>υσ<sup>λ</sup>κα<sup>λ</sup>

θε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>κτο<sup>λ</sup>ον<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>ευ<sup>λ</sup>τε<sup>λ</sup>κνου<sup>λ</sup>ου<sup>λ</sup>με<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>νη<sup>λ</sup>ης<sup>λ</sup>μο<sup>π</sup>ο<sup>π</sup>νη<sup>λ</sup>

προσ<sup>λ</sup>ε<sup>λ</sup>ευ<sup>λ</sup>χη<sup>λ</sup>τη<sup>λ</sup>η<sup>λ</sup>ης<sup>λ</sup>προ<sup>λ</sup>ο<sup>λ</sup>φη<sup>λ</sup>τι<sup>λ</sup>ι<sup>λ</sup>ι<sup>λ</sup>ι<sup>λ</sup>

ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup>λ Α αν νης φε ρου ου ου σης

πνε ευ μα συ υ υν τε ε ε τριμ με ε ε ε

ε νον <sup>Α</sup>προς τον δυ υ να α α στην <sup>✱</sup> χορός α' και αι Θε ο

ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ

<sup>✱</sup> <sup>Α</sup> της προ φη η τι ι δος πα α α α α λαι αι Α

α αν νης <sup>6</sup>λ φε ρου ση ης πνε ευ μα α συν τε ε τρι

ιμ με ...

<sup>✱</sup> χορός α' και Θε ο ον τωων γνω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ ὠδή δ'

<sup>Α</sup> α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup>λ Λο ο γος προ ο ε ελ



θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου ου <sup>π 9</sup> ι

σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οις α πο ο

ο στο ο ο λοι οις <sup>6 λ</sup> νη μερ τε ες εξ ε ε πε εμ ψας

ω ω ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε της <sup>Δ</sup> α δου ου σι δο

ο ξα τω κρα α α τει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6 λ</sup> ὠδὴ ε'

Λ υ τη η ρι ο ον κα θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των <sup>6 λ</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ε ξα

α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον <sup>π 9</sup> ω τε ε

ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης Εκ κλη η η σι

ι ι α ας <sup>6 λ</sup> νυν ε εκ Σι ω ωων γαρ εξ ε λη η

η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσσο πυρ

σο ο μο ορ φο ος Πνευ μα α α α α το ος χα α α

ρις η γλωσσο πυρ σο ο μο ορ φο ος...

ᾠδὴς'

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα αμ ψα ας εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ιν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι

ι ι ου ου στε ερ νων Ι ι ω ω ω ναν της φθο

ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο

ο λον τον Α α δαμ παγ γε ε ε νη η πε πτω

ω ω κο ο ο τα α <sup>6</sup>λ

\* θη ρος εκ θα λατ τι ου ου στε ε ερ νω ων Ι ω ω ναν

της φθο ρα α α ας δι α αρ πα α α σης ο λο ον τον

Α α δαμ παγ γε νη πε πτω ω ...

ὥδῃ ζ'

ϸ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α νω ων με

ε ε λος σε ε βειν το χρυ υ υ σο ο τε ευ κτο ον α

α ψυ χο ον βρε ε ε τα ας η του Πα ρα κλη του ου

δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις σε βα α σμι α

α α ζει ει του ου βο α α αν Τρι α α ας

μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α ναρχο ος ευ λο

ο ο ο ο γη η το ο ος ει <sup>6</sup>λ

\* <sup>6</sup>λ σε βα σμι ι α α α ζει του βο ο αν <sup>γ'</sup>η Τρι ... ὠδὴ η'

<sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο <sup>χ</sup>γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup>λ

<sup>ρ</sup>υ υ ει ει τα δε ε σμα και αι αι δρο ο σι ζει

ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα <sup>6</sup>λ ο τρις σο φε εγ γης

τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο ος <sup>π</sup>η υ μνου σι

παι αι αι αι αι δες ευ λο ο ο γει ει ει δε το ο

ον μο ο ο ο ο ο νον <sup>6</sup>λ σω τη η η ρα και

πα αν του ουρ γο ον ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε  
 την η δη μι ουρ γη θει ει ει σα α συμ πα α α α  
 α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις

Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασία Πεντηκοστής  
Χρόνος διπλοῦς  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος δὲ Βϛ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.358\*

Θ ει ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω  
 ω ω ω ωσ σο ος γνο ο ο φω ερ ρη η το ρε ευ  
 σε τον θε ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον ι λυ  
 υν γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα α α α α το  
 ος νο ο ο ου ο ρα α το ον ο ο ον τα και αι

μου ει ει ται Πνευμα το ος γνω ω ω σιν <sup>6</sup>λ

γε ραι αι ρων εν θε ε ε οis τοi οis α σμα α

σιν <sup>6</sup>λ

ὥδ' ἡ γ'

Ερρη ξε ε γα α στρος η η η τε εκνω με

ε ε ε ε νη ης πε ε ε δας <sup>6</sup>λ υ υ βριν τε

δυ υ υσ κα θε εκτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε

νη <sup>π</sup>η μο ο νη προσ ε ευ χη τη η ης προ ο

φη τι ι ι ι ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup>λ Αν νης

φε ε ρου ου ου σης πνε ευ μα α συ υ υν τε ε

τρι ι ιμ με ε ε ε ε νον <sup>Α</sup>λ χορός α' προς τον δυ να α

στη ην και αι Θε ε ο ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ <sup>ῥδῆδ'</sup>

α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup>λ Λο ο γος προ

ο ε ελ θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου

ου <sup>π</sup>9 ι σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οis α

πο ο στο ο ο λοι οis <sup>6</sup>λ νη μερ τε ες ε εξ

ε ε πε εμ ψας <sup>Δ</sup>ῥ ω ω ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε

ε ε της <sup>Δ</sup>ῥ α δου ου σι δο ο ξα τω κρα α α τει ει σου ου

Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup>λ <sup>ῥδῆε'</sup>

λ υ τη η ρι ο ον κα α θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον ω τε

ε ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης εκ κλη

η σι ι ι α ας νυν ε εκ Σι ω ω ων γαρ

ε εξ ε ε λη η η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο

ο μος η γλωσ σο πυρ σο ο μο ορ φο ος Πνευ μα α α α

α το ος χα α α ρις

λα σμος η η μιν Χρι ι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα α μ ψ α ας ε εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ι ν ως



προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι  
 ι ι ου ου <sup>6</sup> λ στε ερ νων Ι ι ω ω ω ναν τη ης  
 φθο ο ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης <sup>Δ</sup>  
 ο ο ο λον τον Α α δαμ παγ γε ε ε νη η  
 πε πτω ω κο ο ο τα α <sup>6</sup> λ ῥδῆζ'  
**C** υ υμ φω νο ον ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α  
 α νω ων με ε ε λος <sup>6</sup> λ σε ε βειν το χρυ υ υ σο  
 ο τε ευ κτο ον α α ψυ χο ον βρε ε ε τα ας <sup>π 9</sup> η του  
 Πα ρα κλη του ου δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις <sup>6</sup> λ  
 σε βα α σμι α α α ζει του ου βο ο α αν τρι

α α ας μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α να

αρχο ος ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

ου ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Λ υ υ ει τα α δε ε σμα και αι αι δρο ο

σι ζει ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα ο ο τρισ

σο φε εγ γης τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο

ος υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ευ λο ο γει

ει ει ει δε το ον μο ο ο νο ον Σω τη η

η ρα και πα αν του ουρ γο ον ως ε ε ευ

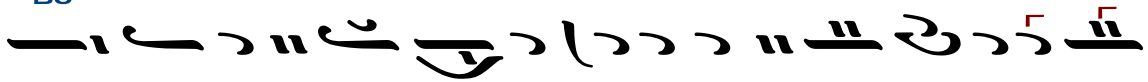
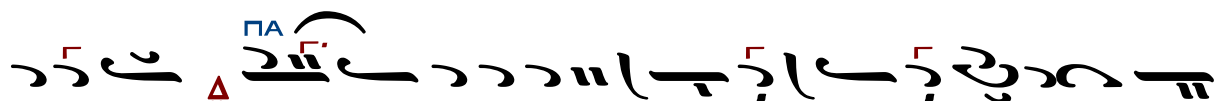
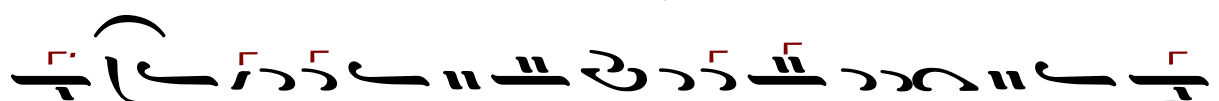
  
 ε ε ερ γε ε ε ε ε την  η δη μι ουρ γη θει ει  
  
 ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις 

## Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασία Πεντηκοστῆς  
ὥδ' ἁ'

Ἦχος  Βϩ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.200\*

    
 ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω  
  
 ωσ σο ος γνο ο ο ο φω   ε ρη η το ο ο ρε  
  
 ε ευ σε   το ον θε ε ο ο ο ο γρα α φον νο ο  
  
  ο ο μο ον  ι λυ υν γαρ ε εκ τι ι ι να  
  
 α α α α α ξα ας ομ μα α α α α το ος νο ο  
  
 ο ο ου   ο ρα α το ον ο ο ο ο ο ον τα   και

αι μυ υ ει ει ται Πνε ευ μα α α α το ος γνω ω ω ω  
 σιν <sup>6</sup> γε ραι αι αι αι αι αι ρω ω ων εν θε ε ε  
 ε οις τοι οις α α σμα α σι ιν <sup>6</sup> ϖδῆ γ'  
 ρ ρη η ξε γα στρος η η τε εκ νω με ε ε ε  
 ε νη ης παι αι αι αι δας <sup>6</sup> υ υ βρι ι ιν τε δυ υ υσ  
 κα α θε ε κτο ον ε ευ τε ε κνου με ε ε ε  
 νη ης <sup>π</sup> μο ο νη προσ ευ χη της προ φη η τι ι ι  
 δο ος πα α α α λαι αι Α α α αν νης <sup>6</sup> φε ρου ου  
 ση ης πνε ε ε ε ευ μα α συν τε ε τρι ι ιμ  
 με ε ε ε ε νον <sup>Δ</sup> προς τον δυ να α α α α α

ΒΞ

στην χορὸς α' και αι Θε ε ο ον τω ων γνω ω σε ε ω

ων 6 λ

ὠδὴ δ'

ΒΞ

Α

α ναξ α α να α α κτων οι οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο ο νος 6 λ Λο ο γος

ΠΑ

προ ο ο ε ελ θω ων πα α τρο ος ε εξ

ΝΗ

ΒΞ

α α ναι αι τι ι ι ι ου ου π 9 ι σο σθε

νε ες σου ου ου Πνε ε ε ευ μα τοι οis Α πο ο

ΔΙ

ο στο ο ο λοι οis 6 λ νη μερ τε ες ε ε ξε ε

ε πε ε εμ ψα ας ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε

ΒΞ

ΝΗ

της Α α δου ου ου σι δο ο ξα α α τω κρα α α α

ΜΕΛ

ΒΞ

τει σου ου Κυ υ ρι ι ε ε

ὠδὴ ε'

ΒΞ

Λ υ τη η ρι ο ον κα α θα α αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α α των πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε πνε ευ μα α το ος δρο ο ο ο σο

ΓΑ ΒΞ

ον ω τε ε κνα φω ω το ο μο ο ορ φα τη ης Εκ

κλη η σι ι ι α ας νυν ε εκ Σι ι ι ω

ΜΕΛ

ΔΙ

ω ω ω ων γαρ εξ ε λη η η η η η λυ υ

ΓΑ

ΔΙ

θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσ σο πυ υρ σο ο

ΒΞ

ο μο ο ορ φος Πνε ευ μα α α α α το ος χα α α α

ρις

ὠδὴ ε'

ΒΞ

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης

ΠΑ

ε ε λα αμψα ας ε εκ τη ης Παρ θε ε ε ε

νου ου ι ιν ως προ φη η η την θη η ρο ος ε

ε εκ θα λα α ατ τι ι ι ου ου στε ερ νω ω ω ν

ΜΕΛ

Ι ι ω ω ω ναν της φθο ρα α α α α ας

δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο ο λο ον

ΒΞ

τον Α δαμ πα α αγ γε ε νη η η πε ε ε ε

ε πτω ω χο ο ο ο τα

ὥδῃ ζ'

Ϟ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α

α α νω ων με ε ε ε ε λος <sup>6</sup> σε ε βει ει ειν το

χρυ υ υ σο ο τε ευκτο ον α α ψυ υ χον βρε

ε ε τα ας <sup>η</sup> η του Πα ρα κλη η του ουδε ε φω

σφο ο ο ο ο ρο ος χα α α α ρις <sup>6</sup> σε βα α σμι

ι α α α α α α ζει του ου βο α α αν Τρι

α α ας μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε νης <sup>Δ</sup> α α να

α αρ χος ος ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει ει <sup>6</sup>

ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου ου ου με

εν το ον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup>

ὠδὴ ἡ'



Bx  
λ υ υ ει ει ει τα δε σμα και αι αι δρο ο σι ζει  
MEΛ Bx  
ει ει ει ει τη ην φλο ο ο ο γα 6 λ ο τρις ο φεγ γης  
ΠΑ  
τη ης θε ε α αρ χι ι α ας τυ υ υ υ πο ος π ρ  
MEΛ Bx  
υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ε ε ευ λο ο γει  
ει ει δε το ο ον μο ο ο ο νο ον 6 λ Σω  
ΔΙ MEΛ ΔΙ  
τη η η η η ρα και πα αν τουρ γο ο ον  
Bx  
ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε την Α λ η δη μι ουρ  
γη θει ει ει ει ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι  
6 λ  
ι σι ι ι ι ις

## φδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Κανὼν α΄

ἤχος πλ.α΄

«**Σ**ὲ τὴν ὑπὲρ νοῦν καὶ λόγον Μητέρα Θεοῦ, τὴν ἐν χρόνῳ τὸν ἄχρονον ἀφράστως κυήσασαν, οἱ πιστοὶ ὁμοφρόνως μεγαλύνομεν».

**Σ**ὲ τὸν λυτρωτὴν τοῦ κόσμου, Χριστὸν τὸν Θεόν, οἱ ἀπόστολοι βλέποντες, ἐνθέως ὑψούμενον, μετὰ δέους σκιρτῶντες ἐμεγάλυνον.

**Σ**οῦ τὴν θεωθεῖσαν σάρκα ὀρῶντες Χριστέ, ἐν τῷ ὕψει οἱ ἄγγελοι, ἀλλήλοις διένευον Ἀληθῶς οὗτός ἐστιν ὁ Θεὸς ἡμῶν.

**Σ**ὲ τῶν ἀσωμάτων τάξεις Χριστέ ὁ Θεός, ἐν νεφέλαις αἰρόμενον ἰδοῦσαι ἐκραύγαζον· τῷ τῆς δόξης βασιλεῖ πύλας ἄρατε.

**Σ**ὲ τὸν καταβάντα ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς, καὶ τὸν ἄνθρωπον σώσαντα, καὶ τῇ ἀναβάσει σου ἀνυψώσαντα, τοῦτον μεγαλύνομεν.

**Χ**αῖρε Θεοτόκε Μήτηρ Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, ὃν ἐκύησας, σήμερον, ἐκ γῆς ἀνιπτάμενον, σὺν ἁγγέλοις ὀρῶσα ἐμεγάλυνες.

Κανὼν β΄

ἤχος δ΄

Ἀπας γηγενής

**Ἄ**γγελοι, τὴν ἄνοδον τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·  
πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

**Ω** τῶν δωρεῶν, τῶν ὑπὲρ κατάληψιν! ὦ μυστηρίου φρικτοῦ! πάντων ὁ δεσπότης γάρ, ἐκ γῆς ἀπαίρων πρὸς τὰ οὐράνια, τοῖς μαθηταῖς ἀπέστειλε, Πνεῦμα τὸ ἅγιον, τὸ φωτίσαν τούτων τὴν διάνοιαν, καὶ πυρίνους τελέσαν ἐν χάριτι.

**Ἄ**γγελοι, τὴν ἄνοδον τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·  
πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

**Σ**τίφει μαθητῶν, ὁ Κύριος ἔφησεν· Ὑμεῖς καθίσατε, εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ ἐκπέμψω ὑμῖν Παράκλητον, ἄλλον, Πατρί τὸν σύνθρονον, καὶ ὁμοτίμον, ὃν ὁρᾶτε, ἀναλαμβανόμενον, καὶ νεφέλῃ φωτὸς ἐποχοούμενον.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

**Ἄ**γγελοι, τὴν ἄνοδον τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·  
πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

**Ἦ**ρθη ἐμφανῶς, ἡ μεγαλοπρέπεια, ἄνθην σαρκὶ πτωχεύσαντος, τῶν οὐρανῶν, τοῦ καὶ συνεδρία Πατρὸς τετίμηται, φύσις ἡμῶν ἡ ἐκπτωτος. Πανηγυρίσωμεν, καὶ συμφώνως πάντες ἀλαλάζωμεν, καὶ κροτήσωμεν χεῖρας γηθόμενοι.

**Κ**αὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

**Ἄ**γγελοι, τὴν ἄνοδον τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·

πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Φῶς τὸ ἐκ φωτός, ἐκλάμψαν πανάμωμε, ἐκ σοῦ ἀνέτειλε, καὶ τὴν ἀμαυρότητα, τῆς ἀθεΐας πᾶσαν διέλυσε, καὶ τοὺς νυκτὶ καθεύδοντας ἐφωταγώγησε· διὰ τοῦτο πάντες κατὰ χρέος σε, εἰς αἰῶνας αἰεὶ μακαρίζομεν.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Γαβριὴλ Κουντιάδου

ὠδὴ θ', κανὼν α'

Ὁ εἰρμός

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.362\*

ε̣ την̣ υ̣ περ̣ νουν̣ και̣ λο̣ γον̣ μη̣ τε̣ ε̣ ρα̣ Θε̣ ου̣

την̣ εν̣ χρο̣ νω̣ τον̣ α̣ χρο̣ νον̣ α̣ φρα̣ α̣ α̣ στω̣ς̣ κυ̣ η̣

σα̣σαν̣ οι̣ πι̣ στοι̣ ο̣ μο̣ φρο̣ νως̣ με̣ γα̣ λυ̣ νο̣ ο̣ μεν̣

ε̣ τον̣ Λυ̣ τρω̣ την̣ του̣ κο̣ σμου̣ Χρι̣ στο̣ ον̣ τον̣ Θε̣ ον̣

οι̣ α̣ πο̣ στο̣ λοι̣ βλε̣ πον̣ τες̣ εν̣ θε̣ ε̣ ε̣ ως̣ υ̣ ψου̣ με̣

νον̣ με̣ τα̣ δε̣ ου̣ς̣ σκιρ̣ των̣ τες̣ ε̣ με̣ γα̣ λυ̣ υ̣ νον̣

**C** ου την θε ω θει σαν σαρ κα ο ρω ωντες Χρι στε <sup>ν'</sup> η εν

τω υ ψει οι αγ γελοι αλ λη η η λους δι ε νευ

ον <sup>χ</sup> η α λη θως ου τος ε στι ιν ο Θε ος η η μων <sup>χ</sup> η

**C** ε των α σω μα των τα ξεις Χρι στε ε ο Θε ος <sup>ν'</sup> η

εν νε φε λαις αι ρο μενον ι δου ου ου σαι ε κραυ γα

ζον <sup>χ</sup> η τω της δο ξης βα σι λει ει πυ λας α ρα α τε <sup>χ</sup> η

**C** ε τον κα τα βαν τα ε ως ε σχα α του της γης <sup>ν'</sup> η και

τον α α αν θρω πον σω σαν τα <sup>χ</sup> η και τη α να βα

σει σου α νυ ψω σαν τα του τον με γα λυ νο ο μεν <sup>χ</sup> η

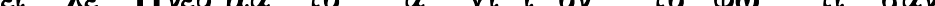
**X** αι ρε Θε ο το κε μη τηρ Χρι στου ου του Θε ου <sup>ν'</sup> η

ὥδ' ἢ θ', κανὼν β'

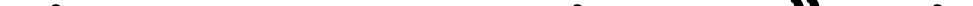
ἤχος ὁ ὡς Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανάδοση 1991 σ.364\*

α παι ρων προς τα ου ρα νι α <sup>6</sup> <sup>7</sup> τοις μα θη ταις α


  
 πε σται λε Πνευ μα το α γι ι ον  το φω τι σαν του των

την δι α νοι αν και πυ ρι νους τε λε σαν εν χα ρι τι



Α γ γε λοι την α α νο δον του Δε σπο του ο ρων


 τες εξ ε πλητ τον το


  
 πο της γη ης εις τα α α νω


 τι φειμαθῆ των ο Κυ ρι ος ε φη σεν υ μεις κα

θι σα τε <sup>6</sup><sub>λ</sub> εις Ι ε ρο σο λυ υ μα κα γω εκ πε εμφω

υ μιν Πα ρα κλητον <sup>6</sup> αλ λον Πα τρι τον συν θρο νον κα

μοι ο μο τι ι μον  ον ο ρα τε α να λαμ βα νο με


  
 νὸν καὶ νεφέλῃ τῷ ἐποχούμενῳ

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω

Πνευ μα τι

Α γ γε λοι την α α νο δον του Δε σπο του ο ρων

τες εξ ε πλητ τον το πως με τα δο ξης ε πη ηρθη α

πο της γη ης εις τα α α νω

Η ρ θηεμφανως η με γα λο πρε πει α α νωθεν

των ουρα νων του σαρ κι πτω χευ σα αντος και συν ε δρι

ι α Πα τρος τε τι μηται φυ σις η μων η εκ πτω

τος παν η γυ ρι σω ω μεν και συμ φω νως παν τες α

λα λα ξω μεν και κρο τη σω μεν χει ρας γη θο μενοι

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην

Αγ γελοι την α α νο δον του Δε σπο του ο ρων

τες εξ ε πλητ τον το πως με τα δο ξης ε πη ηρθη α

πο της γη ης εις τα α α νω

Φως το εκ φω τος εκ λαμ ψαν Παν α μω με εκ σου α

νε τει λε και την α μαυ ρο τη η τα της α θε ι ας

πα α σαν δι ε λυ σε και τους νυ κτι κα θευ δον τας

ε φω τα γω γη η σε δι α του το παν τες κα τα χρε

ος σε εις αι ω νας α ει μακα ρι ζομεν



# Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὠδὴ θ', κανὼν α'

Ὁ εἰρμός

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.401#

C ε την υ περ νουν και λο γον Μη τε ρα Θε  
ου η την εν χρο νω τον α χρο νον α φρα α στως κυ η  
σα σαν οι πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο ο  
μεν

C ε τον λυ τρω την του κο σμου Χρι στον τον Θε  
ον οι α πο στο λοι βλε πον τες εν θε ε ως υ ψου με  
νον με τα δε ε ους ο ρων τες ε με γα α λυ υ  
νον

**C** ε τον κα τα βαν τα ε ως ε σχα α του της γης **π q**

και τον αν θρω πον σω σαν τα **χ q** και τη α να βα σει

σου α νυ ψω σαν τα του τον με γα λυ υ νο ο

**χ q**  
μεν

**X** αι ρε Θε ο το κε Μη τηρ Χρι στου του Θε

ου **ν' η** ον ε κυ υ η σας ση μερον εκ γη ης α νι πτα με

νον **χ q** συν αγ γε ε λοις ο ρω σα ε με γα α λυ υ

**χ q**  
νες

ὠδὴ θ', κανὼν θ'

Ἄπας γηγενής

Ἦχος **Δ** **δλ** B8

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.403#

Α γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω

Ω των δω ρε ων των υ περ κα τα λη ψιν ω μυ

στη ρι ου φρι κτου παν των ο δε σπο ζω ων γαρ εκ γης

α παι αι ρων προς τα ου ρα νι α τοις μα θη

ταις α πε στει λε Πνευ μα το α α γι ι ον το

φω τι σαν του των την δι α νοι αν και πυ ρι

νους τε λε σαν εν χα ρι τι

Α γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>

**Κ** τι φει μα θη των ο Κυ ρι ος ε φη σεν υ μεις κα

θι σα τε εις Ι ε <sup>π</sup>ρο σο λυ υ μα <sup>π</sup>κα γω εκ

πε εμ ψω υ μιν Πα ρα α κλη τον α αλ λον <sup>6</sup> Πα

τρι τον συν θρο νον κα μοι ο μο τι ι μον <sup>Δ</sup> ον ο

ρα α α α τε α να λαμ βα νο με νον <sup>6</sup> και νε

φε λη φω τος ε πο χου με νον <sup>6</sup>

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ

μα τι <sup>6</sup>

Α γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω

Η ρ θη εμφανως η με γα λο πρε πει α α νωθεν

των ου ρα νων του σαρ κι πτω χευ σα αν τος και

συν ε δρι ι α Πα τρος τε τι μη ται φυ υ σις

η μων η εκ πτω τος πα νη γυ ρι ι σω ω μεν

και συμ φω ω ω ω νως παν τες α λα λα ξω μεν και

κρο τη σω μεν χει ρας γη θο μενοι

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην <sup>6</sup>λ

Α γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup>λ πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λ

Φ ως το εκ φω τος εκ λαμ ψαν παν α μω με εκ σου

α νε τει λε <sup>6</sup>λ και την α μαυ ρο τη η τα της α

θε ι ας πα σαν δι ε λυ σε <sup>6</sup>λ και τους νυ κτι

κα θευ δον τας ε φω τα γω ω γη η σε <sup>6</sup>λ δι

α του ου ου ου το παν τες κα τα χρε ος σε <sup>6</sup>λ εις αι

ω νας α ει μα κα ρι ζο μεν <sup>6</sup>λ

# Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Χαίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος· ἅπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν.

Σύντομοι

Ἀργαὶ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ὥδῃ θ'

ἦχος δ' ᾠδὴ Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.430#

Χ α ι ρ ο ι ς α ν α σ σ α α μ η τ ρ ο π α α ρ θ ε ν ο ν κ λ ε ε ο ς  
α π α ν γ α ρ ε υ δ ι ν η τ ο ν ε υ λ α λ ο ν σ τ ο μ α ρ η τ ρ ε ε υ ο ν  
ο υ σ θ ε ν ι σ ε μ ε λ π ε ι ν α ξ ι ι ω ς ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ ς  
α π α ς σ ο υ τ ο ν τ ο ο κ ο ν ν ο ε ι ν ο θ ε ν σ ε σ υ μ φ ω ν ω ς δ ο ξ α

ζο με ε ε ε εν 6 λ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ψδὴ θ'

Ἦχος δὲ Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.450\*

Χαι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος 6 λ α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα 6 λ ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως 6 λ ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ειν 6 λ ο θεν σε συμ φω

ω νως δο ξα α ζο με ε ε ε εν 6 λ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

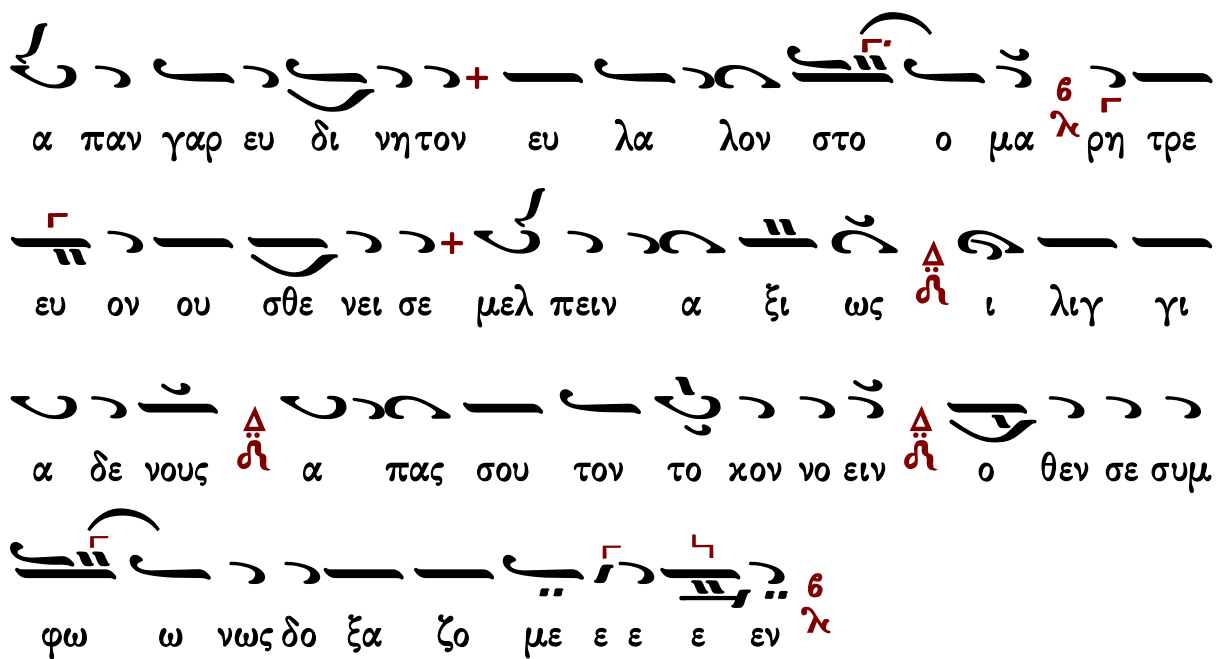
Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ψδὴ θ'

Ἦχος δὲ Β8

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

Χαι ροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος 6 λ



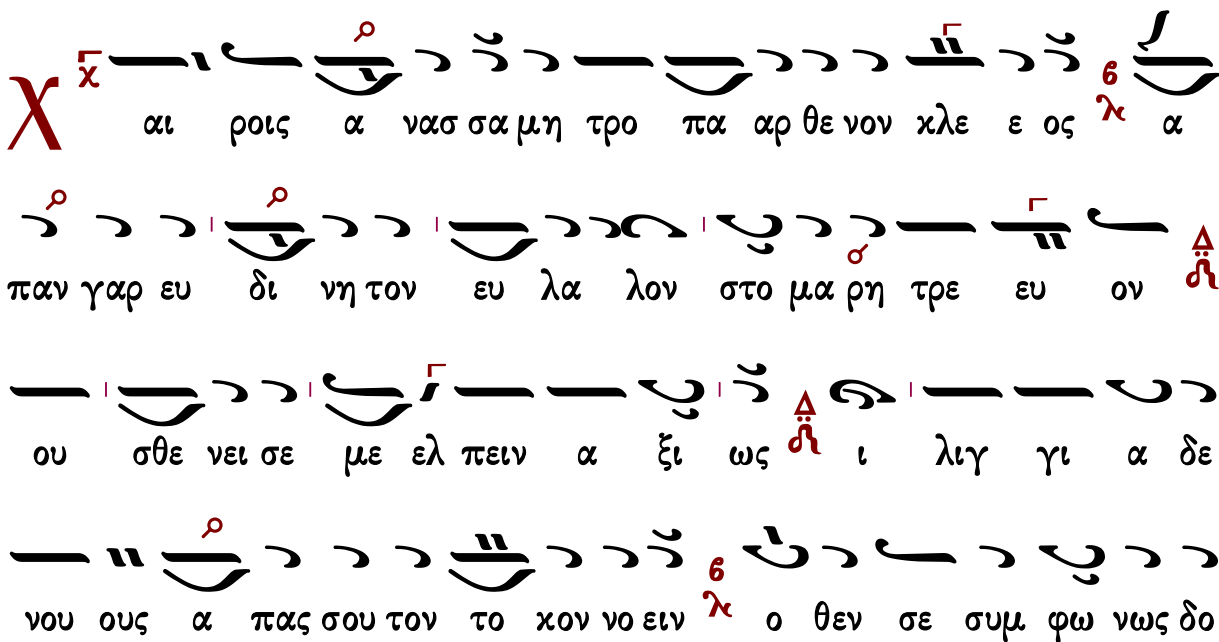


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ψδὴ θ'

Ἦχος Β

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*



Ξα ζομεν <sup>6</sup>λ

Ἀρχή

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>ϡ Bx

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.404\*

**Χ**αι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ  
θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος <sup>6</sup>λ α παν γα αρ  
ε ευ δι ι νη η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο μα <sup>6</sup>λ ρη  
τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν α  
α ξι ι ι ω ως <sup>π9</sup> ι λιγ γι α α δε ε ε  
νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο κο ον νο  
ο ο ειν <sup>Δ</sup> ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ξα α ζο



Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.71#

Ξα α ζο ο με ε ε ε εν 6 λ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ὥδῃ θ'

Ἦχος δὲ Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.366\*

Χαι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ  
θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος 6 λ α παν γα αρ  
ε ε ευ δι νη η τον ε ευλα λο ον στο ο ο μα  
α 6 λ ρη τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν  
α α ξι ι ι ω ως 9 ι λιγ γι α α δε ε  
ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο χο  
ον νο ο ο ειν Δ ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ο

Ξα α ζο ο με ε ε ε εν 6 λ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασία Πεντηκοστής  
ὁδὴ θ'

Ἦχος δὲ Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.206\*

Ββ  
Χαι αι ροις Α α να ασ σα μη η η

τρο ο πα α αρ θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ε ος 6 λ

Δι Ββ  
α παν γα αρ ε ε ευ δι ι νη η η το ον ε ευ λα

α α α α λο ον στο ο ο ο μα 6 λ ρη τρε ευ ον ου ου

ΠΑ  
ου σθε ε νει ει σε ε με ελ πει ει ν α α ξι ι

ΝΗ Ββ  
ι ι ω ως π ρ ι λιγ γι α α α δε ε ε

ΜΕΛ Δι  
νους α α πας σου ου το ον το ο ο ο ο ο

χον νο ο ο ειν <sup>Β</sup>ο ο θε ε εν σε ε ε συμ

<sup>ΝΗ</sup>φω <sup>ΜΕΛ</sup>ωωω νως δο ο <sup>Β</sup>ξα α ζο ο με ε ε ε εν <sup>6</sup>λ

# Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Πεντηκοστῆς

Ψυχασάβατον

ἤχος πλ.β'

- α Ὡς ἐν ἠπείρῳ πεζεύσας ὁ Ἰσραήλ, ἐν ἀβύσσῳ ἵχνεσι, τὸν διώκτην Φαραῶ, καθορῶν ποντούμενον, Θεῷ ἐπινίκιον ὠδὴν, ἐβόα, ἄσωμεν.
- γ Οὐκ ἔστιν ἅγιος ὡς σύ, Κύριε ὁ Θεός μου, ὁ ὑψώσας τὸ κέρας, τῶν πιστῶν σου ἀγαθέ, καὶ στερεώσας αὐτούς, ἐν τῇ πέτρα τῆς ὁμολογίας σου.
- δ Χριστός μου δύναμις, Θεὸς καὶ Κύριος, ἡ σεπτὴ Ἐκκλησία θεοπρεπῶς, μέλπει ἀνακράζουσα, ἐκ διανοίας καθαρᾶς, ἐν Κυρίῳ ἐορτάζουσα.
- ε Τῷ θείῳ φέγγει σου ἀγαθέ, τὰς τῶν ὀρθριζόντων σοὶ ψυχὰς, πόθῳ καταύγαυσον δέομαι, σὲ εἰδέναι Λόγε Θεοῦ, τὸν ὄντως Θεόν, ἐκ ζόφου τῶν πταισμάτων ἀνακαλούμενον.
- ς Τοῦ βίου τὴν θάλασσαν, ὑφουμένην καθορῶν, τῶν πειρασμῶν τῷ κλύδωνι, ἐν εὐδίῳ λιμένι σου προσδραμῶν, βοῶ σοί, Ἀνάγαγε ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου πολυέλεε.
- ζ Δροσοβόλον μὲν τὴν κάμινον εἰργάσατο, ἄγγελος τοῖς δόσις Παισί, τοὺς Χαλδαίους δὲ καταφλέγον πρόσταγμα Θεοῦ, τὸν τύραννον ἔπεισε βοᾶν. Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- η Ἀἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- Ἡ ἐκστηθι φρίττων οὐρανέ, καὶ σαλευθήτωσαν τὰ θεμέλια τῆς γῆς· ἰδοὺ γὰρ ἐν νεκροῖς λογίζεται, ὁ ἐν ὑψίστοις οἰκῶν, καὶ τάφῳ σμικρῷ ξενοδοχεῖται, ὃν παῖδες εὐλογοεῖτε, ἱερεῖς ἀνυμνεῖτε, λαὸς ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας

Σύντομοι

Σύντομοι

ὠδὴ α'

Ἦχος λ̣ π̣ Ḅx

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Αναστασιματάριον  
1905 σ.283#

ω ς εν η πει ρω πε ζευ σας ο Ι σρα ηλ εν

α βυσσω ι χνεσι τον δι ω κτην Φα ρα ω κα θο

ρων πον του με νον Θε ω ε πι νι κι ον ω δην ε

βο α α σω ω με εν ⲁ ⲙⲉⲛⲉ ⲱⲃⲉⲛ

Ⲑ υκ ε στιν Α γι ος ως συ Κυ ρι ε ο Θε

ος μου ο υ ψω σας το κε ρας των πι στων σου Α γα θε ⲁ

και στε ρε ω σας η μας χρὸς ἄ εν τη πε τρα της ο

μο λο γι α ας σου ⲁ ⲱⲃⲉⲛ

Ⲑ ρι στος μου δυ να μεις Θε ος και Κυ ρι ος η σε ⲁ

πτη Εκ κλη σι α θε ο πρε πως μελ πει α να κρα

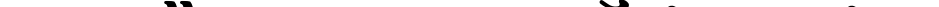
ζου σα εκ δι α νοι ας κα θα ρας εν Κυ ρι ω



ε ορ τα ζου ουσα 6.



ὥδ' ἔ


 ω θει ω φεγ γει σου Α γα θε τας των ορ θρι ζον

των σοι ψυχας ποθωχα τα αυγα στον δεομαι σε ει

δε ναι Λο γε Θε ου τον ον τως Θε ον εκ ζο φου των

πται σμα α των α να κα λου με ε νον ὠδὴ στ'

ὥδ' ἔστ'

Του βι ου την θα λασ σαν υ ψου με νην κα θο ρων

των πειρασμων τω κλυδωνι τω ευδιωλι


  
 με νι σου προσ δρα μων βο ω σοι α να γα γε εκ φθο

ρας τηνζω ην μου Πο λυ ε λε ε ε



ῶδὲ ζ'


 Α ρ ο σ ο β ο λ ο ν μ ε ν τ η ν κ α μ ι ν ο ν ε ι ρ γ α σ α τ ο Α γ

γελος τοις ο σι οις παι σι τους Χαλ δαι ους δε κα τα φλε

γον προσ τα γμα Θε ου τον τυ ραννον ε πει σε βο αν

ευ λο γη τος ει ο Θε ος ο των πα τε ρων η μω

ων ωδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

χορός β'

Ἦχος λ π Δι'

Αθανασίου Καραμάνη  
Νέα Μουσική Κυψέλη  
Μ. Εβδομάς, 1971 σ.283#

Ε κ στη θι φριτ των ουρα νε και σα λευ θη τωσαν τα θε

με λι α της γης ι δου ου γαρ εν νε κροις λο γι ζε ται ο

εν υ ψι στοις οικων και τα φω σμι κρω ξε νο δο

χει ται ον Παι δεσ ευ λο γει τε Ι ε ρει εις α  
νυ μνει τε λα ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας του  
ους αι ω νας

## Τιμιωτέρα ἡχος πλ.β΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος πλ.β΄

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἡγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α  
φθο ο ρως Θε ον Λο γο ον τε κου σαν την ον τως Θε ο  
το κον σε με γα λυ νο ο με εν

Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος πλ.β'

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὑμνεῖν σε Θεοτόκε· ὁμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας τὸν ἔνθεον ὑμῶν· σὺ γὰρ Χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν

Σύντομος

Ἀργή: Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

## Σύντομος

Ἦχος Πά

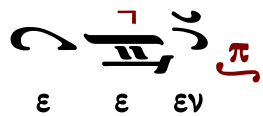
ὥδη θ'

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φη μει ει ν προς α ξι  
αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνει ν σε  
Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την  
πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η  
μων συ υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα  
λυ νο με ε εν

Ἀεγὶ

Α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ  
 φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι  
 λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ  
 χο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο  
 ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ουσα α τη  
 η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ τον  
 πο θον οι οι οι οι δα ας το ον ε ε εν θε ε  
 ε ο ον η η η μων συ υ γαρ Χρι στι α α  
 νων ει ει προ ο στα α τισ σε ε ε με ε γα λυ νο με



# Τῆς Πεντηκοστῆς

Πεζαὶ καὶ ἱαμβικαὶ

Τῇ Κυριακῇ τῆς Πεντηκοστῆς, τῇ Δευτέρᾳ τοῦ ἁγίου Πνεύματος καὶ ἐν τῇ ἀποδόσει αὐτῆς, τῷ Σαββάτῳ πρό  
τῶν ἁγίων Πάντων.

Ῥδὴ α'

ἥχος βαρὺς

Πόντῳ ἐκάλυψε Φαραὼ σὺν ἄρμασιν, ὁ συντρίβων πολέμους ἐν ὑψηλῷ βραχίονι, ἄσωμεν  
αὐτῷ, ὅτι δεδόξασται.

ἥχος δ'

Θεῖῳ καλυφθεὶς ὁ βραδύγλωσσος γνόφῳ. Ἐρρητόρευσε τὸν θεόγραφον νόμον· ἵλυν γὰρ  
ἐκτινάξας ὄμματος νόου, ὁρᾷ τὸν ὄντα, καὶ μυεῖται Πνεύματος γνῶσιν, γεραίρων ἐνθέοις  
τοῖς ἄσμασιν.

Ῥδὴ γ'

ἥχος βαρὺς

Τὴν ἐξ ὕψους δύναμιν τοῖς μαθηταῖς, Χριστέ, ἕως ἂν ἐνδύσησθε ἔφης, καθίσαιτε ἐν  
Ἱερουσαλὴμ, ἐγὼ δὲ ὡς ἐμὲ Παράκλητον ἄλλον, Πνεῦμα τὸ ἐμὸν τε καὶ Πατρός  
ἀποστελῶ, ἐν ᾧ στερεωθήσεσθε.

ἥχος δ'

Ἐρρηξε γαστρός ἡτεκνωμένης πέδας, ὕβριν τε δυσκάθεκτον εὐτεκνουμένης, μόνη  
προσευχῇ τῆς προφήτιδος πάλαι Ἀννης, φερούσης πνεῦμα συντετριμμένον, πρὸς τὸν  
δυναστήν, καὶ Θεὸν τῶν γνώσεων.

Ῥδὴ δ'

ἥχος βαρὺς

Κατανοῶν ὁ προφήτης, τὴν ἐπ' ἐσχάτων σου Χριστέ ἔλευσιν, ἀνεβόα· τὴν σὴν εἰσακήκοα  
Κύριε δυναστεῖαν, ὅτι πάντας τοῦ σῶσαι, τοὺς χριστοὺς σου ἐλήλυθας.

ἥχος δ'

Ἀναξ ἀνάκτων, οἷος ἐξ οἴου μόνος, Λόγος προελθὼν, Πατὴρ ἐξ ἀναιτίου. Ἰσοσθενές σου  
Πνεῦμα τοῖς ἀποστόλοις, νημερτὲς ἐξέπεμψας ὡς εὐεργέτης, ἄδουσι· Δόξα τῷ κράτει  
σου, Κύριε.

Ῥδὴ ε'

ἥχος βαρὺς

Τὸ διὰ τὸν φόβον σου ληφθὲν Κύριε, ἐν γαστρὶ τῶν προφητῶν, καὶ κυθὲν ἐπὶ τῆς γῆς  
πνεῦμα σωτηρίας, ἀποστολικάς καρδίας κτίζει καθαρὰς, καὶ ἐν τοῖς πιστοῖς εὐθὲς  
ἐγκαινίζεται· φῶς γὰρ καὶ εἰρήνη, διότι τὰ σὰ προστάγματα.

ἥχος δ'



Αυτήριον κάθαρσιν ἀμπλακημάτων, πυρίπνοον δέξασθε Πνεύματος δρόσον, ὃ τέκνα φωτόμορφα τῆς Ἐκκλησίας· νῦν ἐκ Σιών γὰρ ἐξελήλυθε νόμος, ἡ γλωσσοπυρσόμορφος Πνεύματος χάρις.

Ῥδὴ ς' ἤχος βαρὺς

Ναυτιῶν τῷ σάλῳ, τῶν βιοτικῶν μελημάτων, συμπλόοις ποντούμενος ἁμαρτίαις, καὶ ψυχοφθόρῳ θηρὶ προσριπτούμενος, ὡς ὁ Ἰωνᾶς Χριστὲ βοῶ σοι· Ἐκ θανατηφόρου με βυθοῦ ἀνάγαγε.

ἤχος δ' Ἰλασμός ἡμῖν Χριστὲ καὶ σωτηρία, ὁ Δεσπότης ἔλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου, ἵν ὡς προφήτην θηρὸς ἐκ θαλαττίου, στέρνων Ἰωνᾶν, τῆς φθορᾶς διαρπάσῃς, ὅλον τὸν Ἀδάμ, παγγενῇ πεπτωκότα.

Ῥδὴ ζ' ἤχος βαρὺς

Οἱ ἐν καμίνῳ τοῦ πυρὸς ἐμβληθέντες ὅσοι παῖδες, τὸ πῦρ εἰς δρόσον μετέβαλον, διὰ τῆς ὑμνωδίας, οὕτω βοῶντες· Εὐλογητὸς εἶ Κύριε, ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν.

ἤχος δ' Σύμφωνον ἐθρόησεν ὀργάνων μέλος, σέβειν τὸ χρυσότευκτον ἄψυχον βρέτας. Ἡ τοῦ Παρακλήτου δὲ φωσφόρος χάρις, σεβασμιάζει τοῦ βοᾶν· Τριάς μόνη, ἰσοσθενής, ἀναρχος, εὐλογητὸς εἶ.

Ῥδὴ η' ἤχος βαρὺς

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον. Ἀφλεκτος πυρὶ ἐν Σινᾷ προσομιλοῦσα, βᾶτος Θεὸν ἐγνώρισε, τῷ βραδυγλώσσῳ καὶ δυσήχῳ Μωσεῖ καὶ παῖδας ζῆλος Θεοῦ, τρεῖς ἀναλώτους τῷ πυρὶ ὑμνωδοὺς ἔδειξε· πάντα τὰ ἔργα τὸν Κύριον ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

ἤχος δ' Λύει τὰ δεσμὰ καὶ δροσίζει τὴν φλόγα, ὁ τρισσοφεγγῆς τῆς θεαρχίας τύπος, ὑμνοῦσι παῖδες, εὐλογεῖ δὲ τὸν μόνον, Σωτῆρα καὶ παντουργόν, ὡς εὐεργέτην, ἡ δημιουργηθεῖσα σύμπασα κτίσις.

Σύντομοι

Ἀργαί

|                         |                         |                            |
|-------------------------|-------------------------|----------------------------|
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου     | Γαβριὴλ Κουντιάδου      | Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου | Κωνσταντίνου Παπαγιάννη | Κωνστ. Παπαγιάννη)         |

Σύντομοι

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πεζαὶ καὶ ἱαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ βάσις παραμείνῃ ἡ αὐτή.

Ὁ Γα νὰ γίνεταί Βου καὶ τανάπαλιν.

ῥοδὴ α'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Π ο ον τω ε κα λυ ψε Φα ρα ω συν αρ μα σιν  
ο συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι ο  
νι α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται

ῥοδὴ α'

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω  
ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον  
λυν γαρ εκ τι να α ξας ομ μα τος νο ο ου  
ο ρα τον ο ον τα και μυ ει ται Πνευ μα τος γνω

σιν <sup>6</sup> γε ραι αι ρων εν θε ε οιστοις α σμασιν <sup>6</sup>

ῥδὴ γ'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.421#

Τ ην εξ υ ψους δυ ναμιντοις μα θη ταις Χρι στε ε ως  
αν εν δυ υ ση σθε ε ε φης κα θι σα τε εν Ι ε

ρου σα λημ <sup>Α</sup> ε γω δε ως ε με ε Πα ρα κλη τον α

αλ λον <sup>η</sup> Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α πο στε

λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε <sup>η</sup>

ῥδὴ γ'

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.422#

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας <sup>6</sup> υ βριν <sup>6</sup>

τε δυ σ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης <sup>6</sup> μο νη προσ ευ

χη της προ φη τι δος πα α λαι  Αν νης φε ρου ου

σης Πνευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην 

 χορὸς α' και Θε ον των γνω σεων 

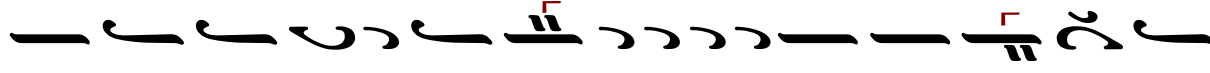
ψδὴ δ'

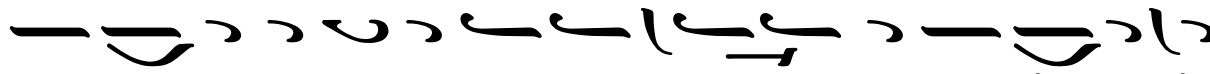
Ἦχος  Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.423#

 Κα τα νο ω ων ο Προ φη η της την επ ε

 σχα των σου Χρι στε ε ε λευ σιν α νε βο ο α  την

 σην ει σα κη κο α Κυ υ ρι ε δυ να στει ει αν ο

 τι παν τας του σω σαι τους χρι στου ους σου ε λη η λυ

 υ θας 

ψδὴ δ'

Ἦχος  Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.423#

Α να ξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος Λο

γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου ι σο σθε νες σου

Πνε ευ μα τοις Α πο στο ο λοις νη μερ τες ε ξε πεμ

ψας ως ευ ερ γε ε της α δου σι χορὸς β' δο ξα τω κρα τει

σου Κυ ρι ε

ῥοδὴ ε'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.424#

Τ ο δι α τον φο ο βον σου λη φθεν Κυ ρι ε εν

γα στρι των προ φη των και κυ η θεν ε πι της γης πνευ

μα σω τη ρι ι ας α πο στο λι κας καρ δι ας κτι

ζει κα θα ρας και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ και νι

ζε ται φως γαρ και ει ρη η νη δι ο τι τα σα προ στα α

γμα α τα

ᾠδὴ ε΄

Ἦχος Β

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.425#

λ υ τη η ρι ον κα θαρσιν αμ πλα κη μα α των

πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο σον ω τε ε

κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας νυν εκ Σι

ω ων γαρ ε ξε λη η λυ θε νο ο μοσ η γλωσ σο πυρ

σο μορ φος χορὸς α΄ Πνευ μα τος χα α ρις

ᾠδὴ ε΄

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.425#

Ν αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ων με λη

μα α των <sup>Γ</sup>η συμ πλο οis πον του ου μενος α μαρ τι ι

αις και ψυ χο φθο ρωθη ρι ι προσ ρι πτου μενος ως

ο Ι ω νας Χρι στε βο ω ω σοι εκ θα να τη

φο ρουμεβυ θου α να α γα α γε <sup>Γ</sup>η

ᾠδὴς'

Ἦχος <sup>Λ</sup>δ̣ι Bx

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.426#

Ι λα σμος η μιν Χρι στε και σωτη ρι ι α ο δε σπο

της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε νου <sup>6</sup>λ̣ι ιν ως προ φη την

θη ρος εκ θα λατ τι ι ου <sup>Δ</sup>δ̣ι στερ νων Ι ω να αντηςφθο

ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup>λ̣ι ο λον τον Α δαμ χορὸς β' παγ

γε νη πε πτω κο ο τα <sup>6</sup>λ̣ι

Ο ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θε εν τες ο  
 σι οι παι αι δεσ το πυρ εις δρο ο σον με τε βα  
 λον δι α της υ μνω δι ι ας ου τω βο ω ων τες  
 ευ λο γη τος ει Κυ ρι ε ο Θε ος των πα τε ε  
 ρων η μων

C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος σε  
 βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας η του Πα ρα  
 κλη του δε φω σφο ρος χα α ρις σε βα σμι α α ζει του



βο αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε νης χορὸς α' α ναρχος ευ

λο γη τος ει <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ η'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.428#

Α <sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο <sup>χ</sup>γου μεν προ σκυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον <sup>η</sup>

Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα βα τος

Θε ον ε γνω ρι σε τω βρα δυ γλωσ σω και δυσ η η

χω Μω σει <sup>η</sup> και παι δας ζη η λος Θε ου τρεις α να λω τους

τω πυ ρι υ μνω δους ε δει ξε <sup>η</sup> παν τα τα ερ γα τον Κυ

ρι ον υ μνει ει τε και υ περ υ ψου ου τε εις παν τας

τους αι ω ω νας

Ἦχος δὲ Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.429#

ὥδὴ η'

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο ο γα ο  
τρι σ σο φε γ γης της θε αρ χι ας τυ υ πο σ υ μνου σι  
παι αι δε σ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη  
η ρα και παν του ρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ου ρ γη  
θει σα συμ πα σα κτι ι σι ι ι ι ις

Γαβριήλ Κουντιάδου

Πεζαὶ καὶ ἱαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ θάσις παραμείνῃ ἡ αὐτή.  
Ὁ Γα νὰ γίνεταί Βου καὶ τανάπαλιν.

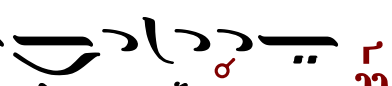
Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.443\*

ὥδὴ α'

Ἦχος Γα

Π ο ον τω ε κα λυ ψε Φα ρα ω συν αρ μα σιν

ο συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι ο νι 

α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται 

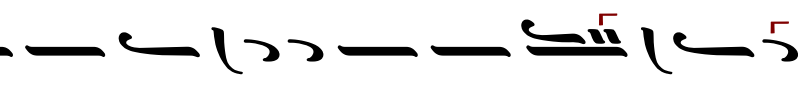
ὥδῃ α'

Ἦχος  Βη

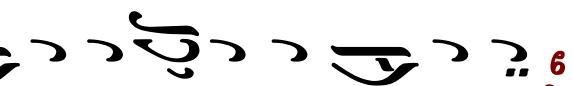
Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.444\*

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο φω 

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον 

ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ο 

ου  ο ρα τον ο οντα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος 

γνω ω σιν  γε ραι ρων εν θε ο ις το ις α σμα σι 

ὥδῃ γ'

Ἦχος  Γα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.444\*

Τ ην εξ υ ψους δυ να μιν το ις μα θη ταις Χρι στε 

ε ως αν εν δυ σησθε ε ε φης κα θι σα τε εν Ι

ε ρου σα λημ **η** ε γω δε ως ε με Πα ρα κλη τον

α αλλον **Α** Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α πο στε

λω **Α** εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε **η**

ᾠδὴ γ'

Ἦχος **Δ** Βε

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

**Ε** ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε ε δας **6** **λ** υ

βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε νης **6** **λ** μο

νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι **Α** Αν νης

φε ρου ουσης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον **6** **λ** χορὸς α' προς

τον δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων **6** **λ**

Κ α τ α ν ο ω ν ο π ρ ο φ η η τ η ς τ η ν ε π ε σ χ α τ ω ν  
 σου Χ ρ ι σ τ ε ε ε λ ε υ σ ι ν α ν ε β ο ο α ἤ τ η ν σ η ν  
 ε ι σ α κ η κ ο α Κυ ρ ι ε δ υ ν α σ τ ε ι α ν Δ ο τι π α ν τ α ς  
 τ ο υ σ ω σ α ι τ ο υ ς χ ρ ι σ τ ο υ ς σ ο υ ε λ η η λ υ υ θ α ς ἤ

Α ν ά ξ α ν α α κ τ ω ν ο ι ο ς ε ξ ο ι ο υ μ ο ο ν ο ς β λ  
 Λ ο γ ο ς π ρ ο ε λ θ ω ν Π α τ ρ ο ς ε ξ α ν α ι τ ι ι ι  
 ο υ β λ ι σ ο σ θ ε ν ε ς σ ο υ Π ν ε ε υ μ α τ ο ι ς α π ο σ τ ο λ ο ι ς Δ  
 ν η μ ε ρ τ ε ς ε ξ ε π ε μ ψ α ς ω ς ε υ ε ρ γ ε ε τ η ς β λ α

δου ου σι <sup>π</sup> χορὸς β' δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup> λ

ὥδῃ ε'

Ἦχος Γα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

Τ ο δι α τον φο βον σου λη φθεν Κυ ρι ε <sup>η</sup> εν γα

στρι των προ φη των και κυ η θεν ε πι της γης πνευ μα

σωτη ρι ι ας <sup>η</sup> α πο στο λι κας καρ δι ι ας κτι

ζει κα θα ρας <sup>Δ</sup> και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ και νι

ζε ται <sup>η</sup> φως γαρ και ει ρη η νη δι ο τι τα σα προσ τα

α γμα α τα <sup>η</sup>

ὥδῃ ε'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Β8

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

Λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα

α α των <sup>6</sup>λ πυ ρι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο

σον <sup>6</sup>λ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι

ι ι ας <sup>Δ</sup>λ νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η λυ θε

νο ο μοσ <sup>6</sup>λ χορδς α' η γλωσ σο πυρ σο μορ φος Πνε ευ μα τος

χα α α ρις <sup>6</sup>λ

ψδὴς'

Ἦχος Γα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

**N** αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κων με λη

μα α των συμ πλο οις πον του ου με νος α μαρ τι ι

αις <sup>Γ</sup>η και ψυ χο φθο ρωθη ρι προσ ρι πτου μενος <sup>π</sup>η ως ο

Ι ω νας Χρι στε βο ω ω σοι <sup>Δ</sup>λ εκ θα να τη φο ρου

μεβυ θου α να α γα α γε 

ὥδῃ ζ'

Ἦχος  Β8

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

 λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α  ο

Δε σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε ε νου 

ιν ως προ φη την θη ρος εκ θα λατ τι ου  στερ νων Ι

ω να αντης φθο ρα ας δι αρ πα α σης  χορὸς β' ο λον τον

Α δαμ παγ γε νη η πεπτω κο ο τα 

ὥδῃ ζ'

Ἦχος  Γα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

 ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θε εν τες ο

σι οι παι αι δες  το πυρ εις ὄρο σον με τε βα



λον **Δ** δι α της υ μνω δι ι ας ου τω βο ω ων

τες **Γ** ευ λο γη τος ει Κυ ρι ι ε ο Θε ος ο των πα

τε ε ρων η μων **Γ**

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος **Δ** Β8

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.444\*

**C** υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος **6 Γ** σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε τας **6 Γ** η

του Πα ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α α ρις **Δ** σε

βα σμι α α ζει του βο α αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε

νης **Δ** χορός α' α ναρχος ευ λο γη το ος ει **6 Γ**

ᾠδὴ η'

Ἦχος **Γ** α

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.444\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον η

Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα

βα τος Θε ον ε γνω ρι σε η τω βρα δυ γλωσ σω και δυσ

η η χω Μω σει Α και παι δας ζη λος Θε ου τρεις α να

λω τους τω πυρ ι υ μνω ω δους ε δει ξε η παν τα τα ε ερ

γα τον Κυ ρι ον υ μνει ει τε Α και υ περ υ ψου ου τε

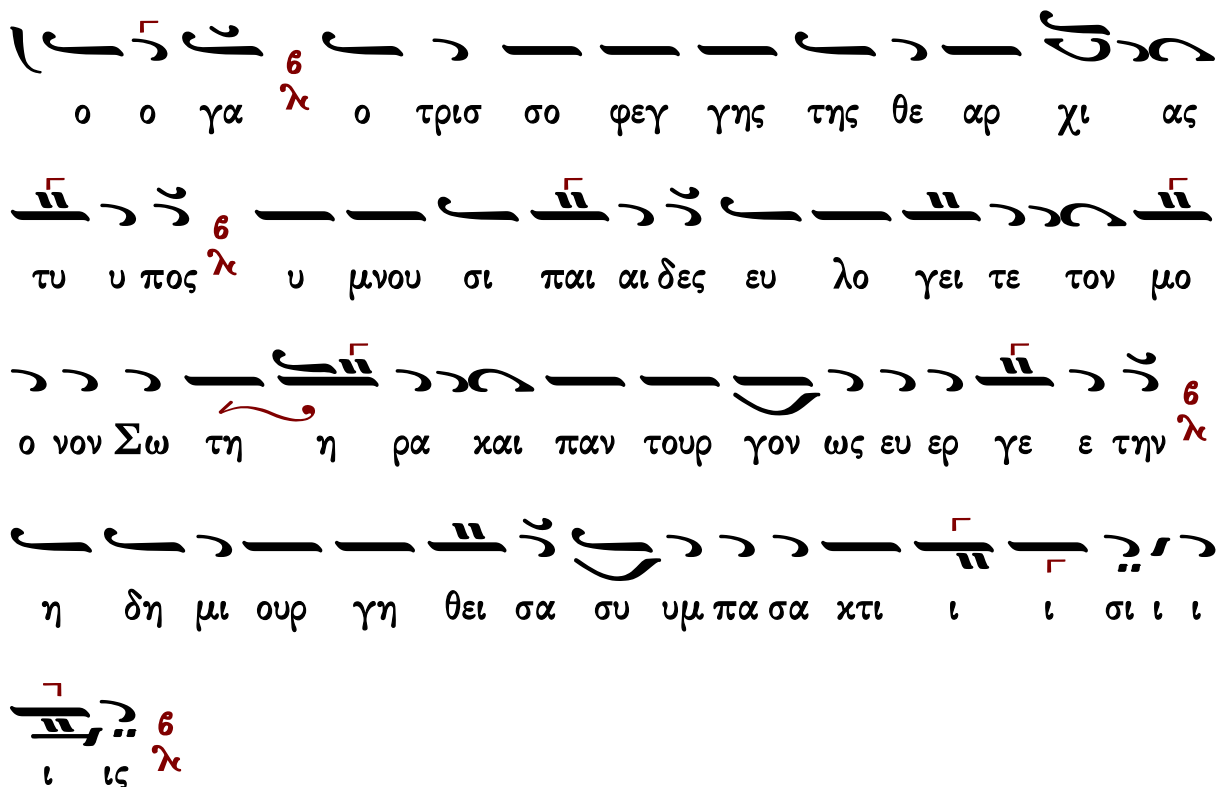
εις παν τας τους αι ω ω νας η

ὥδῃ ἢ

Ἦχος δὲ Ββ

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο



## Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

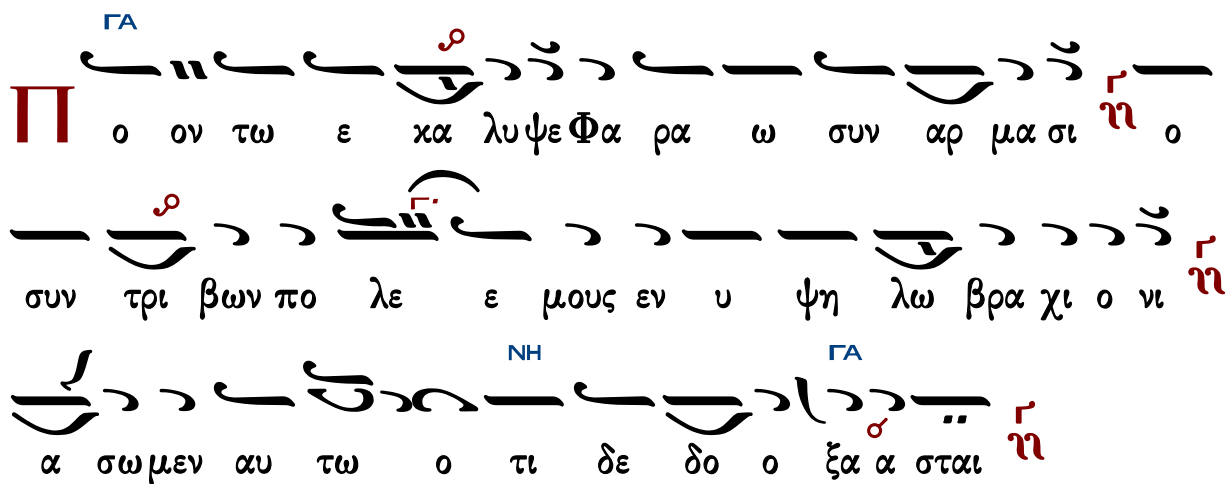
Δέον ὅπως ἡ τονικὴ βάσις παραμείνῃ ἡ αὐτή.

Ὁ Γα νὰ γίνεταί Βου καὶ τανάπαλιν.

ὦδὴ α'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.246\*



ᾠδὴ α'

# Ἦχος δὲ Βϛ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.247\*

Βϛ

Θ εἰ ω κα λυ φθεις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο ο ο  
φω ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο ο  
μον ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο  
ου ο ρα τον ο ον τα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος  
γνω ω ω σιν γε ραι αι ρων εν θε ε οἰς τοῖς α σμα  
σι

ᾠδὴ γ'

# Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.247\*

ΓΑ

ΝΗ

ΠΑ

Τ ην εξ υ φους δυ ναμιν τοῖς μα θη ταις Χρι στε ε ως  
αν εν δυ υ ση σθε ε ε φης κα θι σα τε εν Ι ε

ρου σα λημ <sup>Δ</sup>ε γω δε ως ε με ε Πα ρα κλη τον α  
 αλ λον <sup>Γ</sup>Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α πο  
 στε λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε <sup>Γ</sup>

ὥδη γ' <sup>Ἦχος</sup> <sup>Δ</sup> <sup>Β</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
 Πεντηκοστάριον 1983 σ.248\*

<sup>Β</sup>Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης παι αι αι δας <sup>6</sup>  
<sup>Δ</sup>υ βριν τε δυσ κα θεκτον ευ τε κνου με ε ε ε νης <sup>6</sup>  
 μο νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι Αν νης  
<sup>Β</sup>φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον <sup>6</sup> προς τον  
 δυ να α στην <sup>Δ</sup> <sup>6</sup> <sup>Γ</sup>χορὸς ἀ' και Θε ον των γνω σεων <sup>6</sup>

ὥδη δ' <sup>Ἦχος</sup> <sup>Γ</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
 Πεντηκοστάριον 1983 σ.248\*

Κ α τ α ν ο ω ν ο π ρ ο φ η η τ η ς τ η ν ε π ε  
 σ χ α τ ω ν σ ο υ Χ ρ ι σ τ ε ε ε λ ε υ σ ι ν α ν ε β ο ο α  
 τ η ν σ η ν ε ι σ α κ η κ ο α Κ υ υ ρ ι ε δ υ ν α σ τ ε ι ε ι α ν ο  
 τ ι π α ν τ α ς τ ο υ σ ω ω σ α ι τ ο υ ς χ ρ ι σ τ ο υ ς σ ο υ ε λ η η  
 λ υ υ θ α ς

ὥδη δ'

Ἦχος δὲ Βϛ

Χρυσάνθου Θεοδοσιοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.249\*

Α ν α ξ α ν α α κ τ ω ν ο ι ο ι ο ς ε ξ ο ι ο υ μ ο ο  
 ο ο ν ο ς Λ ο γ ο ς π ρ ο ε λ θ ω ν Π α τ ρ ο ς ε ξ α ν α ι τ ι ι  
 ι ι ο υ ι σ ο σ θ ε ν ε ς σ ο υ Π ν ε ε υ μ α τ ο ι ς α π ο σ τ ο  
 λ ο ι ς ν η μ ε ρ τ ε ς ε ξ ε π ε μ ψ α ς ω ς ε υ ε ρ γ ε ε ε ε

της α δου ου σι χορὸς β' δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι

ε

ὥδῃ ε'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.249\*

Τ ο δι α τον φο βον σου λη φθε εν Κυ ρι ε εν

γα στρι των προ φη των και κη υ θεν ε πι της γης

πνευ μα σω τη ρι ι ας α πο στο λι κας καρ δι ας

κτι ζει κα θα ρας και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ

και νι ζε ται φως γαρ και ει ρη η νη δι ο τι τα σα

προ στα α γμα α τα

ὥδῃ ε'

Ἦχος Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.250\*

B8  
 λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α α  
ΔΙ B8  
 των 6 λ πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο ο ο  
ΔΙ  
 σον 6 λ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ας Α  
B8  
 νυν εκ Σι ων γαρ εξ ε λη η λυ θε νο ο ο ο  
ΜΕΛ B8  
 μος 6 λ η γλωσ σο πυρ σο μορ φος Α χορός α' Πνε ευ μα τος  
 χα α α α ρις 6 λ

ὥδῃς'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστήριον 1983 σ.250\*

NH NH ΓΑ NH  
 Ν αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ων μελη  
ΜΕΛ NH  
 μα α των 7 η συμ πλο οις πον του μενος α μαρ τι ι ας Α  
ΓΑ ΠΑ NH  
 και ψυ χο φθο ρω θη ρι προσ ρι πτου μενος π η ως ο Ι



ω νας Χρι στε βο ω ω σοι <sup>ΓΑ</sup> εκ θα να τη φο ρου με βυ <sup>ΝΗ</sup>  
<sup>ΓΑ</sup>  
 θου α να α γα α γε <sup>Γ</sup>

ὥδῃ ζ'

Ἦχος <sup>Λ</sup> δὲ ΒϷ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστήριον 1983 σ.251\*

<sup>ΒϷ</sup>  
**I** λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι ι ι  
 α <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ο Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε  
 νου <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ιν ως προ φη η την <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> θη ρος εκ θα λατ τι <sup>ΔΙ</sup>  
 ου <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> στερ νων <sup>ΒϷ</sup> I ω ναν της φθο ρα ας δι αρ πα α α  
 σης <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ο λον τον Α δαμ <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> <sup>χ</sup>ορδς β' παγ γε νη η πε πτο  
 κο ο ο ο τα <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ὥδῃ ζ'

Ἦχος <sup>Γ</sup> Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστήριον 1983 σ.252\*

ΓΑ ΝΗ ΠΑ ΝΗ  
 Ο ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θε εν τες ο  
 ΜΕΛ ΝΗ ΓΑ  
 σι οι Παι αι δεσ η το πυρ εις δρο ο σον με τε  
 ΠΑ ΝΗ  
 βα λον η δι α της υ μνω δι ι ας ου τω βο ω ων  
 ΓΑ ΝΗ ΓΑ ΝΗ  
 τες η ευ λο γη τος ει Κυ ρι ε ο Θε ο ος των  
 ΓΑ  
 πα τε ε ρων η μων η

ψδηζ'

Ἦχος δὲ Βϛ

Χρυσάνθου Θεοδοσιοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.252\*

Βϛ  
 C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε ε λος η  
 ΔΙ Βϛ  
 σε βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε  
 ΜΕΛ ΠΑ ΔΙ  
 τας η του Πα ρα κλη του δε φω σφο ρος χα  
 Βϛ  
 ρις η σε βα σμι α α α ζει η του βο αν Τρι α ας μο νη

ι σο σθε νης **Δ** χορὸς α' αν αρχος ευ λο γη το ο ο ος

**6**  
ει λ

ᾠδὴ η'

**Ἦχος Γα**

Χρυσάνθου Θεοδοσιοπούλου  
Πεντηκοστήριον 1983 σ.252\*

**Α** **ΓΑ** **ΝΗ** **ΓΑ**  
ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον **Γ**

**Α** **ΝΗ**  
φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα

**ΓΑ** **ΝΗ** **ΓΑ** **ΝΗ**  
βα α τος Θε ον ε γνω ρι σε **Γ** τω βρα δυ γλωσ σω και

**ΓΑ** **ΔΙ** **ΠΑ**  
δυσ η η χω Μω σει **Δ** και Παι δες ζη η η λος Θε ου τρεις

**ΝΗ** **ΓΑ** **Γ** **Γ**  
α να λω τους τω πυ ρι υ μνω δου ους ε δει ξε **Γ** παν τα

**ΝΗ** **ΓΑ** **ΠΑ**  
τα ε εργα τον Κυ ρι ον υ μνει ει τε και υ περ υ ψου

NH MEΛ  
ου τε εις παν τας τους αι ω ω νας

ψδὴ η'

Ἦχος δὲ Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253\*

Bβ  
Λ υ ει τα δε σμα και δρο σι ι ζει την φλο ο ο ο  
MEΛ Bβ  
γα ο τρι σο φευ γης της Θε αρ χι ας τυ υ υ  
Bβ  
πος υ μνου σι Παι αι δεσ ευ λο γει ει δε  
Δι Bβ  
τον μο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε  
MEΛ Bβ  
ε ε ε την η δη μι ουρ γη θει ει σα συ υμ πα  
Bβ  
σα κτι σι ι ι ις

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ βάσις παραμείνῃ ἡ αὐτή.  
Ὁ Γα νὰ γίνεταῖ Βου καὶ τανάπαλιν.

ψδὴ α'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.490\*

Π<sup>σ</sup> ο ον τω ε κα λυ ψε φα ρα ω συν αρ μα σιν <sup>η</sup>  
ο συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι  
ο νι <sup>η</sup> α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται <sup>η</sup>

ᾠδὴ α'

Ἦχος <sup>Λ</sup> δὲ Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.491\*

Θ<sup>6</sup> ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω <sup>λ</sup>  
ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο μον <sup>λ</sup> ι  
λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ου  
ο ρα τον ο ον τα <sup>Δ</sup> και μυ ει ται Πνε ευ μα τος γνω  
σιν <sup>6</sup> γε ραι αι ρων εν θε ε ο ις το ις α σμα σιν <sup>λ</sup>

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.492\*

Τ ην εξ υ ψους δυ ναμιν τοις μα θη ταις Χρι στε ε

ως αν εν δυ υ ση σθε ε ε φης κα θι σα τε εν

Ι ε ρου σα λημ ε γω δε ως ε με Πα ρα α κλη

τον α αλ λον Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α

πο στε λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε

ψδλ γ'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.493\*

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης μο νη προσ ευ

χη της προ φη η τι δος πα λαι Α αν νης φε ρου σης

πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην

χορὸς α' και Θε ον των γνωσεων <sup>6</sup>λ

ψδὴ δ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.494\*

Κ α τα νο ω ων ο προ φη η της την επ ε

σχα των σου Χρι στε ε ε λευ σιν α νε βο ο α <sup>6</sup>η

την σην εισ α κη κο α Κυ υ ρι ε δυ να στει ει

αν <sup>Δ</sup>η ο τι παν τας του σω σαι τους χρι στου ους σου ε

λη η λυ υ θας <sup>6</sup>η

ψδὴ δ'

Ἦχος <sup>Δ</sup>η Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.494\*

Α ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο νος <sup>6</sup>λ

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου <sup>6</sup>λ <sup>σ</sup>ι σο

σθε νες σου Πνευματοις α πο στο ολοις νη μερ τες

εξ ε πεμψας ως ευ ερ γε ε της α δου σι χορὸς β'

δο ξατω κρατει σου Κυ ρι ε

ὥδῃ ε'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.495\*

Τ ο δι α τον φο βον σου λη φθεν Κυ ρι ε εν γα

στρι των προ φη των και κυ η θεν ε πι της γης Πνευ μα σω

τη ρι ι ας α πο στο λι κας καρ δι ας κτι ζει κα

θα ρας και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ και νι ξε

ται φως γαρ και ει ρη νη δι ο ο τι τα σα προσ τα α

γμα α τα



ᾠδὴ ε΄

ᾠχος δὲ ΒϷ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.495\*

Λυτη η ριον κα θαρσιν αμ πλα κη μα α  
των πυ ρι ι πνο ον δε ξα σθε Πνευ μα τος ὁρο ο  
σον ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας  
νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η θυ θε νο ο μοσ η  
γλωσ σο πυρ σο μορ φος χορὸς α΄ Πνευ μα τος χα ρις

ᾠδὴ ς΄

ᾠχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.495\*

Ναυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ων με λη  
μα α των συμ πλο οις πον του μενος α μαρ τι αις  
και ψυ χο φθο ρω θη ρι ι προσ ρι πτου μενος ως

ο Ι ω νας Χρι στε βο ω ω σοι <sup>Δ</sup>εκ θα να τη

φο ρουμεβυ θου α να α γα α γε <sup>η</sup>

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος <sup>Δ</sup>Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.496\*

Ι λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α <sup>6</sup>ο Δε <sup>λ</sup>

σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε νου <sup>6</sup>ιν ως προ φη <sup>λ</sup>

την θη ρος εκ θα λατ τι ι ου <sup>Δ</sup>στερ νων Ι ω να αν

της φθο ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup>ο <sup>λ</sup>λον τον Α δαμ

χορὸς β' παγ γε νη η πεπτω κο ο τα <sup>6</sup><sup>λ</sup>

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος <sup>Δ</sup>Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.496\*

Ο ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θεν τες ο ο σι οι



Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον ἦ

Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα βα

τος Θε ον ε γνω ρι σε τω βρα δυ γλωσ σω και δυσ η η

χω Μω σει ἦ και παι δας ζη η λος Θε ου ου τρεις α να

λω τους τω πυρ ι υ μνω δου ους ε δει ξε ἦ παν τα τα

ερ γα Κυ ρι ι ου τον Κυ ρι ον υ μνει ει τε Ἀ ἦ και

υ περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω νας ἦ

Λ υ ει τα δε σμα ακαιδροσι ι ζει την φλο ογα<sup>6</sup> ο  
 τρισ σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ προς<sup>6</sup> υ μνου σι  
 παι αι δεσ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη  
 η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την<sup>6</sup> η δη μι ουρ  
 γη θει σα συ υμπασα κτι σις<sup>6</sup>

## Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου. Ἀργές, διασκευασμένοι

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ βάση παραμείνῃ ἡ αὐτή.

Ὁ Γα νὰ γίνεταῖ Βου καὶ τανάπαλιν.

Ῥδὴ α'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.497\*

Π ο ον τω ε κα λυ υ ψε φα ρα ω ω συν α αρ  
 μα σι ιν<sup>6</sup> ο συν τρι βων πο λε ε ε ε ε μους εν

υ ψη λω βρα χι ο νι ι ᾠ α σω με εν α α αυ τω

ο ο ο τι δε ε δο ο ο ο ξα α α σται ᾠ

ᾠδὴ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.397\*

Θ ει ω κα α λυ φθεις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω

ωσ σο ος γνο ο ο φω ε ρη η το ρε ευ σε τον θε

ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον ι λυ υν

γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα το ος νο ο ο

ου ου ο ρα α το ον ο ο οντα και αι μυ ει ει ται

Πνε ευ μα το ος γνω ω ω σι ιν γε ραι αι αι

αι αι αι ρων εν θε ε ε ε οις τοις α σμα α σι

ἦ  
ιν ᾠδὴ γ'

\* και μυ ει ται αι Πνε ευμα ...

ἦδὴ γ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.497\*

Τ ην εξ υ ψους δυ να α μι ιν τοις μα α θη ται αις  
Χρι στε ε ε ως αν ε εν δυ υ υ ση η σθε ε  
ε ε φη ης κα θι σα τε εν Ι ι ε ρου σα  
α λημ ε γω ω δε ως ε με ε ε ε ε Πα α ρα  
κλη η τον α α αλ λο ον Πνε ευ μα το ε  
μον τε και Πα τρο ος α πο στε ε λω εν ω ω στε  
ρε ω ω θη η η η σε ε ε σθε ε

ἦδὴ γ'

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.398\*

Ε ρ ρη ξε γα α στρος η η η τε ε κνω με ε

ε ε νη ης πε ε ε δας <sup>6</sup> λ υ υ βριν τε δυ υ υσ κα

θε ε κτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε νη ης <sup>π 9</sup> μο ο νη

προσ ε ευ χη τη η ης προ ο φη τι ι ι ι

ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup> λ Α αν νης φε ρου ου ου σης

πνε ευ μα συ υ υν τε ε ε τριμ με ε ε ε

ε νον <sup>Δ</sup> προς τον δυ υ να α α στην <sup>2</sup> χορός α' και αι Θε ο

ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup> λ

<sup>1</sup> της προ φη η τι ι δος πα α α α α λαι αι Α

α αν νης <sup>6</sup> λ φε ρου ση ης πνε ευ μα α συν τε ε τρι



ιμ με ...

✧ χορός α' και Θε ο ον των γνω σε ε ω ων

ῥοδὴ δ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.498\*

Κ α τα νο ω ων ο προ φη η η η η της  
την επ ε σχα α των σου Χρι ι στε ε ε ε ε  
ε λε ευ σιν α α νε βο ο ο α α την ση  
ην εισ α κη κο ο α Κυ υ υ υ υ ρι ι ε δυ  
υ να στει ει ει α αν ο τι πα αν τας του  
σω ω ω ω ω σαι τους χρι στου ου ους σου ε ε λη  
η η η λυ υ υ θα ας

Α α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι  
οι οι οι ου ου μο ο ο νος Λο ο γος προ ο ε ελ  
θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου ου ι  
σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οis α πο ο  
ο στο ο ο λοι οis νη μερ τε ες εξ ε ε πε εμ ψας  
ω ω ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε της α δου ου σι χορὸς  
β' δο ο ξα τω κρα α α τει σου Κυ ρι ι ε ε

Τ ο δι α τον φο βον σου ου λη φθε ε εν Κυ

υ ρι ι ι ε **η** εν γα στρι ι των προ φη η

των **Δη** και κυ η θεν ε πι ι τη η ης γη η ης Πνευ μα

α σω ω τη ρι ι ι α ας **η** α πο στο λι

κας καρ δι ι ι ας κτι ι ζει κα θα α ρας **Δη** και εν

τοις πι ι στοις ευ θε ε ε ες ε εγ και νι ι ζε

ται αι **η** φως γαρ και ει ει ρη η η νη η **π**9 δι ο ο τι

τα σα προ ος τα α α α γμα α α τα α **η**

ψδὴ ε'

**Ἦχος Δ** Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.399\*

**Λ** υ τη η ρι ο ον κα θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των **6** **η** πυ ρι ι πνο ον δε ε ξα

α σθε ε Πνε ευμα το ος ὄρο ο ο σο ον π ω τε ε

ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης Εκ κλη η η σι

ι ι α ας νυν ε εκ Σι ω ωων γαρ εξ ε λη η

η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσσο πυρ

σο ο μο ορφο ος χορός α' Πνευ μα α α α α το ος χα α α

ρις η γλωσσο πυρ σο ο μο ορφο ος...

ῥαῆς'

Ἦχος Γα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστήριον  
2005 σ.499\*

Ν αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ω ω

ω ωων με ε λη μα α α τω ων συμπλο ο

οις πον του ου με νο ος α μα αρ τι ι ι ι αι αις

και ψυ χο φθο ρω θη ρι ι ι ι προ ος ρι πτου ου με

νο ος η ως ο Ι ω νας Χρι ι στε ε βο ω ω

ω ω σοι εκ θα να τη φο ρου με βυ θου α α να α α α

γα α α γε ε η

ᾠδὴς'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.399\*

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα α μ ψ α ας εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ι ν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι

ι ι ου ου στε ε ρ νων Ι ι ω ω ω ναν της φθο

ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο

ο λον τον Α α δαμ χορός β' παγ γε ε ε νη η πε

πτω ω ω χο ο ο τα α

\* θη ρος εκ θα λατ τι ου ου στε ε ερ νω ων Ι ω ω ναν

της φθο ρα α α ας δι α αρ πα α α σης ο λο ον τον

Α α δαμ χορός β' παγ γε νη πε πτω ω ...

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος Γα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστήριον  
2005 σ.499\*

Ο ι εν κα μι νω ω του πυ υ ρος εμ βλη θε

ε ε εν τε ες ο σι ι οι παι αι αι δε ες το πυρ

εις δρο ο ο ο σο ον με τε ε βα λο ον δι α

της υ μνω δι ι ι ι ι α ας ου τω ω βο ω ω

ων τε ες η ευ λο γη τος ει ει Κυ ρι ι ε ο Θε

ο ο ος των πα α τε ε ε ε ρων η η μω ων η

ᾠδὴ 5'

Ἦχος δὲ Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.400\*

Σ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α νω ων με

ε ε λος λ σε ε βειν το χρυ υ υ σο ο τε ευ κτο ον α

α ψυ χο ον βρε ε ε τα ας π η του Πα ρα κλη του ου

δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις \* σε βα α σμι α

α α ζει ει του ου βο α α αν γ Τρι α α ας

μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης χο ρος α' α να ρχο ος

ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει <sup>6</sup>λ

\* <sup>6</sup>λ σε βα σμι ι α α α ζει του βο ο αν <sup>γ'</sup>η Τρι ...

ᾠδὴ η'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

<sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

ου ου με εν τον Κυ υ ρι ο ον <sup>η</sup>

<sup>Δ</sup>φλε κτο ος πυ υ υ ρι <sup>Δ</sup>εν Σι να α προσ

ο μι ι λου ου σα βα α α α τος <sup>Δ</sup>Θε ον ε ε γνω

ρι ι σε τω βρα δυ γλω ωσσω και δυ υσ η η η η χω Μω

<sup>σ</sup>ω σει <sup>η</sup>και παι δας ζη λος Θε ου ου ου τρεις <sup>Δ</sup>α να λω

<sup>σ</sup>ω τους τω πυ υ ρι <sup>Δ</sup>υ μνω δου ους ε δει ξε ε <sup>η</sup>παν



τάτα ε ερ γα Κυ ρι ι ι ου τον Κυ υ ρι ι ο

ον υ μνει ει ει τε και υ περ υ υ ψου ου

ου ου ου τε ε εις πα αν τα ας του ους αι ω

ω ω να ας

ᾠδὴ η'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.401\*

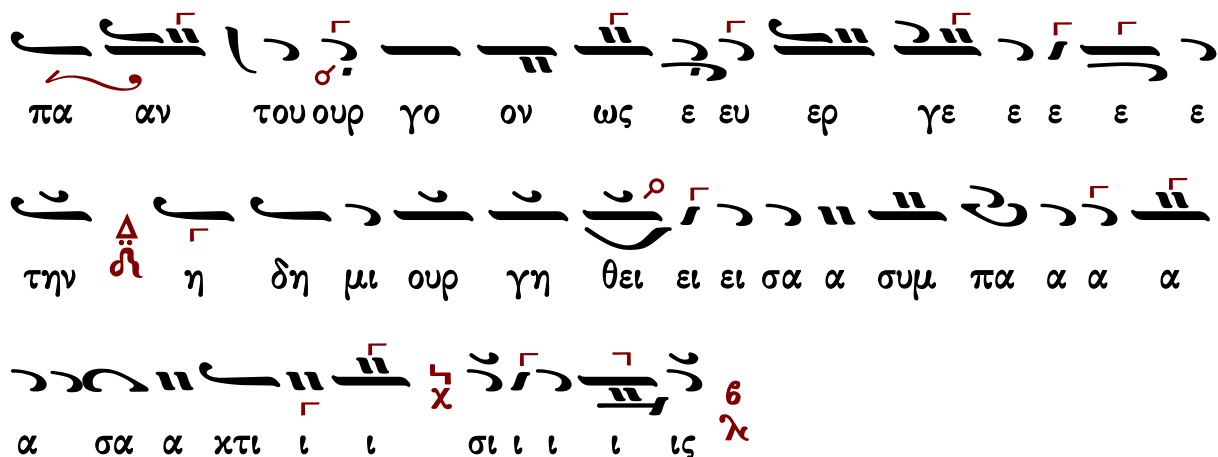
υ υ ει ει τα δε ε σμα και αι αι δρο ο σι ζει

ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα ο τρις σο φε εγ γης

τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο ος υ μνου σι

παι αι αι αι αι δες ευ λο ο ο γει ει ει δε το ο

ον μο ο ο ο ο νον σω τη η η ρα και



## ὥδῃ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α', ὥδῃ θ'

ἦχος βαρὺς

«**Μ**ὴ τῆς φθορᾶς διαπείρα κυφορήσασα, καὶ παντεχνήμονι Λόγῳ σάρκα δανείσασα, μῆτερ ἀπείρανδρε, Παρθένε Θεοτόκε, δοχεῖον τοῦ ἀστέκτου, χωρίον τοῦ ἀπείρου πλαστουργοῦ σου, σὲ μεγαλύνομεν». (β')

**Ἐ**πιπαφλάζοντος πάλαι πυρίνου ἄρματος, ὁ ζηλωτῆς καὶ πυρίπνους χαίρων ὀχούμενος, τὴν νῦν ἐκλάμψασαν ἐπίπνοιαν ἐδήλου, ἐξ ὕψους ἀποστόλοις, ὕψ' ἧς καταλαμφθέντες, τὴν Τριάδα πᾶσιν ἐγνώρισαν.

**Ν**όμου τῶν φύσεων δίχα ξένον ἠκούετο· τῶν μαθητῶν τῆς μιᾶς γὰρ φωνῆς ἀπηχουμένης, Πνεύματος χάριτι, ποικίλως, ἐνηχοῦντο, λαοί, φυλαὶ καὶ γλῶσσαι, τὰ θεῖα μεγαλεῖα, τῆς Τριάδος γινῶσιν μυούμενοι.

κανὼν β', ὥδῃ θ'

ἦχος δ'

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

«**Χ**αίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος. Ἄπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως. Ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν». (β')

**Δ**όξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

Ἰδεῖν ἔοικε τὴν φυσίζων κόρην. Μόνῃ γὰρ ἐν δίνῃσι κεκρύφει Λόγον νοσοῦσαν ἀλθαίνοντα τὴν βροτῶν φύσιν. Ὅς δεξιόις κλισμοῖσι νῦν ἰδρυμένος Πατρός, πέπομφε τὴν χάριν τοῦ Πνεύματος.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

Ἀπόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

Ὅσοις ἔπνευσεν ἡ θεόρρυτος χάρις, λάμποντες, ἀστράπτοντες, ἡλλοιωμένοι, ὀθνεῖαν ἀλλοίωσιν εὐπρεπεστάτην ἰσοσθενοῦσαν τὴν ἄτμητον εἰδότες, σοφὴν τρίφεγγον οὐσίαν δοξάζομεν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ψδὴ θ', κανὼν α'

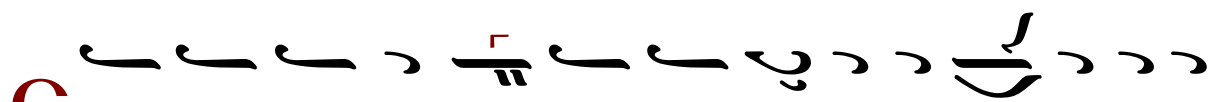
Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.429#

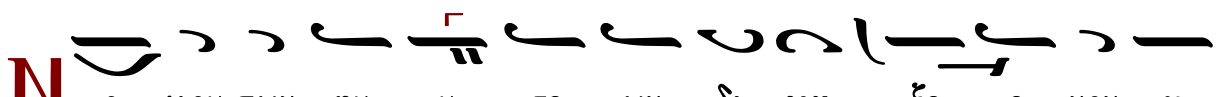
Μη της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα  
και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα  
πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε δο χει ον του  
α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου σε  
με γα λυ υ νο ο μεν

(β')

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.254#


 πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα  
 τος  ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με νος   
 την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου   
 εξ υ ψους Α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ  
 φθεν τες την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν 

Ιωάννου Πρωτοψάλτου Ειρμολόγιον 1903 σ.430#


 ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η  
 κου ε το  των μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου  
 με νης Πνευματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το λα  
 οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α μεγα λει α της Τρι

α δος γνω σιν μυ ου ου με ε νοι <sup>Γ</sup>η

ὥδῃ θ', κανὼν β'

Ἦχος <sup>Λ</sup>η Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 s.430#

<sup>Γ</sup>α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>η κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

<sup>Χ</sup> αι ροις α νασσα α μητρο πα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>λ

α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους

α πας σου τον το ο κον νοειν <sup>Δ</sup>η ο θεν σε συμ φω νως δο ξα ζο

<sup>6</sup>λ  
μεν (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Δ</sup> και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>6</sup> λ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup> λ

Υ δειν ε οι κε ε την φυ σι ι ζω ον Κο ο ρην

μο νηγαρ εν δι νησι κε κρυ φει Λο ο γον <sup>6</sup> λ νο σου ου σαν

αλ θαι νοντα την βρο των φυ υ σιν <sup>Δ</sup> ο δε ξι οις κλι σμοι

σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>6</sup> λ Πα τρος πε πομ φε την χα α ριν

του Πνευ ματος <sup>6</sup> λ

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων Α μην <sup>6</sup>λ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.256#

Ο σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6</sup>λ

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>λ ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup>λ ι σο

σθε νου ου σαν την α τμη τον ει δο τες <sup>6</sup>λ σο φη ην

τρι φεγ γον ου σι αν δο ξα ζο μεν <sup>6</sup>λ

## Γαβριήλ Κουντιάδου

ὠδὴ θ', κανών α'

Ἦχος Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδοση 1991 σ.444\*

Μ η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>7</sup>η

και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα <sup>π9</sup>μη τε ρ α

πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>7</sup>η δο χει ον του

α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου <sup>Δ</sup>η

σε ε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>7</sup>η (β')

Ε πι πα φλα ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα τος <sup>7</sup>η

ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με νος <sup>π9</sup>την



νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου **η** εξ υ

φους α πο στο ο λους υφ ης κατα λαμ φθεν τες **Δη** την Τρι α

δα πα α σιν ε γνω ω ρι ι σαν **η**

**N** ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το **η** των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α πη

χου με νης **Δη** πνευ μα τος χα ρι τι ποι κι λως εν η χου ουν

το **η** λα οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α μεγα λει

ει α **Δη** της Τρι α δος γνω ω σιν μυ ου ου με ε νοι **η**

ὥδῃ θ', κανὼν β'

Ἦχος **Δη** Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.444\*

**A** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

**Χ** αι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>λ α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα <sup>6</sup>λ ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως <sup>6</sup>λ ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ</sup>λ ο θεν σε συμ φω νως δο

ξα ζομεν <sup>6</sup>λ (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>6</sup>λ

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

**Υ** δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον κο ο ρην <sup>6</sup>λ

μο νη γαρ εν δι νη σι κε κρυ φει Λο γον <sup>6</sup>λ νο σου ου

σαν αλ θαι νον τα την βρο των φυ υ σιν <sup>Δ</sup>λ ος δε ξι οις

κλι σμοι οι σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>6</sup>λ Πα τρο ος πε πομ φε

την χα ριν του Πνευ μα τος <sup>6</sup>λ

**Κ** αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην <sup>6</sup>λ

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα α ρις <sup>6</sup>

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>ο θνει ει

αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την <sup>Δ</sup>ι σο σθε νου ου

σαν την α τμη τον ει δο ο τες <sup>6</sup>σο φη ην τρι φεγ γον ου σι

ανδο ξα ζομεν <sup>6</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδῃ θ', κανὼν α'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253#

<sup>ΓΑ</sup>  
**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>Γ</sup>

και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα <sup>ΠΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>π q</sup> Μη η

τερ α πει ραν δρε Παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΠΑ</sup> <sup>η</sup> δο

χει ον του α στε ε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>

στουρ γου σου σε με γα λυ υ νο <sup>ΓΑ</sup> <sup>μ</sup> <sup>η</sup> <sup>(β')</sup> μεν

<sup>Ε</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>η</sup> πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρματος <sup>η</sup>

ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου μενος <sup>ΠΑ</sup> <sup>π q</sup> την

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΠΑ</sup> <sup>η</sup> νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου <sup>η</sup> εξ

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup> υ ψους Α πο στο ο λοις υφ ης κα τα λαμ φθεν τες την

<sup>ΓΑ</sup> <sup>η</sup> Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν <sup>η</sup>

<sup>Ν</sup> ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η κου

ε το <sup>Γ</sup>των Μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου με

νης Πνευ ματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το <sup>Γ</sup>λα

οι φυ λαι κα γλω ωσ σαι τα θει α με γα λει α της

Τρι α δος γνωσιν μυ ου ου με νοι <sup>Γ</sup>

ᾠδὴ θ', κανὼν β'

Ἦχος <sup>Λ</sup>δὲ B8

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

<sup>Γ</sup>Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup><sub>9</sub> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup><sub>λ</sub> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup><sub>λ</sub> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup><sub>λ</sub>

<sup>Χ</sup>αι ροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος <sup>6</sup><sub>λ</sub>

α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο ο μα <sup>6</sup><sub>λ</sub> ρη τρε

ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως **Δ** ι λιγ γι

α δε νους **Δ** α πας σου τον το κον νο ειν **Δ** ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζομεν **6** **λ** (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω **Δ** και α γι ω Πνευ μα τι **6** **λ**

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του **π** **9** λα βον τες ε ξε πλητ τον το **6** **λ** ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες **Δ** κα θως το Πνευ μα ε δι δου **6** **λ**

**Υ** δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον Κο ρην **6** **λ** μο νη

γαρ εν δι νη σι κε κρυ φει Λο γον **6** **λ** νο σου σαν αλ

θαι νον τατην βρο των φυ σιν **Δ** ος δε ξι οισ κλι σμοι οι

σι νυν ι ὄρυ με νος Πα τρος <sup>Δ</sup> πε πον θε την χα ριν του

Πνευ μα τος <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup> <sup>9</sup> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup> ι σο σθε



νοῦ οὐσαν τὴν ἀτμήτον εἰδοτέσ<sup>6</sup><sub>λ</sub> σοφὴν τρι

φeyγονοῦσι ἀνδοξάζομεν<sup>6</sup><sub>λ</sub>

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

Μὴ τῆς φθοράς διὰ πειράκυοφορησά

σα<sup>π</sup><sub>η</sub> καὶ παντεχνημονι Λογωσάρκα δαίνει σασα<sup>π</sup><sub>η</sub>

Μητέρα πειράνδρε Παρθενε Θεοτοοκέ<sup>π</sup><sub>η</sub> δο

χείον του αστεκτου χωρίον του απειρου πλα

στουργου σου<sup>Δ</sup><sub>η</sub> σε με γαλυυνοόμεν<sup>π</sup><sub>η</sub> (β')

Επιπαφλαάζοντος παλαιπυρίνου αρμα

τος ἡ ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με

νος π η την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η

λου ἡ εξ υ ψους α πο στο ο λοις υφ ης κα τα λαμ

φθεν τες Ἀ την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν ἡ

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το ἡ των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α

πη χου με νης Πνευ ματος χα ρι τι Ἀ ποι κι λως εν η χου

ουν το ἡ λα οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α με

γα λει ει α Ἀ της Τρι α δος γνω σιν μυ ου ου με ε

νοι ἡ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του π λα βον τες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες α κα θως το Πνευ μα ε δι δου ε

Χ αι ρις α νασαμη τρο πα αρθενον κλε ε ος α παν

γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον ου

σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ει ο θεν σε συμ φω νως δο ξα

ζομεν (β')

Δ ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>6</sup>λ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

Υ δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον κο ο ρην <sup>6</sup>λ μο νη γαρ

εν δι νη σι κε κρυ φει Λο ο γον <sup>6</sup>λ νο σου ου σαν αλ

θαι νον τα την βρο τω ων φυ υ σιν <sup>Δ</sup>λ ος δε ξι οις κλι σμοι

οι σι νυν ι δρυ με νος Πα τρος <sup>6</sup>λ πε πομ φε την χα ριν του

Πνευ μα τος <sup>6</sup>λ

Κ αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην <sup>6</sup>λ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

Ο σοις ε πνευ σεν η θε ο ορρυτος χα α ρις <sup>6</sup>λ λαμ

πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>λ ο θνει ει αν

αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την <sup>Δ</sup>λ ι σο σθε νου ουσαν

την α τμητον ει δο ο τες <sup>6</sup>λ σο φη ην τρι φεγ γον ου σι αν

δο ξα ζομεν <sup>6</sup>λ

Καταβασίαι θ' φδῆς

ἦχος βαρύς

**Μ**ὴ τῆς φθορᾶς διαπείρα κυφορήσασα, καὶ παντεχνήμονι Λόγῳ σάρκα δανείσασα,  
Μῆτερ ἀπείρανδρε, Παρθένε Θεοτόκε, δοχεῖον τοῦ ἀστέκτου, χωρίον τοῦ ἀπείρου  
πλαστουργοῦ σου, σὲ μεγαλύνομεν.

ἦχος δ'

**Χ**αίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος. Ἄπαν γὰρ εὐδίνητον εὔλαλον στόμα, ῥητρεῦον,  
οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως. Ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν ὅθεν σε συμφώνως  
δοξάζομεν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

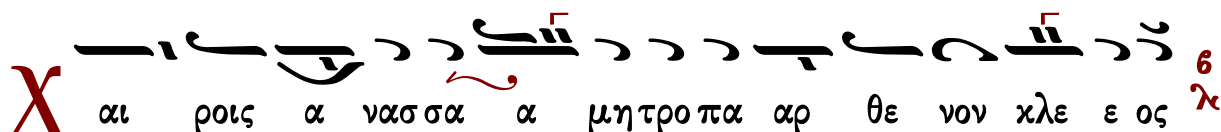
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

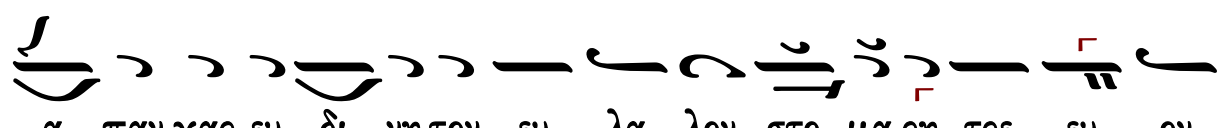
ὥδῃ θ'

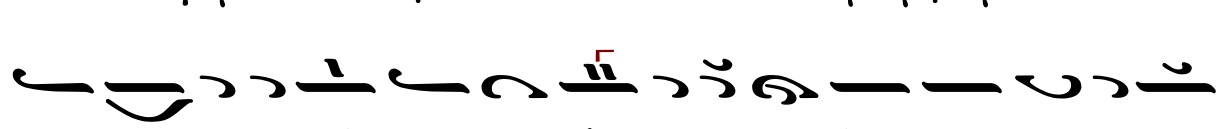
ἦχος  Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.429#

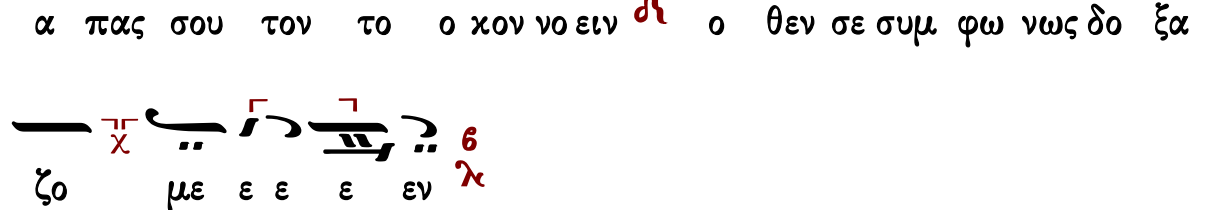
**Μ**η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα  
και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα μη τερ α  
πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε δο χει ον του  
α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στουρ γου σου σε  
με γα λυ υ νο ο μεν


 αι ροις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος

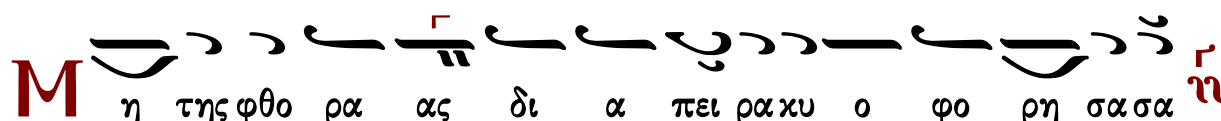

 α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο μαρη τρε ευ ον

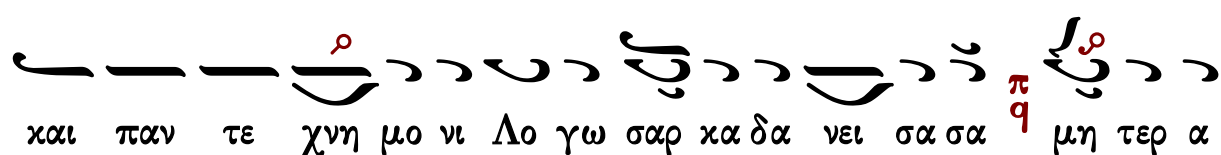

 ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους


 α πας σου τον το ο κον νο ειν ο θεν σε συμ φω νως δο ξα


 ζο με ε ε ε εν

Γαβριήλ Κουντιάδου


 η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα


 και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα μη τερ α

πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε η δο χει ον του

α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στουρ γου σου Δ

σε ε με γα λυ υ νο ο μεν η

ὥδῃ θ'

Ἦχος Δ Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

Χ αι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος λ α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ει ν ο θεν σε συμ φω νως δο

ξα ζομεν λ

\* ο θεν σε συμ φω ω νως δο ξα α ζο με ε ε ε εν λ



ὥδῃ θ'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253#

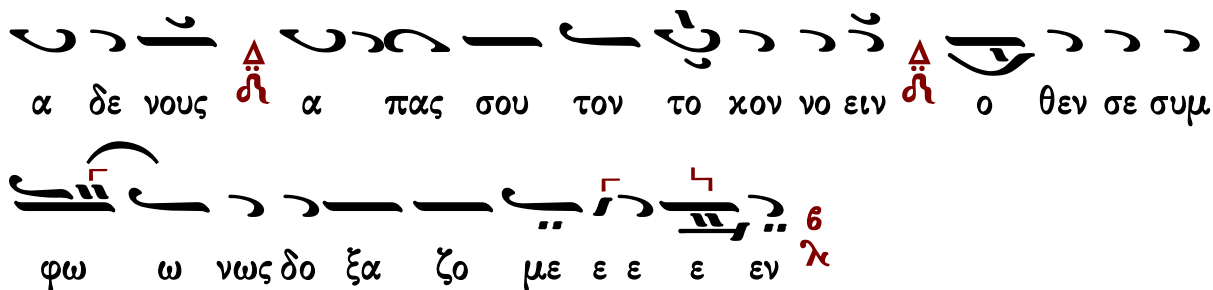
Μη της φθορας διαπειρακυοφορησασα  
και παντε χνημονι Λογωσαρκαδανεισασα Μη η  
τεραπειρανδρε Παρθενε Θεοτοοκε δο  
χειοντου αστε εκτου χωριοντου απειρουπλα  
στουργου σου σε μεγαλυνο μεν

ὥδῃ θ'

Ἦχος Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

Χαιροις Αβασαμη τροπα αρθενον κλεος  
απαν γαρ ευδινητον ευλαλον στοομα ρητρε  
ευονου σθε νει σε μελπειν αξιως ι λιγγι

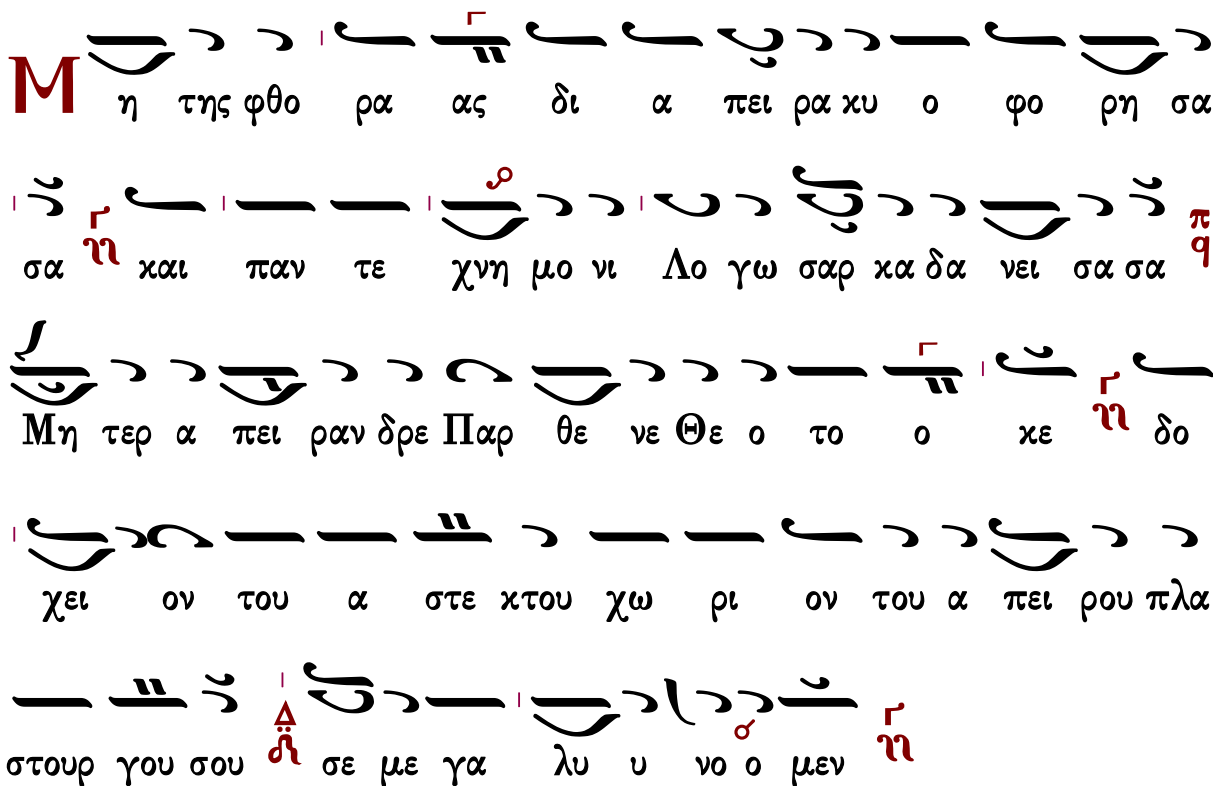


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*



ᾠδὴ θ'

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*

**Χ** α ι ρ ο ι ς α ν α σ σ α μ η τ ρ ο π α α ρ θ ε ν ο ν κ λ ε ε ο ς α π α ν  
 γ α ρ ε υ δ ι ν η τ ο ν ε υ λ α λ ο ν σ τ ο μ α ρ η τ ρ ε ε υ ο ν  
 σ θ ε ν ε ι σ ε μ ε ε λ π ε ι ν α ξ ι ω ς ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ  
 ο υ ς α π α ς σ ο υ τ ο ν τ ο κ ο ν ν ο ε ι ν ο θ ε ν σ ε σ υ μ φ ω ν ω ς δ ο ξ α  
 ζ ο μ ε ε ε ε ε ν

Ἄγνι

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.86#

**Μ** η τ η ς φ θ ο ρ α α ς δ ι α π ε ι ε ι ε ι ε ι ρ α α  
 κ υ ο ο φ ο ρ η σ α σ α α και π α ν τ ε χ η η μ ο ν ι λ ο ο  
 γ ω σ α α ρ κ α δ α α ν ε ι ε ι ε ι σ α α α σ α α

α πει ρα αν δρε πα αρ θε νε ε Θε ο ο το ο ο

κε ε η δο χει ει ει ον του ου α στε ε ε κτου

χω ρι ο ον του ου α πει ει ει ρου ου η πλα στουρ

γου σου σε με γα α λυ υ υ υ νο ο ο με εν η

ψδλ θ' Ἦχος δλ Βε

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.71#

Χ αι αι ροις Α να ασ σα μη η η τρο ο παρ

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος 6 λ α παν γα αρ

ε ευ δι ι νη η η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο

μα 6 λ ρη τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν

α α ξι ι ι ω ως π 9 ι λιγ γι α α δε ε

ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο ο ο ο  
 ον νο ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο  
 ξα α ζο ο με ε ε ε εν

## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Ἀργές, διασκευασμένοι

ὥδ' ἔ'

Ἦχος Γα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.502\*

Μ η της φθο ρα ας δι α πει ει ει ει ει  
 ρα α κυ ο ο φο ρη η σα σα α και παν τε  
 χνη μο νι Λο ο γω σα α αρ κα δα α νει ει ει ει σα α  
 α σα α Μη τερ α πει ρα αν δρε παρ θε ε νε ε Θε  
 ε ο το ο ο κε ε δο χει ει ον του α α

στε ε ε ε ε ε χτου χω ρι ον του α

πει ει ρου πλα στου ουρ γου ου ου σου ου σε ε ε με γα

α λυ υ υ υ νο ο ο με εν

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠδὴ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.404\*

Χ αι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος α παν γα αρ

ε ευ δι ι νη η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο μα ρη

τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν α

α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε ε

νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο χο ον νο

ο ο ειν **Α** ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο **Ξ** α α ζο

ο **Χ** με ε ε ε εν **Θ** λ

## Τῆς Πεντηκοστῆς ἱαμβικαί

Από τῆς Τρίτης μετὰ τὴν Δευτέραν τοῦ ἁγίου Πνεύματος μέχρι καὶ τῆς Παρασκευῆς πρὸ τῶν ἁγίων Πάντων.

### ἤχος δ'

- α **Θ**εῖω καλυφθεὶς ὁ βραδύγλωσσος γνόφῳ, ἐρρητόρευσε τὸν θεόγραφον νόμον. Ἰλὺν γὰρ ἐκτινάξας ὄμματος νόου, ὄρᾳ τὸν ὄντα καὶ μυεῖται Πνεύματος, γινῶσιν, γεραίρων ἐνθέοις τοῖς ἄσμασιν.
- γ **Ἑ**ρρηξε γαστρὸς ἡτεκνωμένης πέδας, ὕβριν τε δυσκάθεκτον εὐτεκνουμένης, μόνη προσευχῇ τῆς προφήτιδος πάλαι, Ἄννης, φερούσης πνεῦμα συντετριμμένον, πρὸς τὸν δυνάστην καὶ Θεὸν τῶν γνώσεων.
- δ **Ἀ**ναξ ἀνάκτων, οἷος ἐξ οἴου μόνος Λόγος προελθὼν, Πατρὸς ἐξ ἀναιτίου, ἰσοσθενὲς σου Πνεῦμα τοῖς ἀποστόλοις, νημερτὲς ἐξέπεμψας ὡς εὐεργέτης, Ἄδουσι· Δόξα τῷ κράτει σου Κύριε.
- ε **Λ**υτήριον κάθαρσιν ἀμπλακημάτων, πυρίπνοον δέξασθε Πνεύματος δρόσον, ὃ τέκνα φωτόμορφα τῆς Ἐκκλησίας. Νῦν ἐκ Σιῶν γὰρ ἐξελήλυθε νόμος, ἡ γλωσσοπυρσόμορφος Πνεύματος χάρις.
- ς **Τ**λασμός ἡμῖν Χριστέ καὶ σωτηρία, ὁ Δεσπότης ἔλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου, ἵν', ὡς προφήτην θηρὸς ἐκ θαλαττίου Στέρνων Ἰωνᾶν, τῆς φθορᾶς διαρπάσῃς ὅλον τὸν Ἀδάμ, παγγενῇ πεπτωκότα.
- ζ **Σ**ύμφωνον ἐθρόησεν ὀργάνων μέλος, σέβειν τὸ χρυσότευκτον ἄψυχον βρέτας, ἡ τοῦ Παρακλήτου δὲ φωσφόρος χάρις, σεβασμιάζει τοῦ βοᾶν· Τριάς μόνη, ἰσοσθενής, ἀναρχος, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Λ**ύει τὰ δεσμά, καὶ δροσίζει τὴν φλόγα, ὁ τρισσοφεγγὴς τῆς θεαρχίας τύπος. Ὑμνοῦσι Παῖδες, εὐλογεῖ δὲ τὸν μόνον Σωτῆρα καὶ παντουργόν, ὡς εὐεργέτην, ἡ δημιουργηθεῖσα σύμπασα κτίσις.

### Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Ἀρχαὶ

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

### Σύντομοι



# Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ὥδῃ α'

Ἦχος δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Θ εἰ ω κα λυ φθει εἰς ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω <sup>6</sup>λ

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup>λ ι

λυν γαρ εκ τι να α ξας ομ μα τος νο ο ου

ο ρα τον ο ον τα <sup>Δ</sup>δ και μυ ει ται Πνευ μα τος γνω

σιν <sup>6</sup>λ γε ραι αι ρων εν θε ε οἰς τοῖς α σμασιν <sup>6</sup>λ <sup>ὥδῃ γ'</sup>

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας <sup>6</sup>λ υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης <sup>6</sup>λ μο νη προσ ευ

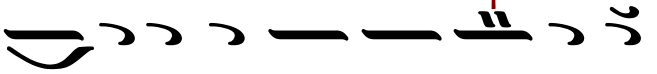
χη της προ φη τι δος πα α λαι <sup>Δ</sup>δ Αν νης φε ρου ου

σης Πνευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην 

 χορός α' και Θε ον των γνω σεων  

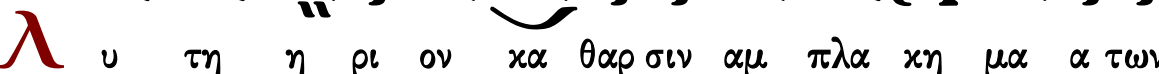
 ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος  Λο

 γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου  ι σο σθε νες σου

 Πνε ευ μα τοις Α πο στο ο λοις  νη μερ τες ε ξε πεμ

 φας ως ευ ερ γε ε της α δου σι  δο ξα τω κρα τει σου

 Κυ ρι ε  

 Λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α των 

 πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο σον ω τε ε

 κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας  νυν εκ Σι

ω ων γαρ ε ξελη η λυ θε νο ο μος η γλωσ σο πυρ

σο μορ φος Δ Πνευμα τος χα αρις 6 λ ὠδὴ ζ'

I λα σμος η μιν Χρι στε και σωτη ρι ι α ο δε σπο

της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε νου 6 λ ιν ως προ φη την

θη ρος εκ θα λατ τι ι ου Δ στερ νων Ι ω να αντης φθο

ρα ας δι αρ πα α σης 6 λ ο λον τον Α δαμ παγ γε νη

πε πτω κο ο τα 6 λ ὠδὴ ζ'

C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος 6 λ σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας 6 λ η του Πα ρα

κλη του δε φω σφο ρος χα αρις σε βα σμι α α ζει Δ του

βο αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε νης α ναρχος ευ λο

γη τος ει <sup>6</sup>λ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

Λ υ ει τα δε σμα α καιδρο σι ι ζει την φλο ο γα <sup>6</sup>λ ο

τρις σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ υ προς <sup>6</sup>λ υ μνου σι

παι αι δες ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ουρ γη

θει σα συμ πα σα κτι ι σι ι ι ι ις <sup>6</sup>λ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Θ εἰ ω κα λυ φθει εἰς ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο φω <sup>6</sup>λ

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup>λ

ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ο

ου <sup>Δ</sup>δ ο ρα τον ο οντα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω σιν <sup>6</sup>λ γε ραι ρων εν θε οῖς τοῖς α σμα σι <sup>6</sup>λ ὥδῃ γ΄

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε ε δας <sup>6</sup>λ υ

βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε νης <sup>6</sup>λ μο

νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι <sup>Δ</sup>δ Αν νης

φε ρου ου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον <sup>6</sup>λ χορὸς α΄ προς

τον δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ δ'

<sup>6</sup>λ ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος <sup>6</sup>λ

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ι

ου <sup>6</sup>λ ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο λοις <sup>Δ</sup>λ

νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε της <sup>6</sup>λ α

δου ου σι <sup>π</sup>q δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ ε'

<sup>6</sup>λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα

α α των <sup>6</sup>λ πυ ρι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο

σον <sup>6</sup>λ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι

ι ι ας <sup>Δ</sup>λ νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η λυ θε

νο ο μος <sup>6</sup>η γλωσ σο πυρ σο μορ φος Πνε ευ μα τος χα

α α ρις <sup>6</sup>

ὠδὴς'

λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α <sup>6</sup>ο

Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε νου <sup>6</sup>

ιν ως προ φη την θη ρος εκ θα λατ τι ου <sup>Δ</sup>στερ νων Ι

ω να αν της φθο ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup>ο λον τον Α

δαμ παγ γε νη η πε πτω κο ο τα <sup>6</sup>

ὠδὴ η'

υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος <sup>6</sup>σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε τας <sup>6</sup>η

του Πα ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α α ρις <sup>Δ</sup>σε

βα σμι α α ζει του βο α αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε

νης α ναρχος ευ λο γη το ος ει  
ὠδὴ ζ'

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο

ο ο γα ο τρις σο φηγ γης της θε αρ χι ας

τυ υ πος υ μνου σι παι αι δες ευ λο γει τε τον μο

ο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την

η δη μι ουρ γη θει σα συ υμ πα σα κτι ι ι σι ι ι

ι ις



# Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ὥδὴ α΄

Ἦχος δὲ Βϝ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.247\*

Βϝ

Θ εἰ ω κα λυ φθεις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο ο ο

φω 6 λερ ρη το ρευ σε Δ τον θε ο ο γρα φον νο ο ο

μον 6 λ ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ΔΙ

ου ο ρα τον ο ον τα Βϝ Δ και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω ω σιν 6 λ γε ραι αι ρων εν θε ε οἰς τοῖς α σμα

σι 6 λ σι ὥδὴ γ΄

Βϝ

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης παι αι αι δας 6 λ

ΔΙ ΜΕΛ Βϝ υ βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε ε νης 6 λ

μο νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι Αν νης

φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον

δυ να α στην χορός α' και Θε ον των γνω σεων

ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο

ο ο νος Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι

ι ι ου ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο

λοις νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε ε ε

της α δου ου σι δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε

υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α α

των <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο ο ο

σον <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ας <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup>

νυν εκ Σι ων γαρ εξ ε λη η λυ θε νο ο ο ο

μος <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> η γλωσ σο πυρ σο μορ φος <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> Πνε ευ μα τος χα

α α α ρις <sup>6</sup>λ<sup>6</sup>

ὠδὴς'

<sup>Β</sup>λ<sup>Β</sup> λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι ι ι

α <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ο Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε

νου <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ιν ως προ φη η την <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> θη ρος εκ θα λατ τι

ου <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> στερ νων Ι ω ναν της φθο ρα ας δι αρ πα α α

σης <sup>6</sup>λ<sup>6</sup> ο λον τον Α δαμ <sup>Δ</sup>λ<sup>Δ</sup> παγ γε νη η πε πτο κο

0 0 0 τὰ 6 λ

ὠδὴ ζ'

ΒϚ

Ϛ υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε ε λος 6 λ

ΔΙ ΒϚ σε βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε ε

ΜΕΛ

ΠΑ

ΔΙ

6 λ τας η του Πα ρα κλη του δε φω σφο ρος χα

ΒϚ

Α ρις 6 λ σε βα σμι α α α ζει 6 λ του βο αν Τρι α ας μο νη

ι σο σθε νης 6 λ αν αρχος ευ λο γη το ο ο ος ει 6 λ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6 λ

ΒϚ

Λ υ ει τα δε σμα και δρο σι ι ζει την φλο ο ο ο

γα ο τρι σο φεγ γης της Θε αρ χι ας τυ υ υ

πος υ μνου σι Παι αι δες ευ λο γει ει δε

τον μο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε

ε ε ε την η δη μι ουρ γη θει ει σα συ υμ πα

σα κτι σι ι ι ις

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασαίαι Πεντηκοστής  
ὥδῃ α΄

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.491\*

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο μον ι

λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ου

ο ρα τον ο ον τα και μυ ει ται Πνε ευματος γνω

σιν γε ραι αι ρων εν θε ε οιστοις α σμασιν

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης μο νη προσ ευ

χη της προ φη η τι δος πα λαι Α αν νης φε ρου σης

πνε ευμα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην

χορὸς α' και Θε ον των γνωσεων

Α ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο νος

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου ι σο

σθε νες σου Πνε ευματοις α πο στο ο λοις νη μερ τες

ἐξ ἐπεμψας ὡς εὐ ἐρ γε ἐτῆς ἡ αἰδοῦσι δοξα

τω κρατεῖσου Κυριε

ὠδὴ ε'

Λυτηηριον καθαρσιν ἀμπλακημαα

των πυριπνον δεξασθε Πνευματος δροο

σον ὡτε ἐκναφωτομορφας Ἐκκλησιᾶς

Ἄνουν ἐκ Σιων ὡν γὰρ ἐξ ἑληθηθενοομος ἡ

γλωσσόπυρσομορφος Πνευματος χαρις

ὠδὴ ε'

Ἰλασμος ἡμιν Χριστε καὶ σωτηριᾶ ο Δε

σποτῆς ἐλαμψας ἐκ τῆς Παρθενου ἵν ὡς προφη

την θηρος ἐκθαλαττιου Ἄσπερων Ἰωνάαν

της φθο ρα ας δι αρ πα α σης ο λον τον Α δαμ

παγ γε νη η πεπτω κο ο τα

υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας η του Πα

ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α ρις σε βα σμι α

α ζει του βο αν Τρι α ας μο νη ι σο σθε νης α

ναρχος ευ λο γη τος ει

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Λ υ ει τα δε σμα ακαιδρο σι ι ζει την φλο ο γα ο



τρις σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ πος <sup>6</sup>λκ υ μνου σι

παι αι δες ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την <sup>6</sup>λκ <sup>σ</sup>η δη μι ουρ

γη θει σα συ υμ πα σα κτι σις <sup>6</sup>λκ

## Ἀργαί

### Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>19</sup>

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος <sup>4</sup>δὶ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστήριον  
2005 σ.397\*

Θ ει ω κα α λυ φθεις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω

ωσ σο ος γνο ο ο φω <sup>6</sup>λκ ε ρη η το ρε ευ σε τον θε

ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον <sup>π</sup>9 ι λυ υν

<sup>19</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.  
[πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα το ος νο ο ο

οὐ οὐκ ὁ ρα α το ο ο οντα και αι μυ ει ει ται

Πνευματογνωσικὴ γεραια

αι αι ρων εν θε ε ε ε οis τοis α σμα α σι

και μου επιταλαιπνευμα...

Ε ρ ρη ξε γα α στρος η η η τε ε κνω με ε

ε ε νη ης πε ε ε δας **κ** υ υ βριν τε δυ υ υσ κα

ΘΕ Ε ΧΤΟ ΟΥ Ε ΕΥ ΤΕ ΧΝΟΥ ΟΥ ΜΕ Ε Ε ΝΗ ΗΣ ΜΟ Ο ΝΗ

προς ε ευ χη τη η ης προ ο φη τι ι ι ι

$\dot{\omega} \delta \eta \gamma'$

ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup>λ A αν νης φε ρου ου ου σης

πνε ευ μα συ υ υν τε ε ε τριμ με ε ε ε

ε νον <sup>Δ</sup>προς τον δυ υ να α α στην <sup>✧</sup> χορός α' και αι Θε ο

ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ

<sup>✧</sup> της προ φη η τι ι δος πα α α α α λαι αι A

α αν νης <sup>6</sup>λ φε ρου ση ης πνε ευ μα α συν τε ε τρι

ιμ με ...

<sup>✧</sup> και Θε ο ον τωων γνω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ <sup>ῶδὴ δ'</sup>

<sup>Δ</sup> α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup>λ Λο ο γος προ ο ε ελ

θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου ου <sup>π 9</sup> ι

σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οis α πο ο

ο στο ο ο λoι ois <sup>6 λ</sup> νη μερ τε ες εξ ε ε πε εμ ψας

ω ω ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε της <sup>Δ λ</sup> α δου ου σι δο

ο ξα τω κρα α α τει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6 λ</sup> ὠδὴ ε΄

Λ υ τη η ρι ο ον κα θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των <sup>6 λ</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ε ξα

α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον <sup>π 9</sup> ω τε ε

ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης Εκ κλη η η σι

ι ι α ας <sup>6 λ</sup> νυν ε εκ Σι ω ωων γαρ εξ ε λη η

η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσσο πυρ

σο ο μο ορ φο ος Πνευ μα α α α α το ος χα α α

ρις η γλωσσο πυρ σο ο μο ορ φο ος...

ᾠδὴς'

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα αμ ψα ας εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ιν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι

ι ι ου ου στε ερ νων Ι ι ω ω ω ναν της φθο

ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο

ο λον τον Α α δαμ παγ γε ε ε νη η πε πτω

ω ω κο ο ο τα α <sup>6</sup>λ

\* θη ρος εκ θα λατ τι ου ου στε ε ερ νω ων Ι ω ω ναν <sup>Δ</sup>

της φθο ρα α α ας δι α αρ πα α α σης <sup>Δ</sup> ο λο ον τον

Α α δαμ παγ γε νη πε πτω ω ... <sup>ὠδὴ ζ'</sup>

ϸ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α νω ων με

ε ε λος <sup>6</sup>λ σε ε βειν το χρυ υ υ σο ο τε ευ κτο ον α

α ψυ χο ον βρε ε ε τα ας <sup>π 9</sup> η του Πα ρα κλη του ου

δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις <sup>6</sup>λ \* σε βα α σμι α

α α ζει ει του ου βο α α αν <sup>γ'</sup>η Τρι α α ας

μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α ναρχο ος ευ λο

ο ο ο ο γη η το ο ος ει <sup>6</sup>λ

\* <sup>6</sup>λ σε βα σμι ι α α α ζει του βο ο αν <sup>γ'</sup>η Τρι ... ὠδὴ η'

Α <sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο <sup>χ</sup>γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup>λ

Λ υ υ ει ει τα δε ε σμα και αι αι δρο ο σι ζει

ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα <sup>6</sup>λ ο τρις σο φε εγ γης

τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο ος <sup>π</sup>η υ μνου σι

παι αι αι αι αι δες ευ λο ο ο γει ει ει δε το ο

ον μο ο ο ο ο ο νον <sup>6</sup>λ σω τη η η ρα και

πα αν του ουρ γο ον ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε  
 την η δη μι ουρ γη θει ει ει σα α συμ πα α α α  
 α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις

## Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
 Χρόνος διπλοῦς  
 ᾠδὴ α'

Ἦχος δὲ Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 ἐπανεκδόση 1991 σ.358\*

Θ ει ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω  
 ω ω ω ωσ σο ος γνο ο ο φω ερ ρη η το ρε ευ  
 σε τον θε ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον ι λυ  
 υν γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα α α α  
 α το ος νο ο ο ου ο ρα α το ον ο ο ον τα



και αι μυ υ ει ει ται Πνε ευ μα το ος γνω ω ω

σι ιν <sup>6</sup>λ γε ραι αι ρων εν θε ε ε οις τοι οις α

σμα α σι ιν <sup>6</sup>λ ῥδῆ γ'

Ε ρ ρη η ξε ε γα α στρος η η η τε ε κνω με

ε ε ε ε νη ης πε ε ε δας <sup>6</sup>λ υ υ βριν τε

δυ υ υσ κα θε ε κτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε

νη ης <sup>π</sup>μ μο ο νη προσ ε ευ χη τη η ης προ ο

φη τι ι ι ι ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup>λ Αν νης

φε ε ρου ου ου σης πνε ευ μα α συ υ υν τε ε

τρι ι ιμ με ε ε ε ε νον <sup>Α</sup>λ χορός α' προς τον δυ να α

στη ην και αι Θε ε ο ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ <sup>ῥδὴ δ'</sup>

α <sup>α</sup> ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup>λ Λο ο γος προ

ο ε ελ θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου

ου <sup>π</sup>9 ι σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οis α

πο ο στο ο ο λοι οis <sup>6</sup>λ νη μερ τε ες ε εξ

ε ε πε εμ ψας <sup>Δ</sup>ῥ ω ω ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε

ε ε της <sup>Δ</sup>ῥ α δου ου σι δο ο ξα τω κρα α α τει ει σου ου

Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup>λ <sup>ῥδὴ ε'</sup>

λ υ τη η ρι ο ον κα α θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον ω τε

ε ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης εκ κλη

η σι ι ι α ας νυν ε εκ Σι ω ω ων γαρ

ε εξ ε ε λη η η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο

ο μος η γλωσ σο πυρ σο ο μο ορ φο ος Πνευ μα α α α

α το ος χα α α ρις

λα σμος η η μιν Χρι ι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα α μ ψ α ας ε εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ι ν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι  
 ι ι ου ου <sup>6</sup> λ στε ερ νων Ι ι ω ω ω ναν τη ης  
 φθο ο ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης <sup>Δ</sup>  
 ο ο ο λον τον Α α δαμ παγ γε ε ε νη η  
 πε πτω ω κο ο ο τα α <sup>6</sup> λ <sup>ὠδὴ ζ'</sup>  
 C υ υμ φω νο ον ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α  
 α νω ων με ε ε λος <sup>6</sup> λ σε ε βειν το χρυ υ υ σο  
 ο τε ευ κτο ον α α ψυ χο ον βρε ε ε τα ας <sup>π 9</sup> η του  
 Πα ρα κλη του ου δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις <sup>6</sup> λ  
 σε βα α σμι α α α ζει του ου βο ο α αν Τρι

α α ας μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α να

αρχο ος ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

ου ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Λ υ υ ει τα α δε ε σμα και αι αι δρο ο

σι ζει ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα ο ο τρισ

σο φε εγ γης τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο

ος υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ευ λο ο γει

ει ει ει δε το ον μο ο ο νο ον Σω τη η

η ρα και πα αν του ουρ γο ον ως ε ε ευ

  
 ε ε ερ γε ε ε ε ε την  η δη μι ουρ γη θει ει  
  
 ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις 

## Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασία Πεντηκοστής  
ὥδ' ἁ'

Ἦχος  Βϩ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.200\*

   
 ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω  
  
 ωσ σο ος γνο ο ο ο φω   ε ρη η το ο ο ρε  
  
 ε ευ σε   το ον θε ε ο ο ο ο γρα α φον νο ο  
  
 ο ο μο ον   ι λυ υν γαρ ε  εκ τι ι ι να  
  
 α α α α α ξα ας ομ μα α α α α το ος νο ο  
  
 ο ο ου   ο ρα α το ον ο ο ο ο ο ον τα   και

αι μυ υ ει ει ται Πνε ευ μα α α α το ος γνω ω ω ω  
 σιν <sup>6</sup> γε ραι αι αι αι αι ρω ω ων εν θε ε ε  
 ε οις τοι οις α α σμα α σι ιν <sup>6</sup> ϖδ'η'γ'  
 ρ ρη η ξε γα στρος η η τε εκ νω με ε ε ε  
 ε νη ης παι αι αι αι δας <sup>6</sup> υ υ βρι ι ιν τε δυ υ υσ  
 κα α θε εκτο ον ε ευ τε εκνου με ε ε ε  
 νη ης <sup>π</sup> μο ο νη προσ ευ χη της προ φη η τι ι ι  
 δο ος πα α α α λαι αι Α α αν νης <sup>6</sup> φε ρου ου  
 ση ης πνε ε ε ε ευ μα α συν τε ε τρι ι ιμ  
 με ε ε ε ε νον <sup>Δ</sup> προς τον δυ να α α α α α

ΒΞ

στην χορὸς α' και αι Θε ε ο ον τω ων γνω ω σε ε ω

ων 6 λ

ὠδὴ δ'

ΒΞ

Α

α ναξ α α να α α κτων οι οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο ο νος 6 λ Λο ο γος

ΠΑ

προ ο ο ε ελ θω ων πα α τρο ος ε εξ

ΝΗ

ΒΞ

α α ναι αι τι ι ι ι ου ου π 9 ι σο σθε

νε ες σου ου ου Πνε ε ε ευ μα τοι οis Α πο ο

ΔΙ

ο στο ο ο λοι οis 6 λ νη μερ τε ες ε ε ξε ε

ε πε ε εμ ψα ας ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε

ΒΞ

ΝΗ

της Α α δου ου ου σι δο ο ξα α α τω κρα α α α



ΜΕΛ

ΒΞ

τει σου ου Κυ υ ρι ι ε ε

ὠδὴ ε'

ΒΞ

Λ υ τη η ρι ο ον κα α θα α αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α α των πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε πνε ευ μα α το ος δρο ο ο ο σο

ΓΑ ΒΞ

ον ω τε ε κνα φω ω το ο μο ο ορ φα τη ης Εκ

κλη η σι ι ι α ας νυν ε εκ Σι ι ι ω

ΜΕΛ

ΔΙ

ω ω ω ων γαρ εξ ε λη η η η η η λυ υ

ΓΑ

ΔΙ

θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσ σο πυ υρ σο ο

ΒΞ

ο μο ο ορ φος Πνε ευ μα α α α α το ος χα α α α

ρις

ὠδὴ ε'

ΒΞ

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης

ΠΑ

ε ε λα αμψα ας ε εκ τη ης Παρ θε ε ε ε

νου ου ι ιν ως προ φη η η την θη η ρο ος ε

ε εκ θα λα α ατ τι ι ι ου ου στε ερ νω ω ω ν

ΜΕΛ

Ι ι ω ω ω ναν της φθο ρα α α α α ας

δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο ο λο ον

ΒΞ

τον Α δαμ πα α αγ γε ε νη η η πε ε ε ε

ε πτω ω χο ο ο ο τα

ὥδῃζ'

C υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α

α α νω ων με ε ε ε ε λος σε ε βει ει ειν το

χρυ υ υ σο ο τε ευκτο ον α α ψυ υ χον βρε

ε ε τα ας η του Πα ρα κλη η του ουδε ε φω

σφο ο ο ο ο ρο ος χα α α α ρις σε βα α σμι

ι α α α α α α ζει του ου βο α α αν Τρι

α α ας μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε νης α α να

α αρ χος ος ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει ει

ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου ου ου με

εν το ον Κυ υ ρι ι ο ον

<sup>ΒΞ</sup>  
 Λ υ υ ει ει ει τα δε σμα και αι αι δρο ο σι ζει  
 ει ει ει ει τη ην φλο ο ο ο γα <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup> ο τρις ο φεγ γης  
<sup>ΠΑ</sup>  
 τη ης θε ε α αρ χι ι α ας τυ υ υ υ πο ος <sup>π ρ</sup>  
<sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup>  
 υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ε ε ευ λο ο γει  
 ει ει δε το ο ον μο ο ο ο νο ον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> Σω  
<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΔΙ</sup>  
 τη η η η η ρα και πα αν τουρ γο ο ον  
<sup>ΒΞ</sup>  
 ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε την <sup>Δ</sup> η δη μι ουρ  
 γη θει ει ει ει ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι  
<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
 ι σι ι ι ι ις

φδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α', ὥδῃ θ'

ἤχος βαρὺς

«**Μ**ὴ τῆς φθορᾶς διαπείρα κυοφορήσασα, καὶ παντεχνήμονι Λόγῳ σάρκα δανείσασα, μητέρα ἀπείρανδρε, Παρθένε Θεοτόκε, δοχεῖον τοῦ ἀστέκτου, χωρίον τοῦ ἀπείρου πλαστοουργοῦ σου, σὲ μεγαλύνομεν». (β')

**Ἐ**πιπαφλάζοντος πάλαι πυρίνου ἄρματος, ὁ ζηλωτῆς καὶ πυρίπνους χαίρων ὀχούμενος, τὴν νῦν ἐκλάμψασαν ἐπίπνοιαν ἐδήλου, ἐξ ὕψους ἀποστόλοις, ὕφ' ἧς καταλαμφθέντες, τὴν Τριάδα πᾶσιν ἐγνώρισαν.

**Ν**όμου τῶν φύσεων δίχᾳ ξένον ἠκούετο· τῶν μαθητῶν τῆς μιᾶς γὰρ φωνῆς ἀπηχουμένης, Πνεύματος χάριτι, ποικίλως, ἐνηχοῦντο, λαοί, φυλαὶ καὶ γλῶσσαι, τὰ θεῖα μεγαλεῖα, τῆς Τριάδος γινῶσιν μουόμενοι.

κανὼν β', ὥδῃ θ'

ἤχος δ'

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἑτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

«**Χ**αίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος. Ἄπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως. Ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν». (β')

**Δ**όξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἑτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

**Ἦ**δειν ἔοικε τὴν φυσίζων κόρην. Μόνη γὰρ ἐν δίνησι κεκρύφει Λόγον νοσοῦσαν ἀλθαίνοντα τὴν βροτῶν φύσιν. Ὅς δεξιοῖς κλισμοῖσι νῦν ἰδρυμένος Πατρός, πέπομφε τὴν χάριν τοῦ Πνεύματος.

**Κ**αὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἑτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

**Ὅ**σοις ἔπνευσεν ἡ θεόρρυτος χάρις, λάμποντες, ἀστράπτοντες, ἡλλοιωμένοι, ὀθνεῖαν ἀλλοιώσιν εὐπρεπεστάτην ἰσοσθενοῦσαν τὴν ἄτμητον εἰδότες, σοφὴν τρίφεγγον οὐσίαν δοξάζομεν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

**Ἰωάννου Πρωτοψάλτου**

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα  
 και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα  
 πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε δο χει ον του  
 α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου σε  
 με γα λυ υ νο ο μεν  
 (β')

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.254#

**Ε** πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα  
 τος ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με νος  
 την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου  
 εξ υ ψους Α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ

φθεν τες την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν **η**

Ιωάννου Πρωτοψάλτου Ειρμολόγιον 1903 σ.430#

**Ν** ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το **η** των μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου

με νης Πνευματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το λα

οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α μεγα λει α της Τρι

α δος γνω σιν μυ ου ου με ε νοι **η**

ὥδῃ θ', κανὼν β'

Ἦχος **η** B8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.430#

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του **π** **η** λα βον τες ε ξε πλητ τον το **ε** **λ** ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες **η** κα θως το Πνευ μα ε δι δου **ε** **λ**

**Χ** αι ροις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>λ

α πανγαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο μαρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους

α πας σου τον το ο κον νοειν <sup>Δ</sup>δλ ο θεν σε συμ φω νως δο ξα ζο

<sup>6</sup>λ  
μεν (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Δ</sup>δλ και α γι ω Πνευ μα

<sup>6</sup>λ  
τι

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>δλ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ



**Υ** δειν ε οι κε ε την φυσι ι ζω ον Κο ο ρην

μο νηγαρ εν δι νησι κε κρυ φει Λο ο γον <sup>6</sup>νο σου ου σαν

αλ θαι νοντατην βρο των φυ υ σιν <sup>Δ</sup>ο δε ξι οισ κλι σμοι

σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>6</sup>Πα τρος πε πομ φετην χα α ριν

του Πνευ ματος <sup>6</sup>

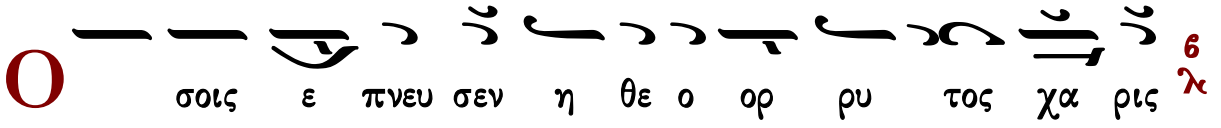
**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

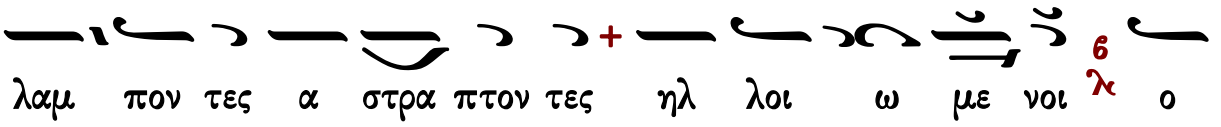
αι ω νων Α μην <sup>6</sup>

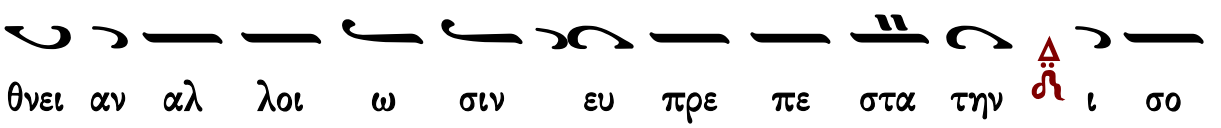
**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

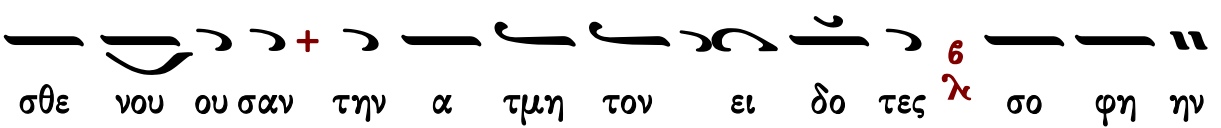
του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>ε τε ραις γλωσ

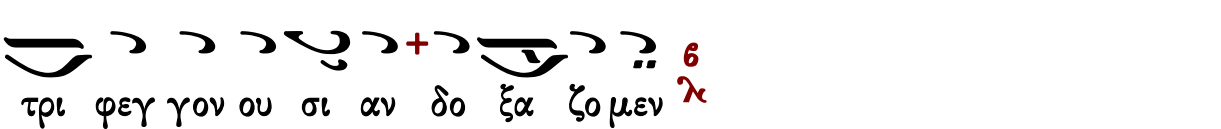
σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>


 Ο σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6</sup>λ


 λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>λ ο


 θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup>ι σο

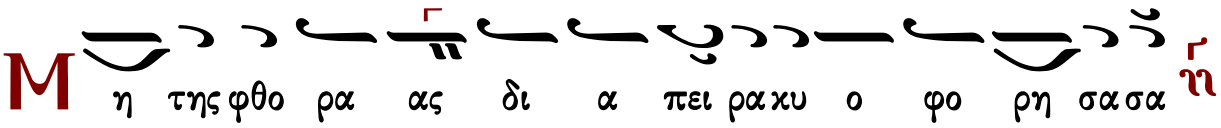

 σθε νου ου σαν την α τμη τον ει δο τες <sup>6</sup>λ σο φη ην

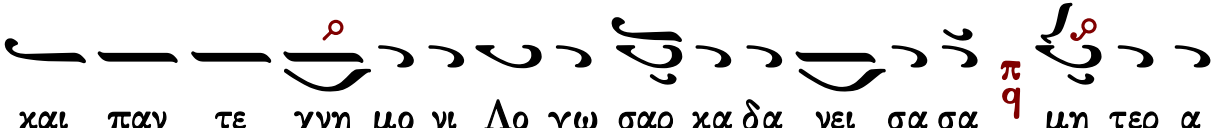

 τρι φεγ γον ου σι αν δο ξα ζο μεν <sup>6</sup>λ

## Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος  ΓαΓαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*


 Μ η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>Γ</sup>η


 και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα <sup>π</sup>η μη τερ α


 πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>Γ</sup>η δο χει ον του

α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στουρ γου σου 

σε ε με γα λυ υ νο ο μεν  (β')

 πι πα φλα ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ ματος 

ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου μενος  την

νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου  εξ υ

φους α πο στο ο λοις υφ ης κατα λαμ φθεν τεσ  την Τρι α

δα πα α σιν ε γνω ω ρι ι σαν 

 ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το  των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α πη

χου με νης  πνευ μα τος χα ρι τι ποι κι λως εν η χου ουν

το **η** λα οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α μεγα λει

ει α **Α** της Τρι α δος γνω ω σιν μυ ου ου με ε νοι **η**

ῥδὴ θ', κανὼν β'

**Ἦχος** **Δ** **Β**8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.444\*

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του **π** **9** λα βον τες ε ξε πλητ τον το **6** **λ** ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες **Α** **Δ** κα θως το Πνευ μα ε δι δου **6** **λ**

**Χ** αι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος **6** **λ** α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα **6** **λ** ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως **6** **λ** ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ειν **Α** **Δ** ο θεν σε συμ φω νως δο

Ξα ζομεν<sup>6</sup><sub>λ</sub> (β')

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευμα

τι<sup>6</sup><sub>λ</sub>

Αποστολοι την χαριν του Παρακλη

του<sup>π</sup><sub>9</sub> λαβοντες ε ξεπληττον το<sup>6</sup><sub>λ</sub> ετεραις γλωσ

σαις λαλουουντες<sup>Δ</sup><sub>λ</sub> καθως το Πνευμα ε διδου<sup>6</sup><sub>λ</sub>

Υδειν εοικε την φυσιι ζωον κοορην<sup>6</sup><sub>λ</sub>

μονη γαρ ενδινησει κεκρυφει Λογον<sup>6</sup><sub>λ</sub> νοσου ου

σαν αλθαινοντατην βροτων φυουσιν<sup>Δ</sup><sub>λ</sub> ος δεξι ος

κλισμοιοσινυνιδρυμενος<sup>6</sup><sub>λ</sub> Πατρος πεπομφε

την χαριν του Πνευματος <sup>6</sup>λ

**Κ** αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην <sup>6</sup>λ

**Α** πο ο στο λοι την χαριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα α ρις <sup>6</sup>λ

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>λ ο θνει ει

αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την <sup>Δ</sup>λ ι σο σθε νου ου

σαν την α τμη τον ει δο ο τες <sup>6</sup>λ σο φη ην τρι φεγγον ου σι

ανδο ξα ζομεν <sup>6</sup>λ

## Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὥδη θ', κανὼν α'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253#

Μη της φθορας διαπειρακυοφορησασα <sup>ΓΑ</sup>η

και παντε χνημο νι Λογωσαρκαδα νεισασα <sup>ΠΑ</sup>Μη <sup>ΝΗ</sup>η

τερ α πειρανδρε Παρθε νε Θεο το ο κε <sup>ΜΕΛ</sup>δο <sup>ΠΑ</sup>η

χειον του αστε εκτου χωριον του απειρου πλα <sup>ΝΗ</sup>η

στουρ γου σου σε μεγαλυ νο <sup>ΓΑ</sup>μεν <sup>ΝΗ</sup> (β')

Επι παφλααζοντος παλαιπυρινου αρματος <sup>ΓΑ</sup>η

ο ζηλω της καιπυριπνους χαιρων ο χουμενος <sup>ΠΑ</sup>η

ΝΗ ΜΕΛ ΠΑ  
 νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου **η** εξ  
 ΝΗ ΓΑ ΝΗ  
 υ ψους Α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ φθεν τες την  
 ΓΑ  
 Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν **η**  
 Ν  
 ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η κου  
**η**  
 ε το των Μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου με  
**η**  
 νης Πνευ ματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το **η** λα  
 οι φυ λαι κα γλω ωσ σαι τα θει α με γα λει α της  
 Τρι α δος γνω σιν μυ ου ου με νοι **η**

ὥδῃ θ', κανὼν β'

Ἦχος δὲ Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσιοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

Α  
 πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη



του <sup>π</sup><sub>9</sub> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup><sub>λ</sub> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup><sub>λ</sub> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup><sub>λ</sub>

**Χ** αι ροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος <sup>6</sup><sub>λ</sub>

α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο ο μα <sup>6</sup><sub>λ</sub> ρη τρε

ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup><sub>λ</sub> ι λιγ γι

α δε νους <sup>Δ</sup><sub>λ</sub> α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ</sup><sub>λ</sub> ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζομεν <sup>6</sup><sub>λ</sub> (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Δ</sup><sub>λ</sub> και α γι ω Πνευ μα τι <sup>6</sup><sub>λ</sub>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup><sub>9</sub> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup><sub>λ</sub> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες  κα θως το Πνευ μα ε δι δου 

 δειν ε οι κε την φυσι ι ζω ον Κο ρην  μο νη

γαρ εν δι νησι κε κρυ φει Λο γον  νο σου σαν αλ

θαι νον τατην βρο των φυ σιν  ος δε ξι οισ κλι σμοι οι

σι νυν ι δρυ με νος Πα τρος  πε πον θε την χα ριν του

 Πνευ ματος

 αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

 ω νων α μην

 πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

 του λα βον τες ε ξε πλητ τον το  ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6 λ</sup>

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6 λ</sup>

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6 λ</sup> ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup> ι σο σθε

νου ου σαν την α τμη τον ει δο τες <sup>6 λ</sup> σο φη ην τρι

φεγγον ου σι αν δο ξα ζομεν <sup>6 λ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος  Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα

σα <sup>η</sup> και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα <sup>π η</sup>

Μη τερ α πει ραν δρε Παρ θε νε Θε ο το ο κε η δο

χει ον του α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα

στουρ γου σου σε με γα λυ υ νο ο μεν (β')

Ε πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα

τος ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με

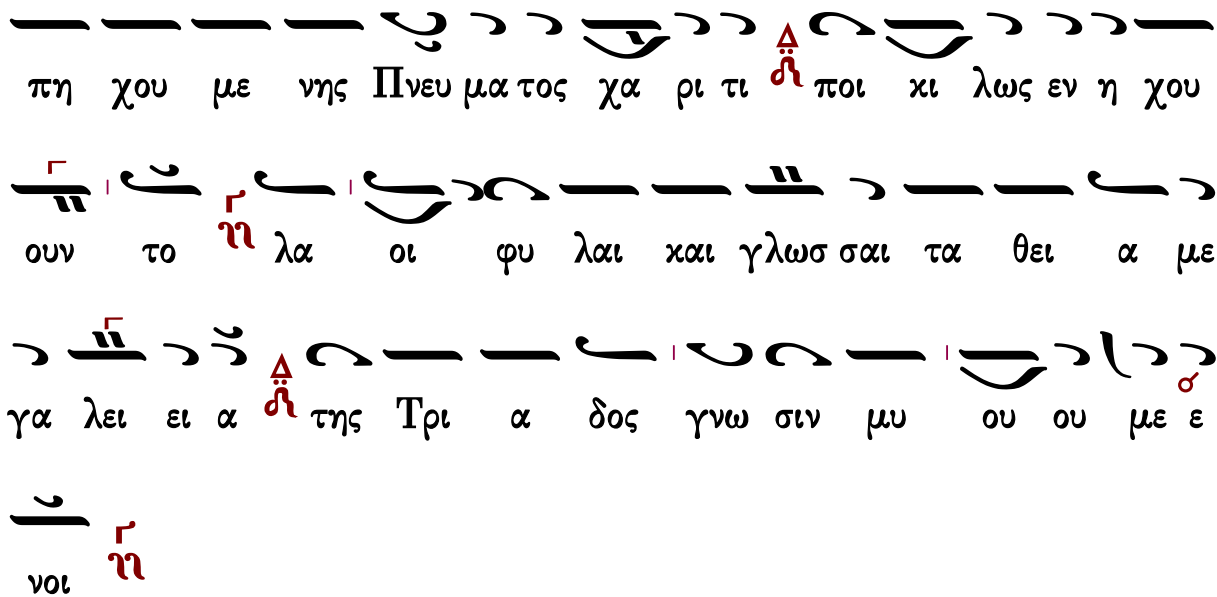
νος την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η

λου εξ υ ψους α πο στο ο λοις υφ ης κα τα λαμ

φθεν τες την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α



ᾠδὴ θ', κανὼν β'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*



σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ει ν <sup>6</sup>ο <sup>λ</sup>θεν σε συμ φω νως δο ξα

ζο μεν <sup>6</sup>λ (β')

<sup>Δ</sup>ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>6</sup>λ

<sup>Δ</sup>πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

<sup>Υ</sup>δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον κο ο ρην <sup>6</sup>λ μο νη γαρ

εν δι νη σι κε κρυ φει Λο ο γον <sup>6</sup>λ νο σου ου σαν αλ

θαι νοντα την βρο τω ων φυ υ σιν <sup>Δ</sup>ος δε ξι οισ κλι σμοι

οι σι νυν ι δρυ με νος Πα τρος <sup>6</sup>πε πομ φε την χα ριν του

Πνευ μα τος <sup>6</sup>

**Κ** αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην <sup>6</sup>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορρυτος χα α ρις <sup>6</sup>λαμ

πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>ο θνει ει αν

αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την ι σο σθε νου ουσαν  
την α τμη τον ει δο ο τες σο φη ην τρι φεγ γον ου σι αν  
δο ξα ζομεν

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος δ'

Χαίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος· ἅπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον,  
οὐ σθένει σε μέλπειν ἄξιως, ἱλιγγιᾷ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως  
δοξάζομεν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδῆ θ'

ἦχος δ' Βε

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.430#

Χ αι ροις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος



α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους

α πας σου τον το ο κον νο ει ν <sup>Δ</sup> ο θεν σε συμ φω νως δο ξα

ζο <sup>χ</sup> με ε ε ε εν <sup>6</sup> λ

Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>Λ</sup> δὲ Βα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανάκδοση 1991 σ.444\*

**Χ** αι ροις α νας σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup> λ α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα <sup>6</sup> λ ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως <sup>6</sup> λ ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ει ν <sup>Δ</sup> \* ο θεν σε συμ φω νως δο

Ξα ζομεν <sup>6</sup>λ

\* ο θεν σε συμ φω ω νως δο ξα α ζο με ε ε ε εν <sup>6</sup>λ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ψδλ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>λ Bx

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

Χ αι ροις Α νας σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος <sup>6</sup>λ

α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο ο μα <sup>6</sup>λ ρη τρε

ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>λ ι λιγ γι

α δε νους <sup>Δ</sup>λ α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ</sup>λ ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζο με ε ε ε εν <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδλ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>λ Bx

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*

**Χ** α ι ρ ο ι ς α ν α σ σ α μ η τ ρ ο π α α ρ θ ε ν ο ν κ λ ε ε ο ς α π α ν  
 γ α ρ ε υ δ ι ν η τ ο ν ε υ λ α λ ο ν σ τ ο μ α ρ η τ ρ ε ε υ ο ν  
 σ θ ε ν ε ι σ ε μ ε ε λ π ε ι ν α ξ ι ω ς ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ  
 ο υ ς α π α ς σ ο υ τ ο ν τ ο κ ο ν ν ο ε ι ν ο θ ε ν σ ε σ υ μ φ ω ν ω ς δ ο ξ α  
 ζ ο μ ε ε ε ε ε ν

Ἀρχή

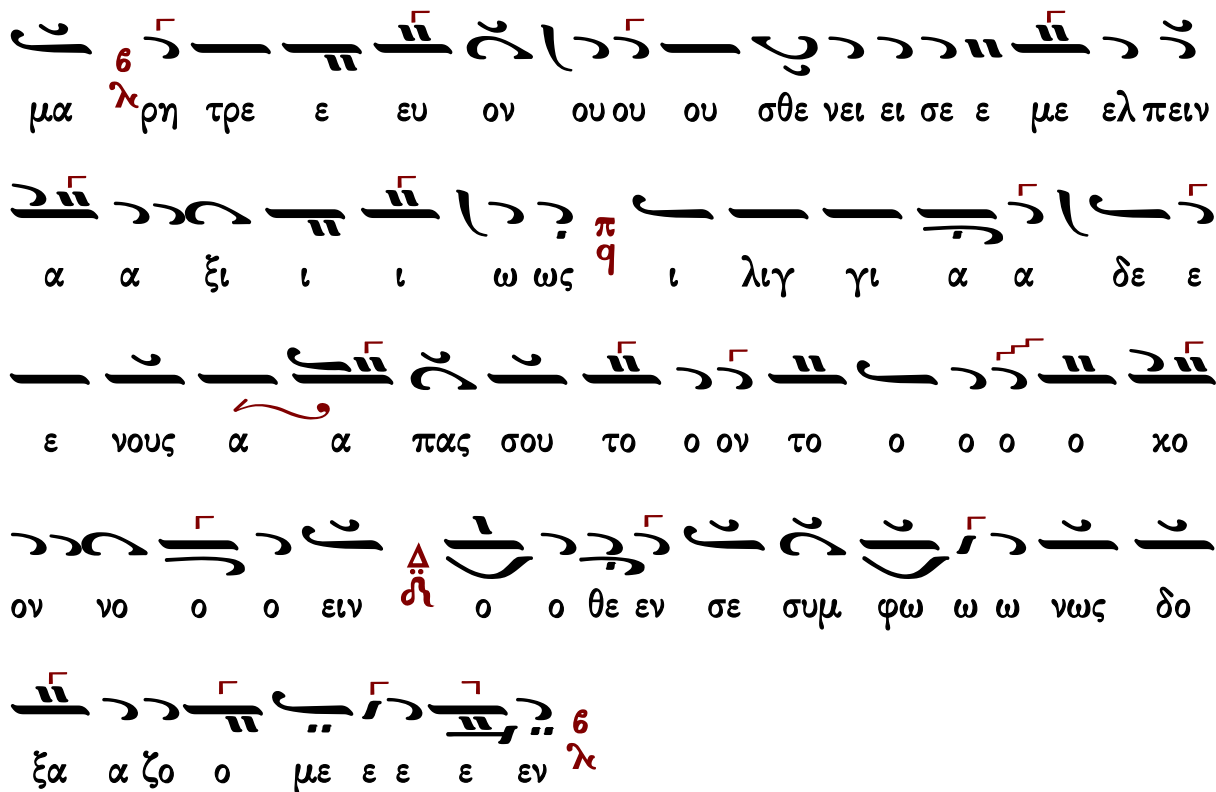
Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.71#

**Χ** α ι α ι ρ ο ι ς Α ν α α σ σ α μ η η η τ ρ ο ο π α ρ  
 θ ε ε ε ε ε ν ο ο ν κ λ ε ε ε ο ς α π α ν γ α α ρ  
 ε ε υ δ ι ι ν η η η τ ο ο ν ε ε ε υ λ α α α λ ο ο ν σ τ ο ο ο



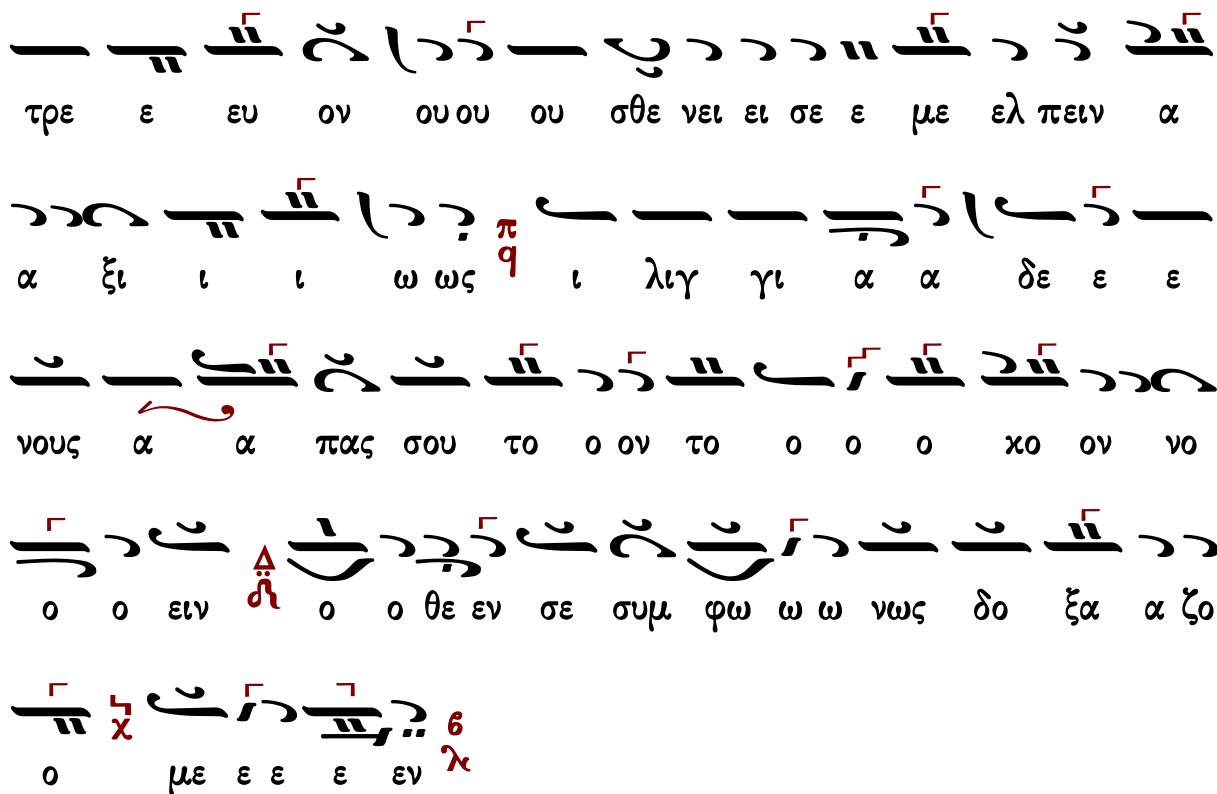
## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὡδὴ θ'  
Διασκευασμένη

Ἦχος δὲ Β΄

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.404\*





Γαβριήλ Κουντιάδου

ῥῶδῇ θ'

ἤχος ὁ ὡς Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανέκδοση 1991 σ.366\*



α ρη τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν  
 α α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε  
 ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο χο  
 ον νο ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ο  
 ξα α ζο ο με ε ε ε εν

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Β

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.206\*

Χ αι αι ροις Α α να ασ σα μη η η  
 τρο ο πα α αρ θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ε ος  
 α παν γα αρ ε ε ευ δι ι νη η η το ον ε ευ λα

α α α α λο ον στο ο ο ο μα ρη ρη τρε ευ ον ου ου  
 ΠΑ  
 ου σθε ε νει ει σε ε με ελ πει ει ν α α ξι ι  
 ΝΗ ΒΞ  
 ι ι ω ως ι λιγ γι α α α δε ε ε  
 ΜΕΛ ΔΙ  
 νους α α πας σου ου το ον το ο ο ο ο ο  
 ΒΞ  
 κον νο ο ο ει ν ο ο θε ε εν σε ε ε συμ  
 ΝΗ ΜΕΛ  
 φω ω ω ω νως δο ο ξα α ζο ο με ε ε ε εν

# Τῆς Μεταμορφώσεως (προεόρτιες)

Από 27 ἔως 31 Ἰουλίου καί ἀπό 2 ἔως 5 Αὐγούστου

ἤχος δ'

- α **Χ**οροὶ Ἰσραήλ, ἀνίκμοις ποσί, πόντον ἐρυθρόν, καὶ ὑγρὸν βυθὸν διελάσαντες, ἀναβάτας τριστάτας, δυσμενεῖς ὀρώντες ἐν αὐτῷ ὑποβρυχίους, ἐν ἀγαλλιάσει ἔμελπον· Ἀσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται
- γ **Τ**όξον δυνατῶν ἡσθένησε, καὶ οἱ ἀσθενοῦντες, περιεζώσαντο δύναμιν· διὰ τοῦτο ἐστερεώθη, ἐν Κυρίῳ ἡ καρδία μου.
- δ **Εἰ**σακήκοα τὴν ἔνδοξον οἰκονομίαν σου Χριστέ ὁ Θεός, ὅτι ἐτέχθης ἐκ τῆς Παρθένου, ἵνα ἐκ πλάνης ῥύσῃ τοὺς κραυγάζοντας· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Ὁ** τοῦ φωτὸς διατμήξας τὸ πρωτόγονον χάος, ὡς ἐν φωτὶ τὰ ἔργα ὑμνεῖ σε Χριστέ, τὸν δημιουργόν, ἐν τῷ φωτὶ σου, τὰς ὁδοὺς ἡμῶν εὐθυνον.
- ς **Ἐ**ν τῷ θλίβεσθαί με, ἐβόησα πρὸς Κύριον, καὶ ἐπήκουσέ μου, ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου.
- ζ **Ἀ**βραμιᾶῖοι ποτέ, ἐν Βαβυλῶνι παῖδες, καμίνου φλόγα κατεπάτησαν, ἐν ὕμνοις κραυγάζοντες· ὁ τῶν πατέρων Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- η **Οἱ** ἐν Βαβυλῶνι παῖδες, τῷ θείῳ πυρπολούμενοι ζήλῳ, τυράννου καὶ φλογὸς ἀπειλὴν, ἀνδρείως κατεπάτησαν, καὶ μέσον πυρὸς ἐμβληθέντες, δροσιζόμενοι ἔψαλλον· εὐλογεῖτε πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος δ' Βε

ὥδ᾽ α'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.307#



**Χ** ο ροι Ισ ρα ηλ α νι χμοις πο σι <sup>6</sup>λ πον τον ε

ρυ θρο ον και υ γρον βυ θο ον δι ε λα σαν τες <sup>6</sup>λ α

να βα τας τρι στα τας δυσ με νεις ο ρω ων τες εν αυ

τω υ πο βρυ χι ι ους εν α γαλ λι α σει ε με ελ

πον α α σω μεν τω Θε ω η μων ο τι δε δο ξα σται <sup>6</sup>λ <sup>ὠδὴ γ'</sup>

**Τ** ο ο ο ξον δυ να των η σθε νη η σε και οι α σθε

νουν τες πε ρι ε ζω ω σαν το δυ να μιν δι α του

το ε στε ρε ω ω θη <sup>Δ</sup>χορὸς α' <sup>6</sup>λ εν Κυ ρι ω η καρ δι α

μου <sup>6</sup>λ <sup>ὠδὴ δ'</sup>

**Ε** ι σα κη κο α την εν δο ξον οι κο νο μι αν

σου Χρι στε ο Θε ος <sup>6</sup>λ ο τι ε τε χθης εκ της Παρ

θε νου ι να εκ πλα νης ρυ ση τους κραυ γα ζον τας <sup>6</sup>λ δο ξα

τη δυ να α μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ ὠδὴ ε΄

**Ο** του φω τος δι α τμη η ξας το πρω το ο γο νον

χα α ος <sup>6</sup>λ ως εν φω τι τα ερ γα υ μνει σε Χρι στε <sup>π9</sup> τον

δη μι ουρ γον εν τω φω τι ι σου τας ο δους η μων ευ

θυνον <sup>6</sup>λ ὠδὴ ε΄

**Ε** ν τω θλι βε σθαι αι με ε βο η σα προς Κυ ρι ον

και ε πη κου σε ε μου <sup>Δ</sup>λ ο Θε ος της σω τη ρι ας μου <sup>6</sup>λ

ὠδὴ ζ΄

Α βρα μι αι οι πο τε εν Βα βυ λω νι παι δες

κα μι νου φλο γα κα τε πα τησαν και υ μνουν τες ε ψα

αλλον ο των πα τε ε ρων Θε ος ευ λο γη το ος ει 6  
κ ωδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6  
κ

Ο ι εν Βα βυ λω νι παι δες π 9 τω θει ω πυρ πο λου

ου με νοι ζη η λω τυ ραν νου και φλο γο ος α πει

λην Δ α αν δρει ως κα τε πα τησαν 6  
κ και με σον πυ

ρος εμ βλη θεν τες δρο σι ζο με νοι ε ψα λλον ευ λο

γει τε παν τα τα ερ γα Κυ ρι ι ου τον Κυ ρι ο ο 7  
κ

ο ο ον 6 λ

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ῥοδὴ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.302/1342\*

Χ ο ροι Ισ ρα ηλ α νι χμοις πο σι 6 λ πον τον

ε ρυ θρο ον και υ γρον βυ θο ον δι ε λα σαν

τες 6 λ α να βα τας τρι στα τας δυσ με νεις Δ δ ο ρω

ων τες εν αυ τω υποβρυ χι ι ους 6 λ εν α γαλ λι

α σει ε με ελ πον π ρ α α σω μεν τω Θε ω η μων ο τι δε

δο ξα σται 6 λ

ῥοδὴ γ'

Τ ο ξον δυ να των η σθε νη η σε π ρ και οι α σθε νουν τες

πε ρι ε ζω ω σαν το δυ να μιν <sup>6</sup>λ δι α του το ε

στε ρε ω ω θη <sup>Γ</sup><sup>ρ</sup> χορὸς α' εν Κυ ρι ω η καρ δι α μου <sup>6</sup>λ

ὠδὴ δ'

<sup>Ε</sup> ισ α κη κο α την εν δο ξον οι κο νο μι αν σου

<sup>σ</sup>Χρι στε ο <sup>σ</sup>Θε ος <sup>6</sup>λ ο τι ε τε χθης εκ της Παρ

<sup>π</sup><sup>9</sup> θε νου ι να εκ πλα νης ρυ ση τους κραυ γα ζον τας <sup>6</sup>λ δο

ξα τη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ὠδὴ ε'

<sup>Ο</sup><sup>σ</sup> του φω τος δι α τμη η ξας το πρω το ο γο νον

<sup>Γ</sup><sup>6</sup>λ χα α ος <sup>λ</sup> ως <sup>σ</sup> εν φω τι τα ερ γα υ μνει σε Χρι στε τον

<sup>σ</sup> δη μι ουρ γον <sup>Δ</sup><sup>Γ</sup> εν τω φω τι ι σου τας ο δους η

μωων ευ θυνον <sup>6</sup>λκ

ὠδὴς'

Ε ν τω θλι βε σθαι αι με ε βο η σα προς Κυ ρι

<sup>6</sup>λκ ον και ε πη κου σε ε μου ο Θε ος της σω τη ρι ας

<sup>6</sup>λκ μου

ὠδὴς'

Α βρα μι αι οι πο τε εν Βα βυ λω νι παι

<sup>π</sup>9 δες κα μι νου φλο γα κα τε πα τη σαν <sup>6</sup>λκ εν υ

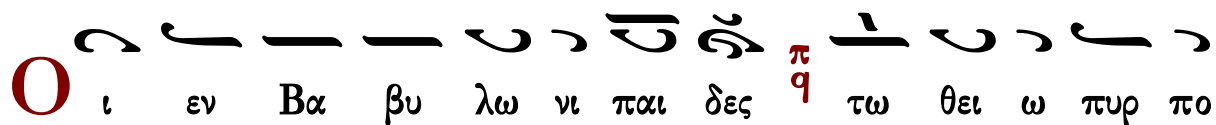
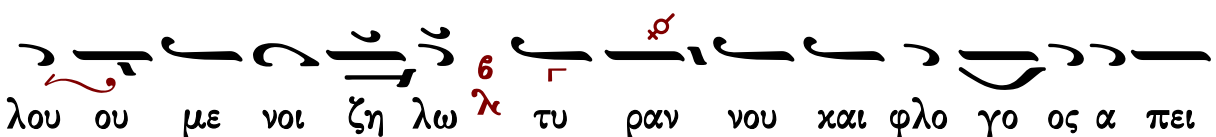
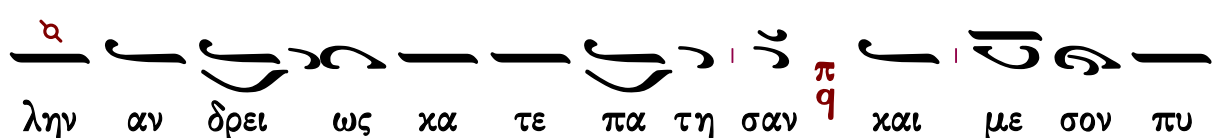
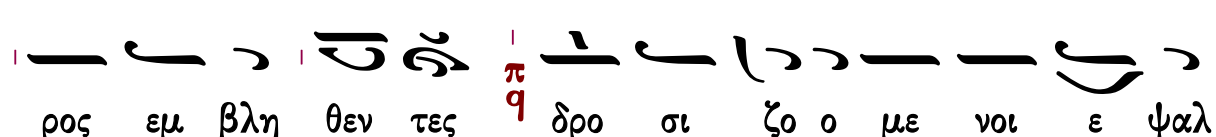
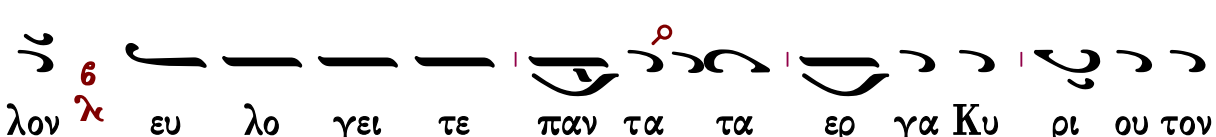
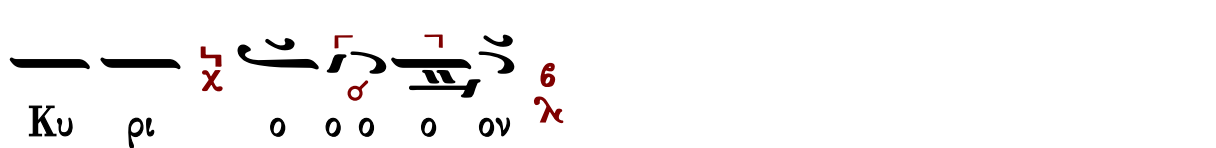
μνοις κραυ γα ζον τες <sup>Δ</sup>ο των πα τε ε ρων Θε ος ευ

λογη το ος ει <sup>6</sup>λκ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λκ

  
 ι εν Βα βυ λω νι παι δες π ρ τω θει ω πυρ πο  
  
 λου ου με νοι ζη λω λ τυ ραν νου και φλο γο ος α πει  
  
 λην αν δρει ως κα τε πα τη σαν π ρ και με σον πυ  
  
 ρος εμ βλη θεν τες π ρ δρο σι ζο ο με νοι ε ψαλ  
  
 λον λ ευ λο γει τε παν τα τα ερ γα Κυ ρι ου τον  
  
 Κυ ρι ο ο ο ο ον λ

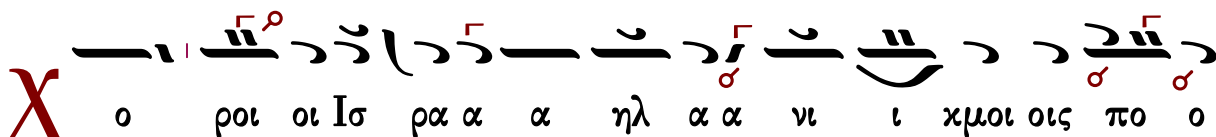
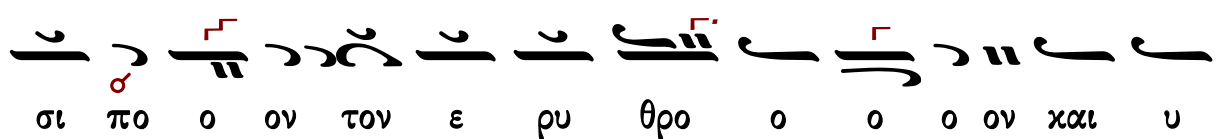
## Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ψδὴ α'

Ἦχος λ' Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.298/1338\*

  
 Χ ο ροι οι Ισ ρα α α ηλ α α νι ι κμοι οισ πο ο  
  
 σι πο ο ον τον ε ρυ θρο ο ο ο ον και υ

γρο ον βυ θο ο ον δι ι ε λα σα αν τε ες α

να βα τας τρι ι στα τα ας δυσ με ε νεις ο ο ρω ω ων

τες εν α αυ τω υ υ πο βρυ υ υ χι ι ι ου

ους εν α γαλ λι α α σει ει ε ε ε με

ε ε ε ελ πο ον α α σω μεν τω Θε ω ω η η μων

ο ο ο ο τι ι δε δο ξα α σται αι

Τ ο ο ξον δυ να τω ων η η σθε ε ε νη

η η η η σε ε και οι α σθε νου ου ου

ου ουν τες πε ρι ε ζω ω ω σα αν το δυ υ να α

μι ιν δι α του ου ου το ο ε στε ρε ω ω ω



ω θη <sup>Α</sup> χορὸς α' εν Κυ ρι ι ω ω η καρ δι α α μου

ου <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴ δ'

Ε ισ α κη κο ο α την ε εν δο ο ξον οι κο

νο μι ι αν σου Χρι ι στε ε ο ο Θε ε ος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ο τι ι ε

τε ε ε ε χθη ης εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου <sup>π</sup> <sup>9</sup>

ι ι να εκ πλα α α νης ρυ υ ση η του ους κραυ

γα ζοον τα ας <sup>6</sup> <sup>λ</sup> δο ο ο ξα τη δυ να α α α μει ει

σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴ ε'

Ο <sup>σ</sup> του φω τος δι α α τμη η ξας το πρω ω το

ο ο γο νο ο ον <sup>σ</sup> χα α α ο ος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ως εν φω

τι ι τα α ερ γα υ υ μνει ει σε ε Χρι ι στε ε το

ο ον δη μι ου ουρ γον εν τω φω ω τι ι ι σου

ου τας ο δου ου ους η η μω ων ευ θυ υ νο ον

ὠδὴ ζ'

Ε ν τω θλι βε σθαι αι αι αι αι με ε βο ο

η η σα α προς Κυ υ ρι ι ο ον και ε πη η κου

σε ε ε μου ου ο Θε ο ος τη ης σω ω τη ρι α ας

μου ου

ὠδὴ ζ'

Α βρα μι ι αι αι οι οι πο ο τε ε εν Βα βυ

λω ω νι ι παι δε ες κα μι νου φλο ο γα α κα α

τε πα α τη η σα αν εν υ υ μνοι οis κραυ γα ζο

ον τε ες ο των πα τε ε ε ρων Θε ε ο ος ε ευ λο γη

η το ο ος ει ει

ο των πα τε ε ε ρων Θε ε ε ος ευ λο

γη το ο ος ει ει

ὥδῃ ἡ'

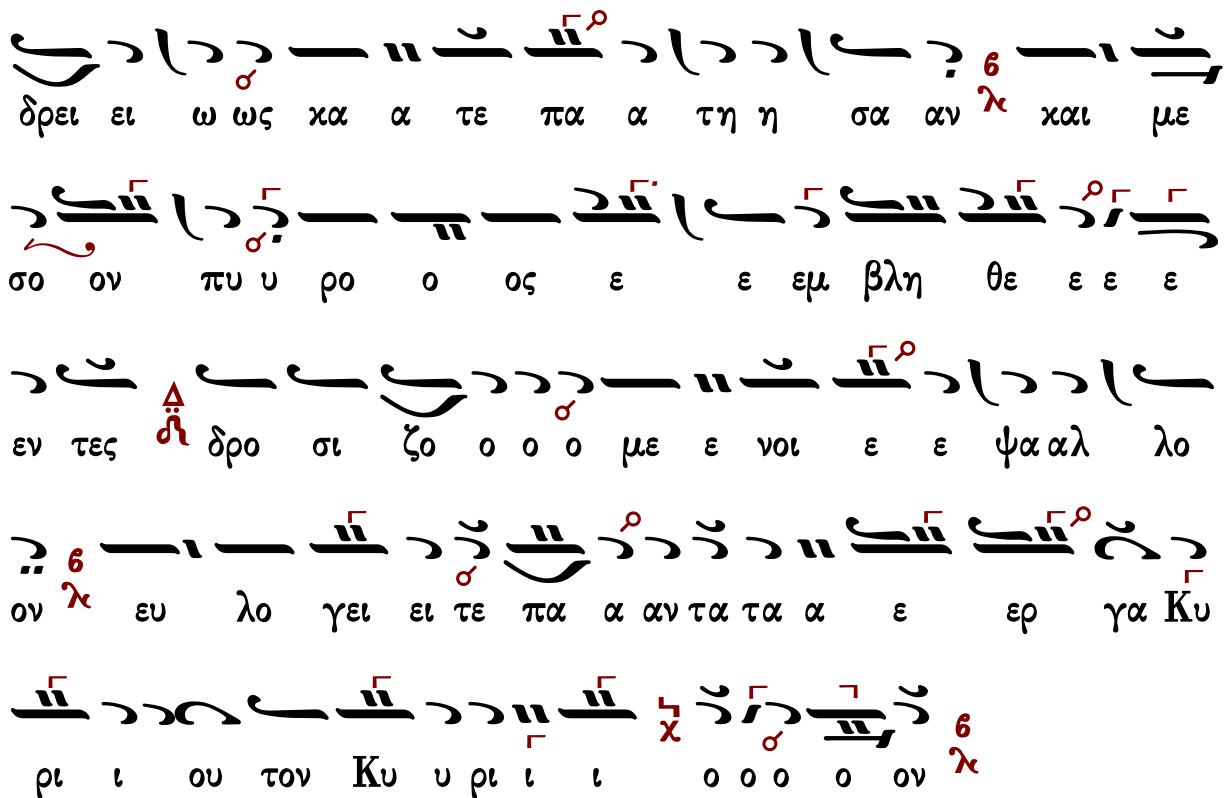
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Ο ι εν Βα βυ λω ω νι ι παι δε ες τω θει ω πυρ

πο ο ο λου ου ου με νοι οι οι ζη η η λω

ω τυ ραν νου και φλο γο ο ος α πει ει ει λην αν



## Τιμιωτέρα ἦχος δ΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος δ΄

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς

πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἑνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν  
ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ  
σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί  
με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς  
γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν.  
51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ  
πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς  
πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δὲ Ββ

Πανδέκτη  
Ὁρθρος 1850 σ.502#

**Τ**ὴν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν δο ξο  
τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι α  
φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως Θε ο

το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup>δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

<sup>χ</sup>Μ ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

<sup>σ</sup>και η γαλ λι α σε το <sup>χ</sup>πνευ μα μου ε πι τω Θε

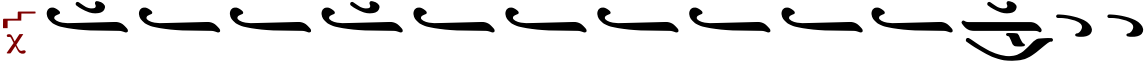
ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup>λ

<sup>σ</sup>Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε με γα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

Ο   
τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νωσιν

  
της δου λης αυ του  ι δου γαρ α πο του νυν μα κα

  
ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι 

Τ   
ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

  
ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α

  
φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

  
το κον σε μεγα λυ νο μεν 

Ο   
τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

  
τος  και α γι ον το ο νο μα αυ του  και το ε λε

  
ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον <sup>6</sup>λ

**Τ**ην <sup>σ</sup>τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup>ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λ

**Ε** <sup>λ</sup>ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του <sup>6</sup>λ δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>λ</sup>φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων <sup>6</sup>λ

**Τ**ην <sup>σ</sup>τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup>ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι



α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ὁ τόκος σου ἄφθορος ἐδείχθη, Θεὸς ἐκ λαγόνων σου προῆλθε, σαρκοφόρος, δὲ ὥφθη ἐπὶ γῆς, καὶ τοῖς ἀνθρώποις συνανεστράφη, σὲ Θεοτόκε· διὸ πάντες μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

# Εὐκτομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδὴ θ'

Ἦχος δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.312#

Ο το ο κοσ σου α φθο ρος ε δει ει χθη Θε

ο ος εκ λα γο νων σου προ ηλ θε σαρ κο φο ρος ος

ω φθη ε πι γης και τοις αν θρω ω ποις συν α νε

στρα α φη σε Θε ο το κε δι ο παν τες με γα λυ

νο με ε ε ε εν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὥδὴ θ'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.304/1344\*

Ο το ο κοσ σου α φθο ρος ε δει ει χθη Θε

ο ος εκ λα γο νων σου προ ηλ θε σαρ κο φο ο ρος ος

ω φθη ε πι γης και τοις αν θρω ω ποις συν α νε

στρα α φη σε Θε ο το κε δι ο παν τες με γα λυ

νο με ε ε ε εν

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος Β

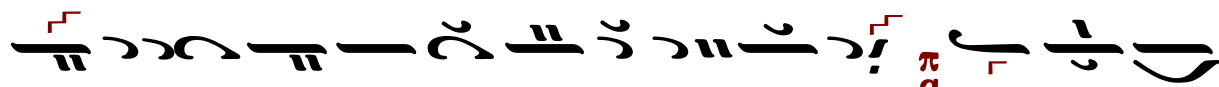
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.59#

Ο το ο ο ο ο κος σου ου α α φθο ο ρος ε ε

δει ει ει ει χθη Θε ο ο ος εκ λα α γο ο νωνων σου προ

ο η η ηλ θε ε σα α α αρ κο ο φο ρος ο ος ω φθη

η ε πι ι γης και τοις αν θρω ω ω ποις συ υν α νε

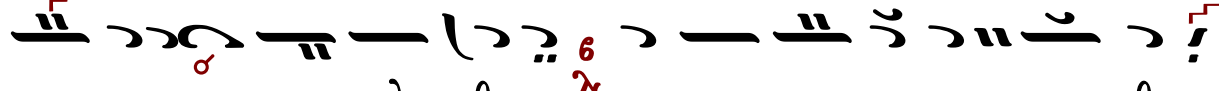
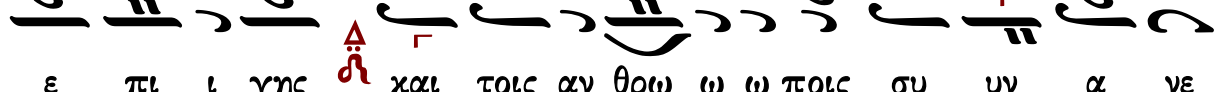
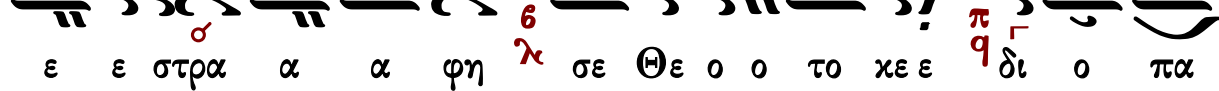
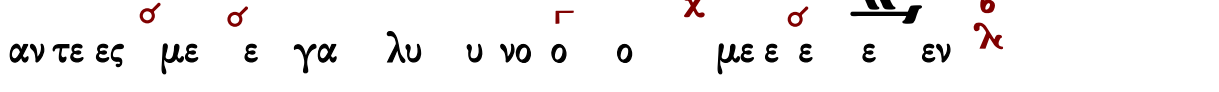
  
 ε ε στρα α α φη σε Θε ο ο το κε ε <sup>π</sup> <sup>9</sup> δι ο πα  
 αν τε ες με ε γα λυ υ νο ο ο με ε ε ε εν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ὥδη θ'

Ἦχος <sup>4</sup> <sup>Δ</sup> <sup>λ</sup> Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.301/1341\*

**Ο**   
 το ο ο ο ο κος σου ου α α φθο ο ρος ε ε  
  
 δει ει ει ει ει χθη <sup>Δ</sup> <sup>λ</sup> Θε ο ο ος εκ λα α γο ο νω ων σου  
  
 προ ο η η ηλ θε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup> σαρ κο φο ρος ο ος ω φθη η  
  
 ε πι ι γης <sup>Δ</sup> <sup>λ</sup> και τοις αν θρω ω ω ποις συ υν α νε  
  
 ε ε στρα α α φη <sup>6</sup> <sup>λ</sup> σε Θε ο ο το κε ε <sup>π</sup> <sup>9</sup> δι ο πα  
  
 αν τε ες με ε γα λυ υ νο ο ο με ε ε ε εν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ο το ο ο κος σου ου α α φθο ο ρο ος ε  
 ε δει ει ει ει ει χθη Θε ο ο ος εκ λα α γο νω ων  
 σου προ η ηλ θε ε σαρ κο ο ο φο ο ο ρο ος  
 ος ω ω ω φθη ε πι ι γης και τοις αν θρω ω ω ποις  
 συ υν α νε ε ε στρα α α φη η σε Θε ο ο  
 το ο ο κε δι ο πα αν τε ες με γα λυ υ νο ο ο με ε ε  
 ε εν

## Τῆς Μεταμορφώσεως 6/8

6 Αὐγούστου

ἦχος πλ.δ'

- α **Σ**ταυρόν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὖρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στερειούσῃ δὲ πρῶην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνησε, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.
- δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.
- ε **Ὡ** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.
- ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπεζωγράφησε, τοῦ σαρκὶ προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριμέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.
- ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔψαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

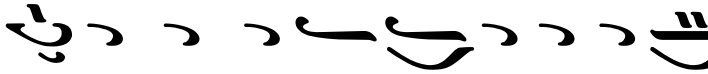
Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

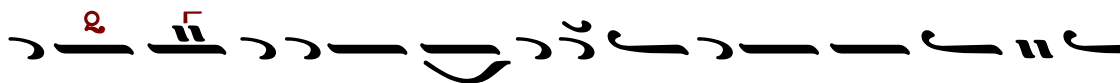
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου





—    
ἐξ ἡν ἡ σὲ  χορὸς α' ξυ λον Σταυ ρου εἰς κρα τος και στε ρε

 ω ω μα    
ὠδὴ δ' 

  
Εἰ σα κη ἡ κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

  
σου το μυ στη ρι ον κα τε νο ἡ σα τα ερ γας σου και ε

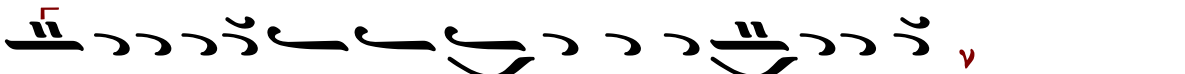
—    
δο ξα σα σου την Θε ο τη τα   
ὠδὴ ε' 

  
Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

   
α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος  δι ου

—    
πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη ἡ σας  τω εν σοι δε λε

   
α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σα ρ κι  τω πα

   
ρε ε χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις ἡ η μων   
ὠδὴ ζ'

**Ν** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας <sup>γ</sup> το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε <sup>Δ</sup> του σα ρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ουου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερ σει τον κο ο σμον φω τι σα αντος <sup>γ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ε** εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυσ σε

βους λα ους ε κλο νη σε <sup>δ</sup> <sup>λ</sup> πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους <sup>γ</sup> <sup>δ</sup> ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα

τω ω ω σε  θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον 

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευμα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον  ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη το ος ει 

ὥδῃ ἡ'

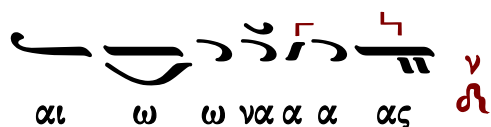
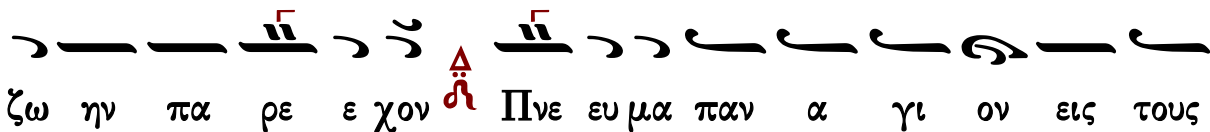
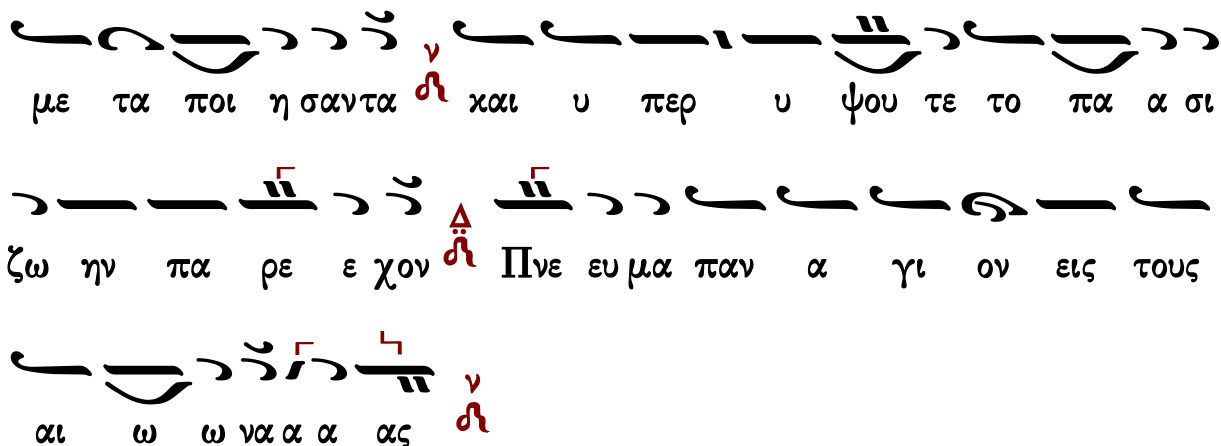
 ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

  
Κυ ρι ον

 ευ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δος ις α

ριθμοιδη μι ουρ γον πα τε ρα Θε ον  υ μνει ει τε τον

συγ κα τα βαν τα λο ο ο γον  και το πυρ εις δρο ο σον

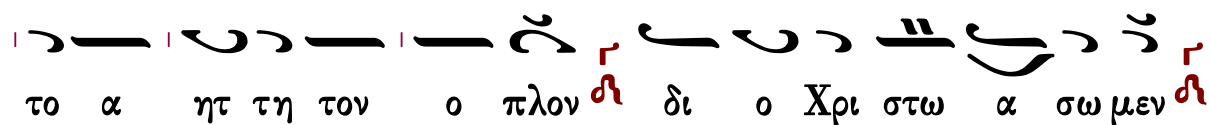
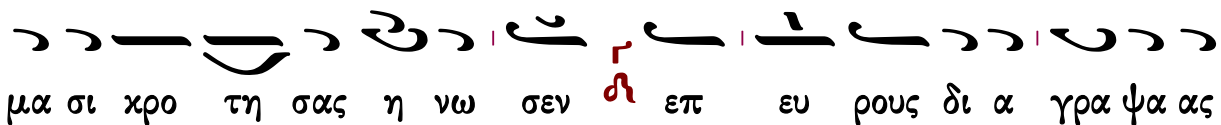
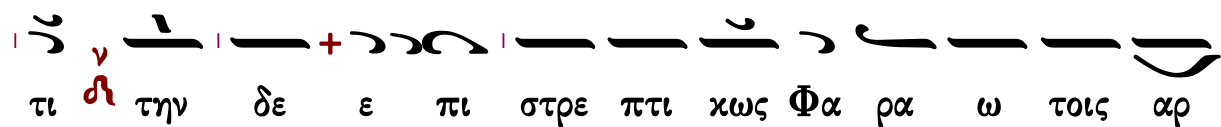
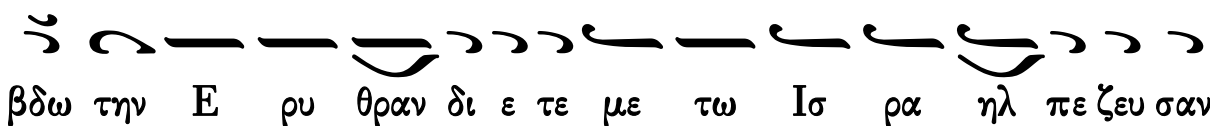
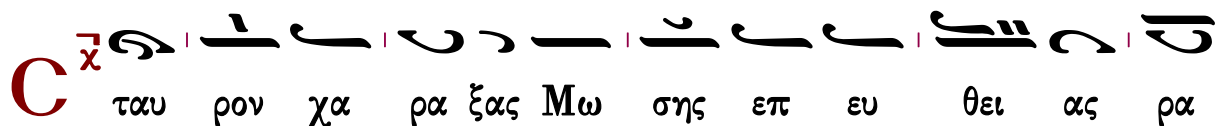


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ὥδη α'

Ἦχος λ ρι —

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*



τω Θε ω η μων ο τι δε δο ξα σται ρα


 ১  
 ২  
 ৩      ঐদেহ গ'

Ρ α β δ ο ς   ε ι ς   τ υ   π ο ν   τ ο υ   μ υ   σ τ η   ρ ι   ο υ   π α   ρ α   λ α μ   β α

νε ε ται τω βλα στω γαρ προ χρι νει τον ι ε ρε

α<sup>γ</sup> τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν


 ἐξ ἡν ἠν σε  χορὸς α'

$\omega \quad \omega \quad \mu\alpha \quad \alpha$

Εἰς ἀχρηστοῦ Κυρίου τῆς οἰκονομίας σου

το μυστήριον <sup>χ</sup>κα τε νο η σατα ερ γα σου <sup>Δ</sup>9 και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα ρη

δν ρη ὡδή ε'

ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων

**N** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σαρ κι προσ πα γεν τος Χρι

στου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε ρσει

ῶδὲ ζ'

e

**הַיְּמִינִית הַשְּׂמָלִית**

דגש - נקודה קטנה מעל האות  
זכר - אותיות שיש להן צורה אחת בשם זכר וצורה אחרת בשם נקבה

יְהוָה יִשְׁמַר אֶת צְדָקָתְךָ יְהוָה וְעַל מֵנוּן לֹא יִפְּסֶה

יְהוָה יִשְׁמַר אֶת־עַמּוֹ יִשְׂרָאֵל מֵעַתָּה וְעַד־עַד וְיִשְׁמַר אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְיִשְׁמַר אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְיִשְׁמַר אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ

[illegible]

ὥδ' ἦ'

*a*

אני רוצה

ε<sup>χ</sup> υ λο γει ει τε παι αι αι δεσ<sup>ν</sup> της Τρι α δος ι  
 σα ρι θμοι<sup>σ</sup> δη μι ουρ γον Πα τε ρα Θε ον<sup>ν</sup> υ μνει ει  
 τε τον συγ κα τα βαν τα Λο ο ο γον<sup>ε</sup> και το πυρ  
 εις<sup>σ</sup> δρο ο σον με τα ποι ησαν τα<sup>ν</sup> και υ περ υ ψου  
 τε το πα α σι ζω ην πα ρε ε χον<sup>Α</sup> Πνευ μα παν α γι ον εις  
 τους αι ω ω να α α ας<sup>ν</sup>

## Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>20</sup>

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος λ π δὲ —

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.287/1636\*

C<sup>χ</sup> ταυ ρον χα ρα α ξας Μω ω ση η ης επ ευ

<sup>20</sup> Γραμμάι τινες τῶν καταβασιῶν διεσκευάσθησαν ἐλαφρῶς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου διαιρέσεως φράσεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]



θει ει ει ει α ας ρα α α βδω την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως Φα ρα ω

τοι οισ αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν επ

ευ ρους δι α α γρα α α ψας το α ητ τη τον ο

ο ο πλον δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν τω

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται

Ρ α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου

πα α ρα α λα αμ βα α α νε ε ε ε ται τω

βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου χορός α'

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

στε ρε ε ε ε ε ω ω ω ω μα

ῥωδὴ δ'

Ε ισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

κο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα ῥωδὴ ε'

Ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον εν

ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευς και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ ος πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νην ταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

Ε εκ νο ο ον προ οστα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει ὠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Ε υ λο γει ει ει τε παι αι αι δε ες ν της  
 Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον  
 Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον ν υ μνει  
 ει τε τον συγ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον θ και το  
 ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α ν και  
 υ περ υ υ ψου ου ου ου τε α το ο πα σι ι ζω η  
 ην πα α ρε ε ε ε χον α Πνευ ευμα παν α γι ι ονεις τους  
 αι ω ω να α α α ας ν

## ὁδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α'

ἤχος δ'

«Ὁ τόκος σου ἄφθορος ἐδείχθη, Θεὸς ἐκ λαγόνων σου προῆλθε, σαρκοφόρος, ὃς ὤφθη

ἐπὶ γῆς, καὶ τοῖς ἀνθρώποις συνανεστράφη, σὲ Θεοτόκε· διὸ πάντες μεγαλύνομεν». (β')

**Σύντρομοι καινῇ φωτοχυσίᾳ, ἀθρόως οἱ μαθηταὶ ἔλλαμφθέντες, πρὸς ἀλλήλους ἐώρων, καὶ πρηνεῖς εἰς γῆν καταπεσόντες, σοὶ τῷ Δεσπότῃ τῶν ἀπάντων προσεκύνησαν.**

**Ἦχος ἐκ νεφέλης ἀνεπέμπετο, θεόκτυπος βεβαιῶν τὸ θαῦμα· ὁ Πατὴρ γὰρ τῶν φώτων. Οὗτός ἐστιν Υἱὸς ὁ ἀγαπητός μου, τοῖς ἀποστόλοις ἀνεβόα, οὗ ἀκούετε.**

**Καινὰ κατιδόντες καὶ παράδοξα, φωνῆς πατρικῆς ἐνωτισθέντες, ἐν Θαβώρ οἱ τοῦ Λόγου ὑπηρέται, ἐκμαγεῖον τοῦ ἀρχετύπου. Οὗτος ὑπάρχει ἀνεβόων ὁ Σωτὴρ ἡμῶν.**

**Εἰκὼν ἀπαράλλακτε τοῦ ὄντος, ἀκίνητε σφραγὶς ἀναλλοίωτε, Υἱὲ λόγε σοφία καὶ βραχίων, δεξιὰ ὑψίστου σθένος, σὲ ἀνυμνοῦμεν, σὺν Πατρὶ τε καὶ τῷ Πνεύματι.**

κανὼν β'

ἦχος πλ.δ'

«**Ἐφριξε πᾶσα ἀκοή, τὴν ἀπόρρητον Θεοῦ συγκατάβασιν, ὅπως ὁ Ὑψιστος, ἐκὼν κατῆλθε μέχρι καὶ σώματος, παρθενικῆς ἀπὸ γαστροῦ, γενόμενος ἄνθρωπος· διὸ τὴν ἄχραντον, Θεοτόκον οἱ πιστοὶ μεγαλύνομεν.**»

**Ἵνα σου δείξῃς ἐμφανῶς, τὴν ἀπόρρητον δευτέραν κατάβασιν, ὅπως ὁ Ὑψιστος Θεός, ὁφθήσῃ ἐστῶς ἐν μέσῳ θεῶν, τοῖς ἀποστόλοις ἐν Θαβώρ, Μωσεῖ σὺν Ἡλίᾳ τε, ἀρρήτως ἔλαμψας· διὸ πάντες σε Χριστὲ μεγαλύνομεν.**

**Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.**

**Δεῦτέ μοι πείθεσθε λαοί, ἀναβάντες εἰς τὸ ὄρος τὸ ἅγιον, τὸ ἐπουράνιον αὐλῶς στῶμεν ἐν πόλει ζῶντος Θεοῦ, καὶ ἐποπτεύσωμεν νοτὶ θεότητα αὔλων, Πατὴρ καὶ Πνεύματος, ἐν Υἱῷ μονογενεῖ ἀπαστράπτουσιν.**

**Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.**

**Ἐθελξας πόθῳ με Χριστέ, καὶ ἡλλοίωσας τῷ θείῳ σου ἔρωτι, ἀλλὰ κατάφλεξον, πυρὶ αὐλῶ τὰς ἀμαρτίας μου, καὶ ἐμπλησθῆναι τῆς ἐν σοὶ τρυφῆς καταξίωσον, ἵνα τὰς δύο σκιρτῶν, μεγαλύνῳ ἀγαθὲ παρουσίας σου.**

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος ᾠδ. Ββ

ὁ εἰρμός

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.92/1440#

Ὁ <sup>Γ</sup>χ το ο κος σου α φθο ρος ε δει ει χθη <sup>Δ</sup>α

Θε ο ος εκ λα γο νων σου προ ηλ θε σαρ κο φο ο ρος <sup>6</sup>λ ος

ω φθη ε πι γης και τοις αν θρω ω ποις συν α

νε στρα α φη <sup>6</sup>λ σε Θε ο το κε δι ο παν τες με γα

λυ νο μεν <sup>6</sup>λ (β')

Σ υν τρο μοι και νη φω το χυ σι ι α <sup>Δ</sup>α α θρο ο

ως οι μα θη ται αι ελ λαμ φθεν τες <sup>6</sup>λ προς αλ λη λους ε

ω ρων <sup>π</sup>θ αμ βη θεν τες δε και προς γην κα τα κλι θε εν

τες <sup>6</sup>λ σοι τω Δε σπο τη των α παν των προσ ε κυ νη

σαν <sup>6</sup>λ



**Η**χος εκ νε φε λης α νε πεμ πε το  θε ο ο

κτυ προς βε βαι ων το θαυ μα  ο Πα τηρ γαρ των φω των

 ου τος ε στιν Υι ο ος ο α γα πη τος μου 

τοις α πο στο λοις α νε βο ο α ου α κου ε τε 

**Κ**αι να α κα τι δον τες και πα ρα δο ξα  φω

νη ης πα τρι κης εν ω τι σθε εν τες  εν Θα βωρ οι του

Λο γου υ πη ρε ται  εκ μα γει ον του αρ χε τυ

 ου τος υ παρ χει α νε βο ων ο Σω τηρ η μων 

**Ε**ι κω ων α πα ρα λ λα κτε του ο ον τος  ι

σο τυ πε σφρα γι ις α να λ λοι ω τε  Υι ε Λο γε

σο φι α <sup>π</sup> και βρα χι ι ων δε ξι α Υ ψι στου σθε  
 νος <sup>6</sup> σε α νυ μνου ου μεν συν Πα τρι τε και τω Πνευ μα τι <sup>6</sup>

ὑδὴ θ', κανὼν β'

ὁ εἰρμός

Ἦχος λ ϝ Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.93/1441#

Ε φρι ξε πα σα α κο η την α πορ ρη τον Θε ου  
 συγ κα τα βα σιν <sup>6</sup> ο πως ο Υ ψι στος <sup>Δ</sup> ε κων κα  
 τηλ θε με χρι και σω μα τος <sup>6</sup> παρ θε νι κης α πο γα  
 στρος γε νο με νος ανθρω πος <sup>γ</sup> δι ο την α χραν τον  
 Θε ο το κο ον οι πι στοι οι με γα λυ υ νο ο μεν <sup>γ</sup>  
 Ι να σου δει ξης εμ φα νως την α πορ ρη τον δευ τε ραν

κα τα βα σιν ο πω ς ο υ ψι στος Θε ος ο φθη

ση ε στως εν με σω θε ων τοις α πο στο λοις εν Θα

βωρ Μω σει συν Η λι α τε αρ ρη τως ε λαμ ψας δι

ο ο παν τε ες σε Χρι στε ε με γα λυ υ νο ο μεν

Δ ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι

Δ ευ τε μοι πει θε σθε λα οι α να βαν τες εις το

ο ρος το α γι ον το ε που ρα νι ον α υ λως

στω ω μεν εν πο λει ζων τος Θε ου και ε πο πτευ σω

μεν νο ι θε ο τη τα α υ λον Πα τρος και Πνευ μα τος

εν Ὑι ω μο νο γε νει ει α πα στρα α πτου ου σαν <sup>ν</sup> <sup>δ</sup>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην <sup>ν</sup> <sup>δ</sup>

**Ε** θελ ξας πο θω με Χρι στε και ηλ λοι ω σας τω θει

ω σου ε ρω τι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> αλ λα κα τα φλε ξον πυ ρι α υ λω

τας α μαρ τι ας μου <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και εμ πλη σθη ναι της εν

σοι τρυ φης κα τα ξι ω σον <sup>ν</sup> <sup>δ</sup> ι να τας δυ ο σκιρ των

με γα λυ νω α γα θε ε πα ρου σι ι α ας σου <sup>ν</sup> <sup>δ</sup>

### Καταβασία θ' φδῆς

<sup>ῥ</sup>ῆχος πλ.δ'

**Μ**υστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῇ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήργηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρρα διαλέλνται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη  
Κωνσταντίνου Λάμπρου

Σύντομος

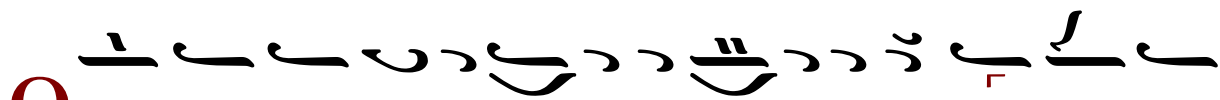
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ π ς Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

Μυστικός Θεός τοκέ Παράδεισος ἁγέ  
ωργήτως βλάστησας Χριστόν ἡφου τοτου Σταυρουζω  
ήφορον ἐν γῇ πεφυτούς γῆται δὲ ἐνδρον  
διουν ὑψομε ἐνὸς προσκυνοῦντες αὐτὸν σεμε  
γαλνοομεν

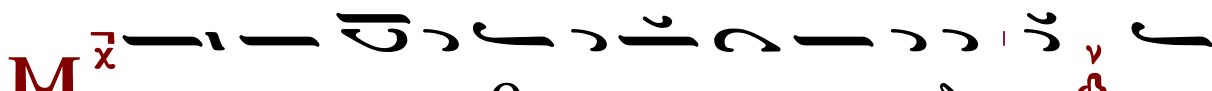

 δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει  
 προσ γε νο με νος θανατος  δι α Σταυ ρου κα τη ηρ  
 γη ται ση μερον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης  
 κα τα ρα δι ι α λε λυ ται  τω βλα στω της α  
 γνη ης Θε ο μη τορος ην πα σαι αι δυ να α μεις των  
 ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὥδ' ἔθ'

Ἦχος λ ρ̣ δ̣ι Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.295/1644\*


 υ στι κος ει Θε ο το κε πα ρα δει σος  α  
 γε ωρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον  υφ ου το του

Σταυ ρου ζω η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται  
 δεν δρον δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νουν  
 τες αυτον σε μεγα λυ υ νο ο μεν  
 Ο δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω  
 γε νει προσ γε νο με νος θα να τος δι α Σταυ ρου κα  
 τηρ γη ται σημε ρον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε  
 νης κα τα ρα δι α λε λυ ται τω βλα στω της α  
 γνη η ης Θε ο μη το ρος η ην πασαι αι δυ  
 να μεις των ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι

Ἄεγι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Μ** υ στι κο ς ει ει Θε ο το ο ο κε ε πα ρα δει σο ο ς

α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι στον **Α**

υφ ου ου το του ου στα α αυ ρου **Α** ζω η φο ο ρον

ε εν γη πε φυ υ του ου ου ουρ γη ται αι αι

δε ε ε εν δρον **γ** δι ου ου νυν υ ψου με ε ε

ε νου **Α** προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ε ς α αυ τον

σε με γα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν **γ**

**Ο** δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ λου

ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το ο ς **γ** δι



α στα αυ ρου κα τη η η ηρ γη ται αι ση με ε ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι τω βλα α στω της α

γνη η η ης Θε ο ο μη το ρο ος ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα νω

ων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ ρ Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.291/1640\*

Μ υ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε Πα ρα δι σο

ος α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι

στον υφ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο

ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται

αι αι δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου

με ε ε ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ες α

α αυ τον σε μεγα λυ υ υ υ νο ο ο ο μεν

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

τος δι ι α Στα αυ ρου κα τη η ηρ γη η ται ση με ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι τω βλα

στῶ τῆς ἀγνῆ ἡ ἡς Θεοῦ ὁ μητὸρ ὁς ἡν παῖσαι

αἱ αἱ δὲ υἱὰ ἀγαπαίς τῶν οὐρανῶν

μεγαλυνούσι ἰερεῖς

τὸ τέλος τῶν οὐρανῶν ἡμεγαλυνού

οὐσι ἰερεῖς

Κωνσταντίνου Λάμπρου

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ β Νῆ

Κωνσταντίνου Λάμπρου  
05 Θεία Λειτουργία 5.25 σ.257\*

Μυστικός εἰς Θεοὸ τοῦ Θεοῦ

παράδεισος ἀγαθή γέωργη τῶν βλαστῶν

ἡ ἀγαθὰ Χριστοῦ υἱοῦ τοῦ

Στα α αυ ρου ζω η φο ο ο ο ρον εν γη πε

ε φυ υ υ του ου ουρ γη ται δε ε ε εν δρον δι

ου ου νυν υ ψου με ε ε ε νου προσ κυ νου ου

ου ουν τες α α αυ το ον σε με ε ε γα λυ υ

υ υ νο ο ο ο μεν

Ο δι α βρω ω ω σε ω ω ω ως του ου ξυ υ

υ λου ου τω γε νει ει προ ος γε ε νο ο ο ο ο με

ε νο ος θα α να το ος δι α Σταυ ρου κα

τη η η ηρ γη ται αι ση η με ε ρο ον της γαρ

προ μη το ρος η πα αγ γε νης κα τα α ρα α δι ι

α α λε ε λυ ται αι τω βλα α στω της α γνη

η η ης θε ο ο μη το ο ρο ος ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α α μεις των ου ρα

νω ωων με γα λυ υ νου ου ου σι ι ι ι ι

# Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)

14 Αὐγούστου

ἤχος δ'

- α Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεῦξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί· καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν κοίμησιν.
- γ Τοὺς σοὺς ὕμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θιάσον συγκροτήσαντας, πνευματικὸν στερέωσον· καὶ τῇ σεπτῇ Κοιμήσει σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαζε· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐν τῇ σεπτῇ κοιμήσει σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, γῆθεν μετέστης πρὸς αἰωνίους μονάς, καὶ πρὸς ἀτελεύτητον ζωὴν, πᾶσι τοῖς ὑμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύουσα.
- ς Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα, Θεὸν δοξάζοντες.
- ζ Οὐκ ἐλάτρευσαν, τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα· ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- η Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος· νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἅπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Αργαὶ

Σύντομοι

ὥδ' α'

Ἦχος δ' ᾠδὴ Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱμολόγιον 1903 σ.330#

**Α** νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ μα τος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βασι λι δι

Μητρι και ο φθη σομαι φαι δρως παν η γυ ρι ζων <sup>π 9</sup>

και α σω γη θο μενος ταυ της την Κοι μησιν <sup>6</sup> ὠδὴ γ'

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη

σαν τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π 9</sup> καν τη σε πτη

Κοι μη σει Σου <sup>Δ</sup> χορὸς α' στε φα νων δο ξης α ξι ω σον <sup>6</sup> ὠδὴ δ'

**Τ** ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην <sup>6</sup> της εκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως σου του υ ψι στου

ο προ φη της Αβ βα κουμ κα τα νο ων ε κραυ

γα ξε δο ξα τη δυ να μει σου Κυ ρι ε

←ειρημολόγιον ΖΩΗC

ᾠδὴ ε'

ξε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη Κοι μη

σει σου συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε γη

θεν με τε ε στης προς αι ω νι ι ους μο νας και

προς α τε λε ευ τη τον ζω ην πα σι τοις υ μνου σι σε σω

τη ρι ι αν βρα βευ ουσα

ᾠδὴ ε'

Τ ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος δευ τε τας χει ρας κρο



τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

τες 6 λ

ὠδὴ ζ'

Ο υκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα 6 λ αλ λα πυ ρο ος α πει λην 6 λ αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον 6 λ υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

ος ει 6 λ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6 λ

Π αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το οκος της Θε ο το κου δι ε σω σα το ο το τε

μεν τυ που μενος νυν δε εν ερ γου με ε νος π<sup>9</sup> την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει φα αλλου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας 6 λ

## Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδῃ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

Α<sup>λ</sup> νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος 6 λ και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως  
πα αν η η γυ υ ρι ζων και α α σω ω γη η θο ο  
με ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην Κοι μη η σι εν

ᾠδὴ γ'

Τους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο  
ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι  
α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ  
χρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω  
ω ω σον καν τη σε πτη Κοι οι μη η σει ει σου

χορὸς α'

\* στε φα α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον

Μουσικὸν Πεντηκοστάριον 2005 σ.551

\* στε φα α α νωνων...

ὠδὴ δ'

Τ ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ ψι

σπου ου ο προ φη η της Αβ βα α κουμ κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε δο ο ο ο ξα

τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

ὠδὴ ε'

Ε ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η Κοι οι μη η σει ει σου συ υ υ γα α

α ααρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε 6 λ

γη θεν με τε ε ε ε ε στης προς αι ω ω ω νι ι

ι ι ι ου ους μο ο ο νας και αι προ ος α

τε λε ευ τη η το ον ζω ω η η η ην πα α σι ι

τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη ην

βρα βε ευ ουου σα α 6 λ ψδής'

Τ ην θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος π q δευ τε τας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε ε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ο** υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α <sup>6</sup> <sup>λ</sup> αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> υ περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π</sup> <sup>9</sup> ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴ η'

**Α** ι <sup>σ</sup> <sup>λ</sup> νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Παι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

ι νω ω ο το ο ο ο ο κος της Θε ε

ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το το ο τε ε με

εν τυ που με ε νο ος νυ υν δε ε εν ερ γου ου

ου με ε ε ε νος την οι κου με ε νη ην α πα α

σαν α γει ει ρει ει ει ψα α α α αλ λου ου ου ου

σαν τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο ο ο ον υ υ μνει

τε ε τα α ερ γα α και αι υ περ υ ψου ου ου

ου τε ε εις πα αν τας τους αι ω ω ω ω ω

να α α α α ας

## Τιμιωτέρα ἡχος δ΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος δ΄

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἡχος δ΄

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53



∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δὲ Β΄

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.502#

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο  
τεραν ασχριτως των Σεραφιμ την αδια  
φθορως Θεον Λογον τε κουσαν την οντως Θεο  
το οκονσεμεγααλυνομεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δὲ Β΄

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

Μεγαλυνει η ψυχη μου τον Κυριον  
και η γαλλια σε το πνευμα μου επιτω Θε  
ωωτωσωτηριμου

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λ

Ο <sup>λ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω σιν

<sup>σ</sup> της δου λης <sup>σ</sup> αυ του <sup>6</sup>λ ι δου γαρ α πο του <sup>λ</sup> νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup>λ

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κόν σε μεγα λυ νομεν<sup>6 λ</sup>

Ο<sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

τος<sup>6 λ</sup> και α γι ον το ο νο μα αυ του<sup>6 λ</sup> και το ε λε

ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον<sup>6 λ</sup>

Τ ην<sup>σ</sup> τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ<sup>6 λ</sup> και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ<sup>6 λ</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν<sup>6 λ</sup> την ον τως

Θε ο το κόν σε ε μεγα λυ νομεν<sup>6 λ</sup>

Ε<sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του δι ε σκορπισεν υ περ η φανους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων

Την τι μι ω τε ραν των Χερουβιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγκριτως των Σεραφιμ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

Κα θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Την τι μι ω τε ραν των Χερουβιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>Δ</sup> την α δι α φθο

ρως <sup>Δ</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π</sup> την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>

<sup>χ</sup> ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους <sup>6</sup> κα θως ε λα λη σε προς τους πα

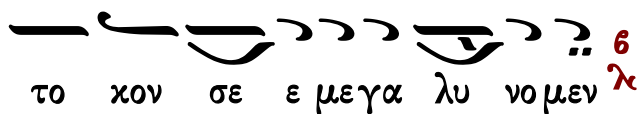
τε ρας η μων <sup>6</sup> τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος <sup>6</sup>

<sup>Τ</sup> ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ</sup> και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>Δ</sup> την α δι α φθο

ρως <sup>Δ</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π</sup> την ον τως Θε ο



## Καταβάσια θ' ᾠδῆς

ἤχος δ'

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυριζέτω δέ, ὕλων νόων, φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱερὰν μετὰστασιν τῆς Θεομήτητος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἄγνή, ἀειπάροθνε.

## Σύντομος

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

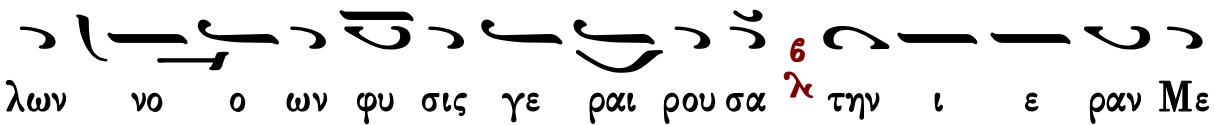
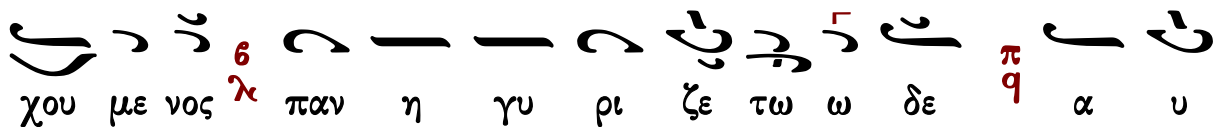
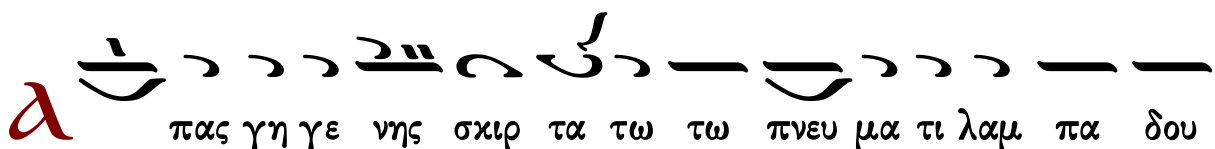
διασκ. Κωνστ.Παπαγιάννη

## Σύντομος

မုၢ်ဝဲၣ် ၵုၢ်

Ἡχος  $\frac{L}{d}$   $\rightarrow$  B<sub>8</sub>

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.335#



α α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε

παρ θε νε ε ε ε ε

Ἄεγν

ὥδῃ θ'

Ἦχος Β

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1905 σ.55#

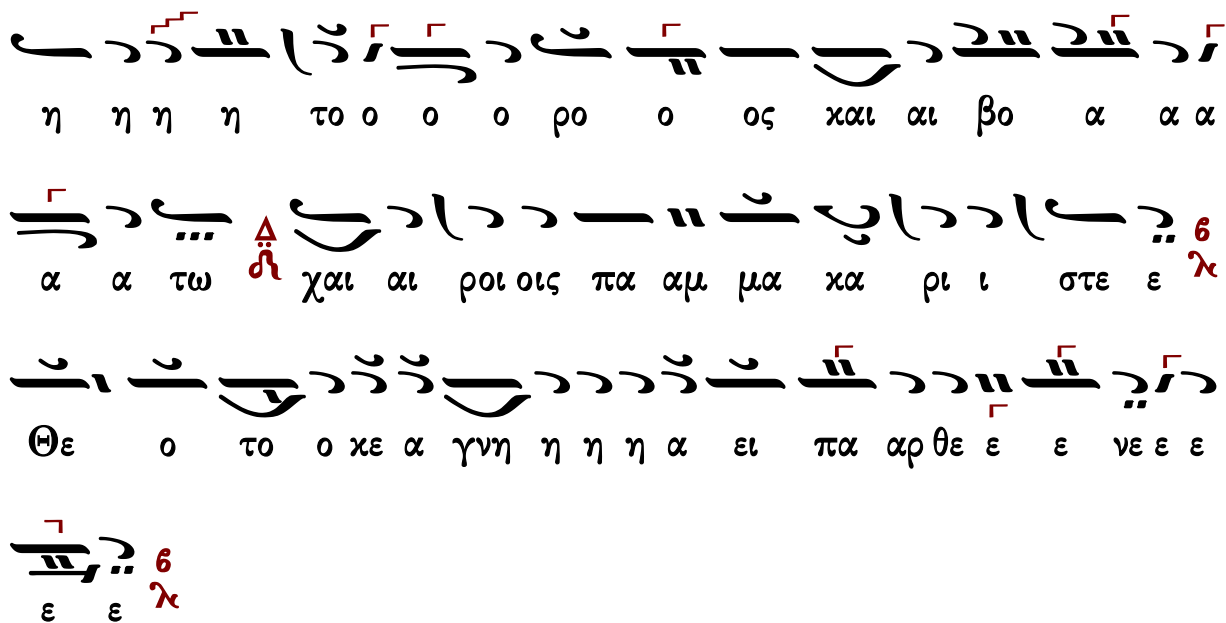
α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε α υ λω ων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι

ε ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη

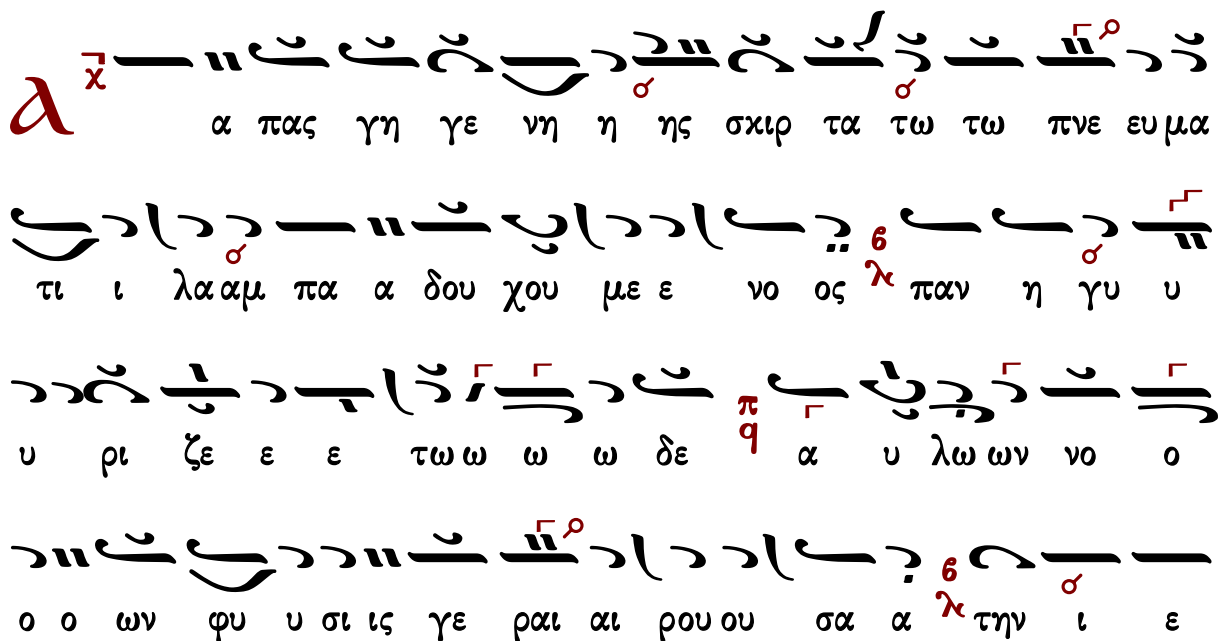


Ἀρχὴ (διασκ. Παπαγιάννη)

ὠδὴ θ'

Ἦχος <sup>Λ</sup>δ̣ Bx

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*





ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α α

τω <sup>Δ</sup> και αι ροι οis πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup> Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε <sup>6</sup>

# Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου 15/8

15 Αὐγούστου

ᾠδὴ α'

ἤχος α'

Πεποικιλμένη τῇ θείᾳ δόξῃ, ἡ ἱερὰ καὶ εὐκλεὲς Παρθένε μνήμη σου, πάντας συνηγάγετο, πρὸς εὐφροσύνην τοὺς πιστοὺς, ἑξαρχούσης Μαριάμ, μετὰ χορῶν καὶ τυμπάνων τῷ σῶ, ἄδοντας Μονογενεῖ, ἐνδόξως ὅτι δεδόξασται.

ἤχος δ'

Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν Κοίμησιν.

ᾠδὴ γ'

ἤχος α'

Ἡ δημιουργικὴ, καὶ συνεκτικὴ τῶν ἀπάντων, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις, ἀκλινῇ ἀκράδαντον, τὴν Ἐκκλησίαν στήριζον Χριστέ· μόνος γὰρ εἶ ἅγιος, ὁ ἐν ἁγίοις ἀναπαυόμενος.

ἤχος δ'

Τοὺς σοὺς ὑμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θίασον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· κἄν τῇ σεπτῇ Κοιμήσῃ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.

ᾠδὴ δ'

ἤχος α'

Ῥήσεις προφητῶν καὶ αἰνίγματα, τὴν σάρκωσιν ὑπέφηναν, τὴν ἐκ Παρθένου σου Χριστέ, φέγγος ἀστραπῆς σου, εἰς φῶς ἔθνων ἐξελεύσεσθαι, καὶ φωνεῖ σοι ἄβυσσος, ἐν ἀγαλλιᾶσει, τῇ δυνάμει σου δόξα φιλόανθρωπε.

ἤχος δ'

Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλὴν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαξε· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

ᾠδὴ ε'

ἤχος α'

Τὸ θεῖον καὶ ἄρρητον κάλλος, τῶν ἀρετῶν σου Χριστέ διηγῆσομαι· ἐξ αἰδίου γὰρ δόξης συναῖδιον, καὶ ἐνυπόστατον λάμπας ἀπαύγασμα, παρθενικῆς ἀπὸ γαστροῦ, τοῖς ἐν σκότει καὶ σκιᾷ, σωματωθεὶς ἀνέτειλας ἥλιος.

ἤχος δ'

Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐν τῇ σεπτῇ Κοιμήσῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, γῆθεν μετέστης πρὸς αἰωνίους μονάς, καὶ πρὸς ἀτελεύτητον ζωὴν, πᾶσι τοῖς ὑμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύουσα.

Ῥδὴ ς'

ἦχος α'

Ἄλιον ποντογενές, κητῶν ἐντόσθιον πῦρ, τῆς τριημέρου ταφῆς σου τι προεικόνισμα, οὐ Ἰωνᾶς ὑποφῆτης ἀναδέδεικται· σεσωσμένοι γὰρ ὡς καὶ προϋπέπωτο, ἀσινὴς ἐβόα·  
Θύσω σοι μετὰ φωνῆς αἰνέσεως Κύριε.

ἦχος δ'

Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἐορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε  
τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα Θεὸν δοξάζοντες.

Ῥδὴ ζ'

ἦχος α'

Ἰταμῶ θυμῷ τε καὶ πυρί, θεῖος ἔρωσ ἀντιταπτόμενος, τὸ μὲν πῦρ ἐδρόσιζε, τῷ θυμῷ δὲ  
ἐγέλα, θεοπνεύστῳ λογικῇ, τῇ τῶν ὁσίων τριφθόγγῳ λύρᾳ ἀντιφθεγγόμενος, μουσικοῖς  
ὀργάνοις ἐν μέσῳ φλογός, ὁ δεδοξασμένος, τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

ἦχος δ'

Οὐκ ἐλάτρευσαν τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλὴν,  
ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ  
Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Ῥδὴ η'

ἦχος α'

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

Φλόγα δροσίζουσαν ὁσίους, δυσσεβεῖς δὲ καταφλέγουσαν, ἄγγελος Θεοῦ ὁ πανσθενής,  
ἔδειξε παισί· ζωαρχικὴν δὲ πηγὴν εἰργάσατο τὴν Θεοτόκον, φθορὰν θανάτου, καὶ ζωὴν  
βλυστάνουσαν τοῖς μέλπουσι, τὸν δημιουργὸν μόνον ὑμνοῦμεν, οἱ λελυτρωμένοι, καὶ  
ὑπερυψοῦμεν εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

ἦχος δ'

Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος,  
νῦν δὲ ἐνεργούμενος τὴν οἰκουμένην ἅπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν· τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ  
ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

☞ Σύντομοι ☞

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

☞ Ἀργαῖ ☞

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Π ε ποι κιλ με νητη θει α δο ξη <sup>Δ</sup> η ι ε ρα  
 και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου παν τας συν η  
 γα γε το προς ευ φρο συ νηντους πι στους εξαρχου σης Μα ρι  
 αμ <sup>π 9</sup> με τα χο ρων και τυμ πα νων τω σω α δον τας μο νο  
 γε νει εν δο ξως ο τι δε δο ο ξα α σται <sup>π 9</sup>

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται  
 πνευ μα τος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξο μαι τη βα σι λι δι  
 Μη τρι και ο φθη σο μαι φαι δρως πα νη γυ ρι ζων <sup>π 9</sup>

και α σω γη θο μενος ταυ της την Κοι μη σιν <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ γ'

ᾠχος ♪ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.314#

Η δη μι ουρ γι κη και συν εκτι κη των α πα

αν των Θε ου σο φι α και δυ ναμις α κλι νη α κρα δαν

τον την Εκ κλη σι αν στη ρι ξον Χρι στε <sup>Δ</sup>μο νος γαρ

ει α γι ος <sup>Δ</sup>ο εν α γι οις α να παυ ο ο με ε

νος <sup>π</sup>9

ᾠδὴ γ'

ᾠχος ♪ Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.331#

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup>θι α σον συγ κρο τη

σαν τας πνευματικόν στερεώωσον <sup>π</sup>καντησέπτη

Κοιμησέσου <sup>Δ</sup>χορὸς α' στεφανῶν δοξήσῃ <sup>6</sup>ξισον

ᾠδὴ δ'

Ἦχος <sup>4</sup>Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.315#

**Ρ**ησεις προφητῶν καὶ νιγμὰ τὰ τὴν σὰρκα σὺ

πεφηνᾷς <sup>π</sup>τὴν ἐκ Παρθένου σου Χριστέ φεγγος ἀστρά

πῆς σου εἰς φῶς ἐθνῶν ἐξέλυσέσθαι <sup>π</sup>καὶ φωνεῖς σοι

ἀβυσσοὺς ἐν ἀγαλλίασιν <sup>Δ</sup>τὴ δύναμι

σου δοξαζέτω <sup>π</sup>ἀνθρώπων

ᾠδὴ δ'

Ἦχος <sup>4</sup>Βα

Ειρμολόγιον  
«ΖΩΗ» 1955 σ.79#

**Τ**ὴν ἀνεξίτηλον θειαν βουλήν <sup>6</sup>ἐκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως σου του υ ψι στου

ο προ φη της Αβ βα κουμ κα τα νο ων ε κραυ

γα ξε χορός β' δο ξα τη δυ να μει σου Κυ ρι ε

ὥδῃ ε'

Ἦχος Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.316#

Τ ο θει ον και αρ ρητον καλ λος των α ρε των σου Χρι

στε ε δι η γη σομαι εξ α ι δι ου γαρ δο ξης συν

α ι δι ον και εν υ πο στα τον λα αμ ψας α παυ γα

σμα παρ θε νι κης α πο γα στρος τοις εν σκο τει και

σκι α σω μα τω θεις α νε τει λας η η λι ι ος

ὥδῃ ε'

Ἦχος Β

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.332#

Ε ξε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη Κοι μη

σει σου <sup>Δ</sup> συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε γη

θεν με τε ε στης προς αι ω νι ι ους μο νας και

προς α τε λε ευ τη τον ζω ην πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup> <sup>λ</sup> χορὸς

α' σω τη ρι ι αν βρα βευ ου σα <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος <sup>4</sup> <sup>η</sup> Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.317#

Α λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον πυρ <sup>Δ</sup>

της τρι η με ρου τα φης σου τι ι προ ει κο νι σμα <sup>π</sup> <sup>η</sup>

ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δει κται <sup>Δ</sup> <sup>η</sup> σε

σω σμε νος γαρ ως και πρου πε πω το ο ο α σι νης ε



βο ο α θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σεως Κυ υ ρι ι

ε π ρ

ῥοδὴ ζ'

Ἦχος ὁ Πά

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.333#

Τ ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ

την οι θε ο φρο νες της Θε ο μη το ρος π ρ δευ τε τας χει

ρας κρο τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα χορὸς β' Θε

ον δο ξα ζον τες 6 λ

ῥοδὴ ζ'

Ἦχος ὁ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.318#

Ι τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρως αν τι

τατ το με νος π ρ το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε ε

γε ε λα θε ο πνευ στω λο γι κη <sup>Δ</sup> τη των ο

σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο με νος <sup>π</sup> μου

σι κοις ορ γα νοις εν με σω πυ ρο ο ος ο δε δο ξα

σμε ε νος των πα τε ρων και η μων <sup>Γ</sup> Θε ος ευ λο γη τος

<sup>π</sup> ει

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.334#

**Ο** υκ ε λα α τρε ευ σαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα <sup>6</sup> αλ λα πυ ρο ος α πει λη <sup>6</sup> αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον <sup>6</sup> υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος <sup>6</sup> χορὸς α' και Θε ος ευ λο

γῆ το ὅς εἰ

ὥδῃ ᾗ

ᾠχος ᾗ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.318#

Αἰ νου μεν εὐ λο γου μεν καὶ προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

Φ λο γα ὄρο σι ζου σαν ο σι ους δυσ σε βεις δε

κα τα φλε γου σαν Ἀγ γελος Θε ου ο παν σθε νης ε δει

ξε παι σι ζω αρ χι κην δεπη γην ειρ γα σα το την Θε

ο το κον φθο ραν θα να του καὶ ζω ην βλυ στα νου

σαν τοις μελ που σι τον δη μι ουρ γον μο νον υ

μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι καὶ υ περ υ

ψου ου μενεις παν τας τους αι ω νας

π  
9

\* να α α ας

ῥδὴ η'

Ἦχος Β

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.335#

Π αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το ο το τε

μεν τυ που με νος νυν δε ε νερ γου με ε νος την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Π ε ποι κιλ με νη τη θει α δο ξη η ι ε  
ρα και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου παν τας συν  
η γα γε το προς ευ φρο συ νην τους πι στους εξ αρ χου  
σης Μα ρι αμ με τα χο ρων και τυμ πα νων τω  
σω ω α δον τας μο νο γε νει εν δο ξως ο τι δε  
δο ο ξα α σται

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε  
ται πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα σι

λι δι Μη τρι και ο φθη σο μαι φαι δρωσ παν η γυ ρι

ζων και α σω γη θο μενος ταυ της την Κοι μη σιν

ᾠδὴ γ' κανὼν α'

Ἦχος 4 Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.141/1490#

Η δη μι ουρ γι κη και συν ε κτι κη των

α πα αν των Θε ου σο φι α και δυ να μεις α

κλι νη α κρα δαν τον την Εκ κλη σι αν στη ρι ξον Χρι

στε μο νος γαρ ει α γι ος ο εν α γι οις α

να παυ ο ο με ε νος

ᾠδὴ γ' κανὼν γ'

Ἦχος 4 Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.141/1490#

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε ως

ζω ω σα και α φθο νος πη γη  θι α σον συγ κρο τη

σαν τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον  καν τη σε

πτη Κοι μη σει Σου *χορὸς α'* στε φα νων δο ξης α ξι ω σον 

ᾠδὴ δ' κανών α'

Ἦχος  Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.143/1492\*

 η σεις προ φη των και αι νι γμα τα  την σαρκω σιν

υ πε φη ναν την εκ Παρ θε νου σου Χρι στε  φεγ γος α

στρα πης σου εις φως ε θνω ων εξ ε λευ σε σθαι  και φω

νει σοι α βυσ σο ος εν α γαλ λι α α σει  τη δυ

να μει σου δο ξα φι λα ανθρω ω πε 

ᾠδὴ δ' κανών β'

Ἦχος  Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.143/1492\*

Τ ην α νεξ ι χνι α στον θει ει αν βου λην <sup>6</sup>λ της εκ

της Παρ θε νου σαρ κω σε ε ως σου του Υ ψι στου <sup>π</sup>ο

προ φη της Αβ βα κουμ <sup>6</sup>λ κα τα νο ων ε κραυ γα ζε <sup>Δ</sup>λ

χορὸς β' <sup>ο</sup>δο ξατηδυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ὥδ' ἑ' κανὼν α'

Ἦχος <sup>4</sup>ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.143/1492\*

Τ ο θει ον και αρ ρητον καλ λος <sup>Δ</sup>λ των α ρε των

σου Χρι στε ε δι η γη σο μαι <sup>π</sup>ο εξ α ι δι ου

γαρ δο ξης συν α ι δι ον <sup>Δ</sup>λ και εν υ πο στα τον

λα αμ ψας α παυ γα σμα <sup>π</sup>ο παρ θε νι κης α πο γα

στρος τοις εν σκο τει και σκι α <sup>π</sup>ο σω μα τω θεις α



νε τει λας η η λι ι ος π<sup>9</sup>

ὥδῃ ε' κανών β'

Ἦχος δ' B8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.144/1493\*

Ε ξ ε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη Κοι μη

σει σου δ' συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε γη θεν

με τε ε στης προς αι ω νι ι ους μο νας και προς

α τε λευ τη τον ζω ην δ' πα σι τοις υ μνου σι σε χορὸς α'

σω τη ρι ι αν βρα βευ ου σα γ

ὥδῃ ε' κανών α'

Ἦχος γ' Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.144/1493\*

Α λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον

πυρ δ' της τρι η με ρου τα φης σου τι ι προ ει κο νι

σμα <sup>π</sup><sub>9</sub> ου ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δει

κται <sup>Δ</sup><sub>8</sub> σε σω σμε νος γαρ ως και πρου πε πω το ο α σι

νης ε βο ο α <sup>Δ</sup><sub>8</sub> θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σε ως

Κυ υ ρι ι ε <sup>π</sup><sub>9</sub>

ῥῥδῆ ζ' κανών β'

Ἦχος <sup>Δ</sup><sub>8</sub> Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.144/1493\*

Τ ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος <sup>π</sup><sub>9</sub> δευ τετας χει ρας κρο

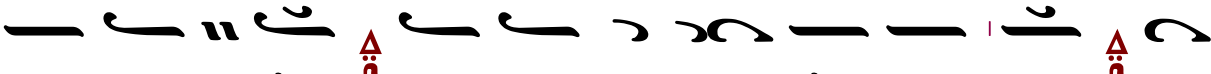
τη σω μεν <sup>Δ</sup><sub>8</sub> τον εξ αυ της τε χθε εν τα χορὸς β' Θε ον

δο ξα ζον τες <sup>6</sup><sub>λ</sub>

ῥῥδῆ ζ' κανών α'

Ἦχος <sup>Δ</sup><sub>8</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.145/1494\*

  
 τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρωσαν τι  
  
 τατ το με νος το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε  
  
 ε γε ε λα θε ο πνευ στω λο γι κη τη  
  
 των ο σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο  
  
 με νος μου σι κοις ορ γα νοις εν με σω φλο  
  
 γος ο δε δο ξα σμε νος των πα τε ρων και η μων  
  
 Θε ος ευ λο γη τος ει

ᾠδὴ ζ' κανὼν β'

Ἦχος Δ' Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.145/1494\*

  
 Ο υκ ε λα α τρε ευ σαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα  
  
 ρα τον κτι σα αν τα αλ λα πυ ρο ος α πει λην

αν δρει ως πα τη σαν τες χαι ρον τες ε ψαλ λον <sup>6</sup>λ υ

περ υ μνη η τε <sup>π</sup>ο των πα τε ρων Κυ ρι ος <sup>6</sup>χορὸς α' και

Θε ος ευ λο γη το ος ει <sup>6</sup>λ

ὥδῃ ἡ' κανὼν α'

Ἦχος <sup>4</sup>π Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.145/1494\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Α</sup> <sup>π</sup>

Φ λο γα δρο σι ζου σαν ο σι ους <sup>Α</sup>δυσ σε βεις δε κα τα

φλε γου σαν <sup>π</sup>αγ γελος Θε ου ο παν σθε νης ε δει ξε παι

σι <sup>Α</sup>ζω αρ χι κην δε πεη γην ειρ γα σα το την

Θε ο το ο κον <sup>Α</sup>φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ

στα νου σαν τοις μελ που σι <sup>π</sup> τον δη μι ουρ γο ον

μο νον υ μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι <sup>Δ</sup> και

υ περ υ ψου μεν εις παν τας τους αι ω <sup>π</sup> νας

\* <sup>χ</sup> να α α ας <sup>π</sup>

ᾠδὴ ἡ' κανὼν β'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.146/1495\*

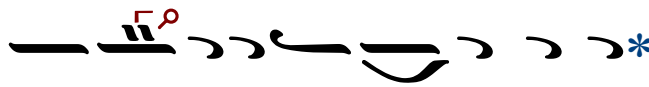
**Π** αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω <sup>Δ</sup> ο

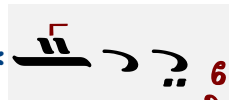
το ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το <sup>Δ</sup> το τε

μεν τυ που μενος <sup>6</sup> νυν δε εν ερ γου με ε νος <sup>π</sup> την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν <sup>Δ</sup>

τον Κυ ρι ο ον υ μνει τε τα ερ γα <sup>π</sup> και υ περ

  
 υ ψου ου τε εις παν τας τους αι

  
 ω ω νας

  
 ω ω να α α α ας

## Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)21

Ῥδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.146/1495\*

  
 ε ποι κιλ με ε ε ε νη τη θει ει α δο ο ο

  
 ξη η η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ κλε

  
 η η ης Πα αρ θε ε νε ε μνη η η μη η η

  
 σου ου πα αν τας συν η γα γε ε το ο προ ος

  
 ε ευ φρο συ νη ην του ους πι ι στου ου ου ους εξ

21 Ὅπως εἰς τὰς καταβασίας τῶν ἄλλων ἑορτῶν, οὕτω καὶ εἰς τὰς παρούσας ἐπεφέραμεν ἐλαφράς τινας διορθώσεις πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ὀρθοτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος. Οὐσιαστικωτέρας μεταβολὰς παραθέτομεν μεθ' ἐκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

α ρ χου ου ου ση η ης Μα α ρι ι ι αμ <sup>π q</sup> με τα

α α α χο ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω σω ω

ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω <sup>π q</sup> α α

δον τα ας μο νο ο γε ε νει <sup>Δ</sup> εν δο ο ξω ως ο

τι ι δε ε δο ο ο ο ο ξα α α α σται <sup>π q</sup>

\* και ευ κλε η ης Πα αρ θε ε νε ε

\* το προς ευ φρο συ νη ην του ους πι ι

\* εξ αρ χου ου ση ης Μα α ρι ι ι αμ <sup>π q</sup> με τα χο

ρων και αι τυ υμ πα α α νω ων <sup>π q</sup> τω σω ω α α

δον τα ας μο

ᾠδὴ α'

Ἦχος ᾠδῆς Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

Α νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη η  
σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε ευ  
ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι ι  
και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως πα αν  
η η γυ υ ρι ζωων και α α σω ω γη η θο ο με  
ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην Κοι μη η σι ιν

ᾠδὴ γ'

Ἦχος ᾠδῆς Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.147/1496\*

Η δη μι ου ουρ γι ι κη και συν ε ε κτι κη  
τω ων α α πα α αν των Θε ου σο φι ι ι ι α



α και αι δυ υ υ να μι ις <sup>π</sup>α α κλι νη

η α κρα α δα αν το ο ον <sup>Δ</sup>την Εκ κλη σι αν

στη η ρι ξον Χρι ι στε <sup>Δ</sup>μο ο νος γα αρ ει

ει ει α α γι ι ι ος <sup>Δ</sup>ο εν α γι ι

οι οι οισ α να α πα αυ ο ο ο ο ο με ε

ε ε νος <sup>π</sup>

<sup>1</sup>α α κρα α δα αν τον την Εκ κλη σι ι αν στη

<sup>2</sup>ο εν α γι ι οισ α να α πα αυ ο

ᾠδὴ γ'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

**Τ**ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι

α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον καν τη σε πτη Κοι οι μη η σει ει σου χορὸς α'

\* στε φα α α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον

\* στε φα α α νωων...

Μουσικὸν Πεντηκοστάριον 2005 σ.551

ῥοδὴ δ'

Ἦχος 4 Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.148/149\*

Ρ η η η η σεις προ φη τω ω ων και αι νι ι

γμα α τα α την σα α αρ κω ω σι εν

υ υ πε ε ε φη η να αν την εκ Παρ θε ε

ε ε νου ου ου σου Χρι ι στε φεγ γος α στρα α πη

η ης σου ου εις φως ε θνω ω ω ων ε εξ ε ε λε

ε ευ σε ε ε σθαι αι και φω νει ει σοι α α

βυ υσ σο ο ος ε εν α γαλ λι ι α α α σει

τη δυ να α μει ει σου ου ου δο ξα α φι ι

λα α α α αν θρω ω ω ω πε

την εκ Παρ θε ε νου σου Χρι ι στε φεγ γος

ᾠδὴ δ΄ Ἦχος δὲ Ββ πρωτ.Κων.Παπαγιάννη Μουσικόν Μηνολόγιον 2007 σ.235/1933\*

Τ ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Ί υ ψι

στου ου ο προ φη η της Αβ βα α κουμ κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε χορός β' δο ο ο ο

ξα τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

Ὠδὴ ε'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*

Τ ο θει ει ει ει ον και αρ ρη η το ον κα α α λ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι στε ε ε ε

δι ι η η γη η η σο ο μαι αι εξ α ι

δι ι ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α α α

ι ι δι ι ι ον και εν υ πο ο στα α τον

λα α α αμ ψα ας α α πα α αυ γα α α σμα

α παρ θε νι κη η η ης α α α πο γα α

στρος τοις εν σκο ο ο τει και σκι ι α σω μα

τω θει εις α α α νε τει ει λα ας η η η η

η λι ι ι ι ος

παρ θε νι κη η η ης α α πο

ᾠδὴ ε΄

Ἦχος Β

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.235/1933\*  
(διασκευή ΓΜ)

ε ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η Κοι οι μη η σει ει σου συ υ υ γα α

α α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε

γη θεν με τε ε ε ε ε στης προς αι ω ω ω νι ι

ι ι ι ου ους μο ο ο νας και αι προ ος α

τε λε ευ τη η το ον ζω ω η η η ην πα α σι ι

τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη ην

χορὸς ἀ' βρα βε ευ ου ου σα α

ῥαδὴς'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*

α\* λι ον πον το γε ε νες κη τω ω ο ον

εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι η

με ε ρου ουτα α φη ης σου τι ι ι προ ει κο ο

νι ι σμα α ου ου ου Ι ι ω ω ω νας υ πο

φη η τη ης α α να α δε ε ε δει ει ει κται αι

σε σω σμε ε νος γα α αρ ως και αι πρου

ου ου πε ε πω ω ω το ο ο α α σι νη ης

ε ε βο ο ο α θυ σω ω σοι οι με τα

φω νη ης αι αι αι νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ

υ ρι ι ι ι ε

\* λι ον πον το

ῥδῆς' Ἦχος Β

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.235/1934\*

Τ ην θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ηην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος δευ τε τας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε ε εν τα χορός β' Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε

ες

Ὡδὴ ζ'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.150/1499\*

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ υ

ρι θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι

τα ατ το ο ο με ε νο ος το με εν

πυ υρ ε δρο ο σι ι ζε τω θυ υ μω ω

ω δε ε ε γε ε ε λα θε ο πνε ε ευ



στω ω ω λο ο γι ι ι κη π<sup>q</sup> τη των ο σι ι

ων τρι φθο ογ γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι ι

φθε εγ γο ο ο με ε νο ος π<sup>q</sup> μου σι κοι οι οι

οις ο ορ γα α α νοις π<sup>q</sup> εν με ε ε σω ω φλο ο

γο ο ο ος ο ο δε δο ο ξα α σμε ε ε

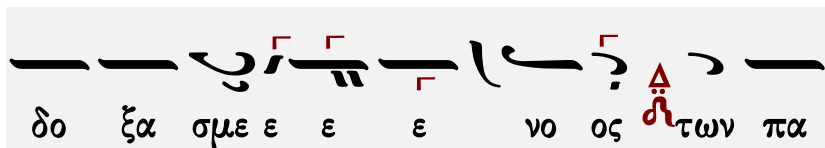
νο ος των πα τε ε ρων και αι η η μων Θε ε ος

ε ευ λο ο γη η η το ο ο ος ει π<sup>q</sup>

\* θει ος ε ε ρως α αν τι ι

\* α αν τι ι φθε εγ

\* εν με ε ε σω ω φλο ο ο γος ο δε



δο ξα σμε ε ε ε νο ος των πα

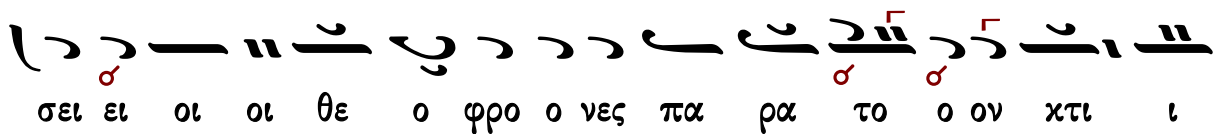
ᾠδὴ ζ'

Ἦχος δ' Ββ

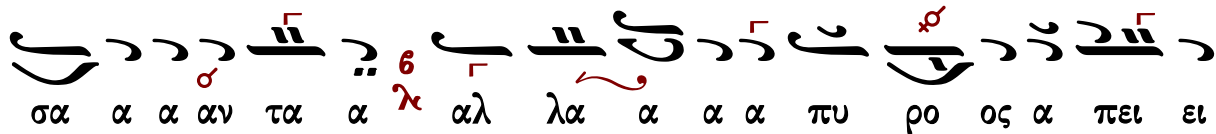
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.236/1934\*



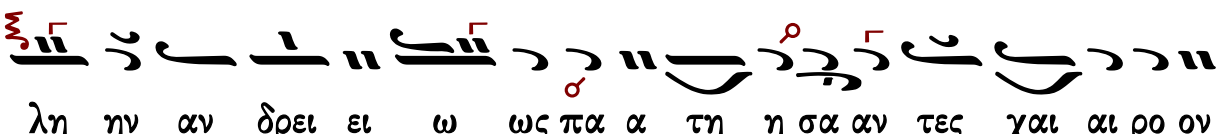
Ο υχ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι



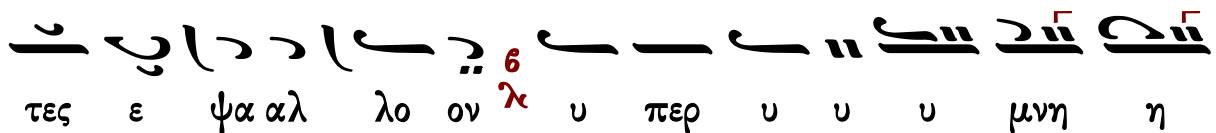
σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι



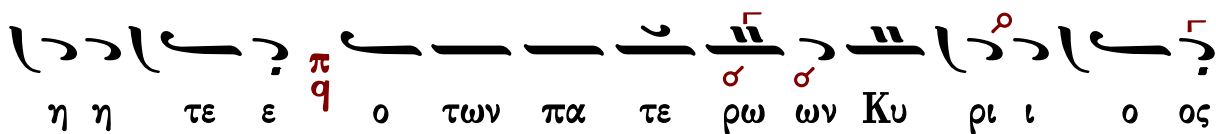
σα α α αν τα α αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει



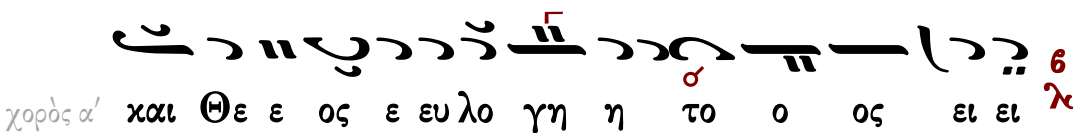
λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον



τες ε ψα αλ λο ον υ περ υ υ υ μνη η



η η τε ε ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος



χορὸς α' και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει

ᾠδὴ η'

Ἦχος γ' Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.151/1500\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ υ ρι ι ον

Φ λο ο ο ο γα δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ους δυσ σε ε ε βει ει εις δε ε κα α

τα α φλε ε ε γου ου ου σα αν αγ γε ε λο ος

Θε ε ου ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης ε δει ει

ξε ε παι αι σι ζω αρ χι κη η η η ην δε

ε πη η η γην ειρ γα α σα το ο ο ο

ο την Θε ο ο ο το ο κον φθο ραν θα να α α α

του ου ου ου και ζω ω ην βλυ στα α α νου ου σα αν

ου ουρ γον μο ο νο ο ο ο ον υ υ μνου με ε ε εν

οι οι λε λυ υ τρω ω με ε ε νοι οι

και αι υ περ υ υ ψου ου ου με ε εν ει

𐤁   𐤀   𐤁   𐤁𐤀  
 va   a   a   as

\*   $\pi$   
vax q

\* — “ \ — / — // — ~ ~ ~ — π α ν  
⊕ ε ε ου ου ου ου ο ο

φθο ραν θα να α α του ου και ζω ω ην

✧

και υ υ περ υ υ ψου ου ου με εν ει ει εις πα


  
 αὐ τοῖς

Παι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

ι νω ω ο το ο ο ο ο κος της Θε ε

ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το το ο τε ε

με εν τυ που με ε νο ος νυ υν δε ε ε νερ γου ου

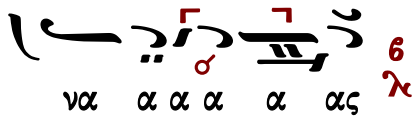
ου με ε ε ε νος την οι κου με ε νη ην α πα α

σαν α γει ει ρει ει ει ψα α α α αλ λου ου ου ου

σαν το ον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο ο ο ον υ υ μνει

τε ε τα α ερ γα α και αι υ περ υ ψου ου ου

ου τε εις παν τας τους αι ω ω ω ω ω



## ὁδὴ θ' τῆς ἐορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α', ᾠδὴ θ'

ἤχος α'

Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

Νενίκηνται τῆς φύσεως οἱ ὅροι, ἐν σοὶ Παρθένε ἄχραντε· παρθενεύει γὰρ τόκος, καὶ ζωὴν προμνηστεύεται θάνατος. Ἡ μετὰ τὸκον Παρθένος, καὶ μετὰ θάνατον ζῶσα, σῶζοις αἰεί, Θεοτόκε, τὴν κληρονομίαν σου. (β')

Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

Ἐξίσταντο ἀγγέλων αἱ δυνάμεις, ἐν τῇ Σιῶν σκοποῦμεναι, τὸν οἰκεῖον Δεσπότην, γυναικεῖαν ψυχὴν χειριζόμενον· τῇ γὰρ ἀχράντως τεκούσῃ, υἱοπρεπῶς προσεφώνει· Δεῦρο σεμνή, τῷ Υἱῷ καὶ Θεῷ συνδοξάσθητι.

Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

Συνέστειλε χορὸς τῶν ἀποστόλων, τὸ θεοδόχον σῶμά σου, μετὰ δέους ὀρῶντες, καὶ φωνῇ λιγυρᾷ προσφθεγγόμενοι· Εἰς οὐρανίους θαλάμους, πρὸς τὸν Υἱὸν ἐκφοιτῶσα, σῶζοις αἰεί, Θεοτόκε τὴν κληρονομίαν σου.

κανὼν β', ᾠδὴ θ'

ἤχος δ'

Ἀγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδοχούμενος, πανηγυριζέτω δέ, αὐλῶν νόων φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱεράν μετάστασιν τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνὴ ἀειπάρθενε.

Ἀγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Δεῦτε ἐν Σιῶν, τῷ θείῳ καὶ πίνονι, ὅρει τοῦ ζῶντος Θεοῦ, ἀγαλλιασώμεθα, τὴν Θεοτόκον ἐνοπτριζόμενοι· πρὸς γὰρ τὴν λίαν κρείττονα, καὶ θειοτέραν σκηνήν, ὡς Μητέρα, ταύτην εἰς τὰ Ἄγια, τῶν ἀγίων Χριστὸς μετατίθησι.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἀγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Δεῦτε οἱ πιστοί, τῷ τάφῳ προσέλθωμεν, τῆς Θεομήτορος, καὶ περιπτύζώμεθα, καρδίας  
χείλη ὄμματα μέτωπα, εἰλικρινῶς προσάπτοντες, καὶ ἀρυσώμεθα, ἱαμάτων, ἄφθονα  
χαρίσματα, ἐκ πηγῆς ἀενάου βλυστάνοντα.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

Ἄγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Δέχου παρ' ἡμῶν, ὠδὴν τὴν ἐξόδιον, Μῆτερ τοῦ ζῶντος Θεοῦ, καὶ τῇ φωτοφόρῳ σου,  
καὶ θεία ἐπισκίασον χάριτι, τῷ βασιλεῖ τὰ τρόπαια, τῷ φιλοχρίστῳ λαῷ, τὴν εἰρήνην,  
ἄφεςιν τοῖς μέλπουσι, καὶ ψυχῶν σωτηρίαν βραβεύουσα.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κανὼν α' τῆς Θεοτόκου, ψδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.152/1501#

Α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι εν σοι

Παρ θε νε α χραν τε παρ θε νευ ει γαρ το κος

και ζω ην προ μνη στε ευ ε ται θα να τος η

με τα το κον Παρ θε νος και με τα θα να τον

ζω σα σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο

νο μι ι α αν σου (β')

Α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον

Ε ξ ι σταν το αγ γε λων αι δυ να μεις εν τη

Σι ων σκο που με ναι τον οι κει ον Δε σπο την

γυ ναι κει αν ψυ χη ην χει ρι ζο με νον τη γαρ

α χραν τως τε κου ση υι ο πρε πως προσ ε φω νει

δε ευ ρο σε μνη τω Υι ω και Θε ω συν δο ξα α



σθη η τι π ρ

Α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον π ρ

C υν ε στει λε χο ρος των α πο στο λων το θε ο

δο χον σω μα σου π ρ με τα δε ους ο ρων τεσ π ρ και

φω νη λι γυ ρα α προσ φθεγ γο με νοι π ρ εις ου ρα

νι ους θα λα μους προς τον Υι ον εκ φοι τω σα π ρ

σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο νο μι ι α αν

σου π ρ

Κανών 6' τῆς Θεοτόκου, ᾠδὴ θ'

Α <sup>Γ</sup>χ γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου  
 ο ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup>λ πως η Παρ θε νος α  
 παι αι ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λ  
 Α <sup>Γ</sup>χ πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα  
 δου χου με νος <sup>6</sup>λ παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup>9 α  
 υ λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>λ την <sup>σ</sup>  
 ε ραν Με τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup>δ  
 και βο α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup>λ  
 Θε ο το κε α γνη η α ει παρ θε νε <sup>6</sup>λ

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω

Δ ευ τε εν Σι ων τω θει ω και πι ο νι ο ρει

του ζων τος Θε ου α γαλ λι α σω με ε θα την

Θε ο το ο κον εν ο πτρι ζο με νοι προς

γάρ την λι αν κρειτ το να και θει ο τε ραν σκη

νην ως Μη τε ε ε ε ρα ταυ την εις τα α γι α

των α γι ων Χρι στος με τα τι θη σι

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω

Δ ευ τε οι πι στοι τω τα φω προσ ελ θω μεν της Θε

ο μη το ρος και πε ρι πτυ ξω με ε θα καρ

δι ας χει ει λη ομ ματα με τω πα ει λι κρι

νωσ προσ α πτον τες και α ρυ σω ω με ε θα

ι α μα α α των α φθο να χα ρι σμα τα εκ

πη γης α ε να α ου βλυ στα νον τα

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων α μην <sup>6</sup>λ

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup>λ πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λ

Δ ε χου παρ η μων ω δην την εξ ο δι ον Μη τερ

του ζων τος Θε ου <sup>6</sup>λ και τη φω το φο ρω ω σου <sup>π</sup>9 και

θει α ε πι σκι ι α σον χα ρι τι <sup>6</sup>λ τω <sup>σ</sup>βα σι

λει τα τρο παι α <sup>Δ</sup>τω φι λο χρι στω λα ω την

ει ρη νην <sup>Δ</sup>α φε σιν τοις μελ που σι <sup>6</sup>λ και ψυ

χων σω τη ρι ι αν βρα βευ ου σα <sup>6</sup>λ

# Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

Νενίκηνται τῆς φύσεως οἱ ὅροι, ἐν σοὶ Παρθένε ἄχραντε· παρθενεύει γὰρ τόκος, καὶ ζῶν προμνηστεύεται θάνατος. Ἡ μετὰ τόκον παρθένος, καὶ μετὰ θάνατον ζῶσα, σῶζοις αἰεὶ, Θεοτόκε τὴν κληρονομίαν σου.

ἦχος δ'

Ἄγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδοχούμενος, πανηγυριζέτω δέ, αὐλῶν νόων φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱερὰν Μετάστασιν τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἄγνή ἀειπάρθενε.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ

Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'  
κανὼν α'

Ἦχος 4<sup>η</sup> Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.319#

Α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο με εν

σε την μο νην Θε ο το ο κον

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι εν σοι Παρ θε

νε α χραν τε <sup>π q</sup> παρ θε νευ ει γαρ το κος και ζω

ην προμνη στε ευ ε ται θα νατος <sup>π q</sup> η με τα το κον Παρ

θε νος και με τα θα να τον ζω σα <sup>π q</sup> σω ω ζεις α ει

Θε ο το κε την κλη ρο νο μι ι α αν σου <sup>π q</sup>

\* σου ου ου ου <sup>π q</sup>

ὥδῃ θ'   
 κανὼν β'

Ἦχος <sup>Λ</sup> Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.153/1502#

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6 λ</sup> πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6 λ</sup>

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.335#

Α πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου

χοῦ με νος <sup>6</sup>λ παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup>9 α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>λ την ι ε ραν Με

τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup>λ και βο α

α α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup>λ Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε <sup>6</sup>λ

\* <sup>λ</sup>χ παρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὥδ' ἢ θ'  
κανὼν α'

Ἦχος <sup>4</sup>ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.152/1501#

Α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον <sup>π</sup>9



Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι εν σοι

Παρ θε νε α χραν τε παρ θε νευ ει γαρ το κος

και ζω ην προ μνη στε ευ ε ται θα να τος η

με τα το κον Παρ θε νος και με τα θα να τον

ζω σα σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο

νο μι ι α αν σου

σου ου ου ου

ὥδ' ἢ θ'  
κανὼν β'

Ἦχος δ' Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.153/1502#

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω


 πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα  
 δου χου με νος <sup>6</sup>λ παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π9</sup>α  
 υ λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>λ την <sup>σ</sup>ι  
 ε ραν Με τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup>  
 και βο α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup>λ  
 Θε ο το κε α γνη η α ει <sup>\*</sup> παρ θε νε <sup>6</sup>λ

<sup>\*</sup> <sup>λ</sup> παρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup>λ

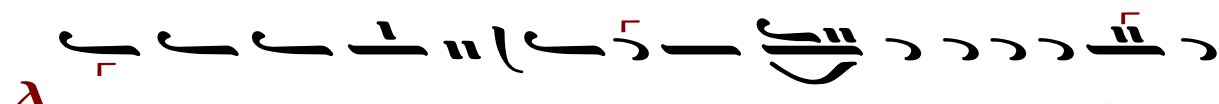
Ἄρχὴ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὧδὴ θ'   
 κανὼν α'

Ἦχος <sup>4</sup>η Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.6#


 ι γε ναι αι αι πα α α α σαι αι αι αι μα α

κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο ο

νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον

π q

Ν ε ε νι ι ι κη η η ην ται της φυ υ σε

π q

ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε πα α α

π q

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος και ζω ω

π q

ην προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να

α α το ος η με ε ε ε τα το κο ον Παρ θε

π q

ε ε ε νος και με ε ε ε τα θα α να α το ον

ζω σα α σω ω ω ω ζει εις α α α ει Θε ο

π q

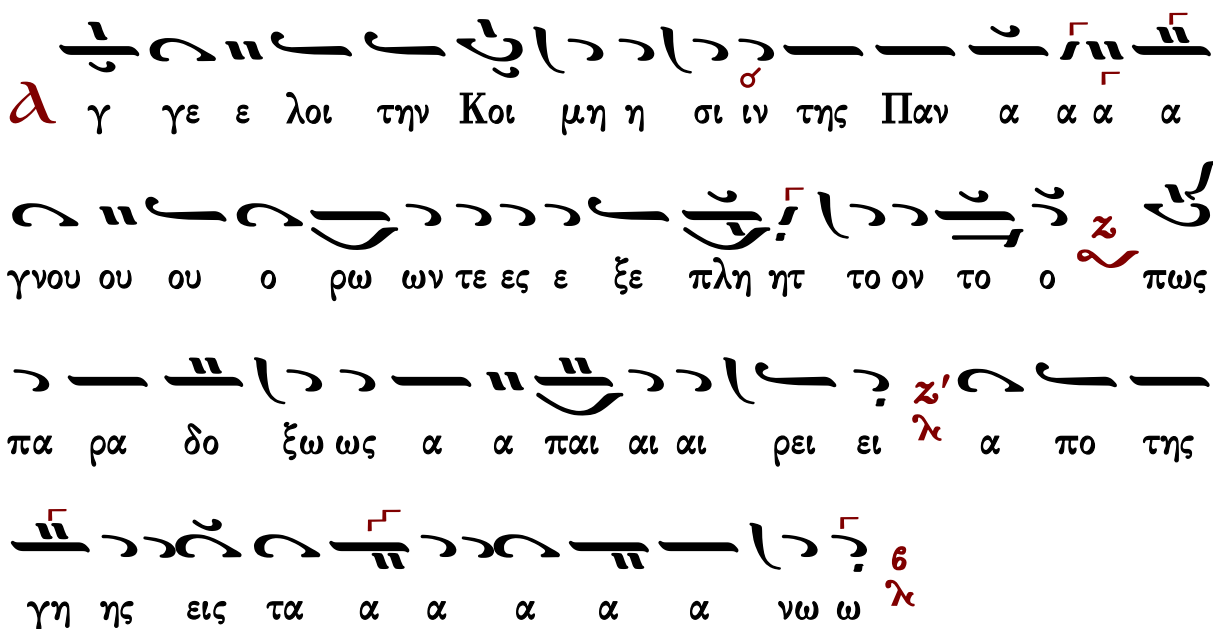
Α



ῥδῆ θ'  
κανὼν β'

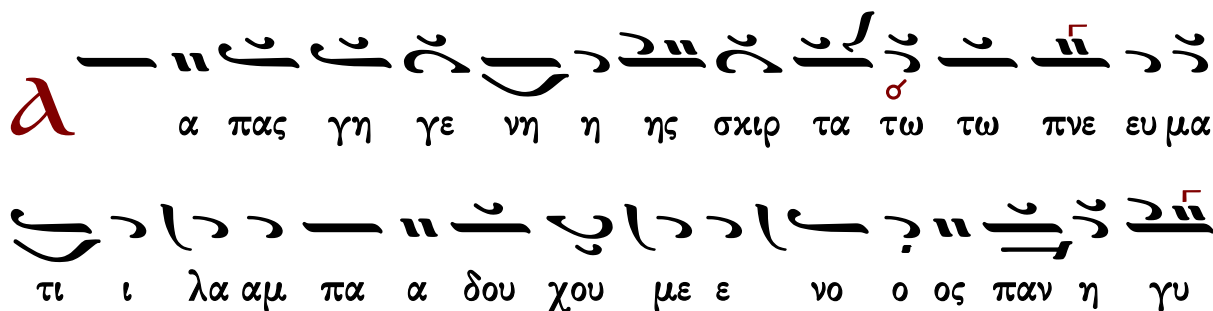
Ἦχος ᾠδὴ Ββ

Νεκταρίου Μοναχοῦ  
Μουσικός Θησαυρός Λειτουργίας  
1931 σ.529#



Ἦχος ᾠδὴ Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1905 σ.55#



υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε <sup>π</sup>α υ λωων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>6</sup>την ι

ε ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α

α α τω <sup>Δ</sup>χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup>

Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρθε ε ε νε ε ε

ε ε <sup>6</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

ψδλθ'  
κανών α'

Ἦχος <sup>4</sup>Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.155//1504\*

Α ι γε νε αι αι πα α α α σαι αι αι αι μα α

κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο

ο νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον

Ν ε ε νι ι ι κη η η ην ται της φυ υ σε

ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε πα α α

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος και ζω ω ην

προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να α α

το ος η με τα το κο ον Παρ θε ε ε ε νος

και με τα θα α να α το ον ζω σα α σω ω ω

ζοι οισ α α α ει Θε ο ο το ο ο κε την

κλη ρο ο νο ο μι ι ι ι α α α αν νας

\* σου ου ου ου

ῥδὴ θ'  
κανὼν β'

Ἦχος δὲ Ββ

Νεκταρίου Μοναχοῦ  
Μουσικός Θησαυρὸς Λειτουργίας  
1931 σ.529#

Α γ γε ε λοι την κοι μη η σι εν της Παν α α α α

γνου ου ου ο ρω ων τε ες ε ξε πλη ητ τον το ο πως

πα ρα δο ξω ως α α παι αι αι ρει ει α πο της

γη ης εις τα α α α α α νω ω

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*

Α α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος παν η γυ υ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε <sup>π</sup>α υ λω ω ν νο ο

ο ο ω ν φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>6</sup>την ι ε

ρα αν <sup>Μ</sup>ε ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α α

τω <sup>Α</sup>χαι αι ροι ο ις πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup>Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε <sup>6</sup>



# Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (μεθέορτες)

16 ἕως 23 Αὐγούστου

## ἤχος α΄

- α **Π**εποικιλμένη τῇ θείᾳ δόξῃ, ἡ ἱερὰ καὶ εὐκλεὲς Παρθένε μνήμη σου, πάντας συνηγάγετο, πρὸς εὐφροσύνην τοὺς πιστοὺς, ἐξαρχούσης Μαρίας, μετὰ χορῶν καὶ τυμπάνων τῷ σῶ, ἄδοντας Μονογενεῖ, ἐνδόξως ὅτι δεδόξασται.
- γ **Ἡ** δημιουργική, καὶ συνεκτική τῶν ἀπάντων, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις, ἀκλινῇ ἀκράδαντον, τὴν Ἐκκλησίαν στήριζον Χριστέ· μόνος γὰρ εἶ ἅγιος, ὁ ἐν ἁγίοις ἀναπαυόμενος.
- δ **Ῥ**ήσεις προφητῶν καὶ αἰνίσματα, τὴν σάρκωσιν ὑπέφηναν, τὴν ἐκ Παρθένου σου Χριστέ, φέγγος ἀστραπῆς σου, εἰς φῶς ἐθνῶν ἐξελεύσεσθαι, καὶ φωνεῖ σοι ἄβυσσος, ἐν ἀγαλλιάσει, τῇ δυνάμει σου δόξα φιλάνθρωπε.
- ε **Τ**ὸ θεῖον καὶ ἄρρητον κάλλος, τῶν ἀρετῶν σου Χριστέ διηγῆσομαι· ἐξ αἰδίου γὰρ δόξης συναῖδιον, καὶ ἐνυπόστατον λάμψας ἀπαύγασμα, παρθενικῆς ἀπὸ γαστροῦ, τοῖς ἐν σκότει καὶ σκιᾷ, σωματωθεὶς ἀνέτειλας ἥλιος.
- ς **Ἄ**λιον ποντογενές, κητῶν ἐντόσθιον πῦρ, τῆς τριημέρου ταφῆς σου τι προεικόνισμα, οὗ Ἰωνᾶς ὑποφῆτης ἀναδέδεικται· σεσωσμένος γὰρ ὡς καὶ προὑπέπετο, ἀσινὴς ἐβόα· Θύσω σοι μετὰ φωνῆς αἰνέσεως Κύριε.
- ζ **Ἰ**ταμῶ θυμῷ τε καὶ πυρί, θεῖος ἔρως ἀντιταττόμενος, τὸ μὲν πῦρ ἐδρόσιζε, τῷ θυμῷ δὲ ἐγέλα, θεοπνεύστῳ λογικῇ, τῇ τῶν ὁσίων τριφθόγγῳ λύρᾳ ἀντιφθεγγόμενος, μουσικοῖς ὄργάνοις ἐν μέσῳ φλογός, ὁ δεδοξασμένος, τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

- η **Φ**λόγα δροσίζουσαν ὁσίους, δυσσεβεῖς δὲ καταφλέγουσαν, ἄγγελος Θεοῦ ὁ πανσθενής, ἔδειξε παισί· ζωαρχικὴν δὲ πηγὴν εἰργάσατο τὴν Θεοτόκον, φθορὰν θανάτου, καὶ ζωὴν βλυστάνουσαν τοῖς μέλπουσι, τὸν δημιουργὸν μόνον ὑμνοῦμεν, οἱ λελυτρωμένοι, καὶ ὑπερυψοῦμεν εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)  
Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ α'

Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.314#

Π ε ποι κιλ με νητη θει α δο ξη ᾠ η ι ε ρα

και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου παν τας συν η

γα γε το προς ευ φρο συ νηντους πι στους εξ αρ χου σης Μα ρι

αμ <sup>π</sup> με τα χο ρων και τυμ πα νων τω σω α δον τας μο νο

γε νει εν δο ξως ο τι δε δο ο ξα α σται <sup>π</sup> ὥδῃ γ'

Η δη μι ουρ γι κη και συν εκτι κη των α πα

αν των Θε ου σο φι α και δυ ναμις α κλι νη α κρα

δαντον την Εκ κλη σι ανστη ρι ξον Χρι στε ᾠ μο νος γαρ

ει α γι ος <sup>Δ</sup> χορδς α' ο εν α γι οις α να παυ ο ο

με ε νος <sup>π</sup> ὠδὴ δ'

**Ρ** η σεις Προ φη των και αι νι γμα τα την σαρ κω σιν υ

πε φη ναν <sup>π</sup> την εκ Παρ θε νου σου Χρι στε φεγ γος α στρα

πης σου εις φως ε θνων ε ξε λευ σε σθαι <sup>π</sup> και φω νει σοι

α βυσ σο ο ος εν α γαλ ι α α σει <sup>Δ</sup> τη δυ να μει

σου δο ξαφι λα ανθρω ω πε <sup>π</sup> ὠδὴ ε'

**Τ** ο θει ον και αρ ρητον καλ λος <sup>Δ</sup> των α ρε των σου Χρι

στε ε δι η γη σομαι εξ α ι δι ου γαρ δο ξης συν

α ι δι ον και εν υ πο στα τον λα αμ ψας α παυ γα

σμα παρ θε νι κης α πο γα στρος  τοις εν σκο τει και

σκι α σω μα τω θεις α νε τειλας η η λι ι ος 

ὥδῃς'

 λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον πυρ 

της τρι η με ρου τα φης σου τι ι προ ει κο νι σμα 

ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δεικται  σε σω

σμε νος γαρως και πρου πε πω το ο ο α σι νης ε βο ο

α θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σεως Κυ υ ρι ι ε 

ὥδῃς'

 τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρως αν τι

τατ το με νος  το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε ε

γε ε λα θε ο πνευ στω λο γι κη <sup>Δ</sup> τη των ο

σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο με νος <sup>π</sup> μου

σι κοις ορ γα νοις εν με σω πυ ρο ο ος ο δε δο ξα

σμε ε νος των πα τε ρων και η μων <sup>Θ</sup> ε ος ευ λο γη τος

ει <sup>π</sup> ὠδὴ η'

<sup>Α</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Δ</sup>

<sup>Φ</sup> λο γα δρο σι ζου σαν ο σι ους <sup>Δ</sup> δυσ σε βεις δε

κα τα φλε γου σαν Αγ γελος <sup>Θ</sup> ου ο παν σθε νης ε δει

ξε παι σι ζω αρ χι κην δε πη γην ειρ γα σα το την <sup>Θ</sup> ε

ο το κον <sup>Δ</sup>φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ στα νου

σαν τοις μελ που <sup>π</sup>σι τον δη μι ουρ γον μο νον υ

μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι και υ περ υ

ψου ου μενεις παν τας τους αι ω <sup>\*</sup> <sup>π</sup>νας

<sup>\*</sup> <sup>π</sup> <sup>χ</sup> <sup>α</sup> <sup>α</sup> <sup>α</sup> <sup>α</sup> <sup>π</sup> <sup>α</sup>

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α΄

Ἦχος <sup>Λ</sup> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.138/1487#

**Π** ε ποι κιλ με νη τη θει α δο ξη <sup>Δ</sup> η ι ε

ρα και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου <sup>π</sup> παν τας συν

η γα γε το προς ευ φρο συ νην τους πι στους εξ αρ χου

σης Μα ρι αμ <sup>π</sup>με τα χο ρων και τυμ πα νων <sup>π</sup>τω

σω ω α δον τας μο νο γε νει <sup>Δ</sup>εν δο ξως ο τι δε

δο ο ξα α σται <sup>π</sup> ῥδὴ γ'

**Η** δη μι ουρ γι κη και συν ε κτι κη των

α πα αν των Θε ου σο φι α και δυ να μεις <sup>π</sup>α

κλη νη α κρα δαν τον την Εκ κλη σι αν στη ρι ξον Χρι

στε <sup>Δ</sup>μο νος γαρ ει α γι ος χορὸς α' ο εν α γι

οις α να παυ ο ο με ε νος <sup>π</sup> ῥδὴ δ'

**Ρ** η σεις προ φη των και αι νι γμα τα <sup>Δ</sup>την σαρ κω σιν

υ πε φη ναν την εκ Παρ θε νου σου Χρι στε <sup>π</sup>φεγ γος α

στρα πης σου εις φως ε θνω ων εξ ε λευ σε σθαι <sup>π ρ</sup> και φω

νει σοι α βυσ σο ος εν α γαλ λι α α σει <sup>Δ ρ</sup> τη δυ

να μει σου δο ξα φι λα ανθρω ω πε <sup>π ρ</sup> ῥδῆ ε'

**Τ** ο θει ον και αρ ρητον καλ λος <sup>Δ ρ</sup> των α ρε των

σου Χρι στε ε δι η γη σο μαι <sup>π ρ</sup> εξ α ι δι ου

γαρ δο ξης συν α ι δι ον <sup>Δ ρ</sup> και εν υ πο στα τον

λα αμ ψας α παυ γα σμα <sup>π ρ</sup> παρ θε νι κης α πο γα

στρος τοις εν σκο τει και σκι α <sup>π ρ</sup> σω μα τω θεις α

νε τει λας η η λι ι ος <sup>π ρ</sup> ῥδῆ ε'

**Α** λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον



πυρ  της τρι η με ρουτα φης σου τι ι προ ει χο νι

σμα  ου ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δει

κται  σε σω σμε νος γαρως και πρου πε πω το ο α σι νης

ε βο ο α  θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σε ως

Κυ  υ ρι ι ε 

ὠδὴ ζ'

τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρως αν τι

τατ το με νος  το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε

ε γε ε λα  θε ο πνευ στω λο γι κη  τη

των ο σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο

με νος  μου σι κοις ορ γα νοις εν με σω φλο

γος  ο δε δο ξα σμε νος των πα τε ρων και η μων

 Θε ος ευ λο γη τος ει ὠδὴ η'

 ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον  

 λο γα δρο σι ζου σαν ο σι ους  δυσ σε βεις δε κα τα

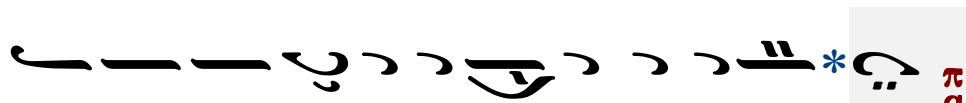
 φλε γου σαν  αγ γε λος Θε ου ο παν σθε νης ε δει ξε παι

σι  ζω αρ χι κην δε πη γην ειρ γα σα το την

Θε ο το ο κον  φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ

στα νου σαν τοις μελ που σι  τον δη μι ουρ γο ον

 μο νον υ μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι  και


  
 υ περ υ ψου μεν εις παν τας τους αι ω νας


  
 να α α ας

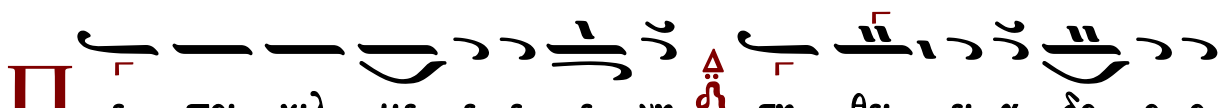
## Ἀργαί

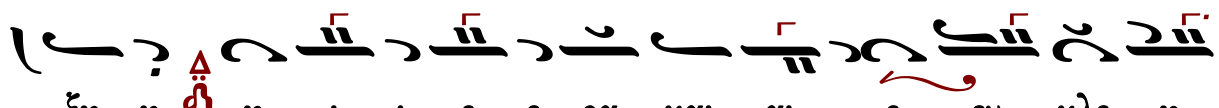
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ α'

Ἦχος ♭ Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.1\*

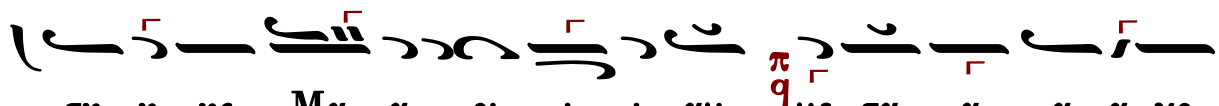

  
 Π ε ποι κιλ με ε ε ε νη τη θει ει α δο ο ο


  
 ξη η η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ κλε η


  
 η ης Πα αρ θε ε νε ε μνη η η μη η η σου


  
 ου πα αν τας συν η γα γε ε το προ ο ο ος ε ευ

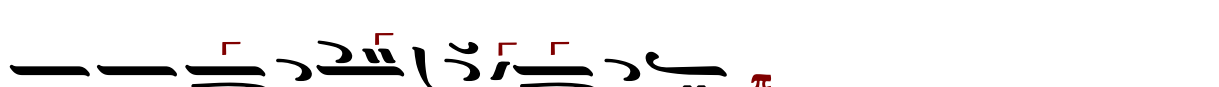

  
 φρο συ νηην του ους πι ι στου ου ου ους εξ αρ χου ου ου


  
 ση η ης Μα α ρι ι ι αμ με τα α α α χο


 ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω σω ω ω ω ω ω


 ω ω ω ω ω ω ω ω ω α α δον τα


 ας μο νο ο γε ε νει εν δο ο ξωως ο τι ι δε ε

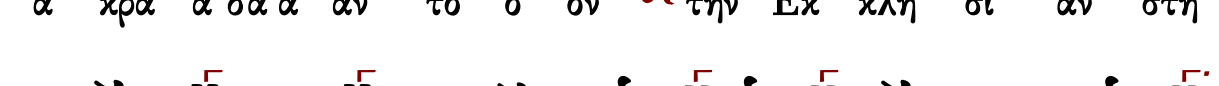

 δο ο ο ο ο ξα α α α σται


 Η δη μι ου ουρ γι ι κη και συν ε ε κτι κη


 τω ων α α πα α αν των Θε ου σο φι ι ι ι α


 α και αι δυ υ υ να μι ις α κλι νη η


 α κρα α δα α αν το ο ον την Εκ κλη σι αν στη


 η ρι ξο ον Χρι ι στε μο ο νος γα αρ ει


 ει ει α α γι ι ι ος χορός α' ο εν α γι ι

οι οι ος α να α πα αυ ο ο ο ο ο με

ε ε ε νος π q

ὠδὴ δ'

Ρ η η η η σεις x q προ φη τω ω ων και αι νι ιγ

μα α τα α την σα α αρ κω ω σι ιν υ υ

πε ε ε φη η να αν π q την εκ Παρ θε ε ε ε

νου ου ου σου Χρι ι στε Δ φεγ γος α στρα α πη η ης σου

ου Δ εις φως Ε θνω ω ω ων ε ε ξε ε λε ε ευ σε

ε ε σθαι αι π q και φω νει ει σοι α α βυ υ σ ο

ος ε εν α γαλ λι λι α α α σει Δ τη δυ να

α μει ει σου ου ου δο ξα α φι ι λα α α α

αν θρω ω ω πε <sup>π</sup>q

ὤδ' ἑ'

**T** ο θει ει ει ει ον <sup>χ</sup>q και αρ ρη η τοον κα α α λ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι στε ε ε ε δι ι

η η γη η η σο ο μαι αι <sup>π</sup>q εξ α ι δι ι

ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α α α ι

ι δι ι ι ον <sup>Δ</sup> και εν υ πο ο στα α τον λα α α

αμ ψα ας α α πα α αυ γα α α σμα α <sup>π</sup>q Παρ θε

νι κη η η ης α α α πο γα α στρος <sup>Δ</sup> τοις

εν σκο ο ο τει και σκι ι α <sup>π</sup>q σω μα τω θει εις

α α α νε τει ει λα ας η η η η η λι

ι ι ι ος π q

ὠδὴς'

Α λι ον πον το γε ε νες α κη τω ω ο ον

εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι η με

ε ρου ουτα α φη ης σου α τι ι ι προ ει κο ο

νι ι σμα α ου ουου ου Ι ω ω ω νας υ

πο φη η τη ης α α να α δε ε ε δει ει ει χται

αι π q σε σω σμε ε νος γα α αρ ως και αι πρου

ου ου πε ε πω ω ω το ο ο α α σι νη ης

ε ε βο ο ο α α θυ σω ω σοι οι με τα

φω νη ης αι αι αι νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ

υ ρι ι ι ι ε π q

ῥδῆζ'

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ

υ ρι θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι τα

ατ το ο ο με ε νο ος το με εν πυ υρ

ε δρο ο σι ι ζε τω θυ υ μω ω ω δε

ε ε γε ε ε λα Θε ο πνε ε ευ στω ω ω

λο ο γι ι ι κη τη των Ο σι ι ων τρι φθο

ογ γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι ι φθε εγ γο ο ο

με ε νο ος μου σι κοι οι οι ος ο ορ γα α α

νοις εν με ε ε σω ω φλο ο γο ο ο ος ο ο δε



δο ο ξα α σμε ε ε νο ος των Πα τε ε ρων

και αι η η μων Θε ε ος ε ευ λο ο γη η η το

ο ο ος ει

ὥδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου με εν τον

Κυ υ ρι ι ον

Φ λο ο ο ο γα δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ους δυσ σε ε ε βει ει εις δε ε κα α

τα α φλε ε ε γου ουου σα αν αγ γε ε λο ος Θε

ε ου ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης ε δει ει

ξε ε παι αι σι ζω αρ χι κη η η η ην δε

ε πη η η γην ειρ γα α σα το ο ο ο  
 ο την Θε ο ο ο το ο κον φθο ραν θα να α α α  
 του ου ουου και ζω ω ην βλυ στα α α νου ου σα  
 αν τοι οις με ε ελ που ου σι ι το ον Δη μι  
 ου ουρ γον μο ο νο ο ο ο ον υ υ μνου με ε ε εν  
 οι οι λε λυ υ τρω ω με ε ε νοι οι  
 και αι υ περ υ υ ψου ου ου με ε εν ει  
 εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω να α  
 α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)22

22 Όπως εις τὰς καταβασίας τῶν ἄλλων ἑορτῶν, οὕτω καὶ εἰς τὰς παρούσας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς διορθώσεις πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ὀρθοτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος. Οὐσιαστικωτέρας μεταβολὰς παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

Π ε ποι κιλ με ε ε ε νη τη θει ει α δο ο ο

ξη η η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ κλε

η η ης Πα αρ θε ε νε ε μνη η η μη η η

σου ου πα αν τας συν η γα γε ε το ο προ ος

ε ευ φρο συ νη ην του ους πι ι στου ου ου ους εξ

αρ χου ουου ση η ης Μα α ρι ι ι αμ με τα

α α α χο ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω σω ω

ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω α α

δον τα ας μο νο ο γε ε νει εν δο ο ξω ως ο

τι ι δε ε δο ο ο ο ο ξαα α α σται <sup>π</sup>q

\* και ευ κλε η ης Πααρ θε ε νε ε

\* το προς ευ φρο συ νηην τουους πι ι

\*<sup>2</sup> εξ αρ χου ου ση ης Μα α ρι ι ι αμ <sup>π</sup>q με τα χο

ρων και αι τυ υμ πα α α νω ων <sup>π</sup>q τω σω ω α α

δον τα ας μο

ᾠδὴ γ'

Ἦχος <sup>Λ</sup>q Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.147/1496\*

Η δη μι ου ουρ γι ι κη και συν ε ε κτι κη

τω ων α α πα α αν των <sup>Δ</sup>q Θε ου σο φι ι ι ι α

α και αι δυ υ υ να μι ις <sup>π</sup>q α κλι νη

η α κρα α δα α αν το ο ον την Εκ κλη σι αν

στη η ρι ξον Χρι ι στε μο ο νος γα αρ ει

ει ει α α γι ι ι ος χορός α' ο εν α

γι ι οι οι οις α να α πα αυ ο ο ο ο

ο με ε ε ε νος

α α κρα α δα αν τον την Εκ κλη σι ι αν στη

χορός α' ο εν α γι ι οις α να α πα αυ ο

Ἦχος Πα πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.148/1497\*

Ρ η η η η σεις προ φη τω ω ων και αι νι ι

γμα α τα α την σα α αρ κω ω σι ιν

υ υ πε ε ε φη η να αν πην εκ Παρ θε ε

ε ε νου ου ου σου Χρι ι στε φεγ γος α στρα α πη

η ης σου ου εις φως ε θνω ω ω ων ε εξ ε ε λε

ε ευ σε ε ε σθαι αι και φω νει ει σοι α α

βυ υσ σο ο ος ε εν α γαλ λι ι α α α σει

τη δυ να α μει ει σου ου ου δο ξα α φι ι

λα α α α αν θρω ω ω πε

πην εκ Παρ θε ε νου σου Χρι ι στε φεγ γος

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*

Τ ο θει ει ει ει ον και αρ ρη η το ον κα α αλ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι στε ε ε ε

δι ι η η γη η η σο ο μαι αι εξ α ι

δι ι ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α α α

ι ι δι ι ι ον και εν υ πο ο στα α τον

λα α α αμ ψα ας α α πα α αυ γα α α σμα

α παρ θε νι κη η η ης α α α πο γα α

στρος τοις εν σκο ο ο τει και σκι ι α σω μα

τω θει εις α α α νε τει ει λα ας η η η η

η λι ι ι ι ος

παρ θε νι κη η η ης α α πο

α \* λι ον πον το γε ε νες κη τω ω ο ον  
 εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι η  
 με ε ρου ουτα α φη ης σου τι ι ι προ ει κο ο  
 νι ι σμα α ου ου ου Ι ι ω ω ω νας υ πο  
 φη η τη ης α α να α δε ε ε δει ει ει κται αι  
 σε σω σμε ε νος γα α αρ ως και αι πρου  
 ου ου πε ε πω ω ω το ο ο α α σι νη ης  
 ε ε βο ο ο α θυ σω ω σοι οι με τα  
 φω νη ης αι αι αι νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ



υ ρι ι ι ι ε π q

\* A λι ον πον το

ῥοδὴ ζ'

Ἦχος 4 Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.150/1499\*

I τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ υ

ρι θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι

τα ατ το ο ο με ε νο ος π q το με εν

πυ υρ ε δρο ο σι ι ζε τω θυ υ μω ω

ω δε ε ε γε ε ε λα θε ο πνε ε ευ

στω ω ω λο ο γι ι ι κη π q τη των ο σι ι

ων τρι φθο ογ γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι ι

φθε εγ γο ο ο με ε νο ος μου σι κοι οι οι

οις ο ορ γα α α νοις εν με ε ε σω ω φλο ο

γο ο ο ος ο ο δε δο ο ξα α σμε ε ε

νο ος των πα τε ε ρων και αι η η μων Θε ε ος

ε ευ λο ο γη η η το ο ο ος ει

θει ος ε ε ρως α αν τι ι

α αν τι ι φθε εγ

εν με ε ε σω ω φλο ο ο γος ο δε

δο ξα σμε ε ε ε νο ος των πα

ᾠδὴ η'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.151/1500\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ υ ρι ι ον

Φ λο ο ο ο γα δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ους δυσ σε ε ε βει ει εις δε ε κα α

τα α φλε ε ε γου ου ου σα αν αγ γε ε λο ος

Θε ε ου ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης ε δει ει

ξε ε παι αι σι ζω αρ χι κη η η η ην δε

ε πη η η γην ειρ γα α σα το ο ο ο

ο την Θε ο ο ο το ο κον φθο ραν θα να α α α

του ου ου ου και ζω ω ην βλυ στα α α νου ου σα αν

τοι οῖς με ε ελ που ου σι ι π ρ ον δη μι

ου ουρ γον μο ο νο ο ο ο ον υ υ μνου με ε ε εν

οι οι λε λυ υ τρω ω με ε ε νοι οι

και αι υ περ υ υ ψου ου ου με ε εν ει

εἰς    πᾶ    αὐ    τᾶς    τοῦ    οὐ    οὐς    αἱ    ὦ    ὦ    ὦ    ὦ    ὦ    \*    χ

𐤁    𐤂    𐤃    𐤄    𐤅  
 va    a    a    as    pi

\*   $\pi$   
vax q

\* — “ — — — — — — π α ν

Θ ε ε ου ου ου ου ο ο παν

φθο ραν θα να α α του ου και ζω ω ην

\*2

και υ υ περ υ υ ψου ου ου με εν ει ει εις πα


  
 αὐ τοῖς

# Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

ὥδῃ α'

Ἦχος ♭ Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρημολόγιον 1825 σ.1\*

Π ε ποι κι ιλ με ε ε νη τη θει ει ει α α  
δο ο ο ξη η η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ  
κλε η η ης Πα αρ θε ε νε ε ε μνη η η μη  
η η σου ου πα αν τας συ υν η γα γε ε το  
προ ο ο ος ε ευ φρο συ νη ην του ους πι ι στου ου ου  
ους ε ε ε ξα αρ χου ου σης Μα ρι ι α αμ  
με τα α α α χο ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω  
σω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω

α α δον τα ας μο νο ο γε ε νει εν δο ο ξωως

ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο ξα α α α σται

ῥδῆ γ'

Η δη μι ι ουρ γι ι κη και αι συ υν ε ε κτι

κη η τω ων α α πα α αν των θε ου σο ο ο φι ι

ι ι α α και αι αι δυ υ υ να α α μι ις α

κλι νη η α κρα α δα α αν το ο ον την Εκ κλη

σι αν στη η η η ρι ι ι ξον Χρι ι στε μο

ο νος γα αρ ει ει ει α α γι ι ι ος χορὸς α'

ο εν α γι ι οι οι οισ α να α πα αυ ο

$\omega\delta\eta\delta'$ 

P

 $\alpha$ 

(

( )

 $\alpha$ 

(

v

2

08

πε <sup>π</sup>9

ὥδ' ἔ'

**Τ** ο θει ει ει ει ον και αρ ρη η τοον κα α αλ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι ι ι στε ε ε ε

δι ι η η η γη η η σο ο ο μαι αι <sup>π</sup>9 εξ α

ι δι ι ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α

α α ι ι δι ι ι ον <sup>Δ</sup> και εν υ πο ο στα

τον λα α α αμ ψα ας α α α πα α αυ γα α α

σμα α <sup>π</sup>9 Παρ θε νι κη η η ης α α α πο

γα α στρος <sup>Δ</sup> τοις εν σκο ο ο τει και σκι ι α <sup>π</sup>9 σω

μα τω θει εις α α α νε τει ει λα ας η η



η η η λι ι ι ι ος π q

ῶδῆς'

λι ο πον το γε ε ε νε ες κη τω ω

ο ον εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι

η με ε ρου ουτα α φη ης σου τι ι ι προ ει

χο ο νι ι σμα α ου ουου ου Ι ι ω ω ω

νας υ πο φη η τη ης α α να α α δε

ε ε δει ει ει κται αι σε σω σμε ε νος

γα α αρ ως και αι πρου ου ου πε ε πω ω ω

το ο ο α α συν η ης ε ε βο ο ο

α θυ σω ω σοι οι με τα φω νη ης αι αι αι

νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π</sup>q

ὤδῃζ'

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ

υ ρι <sup>Δ</sup>θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι

τα α ατ το ο ο με ε ε νο ος <sup>π</sup>q το με εν

πυ υρ ε δρο ο σι ι ζε <sup>Δ</sup>τω θυ υ μω ω ω

δε ε ε γε ε ε λα θε ε ε ο ο πνε ευ

στω ω ω λο ο γι ι ι κη η <sup>π</sup>q τη των ο σι ι

ων τρι φθο ογ γω ω λυ υ υ ρα α α α αν τι ι

φθε ε εγ γο ο ο με ε ε νο ος <sup>π</sup>q Μου σι

κοι οι οι ο ο ρ γα α α νοις <sup>π</sup> εν με ε ε

σω φλο γο ο ο ος ο ο δε δο ο ξα α σμε

ε ε νο ος των Πα τε ε ρων και αι η μων Θε ε ος

ε ευ λο ο γη η η το ο ο ος ει <sup>π</sup> ὠδὴ η'

<sup>χ</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου με εν τον

Κυ υ ρι ι ον <sup>Δ</sup>

<sup>Φ</sup> λο ο ο ο γα <sup>χ</sup> δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ου ου ουους δυ υσ σε βει ει εις δε ε κα α

τα α α φλε ε ε γου ουου σα αν <sup>π</sup> αγ γε ε λο ος

Θε ε ου ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης <sup>Δ</sup> ε δει


  
 ξε ε παι αι σι ι ι ζω α αρ χι κη η η η ην

δε ε πη η η γην ειρ γα α σα το ο ο

ο την Θεο ο ο ο το ο κον ρθο ραν θα να α α α

του ου ου ου και αι ζω ω ω η ην βλυστα α α

νοῦ    ου    σα    αν    τοι    οι    οἰς    με    ε    ελ    που    ου ου

ο ο ο ον υ υ μνου με ε ε εν οι οι λε λυ υ
























υ ψου ου ου με ε εν ει εις πα αν τας του

[illegible]

## Τιμιωτέρα ἦχος α΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος α΄

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Κ**αθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀ**ντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

ἦχος ᾠ Πα

Λουκᾶ κεφ. 1

- ∴ **Μ**εγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅ**τι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅ**τι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐ**ποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν.

51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ  
πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς  
πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος ♯̣ Πα —

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.501#

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
α φθορως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν την ον τως Θε ο  
το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος ♯̣ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#

Μ ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι  
ον και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου ε πι

τῷ Θεῷ ὡς ὡς τῇ ῥίμου

Τὴν τιμὴν τῶν τεράτων Χερουβὶμ καὶ ἐνδοξο

τεράτων συγκρίτως τῶν Σεραφὶμ τὴν ἀδια

φθορῶς Θεὸν Λόγον τέκουσιν τὴν ὀντως Θεο

τόκον σεμεγαλύνομεν

Ὁ τί ἐπεβλέψεν ἐπὶ τὴν ταπεινώ

σιντης δούλης αὐτοῦ ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νυν μακα

ρίου σιμεπαιγεναί

Τὴν τιμὴν τῶν τεράτων Χερουβὶμ καὶ ἐνδοξο

τεράτων συγκρίτως τῶν Σεραφὶμ τὴν ἀδια

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

 τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του  και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον 

 ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 



Ε   
ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

 του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

 α καρ δι ας αυ των

Τ  ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

 ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι

 α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

 ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κ  α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

 πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων και

 πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ ἡ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ ἡ την α δι

α φθο ρως ἡ Θε ο ον Λο γον τε κου σαν π ρ την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π ρ

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

υ η + ο υ η κα θως ε λα λη σε προς τους πα

υ η ο υ η τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

ο υ η του ε ως αι ω νος ἡ

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ ἡ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ ἡ την α δι

α φθο ρως **ἦ** Θε ο ον Λο γον τε κου σαν **π** την ον τως Θε  
ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν **π**

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

[Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.]

Νενίκηγται τῆς φύσεως οἱ ὄροι, ἐν σοὶ Παρθένε ἄχραντε· παρθενεύει γὰρ τόκος, καὶ ζωὴν προμνηστεύεται θάνατος. Ἡ μετὰ τόκον παρθένος, καὶ μετὰ θάνατον ζῶσα, σῶζοις αἰεὶ, Θεοτόκε τὴν κληρονομίαν σου.

Σύντομος

Ἀρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

ἦχος **ἦ** Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.319#

**Α** ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο  
με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον **π**

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι εν σοι Παρ θε  
 νε α χραν τε <sup>π</sup>παρ θε νευ ει γαρ το κοσ και ζω  
 ην προμνη στε ευ ε ται θα νατος <sup>π</sup>η με τα το κον Παρ  
 θε νος και με τα θα να τον ζω σα <sup>π</sup>σω ω ζεις α ει  
 Θε ο το κε την κλη ρο νο μι ι α αν σου <sup>π</sup>

\* <sup>π</sup>  
 σου ου ου ου <sup>π</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὥδ' ἔθ' Ἦχος <sup>ζ</sup> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.152/1501#

Α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο  
 με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον <sup>π</sup>

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι εν σοι

Παρ θε νε α χραν τε παρ θε νευ ει γαρ το κος

και ζω ην προ μνη στε ευ ε ται θα να τος η

με τα το κον Παρ θε νος και με τα θα να τον

ζω σα σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο

νο μι ι α αν σου σου ου ου ου ου

Ἄρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδῃ θ'

Ἦχος ᾠὴ Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.6#

Α ι γε ναι αι αι πα α α α σαι αι αι αι μα α  
κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο

ο νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον π q

Ν ε ε νι ι ι κη η η ην ται π q της φυ υ σε

ω ως οι ο ο ο ροι οι Δ εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε π q πα α α

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος π q και ζω ω

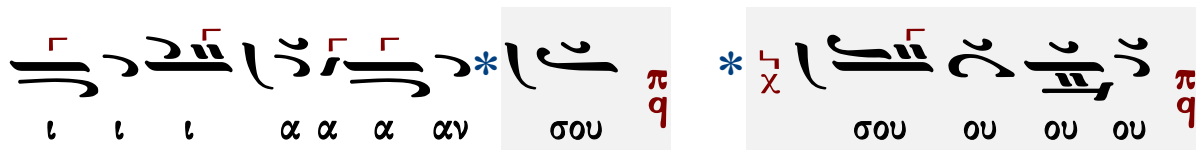
ην Δ προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να

α α το ος π q η με ε ε ε τα το κο ον Παρ θε

ε ε ε νος Δ και με ε ε ε τα θα α να α το ον

ζω σα α π q σω ω ω ω ζει εις α α α ει Δ Θε ο

ο το ο ο κε Δ τη η ην κλη ρο ο νο ο μι ι

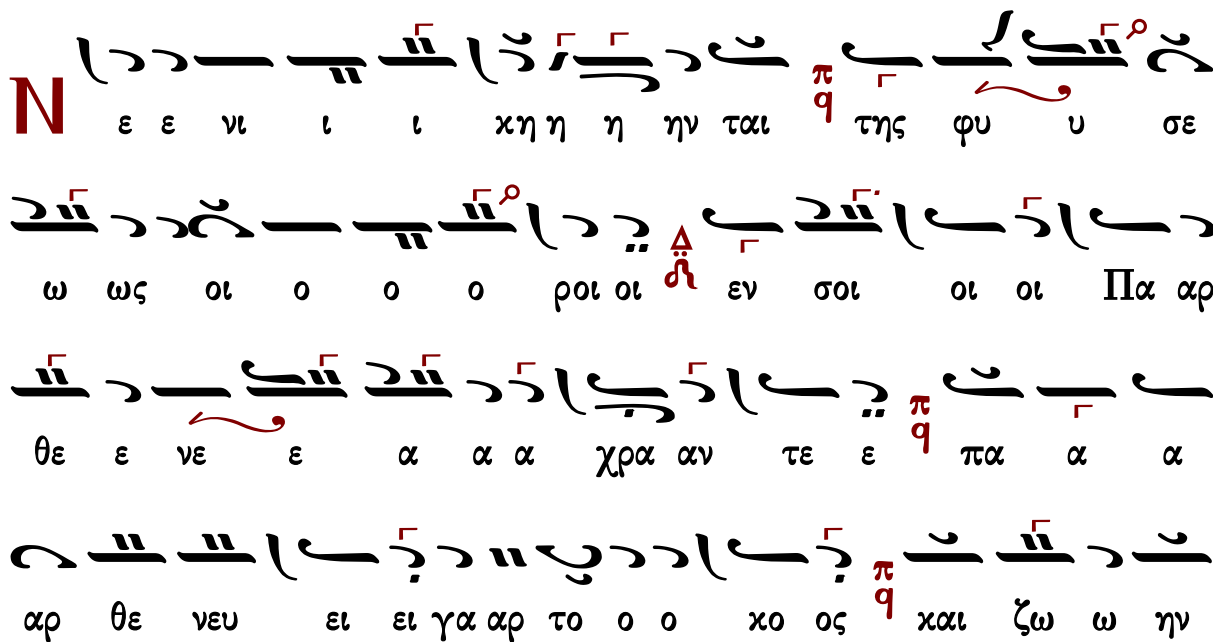
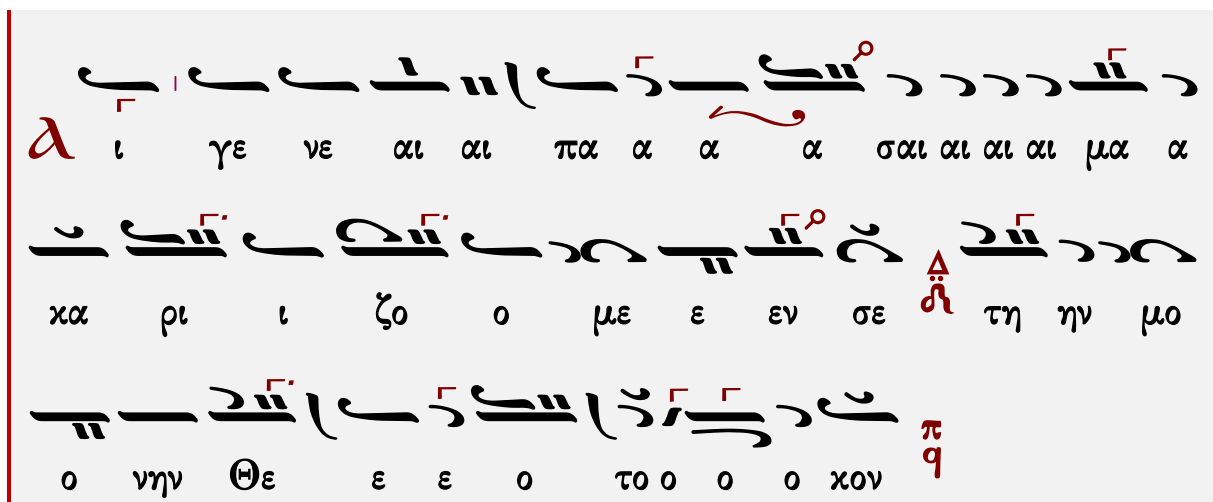


Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Ὡδὴ θ'

Ἦχος ♭ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.155//1504\*



προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να α α

το ος <sup>π</sup>η με τα το χο ον Παρ θε ε ε ε νος <sup>Δ</sup>

και με τα θα α να α το ον ζω σα α <sup>π</sup>σω ω ω

ζοι οισ α α α ει <sup>Δ</sup> Θε ο ο το ο ο κε <sup>Δ</sup> την

κλη ρο ο νο ο μι ι ι ι α α α αν <sup>π</sup>νας

\* σου ου ου ου <sup>π</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

ὥδ᾽ ἔ

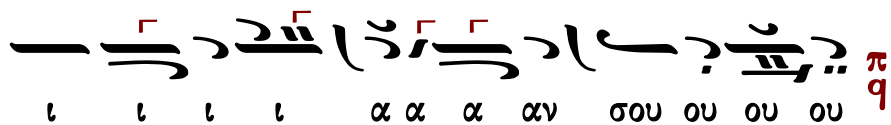
Ἦχος <sup>Λ</sup> Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρημολόγιον 1825 σ.8\*

Α ι γε ναι αι αι πα α σαι αι αι αι μα α κα  
ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο ο







# Εἰς ἑορτὰς τῆς Θεοτόκου

22/9-7/11

10/2 – μέχρι τῆς ἐνάρξεως τοῦ Τριφδίου

Ἀπὸ τῆς Κυριακῆς τῶν ἁγίων Πατέρων μέχρι τῆς 26ης Ἰουλίου

ἤχος δ'

- α **Ἀ**νοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθῆσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθῆσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὰ θαύματα.
- γ **Τ**οὺς σοὺς ὕμνολόγους Θεοτόκε, ὡς ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θιάσον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· καὶ ἐν τῇ θείᾳ δόξῃ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ **Τ**ὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης, Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκράυγαζε· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Ἐ**ξέστη τὰ σύμπαντα, ἐπὶ τῇ θείᾳ δόξῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθέने, ἔσχες ἐν μήτρᾳ, τὸν ἐπὶ πάντων Θεόν, καὶ τέτοκας ἄχρονον Υἱόν, πᾶσι τοῖς ὕμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύοντα.
- ς **Τ**ὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα Θεὸν δοξάζοντες.
- ζ **Ο**ὐκ ἐλάτρευσαν τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν· ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- η **Αἰ**νοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- Π**αῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος, νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἅπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται  
πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξο μαι τη βα σι λι δι Μη  
τρι και ο φθη σο μαι φαι δρωσ παν η γυ ρι ζων και  
α σωγη θο μενος ταυ της τα θαυ ματα

ᾠδὴ γ'

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η  
ζω ω σα και α φθο νος πη γη θι α σον συγ κρο τη σαν  
τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον και εν τη θει α

δο ξη σου χορὸς α' στε φα νων δο ξης α ξι ω σον

ᾠδὴ δ'

Τ ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην της εκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως σου του υ ψι στου

ο προ φη της Αβ βα κουμ κα τα νο ων ε κραυ

γα ξε δο ξα τη δυ να μει σου Κυ ρι ε

←ειρημολόγιον ΖΩΗC

ᾠδὴ ε΄

ξε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο

ξη σου συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε

σχες εν μη η τρα τον ε πι πα αν των Θε ον και τε

ε το κας α χρο νον Υι ον πα σι τοις υ μνου σι σε σω τη

ρι ι αν βρα βευ οντα

ᾠδὴ ε΄

Τ ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος δευ τε τας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

τες 6  
λ

ὠδὴ ζ'

Ο υκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα 6  
λ αλ λα πυ ρο ος α πει λην 6  
σ αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον 6  
λ υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

ος ει 6  
λ

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6  
λ

Π αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το οκος της Θε ο το κου δι ε σω σα το ο το τε  
 μεν τυ που μενος νυν δε εν ερ γου με ε νος π<sup>9</sup> την οι  
 κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν τον  
 Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου  
 τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας 6 λ<sup>6</sup>

Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ α'

Ἦχος δ' Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.511\*

νοι ξω το στο μαμου και πλη ρω θη σε ε ται  
 Πνευ μα τος 6 λ<sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα α σι λι δι  
 Μη τρι 6 λ<sup>6</sup> και ο φθη σομαι φαι δρως παν η γυ υ ρι

ζων <sup>π</sup> και α σω γη θο μενος τα αυτης τα θαυ ματα <sup>6</sup>

ὥδ᾽ γʼ

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο ο

κε η ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ

κρο τη σα αν τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π</sup> και

εν τη θει α δο ξη σου <sup>Δ</sup> χορὸς α' στε φα νων δο ο ξης α

ξι ω σον <sup>6</sup>

ὥδ᾽ δʼ

**Τ** ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην <sup>6</sup> της εκ

της Παρ θε νου σαρ κω σε ε ως σου του Υ υ ψι στου <sup>π</sup> ο

ο προ φητης Αβ βα κουμ <sup>6</sup> κα τα νο ων ε κραυ γα ξε δο

ξατη δυ να μει σου ου Κυ ρι ε <sup>6</sup>

ὥδ᾽ εʼ



Ε ξ ε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο ξη

σου σου υ γαρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε σχεις

εν μη η τρα τον ε πι παν των Θε ον και τε το

κας α χρο νον Υι ο ον πα σι τοις υ μνου σι σε σω

τη ρι ι αν βρα βευ οντα

Τ ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ

την οι θε ο φρο νες της Θε ο ο μη το ρος δευ τε τας χει

ρας κρο τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον

δο ξα ζοντες

Ο υκ ε λα τρε ευ σαν τη κτι σει οι οι θε ο φρο νες

πα ρα τον κτι σαν τα <sup>6</sup>λ αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>6</sup>λ

αν δρει ως πα α τη σαν τες χαι ρον τες ε ψαλ λον <sup>6</sup>λ υ

περ υ μνη η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος <sup>Δ</sup>λ και Θε ος

ευ λο γη το ος ει <sup>6</sup>λ ὥδῃ ἡ'

<sup>χ</sup>λ **Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

**Π** αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο το

ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το <sup>6</sup>λ το τε μεν τυ

που με ε νος <sup>π</sup>η νυν δε ε εν ερ γου μενος <sup>6</sup>λ την οι κου

με νην α πα σαν α γει ρει ψαλ λου ουσαν <sup>Δ</sup>λ τον Κυ ρι ον υ

μνει ει τε τα ε εργα <sup>6</sup> και υ περ υ ψου ου τε εις

παν τας τους αι ω ω ω να α α α ας <sup>6</sup>

## Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

ὥδῃ α'

Ἦχος <sup>4</sup> δὲ Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

α <sup>χ</sup> νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος <sup>6</sup> και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι <sup>6</sup> και ο φθη σο ο μαι αι <sup>Δ</sup> φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζων <sup>π</sup> και α α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τα α θαυ μα α τα α <sup>6</sup>

**Τ** ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε **Δ**ως ζω ω ω ω σα α και αι

α α α φθο νος πη η γη **Δ**θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον **π** και εν τη θει α α δο ο ξη η σου χορός α'

\* **Δ** στε φα α α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον **6**

\* **Δ** στε φα α α νωνων...

**Τ** ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην **6** της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ ψι

στου ου <sup>π</sup>ο προ φη η της Αβ βα α κουμ <sup>Δ</sup>κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε <sup>Δ</sup>δο ο ο ο ξα

τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>ὠδὴ ε'</sup>

<sup>Ε</sup>ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α <sup>π</sup> <sup>9</sup>ε πι

τη θει ει α α δο ο ξη η σου <sup>Δ</sup>συ υ υ γα α α

α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup>ε

σχες εν μη η η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α

α αν τω ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο

ο κας <sup>Δ</sup>α α χρο ο νο ον Υι υι ο ο ο ον πα α

σι ι τοι οἰς υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η

νη ην βρα βε ευ ο ον τα α

\* ον και τε ε το ο κας ...

Μουσικὸν Πεντηκοστάριον 2005 σ.551

ῶδῆς'

Τ ην θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ηην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος δευ τε τας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε ε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες

Ο υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

Ο ΤΟ Ο ΧΟΥ ΔΙ Ε Ε ΣΩ Ω ΣΑ Α ΤΟ ΤΟ Ο ΤΕ Ε


  
 ν α   α α α   α   α ζ



και πλη η ρω θη η σε ε ται Πνε ευ μα α το ος <sup>6</sup> και

λο ο γον ε ε ρε ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι

Μη η τρι ι <sup>6</sup> και ο ο φθη σο ο μαι φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζων <sup>π9</sup> και α α σω γη η η θο

ο με ε νος <sup>Α</sup> τα α α αυτης τα α θαυ μα α τα α <sup>6</sup> <sup>λ</sup> <sup>φδ'η'γ'</sup>

<sup>Τ</sup> ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε <sup>Α</sup> η ζω ω σα και αι αι α

φθο ο νος πη η η γη η <sup>Α</sup> θι α σον συγ κρο τη η η

σα α α α αν τα ας <sup>π9</sup> πνευ μα τι κο

ον στε ρε ε ε ω ω ω ω σον <sup>π9</sup> και εν τη η

6  
κ

# T

6  
κ6  
X6  
x

e



πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε <sup>6</sup>λ ε σχες εν

μη η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α αν τω

ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο ο κας <sup>Δ</sup>λ

α α χρο ο νο ον Υι υι ο ο ον πα α σι ι τοι οis

υ μνου ου σι ι σε ε ε ε σω τη η ρι ι ι ι α αν βρα

βε ευ ο ο ον τα <sup>6</sup>λ ὥδῃς'

**Τ** ην θει αν τα αυτη ην και πα αν τι ι μο ον <sup>π9</sup> τε λου

ουν τε ες ε ο ορ τη η ην οι οι θε ο ο φρο ο νε

ες <sup>6</sup>λ της Θε ο μη η η το ο ο ο ο ρο

ος <sup>π9</sup> δευ τε τας χει ει ει ει ρας χρο ο τη η η σω ω ω

ω με εν τον εξ αυ τη ης τε ε χθε ε εν τα Θε ε ο ον

δο ξα α ζο ον τε ες

Ο υκ ε λα α α τρε ε ε ε ευ σα αν

τη κτι ι σει ει οι οι θε ο ο φρο ο νε ες πα

ρα α τον κτι ι ι σα α α αν τα αλ λα α

πυ ρο ος α πει ει λη ην αν δρει ει ως πα α α τη

η σα αν τες χαι αι αι αι ρο ον τες ε ε ψα αλ λο ον

υ περ υ υ υ μνη η η η τε ε ο των πα

α τε ρω ων Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ε ευ λο

ο γη το ο ος ει ει

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου με εν

τον Κυ υ ρι ι ο ον 6 λ

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη κα

α μι ι ι νω ω 6 λ ο το ο ο ο ο κος της

Θε ε ο το ο κου ου δι ι ε σω ω σα α το ο 6 λ

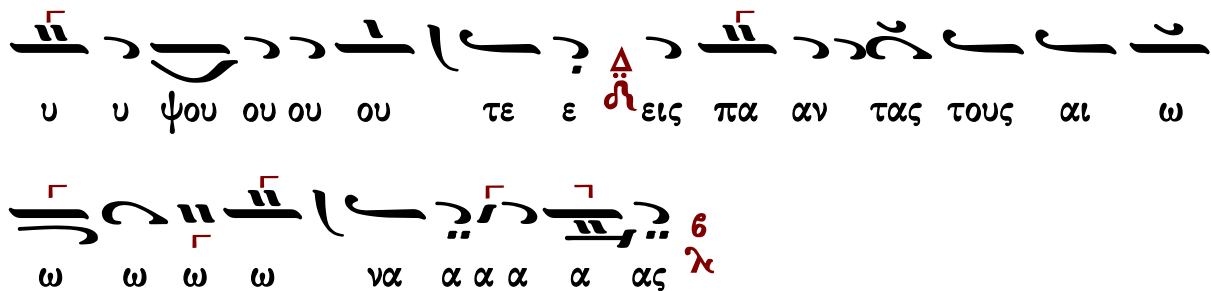
το ο τε με εν τυ υ που με ε νο ο ος νυ υν δε

ε ε εν ερ γου ου ου με ε ε ε νος π q την οι

κου με νη ην α πα α σαν α γει ρει ει ει ψα α

α α λ λου ου ου ου σαν τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο

ο ο ον υ υ μνει τε τα α ερ γα α π q και αι αι υ υ περ



## Τιμιωτέρα ἦχος δ΄

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος δ΄

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος δ΄

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47

- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δὲ Ββ

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.502#

Τ

ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το ο κον σε με γα α λυ νο μεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

Μ ε γ α λ υ ν ει η ψ υ χ η μου τον Κυ ρι ον

και η γ α λ λ ι α σε το πνευ μα μου ε πι τω Θε

ω ω τω σω τη ρι μου

Τ ην τι μι ω τε ρ αν των Χε ρ ου βιμ και εν δο

ξο τε ρ αν α συ γ κρι τω σ των Σε ρ α φιμ την α δι α

φθο ρ ω σ Θε ον Λο ο γ ο ν τε κου σαν την ον τω σ Θε ο

το κον σε με γ α λ υ νο μεν

Ο τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω σιν

της δου λης αυ του ι δου γαρ α πο του νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι



Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν δο

ξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο

τοκον σε μεγαλυνομεν

Οτι εποιησε μοι μεγαλει οδυνα

τος και αγιον το ονομα αυτου και το ελε

ος αυτου εις γενεαν και γενεαν τοις φοβου

μενοις αυτον

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν

δοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυ των

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους <sup>6</sup> λ πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων <sup>6</sup> λ και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους <sup>6</sup> λ

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> λ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> λ την α δι α φθο

ρως <sup>6</sup> λ Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π9</sup> την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup> λ

**Α** ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους <sup>6</sup> λ κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων <sup>6</sup> λ τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος <sup>6</sup> λ

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο  
 τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο  
 ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε ε μεγα λυ νομεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυριζέτω δέ, αὐλῶν  
 νόων, φύσις γεραίρουσα, τὰ ἱερὰ θαυμάσια, τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις  
 παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

Γαβριήλ Κουντιάδου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

ἦχος δ' Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
 Ειρμολόγιον 1903 σ.330#

α πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου χου

με νος παν η γυ ρι ζε τω ω δε α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα τα ι ε ρα θαυ

μα σι α της Θε ο μη η το ο ρος και βο α

α α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε ε ε ε ε

Γαβριήλ Κουντιάδου

ὥδ᾽ ἑ

Ἦχος δὲ Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.514\*

α πας γη γε νης σκιρ τα τω τω Πνευ μα τι λαμ πα α

δου χου με νος παν η γυ ρι ζε τω ω δε α υ λων

Νο ὦν φυ υ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>τα ι ε ρα θαυ

μα σι α της Θε ο μη το ο ρος <sup>Δ</sup>και βο α α τω χαι ροις

παμ μα κα α ρι στε Θε ο το ο κε <sup>6</sup>α γνη η α ει

πα α αρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup>

Ἄρχη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὥδη θ'

Ἦχος <sup>4</sup> <sup>Δ</sup> Ββ

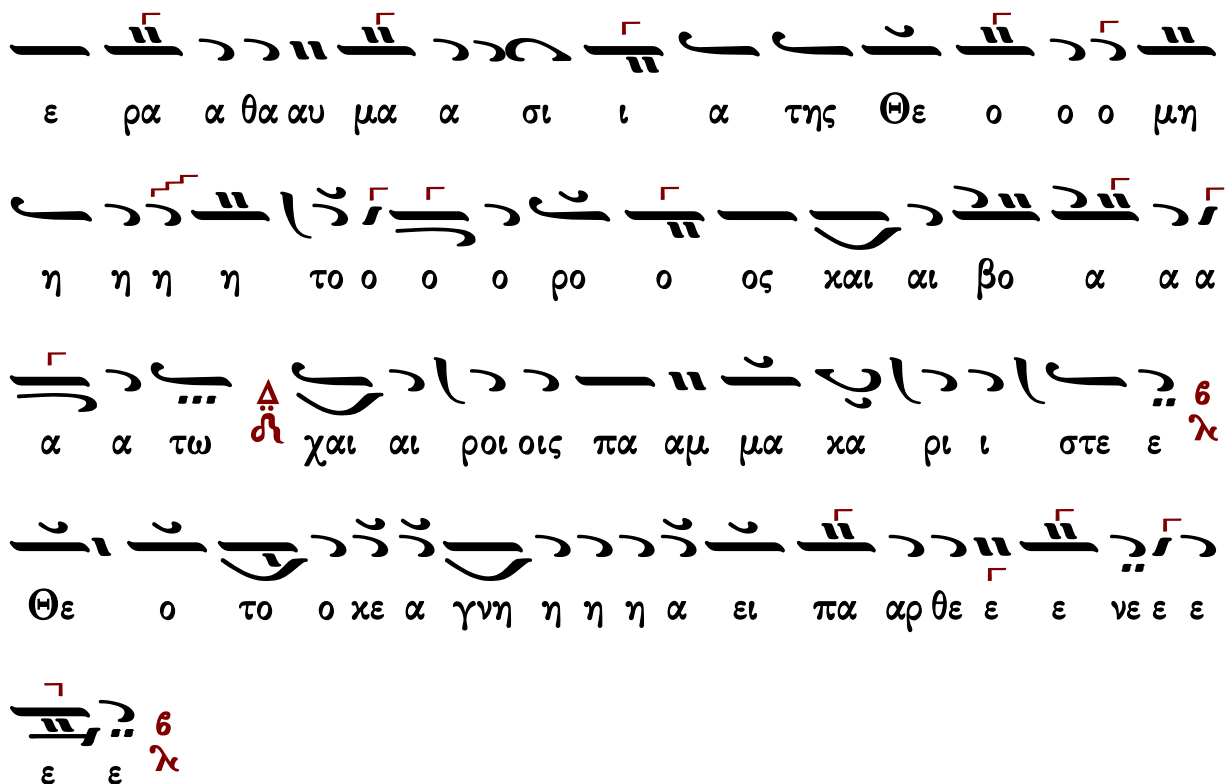
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1905 σ.55#

<sup>Δ</sup> α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω ω δε <sup>π</sup>α υ λω ων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>6</sup>τα ι



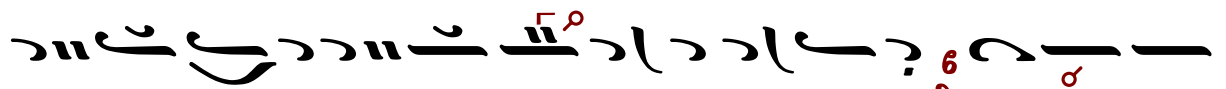
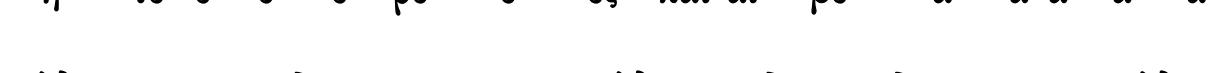
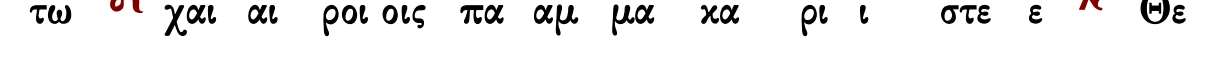
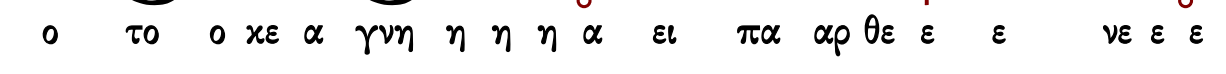
Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup> <sub>λ</sub> Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικὸν Μηνολόγιον  
 2007 σ.237/1936\*



  
 ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α τα ι ε  
  
 ρα α θα αυ μα α σι ι α της Θε ο ο ο μη η η  
  
 η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α α  
  
 τω και αι ροι ο ις πα αμ μα κα ρι ι στε ε Θε  
  
 ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε  
  
 ε ε

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

ὧδ' ἠ'  Ἦχος  Β8

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
 Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
 ἐπανεκδόσις 1991 σ.510\*

  
 α πας γη η γε νη η ης σκιρ τα τω τω Πνε ευ  
  
 μα τι ι λα αμ πα α δου χου ου με ε νο ο ος παν η η



γυ υ υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε α υ λω

ων νο ο ο ο ων φυ υ υ υ σι ις γε ραι αι ρου ου

σα α τα ι ε ρα α θαυ μα α σι ι α της

Θε ο ο ο μη η η η το ο ο ο ρο ο ος και

αι βο α α α α τω και αι ροι οις πα αμ μα κα α ρι

ι στε ε Θε ο ο το ο ο ο ο κε α γνη η η η α

ει πα αρ θε ε ε νε ε ε ε ε ε



ΤΕΛΟΣ

ΤΩ ΔΕ ΔΩΡΕΟΔΟΤῃ ΘΕΩ  
ΔΟΞΑ, ΤΙΜΗ ΚΑΙ ΠΡΟΣΚΥΝΗΣΙΣ

